ISSN 2277 - 7083

आधुनिक साहित्य

Aadhunik Sahitya

साहित्य, संस्कृति एवं आधुनिक सोच की त्रैमासिकी

UGC Approved Care Listed Journal

वर्ष/Year-11 अंक/Vol.-43 द्विभाषी/Bilingual

जुलाई - सितम्बर / July - Sept. 2022

सभी देशवासियों को

75

आज़ादी के अमृत महोत्सव

की हार्दिक शुभकामनाएँ।

संपादक
–डॉ. आशीष कंधवे

15 अगस्त 1947 – 15 अगस्त 2022

आधुनिक साहित्य

साहित्य, संस्कृति एवं आधुनिक सोच की त्रैमासिकी

संपादक

डॉ. आशीष कंधवे

विश्व हिंदी साहित्य परिषद

प्रकाशन | वितरण | राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

प्रमुख उद्देश्य

★ हिंदी का प्रचार-प्रसार

★ उत्तम साहित्य का प्रकाशन

★ साहित्यकार साहित्य योजना

★ पुरस्कार प्रतियोगिता का संचालन

★ रोजगारोन्मुख हिंदी के लिए प्रयास

★ हिंदी एवं भारतीय भाषाओं का समग्र विकास

★ साहित्य एवं संस्कृति के चहुँमुखी विकास के लिए प्रयत्न

★ संग्रहालय, पुस्तकालय एवं संगोष्ठी कक्ष की स्थापना में प्रयासरत

मुख्यालय

एडी-94-डी, शालीमार बाग, दिल्ली-110088

संपर्क सूत्र : 09811184393, 011-47481521

ई-मेल : vhspindia@gmail.com, aadhuniksahitya@gmail.com

Website : www.vhsp.in

UGC Approved Care Listed Journal

आधुनिक साहित्य

साहित्य, संस्कृति एवं आधुनिक सोच की त्रैमासिकी

वर्ष/Year-11 अंक/Vol.-43 जुलाई-सितम्बर 2022/July-September 2022 द्विभाषी/Bilingual

Aadhunik Sahitya

संपादक

डॉ. आशीष कंधवे*

Editor

Dr. Ashish Kandhway

संरक्षक	Patron
प्रो. उमापति दीक्षित	Prof. Umapati Dixit
कुमार अविकल मनु	Kumar Avikal Manu
उप संपादक	Sub Editor
रजनी सेठ	Rajni Seth
प्रबंध संपादक	Managing Editor
ममता गोयनका	Mamta Goenka
विशेष संवाददाता (अमेरिका)	Special Correspondent (USA)
रश्मि शर्मा	Rashmi Sharma
संवाददाता (अंग्रेजी)	Correspondent (English)
निलांजन बैनर्जी	Nilanjan Banerjee

*आशीष कंधवे (मूल नाम आशीष कुमार)

आधुनिक साहित्य में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबन्धित लेखकों के हैं जिनसे संपादक, प्रकाशक, मुद्रक एवं पत्रिका से जुड़े किसी भी व्यक्ति का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। सभी विवादों का निपटारा दिल्ली क्षेत्र के अन्तर्गत सीमित है। पत्रिका में सम्पादन से जुड़े सभी पद गैर-व्यावसायिक एवं अवैतनिक हैं।

आधुनिक साहित्य

साहित्य, संस्कृति एवं आधुनिक सोच की त्रैमासिकी

UGC Approved Care Listed Journal

केंद्रीय हिंदी संस्थान के सहयोग द्वारा प्रकाशित

RNI No. DELBIL/2012/42547
ISSN 2277 - 7083

© सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रकाशित सामग्री के पुन: उपयोग के लिए लेखक, अनुवादक अथवा आधुनिक साहित्य की स्वीकृति अनिवार्य है।

संपादकीय कार्यालय
एडी-94-डी, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
फोन : 011-47481521, +91-9811184393
ई-मेल : aadhuniksahitya@gmail.com
adhuniksahitya@gmail.com

आलेख/रचना/कहानी में व्यक्त विचार संबंधित लेखकों के हैं इससे प्रकाशक या संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

मूल्य : **₹ 500 प्रति अंक**

शुल्क :	तीन वर्ष (12 अंक)	₹ 6000
	पांच वर्ष (20 अंक)	₹ 9000
	(डाक/कोरियर खर्च सहित)	
	आजीवन सदस्यता	₹ 21,000
	विदेश के लिए (3 वर्ष)	200 डॉलर

शुल्क **'AADHUNIK SAHITYA'** के नाम पर भेजें।

Account Name	:	Aadhunik Sahitya
Account No.	:	16800200001233
Bank	:	Federal Bank Ltd.
Branch	:	Shalimar Bagh New Delhi-110088
IFSC Code	:	FDRL0001680

'आधुनिक साहित्य' द्विभाषी त्रैमासिकी आशीष कुमार के स्वामित्व में और उनके द्वारा एडी-94डी, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित तथा आभा पब्लिसिटी, 163, देशबंधु गुप्ता मार्केट, करोलबाग, नई दिल्ली से मुद्रित। स्वामी/संपादक/प्रकाशक/मुद्रक : डॉ. आशीष कुमार।

'AADHUNIK SAHITYA' A quarterly bilingual (Hindi & English) Journal of Literature, Culture & Modern Thinking owned/published/printed/edited by Ashish Kumar from AD-94-D, Shalimar Bagh, Delhi-110088 and printed at Abha Publicity, 163, Deshbandhu Gupta Market, Karolbagh, New Delhi.

अनुक्रम

संपादकीय
- डॉ॰ आशीष कंधवे / *भारतीय ज्ञान परंपरा : सार्वभौमिक समरसता और समावेशी संतुलन का आधार* / 9

नाट्य-चेतना
- प्रो. ज्ञानतोष कुमार झा / *नवजागरण, स्त्री चेतना और रवीन्द्रनाथ टैगोर के नाटक* / 16

लोक-चेतना
- प्रो. मंजुला राणा / *कबीर की लोक व्याप्ति* / 35

इतिहास-चेतना
- डॉ. बिपिन कुमार ठाकुर / *संसद भवन में भित्तिलेख : वर्तमान प्रासंगिकता* / 44
- डॉ. प्रशान्त कुमार एवं डॉ. अजीत कुमार राव / *स्मृतिकालीन शिक्षा व्यवस्था (मनु एवं याज्ञवल्क्य स्मृति के विशेष संदर्भ में)* / 51

समाज-चेतना
- अरुणा त्रिपाठी / *'वैवाहिक दुष्कर्म'-एक गंभीर चिंतन एवं बहुपक्षीय विश्लेषण का विषय* / 58
- डॉ. पूजा सिंह / *समाज में बढ़ते वृद्धा आश्रम का जिम्मेदार कौन?* / 63

भाषा-चेतना
- डॉ. राजेश कुमार शर्मा / *आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना और राष्ट्रभाषा का प्रश्न* / 66

शोध-संसार
- देबश्री सिन्हा / *भक्तिकालीन साहित्य की पुनर्व्याख्या : मैनेजर पाण्डेय की आलोचना के संदर्भ में* / 72
- अरुण कुमार द्विवेदी / *संत अक्षर अनन्य का दार्शनिक चिन्तन* / 80
- सरिता कुमारी / *जयनंदन की कहानियों में मूल्यबोध* / 89
- अंजना कनौजिया / *मृदुला गर्ग का नारी-दृष्टिकोण* / 95
- डॉ. पोर्शिया सरकार / *स्वानुभूति का साहित्य : दलित साहित्य* / 101
- जीभवानी कुमार रजक एवं डॉ. रत्नेश विश्वक्सेन / *ओमप्रकाश वाल्मीकि के साहित्य में दलित चेतना* / 107
- बिन्दु डनसेना एवं डॉ. बी.एन. जागृत / *हिन्दी व्यंग्य उपन्यास परम्परा में आश्रितों का विद्रोह* / 114
- दीपमाला / *हिन्दी कविता में ग़ज़लों की स्थिति* / 120
- मंजू देवी / *सुरेश्वर त्रिपाठी की कहानियों में चित्रित ग्रामीण जीवन* / 127
- प्रो. प्रदीप श्रीधर एवं चारू अग्रवाल / *मृत्युबोध के परिप्रेक्ष्य में तेजेन्द्र शर्मा की प्रतिनिधि कहानियाँ* / 132
- डॉ. मीरा निचळे / *राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 : मातृभाषा और महात्मा गांधी का दृष्टिकोण* / 139
- गुरु सेवक सिंह / *21वीं सदी के उपन्यासों में चित्रित ग्रामीण परिवेश* / 143
- गीतांजलि कालरा / *जयशंकर प्रसाद व मोहन राकेश के नाटकों ....*/ 148

- डॉ. अचला पांडेय / **विस्थापित जीवन जीने का सजीव चित्रण : 'बसंती'** / 153
- मदन मोहन जोशी एवं दीपांकुर जोशी / **मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में संवाद, नवाचार, और रचनात्मकता का अध्ययन : विशेष संदर्भ उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय** / 159
- डॉ. गरिमा त्रिपाठी / **प्रकृति के कवि : नागार्जुन** / 178

ENGLISH SECTION

Research Article

- Aduana Panmei and Dr. Sampreety Gogoi / **Assessing the menopause stress level among the post menopausal women of Imphal East and Imphal West, Manipur** / 183
- Ajay Kumar and Dr. Hemant Kumar Jha / **Human-Nature Interface in the works of Ernest Hemmingway and Ruskin Bond: An Ecocentric Study** / 190
- Gopira M.R. and Dr. J. Jayakumar / **Exploration of Identity and Modern Materialism in Kurt Vonnegut's *The Sirens of Titan*** / 197
- M. Kanagarajan and Dr. G. Keerthi / **The Social Difference in Rohinton Mistry's "A Fine Balance"** / 203
- S. Mercy Lourdes Latitia and Dr. J. Jayakumar / **Expedition for Distinctiveness in Shashi Deshphande's *That Long Silence* and Anne Tyler's *A Slipping-down Life*** / 210
- Mrs. A. Nevedhini and Dr. K. Ramachandran / **A Critical Study on Mahesh Dattani's Thirty Days in September** / 215
- Mrs S. Hema Malini and Dr S. Suganya / **Portrayal of Friendship in J.K Rowling's Harry Potter and The Chamber of Secrets** / 219
- Dr. Keerthi and D. Aruna Devi / **Gender discrimination and Subjugation in the Select Novels of Buchi Emecheta** / 225
- C. Chidambaram / **Sufferings, Miseries and Panics of Women in the Novels of Shashi Deshpande** / 231
- Ms. S. Lavanya and Dr. V. Sangeetha / **An Analysis of Lilith's Grief in Octavia Butler's *Dawn*** / 235
- G. Sriram and Dr. K. Ramachandran / **Eternal Search of Identity in Mordecai Richler's Novel Solomon Gursky was Here** / 241
- C. Krishnamoorthi and Dr. P. Kiruthika / **Apparition of a Working Class Man in Phillip Roth's *I Married a Communist*** / 247
- Chandra R. and Dr. P. Mythily / **Representation of Multi-culturalism in Yann Martel's *Life of Pi*** / 252
- Nithya M and Dr E. Kumar / **The Objective Outlook in J.M Coetzee's *Disgrace*** / 258

- R. Mythili and Dr. V. Suganthi / **Female Psyche's Quest for Liberation - From Subservience to Challenging Authority: Mahesh Dattani's "Bravely Fought the Queen"** / 262
- Dr. K. Ramachandran and R. Madhan / **Human entrapment due to Cultural Confrontation : A Study on Anita Desai's Novel Fasting Feasting** / 268
- Dr. G. Ruby and S. Raja / **The Idea of Psychological Consciousness of Beauty in Toni Morrison's *The Bluest Eye*** / 275
- Mrs. A. P. Nandhini and Dr. G. Ruby / **Traces of Sigmund Freud's Psychological Elements in the Characteristic Features of Arun Joshi's Protagonists** / 280
- Sima Nath / **Crisis of Dual Identity in Rita Chowdhury's *Chinatown Days*** / 286
- Radhika J. and Dr. T.S. Ramesh / **An Eco Spiritual Approach to Thakazhi Sivasankara Pillai's *Chemmeen*** / 292
- Montu Saikia and Dr. Manab Medhi / **Recasting Women in History: A comparative Study of Bernard Shaw's *Saint Joan* and Bhabendra Nath Saikia's *Amrapali*** / 298
- Bavatharani A. and Dr. T.S. Ramesh / **Intricate Delineation of Women–an Unhabitual Inquiry of Salma's the *Hour Past Midnight*** / 304
- Dr. Junti Boruah / **Reflections of Postcolonial Disorder in V.S Naipaul's *The Mimic Men*** / 310
- Projnya Paromita Kaushik / **An Evaluative Study of the Essay "On the Abolition of the English Department" by Ngugi Wa Thiong'o** / 316
- Dr Rakesh Chandra Rayal / **Social media &online education in Open and Distance learning** / 320
- Mini Srivastava, Prof. (Dr.) Arvind P. Bhanu and Prof. (Dr.) Ashwani Kr. Dubey / **Social Media Platforms–Assessment of the journey, trends and impacts** / 331
- Vardan Dikshit and Dr. Abhishek Upadhyay / **IOT technology impact in Real estate Market** / 338
- Dr Sekh Abdul Hakim / **Silence of the male poet and voice of the female poet: Seamus Heaney's *Punishment* and Mamta Kalia's *Tribute to Papa*** / 345
- Elangbam Priyokumar / **Rise of a Heroine: Puyanu in B.M. Maisnamba's *Ningthemnubi*** / 351
- Shilpa Rani / **Self: A Comparative Study of Laxminarayan Tripathi's *Me Hijra, Me Laxmi* and Living Smile Vidya's *I am Vidya....*** / 358

- Dr. T.S. Ramesh and P. Yogapriya / **Sleuthing and Disability: A Study on the Refashioned Gaze** / 364
- Thokchom Somorjit Singh and Dr. Laishram Thambal Singh / **Effect of Selected Drills on Sub-maximal Oxygen Consumption....** / 369
- S. Shanmugam and Dr. G. Keerthi / **Dominant Tradition and Socio-Cultural factors in Chirta Banerjee Divakaruni's The Mistress of Spices** / 375
- S. Rajaprabu and Dr. G. Keerthi / **Cultural Conflict in Chetan Bhagat's *2 States: The Story of My Marriage*** / 380
- Dr. Ph. Jayalaxmi / **Understanding Manipuri Women Writers and the Emerging Issues in their Writings** / 384
- Dr. Ramyabrata Chakraborty / **A Critical Perspective on the Development of Indian Nationalist Literature** / 392
- G. Gokula Nandhini and Dr. T. Alagarasan / **Cultural Identity and A Gastropolitical Study in M. G. Vassanji's *No New Land*** / 397
- Priyanka and Dr. Anu Shukla / **Consequences of Economic Power : A Study of the Selected Novels of Chitra Banerjee Divakaruni** / 405
- A. Akthar Parveen and Dr. P. Kumaresan / **"Fountain of Emotions in Female Voice"-An Analysis of Chitra Banerjee Divakaruni's....** / 412
- Anuja Koothottil and Dr. Jeevaratnam G / **Cross-Linguistic Influence in French phonology acquisition: Learning experiences of Malayalam speaking students in Coimbatore** / 417
- Partho Banerjee and Dr. Abhishek Upadhyay / **Digital Marketing....** / 425
- Pushkar Singh Bisht and Prof. Sophie Titus / **The comparative study among the Cricket and Basketball players on selected motor fitness components in Pithoragarh college students** / 432
- V. Senthil Nathan and Dr. N. Ramesh / **An Exploration of Generation Clash, Marital Disharmony and Family Conflict in Amit Chaudhuri's ....** / 443
- P. Kumar and Dr. K. Dharaniswari / **Quietness to Viceas Emergeda New Woman in Manju Kapur's Home** / 448
- Vidyasagar Maurya and Dr. Bharti Sharma / **Impact of remedial programme on basic mathematics skills of children with learning disabilities** / 454
- S. Nandhini and Dr. A. Kayalvizhi / **Flat and round characters in Shashi Deshpande's *The Dark Holds No Terrors*** / 460
- Deepak Kumar Kashyap and Dr. Anupama Saxena / **Women Empowerment through Elected Women Representatives in Panchayati Raj....** / 466
- Dr. Narendra Kumar, Dr. Sumita Ashri and Ms. Kiran / **A shift from Divinity to Mortality in the works of Amish Tripathi** / 471

संपादकीय

भारतीय ज्ञान परंपरा : सार्वभौमिक समरसता और समावेशी संतुलन का आधार

किसी भी समाज को समझने के लिए अथवा किसी भी समाज की परिकल्पना को समझने के लिए आपको उस राष्ट्र की बनावट और बुनावट को समझना होगा। यही मेटा फिजिक्स/तत्व मीमांसा हमें राष्ट्र की गहराई तक पहुंचाता है और यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि राष्ट्रीय उद्भावनाओं के पड़ाव क्या हैं अर्थात स्वाधीनता, राष्ट्रीय बोध का जुड़ाव क्या है अर्थात संस्कृति,राष्ट्र का बौद्धिक विकास क्या है अर्थात शिक्षा और एक राष्ट्र कैसे निरंतर अपनी संस्कृति से जुड़ाव को बनाए रखती अर्थात समाज।

इसे समझने के लिए आवश्यक है कि हम लोग आधुनिक भारत को समझें। भारत को समझने के लिए इसके जीवन पद्धति को समझना होगा और जीवन पद्धति को समझने के लिए प्राचीन भारत की जीवन पद्धति के साथ-साथ भविष्य के जीवन पद्धति का भी आकलन करना होगा। इसी आकलन में शिक्षा, संस्कृति, समाज, राष्ट्रीयता, राष्ट्रवाद, धर्म, जागरण, आस्था, अनास्था, परंपरा, त्यौहार सब समाहित हैं।

किसी भी राष्ट्र के लिए ये संभव नहीं है कि उसके समस्त नागरिकों की मानवीय चेतना एकरूप मानवीय चेतना से ओतप्रोत हो, एक रंग में रंगे हो और एक तरह के दृष्टिकोण से सोचें। यही राष्ट्र के तत्व मीमांसा की मूल अवधारणा है। यही सोच की प्रक्रिया हमारी संस्कृतियों का निर्माण करती हैं और हमारी भाषाओं का संरक्षण करती हैं। हमारी साहित्यिक विकास यात्रा की साक्षी बनती हैं और हमें हमारे सनातन मानवीय मूल्यों से जोड़ कर रखती हैं।

इस संपादकीय के माध्यम से भारत की प्रवृत्ति को समझने का एक प्रयत्न है। जैसा कि मैंने कहा कि किसी भी राष्ट्र के तत्व मीमांसा की चर्चा में अनेक बिंदु उपस्थित होते हैं परंतु आज हम लोग इस राष्ट्र मीमांसा में शिक्षा, संस्कृति और समाज की बात करेंगे।

शिक्षा क्या है, शिक्षा की परिभाषा क्या है और शिक्षक कौन है... ? शिक्षा सीखने की सुविधा, या ज्ञान, कौशल, मूल्यों, विश्वासों और आदतों के अधिग्रहण की प्रक्रिया है। शिक्षा ही वह

प्रकल्प है जो मानव विकास का मूल साधन है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य को जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन और परिष्कार करना सीखता है जिससे एक सभ्य सुसंस्कृत योग्य नागरिक का निर्माण हो सके। शिक्षा औपचारिक या अनौपचारिक दोनों रूप में हो सकती है। कोई भी अनुभव जो किसी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र को सोचने, महसूस करने या कार्य करने के विधि पर रचनात्मक प्रभाव डालता है, उसे शैक्षिक माना जा सकता है। एक व्यक्ति जो छात्रों को ज्ञान योग्यता या गुण प्राप्त करने में मदद करता है तथा औपचारिक शिक्षा के संदर्भ में दूसरों को पढ़ाने के लिए जैसे विद्यालय, महाविद्याल, विश्वविद्यालय की मुख्य भूमिका में रहता है को हम शिक्षक कहते हैं।

संक्षेप में कहें तो 'जो शिष्य के मन में सीखने की अधिगम जिज्ञासा को जागृत करते वह शिक्षक है।' इसी योग्य नागरिक के निर्माण में समाज और संस्कृति की मूल अवधारणा छुपी हुई है जिसकी बात हम लोग आगे करेंगे। यहां हमने यह जान लिया हैं कि शिक्षक कौन होता है? अब हम जान लेते है शिक्षक कैसा होता है?

भगवद्गीता में भगवान कृष्ण बताते हैं कि एक नायक / शिक्षक / नेता का चरित्र उसकी छवि से अधिक महत्वपूर्ण क्यों है।

यत् यत् आचरति श्रेष्ठ, तत् तत् एव इतरो जनः।

स यत् प्रमाणं कुरुते, लोकः तत् अनुवर्तते॥ -श्रीमद्भगवद्गीता-3/21

अर्थात महापुरुष के कार्यों का दैनिक जीवन के सभी संदर्भ में सामान्य मनुष्य द्वारा अनुकरण किया जाता है। आम लोग उन्हीं मानकों का अनुसरण करते हैं जो उन्होंने अपने अनुकरणीय व्यवहार के माध्यम से निर्धारित किए हैं। परिणामस्वरूप, समाज के प्रत्येक शिक्षक को ऊपर बताए गए तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिए और उसके अनुसार कार्य करना चाहिए। इसीलिए, एक शिक्षक को 'आचार्य' कहा जाता है।

विवेकः सह संयुत्या विनयो विद्यया सह। प्रभुत्वं प्रश्रयोपेतम्, चिह्व मेतत् महात्मनाम्॥

अर्थ-कुशल और विचारशील अभिव्यक्ति के साथ बुद्धि / विनम्रता के साथ शिक्षा / शिष्टाचार के साथ नेतृत्व-ये महान लोगों की विशेषताएं हैं जो जीवन में प्रशंसा और सफलता प्राप्त करते हैं।

शिक्षा के बाद दूसरा शब्द है संस्कृति। भारतीय काल गणना के अनुसार पृथ्वी की उत्पत्ति को एक अरब 97 करोड़ 29 लाख 49 हजार 129 वर्ष बताते हैं। भारत के सभी पारंपरिक पंचांगो में कल्पादि तथा सृष्टयादि के नाम से इन्हीं गणनाओं का उल्लेख भी किया जाता है। जैविक उत्पत्ति के विषय को स्पष्ट करते हुए ऋग्वेद में यह कहा गया है कि सूर्य उत्पादनकर्ता पिता है और पृथ्वी गर्भधारण की सामर्थ्य वाली माता है । इसी संदर्भ को और

अधिक स्पष्ट करते हुए ऋग्वेद का मंत्र कहता है कि तीन तत्व यानी पृथ्वी, जल और वायु प्राणी को माता यानी पृथ्वी से प्राप्त होते हैं तथा अग्नि आकाश और प्राण नामक तीन तत्व उसे पिता यानी सूर्य से मिलते हैं।

यही नहीं बल्कि जैमिनीय ब्राह्मण में उल्लेख है कि सूर्य रश्मिया द्वारा आंतरिक्ष्य सोम के भेदन से जो छींटे पृथ्वी पर गिरे वही औषधियों के रूप में उग आए। मैत्रेयी संहिता में भी लगभग इसी प्रकार से व्याख्या की गई है कि लोमरहित पृथ्वी पर देवों अर्थात प्राकृतिक शक्तियों ने रोहिणी के सहयोग से विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों को प्रत्यारोपित किया था। इस प्रकार वैदिक वांग्मय की उपयुक्त संदर्भों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि परमेष्ठी मंडल अर्थात आकाशगंगा से निर्बाध रूप से स्रुत / निर्झरित अंतरिक्ष सोम की आद्रता में निवेश उर्वरा तत्वों से ही पृथ्वी पर वनस्पति और जीवन की उत्पत्ति हुई है।

मेरा यहां यह बताना सिर्फ उस चेतना की ओर आप को लेकर जाना है जिसे हम भारतीय ज्ञान संपदा कहते हैं। भारतीय ज्ञान संपदा के मूल को समझे बिना भारत की संस्कृति को समझना लगभग असंभव है। यही भूल हम लोग अब तक करते आए हैं। पृथ्वी का अचेतन सृष्टि के रूप में अगर हम कल्पना करें तो न संस्कृति है न मनुष्य। लेकिन अगर हम पृथ्वी को एक चेतनसृष्टि के रूप में देखें तो आप पाएंगे कि पादप से लेकर कीटसृष्टि, क्रीमीसृष्टि, पशुसृष्टि, पक्षीसृष्टि से होते हुए हम लोग मनुष्यसृष्टि की ओर बढ़ जाते हैं। सृष्टि में मनुष्यसृष्टि का अगर अनंत काल से सर्वांगीण विकास कहीं देखने को मिलता है तो वह भारतवर्ष ही है। अब भारतवर्ष क्या है? विष्णु पुराण में कहा गया है-

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चौव दक्षिणम्। वर्षं तद्‌भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः॥

भारत को समझे बिना भारत की संस्कृति को नहीं समझा जा सकता और भारत की संस्कृति को समझने के लिए इसकी सनातन ज्ञान परंपरा को समझना अत्यंत आवश्यक है। कालांतर में 'यत्र विश्वं भावत्येकनीडम' की आत्मवृत्त भावनाओं से अभिप्रेरित होकर अपने उद्देश पूर्ण लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपनाए गए 'चरैवेति चरैवेति' और 'वसुधैव कुटुंबकम' के सिद्धांत के अनुरूप संस्कारित भारतवंशियों का समूह पश्चिम व पूरब के समशीतोष्ण जलवायु वाले भूमि पर फैल गए। वशिष्ठ स्मृति के अनुसार रंग-रूप, आकृति-प्रकृति, सभ्यता-शिष्टता, धर्म कर्म, ज्ञान विज्ञान, आचार विचार एवं शील स्वभाव में सर्वश्रेष्ठ मानव को ही भारतवंशी कहा कहा गया है। संस्कृति को समझने के लिए भारतीय परंपराओं को समझना पड़ेगा और भारतीय परंपरा के अनुसार वेद शब्दब्रह्म है अर्थात ब्रह्म का शब्दमय स्वरूप है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद हमारी संस्कृति के चार स्तंभ है। यहां मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि जो लोग इसे धर्म समझते हैं उन्हें धर्म से ऊपर अध्यात्म के दृष्टिकोण से इसे देखना होगा तभी वह वेद और वेदांग समझ सकेंगे।

हमारे वेदों की आधिभौतिक, आधिदैविक तथा आध्यात्मिक तीनों प्रकार से व्याख्या की जा सकती है इसके उपरांत ही वेदों में ज्ञान कर्म और उपासना यह तीनों विषय हम समझ पाएंगे और इसी के आधार पर वेद को त्रयी विधा कहा जाता है।

प्राचीन भारतीय संस्कृति, सभ्यता, विशाल बौद्धिक संपदा, जीवन दृष्टि, जीवन शैली, मनसा वाचा कर्मणा, व्यवहार एवं सामाजिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक व्यवस्था जो हजारों वर्षों से निरंतर जीवंत तथा प्रगतिशील बनी हुई है का स्रोत हमारी सनातन ज्ञान परंपरा में ही निहित हैं। यही हमारी वैश्विक दृष्टि है, और इसी दृष्टि में वैश्विक दर्शन, वैश्विक सत्य और तात्विक अभिव्यक्ति तथा एकत्व के स्वरूप का ज्ञान छिपा है। यही हमारी संस्कृति है। यही हमारी उपलब्धि है हम सार्वभौमिक समरसता की बात करते हैं हम समावेशी संतुलन की बात करते हैं और हम संस्कार के साथ मनुष्य को मूल्य बोध से अवगत कराने की बात करते हैं। वर्तमान में जहां सभी वस्तुओं के और सभी व्यक्तियों के मूल्य के अनुरूप उनकी गरिमा का निर्धारण किया जाता है वही हम भारतीय सनातन काल से ही स्वयं को मूल्यबोध के साथ मनुष्य के निर्मिती की व्यवस्था के उद्घोषक रहे हैं।

मूल्यबोध के साथ मनुष्य के निर्मिति की व्यवस्था ही समाज है। वर्तमान में हमने इन सभी बातों को विस्मृत कर दिया है और अपनी सुविधा के अनुसार, अपने हित के अनुसार, अपने स्वार्थ के अनुसार संस्कृति को परिभाषित कर रहे हैं। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि भारतीय जहां भी रहे उन्होंने एक नए तरह के वातावरण का निर्माण किया चाहे परिस्थितियां उनके अनुकूल रही हो अथवा प्रतिकूल विशेषकर भारतीय जीवन पद्धति जिसे हम हिंदू जीवन पद्धति कहते हैं के दृष्टिकोण से देखें तो।

वैश्विक परिस्थितियों के साथ सामंजस्य और विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य के साथ अपनी संस्कृति के संरक्षण की जो गहन अनुभूति है उसी में समरसता का सिद्धांत निहित हैं। मूलतः भारतीय धार्मिक न होकर अध्यात्मिक होते धर्म और अध्यात्म का मूलभूत अंतर कहीं सबसे सुस्पष्ट देखने को मिलता है तो वह भारत ही है।

विश्व के किसी अन्य संस्कृतियों में अगर आप बात करें तो विशेषकर यूरोप और अमेरिका के संदर्भ में उनके पास ऐसा कुछ भी नहीं है कि प्राचीन संस्कृति में ऐसा होता था वह बता सकें। उन्हें भाषा से लेकर के कला तक जिसकी भी बात करनी हो किसी और पर आश्रित रहना होता है अथवा हजार दो हजार साल का इतिहास ही उनके पास संपूर्ण वांग्मय का इतिहास है। वहीं दूसरी तरफ देखे तो भारत का इतिहास जितना प्राचीन है, सनातन है उतना ही आधुनिक भी।

यही कारण है कि हमारी संस्कृति सनातन संस्कृति है जिसमें धर्म की अच्छी बुरी बातों से ऊपर उठकर व्यक्ति को अध्यात्म के मार्ग पर ले जाने का प्रयास है, चेष्टा है सत्कर्म है। इसलिए भारत की संस्कृति एक गहन अध्यात्मिक संस्कृति है।

आइए भारत की संस्कृति को स्वतंत्रता के पश्चात स्वतंत्र दृष्टिकोण से देखते हैं-अगर इसे हम उपनिवेशवादी चिंतन के परिपेक्ष में देखें के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारत की सनातन संस्कृति तार्किक भाववाद के रूप में स्वयं को स्थापित करती है। यह भाववाद ही संवेदना का विज्ञान है और मनुष्यता की कसौटी। उपनिवेशवादी चिंतन की चर्चा इसलिए मैं कर रहा हूं क्योंकि भारत का मध्यकालीन इतिहास और भारत का आधुनिक इतिहास कहीं न कहीं इस औपनिवेशिक संस्कृति से प्रभावित रहा है।

आइए मूल बिंदु पर आ जाते हैं और भाववादी विज्ञान क्या है इसे समझ लेते हैं। भारत में दो तरह के भाववाद का प्रचलन रहा है।

पहला शास्त्र कला और दूसरा लोक कला। संस्कृति के निर्माण में शास्त्र कला और लोक कला के बीच जो अंतर क्रिया हुई है जो सामंजस्य बना है और उससे जो प्रतिक्रियाएं हुई हैं उसे ही हम आज जीवित, जागृत, प्रतिष्ठित, पुनर्स्थापित और परिष्कृत करने के लिए प्रयासरत हैं। यही भारत के समाज की चैतन्य दृष्टि है।

अर्थात भारतीय वांग्मय की समस्त चेतना, शास्त्र और लोक कला की परंपराओं में निहित रही है। शास्त्र भी परंपरा के रूप में और लोक भी एक परंपरा के रूप में हमने स्थापित किया है। इसी के अंतर्गत वह संपूर्ण वांग्मय आ जाता है जिसकी हम लोग चर्चा कर रहे हैं इसे ही हम भारतीयता कहते हैं और कई अर्थों में राष्ट्रीयता भी कहते हैं। स्वाध्याय का माध्यम हो, शोध का माध्यम हो, दृश्य कलाए हो, नाट्य कला एवं लोक कलाएं हो, या फिर विविध पारंपरिक त्यौहार की कलाएं सभी मिलकर एक वृहद वांग्मय का निर्माण करती हैं जिसे हम भारतीय सनातन संस्कृति या भारतीय सनातन प्रवृत्ति कहते हैं। आज भी यही हमारे समाज का मूल आधार है।

स्वतंत्रता के अमृत काल में स्वाधीन भारत के विविध रंगों में स्वाधीनता के बाद भारतवर्ष की उन्नति, उत्थान और उत्कर्ष की विमाओं (dimensions) को ज्ञान-विज्ञान, कौशल-तकनीक, साधन-संसाधन, आयोजन-क्रियान्वयन के क्षेत्र-परिक्षेत्रों में विस्तीर्ण रंगों के माध्यम से देखने का प्रयास आभासित होता है। आशा-प्रत्याशा और उपलब्धियों के भारी विरोधाभास की भारतीय मनोदशा शोध का विषय है।

हम आज पूरे स्वाभिमान, आत्मविश्वास के साथ यह कहने की स्थिति में है कि अवसाद पूर्णतः तिरोहित हो चुका है। विश्वमंडल के गगनांचल पर भारतवर्ष के अमृत महोत्सव से छिटकी अमृत बूँदों से एक सप्तवर्णी इन्द्रधनुष की छटा बिखरती है जिसमें भारत की सतरंगी मुस्कान दिग्दिगंत को उत्साहित कर रही है और करती रहेगी। इस इंद्रधनु में पहला रंग आत्मनिर्भरता का है। आजादी के बढते वर्षों के साथ हमारी आत्मनिर्भरता बढ रही है। विश्व के बाजार में भारत की भूमिका हस्तक्षेपकारी है। दूसरा रंग नेतृत्व का है। विश्व के शक्तिशाली देश भारत को सहगामी अथवा नेतृत्वकारी भूमिका में देखने के लिए चाहे-अनचाहे तत्पर हैं। तीसरा

रंग विश्व-शांति की मंगलकामना से भारत की उदात्त छवि और आभिजात्य को चमकाता है। चौथा रंग सेवा, त्याग और समर्पण-सद्‌भाव के सद्‌गुणों का है। (कोरोना जैसी वैश्विक महाआपदा में भारत का यह गुण संपूर्ण विश्व के सामने आया। आपदा से लडने तथा दूसरे देशों को संबल प्रदान करने में हम सबसे अग्रिम पंक्ति में खड़े रहे।) पाँचवा रंग मानवीय संसाधनों की प्रचुरता, और गुणवत्ता का है। विश्व के प्राय: प्रत्येक देश में भारतीय बौद्धिकता अपना प्रकाशवान रंग बिखेर रही है। छठा रंग हमारी अद्‌भुत समन्वयशीलता से बनता है। हम डिजिटल तकनीक और पुरातन संस्कृति दोनों के अद्‌भुत संतुलन के साथ अस्तित्वमान हैं। सातवाँ रंग है हमारी निरंतरता, गतिमानता। एक उपलब्धि की प्राप्ति अगली उपलब्धि के लिए हमें और दूने वेग से तैयार कर देती है।

मैंने जिन सात रंगों की चर्चा की यह भारत के वह स्थाई रंग हैं जो विविधता में एकता को हर काल में परिभाषित करते आये हैं। इस संपूर्ण वांग्मय को इंद्रधनुष के सात रंगों की तरह समझना चाहिए। सभी रंग स्वयं में संपूर्ण है और अपनी एक पहचान और सौंदर्य रखते हैं परंतु इंद्रधनुष की निर्मिती तो तभी हो सकती है न जब विशेष सात रंग अपने अपने सौंदर्य और पूर्ण प्रज्ञा के साथ एक साथ आ जाए।

रंगों का एक साथ आ जाना ही इंद्रधनुष का निर्माण हैं बिल्कुल वैसे ही भारतीय सनातन संस्कृति के उन सभी अंगों को मिलाने पर ही भारतीय वांग्मय का निर्माण होता है। यही अंत: प्रज्ञा हमें विश्व के अन्य संस्कृतियों से अन्य समाजों से श्रेष्ठ, संतुलित, समरस, और सुचिंतित बनाता है। ऐसा इसलिए संभव हुआ है क्योंकि भारतीय जीवन पद्धति धर्म से विच्छिन होते हुए भी अध्यात्म के आधारभूत ढांचे पर चलती है। यही समावेशी और समरसता का सिद्धांत है जो हम आने वाले विश्व को और स्वयं अपने देश के नागरिकों को बताना चाहते हैं समझाना चाहते हैं।

यही नवभारत की चिंतन है। यही नवभारत को समझाना है और यही नवाचार का मूल स्रोत है। नवाचार की चिंता नवभारत के निर्माण के लिए आवश्यक है कि जीवन दृष्टि का विकास संतुलित, समरसता पूर्वक और समावेशी हो।

यह भारत के अतीत की चिंता नहीं है बल्कि यह भारत के वर्तमान की चिंता है और भारत के भविष्य को संवारने की चिंता है। हम सब जानते हैं कि जीवनदृष्टि के विकास के के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है। ज्ञान के दो चरण होते हैं–

पहला दर्शन और दूसरा इतिहास। पहले चरण यानी दर्शन पर मैंने बहुत सारी बातें कहीं हैं परंतु इतिहास की बातें हम सब जानते हैं कि किस प्रकार भारतीय शिक्षा पद्धति को नष्ट कर देने की रणनीति बनाई गई और कैसे मुगलों ने तथा उसके बाद अंग्रेजों ने भारतीय ज्ञान परंपरा को भारतीय समाज से दूर कर दिया। स्वतंत्रता के पश्चात शिक्षा संस्कृति और समाज तीनों को राजनीतिक दलों ने अपने अपने हिसाब से अपने अपने हितों का संरक्षण करते हुए परिभाषित

किया। 'दर्शन किसी भी समाज के तत्व ज्ञान का बोध कराता है वही तत्वज्ञान की प्रामाणिकता को हम इतिहास कहते हैं', और हमारा इतिहास कितना शुद्ध और सत्य है हम सब जानते हैं। ज्ञान इन्हीं दोनों विषयों से मिलकर जीवनदृष्टि का निर्माण होता है जिसमें नवाचार के लिए हम नए नियमों का प्रतिपादन करते हैं।

नए अन्वेषण करते हैं शोध करते हैं, और स्वयं को और अधिक सुसंस्कृत, शक्तिशाली, समावेशी समाज बनाने का प्रयत्न करते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं की स्वतंत्र भारत में ऐसे शिक्षा पद्धति के निर्माण की आवश्यकता थी। ऐसे ही एक समावेशी शिक्षा परिकल्पना और पद्धति को 2020 में हम सब ने स्वीकार किया है, अंगीकार किया है राष्ट्रीय शिक्षा नीति के रूप में। निश्चित रूप में स्वतंत्रता के पश्चात अनेक शिक्षा नीतियां हमारे बीच में आईं, अनेक ज्ञान आयोग का गठन किया गया। परंतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में जो प्रावधान किए गए हैं वह अभूतपूर्व हैं और ऐतिहासिक हैं।

भारत को जिस समावेशी शिक्षा उसकी भाषा में देने की आवश्यकता थी वह स्थिति के अंतर्गत दिखाई पड़ती है और मनुष्यता की अंतर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करने की इच्छा रखती है। कौशल विकास जैसे भारतीय सनातन प्रवृत्ति को पुन: जागृत करने का प्रयास निश्चित रूप से आत्मनिर्भर भारत की ओर एक सक्षम कदम के रूप में देखा जाएगा। वैसे भी कहा जाता है 'स: विद्या या विमुक्तये' शिक्षा वह है जो मुक्ति दिलाए। यहां मुक्ति का अर्थ मृत्यु से नहीं है बल्कि मुक्ति का अर्थ अपने कुविचारों, अपने कुसंस्कारों से मुक्ति का है। लोभ से मुक्ति का है, भ्रष्टाचार से मुक्ति का है। अनुशासनहीनता से मुक्ति का है। अर्थात राष्ट्रीय शिक्षा नीति निश्चित रूप से प्रारंभिक शिक्षा को हमारी मातृभाषा में प्रदान करके हमारी अंत: शक्तियों का वह जीवन के साथ समन्वय बनाने में सफल रहेगी। इसी शिक्षित समाज से हमारे सनातन, समकालीन और भविष्य की संस्कृतियों निर्मित और सुरक्षित रहेगी। परिष्कृत और प्रतिष्ठित होती रहेंगी। संस्कारित और संतुलित रहेंगी। यही संस्कार, यही संतुलन, यही परिष्कार और यही प्रतिष्ठा जो हमें शिक्षा के माध्यम से प्राप्त होगी से हम एक समरस समाज के निर्माण में अपना योगदान दे पाएंगे।

इति!

जय भारत जय भारती।

–**डॉ. आशीष कंधवे**
+91–9811184393

हिंदी दिवस
14 सितम्बर, 2022
नई दिल्ली

नवजागरण, स्त्री चेतना और रवीन्द्रनाथ टैगोर के नाटक

—प्रो. ज्ञानतोष कुमार झा

हिंदी के प्रसिद्ध आलोचक डॉ. रामविलास शर्मा भारतीय नवजागरण को इतिहास के विकास की एक लम्बी प्रकिया का परिणाम मानते हैं। इसकी शुरुआत वे हिंदी साहित्य के भक्तिकाल से ही मनाते हैं जो क्रमशः ब्रिटिश शासन से टकराता हुआ बीसवीं शताब्दी में अपने चरम विकास को प्राप्त करता है।

इस शोधालेख में सामान्य रूप से नवजागरण को यूरोपीय तथा भारतीय परिप्रेक्ष्य में परिभाषित करते हुए नवजागरण सम्बन्धी रवीन्द्रनाथ टैगोर की मान्यताओं को स्पष्ट किया जाएगा। नवजागरण के प्रभाव से भारत में स्त्री चेतना के स्वरूप को संक्षेप में परिलक्षित किया जाएगा. इसी क्रम में स्त्री चेतना सम्बन्धी रवीन्द्रनाथ टैगोर के तीन महत्त्वपूर्ण नाटकों के प्रकाश में उसमें अभिव्यक्त स्त्री चेतना का वर्णन अथवा विश्लेषण किया जाएगा. शोध प्रविधि के तौर पर तुलनात्मक और विश्लेष्णात्मक दृष्टि का प्रयोग किया जाएगा।

नवजागरण का स्वरूप यूरोपीय और भारतीय परिप्रेक्ष्य

पश्चिम में नवजागरण के उदय से पहले (चौदहवीं-पंद्रहवीं शताब्दी) के समय को अंधकार काल के रूप में देखा जाता है जहां सामंतवाद और चर्च के गठजोड़ ने पश्चिमी समाज को रूढ़िग्रस्त और जड़ बना दिया था। पूरा यूरोप बर्बरता का शिकार हो निरंतर युद्ध से जूझता रहता था। यूरोप में नवजागरण इसी बर्बरता और अंधकार की कोख से पैदा हुई नयी चेतना का नाम था। यहाँ नवजागरण शब्द 'रेनेसाँ' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। वैसे तो हिंदी में 'रेनेसाँ' के लिए 'पुनर्जागरण' शब्द का भी प्रयोग किया जाता है, लेकिन यह शब्द मानवीय चिंतन की निरंतरता और सामाजिक सांस्कृतिक क्षेत्र में होने वाले नये-नये परिवर्तन को पूर्णतः संबोधित नहीं कर पाता है। इसलिए परिवर्तन अथवा बदलाव के नित नयेपन की वजह से इसे नवजागरण कहना ही ज्यादा अनुकूल है। भारत में ऐतिहासिक विकास के क्रम में अठारहवीं और उन्नीसवीं सदी के दौरान इस नवजागरण का आरम्भ और विकास होता है। बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में इसका चरम विकास देखने को मिलता है।

भारतीय और यूरोपीय नवजागरण का स्वरूप एक जैसा नहीं है। इसका कारण भिन्न भौगोलिक परिवेश तथा अलग तरह की देशकाल और परिस्थितियां हैं। यही कारण है कि

भारतीय नवजागरण की चेतना के विकास में यूरोपीय नवजागरण सम्बन्धी चेतना की व्यापक दृष्टि दिखाई पड़ती है।नवजागरण का मुख्य कार्य समाज में तर्कपरक दृष्टिकोण का विकास करना तथा स्वतंत्रता और समानता के लक्ष्य को प्राप्त करने की कोशिश करना रहा है। आज पूरी दुनियां में जहाँ भी मानवीय आदर्शों की रक्षा की लड़ाई और लोकतान्त्रिक मूल्यों की रक्षा का संघर्ष चल रहा है वह इसी नवजागरण की अधूरी परियोजना को पूरा करने का एक प्रयास माना जा सकता है।

बुद्धि और सौन्दर्य सम्बन्धी जागरण की तथा धर्मनिरपेक्ष संस्कृति की एक लहर है जिसका उद्‌भव संभवतः चौदहवीं सदी में इटली में हुआ। वह पंद्रहवीं सदी के उत्तरार्द्ध और सोलहवीं सदी के पूर्वार्द्ध में इटली में चरम विकास को प्राप्त हुई। बाद के दिनों में फ्रांस, जर्मनी, स्पेन और इंग्लैण्ड में उसका उत्थान और पतन हुआ।2 आरंभिक दौर में पश्चिम में नवजागरण को बौद्धिक और सौन्दर्य सम्बन्धी नवीन सर्जनात्मक दृष्टि के रूप में देखा गया। समय-समय पर इसका अर्थ परिवर्तित होता रहा। सोलहवीं शताब्दी के इटली का बौद्धिक समाज इस आन्दोलन को 'रिनैसिमेंटो' अथवा क्लासिकी भाषाओं और साहित्य का पुनर्जन्म कहता था।3 विद्या या कला के क्षेत्र में इस "पुनुरुत्थान की परिकल्पना मध्ययुग और आधुनिक काल को अलग करने के लिए किया गया था।4 अठारहवीं शताब्दी में नवजागरण को 'प्रकाश' के अर्थ में लिया गया-'मध्ययुग के बर्बर अन्धकार में प्रकाश'5 इस सन्दर्भ में हेनरी एस। लुकाच का मानना था "अठारहवीं शताब्दी के दार्शनिक धर्म प्रदर्शित करने और चर्च स्थापित करने के विरोधी थे। वे धर्म सिद्धांतों से नफ़रत करते थे और संस्कृति के उन रूपों की निंदा करते थे जो धार्मिक असर पैदा करते थे। वे मध्ययुग को विश्वास और अन्धविश्वास के एक काल के रूप में समझते थे जिसे नवजागरण के प्रकाश में ख़त्म होना था।"6 उन्नीसवीं शताब्दी के रोमांटिक आन्दोलन के साथ एक नया परिवर्तन हुआ। रोमांटिक आन्दोलन ने अपने पूर्ववर्तियों के बुद्धिवाद का तीव्र विरोध करते हुए 'मनोभाव' और 'अनुभूति' को जगह दी। लुकाच ने स्वच्छन्दतावाद के सन्दर्भ में हुए इस बदलाव को रेखांकित करते हुए लिखा है कि, "वे (स्वच्छन्दतावादी) ऐतिहासिक प्रक्रिया में विश्वास रखते थे और विशेषतः धर्म और संस्थाओं के ऐतिहासिक उद्‌गम में रूचि लेते थे। वे प्रायः मध्ययुग में गहन रूचि प्रदर्शित करते थे।"7 फ्रेडरिक बी. अर्त्ज ने अपनी पुस्तक 'फ्रॉम द रिनेसांस टू रोमांटिसिज्म' में नयी चेतना से युक्त इस स्वच्छन्दतावाद को परिभाषित करते हुए और उसकी विचारगत विशिष्टता को चिह्नित करते हुए लिखा है, "तर्क के विरुद्ध भाव, कृत्रिमता के विरुद्ध प्रकृति, जटिलता के विरुद्ध सहजता और संशयवाद के विरुद्ध विश्वास की प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व ही स्वच्छन्दतावाद है।"8 जिसकी बुद्धिवाद की तरह मानवीय स्वतंत्रता की समस्या में गहरी रूचि थी। लुकाच स्वच्छन्दतावाद के उद्‌भव के साथ नवजागरण की चेतना में आये परिवर्तन और विकास की बात करते हुए लिखते हैं, "इसी बिंदु से रोमांटिक इतिहासकारों ने नवजागरण को एक ऐसे युग के रूप में देखा जो मानव जाति को मध्यकालीन धर्म सिद्धांत और अन्धविश्वास के तथाकथित अत्याचार से मुक्त करता था।"9 इस बात को और स्पष्टता से रखते हुए जैकब बुकहार्ट ने अपनी पुस्तक 'इटली की सभ्यता का नवजागरण' (1869) में नवजागरण को

मध्ययुग के विरोधी के रूप में और एक महान सांस्कृतिक रूपांतरण के रूप में व्याख्यायित किया है और उसके प्रमुख लक्षण के रूप में "व्यक्तिवाद, पुरातनता का पुनुरुत्थान तथा संसार और मनुष्य की नयी खोज" चिह्नित किया है।10 फ्रेडरिक एंगेल्स ने आधुनिक काल की शुरुआत करने वाले इस महान आन्दोलन को सामाजिक और ऐतिहासिक विकास के ठोस आधार से जोड़कर देखा। उनके अनुसार "जिसे हम जर्मन अपने ऊपर आई उस समय की राष्ट्रीय विपदा के नाम पर धर्म सुधार काल कहते हैं और फ्रांसिसी लोग पुनर्जागरण काल तथा इतावली लोग चिन्क्वेचेंटो कहते हैं.....उसमें राजशाही ने नगरों के बर्गरों के समर्थन से सामंती आभिजात वर्ग की सत्ता चूर कर दी और राष्ट्रीयता पर आधारित उन महान राजतंत्रों की स्थापना की जिसके अंतर्गत आधुनिक यूरोपीय राष्ट्र और आधुनिक पूंजीवाद विकसित हुए।"11 हंगरी के दार्शनिक और न्यू स्कूल फॉर सोशल रिसर्च, के प्रोफ़ेसर रहे आग्नेस हेलर ने यूरोपीय परिप्रेक्ष्य में नवजागरण को उसकी सम्पूर्णता में समेटते हुए लिखा है "नवजागरण सामंतवाद से पूंजीवाद के संक्रमण की दीर्घकालिक प्रक्रिया का आवेग था।एंगेल्स ने ठीक ही इसे एक 'आन्दोलन' कहा है। रूपांतरण की इस प्रक्रिया में एक समूची सामाजिक और आर्थिक संरचना, मूल्यों की सम्पूर्ण व्यवस्था और जीवन जीने का तरीका डगमगा गया। सब कुछ अस्थिर सा लगने लगा, अविश्वसनीय रफ़्तार से सामाजिक क्रांतियाँ परस्पर सफल हुई। सामाजिक और धार्मिक स्थापित तंत्र में 'ऊँचे' और 'नीचे' के लोगों के स्थान तेजी से बदले।"12 इस तरह कह सकते हैं कि यूरोपीय नवजागरण सदियों लम्बा चलने वाला एक ऐसा परिवर्तनकारी आन्दोलन था जिसने व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के स्तर पर समग्रता में परिवर्तन का आह्वान किया तथा अनुभव, बुद्धिवाद और वैज्ञानिकता के आधार पर मनुष्यता की नयी परिभाषा गढ़ने की कोशिश की। नवीन मानवीय सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को जन्म दिया। इसने समाज एवं राष्ट्र को न सिर्फ बाहरी तौर पर बदला बल्कि आंतरिक रूप से भी व्यापक बदलाव का मार्ग प्रशस्त किया। सत्रहवीं शताब्दी में आधुनिक चेतना, वैज्ञानिक बुद्धि तथा राजनीतिक और आर्थिक ताकत से लैस यही यूरोपीय शक्तियां जब अपने वैश्विक विस्तार के लिए भारतीय उपमहाद्वीप में प्रवेश करती हैं तो यहाँ भी राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर एक खलबली पैदा होती है।सत्रहवीं सदी के उत्तरार्द्ध से इसके स्पष्ट संकेत मिलते हैं और अठारहवीं सदी के पूर्वार्द्ध में परिवर्तन की एक लहर चल पड़ती है।

भारत में अंग्रेजों के आगमन और सत्रहवीं शताब्दी में धीरे-धीरे भारत की राजनीतिक सत्ता पर उनके कब्जे से सबसे पहले भारत की राजनीतिक संरचना में परिवर्तन होता है। सन 1757 ई. के प्लासी के युद्ध से लेकर सन 1857 ई. की क्रांति तक आते-आते अंग्रेज पूरी तरह से भारत की राजनीतिक व्यवस्था को अपनी अधीनता में ले लेते हैं।भारत की पिछड़ी और बिखरी हुई राजनीतिक ताकतों और उस समय के अदूरदर्शी नेतृत्व के कारण वे इसे अपना उपनिवेश बनाने में सफल हो जाते हैं। अंग्रेजों का यह प्रभुत्व सबसे पहले बंगाल पर स्थापित होता है और फिर आगे चलकर उनकी सत्ता सम्पूर्ण भारत में फ़ैल जाती है। अंग्रेजों की सत्ता स्थापित होने के बाद भारत की सम्पूर्ण राजनीतिक और आर्थिक प्रणाली बदलने लगती है। एक कानून के शासन के

तहत भारत एक वृहद् राजनीतिक इकाई के रूप में पुनर्संगठित होता है। परंपरागत कृषि अर्थव्यवस्था के समानांतर एक नयी औद्योगिक और वाणिज्यिक व्यवस्था की नींव पड़ती है जिससे भारत का घरेलु कुटीर उद्योग कमजोर पड़ता चला जाता है और शहर केन्द्रित एक नयी अर्थव्यवस्था अपना पांव पसारने लगाती है।इन सबके अलावा अंग्रेजों के साथ वैज्ञानिक शिक्षा, आधुनिक यातायात और संचार के साधन, मुद्रण यन्त्र और छापाखाना आदि भी आते हैं। नये उद्योग व्यापार की शुरुआत होती है। परंपरागत भारतीय लाला और बनिज समाज आधुनिक उद्योग व्यापार का हिस्सा बनते हैं। उद्योग और व्यापार के क्षेत्र में भी भारतीयों की भागीदारी बढ़ने लगती है। अंग्रेजी प्रशासनिक व्यवस्था, उद्योग व्यापार का बढ़ता दायरा तथा भारतीय लोगों की उसमें बढ़ती भागीदारी और अंग्रेजों द्वारा विकसित जमींदारी प्रथा की वजह से भारत में मध्यवर्ग का उदय होता है। यह मध्यवर्ग एक तरफ अंग्रेजी भाषा, अंग्रेजी शिक्षा अंग्रेजी जीवन शैली, अंग्रेजी साहित्य और संस्कृति के प्रभाव में आया तो दूसरी तरफ आधुनिक शिक्षा और आत्म चिंतन के आलोक में अपने अतीत को भी नयी दृष्टि से देखने लगा। परिणामस्वरूप जहाँ आधुनिक शिक्षा ने वैज्ञानिक दृष्टि दी जिसके माध्यम से उसने मृत सामंती परंपरा, सामाजिक रूढियों, अंधविश्वासों, अशिक्षा, गैर बराबरी और मानवीय गरिमा को तार-तार करने वाली व्यवस्था का विरोध और मूल्यांकन करना सीखा, वहीं गहरे आत्म चिंतन के द्वारा अतीत के साथ एक आलोचनात्मक रिश्ता कायम किया। इसके बल पर अतीत के मृत तत्त्वों का त्याग करते हुए वर्तमान को ताकत देने वाली सार्थक और गौरवपूर्ण चीजों को ढूंढ कर लाने का काम शुरू हुआ। इससे उभरते मध्यवर्ग में एक गहरा आत्मविश्वास पैदा हुआ। इससे भारत में नवजागरण की चेतना को विकसित होने में काफी बल मिला। धीरे-धीरे इन सबका गहरा असर यहाँ के सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं पर भी पड़ता है। ऐतिहासिक विकास की इसी प्रक्रिया की कोख से भारत में चेतना की एक नयी लहर पैदा होती है जिसे पुनर्जागरण, जागरण सुधार अथवा नवजागरण के नाम से जाना जाता है।

कहा जा सकता है कि भारतीय नवजागरण एक तरफ बाहरी तौर पर अंग्रेजी साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष से उद्‌भूत हुआ तो दूसरी तरफ आंतरिक रूप से सामाजिक जड़ता और रुढियों से टकराता हुआ क्रमशः उसका विकास हुआ। इसलिए अठारहवीं शताब्दी में पैदा हुई चेतना की नयी लहर उन्नीसवीं शताब्दी में आकर मजबूत होती है और बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में वह अपने चरम विकास को प्राप्त होती है। इस अर्थ में "भारतीय नवजागरण राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं बौद्धिक जीवन में व्यापक बदलाव एवं नवीकरण की वह प्रक्रिया है जो अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध (बंगाल से) से प्रारंभ हुई और जिसकी परिणति भारत का राजनीतिक एकीकरण और सन 1947 ई. में स्वाधीनता की प्राप्ति में हुई। नवजागरण ने मानवीय चिंतन, ज्ञान विज्ञान एवं कला इत्यादि जीवन के हर एक क्षेत्र में महान रचनात्मक प्रयत्नों को प्रेरित किया, और अनेक बड़े चिन्तकों, कलाकारों, कवियों, दार्शनिकों, समाज सुधारकों तथा नेताओं को जन्म दिया।" तकनीकी एवं औद्योगिक विकास के बढ़ते चरण के साथ ही नवजागरण की यह चेतना उपयुक्त आकार ग्रहण करती है।

यद्यपि भारतीय नवजागरण के विकास को लेकर विद्वानों मे मतभेद है। कुछ विद्वान इसे अंग्रेजों से अनुप्रेरित मानते हैं और मानते हैं कि अंग्रेजों ने शिक्षा व्यवस्था के माध्यम से भारतीय नागरिकों को वैश्विक विकास के साथ जोड़ने का काम किया। कुछ अन्य विद्वान इससे अलग विचार रखते हैं। वसुधा डालमियां ने इस सन्दर्भ में लिखा है-

"राष्ट्रवादी इतिहास लेखन में इस शब्द का गैर-आलोचनात्मक तरीके से इस्तेमाल हुआ है। अगर एक ओर ब्रिटिश औपनिवेशिक दौर को निर्मम शोषण का दौर बताकर उसकी निंदा की गई है तो दूसरी ओर 'उन्नीसवीं सदी के हिंदुस्तान में एक ऐसे महान सांस्कृतिक पुनर्जागरण' के दौर के रूप में उसका गुणगान भी किया गया है 'जिसने उसे मध्ययुग से आधुनिक युग में पहुंचा दिया।'13 भारतीय समाज को जागृत करने में अंग्रेजों की भूमिका स्वीकार करते हुए सैमुअल मथाई ने अपने लेख 'रिनेसां इन इंडिया' में लिखा है- "अंग्रेजी ढंग की शिक्षा लागू करने के पीछे मैकाले और उनके समर्थकों की ईमानदार कोशिश भारत को प्रगति और आधुनिकता के मार्ग पर आगे ले जाना था। उनका उद्देश्य भारतीय जनता पर अंग्रेजी थोपना नहीं था। वे इस आस्था से अनुप्रेरित थे कि भारत पश्चिमी ज्ञान-विज्ञान को हासिल कर सके तथा एक आधुनिक राष्ट्र बन सके। आधुनिक शिक्षा-पद्धति से उन्होंने आशा की थी कि भारत में नवीन चेतना विकसित होगी।"14 दूसरी तरफ इतिहासकार रजनी पाम दत्त का मानना है-" अंग्रेजी ढंग की शिक्षा लागू करने के पीछे मैकाले का उद्देश्य भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना पैदा करना नहीं था, बल्कि उस चेतना को पैदा होने से रोकने के लिए उसकी जड़ तक खोद डालना था....शिक्षा की जो प्रणाली कुशल साम्राज्यवादी प्रशासन के लिए थोपी गई थी उसी ने भारत के लोगों के लिए इंग्लैण्ड के जनतांत्रिक और लोकप्रिय जनांदोलनों तथा जन संघर्षों से और भारत में चल रहे अत्याचारों की तरह के अत्याचारों से लड़ रहे मिल्टन, शेली तथा बायरन जैसे कवियों से प्रेरणा प्राप्त करने का रास्ता भी खोल दिया।"15

तीसरी तरफ आर.सी. मजूमदार इसे एक भिन्न नजरिये से देखते हैं-जिसके प्रति रजनी पाम दत्त भी अपने विश्लेषण में सहमति जताते हैं। मजूमदार भारतीय नवजागरण को यूरोपीय नवजागरण के समानान्तर उसी श्रृंखला में देखने और तदनंतर अंग्रेजी शासन व्यवस्था की भूमिका स्वीकार करने की आलोचना करते हैं। उनके अनुसार "स्पष्टत: यह क्रम-योजना हिन्दुस्तानी औपनिवेशिक परिस्थितियों के साथ मेल नहीं खाती, जहाँ कोई नागरिक समाज संभव नहीं था। उपाश्रयी मध्यवर्ग-जिसका सामाजिक और आर्थिक आधार ब्रिटिश शासन द्वारा सृजित नए समूह थे- विदेशी शासन के ढांचे के भीतर काम करता था। इलाकाई राजसत्ता वाली परिस्थितियों और ब्रिटिश हस्तक्षेप की परतंत्र छत्रछाया में जिस 'ज्ञानोदय' की शुरुआत हुई, वह आधुनिकीकरण करने वाली यूरोपीय बुर्जुआ के प्रति इस उपाश्रयी मध्यवर्ग की सांस्कृतिक प्रतिक्रिया से निर्मित था।"16 इस तरह मजुमदार भारतीय नवजागरण को अंग्रेजों के उपाश्रयी भारतीय मध्यवर्ग की सांस्कृतिक प्रतिक्रिया मानते हैं। वसुधा डालमिया मजूमदार के विचार का संक्षेपण करते हुए लिखती हैं-"भारतीय पुनर्जागरण की अवधारणा के पीछे बुनियादी मान्यता यह है कि ब्रिटिश शासन के कुछ सकारात्मक पहलू थे, जो एक दौर में साथ-साथ सामने आए उसी दौर में भारतीय

संस्कृति का पुनरुत्थान घटित हुआ। बावजूद इसके, यह जुड़ाव भारतीय विकास के लिए ज़रूरी तौर पर फायदेमंद नहीं था।"17 हिंदी आलोचक वीर भारत तलवार भारतीय नवजागरण को विकसित करने में आधुनिक शिक्षित मध्यवर्ग की महत्त्वपूर्ण भूमिका स्वीकार करते हैं। उनके शब्दों में–"आधुनिक शिक्षाप्राप्त भद्रवर्ग उन्नीसवीं सदी के नवजागरण का मुख्य सामाजिक आधार था। यह आधार पश्चिमोत्तर प्रान्त में न सिर्फ बहुत छोटा था बल्कि बहुत बाद में अस्तित्व में आया। बंगाल और बम्बई के प्रान्तों में 1820–30 से आधुनिक शिक्षाप्रद भद्रवर्ग का विकास हो रहा था। हिन्दू कॉलेज (कलकत्ता) और एलोफिन्स्टन कॉलेज (बम्बई) से आधुनिक ज्ञान–विज्ञान की शिक्षा लेकर निकले विद्यार्थियों ने ही नवजागरण के विभिन्न संगठन बनाए और आन्दोलन का नेतृत्व किया।"18 लेकिन तलवार ने भारतीय नवजागरण के द्वंद्वात्मक पहलू को भी रेखांकित किया और लिखा है–"यह समझना भ्रामक होगा कि भारतीय नवजागरण सिर्फ पश्चिमी विचारों के संपर्क की सीधी सरल देन था ।वास्तव में यह दो विचार दृष्टियों की तकरार से पैदा हुई बेचैनी का नतीजा था। नई शिक्षा में विकसित होने वाले हर युवा भारतीयों को नए पश्चिमी ज्ञान और अपनी परंपरा का जैसा तीखा द्वंद्व महसूस होता था वैसा पहले किसी भी दौर में नहीं हुआ।"19 हिंदी के प्रसिद्द आलोचक डॉ. रामविलास शर्मा भारतीय नवजागरण को इतिहास के विकास की एक लम्बी प्रकिया का परिणाम मानते हैं। इसकी शुरुआत वे हिंदी साहित्य के भक्तिकाल से ही मनाते हैं जो क्रमश: ब्रिटिश शासन से टकराता हुआ बीसवीं शताब्दी में अपने चरम विकास को प्राप्त करता है।20

कुल मिलाकर देखा जा सकता है कि यूरोप हो या भारत, नवजागरण मुख्य रूप से समाज में स्थापित सत्ता के विरुद्ध उभर कर सामने आया। यूरोप में यह अतीत के पुनर–चिंतन, वर्तमान में उभरती पूंजीवादी ताकतों के साथ गठजोड़ करता हुआ सामंतवाद के विरुद्ध नये मानवीय ज्ञान का आलोक लेकर आया। यह व्यक्ति की स्वतंत्रता, सामंती शासन की जगह कानून आधारित एक नयी शासन व्यवस्था, वैज्ञानिक ज्ञान पद्धति और मानववाद की स्थापना के साथ आया। वहाँ भारत में भक्तिकाल से जो विद्रोही चेतना साहित्य और संस्कृति के स्तर पर पल रही थी वह आधुनिक काल में नई विदेशी सत्ता से टकराता हुआ बहुत हद तक उसके वैज्ञानिक ज्ञान और शिक्षा व्यवस्था का लाभ लेते हुए नवजागरण की चेतना के रूप में विकसित होता है। यह सम्पूर्ण भारतीय समाज को भीतर से आंदोलित कर देता है। इस अर्थ में भारतीय नवजागरण की चेतना एक तरफ विदेशी हुकूमत के खिलाफ विकसित होती है तो दूसरी तरफ आतंरिक तौर पर भारतीय समाज की तमाम तरह की रूढियों और अमानवीय मूल्यों का विरोध करती हुई एकजूट होने के लिए प्रेरित करती है। यह चेतना बीसवीं शताब्दी में उग्र राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन का रूप धारण करती हुई विस्फोटक हो जाती है। रवीन्द्रनाथ टैगोर उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अखिल भारतीय स्तर पर विकसित हो रही इसी नवजागरण की चेतना से प्रभाव ग्रहण करते हैं और उसके प्रमुख वाहकों में से एक बनते हैं। उनकी प्रतिभा के बल पर भारतीय सृजनात्मक प्रतिभा तथा बौद्धिकता को अंतर्राष्ट्रीय पहचान मिलती है। वे भारतीय समाज की आधी आबादी के स्वत्व और अधिकार के मुखर प्रवक्ता बनकर सामने आते हैं।

नवजागरण और रवीन्द्रनाथ टैगोर

ऊपर हमने इस आलेख में देखा कि भारत में नवजागरण को लेकर विद्वानों में अलग-अलग धारणाएँ हैं। कुछ विद्वान इसे विशुद्ध रूप से पश्चिम की अनुकृति के रूप में देखते हैं, कुछ इसे विशुद्ध रूप से भारतीय नागरिकों की उस विद्रोही चेतना के रूप में देखते हैं जिसका पहला गुबार 1857 में फूटा था। हिंदी क्षेत्र में इसकी अनुगूंज पहले भक्तिकालीन साहित्य में सुनाई देती है, जो आगे चलकर भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन के रूप में परिणत हुआ। कुछ विद्वान मानते हैं कि भारतीय नवजागरण अंग्रेजों के प्रभाव (उनके शासन, शिक्षा, सामाजिक चेतना और सौन्दर्यबोध) से पैदा हुआ और धीरे-धीरे इस नवजागृत चेतना ने अंग्रेजी शासन की शोषक नीतियों तथा उनकी साम्राज्यवादी सोच से भारतीय जनता को परिचित कराया। परिणामस्वरूप भारतीय जनमानस बीसवीं सदी में अंग्रेजों के खिलाफ देश की आजादी के लिए लामबंद हुआ और उसे अंतिम परिणति तक पहुँचाने में सफल रहा। नवजागरण सम्बन्धी रवीन्द्रनाथ टैगोर के विचार इस तीसरी धारणा को पुष्ट करते दिखाई देते हैं।

टैगोर भारतीय नवजागरण पर अंग्रेजों के प्रभाव को बहुत स्पष्टता से स्वीकार करते हैं और उसके अन्त:सूत्र इटली से जोड़कर देखते हैं। उन्होंने अपने निबन्ध 'कालांतर' में स्पष्ट लिखा है," किसी दिन 'रेनेसाँ' की चित्तधारा इटली से उद्वेलित होकर सारे यूरोप के मन में फैली थी। उस समय इंग्लैंड के साहित्य श्रोताओं के मन में 'रेनेसाँ' का प्रभाव विविध रूपों में व्यक्त हुआ था। इसमे आश्चर्य की कोई बात नहीं है - ऐसा न होता तो इंग्लैंड के दैन्य को बर्बरता कहा जाता। सजीव मन के लिए यह संभव नहीं है कि वह सचल मन से प्रभावित न हो।"21 टैगोर इस प्रभाव को सिर्फ इटली से पूरे यूरोप तक नहीं देखते बल्कि उन्हें इस नयी चेतना से पूरा ब्रह्माण्ड आच्छादित दिखाई देता है। वे लिखते हैं, "वर्तमान युग-चित्त की ज्योति पश्चिमी दिगंत से प्रसारित होकर मानव इतिहास के समस्त आकाश में प्रकाशमय है....एक प्रबल उद्दाम वेग से योरोप का मन पृथ्वी भर में व्याप्त हो रहा है।"22 वे इस ब्रह्माण्ड व्यापी यूरोपीय चित्त का भारत पर पड़ने वाले प्रभाव को बहुत ही सहजता से स्वीकार करते हुए लिखते हैं, "यद्यपि हमारे चारों ओर अब भी पंचांग की दीवार उन्मुक्त आलोक के प्रति संदेह जताती है, फिर भी उस दीवार को कहीं-कहीं भेदकर योरोप के चित्त ने हमारे आंगन में प्रवेश किया है, ज्ञान के विश्वरूप को हमारे सामने खड़ा किया है।उसने हमारे सामने मानवीय बुद्धि की सर्वव्यापी उत्सुकता को व्यक्त किया है-यह उत्सुकता अपने अहैतुक आग्रह से निकटवर्ती और दूरवर्ती, छोटी और बड़ी, प्रयोजनीय और अप्रयोजनीय सभी वस्तुओं का संधान करना चाहती है। इस तरह योरोपीय चित्त ने हमें दिखाया है कि ज्ञान राज्य में कहीं व्यवधान नहीं है, उसके सभी तथ्य एक दूसरे से अविच्छिन सूत्रों से बंधे हुए हैं; पंचानन या चतुरानन का कोई विशेष वाक्य विश्व के क्षुद्रतम साक्षी के विरुद्ध अपनी प्रामाणिकता का दावा नहीं कर सकता।" वे यह भी स्वीकार करते हैं कि अभी हमारा समाज अपने आतंरिक चित्त से इसे पूरी तरह स्वीकार नहीं कर पाया है लेकिन "हमारे चिंतन और व्यवहार में एक क्रांति निस्संदेह हुई है"23

यूरोप ने जिस नवीन ज्ञान चेतना का आविष्कार किया उसके प्रति एक अद्‌भुत उत्साह और स्वागत का भाव टैगोर के मन में दिखाई देता है। उनका यह उत्साह यूरोपीय प्रतिभा में मौजूद सत्य-अनुसंधान और विशुद्ध बुद्धि-साधना को लेकर है जो व्यक्तिगत मोह से मुक्त है इसलिए वह प्रतिदिन ज्ञान-जगत पर विजय प्राप्त कर रहा है। व्यक्तिगत मोह से मुक्त विशुद्ध बुद्धि साधना की भारत में लम्बे समय से उपेक्षा होती रही थी, जिसने ज्ञान की किसी भी नयी धारा के विकास और व्यावहारिक जगत में उसकी स्वीकृति के सभी मार्गो को बंद कर दिया था। इसलिए यूरोप के संपर्क से आयी यह नयी ज्ञान चेतना उन्हें बहुत आकर्षित करती है। उसकी नवीनता और जीवन व्याप्तता को वे स्वीकार किये बिना नहीं रहते। उनके शब्दों में,"जब अंग्रेजी साहित्य से हमारा प्रथम परिचय हुआ, हमें उसमें केवल अभिनव रस का ही आस्वाद नहीं मिला था। मनुष्य का मनुष्य के प्रति अन्याय दूर करने का आग्रह भी हमने अंग्रेजी साहित्य में प्राप्त किया था; राजनैतिक क्षेत्र में मनुष्य की जंजीरों के टूटने की घोषणा सुनी थी; वाणिज्य क्षेत्र में मनुष्य के पण्यवस्तु बनाने के विरुद्ध प्रयास देखा था। मानना पड़ेगा कि हमारे लिए यह मनोभाव नूतन था।"24 इस नूतन मनोभाव की विशिष्टता इसमें थी कि, "योरोप के साथ हमारे संपर्क ने एक ओर तो हमें विश्व प्रकृति में कार्य कारण विधि की सार्वभौमिकता दिखाई; दूसरी ओर न्याय अन्याय का वह विशुद्ध आदर्श दिखाया जो किसी शास्त्र वाक्य के निर्देश से, किसी चिर प्रचलित प्रथा के वेष्टन से, या किसी विशेष विधि से खंडित नहीं हो सकता। इसी तत्त्व के सहारे आज हम दुर्बलता के बावजूद अपनी राष्ट्रीय अवस्था बदलने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं।"25 वे मानते हैं कि इस नूतन ज्ञान विज्ञान के साथ अधिकतम सहयोग से ही हम परिवार में, पड़ोस में, गाँव में मनुष्य के व्यक्तिगत स्वातंत्र्य और सम्मान की मांग कर सकते हैं। इसी से समस्त अभाव और त्रुटियों के बावजूद हमारे आत्म सम्मान और स्वाधीनता का मार्ग खुलेगा। इस आत्म सम्मान के गौरव बोध से ही हम देश के लिए दु:साध्य को साध्य करने की आशा रख सकते हैं। यह नयी चेतना उनके साहित्य में स्त्री के स्वातंत्र्य और सम्मान के सवाल को महत्त्वपूर्ण बना देती है, सामाजिक धरातल पर इसकी एक व्यापक पृष्ठभूमि राजाराम मोहन रॉय, ईश्वरचंद विद्यासागर तथा बंकिम चन्द्र चटर्जी जैसी विभूतियों के द्वारा पहले से तैयार कर दी गयी थी।

स्त्री लेखिकाओं के रचनात्मक प्रयास और स्त्री चेतना के चिह्न

नवजागरण के प्रभाव स्वरूप उन्नीसवीं शताब्दी में समाज सुधार आन्दोलन के माध्यम से स्त्री सम्बन्धी सोच में व्यापक बदलाव हो रहा था। इस बदलाव को जहाँ एक तरफ पुरुष रचनाकार अपनी तरह से व्यक्त कर रहे थे वहाँ दूसरी तरफ खुद स्त्री समाज के भीतर से भी बदलाव के स्वर फूट रहे थे। जहाँ पुरुष रचनाकारों की चिंता यह थी कि बदलते समय और समाज के अनुकूल स्त्री की भूमिका क्या हो, उन्हें अपने अनुकूल नयी सामाजिक ज़रूरतों के समानांतर किस तरह संवारा जाए, वहाँ स्त्री लेखिकाएँ शुरू से ही स्त्री अधिकार, स्त्री-पुरुष समानता और स्त्री शिक्षा की ज़रूरत को केंद्र में रख रही थीं। पुरुष प्रयास के सन्दर्भ में राधा कुमार का कथन यहाँ उल्लेखनीय है, "स्त्रियों की शिक्षा के आन्दोलनों का उल्लेख आम तौर से उभरते मध्य वर्ग द्वारा अपनी स्त्रियों को पश्चिमी तौर-तरीकों में ढालने की आवश्यकता के रूप में किया जाता है।

ब्रिटिश शिक्षा के प्रसार और पुरुषों को रोजगार के नए अवसरों के मिलने के मद्देनजर सार्वजनिक तथा निजी का विचार पैदा हुआ तथा दोनों के बीच समन्वय स्थापित करने के बजाय, घर और संसार के विरोध के स्वर उभरे। स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो घर एक पुण्य स्थान होने के बजाय परम्पराओं का मुर्दा बोझ ढ़ोता नज़र आया, जिसे फूहड़ और आदिम कहकर धिक्कारा गया। अत: इसे सुधारकर बाहरी दुनिया के साथ सौहार्द स्थापित करने की आवश्यकता दिखाई पड़ी।"26 स्पष्ट है कि स्त्री सुधार आन्दोलन का उद्देश्य प्राथमिक तौर पर स्त्री की सामाजिक दशा में सुधार नहीं रहा। मध्यवर्गीय समाज अपनी आजीविका और व्यवसाय की ज़रूरत वश अपनी बनी-बनाई दुनिया से बाहर सार्वजानिक स्पेस में जीने के लिए मजबूर होता है। उसे इसी के अनुरूप स्त्री के व्यवहार और आचरण में बदलाव की ज़रूरत महसूस होती है। उन्नीसवीं सदी में पुरुषों के द्वारा अनुमोदित स्त्री आन्दोलन का मूलाधार यही था। लेकिन फिर भी, वह किसी भी रूप में क्यों न हो, महत्त्वपूर्ण बात यह है कि स्त्री चेतना और सुधार की बात सार्वजानिक बहस के केंद्र में आई। इस सन्दर्भ में राधा कुमार आगे कहती हैं, "उन्नीसवीं सदी को स्त्रियों की शताब्दी कहना बेहतर होगा क्योंकि इस सदी में सारी दुनिया में उनकी अच्छाई, बुराई, प्रकृति, क्षमताएँ, उर्वरता गर्मा-गर्म बहस का विषय थे।"27 राधाकुमार की इस धारणा की पुष्टि हिंदी नवजागरण के प्रवर्तक भारतेंदु हरिश्चंद्र के इस कथन से भी हो जाती है, "लड़कियों को भी पढ़ाइए किन्तु उस चाल से नहीं जैसे आज कल पढाई जाती है जिससे उपकार के बदले बुराई होती है। ऐसी चाल से उनको शिक्षा दीजिए कि वह अपना देश और कुल-धर्म सीखें। पति की भक्ति करें और लड़कों को सहज में शिक्षा दें।"28 वीरभारत तलवार ने अपनी पुस्तक रस्साकशी में इस सन्दर्भ में स्त्री शिक्षा एवं सुधार सम्बन्धी भारतेंदु के विचारों का विस्तार से उल्लेख किया है।29

इसी दौर में बांग्ला, मराठी, उड़िया और तमिल में कुछ ऐसी लेखिकाएँ भी उभर कर सामने आती हैं जो न सिर्फ अपने समय के नवजागरण की चेतना के वाहक के रूप में दिखाई देती हैं बल्कि अपनी आत्मकथात्मक रचनाओं के माध्यम से स्त्रियों की शिक्षा, सुधार और जागरूकता की वकालत करती हैं। इनमें मुख्य रूप से रोससुन्दरी देवी की आत्मकथा 'आमार जीवन', शारदा सुंदरी की आत्मकथा 'टेल टू माई लाइफ', नागेन्द्रबाला दासी का उपदेश ग्रन्थ 'नारीधर्म', सरला देवी की आत्मकथा 'नारिरा दाबी' (स्त्री अधिकार), शैलबाला देवी की रचना 'जनसाधारने स्त्री शिक्खा बिस्तरारा उपाय' (स्त्री शिक्षा के प्रसार के उपाय), कोकिला देवी की आत्मकथा 'बिलासिनी',पंडिता रमा बाई ने 'हिन्दू स्त्री का जीवन', एदिदमु सत्यवती की आत्मकथा 'आत्मचरितमु', साध्वी पतिप्राणा अबला का उपन्यास 'सुहासिनी' और सरस्वती गुप्ता का उपन्यास 'राजकुमार' उल्लेखनीय रचनाएँ हैं।30

ये लेखिकाएँ स्त्री के आधुनिकीकरण और सार्वजानिक जीवन में स्त्री की व्यापक भागीदारी के पक्ष में निरंतर लिख रही थीं। सरला देवी अपनी आत्मकथा 'नारिरा दाबी' में स्त्री और पुरुष की समानता का दावा करते हुए लिखती हैं-"हमारे हिन्दू समाज में पुरुषों ने स्त्रियों को बाहरी दुनिया से अलग करके रखा हुआ है।जिस राष्ट्र की आधी आबादी लकड़ी के कुंदे की तरह बेजान पड़ी हुई हो राष्ट्र कोई भी लड़ाई नहीं जीत सकता। यह बड़ी ही

असुविधाजनक स्थिति है। जब तक स्त्री और पुरुष में समानता और सामंजस्यता नहीं आ जाती, हिन्दू समाज के विकास की कल्पना भी कठिन है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि पुरुषों को जो कुछ मिला हुआ है-उस पर स्त्रियों का भी समान अधिकार होना चाहिए। अगर स्त्रियों को अधिकार मिल गए और वे उनका सदुपयोग नहीं कर पाई, तो इसका उत्तरदायित्व भी हम सबको ही लेना होगा। जिसे गलती करने का अधिकार है उसमें सत्य का सामना करने की भी क्षमता होनी चाहिए। स्त्री और पुरुष दोनों को समान दंड देने चाहिए, सिर्फ स्त्रियाँ ही दंड की भागी क्यों हों? पुरुष जब सदाशय हो जाएँगे उन्हें अपनी गलती का अहसास अपने आप हो जाएगा।"31 सरला देवी के इस कथन में यह बात स्पष्टता से देखी जा सकती है कि वे भारतेंदु हरिश्चंद्र या बाल गंगाधर तिलक की तरह स्त्री शिक्षा और सुधार का मतलब पितृसत्ता की नयी ज़रूरतों के अनुकूल स्त्री आचरण में बदलाव मात्र नहीं मानती थी। यहाँ स्त्री के लिए बिल्कुल एक ऐसे सामाजिक बदलाव या परिवर्तन की बात की जा रही है जिसमें स्त्री और पुरुष के बीच बराबरी और सामंजस्य हो। गलती करने का अधिकार सिर्फ पुरुषों को न हो और गलती करने पर पुरुष और स्त्री को एक समान दण्डित किया जाए। स्पष्ट है स्त्री लेखिकाएँ सिर्फ सुधार नहीं परिवर्तन की मांग कर रही थीं।लेकिन इसके लिए स्त्रियों का शिक्षित होना ज़रूरी था।अशिक्षित व्यक्ति न जीवन को ठीक से समझ पाता है और न अपनी भूमिका की ठीक से पहचान कर पाता है। दोनों ही स्थितियों में यह बात सामाजिक विकास के विरुद्ध जाती है। शिक्षा के इसी महत्त्व को दर्शाती हुई नागेन्द्रबाला दासी अपनी पुस्तक 'नारीधर्म में लिखती हैं" अशिक्षित व्यक्ति अपने जीवन का सही ढंग से निर्माण नहीं कर सकता, न ही शिक्षा के अभाव में उसकी प्रतिभा निखर सकती है। अज्ञानी और अशिक्षित व्यक्ति भीषण मनोवेदना से गुजरता है और अक्सर समाज के लिए हानिकारक होता है।"32 शिक्षित महिलाऐं किसी भी रूप में रूढियों और पुराणी मान्यताओं को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होंगी। शिक्षित वर्ग चाहे स्त्री हो या पुरुष एक स्थाई परिवर्तन को जन्म देता है। भारत की पहली महिला डॉक्टर रखमाबाई इसका सबसे बड़ा उदाहरण रही हैं। वह अपने विवाह विच्छेद के सन्दर्भ में न्यायालय के परम्परा और रूढियों पर आधारित निर्णय को भी चुनौती देने से पीछे नहीं हटीं। 4 फरवरी 1887 को मुख्य न्यायाधीश सर चार्ल्स सार्जेंट और जस्टिस फर्नर द्वारा विवाह सम्बन्धी हिन्दू मान्यताओं को आधार बनाकर दिए गए निर्णय (तुम्हें अपने पति के साथ रहना होगा या फिर छह महीने के कठोर कारावास में रहना होगा) के विरोध में उन्होंने अदालत में कहा "कोर्ट के आदेश का पालन न करने के जुर्म में चाहे तो मुझे फाँसी पर चढ़ाया जाए या आजीवन जेल की सजा दे दी जाए किन्तु अपनी इच्छा के विरुद्ध मैं उस पति के घर नहीं जाउंगी जो मुझे पसंद नहीं।"33 यानि नवजागरण ने पढ़ी-लिखी समझदार स्त्रियों (यद्यपि कुछ महिलाओं ने अपनी आत्मकथा में लिखा है यह काम वे अपनी रसोइयों में छुप कर किया करती थीं) को भी नयी चेतना से न सिर्फ निजी स्तर पर जागरुक किया बल्कि स्त्री समाज की स्वतंत्रता और अधिकारों के विषय में भी उन्हें सोचने के लिए प्रेरित किया।

नवजागरण स्त्री चेतना के सन्दर्भ में टैगोर के नाटक

रवीन्द्रनाथ टैगोर के लिए यह अच्छी बात थी कि उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जिस बांग्ला परिवेश में उनका एक व्यक्ति और कलाकार के रूप में विकास हो रहा था वह स्त्री चेतना की दृष्टि से काफी उर्वर था। वहां स्त्री समाज को लेकर चिंता और चिंतन दोनों की शुरुआत हो चुकी थी। बंगाल में नवजागरण के आरंभिक समय से ही स्त्री की सामाजिक स्थिति को लेकर एक संवेदनशील चेतना उभरने लगी थी। इसके सबसे बड़े पुरोधा राजाराम मोहन रॉय थे। उन्होंने 'ब्रह्म समाज' की स्थापना की-जो सनातन हिन्दू समाज की रूढ़ मान्यताओं का विरोधी था। स्त्रियों की सामाजिक दशा का सुधार इस संस्था का प्रमुख लक्ष्य था।स्त्री शिक्षा, विधवा-विवाह और सती प्रथा का उन्मूलन आदि। के लिए ब्रह्म समाज निरंतर प्रयत्नशील रहा। इनके नेतृत्त्व में रवीन्द्रनाथ टैगोर के पिता देवेन्द्रनाथ टैगोर ने भी सती प्रथा जैसी स्त्री विरोधी रीति का विरोध किया और तत्कालीन सरकार पर (लार्ड विलियम बेंटिक) सतीप्रथा विरोधी कानून बनाने के लिए दबाव बनाया। यानी बंगाल में उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भिक दशक में ही स्त्री को लेकर एक नयी चेतना का विकास हो रहा था जिसे निश्चित आकर देने में रवीन्द्रनाथ टैगोर के परिवार की भी महत्वपूर्ण भूमिका बन रही थी। इसमें उनके दादा द्वारकानाथ टैगोर, पिता देवेन्द्रनाथ टैगोर उनकी बड़ी बहन स्वर्ण कुमारी देवी, कादम्बिनी देवी तथा भाई ज्योतिन्द्रनाथ टैगोर आदि सभी सामाजिक और साहित्यिक परिवर्तन में गहरी भूमिका निभा रहे थे। साथ ही उनके साहित्यकार व्यक्तित्व के बनने में ईश्वरचंद विद्यासागर, माइकेल मधुसूदन दत्त, बंकिमचन्द्र चटर्जी, तोरू दत्त, श्री ऑरबिन्दो जैसे महत्त्वपूर्ण बांग्ला साहित्यिक हस्तियों की बड़ी भूमिका रही।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के साहित्य में व्यक्त नवजागरण में न सिर्फ उनके पूर्ववर्तियों की प्रतिध्वनि सुनाई पड़ती है बल्कि ऐसा लगता है मानो राजाराम मोहन राय के नेतृत्व में आरंभ होने वाला नवजागरण रवीन्द्र साहित्य में आकर अपनी पूर्णता को प्राप्त करता है। बांग्ला नवजागरण पर बात करते हुए चार्ल्स एंड्रूज ने ठीक ही लिखा है कि "यदि राममोहन रॉय बांग्ला साहित्य की जड़ हैं जो जमीं के नीचे गहरे तक धंसा हुआ है तो देवेंद्रनाथ टैगोर की तुलना उसकी सशक्त और मजबूत शाखाओं से की जा सकती है और रवीन्द्रनाथ टैगोर की तुलना उस पेड़ पर खिले हुए फूल और फल से की जा सकती है।"34 रवीन्द्र साहित्य में जिस बांग्ला समाज का जीवंत चित्र उकेरा गया है उसमें स्त्री की दशा (अवनति और उन्नति) का वर्णन विस्तार से देखने को मिलता है। खासकर कथा साहित्य (उपन्यास और कहानी) और नाट्य साहित्य में भी।

टैगोर के कथा साहित्य में स्त्री जीवन अपने विविध सन्दर्भो में व्यक्त हुआ है। यही कारण है कि उनके कथा साहित्य में स्त्री जीवन के दोनों रूप दिखाई पड़ते हैं। उनकी आरंभिक रचनाओं में चित्रित स्त्री पात्रों के माध्यम से पितृसत्तात्मक व्यवस्था की जकड़बंदियों में कैद, चुपचाप सब कुछ सहन करने वाली, पूर्णत: समर्पित स्त्री चेतना व्यक्त हुई है। सन उन्नीस सौ तेरह में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित होने और यूरोप की लम्बी यात्रा से वापिस आने के बाद टैगोर की स्त्री चेतना में व्यापक परिवर्तन होता है। बाद के दौर में उनके स्त्री पात्र अपने दमन और पराधीनता को लेकर सचेत, बंधन मुक्त और क्रमश: पितृसत्ता के विरुद्ध विद्रोह की चेतना से लैस स्त्री चरित्र के

रूप में उभर कर सामने आती हैं। इस तरह वे स्त्री मुक्ति के प्रवर्तक बनकर सामने आते हैं और उनकी रचना को पढ़ते हुए यह अनुमान लगाया जा सकता है कि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने आने वाले समय में स्त्री विमर्श के माध्यम से उभरने वाली स्त्री चेतना के विविध रूपों (लेसबियन फेमिनिज्म, इको फेमिनिज्म और रेडिकल फेमिनिज्म) का जैसे पूर्वानुमान लगा लिया था।35 इस अर्थ में टैगोर भारत में 'फेमिनिज्म' की पदावली और अवधारणा के उभरने से पहले ही एक फेमिनिस्ट की तरह लेखन करते हुए दिखाई देते हैं।

टैगोर के सन्दर्भ में एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि उन्होंने न सिर्फ अपनी रचना के माध्यम से स्त्री जीवन की वास्तविकता का चित्रण करते हुए उन्हें जीवंत और बंधनमुक्त मानवी चरित्र के रूप में चित्रित किया है बल्कि पूर्ववर्ती साहित्यकारों द्वारा साहित्य इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्त्री चरित्रों की, की गयी उपेक्षा पर भी गहरा व्यंग्य किया और साहित्य इतिहास में उन उपेक्षित स्त्रियों के पक्ष में बहस भी की है। अपने निबंध 'काव्य की उपेक्षिताएँ' में वे संस्कृत काव्य के गुणज्ञ और बहुज्ञ कवियों पर आक्षेप करते हुए सवाल उठाते हैं," कवियों ने अपने कल्पना-श्रोत का सब करुणा-जल केबल जनक तनया के पुण्य अभिषेक में लगा दिया। लेकिन एक और भी म्लानमुखी, सब ऐहिक सुखों से वंचित राजबधू, जो सीता देवी की छाया के नीचे घूँघट डाले खड़ी है, कवि के कमंडल से एक बूँद अभिषेक-जल भी चिर-दुःख-तप्त नम्र (उर्मिला) ललाट पर नहीं पड़ा!"36 और फिर यही प्रश्न पूरे तथ्य और प्रमाण के साथ प्रियम्बदा और अनुसुइया तथा पत्रलेखा के सन्दर्भ में उठाते हैं। यह स्त्री के प्रति उनकी गहरी संवेदनशीलता का ही प्रमाण है कि वे वर्तमान में स्त्री जीवन की मुक्ति का सवाल उठाते हुए अतीत के संदर्भ में भी उनकी वकालत करने से नहीं चूकते।

नवजागरण का सत्व है स्वाधीनता की चेतना। यह स्वाधीनता व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की भी उतनी ही है जितनी बुद्धि, सत्य शोधन और नव उद्बोधन का है। यही ज्ञान का नया आलोक है जिसके बारे में हिंदी के प्रसिद्ध छायावादी कवि सुमित्रानंदन पन्त लिखते हैं 'प्रथम रश्मि का आना रंगिनी तूने कैसे पहचाना', जिसके लिए महादेवी वर्मा आह्वान कराती हैं-'मधुर मधुर मेरे दीपक जल प्रियतम का पथ आलोकित कर' ज्ञान के इस नये आलोक में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने मनुष्य जीवन को नयी दृष्टि से देखा और इस बात की खोज की कि मनुष्य की इयत्ता क्या है। इसी के समानांतर वे अपने निबंधों में आधुनिक साहित्य की केन्द्रीयता की खोज करते हुए साहित्य के वास्तविक तत्त्व की बात करते हैं। अपने निबंध 'साहित्य तत्त्व' में वे लिखते हैं, "मैं हूँ और सभी कुछ है, मेरे अस्तित्व के भीतर यही युगल मिलन है....मैं हूँ, यह सत्य मेरे निकट चरम मूल्यवान है। इसीलिए जिससे मेरा वह बोध बढ़ता है उसी में मुझे आनंद मिलता है।"37 टैगोर मानते हैं स्वयं से बाहर मनुष्य हरेक उस चीज़ के प्रति जाग्रत रहता है जो उसके होने की इस चेतना को जगाए रखता है। इस अर्थ में 'मैं हूँ' यानि अपने होने का भाव मानवी चेतना और उसके अस्तित्व का केंद्र है। उनके अनुसार आधुनिक साहित्य मनुष्य के इसी स्वत्व की अभिव्यक्ति का माध्यम है। यह स्वत्व जागृत मनुष्य ही हर एक चीज में स्वाधीनता की खोज करता है। मानवी होने के नाते स्त्री पुरुष सब के लिए उसकी इयत्ता अथवा उसका स्वत्व ही सब कुछ है। अपने

इस स्वत्व की रक्षा हर एक मनुष्य का परम स्वाधिकार है। टैगोर के नाटक इस अर्थ में स्त्री के स्वत्त्व को आलोकित कर आधुनिक स्त्री की नयी परिभाषा गढ़ते हुए दिखाई देते हैं। इस सन्दर्भ में उनके तीन नाटक महत्त्वपूर्ण हैं- 'चित्रांगदा' 'तपती' (राजा रानी) और 'बांसुरी'। तीनों नाटक स्त्री जीवन को तीन भिन्न सन्दर्भो में रखते हुए स्त्री स्वत्व की प्रमुखता को उद्‌घाटित करते हैं।

'चित्रांगदा' महाभारत के दो प्रसिद्ध पात्रों के जीवन की विशिष्ट घटना को केंद्र में रखकर लिखा गया नाटक है। इसकी कथाभूमि बहुत ही संक्षिप्त है। चित्रांगदा मणिपुर की राजकुमारी है। वह एक ऐसे कुल में पैदा हुई जिसमें शिव से यह वरदान मिला था कि-उस कुल में कोई पुत्री पैदा नहीं होगी। चित्रांगदा का जन्म उस वरदान के अभेद्य कवच को भेदते हुए हुआ था। नाटक में चित्रांगदा खुद अपना परिचय देते हुए कहती है "मैं चित्रांगदा हूँ, मणिपुर की राजकुमारी। मेरे पितृकुल में कभी पुत्री पैदा न होगी-तप से प्रसन्न होकर देव उमापति ने यह वरदान दिया था। मैंने उस महावरदान को विफल कर दिया है। मातृगर्भ में पैठकर वह अमोघ वाक्य शैवतेज से मेरे दुर्बल प्रारंभ को पुरुष नहीं कर पाया। ऐसी ही कठिन नारी हूँ मैं।"38 लेकिन पितृसत्ता ने उसे परंपरागत स्त्री रूप में पालपोस कर बड़ा नहीं किया। उसका लालन पालन पुत्र के रूप में हुआ। उसे धनुर्विद्या सिखाई गई, राजदंड नीति सिखाई गई। पुरुषोचित उसमें सभी गुण भरे गए। वह पुरुष-वेश में नित्य राज-काज करती। युवराज की तरह मनमाना घूमा करती। वह लाज, भय और अन्तःपुर निवास नहीं जानती थी। वह हाव-भाव, विलास-चतुराई नहीं जानती थी। उसके पिता ने बचपन से उसे राजकाज संभालने वाले युवा के अनुरूप एक शक्तिरूपा योद्धा के रूप में बड़ा किया। और इसी के अनुरूप जनता में वह उनके रक्षक,पालक और अभिभावक के रूप में प्रसिद्ध थी।

आज स्त्री के इसी शक्तिरूपा छवि की बात की जाती है। उसके परावलम्बी होने की जगह स्वाबलंबी बनने की कामना की जाती है। शासित बनने की जगह उसमें शासक बनने के गुण देखे जाते हैं। यह स्त्री की आधुनिक रूप छवि है जिसे चित्रांगदा में उसके पितृकुल ने स्वाभाविक रूप से विकसित किया। लेकिन जंगल में भ्रमण करते हुए पहली बार जब उसने स्व-समाज से बाहर के एक पुरुष (अर्जुन) को देखा तो उसके भीतर की स्त्री कामनाएँ उभर कर बाहर आने और तृप्त होने के लिए बेचैन होने लगीं। अपने समय के एक महा-योद्धा अर्जुन ने उसे पुरुषोचित वेश में देख कर हलके मुस्कान के साथ उपेक्षा की निगाह से देखा। अर्जुन द्वारा की गई यह उपेक्षा चित्रांगदा को चुभती रही, उसे लगा कि शायद अर्जुन ने उसमें स्त्री सुलभ कोमलता, सौन्दर्य और कमनीयता न देखकर उसकी उपेक्षा की है। परिचय पूछने पर अर्जुन ने अपना परिचय देने के बाद कहा "वीरांगने, मैं ब्रह्मचर्य ब्रतधारी हूँ, पति के योग्य नहीं।" अर्जुन की इस प्रतिक्रिया में उसे अपने स्त्री होने की गहरी अवमानना महसूस हुई। वह अर्जुन की उपेक्षा का बाण सहन नहीं कर पा रही थी। चित्रांगदा स्वयं को धिक्कारती है, "पुरुष का ब्रह्मचर्य! धिक्कार है मुझे, मुझसे वह भी डिगाते न बना?" पहली बार उसे अपने बाहुबल पर गर्व महसूस नहीं हुआ। वह कहती है- "इतने दिनों के बाद मैंने समझा, नारी होकर पुरुष के मन को अगर न जीत सकी, तो सारी विद्याएँ बेकार हैं। अबला की कोमल मृणाल-भुजाएँ इससे सौ गुनी अधिक शक्तिशाली होती हैं।"39 वह अपने

अब तक के अर्जित व्यक्तित्व और पहचान को ही शंका की निगाह से देखने लगती है। अपने स्वत्व से उसका विश्वास डगमगा जाता है। दूसरे ही दिन उसने अपना पुरुष बाना उतार फेंका।

नाटक का यह हिस्सा स्त्री मन के द्वंद्व को बहुत बारीकी से उदघाटित करता है। एक तरफ चित्रांगदा का प्रजा रक्षक शौर्यपूर्ण व्यक्तित्व और दूसरी तरफ अर्जुन की उपेक्षा से आहत अपने स्त्री होने पर उसका संदेह। वह परेशान हो कामदेव से कहती है, "अब मुझे अपना पाठ पढाओ; दो मुझे अबला का बल, निहत्थों के जो हैं, वे अस्त्र दो।" लेकिन फिर उसके मन में यह संदेह भी पैदा होता है कि "लाज से सिमटी, शंकित, कांपती हुई एक नारी, बेबश, विह्वल, प्रलापवादिनी। परन्तु वास्तव में मैं क्या वही हूँ? जैसा कि हजारों नारियां, घर-बाहर चारों ओर हैं, केवल रोने की अधिकारिणी! मैं उससे अधिक कुछ भी नहीं?"40 ऐसा नहीं है कि अर्जुन उसके वर्तमान व्यक्तित्व से प्रभावित नहीं होता, लेकिन ऐसा परिचय की एक लम्बी प्रक्रिया से संभव था। जिसका धैर्य चित्रांगदा में नहीं रह जाता। वह अर्जुन को जल्द से जल्द अपने प्रभाव में ले लेना चाहती है। यही कारण है कि वह अपने प्रजा प्रसिद्ध शक्तिरूपा व्यक्तित्व से कुछ दिनों के लिए मुक्ति चाहती है। और स्त्री की सुन्दर, कोमलांगी, अत्यंत सलज्ज, निर्बल अबला और सौन्दर्यपूर्ण व्यक्तित्व की कामना कर बैठती है। और अपने रूपजाल से अर्जुन को प्रभावित कर अपने वश में कर लेती है। दोनों एक दूसरे के प्रेम में वर्ष भर के लिए डूब जाते हैं। परंपरागत स्त्री होने के बोध और आनंद को वह जी भर कर जीती है।

नाटक के इस बिंदु पर अर्जुन के प्रेम और आनंद में डूबी चित्रांगदा को देखकर पाठक को यह भ्रम होता है कि रवीन्द्रनाथ टैगोर अंततः चित्रांगदा के माध्यम से स्त्री के अबला और अपने सौन्दर्य मोह में डूबी, उसी अलंकृत तथा पितृसत्ता के प्रति सर्वसमर्पित रूप को ही स्थापित करना चाहते हैं। लेकिन बात ठीक इसके उलट होती है। चित्रांगदा जिस रूप सौन्दर्य को धारण कर अर्जुन को अपने वश में देखती है, वही अर्जुन वनवासियों के बीच चित्रांगदा के प्रजा रक्षक पूर्वरूप की प्रशंसा सुन उससे मिलने की बात करता है। वह उसके इस अद्‌भुत व्यक्तित्व का साक्षात्कार करना चाहता है। अर्जुन के मुख से उसकी अगाध प्रशंसा सुनकर सुंदरी चित्रांगदा हैरान रह जाती है। अर्जुन को जब पता चलता है कि चित्रांगदा को राज्य से बाहर गया हुआ जानकर दस्यु लोग राज्य पर आक्रमण करने आ रहे हैं तो वह पूर्व अथवा मूल चित्रांगदा का जिक्र करते हुए वर्तमान चित्रांगदा के आग्रह को ठुकरा देता है। चित्रांगदा ने ऐसी अपेक्षा नहीं की थी। उसे विश्वास था कि मेरे सौन्दर्य के आगे उस रूपहीन सामान्य सी दिखने वाली पूर्व चित्रांगदा को अर्जुन तुच्छ समझेगा, लेकिन ऐसा नहीं होता। अर्जुन सौंदर्य के आगे क्षत्रियत्व को ज्यादा महत्व देता है। अर्जुन सुंदरी चित्रांगदा के सामने ही उस शक्तिरूपा चित्रांगदा की प्रशंसा करते हुए कहता है," मैं उसे देख पा रहा हूँ-बाएँ हाथ में लापरवाही से घोड़े की लगाम थामे, दाएं में तीर-कमान, नगर की विजयलक्ष्मी के समान भीत प्रजा जनों को अभय दे रही है। गरीबों के संकरे दरवाजे पर, जहाँ प्रवेश करने में राजा की महिमा को झुकना पड़ता है, वह माता के रूप में दया बाँट रही है।सिंघनी-सी चारों ओर से अपने शावकों को अगोरे हुए है, शत्रु कोई डर से पास नहीं फटकता। लज्जामुक्त, निर्भय, खिली हंसी हँसती वीर्य-सिंह पर सवार जगद्धात्री दया सी घूमती हैं। रमणी

की कमनीय भुजाओं में वह असंकोच बल स्वाधीन, उसके पास रुन-झुन कंकण-किंकणी धिक्-धिक्"41 अर्जुन चित्रांगदा से भोग की जड़ता से मुक्त होकर घोड़े पर सवार हो नक्षत्रों की तरफ निकलने का आह्वान करता है।

तीसरे दृश्य में जब चित्रांगदा को इस बात की याद आती है कि कामदेव द्वारा दिए हुए वरदान की अवधि ख़त्म होने वाली है तो वह इस अवसाद से घिर जाती है कि क्या कल जब मैं अपने असली रूप में अर्जुन के सामने आउंगी तो वे मुझे स्वीकार कर पाएँगे? और उसके भीतर से यही आवाज आती है कि कुछ भी हो वह अपने ओढ़े हुए व्यक्तित्व को और सहन नहीं कर सकती। जो मेरा सहज और स्वाभाविक व्यक्तित्व है वही मैं हूँ, वही मेरा सच है। वह अपने इस मैं की रक्षा के लिए अर्जुन को भी त्यागने में संकोच नहीं करेगी यह संकल्प लेती है। वह कहती है "इस छद्मरूपिनी से मैं सौ बार अच्छी हूँ। उसी अपने का प्रकाश करुँगी मैं, भला न लगे उन्हें, घृणा से चल दें यदि-छाती फट जाए और मर जाऊं मैं-तो भी मैं मैं रहूंगी।"42 नौवें दृश्य में उसका यह विश्वास, दृढ-संकल्प और निजता की रक्षा का भाव ही सही साबित होता है। अर्जुन उसके उसी वीर क्षत्राणी रूप की प्रशंसा करता है, उसे श्रेष्ठ और वरेण्य घोषित करता है जो जनता के बीच उसने चित्रांगदा के बारे में सुनी थी।

अपने होने न होने का अंतर्द्वंद्व, जो सहज है वही श्रेष्ठ है या जो आरोपित है और सर्वानुमोदित वह श्रेष्ठ है का द्वंद्व, जो परम्परित है और पुरुष सत्ता के अनुकूल है या फिर जो निजी है यद्यपि विलक्षण का द्वंद्व है, जो मैं हूँ वही महान या जो मान्य है वही महान है का द्वंद्व यह आधुनिक व्यक्ति की निशानी है। चित्रांगदा नाटक के माध्यम से टैगोर आधुनिक स्त्री को इसी द्वंद्व से बाहर निकालना चाहते हैं। वह स्त्री को इस आत्मविश्वास से भरा हुआ देखना चाहते हैं कि वह जैसी है, जिस रूप में वह खुद को स्वीकार करना चाहती है उस रूप में उसका 'मैं' ही उसका अपना सच है। उसे अपने 'मैं' का अवलम्ब कभी नहीं छोड़ना चाहिए। उसका अपना 'मैं' अपना स्वत्व है, उसे अपने इस स्वत्व की प्राण देकर या लेकर भी रक्षा करनी चाहिए। नाटक में चित्रांगदा अपने इस विशिष्ट रूप की रक्षा करती है। इसके लिए वह निर्भय होकर खड़ी होती है। प्रोफेसर के.डी. पालीवाल ने ठीक ही लिखा है,"यह नारी पौराणिक नारी नहीं है आधुनिक नारी है। आधुनिक नारी की कला निखारने में रवीन्द्रनाथ निपुण रहे हैं। 'चित्रांगदा' में इसका प्रथम विस्मयकारी विस्फोट हुआ है।"43

नवजागरण से प्रभाव ग्रहण करते हुए टैगोर ने जिस आधुनिक स्त्री छवि का 'चित्रांगदा' में निरूपण किया है 'तपती' (मूल नाटक 'राजा और रानी' का अनुवाद) नाटक की सुमित्रा उसी का अगला चरण है। सुमित्रा मरणान्तक अपने स्वाभिमान और स्वत्व की रक्षा करने से पीछे नहीं हटती। 'तपती' जलंधर नरेश विक्रम और उनकी रानी कश्मीर कुमारी सुमित्रा की कथा पर आधारित बहुत ही महत्त्वपूर्ण नाटक है। इसमें स्त्री की वैयक्तिकता, उसके स्वाभिमान और पुरुष केन्द्रित सत्ता के बीच तीखा संघर्ष देखने को मिलता है। परंपरागत पुरुष का प्रतीक राजा विक्रम आधुनिक स्त्रीत्व की प्रतीक रानी सुमित्रा के महत्त्व को तब तक पहचानने में असमर्थ रहता है जब तक कि सुमित्रा अपना प्राणदान नहीं कर देती है। वह अपनी सत्ता और वैभव की ताकत

और अहंकार के आसन से नीचे उतरकर सुमित्रा को नहीं समझना चाहता। सुमित्रा के भीतर जो मानवी करुणा है, किसी भी तरह के अन्याय के प्रति जो तिरस्कार की भावना है और सबसे बढ़कर राजा के साथ रहते हुए अपने जिस स्वाभिमान की वह रक्षा चाहती है, राजा विक्रम न उसे समझ पाता है और न स्वीकार कर पाता है। वह सुमित्रा में एक अनुगामिनी छवि मात्र देखना चाहता है जो सुमित्रा को किसी भी कीमत पर स्वीकार्य नहीं है। इसी से उन दोनों के बीच एक अनवरत विरोध बना रहता है। नाटक की भूमिका में स्वयं टैगोर ने इस बात की तरफ इशारा करते हुए लिखा है, "सुमित्रा और विक्रम का जो सम्बन्ध है उसमें एक विरोध है-सुमित्रा की मृत्यु से उस विरोध का समाधान हुआ है। विक्रम की जो प्रचंड आसक्ति सुमित्रा को पूर्ण रूप से ग्रहण करने में अंतर्निहित थी, सुमित्रा की मृत्यु से उस आसक्ति का अवसान हो जाने पर, उस शांति में ही विक्रम के लिए सुमित्रा के सत्य की उपलब्धि हुई है यही 'राजा और रानी' की मूल बात है।"44

दरअसल यह उपलब्धि राजा विक्रम की नहीं आधुनिक पाठकों की है, जो यह देख सकता है कि स्त्री का स्वाधिकार, स्वाभिमान और स्वत्व छीनकर उसे अनुगामिनी और दासी बनाकर नहीं रखा जा सकता है। वह पुरुष द्वारा दान किए गए सम्पूर्ण वैभव के बदले प्रेम नहीं दे सकती, वह प्रेम के बदले प्रेम चाहती है। रानी सुमित्रा विक्रम के यह समझाने पर कि "अपना सम्पूर्ण राजकोष मैं तुम्हारे चरणों में उड़ेल देता हूँ तुम प्रजा को दान करना चाहती हो, करो दान, जितना जी में आए। तुम्हारे दाक्षिन्य की बाढ़ आ जाए इस राज्य में" रानी सुमित्रा कहती है, "क्षमा करो, महाराज, तुम्हारा राजकोष तुम्हारा ही बना रहे। मेरे शरीर के अलंकार बने रहें मेरी प्रजा के लिए। अन्याय के हाथ से प्रजा की रक्षा का 'महिषी अधिकार' अगर न हो मुझे, तो यह सब तो बंदिनी की वेश-भूषा है मेरे लिए-इसे मैं नहीं वहन कर सकती। महिषी को यदि ग्रहण करो, तो सेविका को भी पाओगे, नहीं तो केवल दासी! सो मैं नहीं हूँ।"45 अंततः राजा धन, वैभव, क्रोध, आवेग, दंड, प्रलय आदि का डर दिखाकर रानी को वश में करना चाहता है । रानी अस्वीकार कर देती है। निर्भय होकर उसके साम्राज्य से बाहर जाने की घोषणा कर देती है। यह बात राजा के लिए असहनीय हो जाती है। उसका अहंकार इस बात को नहीं मानना चाहता है कि एक स्त्री एक राजा (पुरुष) का त्याग कैसे कर सकती है । वह सोचता है, "विश्व के सामने अपने पौरुष को धिकृत होने दूँ! ले आओ पहले उन्हें यहाँ, उसके बाद सबके समक्ष उन्हें त्याग दूंगा।"46 रानी को प्राप्त करने अथवा बंदी बनाने के लिए राजा विक्रम अपने पौरुष दर्प में पागल हो जाता है । वह सम्पूर्ण कश्मीर को जलाकर भी रानी को बंदी बनाने की घोषणा करता है। अंत में रानी सुमित्रा अग्नि समाधि लेकर राजा को अपने अहंकार की अग्नि में निरंतर जलते रहने के लिए छोड़ जाती है।

दरअसल टैगोर इस नाटक में दिखाते हैं कि एक तरफ पुरुष है जो स्त्री को उसके प्रेम के बदले सभी तरह का ऐश्वर्य, सुख, सुविधा देने के लिए तैयार है और बदले में उससे सर्वस्व समर्पण चाहता है। किसी तरह का कोई प्रश्न नहीं, कोई हस्तक्षेप नहीं। एक तरह से सम्पूर्ण अस्तित्व की विस्मृति। राजा सुमित्रा से कहता है, "तुम मुझे समझ नहीं सकी-तुम्हारे हृदय नहीं, नारी! शंकर के तांडव की उपेक्षा कर सकती हो क्या? वह अप्सरा का नृत्य नहीं है। मेरा प्रेम, विराट है वह, प्रचंड है वह, उसी में मेरा शौर्य है-मेरे राज-प्रताप से वह छोटा नहीं। उसकी महिमा

को तुम अगर स्वीकार कर सकती, तो सब कुछ सहज हो जाता....जिस आदिशक्ति के महाश्रोत के ऊपर सृष्टि का बुदबुद बहा जा रहा है, उस शक्ति की उत्ताल तरंगें हैं मेरे प्रेम में। उसे देखो, उसे प्रणाम करो, उसके आगे अपना कर्म-अकर्म द्विधा-द्वंद्व सब बहा दो।"47 लेकिन भय और वैभव के विराट सिंघासन पर बैठे, दूसरे के ह्रदय की पीड़ा न समझने वाले अन्याय और अत्याचार को राजकीय विशेषाधिकार समझने वाले तथा दूसरे की अस्तित्वहीनता को ही अपना प्रेम समझने वाले व्यक्ति को एक स्त्री कैसे प्रेम कर सकती है? प्रेम करना तो दूर भला एक चेतनायुक्त और संसार के सभी प्राणियों की दु:ख और पीड़ा के प्रति संवेदना रखने वाली स्त्री एक अहंकारी पुरुष के साथ रहना कैसे स्वीकार कर सकती थी। रानी सुमित्रा प्रतिवाद करते हुए कहती है-"साहस नहीं है, महाराज साहस नहीं है! तुम्हारा प्रेम अपने प्रेम के पत्र को बहुत दूर छोड़ गया है मैं उसके आगे अत्यंत छोटी हो गयी हूँ। तुम्हारे चित्त-समुद्र में जो तूफान उठा है उसमें से पार होने योग्य मेरी नाव नहीं है, उन्मत्त होकर यदि मैं बहा भी दूँ तो वह एक ही क्षण में डूब जाएगी....जबकि चारों ओर सब वंचित ही वंचित हैं तब मुझे तुम चाहे कितनी ही सम्पदा क्यों न दे डालो, उसमें मेरी रुचि नहीं हो सकती"48

रानी सुमित्रा युद्ध में समझौते के तौर पर जीत कर लाई गयी थीं। युद्ध में कश्मीर की हार और कश्मीर नरेश के समर्पण के बाद अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए कश्मीर कन्या सुमित्रा पहले ही अग्नि समाधि लेना चाहती थी, लेकिन कश्मीर की प्रजा और बंधू-बांधवों की प्राण रक्षा के लिए वह राजा विक्रम को खुद को सौंप देती है। जलंधर आकर जब वह अपने स्वाभिमान की निरंतर अवमानना होते देखती है, राज-काज के किसी भी मामले में जब वह किसी तरह का अपना अधिकार नहीं देखती तो वह विचलित हो उठती है। यहाँ तक कि सामंत शिलादित्य द्वारा बुधकोट की जनता पर हो रहे अत्याचार का जब वह विरोध करती है और उनके लिए न्याय की मांग करती है, राजा उसके इस मांग को भी अस्वीकार कर देता है और उसे अपने दायरे में सीमित रहने अन्यथा दंड भुगतने का भय दिखाता है। सुमित्रा इस स्वत्वहीन होकर जीवन जीने या रानी के आवरण में दासी बने रहने से इंकार कर देती है। विद्रोह कर देती है। सुमित्रा का यह विद्रोही चरित्र उन्नीसवीं सदी की डॉ. रूखमाबाई, पंडिता रमाबाई जैसी स्त्री शक्तियों की याद दिला देती है। उसका यह विद्रोही चरित्र आधुनिक भारतीय नाट्य साहित्य की बड़ी उपलब्धि है। नाटक में सुमित्रा का सम्पूर्ण चरित्र एक आधुनिक स्त्रीवादी व्यक्तित्व की तरह उभर कर सामने आता है। इस सन्दर्भ में टैगोर का एक और नाटक 'बांसुरी' की नायिका बांसुरी भी एक विशिष्ट और आधुनिक स्त्री चेतना का प्रतिनिधित्व करने वाली स्त्री पात्र है।

बीसवीं शताब्दी के आरम्भिक दशक में भारतीय साहित्य जगत में टैगोर एक सृजनात्मक स्त्रीवादी दृष्टि के प्रवर्तक के रूप में उभरते हुए दिखाई देते हैं। यह टैगोर का ऐसा स्त्रीवाद है जिसमें स्त्री का स्वत्व और स्वाभिमान केंद्र में है लेकिन जिसकी परिधि पर चारों तरफ सामाजिक और राष्ट्रीय सरोकार की चिंताएं भी समाहित हैं।

नाटक में वे अपने तई यह विचार व्यक्त करते हुए दिखाई देते हैं कि आधुनिक स्त्री अपने 'मैं' के प्रति पूर्णत: सचेत है। वह अपने इस 'मैं' के होने को निजी स्वाभिमान और स्वत्व के

साथ-साथ देश और समाज के स्वत्व और स्वाधिकार की रक्षा से भी जोड़कर देखती है। उसका 'मैं' अपने झूठे अहंकार में एकांगी और व्यर्थ में एकांत निर्वासन की हद को नहीं छूता, वह अपने को विस्तृत करते हुए समाज में न्याय की रक्षा और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष की हद तक यात्रा करने वाला 'मैं' है। यदि अत्याचारी ताकतें न्याय और मानवीय अधिकार को कुचलते हुए स्त्री के स्वत्व को अपना गुलाम बनाने की कोशिश करती हैं, फिर प्राण देकर भी स्त्री अपने स्वत्व और स्वाभिमान की रक्षा ज़रूर करेगी। 'तपती' (राजा और रानी) इस अर्थ में एक युगांतकारी नाटक है जो ऐतिहासिक पात्रों के माध्यम से आधुनिक जीवन की धड़कन को पूरी जीवन्तता के साथ धारण करता है।और टैगोर एक संघर्षशील, विद्रोही, न्याय और अन्याय का भेद जाननेवाली राष्ट्र की धड़कन के साथ खुद को जोड़कर देखने वाली स्त्री चरित्र की रचना करने में सफल होते हैं। उनके नाटकों में उनका पूरा युग बोलता हुआ दिखाई देता है।

टैगोर के नाटक या कहें सम्पूर्ण साहित्य इस बात की गवाही देता दिखाई देता है कि साहित्य जीवन को उसकी सम्पूर्णता और जीवन्तता के साथ तभी धारण कर सकता है जब वह समाज की आधी आबादी स्त्री की बदलती छवि और भूमिका को ठीक-ठीक दर्ज कर सके। उनके नाटक इस अर्थ में बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण हैं।उनके कहानी या उपन्यास में जीवन के तमाम ब्यौरों के बीच स्त्री-चेतना मंथर गति और बहुत ज्यादा फैलाव के साथ व्यक्त हुई है जबकि नाटक में यही स्त्री चेतना बहुत ही प्रखरता से सीधे-सीधे अपनी जगह बना लेती है।

सन्दर्भ :

1. "रेनेसांस (नवजागरण) शब्द फ्रांसिसी इतिहासकार मिशले (1796-1874 ई.) ने गढ़ा था, और बुर्कहार्ट द्वारा के द्वारा वः ऐतिहासिक अवधारणा के रूप में विकसित हुआ। (डिक्शनरी ऑफ़ फिलासफी, पृष्ठ -270)
2. एन एनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ रिलीजन (वर्जिलिअस फेरम द्वारा संपादित, पृष्ठ- 655)
3. हेनरी एस. लुकाच, द रिनेसांस एंड द रिफार्मेशन, पृष्ठ-207
4. एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, खंड 19, पृष्ठ-122
5. जे. ह्युजिंगा, मैन एण्ड आइडिया, पृष्ठ-255
6. हेनरी एस. लुकाच, द रिनेसांस एण्ड द रिफार्मेशन, पृष्ठ-208
7. हेनरी एस. लुकाच, द रिनेसांस एण्ड द रिफार्मेशन, पृष्ठ-208
8. फ्रेडरिक बी. अर्त्ज, 'फ्रॉम द रिनेसास टू रोमांटिसिज्म', पृष्ठ-226
9. हेनरी एस. लुकाच, द रिनेसांस एंड द रिफार्मेशन, पृष्ठ-208
10. डिक्शनरी ऑफ़ फिलासफी, संपादक-डागोबर्ट डी, रुनिस, लंदन, पृष्ठ-270
11. कार्ल मार्क्स, फ्रेडरिक एंगेल्स, संकलित रचनाएँ, खंड-3, भाग-1 पृष्ठ-45
12. आग्नेस हेलर, रिनेसांस मैन, रुतलेज, पृष्ठ-2
13. वसुधा डालमिया, हिन्दू परम्पराओं का राष्ट्रीयकरण भारतेंदु हरिश्चंद्र और उन्नीसवीं सदी का बनारस, पृष्ठ-18
14. इंडियन रिनेसा, संपादक-के.एन. पणिक्कर (रिनेसा इन इंडिया), पृष्ठ-54-55
15. दत्त, रजनी पाम दत्त, आज का भारत, पृष्ठ-315
16. मजुमदार, आर.सी. मजुमदार, एड. (1963) 1970. ब्रिटिश पारामौंटे एंड इंडियन रिनेसां, पार्ट-IIII1, वोल्यूम-9, पृष्ठ-191 हिस्ट्री एंड कल्चर ऑफ़ द इंडियन पीपुल, बॉम्बे, भारतीय विद्याभवन

17. वसुधा डालमिया, हिन्दू परम्पराओं का राष्ट्रीयकरण (भारतेंदु हरिश्चंद्र और उन्नीसवीं सदी का बनारस, पृष्ठ-18
18. वीर भारत तलवार, रस्साकशी, पृष्ठ-117
19. वीर भारत तलवार, रस्साकशी, पृष्ठ-120
20. रामविलास शर्मा, स्वतंत्रता संग्राम : बदलते परिप्रेक्ष्य, हिंदी माध्यम कार्यन्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
21. रवीन्द्रनाथ टैगोर रचनावली, खंड-32, संपादक इंद्रनाथ चौधरी, पृष्ठ-126
22. रवीन्द्रनाथ टैगोर रचनावली, खंड-32, संपादक इंद्रनाथ चौधरी, पृष्ठ-126
23. रवीन्द्रनाथ टैगोर रचनावली, खंड-32, संपादक इंद्रनाथ चौधरी, पृष्ठ-127
24. रवीन्द्रनाथ टैगोर रचनावली, खंड-32, संपादक इंद्रनाथ चौधरी, पृष्ठ-128-129
25. रवीन्द्रनाथ टैगोर रचनावली, खंड-32, संपादक इंद्रनाथ चौधरी, पृष्ठ-129
26. राधा कुमार, स्त्री संघर्ष का इतिहास, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण-2011, पृष्ठ संख्या- 39
27. वही, पृष्ठ संख्या-23
28. संपादक-ओमप्रकाश सिंह,भारतेंदु हरिश्चंद्र ग्रंथावली-6, पृष्ठ-70
29. वीर भारत तलवार, रस्साकशी, पृष्ठ-33-51
30. गरिमा श्रीवास्तव, नवजागरण : स्त्री प्रश्न और आचरण/अथ सवर्ण स्त्री प्रति-आख्यान, हिंदी समय.comकम
31. सच्चिदानंद मोहंती (2011), सरला देवी मेकर्स ऑफ़ इंडियन लिटरेचर, साहित्य अकादमी, पृष्ठ-48-50 (हिंदी अनुवाद गरिमा श्रीवास्तव)
32. नागेन्द्रबाला दासी, नारीधर्म,पृष्ठ-17 (प्रकाशक-नागेन्द्रबाला दासी स्वयं), कलकता
33. भारत सरकार के लिए रूखमाबाई की गबाही, टेलीग्राफ 15 जुलाई 1887, पृष्ठ-2
34. उद्धृत- एच. चारुलता, फ्रॉम EKXPLOITESH-N एक्स्प्लॉयटेशन टू इमेनशिपेशन : द मेटामोरफोसिस ऑफ़ वुमनहुड इन रवीन्द्रनाथ टैगोर्स फिक्शन, पृष्ठ-07
35. उद्धृत- एच. चारुलता, फ्रॉम EKXPLOITESH-N एक्स्प्लॉयटेशन टू इमेनशिपेशन: द मेटामोरफोसिस ऑफ़ वुमनहुड इन रवीन्द्रनाथ टैगोर्स फिक्शन, पृष्ठ-49
36. रवीन्द्रनाथ टैगोर रचनावली, खंड-33, संपादक इंद्रनाथ चौधरी, पृष्ठ-16
37. रवीन्द्रनाथ टैगोर रचनावली, खंड-34, संपादक इंद्रनाथ चौधरी, पृष्ठ-37
38. रवीन्द्रनाथ टैगोर रचनावली, खंड-08, संपादक इंद्रनाथ चौधरी, पृष्ठ-56
39. रवीन्द्रनाथ टैगोर रचनावली, खंड-08, संपादक इंद्रनाथ चौधरी, पृष्ठ-58
40. रवीन्द्रनाथ टैगोर रचनावली, खंड-08, संपादक इंद्रनाथ चौधरी, पृष्ठ-59
41. रवीन्द्रनाथ टैगोर रचनावली, खंड-08, संपादक इंद्रनाथ चौधरी, पृष्ठ-79-80
42. रवीन्द्रनाथ टैगोर रचनावली, खंड-08, संपादक इंद्रनाथ चौधरी, पृष्ठ-70
43. रवीन्द्रनाथ टैगोर रचनावली, खंड-08, संपादक इंद्रनाथ चौधरी, भूमिका से उ)ृत
44. रवीन्द्रनाथ टैगोर रचनावली, खंड-12, संपादक इंद्रनाथ चौधरी, रवीन्द्रनाथ द्वारा लिखित भूमिका से उद्धृत
45. रवीन्द्रनाथ टैगोर रचनावली, खंड-12, संपादक इंद्रनाथ चौधरी, पृष्ठ-31
46. रवीन्द्रनाथ टैगोर रचनावली, खंड-12, संपादक इंद्रनाथ चौधरी, पृष्ठ-76
47. रवीन्द्रनाथ टैगोर रचनावली, खंड-12, संपादक इंद्रनाथ चौधरी, पृष्ठ-65
48. रवीन्द्रनाथ टैगोर रचनावली, खंड-12, संपादक इंद्रनाथ चौधरी, पृष्ठ-65-66

❑❑❑

???

कबीर की लोक व्याप्ति

—प्रो. मंजुला राणा

कबीर ने सम्पूर्ण समाज को वर्गात्मक ढाँचे में जकड़ा हुआ देखा, पाया। उन्होंने अनुभव किया कि इस ढाँचे के भीतर मनुष्य-मनुष्य से धर्म, वर्ण, जाति, वेश-भूषा, भाषा, क्षेत्र आदि आधारों पर भेद-भाव करता है। कबीर मनुष्य के अपमान को सहन नहीं कर सके। सौभाग्य से उन्हें कवि-हृदय प्राप्त था। इसलिए, उन्होंने अपनी कविता के माध्यम से समाज की और धर्म की उन सभी विकृतियों को जनसाधारण के बीच उजागर किया, जिनसे मनुष्य-मनुष्य के बीच भेद-भाव की चेतना एवं भावना उत्पन्न होती है। वे उपदेशक की भाँति शुष्क एवं नीरस वक्तव्य देकर शांत नहीं हो जाते हैं।

'कबीर' हिन्दी साहित्य की श्रेष्ठतम विभूति तथा वाणी के उन वरद पुत्रों में से एक हैं, जिनकी प्रतिभा के प्रकाश से हिन्दी साहित्याकाश चिर आलोकित रहेगा। कबीर वह कवि हैं, जिनके अन्त:करण में लोक एवं परलोक के प्रति समान आग्रह, समान चिन्ता एवं समान सचेष्टता है। लोक भी कबीर को उतना ही वांछनीय है जितना परलोक। उनका काव्य तत्कालीन लोक-जीवन का दर्पण है। वास्तव में, कबीर मध्यकालीन भक्ति-आन्दोलन की चरम उपलब्धि हैं। मध्यकालीन भक्ति-आन्दोलन के मूल स्रोत के सम्बन्ध में अनेक प्रकार के निष्कर्ष निकाले गये हैं, किंतु वास्तविकता है कि मध्यकाल में एक सशक्त आन्दोलन के रूप में यह लोक जागरण का उत्साह भरा प्रतिफल है, जिसके मूल में सदियों के गतिहीन एवं जड़ीभूत सैद्धान्तिक संस्कारों तथा पतनशील मानवमूल्यों से छटपटाते हुए भारतीय जनमानस को मुक्ति दिलाना मुख्य उद्देश्य था। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए भक्तिकालीन सभी श्रेष्ठ कवियों ने अभूतपूर्व उत्साह दिखाया। भक्ति के इस लोक जागरण के मंच को हिन्दी-कवियों में सर्वप्रथम और सबसे सशक्त तथा व्यापक बनाने वाले कबीर हमारे अद्वितीय लोक-कवि हैं, जिन्होंने जग के बारे में यह जानते हुए भी कि वह सत्य कहने पर मारने को दौड़ता है, बहुत साहस, दृढता एवं निर्भयता के साथ तद्युगीन सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनैतिक सत्य को उजागर किया।

''साधो देखो जग बौराना
साँची कहौं तौ मारन धावै झूठे जग पतियाना।''[1]

इससे बढ़कर उत्साह भला और क्या हो सकता है? तुलसी ने भी ''धूत कहौं अवधूत कहौं देबे को दोउ''[2] - कहकर अपना उत्साह व्यक्त किया था, किन्तु उस उत्साह में वह आँच कहाँ, जिसकी अनुभूति हमें कबीर में होती है। वस्तुत:, कबीर के काव्य में वैचारिक सौन्दर्य का जो अटूट आवेग प्राप्त होता है,

उसका आधार उनका वास्तविक जीवन है। कबीर आजीवन जीवन के मर्म को जानने तथा लोक को जगाने में लगे रहे। वे लोक को समाज, धर्म आदि के वास्तविक मर्म एवं सत्य-सौन्दर्य से पहचान कराते हैं। जीवन के मर्म की पहचान करने एवं कराने की प्रक्रिया में ही कबीर की वाणी काव्य रूप में अवतरित होती है। इस दृष्टि से मैं कबीर को हिन्दी का अद्वितीय लोक-कवि मानती हूँ। उनकी व्यक्तिगत जीवन शैली, कर्म-क्षेत्र, काव्य-संसार एवं उनकी विचारधारा उन्हें एक उदारचेत्ता एवं लोक-कवि सिद्ध करती है। लोक से जुड़ी उनकी कविता मानवमात्र की मुक्ति की कामना करती है, उनके अन्तःकरण में जागृति पैदा करती है। निस्सन्देह, कबीर के समय से अब तक लाखों-करोड़ों निर्धन-असहाय एवं दलितों की आध्यात्मिक प्यास कबीर की निर्गुण वाणी वाली कविता से बुझती रही है। लोक ही नहीं, साहित्य भी इस तथ्य का साक्षी है, तभी तो बीसवीं सदी की सर्वाधिक प्रसिद्ध हिन्दी कहानी 'कफन' के पात्र 'घीसू' एवं 'माधव' तथा कविवर सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का प्रिय पात्र 'चतुरी चमार' गाढ़े वक्त में कबीर के निर्गुण पद ही गाते हैं। वस्तुतः, कबीर अपनी कवित्व शक्ति के बलबूते विश्व में अमर हैं।

यहाँ उल्लेख्य है कि कबीर के पूर्व भी अनेक विचारकों एवं कवियों ने धार्मिक एवं सामाजिक विकृतियों की निन्दा की, साथ ही समाज को सद्मार्ग पर चलने का उपदेश दिया, किन्तु कबीर की अपनी आलोचनात्मक पद्धति में मौलिकता मधुमक्खी की क्रिया-विधि की उस मौलिकता के समान है, जो देख-देखकर एवं चख-चखकर असंख्य फूलों का मधुर रस संग्रह कर उसे मधु में परिवर्तित कर देती है। कबीर ने भी अपनी आध्यात्मिक, सामाजिक एवं धार्मिक अनुभूतियों को उस कविता के रूप में प्रस्तुत किया कि वह इतना अपूर्व रूपा बन गयी कि तत्कालीन लोकमानस भी उस पर मुग्ध हुआ और तब से अब तक वह कविता लोकमानस का कण्ठहार बनी हुई है। कबीर ने कहा है कि वही अक्षर, वही वाणी लोग तरह-तरह से कहते हैं, लेकिन जब कोई मर्मी उसमें अनुभूति का लावण्य मिला देता है, तो वह अमृतमय रसायन बन जाती है।

"सोई आषिर सोई बैयन, जन जू जू वाचवंत। कोई एक मेले लवणि, अमी रसाइण हुँत।।"[3]

वस्तुतः, यह महत्वपूर्ण तथ्य है कि उस सामंती वातावरण के कठिन दौर में कबीर के कवि रूप ने उस कवि-कर्म को साधा, जिसका धर्म लोक धर्म था, न कि सामंती धर्म। इस दृष्टि से कबीर-काव्य उनकी लोक-दृष्टि का प्रत्याख्यान है। कबीर सिकंदर लोदी (सन् 1489-1517 तक) के समकालीन थे। उन्होंने तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं आर्थिक ढाँचे को देखा। सामाजिक दृष्टि से कबीर कालीन समाज-चाहे वह हिन्दू समाज था या मुस्लिम, समाज-मुख्यतः दो वर्गों में - सवर्ण-अवर्ण, स्पृश्य-अस्पृश्य, अमीर-गरीब, ऊँच-नीच, शिक्षित-अशिक्षित, शोषक-शोषित में बँटा हुआ था। एक ओर मुट्ठीभर भूस्वामी-सामन्तों, उनके निजी क्रियाकलापों से जुड़े हुए कुछ थोड़े से लोगों, धनी व्यापारियों एवं धूर्त धर्माचार्यों का वर्ग था, तो दूसरी ओर गरीब किसानों, मजदूरों, कारीगरों एवं विभिन्न पेशेवर निम्न-दलित जातियों का विशाल जनसमुदाय था। वर्ण-व्यवस्था की कठोरता के कारण हिन्दू समाज में तो अनेक विकृतियाँ थीं हीं, किन्तु मुस्लिम समाज भी इन रोगों से बच नहीं पाया था। प्रसिद्ध इतिहासकार

डॉ. आशीर्वादी लाल के शब्दों में, "दीर्घकाल तक भारतीय मुसलमान की स्थिति बहुत ही दयनीय रही होगी। देश के शासन में उसका हाथ नहीं था और न शासन वर्ग में ही उसका स्थान था। अपने बहुसंख्यक हिन्दू देशवासियों से भी धन, सामाजिक स्थिति तथा स्वाभिमान की दृष्टि से वह कहीं अधिक नीचा था।"[4] कबीर और कबीर के समान वे सभी मुसलमान, जिनकी रोजी रोटी जुलाहे कर्म, शिल्पकारी, रंगरेज कर्म आदि से सम्बद्ध थी, मुसलमान होकर भी उसी तरह पद्‌दलित एवं सम्मान वंचित बने हुए थे जैसे वे हिन्दू होकर होते।

धार्मिक दृष्टि से भी तत्कालीन दोनों धर्मो-हिन्दू एवं इस्लाम में जन साधारण के लिए भेद-भाव पूर्ण विचार था। दोनों धर्मो में ईश्वरीय सत्ता, पवित्र धार्मिक ग्रन्थों तथा कर्मकाण्डों पर पुरोहित वर्ग का विशेषाधिकार था, जिसके कारण ईश्वरीय भक्ति भी सबको समान रूप से प्राप्त नहीं हो सकती थी।

कबीर ने सम्पूर्ण समाज को वर्गात्मक ढाँचे में जकड़ा हुआ देखा, पाया। उन्होंने अनुभव किया कि इस ढाँचे के भीतर मनुष्य-मनुष्य से धर्म, वर्ण, जाति, वेश-भूषा, भाषा, क्षेत्र आदि आधारों पर भेद-भाव करता है। कबीर मनुष्य के अपमान को सहन नहीं कर सके। सौभाग्य से उन्हें कवि-हृदय प्राप्त था। इसलिए, उन्होंने अपनी कविता के माध्यम से समाज की और धर्म की उन सभी विकृतियों को जनसाधारण के बीच उजागर किया, जिनसे मनुष्य-मनुष्य के बीच भेद-भाव की चेतना एवं भावना उत्पन्न होती है। वे उपदेशक की भाँति शुष्क एवं नीरस वक्तव्य देकर शांत नहीं हो जाते हैं। उनके पास पाखण्ड-खंडिनी तर्क-भाषा हैं, जिसे वे संवेदना की आँच में पकाकर कविता का रूप देते हैं। इसलिए वे उपदेशक नहीं, हमारे विश्वसनीय कवि बन जाते हैं। हिंदी साहित्य में ऐसी कविता जिसमें तर्क एवं संवेदना का मणिकांचन संयोग हो, जो एक स्तर पर बौद्धिक क्षमता सम्पन्न अकाट्य तर्कों द्वारा सामाजिक एवं धार्मिक विसंगतियों पर निर्मम प्रहार करती हो और दूसरे स्तर पर मानवीय प्रतिष्ठा एवं उनकी गरिमा हेतु प्रेम, करूणा तथा सहानुभूति की वर्षा करती हो - कबीर की ही है।

कबीर ने समाज के सामने मनुष्य की श्रेष्ठता का आदर्श प्रस्तुत किया। वस्तुत:, मनुष्य विधाता की सर्वोत्तम सृष्टि है। भारतीय वांग्मय में मनुष्य की उपस्थिति कभी केन्द्रीय मूल्य के रूप में रही है तो कभी वह मूल्यों की परिधि के किसी बिन्दु पर उपस्थित रहा है; किन्तु वह भारतीय साहित्य के वृत्त से कभी ओझल नहीं हुआ। आत्मा-परमात्मा के चिन्तन से युक्त अध्यात्म दर्शन में उसे निश्चित ही गौण स्थान प्राप्त हुआ है, किन्तु नास्तिक दर्शनों, भौतिकवादी तथा यथार्थवादी दर्शनों का वह मूलाधार रहा है। महाभारत में भी 'नहिं मानुषात् श्रेष्ठतरं किंचित्' का उदघोष कर उसकी श्रेष्ठता एवं महत्ता का प्रतिपादन किया गया है। कबीर मानववादी कवि हैं। उनका सम्पूर्ण चिंतन, कथन एवं मंडन मनुष्य सापेक्ष है। मनुष्य कबीर काव्य का केन्द्रीय तत्व है। मनुष्य की सार्वभौम एकता एवं उसकी महत्ता ही कबीर काव्य का सार तत्व है। उनके लिए मनुष्य सबसे महत्वपूर्ण है, जिसे साई ने गढ़ा हैं। उन्होंने समस्त रूढ़ियों एवं संकीर्णताओं से मुक्त मनुष्य की अवधारणा व्यक्त की। उन्होंने सर्व प्रथम अपने को ही 'ना हिंदू ना मुसलमान' कहकर मनुष्य के रूप में प्रतिष्ठित किया।

कबीर की मानवीय अवधारणा को मनुष्य होकर ही समझा जा सकता है, न कि हिन्दू बनकर, न मुस्लिम बनकर, न दलित बनकर और न सवर्ण बनकर। उनका मनुष्य वर्ग, वर्ण, जाति, धर्म, नस्ल, भाषा, क्षेत्र आदि की संकीर्णताओं को एवं माया रूप भौतिक संसाधनों की जननी लक्ष्मी के मोह-पाश को जलाने वाला ही हो सकता है। कबीर की अवधारणा का मूर्त मनुष्य वह होगा जिसमें अपने घर को जलाने का साहस है -

''हम घर जाल्या आपणां, लिया मराड़ा हाथि।

अब घर जालौं तास का, जे चले हमारे साथि।।''[5]

कबीर ने सबल रूप से इस तथ्य को लोगों के सामने रखा कि परमात्मा ने एक ही बूँद, एक ही ज्योति, एक ही मल मूत्र आदि से सारी सृष्टि रची है। फिर, ब्राह्मण और शूद्र का भेद क्यों-

बूंद एकै मल मूतर, एक चाम एक गुदा।

वस्तुतः, कबीर के राम समाज में अभेद पैदा करने वाले हैं, भेद पैदा करने वाले नहीं। वे मनुष्य के हृदय में प्रेम पैदा करने वाले हैं। इसलिए, कबीर छद्मवेशी धर्माचार्यों की वास्तविकता की पोल खोलते हुए कहते हैं कि उनकी सच्ची प्रीति तो धन-दौलत, पद और प्रतिष्ठा में हैं एवं वे राम भक्तों पर हंसते हैं -

साँची प्रीति विषै माया सूँ, हरि भगतनि तूं हासी।[6]

वस्तुतः, कबीर 'आँखिन देखी' की बात करते हैं। अनुभूत तथ्य को सामने रखते हैं। वे 'आँखिन देखी' बातों, जो सुलझी होती है, के द्वारा लोक-मानस को जगाते हैं। इसलिए, 'कबीर लोक-जागरण के कवि हैं, न कि हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य के प्रतिपादक कवि, जैसा कि डॉ. श्याम सुन्दर दास ने माना है।'[7] यद्यपि कबीर पितृ पक्ष से जुलाहा थे एवं मातृ पक्ष से ब्राह्मण; उनके एक गुरू रामानन्द (ब्राह्मण) थे तथा दूसरे शेख तुर्की (मुसलमान), तथापि कबीर न हिन्दू थे एवं न मुसलमान; इसलिए कबीर समझौतावादी या समन्वयवादी कवि नहीं हैं। कबीर ने अपने लिए नई राह तलाशी और दृढ़ता तथा आत्मविश्वास के साथ कहा था कि 'पंडित मुल्ला जो लिखि दिया, छाड़ि चले हम कछु न लिया।' कबीर का रास्ता बहुत साफ था। वे दोनों को सहर्ष स्वीकार कर समन्वय करने वाले नहीं थे। समस्त ब्रह्माचारों के जंजालों और संस्कारों को विध्वंस करने वाले क्रान्तिकारी थे। समझौता उनका रास्ता नहीं था।'[8] इसी प्रकार, कबीर को समाज सुधारक मानना उनके 'जीवन-मिशन को चरितार्थ करने वाला नहीं है।'[9] कबीर का मूल मिशन था - मानव मन का शोधन।

वस्तुतः, कबीरकालीन जन-जीवन एवं 21वीं सदी के वर्तमान जन-जीवन में हमें कोई आमूल परिवर्तन दिखाई नहीं देता है। विडम्बना यह है कि कबीर को अपना गुरू मानने वाले कबीर-पंथियों तक ने भी वर्तमान परिवेश में उनके मूल विचार का परित्याग कर दिया है। यदि कबीर वर्तमान परिस्थिति को देखते तो उन्हें आज अपना निम्न पद पुनः याद आता -

या जग अंधा मैं केहि समझावों।[10]

उन्होंने कहा था कि उच्च कुल में जन्म लेने मात्र से कोई बड़ा नहीं हो जाता है। बड़े होने की शर्त है कि – कर्म की उच्चता-महानता।

'ऊँचे कुल क्या जनमियाँ, जे करणीं ऊँच न होइ।

सुबरन कलस सुरै भर्या, साधु निन्दा सोइ।।'[11]

कबीर के हृदय में जनसाधारण के प्रति जिस वेग से प्रेम उमड़ता है, वे उतनी ही तीक्ष्णता से सामाजिक रूढ़ियों एवं धार्मिक पाखडों पर प्रहार करते हैं। अपने हृदय में वे एक समानता मूलक समाज की तलाश में जितने बैचेन होते हैं, बाहर एक विभाजित, खंडित एवं रूढ़िपरम्पराओं से गतिहीन बने समाज से मुठभेड़ करते हैं और विशेषता यह है कि उसकी विसंगतियों के विरुद्ध लड़ाई लड़ते हुए कबीर ऊपर से जितने तेजस्वी प्रखर एवं वाचाल दिखाई पड़ते हैं, हृदय-पक्ष से उतने ही प्रेम मुग्ध, आत्मलीन एवं सहज हैं। वस्तुतः, कबीर की आलोचना में गहरा प्यार छिपा है। वस्तुतः, कबीर मानवता के संरक्षक कवि हैं। इसीलिए सबका ध्यान रखने वाले अपने हरि-कबीर हरि सबकूँ भजै।[12] से कबीर सर्वकल्याणार्थ प्रार्थना करते हैं –

कबीर करत है बीनती, भौसागर के ताई। बंदे ऊपरि जोर होत है, जंम कूं बरजि गुसाँई।।[13]

कबीर की चिन्ता सम्पूर्ण लोक के प्रति दृष्टिगोचर हो रही है। उनकी मानवतावादी चिन्ता को सिर्फ दलित वर्ग से जोड़कर देखना उनको पूरी तरह न समझने का परिणाम है। उनकी मानवतावादी दृष्टि में सम्पूर्ण मानव समाज समाहित है। कबीर सभी की खैर (कल्याण) चाहने वाले महाकवि हैं –

कबिरा खड़ा बाजार में, माँगै सबकी खैर। ना कांहू से दोस्ती, ना कांहू से बैर।।[14]

आजकल जिस भूमण्डलीकरण (Globalization) की चर्चा जोरों पर हैं, क्या उसकी गूँज हमें कबीर के वाक्य – 'गल बल शहर अनंत में' – सुनाई नहीं दे रही है? अवश्य सुनाई देती है। कबीर इस विश्व-नगर के सभी मनुष्यों की भलाई हेतु अपने प्रभु से विनती करते हैं। वे जग-कल्याण के कवि हैं। उनके विश्व-कल्याण की भावना में लोक कल्याण की भावना स्वतः समाहित है। जिस प्रकार कुटुम्ब (परिवार) का अगुआ (अभिभावक) कुटुम्ब की मंगल कामना करता रहता है, उसी प्रकार मानव-समाज के अगुआ कबीर ने सभी मनुष्यों की प्रतिष्ठा एवं गरिमा के प्रति सचेष्ट रहते हुए सबके प्रति अपनी मंगल कामना व्यक्त की है। उन्हें तो संसार के कण-कण में राम समाये हुए दिखाई देते हैं।

जहँ देखौं तहँ राम समाना, तुम्ह बिन ठौर और नहिं आना।[15]

यह कबीर का महाभाव है। जो लोग इस संसार को धर्मों, वर्गों, जातियों, नस्लों, क्षेत्रों एवं भाषाओं आदि में बांटकर देखते हैं एवं इस प्रकार के कर्म से स्वार्थ-सिद्धि करते हैं, उनमें ऐसा महाभाव नहीं पैदा हो सकता।

वास्तविकता तो यह है कि कबीर ने मानव-मात्र में एक ही दिव्य ईश्वरीय ज्योति के दर्शन किये थे और इसी आधार पर मानव-मात्र की एकता का प्रतिवादन किया था। वे सच्चे अर्थो में मानवतावादी या मानव धर्मा कहे जा सकते हैं।

कबीर ने नारी को जग की जननी भी कहा है और उसके प्रति अपमान जनक धारणा को मूर्खतापूर्ण माना है –

नारी जननी जगत की पाल पोष दे तोष। मूरख राम बिसार कर ताहि लगावै दोष।।[16]

इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि नारी के कामिनी रूप के प्रति कबीर की दृष्टि कितनी ही कठोर क्यों न रही हो, किन्तु नारी जाति के प्रति उनमें ईर्ष्या भाव नहीं है। वे नारी में भी प्रभु के स्वरूप का दर्शन करते हैं। यदि कबीर सचमुच नारी जाति के निंदक एवं विरोधी होते तो उनकी शरण में, उनके पंथ में महिला संत नहीं होती, किन्तु यथार्थ इसके विपरीत है। उनके जीवन काल से लेकर अब तक कबीर पंथ में अनेक महिला संत भी हुई हैं।

वस्तुत:, कबीर का चिन्तन उच्च स्तरीय है। उन्होंने उस व्यापक मानव धर्म की प्रतिष्ठा की, जिसका मूल 'प्रेम-तत्व' है। यही प्रेम-तत्व मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने वाला है। उसकी गरिमा की प्रतिष्ठा करने वाला है और यही प्रेम-तत्व कबीर का मूल संदेश भी है। उनके काव्य में प्रेम का सामाजिक एवं आध्यात्मिक दोनों स्वरूप विद्यमान है। इस प्रेम धर्म से बढ़कर हिन्दू, इस्लाम या विश्व का कोई भी धर्म नहीं है। कबीर ने दो टूक शब्दों में कहा था –

''पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोई।
एकै आषिर पीव का, पढैं सु पंडित होई।।''[17]

कबीर का अध्यात्म-दर्शन, अर्थ-दर्शन, एवं लोक-दृष्टि

मध्यकालीन हिन्दी साहित्य के महान् सन्तों एवं भक्त कवियों की भक्ति-भावना और दार्शनिक विचारधारा ठोस सामाजिक दर्शन पर आधृत हैं। कबीर के परिप्रेक्ष्य में यह तथ्य और भी निखर कर सामने आता है, क्योंकि कबीर ने इसी दुनिया में सूत बुनते-कातते, व्यक्तिगत समस्याओं से उलझते-सुलझते एवं छद्मवेशी धर्माचार्यों से लड़ते-झगड़ते अपनी आध्यात्मिक यात्रा पूर्ण की। उनका भक्ति-दर्शन इस संसार की पीड़ा को भोगता एवं व्यक्त करता हुआ गुजरता है; साथ ही यह संसार उनकी भक्ति-भावना की निर्मल धारा से प्रक्षालित होकर नवीन जीवनादर्श पाता है।

कबीर ने जनसाधारण को स्वर्ग और नरक के प्रपंच में न पड़कर कर्मरत रहने का संदेश दिया–

श्रग नृक थैं हूं रह्या सतगुरू के प्रसादि।[18]

इतना ही नहीं, कबीर ने स्वर्ग-नरक के प्रपंच में न पड़ने के साथ-साथ जन साधारण को राम-रहीम के आतंक से भी बचाने की कोशिश की,

''हिदूं मूये राम कहि मुसलमान खुदाई। कहै कबीर सों जीवता, दुह में कदे न जाइ।।''[19]

इसका तात्पर्य यह नहीं कि कबीर नास्तिकता के समर्थक हैं। कबीर से बढ़कर आस्तिक कौन हो सकता है; किन्तु, कबीर को अपने इष्ट का भी वह रूप स्वीकार नहीं, जिसके आधार पर समाज में मानव-मानव के बीच भेद-भाव, ऊँच-नीच की भावना उत्पन्न होती है एवं शोषण के सभी रूपों को बढ़ावा मिलता है। कबीर मानवीय चेतना की इस प्रकार की परतंत्रता को स्वीकार करने वाले नहीं थे। इसीलिए, उन्होंने ब्रह्म के निराकार रूप का वरण किया ताकि प्रत्येक भक्त उसको अपने मनोरूप चुन सके। इस प्रकार, कबीर ने ईश्वर को मंदिर-मस्जिद के भेद से बाहर

निकालकर बाहरी कर्मकाण्डों के घेरे से मुक्त कर जीवन के खुले क्षेत्र में लाया। इस प्रकार, कबीर ने समाज की दलित एवं अछूत जातियों के लिए हरि-भक्ति का द्वार खोल दिया, जिनको मंदिरों में प्रवेश करने का अधिकार नहीं था।

कबीर के अनेक पद ऐसे हैं जिनमें उन्होंने अपने जुलाहे कर्म के माध्यम से अपनी भक्ति-भावना को प्रकट किया है। जाति-पाति के भेद-भाव को पूरी तरह अस्वीकार कर चुनने के बावजूद कबीर कभी भूले नहीं कि वे पेशे से जुलाहे हैं; किन्तु विशेषता यह है कि इस कार्य के प्रति उनके मन में हीनता की भावना नहीं है। वे इसे प्रेमा-भक्ति जैसे उदात्त जीवन-मूल्य से जोड़कर ऊँचा उठाते हैं। रुपक एवं सादृश्य योजनाओं से सृजित ऐसे अनेक पद हैं जिसमें कबीर ने अपने जुलाहे कर्म को अध्यात्म के समान्तर रखा है। ऐसे पदों में कर्म एवं अध्यात्म का द्वैत पूरी तरह समाप्त हो गया है। यह उनके लोक-जीवन के साथ सघन जुड़ाव का साक्ष्य है। ''इस दृष्टि से हम कबीर को 'श्रम का समर्थक' प्रथम कवि भी कह सकते हैं।''[20]

कबीर की दृष्टि में जो मनुष्य संसार में रहते हुए कर्म करता है, उसका मन स्वच्छ हो जाता है। जो मनुष्य कर्म नहीं करता, उसका चित्त स्वच्छ-निर्मल नहीं रहता है। मनुष्य को कर्म करते हुए ब्रह्म का ध्यान करना चाहिए। ऐसा न करने से उसका समूल नाश हो जाता है –

''कबीर जे धंधै तौ धूलि, बिन धंधै धूलै नहीं। ते नर बिनठे मूलि, जिनि धंधै में ध्याया नहीं।।''[21]

पाखंडोन्मूलन के सिलसिले में भी कबीर लोक-जीवन के काम में आने वाली घर की चक्की को नहीं भूलते हैं –

''पाथर पूजे हरि मिले तो मैं पुजूं पहाड़। ताते ये चक्की भली पीस खाय संसार।।''[22]

वस्तुत:, कबीर श्रम के समर्थक कवि हैं। उन्हें ज्ञात है कि श्रम के बिना लोक के अस्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती है। उनकी भक्ति 'सूरा' की भक्ति है, कायर की नहीं। 'कबीर ग्रन्थावली' में 'सूरा तन कौ अंग' के अन्तर्गत कबीर ने भक्त को शूरवीर के रूप में चित्रित किया है, न कि लोक से पलायित कायर पुरूष के रूप में। निसंदेह, उनकी कविता कर्म पर आग्रह की कविता है।

कबीर संत एवं कवि दोनों एक साथ हैं। ये दोनों रूप कबीर के व्यक्तित्व के अविभाज्य पक्ष हैं। महान संवेदनशील कवि होने के कारण कबीर तत्कालीन समाज में आर्थिक रूप से विपन्न गरीब जनता, किसान, मजदूर एवं शोषित वर्ग के प्रति तटस्थ नहीं रह सके।

कबीर ने आर्थिक विषमता का भयावह चित्रण किया है। एक तरफ झोपड़ियों एवं मिट्टी के बने कच्चे घरों में रहने वाले गरीब किसानों, मजदूरों का निम्न जीवन-स्तर तो दूसरी तरफ अपनी ऊँची अट्टालिकाओं पर गर्व करने वाले शोषक वर्ग का आर्थिक रूप से उच्च जीवन-स्तर। इसको कबीर सहन नहीं कर सके। उन्होंने शोषक वर्ग को जीवन की अन्तिम सच्चाई को याद दिलाकर सचेत किया है –

''कबीर कहा गरबियौ, ऊँचे देखि अवास। काल्हि पर्युभ्वैं लेटणां, उपरि जामें घास।।''[23]

कबीर का सम्पूर्ण मानव और सम्पूर्ण कवि हमारे समक्ष आध्यात्मिक चेतना एवं लोक-चेतना को एक साथ उजागर करते हुए उपस्थित होता है। कबीर-काव्य में लोकचेतना और आध्यात्मिक

चेतना की अनुगूंजों में पूर्वापरता की भी स्थिति नहीं है। उनकी कविता में ये दोनों इस प्रकार घुल-मिले हैं कि - ताता लोहा यूं मिले संधि न लखई कोई।[24]

उनकी वाणी की तरंग में लोक चेतना और आध्यात्मिक चेतना के आयाम को निम्न गणितीय ग्राफ के रूप में प्रदर्शित किया जा सकता है -

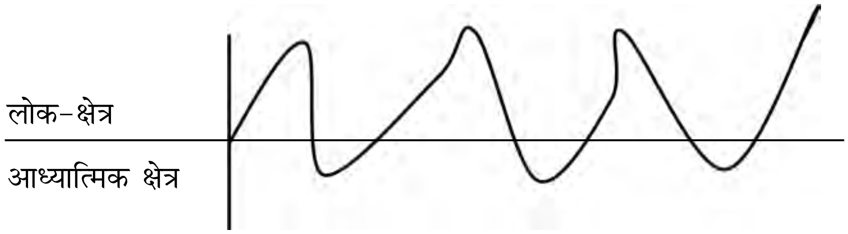

स्पष्ट है कि कबीर-काव्य में आध्यात्मिक चेतना का स्वर जितना ऊँचा है, उतना ही लोक-चेतना का स्वर भी। उनकी लोक चेतना आध्यात्माभिमुखी है एवं आध्यात्मिक चेतना लोकाभिमुखी। वास्तव में, एक ही भाव तरंग है, जो यथार्थ संसार से उठकर कबीर के आत्मसंसार को व्याकुल कर रही है, मथ रही है तथा उनकी आत्मा की अमृत रस-धारा से मधुर बनी उनके आत्म-संसार से उठकर वही भाव-तरंग लोक को दिव्य बना देना चाहती है, लेकिन मूल विशेषता यह है कि हर बार तरंग की यह उड़ान धरती के सामाजिक यथार्थ पर आकर रुकती है। उनकी लोक-चेतना एवं आध्यात्म चेतना एक दूसरे में अनुस्यूत है। अंतत:, कबीर की आध्यत्मिकता को उनकी लोक-चेतना से एवं उनकी लोक-चेतना को आध्यत्मिकता से अलग कर समझना एक तरह से उनके शक्ति-स्रोत एवं समष्टि दर्शन को ही नकार देना है। उनकी अनुभूत वाणी लोक से अध्यात्म और अध्यात्म से लोक तक विचरण करती है।

इस प्रकार, कहा जा सकता है कि कबीर की लोक-दृष्टि एवं उनकी आध्यात्मिक दृष्टि एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। किसी को दूसरे का 'बाई प्रोडक्ट' या 'फोकट का माल' कहकर उपेक्षित करना कबीर की मूल भावना एवं थीम के प्रति अन्याय करना है।

वे जातिवाद, धार्मिक कट्टरता एवं आडम्बर आदि का विरोध अवश्य करते हैं, किन्तु जाति-घृणा को प्रश्रय नहीं देते। इस संदर्भ में डॉ. रामचन्द्र तिवारी का मत पूर्णत: समीचीन न होते हुए भी महत्वपूर्ण है, "कबीर को जितना आक्रोश सामाजिक और धार्मिक असमानता के प्रति है, उसका शतांश भी आर्थिक विषमता के प्रति नहीं है। एक आस्तिक भारतीय की भाँति वे धनी या निर्धन होना ईश्वर की कला का परिणाम मानते थे। आर्थिक विषमता भी मनुष्यों की ही स्वार्थवृत्ति का परिणाम है, यह उनकी समझ में नहीं आया था। वे मानते थे कि भगवान ने जिसके लिए जितना निश्चित किया है, उसे उतना ही प्राप्त होगा। चाहे जितना सिर खपाया जाय, उसमें न एक राई कम हो सकता है न एक तिल बढ़ सकता है। सुख-दु:ख अपने ही कर्मो का भोग है। यह कर्मफल का सिद्धान्त उन्हें भी मान्य था।''[25]

कबीर लोक-कवि के रूप में हमारे सामने सदैव उपस्थित रहेंगे। उन्होंने लोक-मंगल, मानवता एवं सामाजिक एकता की प्रतिष्ठा हेतु अपना सर्वस्व जीवन समर्पित किया। इस दृष्टि

से कबीर मानव-धर्म के ध्वजवाहक हैं। नाभादास जी ने 'भक्तमाल' में कबीर के व्यक्तित्व की प्रधान विशेषताओं को निम्नलिखित शब्दों में व्यक्त किया है –

'हिन्दू तुरूक प्रमान रमैनी सबदी साखी। पक्षपात नहिं बचन सबहिं के हित की भाखी।।'

अनुभव के ताप में तपी उनकी साखी, सबद, रमैनी आज भी समाज को दिशा-निर्देश दे रही हैं और सदैव देती रहेंगी। लोकरंग के अद्‌भुत रंगरेज कबीर एक सांस्कृतिक दूत बनकर सदैव प्रासंगिक रहेंगे।

संदर्भ सूची :

1. कबीर : पुनर्पाठ/पुनर्मूल्यांकन – डॉ0 परमानंद श्रीवास्तव, पृ. 153 से उद्‌धृत, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, 2001
2. कवितावली – गोस्वामी तुलसीदास, 7/106 गीता प्रेस, गोरखपुर।
3. कबीर ग्रंथावली – (सं.) डॉ. पुष्पपाल सिंह, पृ. 216 (विचार कौ अंग, साखी-7)
4. कबीर ग्रंथावली – (सं.) डॉ. पुष्पपाल सिंह, पृ. 307 (पद-28)
5. दिल्ली सल्तनत (711-1528) डॉ. आशीर्वादी श्रीवास्तव, पृ. 299-300
6. कबीर ग्रंथावली- (सं.) डॉ. पुष्पपाल सिंह, पृ. 404 (पद-108)
7. कबीर ग्रंथावली- (सं.) डॉ. पुष्पपाल सिंह, पृ. 403 (पद-197)
8. कबीर ग्रंथावली- (सं.) डॉ. पुष्पपाल सिंह, पृ. 315 (पद-41)
9. कबीर ग्रंथावली – (सं.) डॉ. श्याम सुन्दर दास, पृ. 25
10. कबीर – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ. 192
11. कबीर – (सं.) डॉ. विजेन्द्र स्नातक, पृ. 233-234
12. कबीरदास : विविध आयाम – (सं.) डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय, पृ. 75 से उदधृत (भारतीय भाषा परिषद् कलकत्ता, पृ.-2002)
13. कबीर ग्रंथावली, (सं.) डॉ. पुष्पपाल सिंह, पृ. 196 (कुसंगति कौ अंग, दोहा-7)
14. उपर्युक्त, पृ. 277 (निगुणां कौ अंग, दोहा-10)
15. उपर्युक्त, पृ. 255 (सूरा तन कौ अंग दोहा-40)
16. उपर्युक्त, पृ. 278 (बिनती कौ अंग, दोहा-5)
17. उपर्युक्त पृ. 541 (रमैणी, 20वीं की 18वीं पंक्ति)
18. कबीर मीमांसा – डॉ. रामचन्द्र तिवारी पृ. 141
19. कबीर ग्रंथावली – (सं.) डॉ. पुष्पपाल सिंह, पृ. 316 (पद-43)
20. कबीर ग्रंथावली – (सं.) डॉ. पुष्पपाल सिंह, पृ. 174 (कामी नर कौ अंग, दोहा-7)
21. कबीरदास : विविध आयाम – (सं.) डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय, पृ. 15 से उद्‌धृत
22. तुलसी साहित्य : विवेचन और मूल्यांकन – (सं.) डॉ. वचनदेव कुमार एवं डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा, 4308 (डॉ. रामधारी सिंह 'दिनकर' का निबन्ध 'तुलसीदास पर कुछ स्फुट विचार' से उद्‌धृत)
23. कबीर ग्रंथावली – (सं.) डॉ. पुष्पपाल सिंह, पृ. 172 (कथणी बिना करणी कौ अंग, दोहा-41)
24. कबीर ग्रंथावली, पृ. 350
25. कबीर ग्रंथावली, पृ. 352

❑❑❑

पूर्व सदस्य, उत्तराखंड लोक सेवा आयोग, आचार्य, हिंदी-विभाग,
हे.न.ब. गढ़वाल (केंद्रीय) विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल), उत्तराखण्ड

संसद भवन में भित्तिलेख : वर्तमान प्रासंगिकता

—डॉ. बिपिन कुमार ठाकुर

संसद भवन के गुम्बदों, मेहराबों, कक्षों और अन्य स्थलों पर उत्कीर्ण ये अभिलेख हमारे इस विश्वास और धारणा के प्रतीक हैं कि ज्ञान के प्रचार-प्रसार को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि उसमें उस समय की सोच और विचारों को समाहित और समेकित किया जा सके। इस प्रकार, इन उत्कृष्ट अभिलेखों में समाहित प्राचीन भारत का संचित ज्ञान हम भारत-वासियों की आशाओं और आकांक्षाओं को परिलक्षित करता है।

''हमारी संसद, संसदीय प्रजातंत्र की धुरी है तथा इसका सुचारू रूप से चलना अनिवार्य है। यह विदित है कि हमारा संविधान इसे व्यापक शक्तियाँ प्रदान करता है। साथ ही संसद भवन के भव्य गुम्बदों, मेहराबों कक्षों और अन्य स्थल पर उत्कीर्ण भित्तिलेख जो कि हमारी सभ्यता की विरासत से लिया गया है एक आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान करती है। यह हमारे धरोहर एवं विरासत की समृद्धि को दर्शाता है। साथ ही जनप्रतिनिधि के आवश्यक गुण, कर्त्तव्यों एवं जन कल्याण की भावना की प्राथमिकता एवं महत्व पर भी प्रकाश डालता है।"

भारतीय संसद भारतीय संसदात्मक प्रजातंत्र को सुचारू रखने के निमित्त सबसे महत्वपूर्ण संस्थाओं में से एक है। हमारे संविधान के अन्तर्गत केन्द्रीय विधान मण्डल को संसद की संज्ञा दी गई है और यह संसद द्विसदनात्मक सिद्धांत के आधार पर संगठित की गई है।1 संविधान के अनुच्छेद 79 में लिखा है, ''संघ के लिए एक संसद होगी जो राष्ट्रपति और दोनों सदनों से मिलकर बनेगी, जिनके नाम क्रमश: राज्यसभा और लोकसभा होंगे।'' डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के अनुसार, ''जनतंत्रात्मक प्रणाली का केन्द्र बिन्दु राष्ट्र की संसद है। प्रशासन की बागडोर चाहे किसी दल या वर्ग के हाथ में हो, जब तक संसद के अधिकार अक्षुण्ण हैं और कार्यक्षेत्र तथा कार्य संचालन की दृष्टि से उसका स्वरूप सम्प्रभु है, वह राष्ट्र बड़े-से-बड़े संकट का सामना कर सकता है।''2 संसद भवन की आधारशिला 12 फरवरी 1921 को ड्यूक ऑफ कनॉट द्वारा रखी गई थी। इस विशाल भवन के निर्माण में छह वर्ष का समय लगा था और इसका उद्घाटन 18 जनवरी, 1927 को भारत के तत्कालीन गर्वनर-जनरल, लार्ड इरविन द्वारा किया गया था। अपनी वास्तुकला की भव्यता के कारण संसद भवन विश्वविख्यात है। इसकी वास्तुकला, पारम्परिक भारतीय कला और स्थापत्य एवं समृद्ध सृजनात्मकता को परिलक्षित करती है। संसद भवन परिसर

के निर्माण में स्थानीय संस्कृति की मूल भावना का समावेश करते हुए, उपयुक्त स्थलों पर हमारी सभ्यता की विरासत से लिए गए श्लोकों और सूक्तियों को उत्कीर्ण कर इसे अलंकृत किया गया।

संसद भवन : एक झलक

शिलान्यास	:	कनॉट के ड्यूक द्वारा 12 फरवरी, 1921
डिजाइन	:	सर एडविन लुटियंस और सर हर्वर्ट बेकर
समय	:	छह वर्ष
कुल खर्च	:	रु. 83 लाख
उद्‌घाटन	:	गर्वनर जनरल, जनरल लॉर्ड इरविन द्वारा, 18 जनवरी 1927
कुल खंभे (पहली मंजिल)	:	144
कुल प्रवेश द्वार	:	12

स्रोत : बी.एल फाडिया एवं कुलदीप फाडिया, भारतीय शासन एवं राजनीति, 2020, पृ. 308

''संसद भवन के गुम्बदों, मेहराबों, कक्षों और अन्य स्थलों पर उत्कीर्ण ये अभिलेख हमारे इस विश्वास और धारणा के प्रतीक हैं कि ज्ञान के प्रचार-प्रसार को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि उसमें उस समय की सोच और विचारों को समाहित और समेकित किया जा सके। इस प्रकार, इन उत्कृष्ट अभिलेखों में समाहित प्राचीन भारत का संचित ज्ञान हम भारतवासियों की आशाओं और आकांक्षाओं को परिलक्षित करता है। इनमें इस भवन के प्रतिष्ठित द्वार से प्रवेश करने वाले जनप्रतिनिधियों और अन्य व्यक्तियों के लिए मार्गदर्शी सिद्धांत के रूप में ज्ञानप्रद परिचर्चाओं और नागरिकों के कल्याण की अनिवार्यता बताई गई है।''3

लोक सभा कैलेंडर 2018 के अनुसार, ''ये उदात्त संदेश सार्वभौमिक और सार्वकालिक हैंरू ये उत्कीर्ण अभिलेख अनुपम सुभाषित हैं, ये इतिहास के प्रामाणिक स्रोत भी हैं और हमारी दार्शनिक परंपराओं के ज्ञान के प्रचुर भंडार हैं। ये अभिलेख ऋग्वेद, महाभारत, श्रीमद्‌ भगवदगीता, मनुस्मृति, पंचतंत्र और कौटिल्य के अर्थशास्त्र से लिए गए हैं। संसद भवन में अरबी और फारसी ग्रंथों के उद्धरणों को भी उत्कीर्ण किया गया है। ये उत्कीर्ण अभिलेख हमारी लोकतांत्रिक परंपरा के केन्द्र में लोगों और उनके कल्याण की भावना के महत्व, बुद्धिमान शासक के गुण और सत्य एवं सदाचार जैसे उच्च आदर्शों को दर्शाते हैं जिनका सभा में पालन किया जाना वरेण्य होता है।''4

80वाँ अखिल भारतीय सभापति विधान सभा अध्यक्ष/सभा अध्यक्ष सम्मेलन 2020, (केवड़िया, गुजरात) के उद्‌घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद ने भारत में संसदीय प्रजातंत्र को मजबूत करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा, ''संसद/विधान सभा/विधान परिषद सदस्यों को सदन की कार्यवाही में गरिमापूर्ण व्यवहार करना चाहिए। निर्वाचक हमेशा अपने जनप्रतिनिधियों से संसदीय गरिमापूर्ण व्यवहार की अपेक्षा करते हैं तथा जब ऐसा नहीं होता है, उन्हें काफी दुख होता है।''5

संसद भवन प्रांगण में उत्कीर्ण कुछ महत्वपूर्ण भित्तिलेखों की विवेचना एवं प्रासंगिकता निम्नलिखित है:-

1. धर्मचक्र-प्रवर्तनाय ("धर्मचक्र चलाने के लिए") (लोक सभा कक्ष के अंदर, अध्यक्ष के आसन के ऊपर लिखित) :

उपाख्यानों के अनुसार "धर्मचक्र-प्रवर्तनाय" को संस्कृत एवं पालि से संबंधित माना जाता है तथा इसे न्याय परायणता से जोड़ा जाता है। उल्लिखित कथाओं के अनुसार, सम्बोधि-प्राप्ति के पश्चात् तथा ब्रह्मसहम्पति के अनुरोध पर गौतम बुद्ध ने 'बहुजन हिताय' और 'बहुजन सुखाय' हेतु धर्म-चक्र प्रवर्तन (धम्म-चक्र-पवत्तन) अर्थात् अपने ज्ञान-देशना के चक्र को चलायमान रखने की प्रतिज्ञा ली।''6

संसदीय प्रजातंत्र में 'धर्मचक्र-प्रवर्तनाय' का अभिप्राय 'न्याय-परायणता' एवं 'न्याय-स्थापना' हेतु संवैधानिक प्रावधानों के अनुसार प्रशासन रूपी चक्र को सुचारू रूप से चलाने का अभिप्राय है। प्रशासन का मुख्य दायित्व 'धर्म-स्थापना' करना है। समाज के सभी वर्गो के अधिकारों की रक्षा करते हुए न्याय-स्थापना तथा जन आकांक्षाओं की पूर्ति करना ही संसद का मुख्य ध्येय है।

प्राचीन काल से ही भारत में सम्राट के कर्तव्यों एवं दायित्वों का विस्तृत विवरण देखने को मिलता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संसदीय प्रजातंत्र में शासन व्यवस्था, संविधान में उद्धृत कार्य-काल एवं उपयुक्त रूप रेखा के अनुसार चलाया जाना अपेक्षित है। एक सरकार के कार्य-काल पूरा होने के उपरांत जनता द्वारा चुनी हुई दूसरी सरकार सत्ता प्राप्त करती है तथा यह चक्र चलता रहता है। किन्तु हर सरकार जन कल्याण एवं न्याय परायणता स्थापना हेतु कटिबद्ध रहती है तथा इसमें कमी होने पर उसे सत्ता से बाहर कर दिया जाता है।

इस प्रकार संसदीय प्रजातंत्र में इस भित्तिलेख का विशेष महत्व है क्योंकि यह जन प्रतिनिधियों को अपना सर्वोच्च कर्त्तव्य-बोध कराती है तथा उनके अस्तित्व का कारण बताती है। साथ ही उन्हें यह आभास करवाती है कि उनका कार्य-काल एक विशेष उद्देश्य हेतु उपयोग में लाया जाना अपेक्षित है तथा इसका सर्वोच्च उद्देश्य 'न्याय-स्थापना' है। इस 'धर्म-चक्र' को राष्ट्रीय झंडा एवं राष्ट्रीय प्रतीक चिन्ह में अति महत्वपूर्ण एवं यथोचित स्थान प्रदान किया गया है। वर्तमान में केन्द्र में भारतीय जनता पार्टी सरकार श्री नरेन्द्र मोदी (प्रधानमंत्री) के नेतृत्व में 'धर्म-चक्र प्रवर्तनाय' का बखूबी प्रयोग कर रही है ताकि एक नए भारत का नव निर्माण हो सके।

2. **अयं निज: परोवेति गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।** (पंचतंत्र 5/38)

जैसे ही हम संसद भवन के द्वार संख्या एक से केन्द्रीय कक्ष की ओर आगे बढ़ते हैं, हमारा ध्यान केन्द्रीय कक्ष के द्वार पर लिखित अभिलेख की ओर बरबस खींच जाता है। उपर्युक्त भित्तिलेख को पंचतंत्र से लिया गया है। इसका अर्थ है, ''यह मेरा है, वह पराया है कि गणना संकीर्ण मानसिकता वाले व्यक्ति करते हैं। उदार चरित्र वाले लोगों के लिए तो पूरा संसार ही एक परिवार की तरह है।'' उपर्युक्त भित्ति लेख का अर्थ काफी व्यापक है तथा भारतीय संसदात्मक प्रजातंत्र के आधारभूत लक्ष्यों को परिलक्षित करता है। संसद सदस्यों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे उपर्युक्त विवेचित भित्तिलेख को अपना आदर्श मानते हुए जन कल्याण हेतु अपना संपूर्ण प्रयास करें। अपने देश के कल्याण हेतु प्रयास करते हुए संपूर्ण संसार को अपने परिवार की तरह मानते हुए उनके कल्याण हेतु प्रयासकरें।

भारत हमेशा से विश्वमंच पर विश्व कल्याण की स्थापना हेतु अपना प्रयास करता रहा है, उदाहरणस्वरूप हम भारत के द्वारा उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद का विरोध, मानव अधिकार की रक्षा, रंगभेद का विरोध तथा समग्र समायोजी एवं सतत् विकास की अवधारणा की स्थापना को

उद्धृत कर सकते हैं।वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारत का कोविड-नियंत्रण एवं कोविड-टीकाकरण के निर्माण तथा विस्तारीकरण को संपूर्ण विश्व ने सराहा है।

इस प्रकार यह माना जा सकता है कि प्रजातंत्र की अवधारणा 'विश्व कल्याण' के उद्देश्य से ही फलीभूत हो सकती है तथा मानव-कल्याण में एक अग्रणी भूमिका निभा सकती है। वर्तमान में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा उद्धृत नारा 'सबका साथ, सबका विकास तथा सबका विश्वास', देश-कल्याण, समाज-कल्याण एवं विश्व कलयाण की भावना से ओत-प्रोत है। इस विचार में भारतीय प्रजातांत्रिक सोच एवं कटिबद्धता नजर आती हैं साथ ही विश्व पटल पर प्रजातांत्रिक मूल्यों की मजबूती में भारत के द्वारा समय समय पर उठाए गए मानव हित संबंधित कदमों की एक झलक प्रदान करती है।

3. जैसे ही हम लोक सभा कक्ष की भीतरी लॉबी के प्रवेश द्वार के पास पहुँचते हैं, हमारा ध्यान वहाँ अंकित भित्तिलेख की तरफ खींच जाता है। वहाँ पर 'सत्यमाहु: परो धर्म:।'' अंकित है जिसका शब्दार्थ है, ''सत्य को ही परम धर्म कहते हैं।'' संसदीय प्रजातंत्र में इस भित्तिलेख के संदेश को 'जन-कल्याण' के आदर्शो से जोड़कर देखा एवं समझा जा सकता है। इसका अभिप्राय है कि संसद द्वारा बनाए गए नीतियों एवं अधिनियमों का ध्येय 'जन कल्याण' होना चाहिए। जन-कल्याण की वास्तविकता पर ही ध्यान केन्द्रित करके इन प्रजातांत्रिक उद्देश्यों को प्राप्त कर सकते हैं।

4. संसद भवन में अंकित भित्तिलेख जिनमें सभासदों/संसद सदस्यों में अपेक्षित विशेषताओं का उल्लेख किया है, निम्न हैं :

(अ) ''**योग: कर्मसुकौशलम्**'' जिसका शब्दार्थ है ''कर्मो में कुशलता ही योग है।'', लोक सभा कक्ष की भीतरी लॉबी के प्रवेश द्वार पर अंकित है। इस भित्तिलेख को श्रीमद्‌भगवत् गीता के अध्याय दो के श्लोक संख्या पचास ले लिया गया है। पूरा श्लोक इस प्रकार है:

बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते। तस्माधोगाय युज्यस्व योग: कर्मसु कौशलम्।।

अर्थात् समबुद्धियुक्त पुरुष पुण्य और पाप दोनों को इसी लोक में त्याग देता है। इसलिए उन्हें समत्वरूप योग में लग जाना चाहिए, यह समत्वरूप योग ही कर्मो में कुशलता है अर्थात् कर्मबंधन से छूटने का उपाय है।7 संसदीय प्रजातंत्र में संसद सदस्यों से यह अपेक्षित है कि वे अपना दायित्व जन-कल्याण के कार्यो में लगाकर समाज-कल्याण करें।

(ब) लिफ्ट संख्या दो के निकट गुम्बद पर अंकित भित्तिलेख संसद सदस्य से अपेक्षित आचरण को दर्शाती है। यह निम्नलिखित है:

''**सभा वा न प्रवेष्टव्या, वक्तव्यं वा समंजसम्।**
अब्रुबन विबुवन् वापि, नरो भवति किल्विषी।। (मनुस्मृति 8/13)

अर्थात् ''कोई व्यक्ति या तो सभा में प्रवेश ही न करे अथवा यदि वह ऐसा करे तो वहाँ धर्मानुसार बोलना चाहिए, क्योंकि न बोलने वाला अथवा असत्य बोलने वाला मनुष्य दोनों ही पाप के भागी होते हैं।

इस भित्तिलेख को मनुस्मृति से लिया गया है। इसमें सभासदों/संसद सदस्यों के अपेक्षित व्यवहार के बारे में बताया गया है। ऐसा कहा गया कि या तो उन्हें सभा गृह (संसद) में प्रवेश ही नहीं करना चाहिए या जब उनका प्रवेश हो गया हो तब उन्हें सत्यनिष्ठा से अपना कर्तव्य निर्वाह करना चाहिए। उन्हें संसद के कार्यवाही में अपना संपूर्ण योगदान करना चाहिए। जो संसद सदस्य

या तो कार्यवाही में योगदान नहीं देते हैं अथवा असत्य का साथ देते हैं, दोनों अपना कर्तव्य निर्वाह नहीं करते हैं। हाल के समय में ऐसा देखा गया है कि संसद अपनी कार्यवाही सुचारू रूप से पूरा नहीं कर पाती है। इसके कई कारण हैं परन्तु मुख्य कारण विपक्षी संसद सदस्यों का असंसदीय व्यवहार है। यदि संसद सदस्य एक दूसरे के प्रति आदर रखते हुए तथा संसद अध्यक्ष के अनुदेशों का उचित रूप से पालन करते हुए अपना योगदान दें तो संसदीय प्रजातंत्र बिना किसी रूकावट से अपने अभीष्ट लक्ष्यों को प्राप्त कर सकती है। संसदीय प्रजातंत्र में संसद सदस्यों का गरिमापूर्ण व्यवहार काफी मायने रखता है तथा बिना इसे प्राप्त किए हुए, संविधान द्वारा दर्शाए गए लक्ष्यों को प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

(स) लिफ्ट संख्या एक के गुम्बद के पास महाभारत से लिया गया एक अति महत्वपूर्ण भित्तिलेख अंकित है:-

न सा सभा यत्र ना सन्ति वृद्धा, वृद्धा ना ते यो ना वदन्ति धर्मम्।
धर्मः सा नो यत्र न सत्यमस्ति, सत्यम् न तद्च्छलम्भ्यूपैति।। (महाभारत 5/35/58)

उपर्युक्त भित्तिलेख में विशिष्ट वरिष्ठ एवं विशिष्ट सांसदों के महत्व को दर्शाया गया है तथा उनके मुख्य कर्तव्यों का उल्लेख किया गया है। ऐसा कहा गया कि सभा वही है जिसमें वरिष्ठ सदस्य भी हों, जहाँ धर्म का आचरण किया जाय, धर्म वही है जो सत्य है तथा सत्य वही है जो छल रहित हो। संसदीय प्रजातंत्र में इन तमाम संदेशों का काफी महत्वपूर्ण स्थान है जो कि इसके आधारभूत संरचना को स्थायित्व एवं समृद्धि प्रदान करती है।

(द) लोक सभा कक्ष की भीतरी लॉबी के प्रवेश द्वार पर अंकित भित्तिलेख **''ये च सभ्याः सभासदाः। तानिन्द्रियवतः कुरू।।''** एक महत्वपूर्ण संदेश है। इसका अर्थ है, जो भी एक सभा के सभासद हैं, उन्हें उर्जा और स्फूर्ति प्राप्त हो और वे संयम से परिपूर्ण हों।'' इसमें यह दर्शाया गया है कि संसद सदस्य उर्जावान हों ताकि वे अपना कर्तव्य सुचारू रूप से निर्वाह कर पाएँ। हमारे संसद को उर्जावान इसलिए भी होना चाहिए ताकि वह देश-कल्याण एवं जन-कल्याण हेतु लोकप्रिय कार्य कर सके। भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त शक्तियों एवं कार्यों को संपादित करने के क्रम में यह एक वाद-विवाद एवं संवाद स्थल/संस्था के रूप में कार्य करती है। यदि संसद उर्जावान होगी तो निश्चित ही संसदीय लोकतंत्र मजबूती से अपना कार्य करेगी।

5. संसद भवन में कुछ ऐसे भित्तिलेख भी उत्कीर्ण हैं जिनमें यह दर्शाया गया है कि शासन का मुख्य कर्तव्य क्या है तथा राजा/शासक को क्या-क्या करना चाहिए। साथ ही यह भी बताया गया है कि शासन के लिए क्या-क्या वर्जित है। इनमें से कुछ मुख्य भित्ति लेख निम्नलिखित हैं: -

(अ) **''प्रजासुखे सुखम् राज्ञः प्रजानां चा हिते हितम्।**
नात्मप्रियं हितं राज्ञः प्रजानां तु प्रियं हितम्।।''

यह भित्तिलेख लिफ्ट संख्या छः के निकट गुंबद पर अंकित है। इसे कौटिलीय अर्थशास्त्र, प्रथम अधिकरण, अध्याय 18 से लिया गया है। इसका अर्थ है कि ''प्रजा के सुख में राजा का सुख निहित है, प्रजा के हित में ही उसे अपना हित दिखना चाहिए। राजा को स्वयं का हित प्रिय नहीं होता, अपितु, प्रजा का हित ही राजा को प्रिय है।''

संसदीय प्रजातंत्र में सरकार संसद के माध्यम से देश निर्माण हेतु नाना प्रकार की नीतियाँ निर्धारित करती हैं। यदि उपर्लिखित भित्तिलेख के संदेश को ध्यानपूर्वक देखा जाय तो यह स्पष्ट होता

है कि तमाम नीति-निर्धारण का अभीष्ठ 'जन-कल्याण' होना चाहिए तथा शासक को सिर्फ और सिर्फ लोक-हित में ही कार्य करना चाहिए। शासक का कुछ भी स्वहित नहीं होता है बल्कि उसकी समस्त ऊर्जा जनहित संबंधित कल्याणकारी कार्यों में ही लगना एवं समर्पित होना चाहिए।

(ब) सदस्य संदर्भ डेस्क जो केन्द्रीय कक्ष के समीप है, के ऊपर गुंबद पर अंकित भित्तिलेख-

''यद भूतहितमत्यन्त तत्सत्यमित्ति धारण।

विपर्ययः कृतोऽधर्मः पश्य धर्मस्य सुक्ष्मताम्।।''

एक महत्वपूर्ण संदेश है जिसका अर्थ है-''जो प्राणियों के लिए अत्यंत हितकारी हो वही सत्य है, ऐसी मान्यता है। इसके विपरीत आचरण अधर्म है, इस प्रकार धर्म की सूक्ष्मता दिखती है।''

जन प्रतिनिधितात्मक संसदीय प्रजातंत्र में ऊपर लिखे हुए भित्तिलेख का एक महत्वपूर्ण स्थान है। नीति-निर्धारण, नीति संचालन तथा नीति-अनुपालन के केन्द्र में 'जन कल्याण' संबंधित मूल्यों की सूक्ष्मता ही सर्वोपरि है। यदि हमारे जनप्रतिनिधि इस भित्तिलेख के संदेश की सूक्ष्मता को आत्मसात् कर अपना दायित्व निभाते हैं तो निश्चय ही हमारा प्रजातंत्र नवीन ऊँचाईयों को हासिल कर सकता है।

(स) लिफ्ट संख्या चार के निकट गुम्बद पर अंकित भित्तिलेख -

''सर्वदा स्यान्नृपः प्राज्ञः स्वमते न कदाचन। सभ्याधिकारि प्रकृति सभासत्सु मते स्थितः।।

हमारे देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद पर आसीन व्यक्तियों के लिए है। इसके माध्यम से यह कहा गया है कि ''इस राष्ट्र का प्रमुख हमेशा ज्ञानवान, बुद्धिमान और सृजन रहे। पूरी प्रजा के साथ समानता से रहने का उसका विचार रहे और सभा में सद्बुद्धि से विचार करने वाले सभासद रहें।'' यदि इन विचारों को संसदीय कार्यवाही में अमल किया जाय तो हमारा संसदीय प्रजातंत्र काफी प्रखर और मजबूत बनेगा। वर्तमान सरकार पर यह भित्तिलेख काफी सटीक बैठती है जिसका नेतृत्व प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी कर रहे हैं। उनके द्वारा दिया गया नारा 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' एवं सबका प्रयास' नए भारत के निर्माण में एक मील का पत्थर साबित होगा।

(द) लिफ्ट संख्या पाँच के निकट गुम्बद पर फारसी भाषा से लिया गया निम्नलिखित भित्ति लेख उत्कीर्ण है:-

''बर इन खाके ज़बरजद नविश्ते अंद बेजर, के ज़ुज नीकुई-ए-अहले करम नख्वाहद मान्द''

इसका अर्थ यह है कि ''इस नीले गगन पर स्वर्णिम अक्षरों में लिखा है कि भद्र मानुषों के सुविचार के अतिरिक्त कुछ शेष नहीं रहता।'' अतः हमें अपने विचारों को भद्रता प्रदान करना चाहिए। प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था में 'जन-कल्याण' से बढ़कर कोई भी विचार ज्यादा भद्र नहीं है। अतः हमारा संपूर्ण ध्येय जन-कल्याण पर ही केन्द्रित होना चाहिए।

(6) समिति कक्ष 53 और 62 (संसद भवन, प्रथम तल गलियारा) में अंकित भित्तिलेख प्रजातंत्र के आधारभूत संरचना को अभिव्यक्ति करता है:

''सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। समानो मन्त्रः समितिः समानी। समानं मनः सह चित्तमेषाम्।।

समानी व आक्तिः समाना हृदयानि वः। समानमस्तु वो मनो पथा वः सुसहासत्ति।।

इसका अर्थ है: ''साथ चलें, साथ बोलें, परस्पर मन के भावों को पहचानें। सबके मन्त्र समान हों। मन समान हों, साथ मन वाले हों। तुम्हारे सत्य संकल्प समान हों, तुम्हारे हृदय समान हों। तुम्हारे मन समान हों, जिससे तुम हर्ष और सामंजस्य के साथ रह सको।''8 देखा जाय तो उपर्लिखित भित्तिलेख प्रजातांत्रिक सिद्धांतों का सार प्रस्तुत करता है। यदि इन मूल्यों को शासन व्यवस्था के दैनिक कार्य कलापों में समाहित किया जाय तो निश्चय ही हमारा प्रजातंत्र समावेशी, सहभागी, सुदृढ़ एवं कालांतर तक हमारी अपेक्षाओं एवं स्वप्नों को वास्तविक रूप में लागू करेगा। अत: जरूरत इस बात की है कि इन भित्तिलेखों पर मन से विचार किया जाय तथा इन्हें लागू किया जाए।

हमारी संसद, संसदीय प्रजातंत्र की धुरी है तथा इसका सुचारू रूप से चलना अनिवार्य है। यह विदित है कि हमारा संविधान इसे व्यापक शक्तियाँ प्रदान करता है। साथ ही संसद भवन के भव्य गुम्बदों, मेहराबों कक्षों और अन्य स्थल पर उत्कीर्ण भित्तिलेख जो कि हमारी सभ्यता की विरासत से लिया गया है एक आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान करती है। यह हमारे धरोहर एवं विरासत की समृद्धि को दर्शाता है। साथ ही जनप्रतिनिधि के आवश्यक गुण, कर्त्तव्यों एवं जन कल्याण की भावना की प्राथमिकता एवं महत्व पर भी प्रकाश डालता है। इसके अतिरिक्त भित्ति लेख, शासक के महत्वपूर्ण गुण, सत्य एवं सदाचार की अनिवार्यता को भी उद्धृत करता है। अत: आज के परिप्रेक्ष्य में हमारे जनप्रतिनिधियों के लिए यह काफी प्रासंगिक है कि वे इन भित्तिलेखों में उद्धृत उच्च आदर्शों को अपनाए तथा इन्हें जन कल्याण हेतु उपयोग में लाएँ। साथ ही इनका महत्व उन तमाम व्यक्तियों से है जो संसद में प्रवेश करते हैं। हालांकि अभी नए संसद भवन का निर्माण किया जा रहा है, देखना यह है कि क्या नए संसद भवन को भी सभ्यता की विरासत से लिए गए श्लोकों और सूक्तियों को उत्कीर्ण कर अलंकृत किया जाएगा? यह तो आने वाला समय ही बताएगा।

संदर्भ :

1. भारतीय संविधान, अनुच्छेद 79.
2. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद : स्वतंत्र भारत की झलक, 1973, पृ. 37.
3. लोक सभा सचिवालय, कैलेण्डर 2018.
4. वही.
5. The Indian Express, 26th November, 2020, New Delhi, p.1 & 9.
6. महापरिनिर्वाण सूत्त (संख्या 16, दिघा निकाय) © IGNCA, 2002 (स्रोत: http://ignca.gov.in/coilnet/jatak018.html)
7. https://shabdbeej.com/yogah-karmasu-Kashalam-meaning-hindi/
8. लोकसभा सचिवालय संसद भवन में भित्तिलेख, कैलेण्डर, 2018
9. Austin, Granville (1985) The Indian Constitution: Cornerstone of a Nation, Oxford, Bombay, p. 144.
10. Vishwanathan, T.K. (Ed.) (2012). The Indian Parliament, Lok Sabha Secretariat, New Delhi, pp. 84-86.
11. Bakshi, P.M. (2015). The Constitution of India, Universal Law Publishing, New Delhi, pp. 130-132 & pp. 179-181.

❏❏❏

पूर्व कुल सचिव, राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान, जनपथ, नयी दिल्ली एवं वर्तमान में एशोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, श्री गुरु तेग बहादुर खालसा महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007

DA-194, शीशमहल अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 मोबाइल : 9899173167

ई-मेल : bkthakur1510@gmail.com

स्मृतिकालीन शिक्षा व्यवस्था (मनु एवं याज्ञवल्क्य स्मृति के विशेष संदर्भ में)

—डॉ. प्रशान्त कुमार
—डॉ. अजीत कुमार राव

किसी भी राष्ट्र की सांस्कृतिक विशेषता की पहचान उसकी शिक्षा व्यवस्था एवं साहित्य में प्रतिबिम्बित होती है। प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था विचारों एवं मूल्यों को व्यवहारिक रूप देने का माध्यम रही है। जिसके कारण भारत विश्व में गरिमामय स्थान बना सका। शिक्षा को प्रकाश स्त्रोत माना गया है जो मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उत्तम मार्ग को प्रदर्शित करती है।

स्मृति साहित्य हिन्दुओं के प्राचीन धार्मिक एवं विधि से संबंधित ग्रन्थ हैं। स्मृति ग्रन्थों का रचना काल तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से ईसा की पांचवी सदी तक माना जाता है। इन स्मृतियों में याज्ञवल्क्य स्मृति का प्रमुख स्थान है। इस स्मृति के अध्ययन से हमें तत्कालीन भारतीय संस्कृति के विषय में महत्वपूर्ण ज्ञान प्राप्त होता है। किसी भी राष्ट्र की सांस्कृतिक विशेषता की पहचान उसकी शिक्षा व्यवस्था एवं साहित्य में प्रतिबिम्बित होती है। प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था विचारों एवं मूल्यों को व्यवहारिक रूप देने का माध्यम रही है। जिसके कारण भारत विश्व में गरिमामय स्थान बना सका। शिक्षा को प्रकाश स्त्रोत माना गया है जो मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उत्तम मार्ग को प्रदर्शित करती है। ज्ञान को मानव का तृतीय नेत्र भी कहा गया है, जो उसे समस्त तत्वों के मूल को समझने में सहायता प्रदान करता हैं। वह मनुष्य जिसके पास ज्ञान की ज्योति नहीं है, वह नेत्रविहीन समझा जाता है, ज्ञान से मानव जीवन के अनेक संशयों का निराकरण होता है और मनुष्य सही मार्ग का दर्शन कर सकता है। विद्याविहीन मनुष्य को पशु बताया गया। शिक्षा प्राप्त किए बिना व्यक्ति विप्रप्त प्राप्त नहीं कर सकता था। इस संदर्भ याज्ञवल्क्य स्मृति में कहा गया है कि –

"जन्मना जायते शूद्रः संस्कारद द्विज उच्यते।
विद्यया यति विप्रत्त्व त्रिमिः श्रोत्रिय उच्यते॥"

प्राचीन विद्वानों की मान्यता थी कि शिक्षा स्वभाव को शुद्ध और सुसंस्कृत बनाती है। शिक्षा ही सच्चे अर्थो में हमें मनुष्य बनाती है अर्थात शिक्षा से रहित जीवन व्यर्थ और मूल्य रहित है।

बीजशब्दः–मनु, याज्ञवल्क्य, स्मृति, शिक्षा

परिचयः–

प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक परंपरा के विकास में वेदों के बाद दूसरा महत्वपूर्ण स्थान स्मृति ग्रंथों का आता है। स्मृति ग्रंथों में मनु एवं याज्ञवल्क्य की स्मृतियां सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

भारतीय समाज में मनुष्य के लिए पुरुषार्थ के महत्व का विवेचन ही इन स्मृतियों का विषय रहा है। पुरुषार्थ अर्थात धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष के बिना मनुष्य और समाज का विकास नहीं हो सकता है। प्राचीन भारतीय समाज में शिक्षा को एक भिन्न दृष्टिकोण से देखा गया है जो विश्व के किसी अन्य देश में देखने को नहीं मिलता है। प्राचीन भारत में शिक्षा का अर्थ सुख-दु:ख, प्रिय-अप्रिय आदि के भावों में सामंजस्य स्थापित करने, इनको गंभीरतापूर्वक समझने से था।1 इसके अतिरिक्त अनुशासन का दूसरा नाम भी शिक्षा है। याज्ञवल्क्य और मनु दोनों ने ही उपरोक्त दोनों अर्थों को लेकर शैक्षिक कार्यों के विषय में निर्देश प्रदान किये हैं।2 यदि हम शिक्षा को व्यापक अर्थ में देखें तो ज्ञात होता है कि शिक्षा से तात्पर्य आत्म-परिष्करण एवं परिवर्धन की प्रवृत्ति से है और यदि शिक्षा को संकुचित अर्थों में देखें तो शिक्षा का तात्पर्य शिक्षण अवधि में विद्यार्थी के अध्यापन एवं अनुदेश से है। प्राचीन भारतीय ऋषि मुनियों के विचारों के संदर्भ में यदि हम शिक्षा के अर्थ देखते हैं तो ज्ञात होता है कि शिक्षा केवल पाठ्यक्रमीय ज्ञान नहीं है, अपितु शिक्षा मनुष्य में अंतर्बोध, अंतर्दर्शन और संस्कार भी उत्पन्न करती है। परिणामस्वरूप विद्यार्थी आत्मनिर्भर होकर समाज का एक अच्छा नागरिक बनता है।3 शिक्षा के महत्व को समझाते हुए याज्ञवल्क्य कहते हैं कि निष्ठावान विद्यार्थी गुरु के समीप रहकर शरीर की साधना करते हुए विशेष प्रयत्न द्वारा इंद्रियों को विजय कर मोक्ष प्राप्त करते हैं।4

मनु एवं याज्ञवल्क्य स्मृति में वर्णित शिक्षा के उद्देश्य:-

स्मृतियों में शिक्षा का प्रथम उद्देश्य मनुष्य की धार्मिक भावनाओं को उजागर करना बताया गया है। 'धर्म' शब्द से तात्पर्य सभी उत्तम गुणों के सार से है। प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थियों में संस्कार, व्रत, पूजन तथा उत्सवों के माध्यम से धार्मिक भाव को उत्पन्न किया जाता था। याज्ञवल्क्य के अनुसार स्नान, अद्वैत मंत्र द्वारा परिष्कृत, प्राणायाम, सूर्य-पूजन, गायत्री मंत्र का जप करना ब्रह्मचारी का कर्तव्य था।5 इस विषय पर मनु का कहना है कि शौच, पवित्रता आचार, स्नान-क्रिया, अग्नि-कार्य और संध्या पूजन विद्यार्थी का धर्म था।6 शिक्षा का दूसरा प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों का उत्तम चरित्र-निर्माण करना था। गुरु उपनयन के द्वारा वेद तथा शौच के नियमों की शिक्षा से विद्यार्थियों के चरित्र को समृद्ध करता था। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में चरित्र-निर्माण का महत्व इतना अधिक था कि वेदों का ज्ञाता भी उत्तम चरित्र के अभाव में तुच्छ समझा जाता था। इसके विपरीत केवल गायत्री मंत्र का ज्ञान रखने वाला व्यक्ति भी उत्तम चरित्र के कारण पूज्य था।7 शिक्षा का तीसरा उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का निर्माण करना था। शिक्षा के विभिन्न नियमों के माध्यमों से मनुष्य का जीवन संयमित और सुनियोजित किया जाता था।8 विद्यार्थियों को इस ज्ञान का आभास कराया जाता था कि परलौकिक शक्तियां भी उनके कार्य की सफलता में सहयोग करेंगी यदि उनके द्वारा अपना कर्तव्य पालन पूर्ण निष्ठा से किया जाए। यही कारण था कि धनी तथा निर्धन सभी छात्र एक साथ भिक्षा मांगते थे।9 जिससे उनमें पारस्परिक सद्भाव का भाव उत्पन्न होता था। छात्रों में धर्म, दर्शन, तर्क, काव्य और साहित्य आदि विषयों से विवेक और न्याय का विकास होता था। शास्त्रार्थ में विद्यार्थियों को अपना विचार रखने के साथ ही उसका सत्यापन भी करना पड़ता था तथा दूसरे के विचारों का खंडन भी करना

होता था।10 अत: विद्यार्थी को अपने विचार प्रस्तुत करने की स्वतंत्रता थी।यें सभी तत्व मिलकर विद्यार्थी के व्यक्तित्व का विकास करते थे। सामाजिक कर्तव्यों का अनुपालन करना शिक्षा का चौथा उद्देश्य था। ज्ञान प्राप्त कर लेने बाद विद्यार्थी केवल अपने हित का ध्यान नहीं रखता था अपितु वह अन्य विद्यार्थियों को नि:शुल्क शिक्षा भी प्रदान करता था। याज्ञवल्क्य के अनुसार स्नातक ब्राह्मण हो या क्षत्रिय किसी का अपमान नहीं करता था एवं किसी को दुख नहीं देता था। सुख संपत्ति की आकांक्षा रखता हुआ भी मन, कर्म और वचन से धर्म का आचरण करता था और धर्म-विहित, लोक विरुद्ध कर्म और जिस कर्म से स्वर्ग की प्राप्ति ना हो उसे नहीं करता था।11

शिक्षा का एक अन्य उद्देश्य अपनी संस्कृति का विकास करना भी था। शिक्षा के द्वारा ही हमारी संस्कृति और परंपरायें वर्तमान में जीवित रहती हैं। वर्तमान पीढ़ी को पूर्व संस्कृति का अध्ययन कराकर आने वाली पीढ़ियों के लिए ज्ञान के प्रसार की भली-भांति व्यवस्था की जाती थी।12 प्राचीन शिक्षा का आधार वेद ज्ञान तथा उसका प्रचार-प्रसार हुआ करता था। विद्यार्थियों का मुख्य कर्तव्य था कि वेदों को कंठस्थ कर उन्हें अपने मस्तिष्क में सुरक्षित रखें। विद्यार्थियों पर वैदिक साहित्य को सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी हुआ करती थी। ब्राह्मण के लिए चारों वेदों को कंठस्थ करना तथा भावी पीढ़ी को कंठस्थ कराना धर्म माना जाता था।13 अलतेकर के अनुसार भिन्न-भिन्न व्यवसाय से सम्बन्धित प्रत्येक व्यक्ति अपने पुत्रों को अपने व्यवसाय की शिक्षा देता था। इस प्रकार अनेक पीढ़ियों का अनुभव नई पीढ़ी को प्रारंभ में ही सुलभ हो जाता था।14 सांस्कृतिक जीवन के विकास के लिए त्रिऋण की अनिवार्यता मानी गई।15 संसार में प्रत्येक व्यक्ति तीन ऋणों के साथ जन्म लेता है- देव-ऋण, ऋषि-ऋण और पितृ-ऋण। प्रत्येक मनुष्य इन तीनों ऋणों से मुक्त होना अनिवार्य समझता था।

शिक्षा से संबंधित संस्कार एवं नियम:-

भारतीय मनीषियों ने मनुष्य के जीवन में सोलह संस्कारों का वर्णन किया है। शिक्षा से संबंधित संस्कारो में विद्यारंभ संस्कार प्रथम है। विद्यारंभ संस्कार का आरंभ अक्षर ज्ञान की शिक्षा से होता था। विद्यारम्भ संस्कार के बाद ही वास्तविक रूप से शिक्षा प्रारंभ मानी जाती थी। विश्वामित्र के अनुसार यह संस्कार बालक की आयु के पांचवे वर्ष से होता था।16 यदि किसी कारणवश इसे स्थगित करना पड़ जाए तो, उपनयन के पूर्व इसे करना आवश्यक था। अर्थशास्त्र में उल्लेख है कि बालक के चौल-कर्म के साथ ही उसे लिपि ज्ञान भी कराया जाता था।17 विद्यारम्भ संस्कार के समय बालक गुरु की वंदना करता था और गुरु के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त करता था। उपनयन संस्कार विद्यारंभ संस्कार के बाद होने वाला दूसरा शैक्षणिक संस्कार हुआ करता था। उपनयन संस्कार के बाद विद्यार्थी को गुरुकुल में रहकर शिक्षा लेनी पड़ती थी। गुरुकुल में उसे गुरु आज्ञानुसार, शौच तथा आचार व्रतों का पालन करते हुए विधि-विधानों के साथ वेदाध्ययन करना होता था।18 विद्यार्थी पलाश दंड, मृगचर्म, यज्ञोपवीत और मूंज की मेखला धारण करता था। विद्यार्थी को जीवन निर्वाह के लिए ब्राह्मणों के घर से भिक्षा मांगकर गुरु की आज्ञानुसार उसे ग्रहण करना होता था।19 मनु और याज्ञवल्क्य के अनुसार उपनयन संस्कार की आयु भी निर्धारित की गई थी। ब्राह्मण बालक का उपनयन संस्कार जन्म से आठवें वर्ष में, क्षत्रिय

बालक का ग्यारहवें वर्ष में, वैश्य बालक का बारहवें वर्ष में किया जाता था।20 उपनयन संस्कार के पश्चात विद्यार्थियों को दैनिक कर्म, शौच, स्नान, संध्या, गायत्री, अग्निकार्य, प्राणायाम, स्वाध्याय आदि की शिक्षा प्रदान की जाती थी। याज्ञवल्क्य ने गुरु और शिष्य दोनों को निर्देश दिया है कि गुरु और शिष्य दोनों को ही मन, वचन और कर्म से एक-दूसरे का हित करना चाहिए।21

सामान्य शिक्षा के पश्चात गुरु अपने शिष्यों को वेदों का ज्ञान देना प्रारंभ करता था जिसे वेदारंभ संस्कार के नाम से जाना जाता है। याज्ञवल्क्य स्मृति के अनुसार वेद अध्ययन का आरंभ श्रावण माह की पूर्णमासी को अथवा श्रावण-नक्षत्र से युक्त दिन को अथवा हस्त-नक्षत्र से युक्त श्रावण पंचमी को करना चाहिए।22 इस अवसर पर विद्यार्थी हवन कुंड के पश्चिम दिशा में बैठकर अग्नि के माध्यम से देवताओं को हवि प्रदान करता था। विद्यार्थी ब्राह्मणों, पुरोहितों आदि को दक्षिणा भी देता था और दक्षिणा देने के पश्चात ही वह वेदों का अध्ययन प्रारंभ करता था।23 वेदारम्भ संस्कार के पश्चात शैक्षणिक जीवन के अंतिम संस्कार समावर्तन संस्कार का प्रारंभ होता है। इस संस्कार के माध्यम से शिक्षा और ब्रह्मचारी की परिधि से विद्यार्थी बाहर हो जाता है। वेदाध्ययन के पश्चात घर की ओर विद्यार्थियों के प्रस्थान करने को ही समावर्तन संस्कार के नाम से जानते हैं। इस संस्कार के लिए निश्चित आयु नहीं होती है। वेद अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी के सामने दो मार्गों में से किसी एक मार्ग का चयन करना पड़ता था। प्रथम मार्ग प्रवृत्ति मार्ग था, जिसमें विवाह के संपूर्ण उत्तरदायित्व को स्वीकार करते हुए सांसारिक जीवन में प्रवेश करना होता था। दूसरा मार्ग था निवृत्ति मार्ग, इस मार्ग को स्वीकार करने वाले सांसारिक मोह माया से विरक्त होकर मानसिक तथा शारीरिक तपस्या का जीवन व्यतीत करते थे। जो विद्यार्थी प्रथम मार्ग स्वीकार करते हैं उन विद्यार्थियों को ''कुर्वाण'' और दूसरा मार्ग चुनने वाले ''नैष्ठिक'' कहलाते थे।24

स्मृतिकालीन अध्ययन के विषयः-

याज्ञवल्क्य एवं कौटिल्य के अनुसार आत्मविद्या, दंडनीति, त्रययां (तीन वेदों का अध्ययन) एवं वार्ता शिक्षा के यह चार प्रमुख विषय होते हैं25 आत्मविद्या के अंतर्गत सांख्य, योग और भौतिक नियम आते हैं। इस विषय की शिक्षा के माध्यम से सुख-दुख के समय मस्तिष्क स्थिर रहता है इसी कारण यह विद्या विद्यार्थी को मन, वचन तथा कर्म करने में निपुण बनाती है।26 राजकीय प्रशासन को चलाने के लिए राजकुमारों को दंडनीति की शिक्षा दी जाती थी क्योंकि राज्य में दुराचारियों, अपराधियों तथा उदंड व्यक्तियों को नीति के आधार पर दंड देने के लिए इस शिक्षा को ग्रहण करने की आवश्यकता पड़ती थी। दंडनीति को सही प्रकार से प्रयोग करने से देवता एंव राक्षस मनुष्य से प्रसन्न रहते हैं तथा इसके विपरीत कार्य करने से वह मनुष्य से अप्रसन्न हो जाते हैं।27 कौटिल्य के अनुसार ''दंड को प्रतिपादित करने वाली नीति ही दंडनीति कहलाती है वह अप्राप्त वस्तुओं को प्राप्त कराती है, प्राप्त वस्तुओं की रक्षा करती है, रक्षित वस्तुओं की वृद्धि करती है और वही संवर्धित वस्तुओं को समुचित कार्यो में लगाने का निर्देश करती है। उस पर संसार की सारी लोक यात्रा निर्भर हैं। इसीलिए समाज को उत्कृष्ट मार्ग पर ले चलने की इच्छा रखने वाला राजा ही उचित दंडनीति का पालन करने के लिए प्रस्तुत रहे इसलिए राजा को दंडनीति की शिक्षा दी जाती थी।28 ऋक, यजुष एवं साम के मिश्रण को ही त्रययां कहा

गया है। इसके अंतर्गत ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद का अध्ययन किया जाता है इस विषय को एक स्वतंत्र विषय की मान्यता मिली हुई है। भविष्य में इसमें अथर्ववेद को भी सम्मिलित किया गया है। इसके अध्ययन का समय उपनयन संस्कार के बाद ही माना गया है जिसका वर्णन याज्ञवल्क्य स्मृति में मिलता है।29 मनु के अनुसार ब्रह्मचारी का कर्तव्य है कि वह तीनों वेदों का अध्ययन करें यदि तीन वेदों का अध्ययन ना कर सके तो कम से कम दो वेदों का अध्ययन करना चाहिए। यदि यह भी नहीं कर सकता तो कम से कम एक वेद का अध्ययन करना अनिवार्य है। इसके पश्चात ही उसे गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करना चाहिए।30 वार्ता के महत्व के कारण ही याज्ञवल्क्य स्मृति में कहा गया है कि वार्ता जैसे विषय का ज्ञान राजकुमारों के लिए अति आवश्यक होता था। कौटिल्य के अनुसार कृषि, पशुपालन और व्यापार वार्ता विद्या के विषय हैं। यह विद्या धान्य, पशु, हिरण्य, ताम्र आदि खनिज पदार्थों के साथ ही सेवक आदि देने वाली है। इस विद्या से अर्जित कोष और शक्ति के द्वारा राजा सभी पक्षोंको अपने वश में कर लेता है।31

उपरोक्त चार प्रमुख विषयों के अतिरिक्त भी याज्ञवल्क्य ने विभिन्न विषयों की चर्चा की है जिनमें पुराण, न्याय-मीमांसा, धर्मशास्त्र, व्याकरण आदि धर्म विद्याओं के साथ गणित को भी स्थान दिया हैं।32 प्राचीन भारतीय समाज में चौदह विद्याओं की शिक्षा का प्रचलन था जिसका उल्लेख याज्ञवल्क्य ने किया है। यज्ञविधि को भी अध्ययन के विषय के रूप में स्वीकार किया गया था।33

गुरु तथा शिष्य के गुण एवं कर्तव्यः-

भारतीय समाज में गुरु को बहुत ऊंचा स्थान प्रदान किया गया है। वह समाज को केवल शिक्षित ही नहीं करता बल्कि भौतिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान से भी अवगत करता था। वह छात्रों को अज्ञानता के अंधकार से निकाल ज्ञान रूपी सूर्य के प्रकाश में ले जाता था। इसीलिए गुरु को 'आचार्य देवोभवः' की संज्ञा से विभूषित किया गया है।34 याज्ञवल्क्य गुरु की महत्ता का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि गुरु वह होता है जो उपनयन तक की क्रियाएं कराकर ब्रह्मचारी को वेद की शिक्षा देता है, मात्र उपनयन संस्कार करके वेद की शिक्षा देने वाले को आचार्य कहते हैं।35 महाभारत में कहा गया है कि गुरु को विनयी, विनम्र, निष्पक्ष, शांतिचित्त, नैतिक-ब्रह्मचारी, विद्या-पारंगत आदि गुणों से युक्त होना चाहिए।36 गुरु को जीवन पर्यत्न विद्या अध्ययन करना चाहिए, जिसके कारण उसके ज्ञान भंडार में सदैव वृद्धि होती रहे। प्राचीन समय में गुरु को शिक्षा देने के बदले में वेतन का प्रावधान नहीं था, गुरु एवं उसके परिवार के भरण-पोषण और दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति का स्त्रोत केवल शिष्य के द्वारा लाई गई भिक्षा ही होती थी। इसके अतिरिक्त अभिभावक द्वारा अपने बालकों को पढ़ाए जाने के उपलक्ष्य में विद्या अध्ययन के अंत में जो धनराशि उन्हें देते थे वह भी उनकी जीविका का एक अंग हुआ करती थी। अतः गुरु की कोई निश्चित आय नहीं थी।37 याज्ञवल्क्य के अनुसार धन लेकर पढ़ाने वाले गुरू तथा धन देकर पढ़ाने वाले शिष्य दोनों को समाज में निम्न दृष्टि से देखा जाता था।38 इसका समर्थन मनु ने भी किया हैं।39

प्राचीन भारतीय समाज में शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार केवल तीन वर्णो को ही था, शुद्र वर्ण को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार नहीं था। उस समय शिक्षा प्राप्त करने के लिए छात्र स्वतंत्र था वह किसी भी गुरु को चुन सकता था। छात्र की शिक्षा उपनयन संस्कार के पश्चात शुरू

होती थी उपनयन संस्कार छात्र का दूसरा जन्म माना जाता था। उपनयन संस्कार के पूर्व छात्र शूद्र ही माना जाता था। उपनयन संस्कार के पश्चात् ही छात्र द्विज की श्रेणी में जाता था40 और यही कालखंड ब्रह्मचर्य आश्रम कहा गया है। शिक्षा के इस कालखंड में विद्यार्थी को ब्रह्मचर्य का पालन करने की सलाह दी गई है।41 इस आश्रम की आवश्यकता इसलिए भी थी कि छात्र एकाग्र होकर शिक्षा प्राप्त कर सकें। याज्ञवल्क्य के अनुसार विद्यार्थी को गुरु के मन, वाणी, और शरीर के अनुकूल कार्य ही करना चाहिए तथा उसकी आज्ञा से ही भोजन आदि करना चाहिए उन्होंने विद्यार्थियों के लिए मधु, मास, लेप, अंजन, झूठा भोजन, कठोर वचन, स्त्री, जीव हिंसा, सूर्यदर्शन, अश्लील भाषण, आदि बातें निषिद्ध मानी है।42 याज्ञवल्क्य तथा मनु दोनों ने ही अध्ययन काल के समय शिष्य और पुत्र दोनों के लिए स्नेह एवं प्यार की अपेक्षा कठोरता का प्रावधान किया था। यह प्रावधान उन विद्यार्थियों एवं पुत्रों के लिए किया गया था जिनके मन में अध्ययन एवं व्यवहार हेतु कुछ कमी हो यदि कठोरता के बाद भी विद्यार्थी अपने व्यवहार में परिवर्तन नही करता एवं उसकी बार-बार पुनरावृत्ति करता है तो उसे बांधकर दंड से पीटा भी जा सकता है।43

निष्कर्ष:-

उपरोक्त वर्णन के अनुसार कहा जा सकता है कि मनु एवं याज्ञवल्क्य की शिक्षा पद्वति में धर्मशास्त्रों के अध्ययन का अधिक महत्व था। इस शिक्षा पद्वति के माध्यम से भारतीय समाज का विकास एक विशेष रूप में हुआ जिसमें गुरू-शिष्य के मधुर सम्बन्धों के साथ ही ज्ञान की एक ऐसी श्रंखला का निर्माण करना था जिसमें विद्यार्थी के चरित्र निर्माण और शिष्टाचार को अधिक महत्व देते हुए सामाजिक कर्तव्यों के प्रति अपने दायित्वों का पालन कर सकें और समाज के अन्य नागरिकों को उनके कर्तव्यों के निर्वहन हेतु उनका मार्गदर्शन कर सकें। इस शिक्षा से भारत प्राचीन समय में विश्वगुरु के शिखर पर पहुंच सका और मनुष्य में सर्वे भवंतु सुखिन: की भावना को जागृत कर सका। इस प्रकार प्राचीन भारतीय शिक्षा ही विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास पर केंद्रित थी और इसमें राष्ट्र कल्याण के साथ ही विश्व कल्याण भी जुड़ा था।

सन्दर्भ:-

1. राजदेव दुबे : स्मृतिकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति, प्रतिभा प्रकाशन, 1988, पृ. 124
2. लक्ष्मीदत्त ठाकुर : प्रमुख स्मृतियों का अध्ययन, हिंदी समिति सूचना विभाग, लखनऊ, 1965, पृ. 126
3. कैलाशचन्द्रजैन : प्राचीन भारतीय सामाजिक एंव आर्थिक संस्थाएँ, मध्यप्रदेश ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 1971, पृ.158
4. याज्ञवल्क्य स्मृति : विज्ञानेश्वरप्रणीत 'मिताक्षरा' सहित (सं. उमेशचंद्र पाण्डेय), चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, पंचम संस्करण, 1994, 1/49-50
5. वही, 1/22
6. मनुस्मृति : (सं. जयकृष्णदास हरिदास गुप्त:), चौखम्भा संस्कृत सीरिज ऑफिस, बनारस, 1992, 2/69
7. वही, 2/118
8. याज्ञ. स्मृति, 1/23-33
9. वही,1 /29-30
10. कैलाशचन्द्र जैन : पूर्वोक्त, पृ.159
11. याज्ञ. स्मृति, 1/153,156

12. वही, 1/34-35
13. वही, 1/41-46
14. ए.एस.अलतेकर : एजुकेशन इन एन्शियंट इण्डिया, नंदकिशोर एंड ब्रदर्स एजुकेशनल पब्लिशर्स, बनारस, द्वितीय संस्करण, 1944, पृ.17
15. शतपथ ब्राह्मण (हिंदी अनु. पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय), गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली, 2010, 1/5/5
16. राजदेव दुबे : पूर्वोक्त, पृ.127
17. अर्थशास्त्र (हिंदी अनु. वाचस्पति गैरोला), चौखंभा विद्याभवन, वाराणसी, 1952, 1/2
18. याज्ञ. स्मृति, 1/15
19. वही, 1/29-31
20. याज्ञ. स्मृति, 1/14 एवं मनु स्मृति, 2/36-37
21. वही, 1/26-27
22. वही, 1/142
23. राजबली पाण्डेय : हिन्दु संस्कार, चौखंभा विद्याभवन, वाराणसी, 1966, पृ.183
24. वही, पृ.188
25. याज्ञ. स्मृति, 1/311
26. अर्थशास्त्र , 1/1 (आन्वीक्षिकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिश्चेति विद्या:)
27. याज्ञ. स्मृति, 1/356
28. अर्थशास्त्र, 1/3
29. याज्ञ. स्मृति, 1/142
30. मनु स्मृति, 3/2, (वेदानधीत्य वेदों वा वापि यथाकमम। अपिप्लुतब्रह्मचर्यो गृहस्थाश्रममावसेत)
31. अर्थशास्त्र,1/3, (कृविपशुपाल्ये वाणिज्या च वार्ता। घान्यपशुहिरण्य कुपयविप्त प्रदानाषकारिकी। तया स्वपक्ष ए वशीकरोति कोशदण्डाभ्याम।।)
32. याज्ञ. स्मृति, 1/3
33. वही, 1/40-48
34. तैत्तिरीय उपनिषदसायण भाष्य सहित (सं. पुष्पेन्द्र कुमार), नाग प्रकाशक, दिल्ली, 1998, 1/11
35. याज्ञ. स्मृति, 1/34
36. राजदेव दुबे : पूर्वोक्त, पृ.130
37. ए.एस. अलतेकर : पूर्वोक्त, पृ.57-58
38. याज्ञ. स्मृति, 1/223
39. मनु स्मृति, 3/156
40. याज्ञ. स्मृति, 1/10, 39, (जायते शुद्र: संस्काराहिजमिकत उच्चते, 11/5)
41. मनु. स्मृति, 2/180
42. याज्ञ. स्मृति, 1/15, 22, 25, 26-27, 31, 33
43. मनु. स्मृति, 8/299-300

❒❒❒

1. असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, हर्ष विद्या मन्दिर (पी.जी.) कॉलेज, रायसी, हरिद्वार
ई-मेल : prashantkumar.hvmpg@gmail.com
2. असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, हर्ष विद्या मन्दिर (पी.जी.) कॉलेज, रायसी, हरिद्वार, ई-मेल : dudeajit009@gmail.com

'वैवाहिक दुष्कर्म'-एक गंभीर चिंतन एवं बहुपक्षीय विश्लेषण का विषय

—अरुणा त्रिपाठी

भारतीय सांस्कृतिक व्यवस्था, विशेषकर हिंदू विवाह पद्धति अन्य देशों और अन्य धर्मों से बिल्कुल अलग है। यहाँ विवाह एक समझौता या अल्पकालिक कांट्रेक्ट नहीं है। यह एक जीवन पद्धति है, जहां पुरुषों और महिलाओं दोनों को एक दूसरे के प्रति सम्मान और प्रेम से रहने की अपेक्षा की जाती है। विवाह सोलह संस्कारों में से एक प्रमुख संस्कार है। विवाह के दौरान दिए जाने वाले 7 वचनों में दोनों की सुरक्षा और सम्मान का भाव निहित रहता है।

पिछले कुछ समय से वैवाहिक दुष्कर्म चर्चा और विमर्श के पटल पर है। समाजशास्त्रियों, कानूनविदों और साहित्यकारों की इस विषय पर अलग-अलग राय हैं। हाल में ही दिल्ली हाईकोर्ट ने भी भारतीय दंड संहिता में वैवाहिक बलात्कार को प्रदान किये गए अपवाद को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर एक विभाजित निर्णय दिया है। निर्णय देने वाले दोनों जजों की राय इस मसले पर भिन्न-भिन्न थी, इसलिए यह मामला या तो सुप्रीम कोर्ट में जाएगा या हाई कोर्ट की बड़ी बेंच में। याचिकाकर्ताओं ने धारा 375 के खंड 2 में दिए गए अपवाद की संवैधानिकता को चुनौती दी और वैवाहिक संबंधों में किए जाने वाले रेप को धारा 375 से मुक्त रखने के प्रावधान को खारिज करने की मांग की।

आईपीसी की धारा 375 दो अपवादों के साथ उन कृत्यों को परिभाषित करती है जो एक पुरुष द्वारा बलात्कार को परिभाषित करते हैं। धारा 375 के अपवाद 2 में कहा गया है कि 'किसी पुरुष द्वारा अपनी पत्नी के साथ संभोग या यौन कृत्य, यदि पत्नी की उम्र पंद्रह वर्ष से कम नहीं है, बलात्कार नहीं है'। प्रथमदृष्टया यह मांग ठीक भी लगती है कि किसी भी महिला को रेप जैसे जघन्यतम अपराध का शिकार क्यों होना पड़े? आरोपी व्यक्ति के संबंध के आधार पर अपराध की प्रकृति का निर्धारण क्यों हो? लेकिन इस मामले को हमें तात्कालिक तथ्यों के आधार पर नहीं एक दीर्घकालिक और समन्वित रूप में देखने की जरूरत है।

भारतीय सांस्कृतिक व्यवस्था, विशेषकर हिंदू विवाह पद्धति अन्य देशों और अन्य धर्मों से बिल्कुल अलग है। यहाँ विवाह एक समझौता या अल्पकालिक कांट्रेक्ट नहीं है। यह एक जीवन पद्धति है, जहां पुरुषों और महिलाओं दोनों को एक दूसरे के प्रति सम्मान और प्रेम से रहने की अपेक्षा की जाती है। विवाह सोलह संस्कारों में से एक प्रमुख संस्कार है। विवाह के

दौरान दिए जाने वाले 7 वचनों में दोनों की सुरक्षा और सम्मान का भाव निहित रहता है। 2015 में संसद में भी इस विषय पर जब प्रश्न किया गया था तब वैवाहिक दुष्कर्म को यह कहते हुए खारिज किया गया कि भारतीय विवाह एक संस्कार और पवित्र परंपरा है।

आज 75 से भी अधिक देशों में वैवाहिक दुष्कर्म को कानूनी मान्यता दी गई है, किंतु यह कोई नई बात तो नहीं है, सैकड़ों मामलों में अलग-अलग देशों में अलग-अलग कानून हैं। वैसे भी भारतीय समाज और सामाजिक ढांचे के परिदृश्य का निर्धारण सिर्फ पश्चिमी देशों की परिभाषाओं के आधार पर तो नहीं किया जा सकता। प्रगतिशील और समाज-स्वीकार्य कानून बनाना हर देश का कर्तव्य भी है और जरूरत भी। जो परम्पराएं समय के हिसाब से रूढ़िवादी, गरिमा-विरोधी या संविधान विरोधी रहीं, उन पर समय-समय पर कानून बने हैं। उन पुरानी और रूढ़ परंपराओं को कानून द्वारा प्रतिबंधित भी किया गया है। दहेज प्रथा, सती प्रथा, बाल विवाह जैसी अनेक प्रतिगामी प्रथाओं का उन्मूलन इसके उदाहरण हैं। इन उन्मूलन कानूनों ने भी विवाह संस्था को मजबूत और आधुनिक बनाया है ।

वैवाहिक दुष्कर्म को जल्दबाजी में अपराध घोषित करवाने की जिद करने वालों को समझना चाहिए भारतीय समाज में महिलाओं की सुरक्षा और लैंगिक अपराधों से संरक्षण के लिए अनेकों कानून वर्तमान में हैं। जिनमें पति द्वारा किया जाने वाला दुष्कर्म भी सम्मिलित होता है। किसी भी महिला को एक सम्मानपूर्ण व गरिमायुक्त जीवन जीने की आजादी है। यदि उसका पति उस पर जबरन दुष्कर्म कर रहा है तो इसके लिए वह अनेक कानूनों के तहत केस दर्ज करा सकती है जैसे घरेलू हिंसा से संरक्षण अधिनियम 2005। पीड़ित महिला के पास तलाक और गुजारा भत्ता प्राप्त करने का भी पर्याप्त और ठोस कानूनी अधिकार हैं। लेकिन वैवाहिक दुष्कर्म को जबरिया वैध बनाने के पीछे जिस प्रकार की जिद और अड़ियल रवैया कुछ विशेष विचारधारा वाले लोगों में दिखाई दे रहा है उसके पीछे महिलाओं के हित नहीं बल्कि भारतीय सभ्यता, संस्कृति और हिंदू परंपराओं को नुकसान पहुंचाने की मंशा झलकती है।

लैंगिक अधिकार को महिला अधिकार का पर्यायवाची समझने वाले भूल जाते हैं कि भारत में पुरुषों को लैंगिक आधार पर उत्पीड़न व शोषण से लगभग ना के बराबर अधिकार मिले हैं। जबकि पश्चिमी देशों में ऐसे कई समतावादी कानून हैं, इसलिए वैवाहिक दुष्कर्म को अपराध की श्रेणी में रखे जाने से पहले वृहद विश्लेषण, विस्तृत अध्ययन और दूरगामी प्रभावों के सटीक आकलन की आवश्यकता है। बात सिर्फ व्यक्ति के निरपेक्ष अधिकारों की ही नहीं होनी चाहिए, परिवार, समाज और देश के लिए कुछ अधिकार तय होने चाहिए। कोई भी निर्णय इन तीनो संस्थाओं को किस प्रकार प्रभावित करेगा इस पर भी चिंतन-मनन होना चाहिए। महिलाओं की गरिमा की रक्षा-यह अति महत्वपूर्ण प्रश्न है और किसी सभ्य समाज में जबरदस्ती यौन संबंध बनाना किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं हो सकता। लेकिन इस तरह की घटनाओं पर कानून बनाने से पहले उनकी प्रैक्टिकलिटी पर भी सोचना पड़ेगा। पति और पत्नी के बीच बनने वाले संबंध सामान्यत: एक बंद चहारदीवारी के भीतर होते हैं, उन संबंधों में किसी महिला के कहने के आधार पर अपराध को तय करना, साक्ष्य इकट्ठे करना और

उसकी वैधता का परीक्षण करना, एक जटिल काम होगा। इसलिए इस गंभीर मुद्दे पर अन्य मुद्दों की तरह त्वरित कानून नहीं पारित किया जा सकता या रातोंरात कोर्ट से आर्डर नहीं दिलवाया जा सकता। बेहतर होगा अगर एक विशेषज्ञों की समिति गठित करके, हर पक्ष पर विचार विमर्श हो और एक ठोस रूपरेखा सामने आए। हमें इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि अच्छी मंशा से बनाए गए दहेज कानून, घरेलू हिंसा से संरक्षण कानून, कार्यस्थल पर सुरक्षा संबंधी कानूनों के दुरुपयोग के पर्याप्त मामले सामने आए हैं। यह मानने में कोई संदेह नहीं कि इस विषय पर कानून लिंगनिरपेक्ष ना होने के कारण भी इस प्रकार की समस्याओं का एक नया कारण बनेगा।

देश में किसी भी व्यक्ति को इस बात से ऐतराज नहीं है कि महिला सुरक्षा पर कड़े कानून नहीं होने चाहिए। समाज की सभी महिलाओं की चिंता के साथ-साथ, हर व्यक्ति को कम से कम अपनी मां, बहन और बेटी की तो चिंता है ही। यहां प्रश्न इस बात पर नहीं खड़ा किया जा रहा कि पति द्वारा किया जाने वाला दुष्कर्म अपराध माना जाना चाहिए या नहीं, सवाल इस बात का है कि विवाह जैसी संस्था को दांव पर लगाना और पति-पत्नी के सभी संबंधों पर तलवार लटका देना कितना सही है? सवाल यह भी है कि इस तरह के मामलों में जांच पड़ताल और दुरुपयोग को रोकने के लिए क्या प्रावधान संभव हो पाएंगे? साक्ष्यों की उपलब्धता और सहमति के महत्व का निर्धारण कैसे होगा? हम आधुनिक नारीवादियों के दबाव में आकर और पश्चिमी आधुनिकतावाद के पिछलग्गू बनकर हर चीज स्वीकार नहीं कर सकते। ध्यान देने योग्य बात यह भी है कि महिलाओं को अपने पति के साथ संबंध स्थापित करने पर उनकी स्वतंत्रता और सहमति का पर्याप्त ज्ञान है। राष्ट्रीय परिवार सर्वेक्षण सर्वे-5 के आंकड़ों के अनुसार भी 80% से अधिक महिलाएं शारीरिक संबंध कायम करने के लिए अनुमति को आवश्यक मानती हैं।

वैवाहिक दुष्कर्म को अपराध बनाने की पैरवी करने वालों का एक तर्क यह है कि महिलाओं के लिए उनका घर, परिवार, पति और बच्चे ज्यादा भावनात्मक मुद्दे हैं। इसलिए वे अपने विवाह को बचाने के लिए पुरुषों की तुलना में ज्यादा गंभीर होती हैं। इस कारण वे अपने पति के खिलाफ वैवाहिक दुष्कर्म के प्रावधान का गलत प्रयोग नहीं करेंगी। किन्तु दहेज संरक्षण और घरेलू हिंसा पर महिलाओं के संरक्षण के लिए बने हुए कानूनों के दुरुपयोग पर तो कई बार कोर्ट तक चिंता जता चुका है और गिरफ़्तारी को तर्कसंगत बनाने के निर्देश भी जारी कर चुका है। इसलिए उनका यह तर्क तथ्यों के आधार पर कहीं सही नहीं बैठता। एक पक्ष की भावनात्मकता या काल्पनिकता के आधार पर अपराध की एक नई किस्म का निर्धारण नहीं किया जा सकता।

पक्षकारों का यह भी मानना है घाना, जॉर्डन, नाइजीरिया, ओमान जैसे देशों में ही इसको कानूनी अपराध नहीं बनाया गया है जबकि अधिकांश यूरोपीय देशों में इसे अपराध की श्रेणी में ला दिया गया है। दरअसल इस तर्क को देने वाले वही लोग हैं जो भारत की हर चीज को यूरोपीय चश्मे से देखते हैं, उनके लिए भारत की हर व्यवस्था, हर पद्यति, हर प्रथा का मूल्यांकन पश्चिमी

मानदंडों के आधार पर होता है। अफ्रीका का बुरुंडी हो या दक्षिण अमेरिका का वेनेजुएला-हर देश की सामाजिक संरचना, संस्कृति, खानपान अलग है और विवाह उसी सांस्कृतिक ढांचे का एक अंग है। जिसका मूल्यांकन एक सार्वभौमिक पैमाने पर नहीं किया जा सकता। भारत भी एक स्वतंत्र, लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष, निष्पक्ष और प्रगतिशील देश है। यहां के कानून, यहां की जीवन-पद्धति सामाजिक संरचना पर ही आधारित बनाए जाएंगे न कि किसी देश की नकल करके।

कुछ लोगों को वैवाहिक दुष्कर्म का अपवाद संविधान में वर्णित मौलिक अधिकारों यथा अनुच्छेद 21 और अनुच्छेद 14 के विपरीत लगता है। दरअसल ऐसे लोगों को पूर्वाग्रह से बाहर निकलकर समझना चाहिए कि भारत के किसी कानून में वैवाहिक दुष्कर्म को वैध नहीं ठहराया गया या फिर बढ़ावा नहीं दिया जा रहा। इस तरह के अपराधों के लिए भी देश में और आईपीसी में अन्य बहुत से कानून और धाराएं हैं जहां एक महिला स्वतंत्र और निडर रूप से अपने पति के द्वारा की जाने वाली हिंसा या दुष्कर्म के खिलाफ एफआईआर दर्ज करा सकती है। पीड़ित महिला को अनुच्छेद 14 के तहत समानता का भी अधिकार भी प्राप्त है और अनुच्छेद 21 के तहत गौरवपूर्ण जीवन जीने की स्वतंत्रता का भी।

यदि हम कानूनी नजरिए से भी देखें तो सरकार ने हाईकोर्ट में सबमिट किए गए अपने एफिडेविट में कहा था कि इस प्रावधान को हटाना विवाह संस्था को बर्बाद करने या पतियों को प्रताड़ित करने के लिए एक नए तरीके निर्माण करने के बराबर हो सकता है। इसके साथ ही कानूनों की वैधता के परीक्षण और जरूरत के अनुसार संस्तुति के लिए भारत में विधि आयोग जैसी संस्था है और विधि आयोग ने भी धारा 375(2) के प्रावधान को हटाए जाने की संस्तुति नहीं की है। इसके साथ-साथ हाईकोर्ट के न्यायाधीश ने यह भी कहा था कि यह कोर्ट के दायरे से बाहर है कि वह एक नए कृत्य को अपराध घोषित कर दे, यह विधायिका का काम है। इसके लिए विधायिका को विस्तृत विचार-विमर्श करके, सभी हितधारकों की राय जानकर, अध्ययन विश्लेषण के लिए कमेटी गठित करके ही एक निर्णय लेना चाहिए।

एक तर्क यह भी दिया जाता है कि यह प्रावधान पति आश्रय के सिद्धांतों का समर्थक है, जिसके अनुसार एक महिला शादी के साथ ही अपनी पहचान और कानूनी अधिकार खो देती है, इससे यह उसके मौलिक अधिकारों का उल्लंघन भी है। परंतु एक महिला की स्वतंत्रता की सुनिश्चितता के लिए अनेक नए कानून बने हैं और सुप्रीम कोर्ट ने भी इन मामलों पर अनेकों प्रगतिशील निर्णय दिए हैं जिसमें बेटी और बेटे को बराबर का दर्जा, संपत्ति में बराबर का हक, समान वेतन, निःशुल्क शिक्षा, समान काम का अधिकार और बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जैसे अभियान सम्मिलित हैं। इसलिए वैवाहिक दुष्कर्म को अपराध बनाने के पीछे यह तर्क कमजोर साबित होता है। वैसे भी इसे कानूनी रूप से हल किए जाने से बेहतर सामाजिक जागरूकता से ठीक करने की जरूरत है। जैसे-जैसे महिलाएं अधिक शिक्षित होंगी, वर्कफोर्स में उनकी सहभागिता बढ़ेगी, आर्थिक रूप से स्वतंत्र होंगी; खेल राजनीति, प्रशासन, उद्यमिता में आगे बढेंगी, वैसे-वैसे दुष्कर्म की घटनाएं और वैवाहिक दुष्कर्म के मामले घटते जाएंगे। इसलिए पैरोकारों को

दुष्कर्म को रोकने का सटीक निदान, विवाह संस्था को बर्बाद करने से हटाकर महिलाओं की शिक्षा, समानता, रोजगार की ओर पहल करके खोजना चाहिए।

यह बात सही है कि महिलाएं लगभग हर मामले में पुरुषों से पीछे हैं। वे शोषण और अपराध की शिकार भी सामान्यत: ज्यादा ही हैं। उन्हें पुरुषों के बराबर स्वतंत्रता जमीनी स्तर पर हासिल नहीं है चाहे वह शिक्षा-स्वास्थ्य हो या जीवन अवसर, विवाह चयन या संपत्ति पर अधिकार। इसलिए महिलाओं के उत्थान के लिए बहुआयामी और समग्र नीति की आवश्यकता है। इसके साथ-साथ किसी भी तर्क से, किसी भी पुरुष को महिला के साथ यौन संबंध स्थापित करने का असीमित अधिकार भी नहीं है। इसलिए वैवाहिक दुष्कर्म की दिशा में सार्थक पहल की जानी चाहिए। लेकिन यह भी ध्यान रखना होगा कि महिलाओं के मुद्दों पर निर्णय करते समय या रिपोर्टिंग द्वारा पब्लिक ओपिनियन बनाते समय एक भावना भी काम करती है, जो कई बार अच्छे परिणाम भी देती है। लेकिन गंभीर मसलों में जल्दबाजी या भावना से काम नहीं चलता। किसी भी समाज में एक पक्ष को भावनाओं के आधार पर ही अपराधी नहीं मान लेना चाहिए। रोहतक गर्ल्स का मामला हो या दिल्ली की जसलीन कौर का, मीडिया ट्रायल प्रेरित पब्लिक ओपिनियन से आरोपियों का भविष्य बर्बाद हो गया। बाद में भले ही निर्णय सामान्य जनता की भावनाओं के विपरीत आए। महिलाओं के अत्याचार शोषण, बलात्कार आदि के आरोपी किसी भी कीमत पर बचने नहीं चाहिए, इसके लिए त्वरित कार्रवाई और कड़े कानूनों की आवश्यकता हमेशा महसूस की जाएगी। इसलिए दोषियों को अपराध की सजा मिले और कोई भी कानून निर्दोष के उत्पीड़न का कारण न बने हमें इन दोनों के बीच में संतुलन साधना होगा।

संदर्भ सूची-

1. नारीवादी राजनीति: संघर्ष एवं मुद्दे, आर्या, मेनन, लोकनीता, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय (2001), पृष्ठ 176
2. वही, पृष्ठ 176
3. स्त्री चिंतन की चुनौतियाँ, रेखा कस्तवार, राजकमल प्रकाशन, (2006), पृष्ठ 52
4. भारत में स्त्री असमानता, गोपा जोशी, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय (2006), 217
5. राष्ट्रीय परिवार सर्वेक्षण सर्वे-5 (https://hi.prsindia.org/policy/vital&stats)
6. भारत का संविधान, बेयर एक्ट, यूनीक प्रकाशन, 2013, पृष्ठ 7
7. वही, पृष्ठ 13
8. भारतीय दंड संहिता, यूनीक प्रकाशन (2015), पृष्ठ 84-85
9. https://www.jagran-com/editorial/apnibaat-making-marital-molestation-a-crime-can-endanger-the-institution-of-marriage-jagran-special-22402074.html
10. https://gshindi.com/social-issues/marital-rape-and-women
11. https://www.amarujala.com-india-news/explainer-what-is-marital-rape-is-marital-rape-legal-in-india

❑❑❑

(लेखिका स्त्री चिंतक हैं और 'सिनेमा में स्त्रीविमर्श' पर शोध कर रही हैं)

रिसर्च स्कालर-SRF, दिल्ली विश्वविद्यालय

मोबाइल : 7982433034, 8920059925, ई-मेल : drarunatripathi@gmail.com

समाज में बढ़ते वृद्धा आश्रम का जिम्मेदार कौन?

—डॉ. पूजा सिंह

भारत में वृद्धाश्रम की आवश्यकता क्यों हुई इसको समझने के लिए हमें प्राचीन भारत की तरफ लौटना होगा। प्राचीन भारत में मनुष्य का जो लक्ष्य होता था वह मोक्ष होता था, और जो अपने नीचे के तीन चरणों के बाद आता था यानि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। धर्म के अंतर्गत वह शिक्षा ग्रहण करता था, अर्थात् अपने जीविकोपार्जन के लिए नाना प्रकार के कार्य करता था, काम अपनी संतति को आगे बढ़ाने के लिए और मोक्ष जब वह अपने तीनों दायित्वों से निवृत्ति के बाद तब वह मोक्ष की तरफ आगे बढ़ता। एक शब्द हमें प्राचीन संस्कृति में मिलता है वह 'मोक्ष' और 'वानप्रस्थ' आश्रम।

आज जिस तरीके से भारतीय परंपरा और संस्कृति तार-तार हो रही है वह किसी की दृष्टि से अछूता नहीं है इसे दुर्भाग्य कहें, विडंबना कहें, या हमारे अंतर्मन की कमजोरी जिसके कारण माता पिता और बच्चों के मध्य की सबसे सशक्त प्रेम की कड़ी कहीं ना कहीं कमजोर और ढीली पड़ती जा रही है। आज जिस तरीके से समाज में वृद्धाश्रम की बाढ़ सी आ गई है उसका जिम्मेदार कौन है?

हमारे और आप जैसे बहुत से लोग कहेंगे कि इस समाज में बढ़ते हुए वृद्ध आश्रम के जिम्मेदार आज की युवा पीढ़ी हैं, क्योंकि उसे ना तो अपने दायित्वों का भान है और ना तो ज्ञान, जिस तरीके से वह अपनी अलग दुनिया बसाते जा रहे हैं उसमें मां बाप के लिए कहीं कोई स्थान ही नहीं। पूछना चाहती हूं कि इस बदलाव का जिम्मेदार कौन है, इतना बड़ा परिवर्तन समाज में एकाएक तो नहीं आ सकता। मेरी तरह आप भी यही कहेंगे कदापि नहीं, क्योंकि इस परिवर्तन के बीज हमने स्वयं ही अपनी पीढ़ी के अंदर बोए हैं, और हम इसे झुठला भी नहीं सकते।

आपके मन में यह प्रश्न उठ रहा होगा कि ऐसा कैसे हो सकता है? यह कैसे संभव है? मां बाप अपने बच्चों के मन में ऐसे भावों को क्यों बोएंगे? किंतु आपका यह तर्क और आपकी धारणा दोनों ही निराधार है। आप माने या ना माने इस परिवर्तन के आप स्वयं ही जिम्मेदार हैं। जिस तरीके से हम महत्वकांक्षी बनते जा रहे हैं और उस महत्वकांक्षा को पूर्ण करने के लिए अपने कर्तव्यों की इतिश्री करते जा रहे हैं, तो उसका कुछ ना कुछ तो दुष्प्रभाव तो हमें सहना ही होगा। हम भूल जाते हैं कि जैसा बीज हम लगाएंगे वैसे ही फल हमारे सामने आएंगे।

आज वृद्धा आश्रम बढ़ रहा है तो हम हो हल्ला मचा रहे हैं, आज की पीढ़ी को अनैतिक, असंस्कारी अपने कर्तव्यों की तिलांजलि देने वाला और न जाने कितनी उपमाओं से सुशोभित कर रहे हैं। उन्हें कोसते हैं, उन्हें भला-बुरा कहते हैं किंतु हम भूल

जाते हैं कि जितनी तेजी से वृद्ध आश्रम समाज में बढ़ रहा है उसे चार गुना तेजी से 'डे केयर' बढ़ते जा रहे हैं। 'डे केयर' अर्थात जहां हम अपने बच्चों को छोड़कर अपने काम पर चले जाते हैं जहां बच्चे अपने मां बाप के लिए तरसते रहते हैं लेकिन हमें उसकी कोई परवाह नहीं होती है। हम उस डेकेयर के भरोसे अपने नन्हें से भविष्य को छोड़ कर आगे बढ़ जाते हैं, पर उस पर तो कोई बात नहीं करता ?

जहां बच्चे का बचपन सिसक सिसक कर बीतता है, जहां उसके बचपन की बाल लीलाएं दम तोड़ती हैं, जहां उसकी हंसी ठिठोली को ना कोई सुनने वाला है और ना कोई समझने वाला, वह नन्हीं सी जान अपनी जिंदगी कैसे जी रहा है इस पर कोई बात नहीं करता, क्योंकि उस पर बात करते ही यह स्पष्ट हो जाएगा जितना प्रेम, जितना अपनापन और जितनी आत्मीयता हम बचपन में अपने बच्चों को दे रहे हैं, उतना ही प्रेम उतना ही अपनापन और उतनी ही आत्मीयता वह हमें बुढ़ापे में वापस कर रहे हैं जब हम अपनी महत्वकांक्षा को पूर्ण करने के लिए उन्हे डेकेयर के भरोसे छोड़ कर चले जाते हैं, उन्हें उनके हाल पर छोड़ देते हैं, तो बड़े होने पर वह भी अपनी मंजिल की तरफ बढ़ जाते हैं, जिस प्रकार बचपन में हम उनके दर्द को महसूस नहीं कर पाते तो शायद बड़े होने पर वे भी हमारे दर्द हमारे अकेलेपन को नहीं समझ पाते। प्रकृति का नियम है जैसा देंगे वैसा ही हमें वापस मिलेगा, फिर आप बताइए इस वृद्ध आश्रम के लिए हमारी संतानें कैसे जिम्मेदार हो गई। इस वृद्ध आश्रम के लिए सिर्फ हम और हम दोषी हैं।

एक समय था जहां संयुक्त परिवार हुआ करता था जहां कई परिवार एक साथ एक छत के नीचे खुशी-खुशी रहा करते थे जहां किसी को किसी से कोई समस्या नहीं थी, ना कोई बंटवारा था और ना आपस में किसी को किसी से कोई दुख लेकिन वह समय आज इतिहास का हिस्सा बन चुका है। आज जिस तरीके से संयुक्त परिवार का स्थान एकल परिवार ने ले लिया है उसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता किंतु यह परिवर्तन भी हमारे स्वार्थ और महत्वाकांक्षा के कारण ही आया और उसने वसुधैव कुटुंब की भावना को कितनी क्षति पहुंचाई है, कितना धराशाई किया है उसे कहने की आवश्यकता नहीं क्योंकि वसुधैव कुटुंब की भावना कहने के लिए नहीं, उसे अपने हृदय में धारण करने के लिए होती है।

भारत में वृद्धाश्रम की आवश्यकता क्यों हुई इसको समझने के लिए हमें प्राचीन भारत की तरफ लौटना होगा। प्राचीन भारत में मनुष्य का जो लक्ष्य होता था वह मोक्ष होता था, और जो अपने नीचे के तीन चरणों के बाद आता था यानि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। धर्म के अंतर्गत वह शिक्षा ग्रहण करता था, अर्थात् अपने जीविकोपार्जन के लिए नाना प्रकार के कार्य करता था, काम अपनी संतति को आगे बढ़ाने के लिए और मोक्ष जब वह अपने तीनों दायित्वों से निवृत्ति के बाद तब वह मोक्ष की तरफ आगे बढ़ता। एक शब्द हमें प्राचीन संस्कृति में मिलता है वह 'मोक्ष' और 'वानप्रस्थ' आश्रम। इन दोनों का बड़ा ही अद्‌भुत संयोग है जब व्यक्ति वृद्ध हो जाता, अपने सभी दायित्वों से निवृत हो जाता, अपने कर्तव्य को पूर्ण कर लेता तब उसे वानप्रस्थ का रास्ता प्राचीन ग्रंथों ने दिखाया था।

क्या सोच रही होगी उस समय के लोगों की, क्यों उन्होंने वानप्रस्थ आश्रम को चुना। उस समय के लोगों का मस्तिष्क इतना उर्वर था कि वह सोचते थे कि जब हमारा शरीर कमजोर हो जाएगा तो हम अपने परिवार के लिए कहीं ना कहीं एक जिम्मेदारी बन जाएंगे और हमारी सेवा

सुश्रुषा के लिए किसी ना किसी का हमारे आसपास होना आवश्यक हो जाएगा और कहीं ना कहीं हम किसी पर निर्भर हो जाएंगे इसलिए उन्होंने वानप्रस्थ को चुना। ताकि वह वानप्रस्थ में जाकर अपने बाकी जीवन को ईश्वर को समर्पित कर पाए अपने आप को आध्यात्मिकता से जोड़ पाए और उस परमात्मा को प्राप्त कर पाए और शनैः शनैः अपने शरीर का त्याग करें।

परंतु धीरे-धीरे मनुष्य की सोच में परिवर्तन आरंभ हुआ और यह परिवर्तन इतना विनाशकारी हुआ जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था जो कभी वानप्रस्थ हुआ करता था आज शायद वही वृद्ध आश्रम बन गया। और अर्थ जो मनुष्य की आवश्यकताओं के लिए बना था मनुष्य उसके मोह में इस तरीके से फँसने लगा कि उसे उसके अतिरिक्त और कुछ दिखाई ही नहीं देता मनुष्य की आवश्यकताएं है दिन प्रतिदिन बढ़ने लगी वह अर्थ और काम के पीछे इस तरीके से भागने लगा कि मोक्ष जैसे शब्द हमारे मन मस्तिष्क और समाज से धीरे-धीरे गायब से होने लगे जिसका परिणाम यह हुआ कि हम आज धर्म अर्थ और काम तक ही सिमट के रह गए, मोक्ष जो हमारा सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य था उससे कहीं ना कहीं हम आज भटक चुके हैं और शायद हमें याद भी नहीं कि इसी मोक्ष को प्राप्त करना हमारे जीवन का परम लक्ष्य था किंतु आज यह लक्ष्य कहीं पीछे छूट गया है। 1911 में केरल राज्य के त्रिशूर नामक स्थान पर पहला वृद्ध आश्रम खोला गया निसंदेह सबको पता था पता है कि उस समय अंग्रेज बहुत ज्यादा प्रभावशाली हो चुके थे और कहीं ना कहीं उनकी संस्कृति उनकी सभ्यता भी हम लोगों पर कहीं ना कही हावी होने लगी थी। उनका रहन-सहन उनका पोशाक हम लोग ग्रहण करने लगे ऐसे में जो लोग विदेश जाते वहां से एक सभ्यता लेकर आते कि क्यों ना बुजुर्ग लोगों ऐसे स्थान पर रख दिया जाए जिस जगह उनके लिए सारी सुख सुविधाएं हो, उनको देने के लिए भोजन हो, उनकी सेवा करने वाले लोग हो और वहां पर वह अकेले रहें और अपना जीवन यापन करें।

शायद इसी सोच के साथ वृद्ध आश्रम की शुरुआत हुई होगी यह ऐसा विचार शायद धनाढ्य लोगों के मन में उपजा होगा कि जो समय हम अपने बुजुर्गों के लिए बिताते हैं उनकी सेवा में लगाते हैं अगर वह समय भी हम धन कमाने में लगाएं तो हम और ज्यादा धन कमा सकते हैं। धनाढ्य लोगों ने जब यह सोचकर खोला होगा तो शायद उनकी सोच सही रही होगी वह अपने माता-पिता को वे सारी सुख सुविधाएं वहां देते होंगे और कहीं ना कहीं हफ्ते-हफ्ते में उनसे मिलने भी जाते होंगे ऐसा लिखा हुआ मिलता है। लेकिन जब भारत समाज में इसकी शुरुआत हुई तो यहां गलती क्या हुई यह भी एक विचारणीय प्रश्न है क्योंकि हमारा भारतीय परिवार संयुक्त परिवार में रहने का आदी था और इस वृद्धा आश्रम ने उस नींव को ही हिला दिया जिसका प्रभाव परिवार और समाज पर पड़ा जिसने परंपराओं और संस्कारों के संगम को तोड़ दिया। अतः हमें ऐसे 'डे केयर' और 'वृद्धाआश्रमों' को बंद करने की आवश्यकता है जो भारतीय संस्कृति को तार-तार कर रही हैं, लेकिन यह तभी सफल हो पाएगा जब समाज का प्रत्येक व्यक्ति इस समस्या को समस्या की दृष्टि से देखेगा, नहीं तो नन्हें बालक माता-पिता के प्रेम के लिए तरसते रहेंगे और माता-पिता वृद्ध होने के बाद अपने संतानों के प्रेम के लिए?

❐❐❐

सनबीम वोमेंस कॉलेज ,वरुणा, वाराणसी।

आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना और राष्ट्रभाषा का प्रश्न

—डॉ. राजेश कुमार शर्मा

भाषा वैज्ञानिक सुनीति कुमार चटर्जी ने राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का स्पष्ट समर्थन करते हुए कहते हैं कि-''एक संयुक्त एकीकृत भारत की एक भारतीय राष्ट्रभाषा होनी चाहिए जो देश की एकता का ज्वलंत प्रतीक हो, और हिंदी ही ऐसी एकमात्र भाषा है जो इस पद पर आरूढ़ हो सकती है।''

विकास की दृष्टि से 21वीं शताब्दी एशिया की शताब्दी मानी जा रही हैं एशिया की बात करते ही यह प्रश्न सामने आ जाता है कि इस महत्वपूर्ण विकासयात्रा में भारत का अपना स्थान क्या रहेगा? वर्तमान सदी में तीसरे दशक के जिस मोड़ पर हम आज खड़े हैं वहां से शासन और समाज के द्वारा सशक्त, आत्मनिर्भर भारत का स्वप्न देखा जा रहा है। 'मेक इन इंडिया', 'स्टार्टअप इंडिया' आदि पहलों के माध्यम से एक विकसित नवीन भारत की संकल्पना दिखाई पड़ती है। जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में अपेक्षित प्रगति दृष्टिगोचर हो रही है, तो क्या भारत अगले कुछ दशकों में विकसित देशों की प्रथम पंक्ति में अपना स्थान बना लेगा? सामान्यतः यदि आर्थिक, सामाजिक, सामरिक एवं भाषायी परिस्थितियां अनुकूल रहीं तो निसंस्देह यह संभव होगा किंतु एक समृद्ध राष्ट्र के रूप में भारत की पहचान स्थापित होने में राष्ट्रभाषा का प्रश्न एक बड़ी बाधा खड़ी करता है। दरअसल, यह प्रश्न आज का नहीं है बल्कि 150 वर्षो से भी अधिक समय से बना हुआ है। 1947 की आजादी और 1950 में गणतंत्र बनने के साथ ही भाषा का प्रश्न हल कर लेना चाहिए था; पर ऐसा हो नहीं सका। इसके पीछे की समस्याओं से हम सभी अवगत हैं। हमारे कर्णधारों ने उस समय अनेक तरह के अड़ंगे लगाकर विदेशी भाषा को देश के कामकाज की भाषा बनाए रखने में अपनी भूमिका निभाई। यद्यपि जनता का एक विशाल वर्ग राष्ट्रभाषा हेतु अपना स्वर बुलंद करता रहा है। संविधान की धारा 343 से 351 के मध्य संघ और प्रांतों के भाषा व्यवहार संबंधी प्रावधानों का उल्लेख किया गया है। इसके अंतर्गत संघ की राजभाषा के रूप में देश की सबसे बड़ी भाषा हिंदी को स्थान देकर कुछ हद तक इस समस्या का समाधान करने का प्रयास किया था। किंतु अंग्रेजी को सह-राजभाषा का दर्जा बनाए रखकर नेताओं ने भाषिक गुलामी से मुक्ति का एक स्वर्णिम अवसर गंवा दिया।

संघ की राजभाषा के रूप में कुछ हद तक आज भी हिंदी का व्यवहार हो रहा है पर अपेक्षा से बहुत कम। तो क्या यह माना जाए

कि इसमें हिंदी का कोई अपना दोष है ऐसा कहना सही नहीं होगा। एक राजभाषा अथवा एक राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी विभिन्न महत्वपूर्ण क्षेत्रों में व्यवहृत होती रही है। स्वतंत्रता के कुछ वर्षों बाद ही प्रसिद्ध आलोचक आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा ने अपनी पुस्तक 'राष्ट्रभाषा हिंदी : समस्याएं और समाधान' में लिखा है कि-''भाषा के व्यवहार का अर्थ है कि वह प्रशासन, न्याय, शिक्षा, विदेशी संपर्क, ज्ञान, मनोरंजन, सूचना, वाणिज्य, व्यवसाय आदि की भाषा बन सके। जो भाषा जितने अधिक क्षेत्रों में प्रयुक्त होती है वह उतना ही व्यापक मानी जाती है। हिंदी थोड़ी या बहुत इन सभी क्षेत्रों में प्रयुक्त हो रही है। आवश्यकता इस बात की है कि आंशिक प्रयोग पूर्णता में परिणित हो जाए।''1

शासन-प्रशासन के कुछ पदों पर बैठा हुआ हमारे देश का बौद्धिक वर्ग राष्ट्रभाषा के सवाल पर अपेक्षाकृत उदासीन ही रहा है। इसकी अपेक्षा साधारण जनमानस का एक बड़ा हिस्सा अपनी शिक्षा, व्यवसाय, साहित्य, पत्रकारिता, मनोरंजन इत्यादि क्षेत्रों में हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का प्रयोग प्रचुरमात्रा में लगातार कर रहा है। रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, पत्र-पत्रिकाएं, साहित्य-सृजन, आदि में आज भी जितना हिंदी भाषा का प्रयोग हो रहा है, उतना राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त करने के लिए पर्याप्त है। इस दिशा में कुछ प्रदेशों की गलत भाषायी राजनीति आड़े आ रही है। यही नहीं हिंदी देश के प्रभु वर्ग की उपेक्षा का शिकार भी पिछले 75 वर्षो से निरंतर बनती आ रही है।

नीति निर्धारक तबके ने स्वाधीनता प्राप्ति के आरंभ से ही अंग्रेजी को बेजा प्रश्रय दिया जबकि भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के महानायक राष्ट्रपिता महात्मा गांधी आजीवन भाषिक मुक्ति के लिए संघर्ष करते रहे। 1909ई. के अपने महत्वपूर्ण ग्रंथ 'हिंद स्वराज' में ही उन्होंने स्पष्ट लिखा है कि-''करोड़ो आदमियों को अंग्रेजी पढ़ाना तो उन्हें गुलामी में फँसा देना है। मैकाले ने इस देश में जिस शिक्षा की नींव डाली वह सच पूछिये तो हमारी गुलामी की नींव थी। मैं यह नहीं कहता कि उसने ऐसा समझ कर, ऐसे इरादे से अपने निबंध लिखे। पर उसके कार्य का फल यही रहा। स्वराज्य की बात हम परायी भाषा में करते है। यह कैसी विवशता है।''2

इस विवशता के विरूद्ध महात्मा गांधी जीवनपर्यन्त लड़ते रहे। अंग्रेजी भाषा पर अधिकार रखने के बावजूद गांधी जी को जब भी जहाँ अवसर मिला, मसलन देशवासियों को जब भी संबोधित करने का मौका मिला राष्ट्रभाषा हिंदी में ही किया। 6 फरवरी 1916 ई. को काशी हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी में आयोजित सम्मेलनको संबोधित करते हुए गांधी जी ने दो टूक शब्दों में अंग्रेजी का विरोध व राष्ट्रभाषा हिंदी का समर्थन किया था-''मैं कहना यह चाहता हूँ कि, मुझे आज इस पवित्र नगर में, इस महान विद्यापीठ के प्रांगण में अपने ही देशवासियों से एक विदेशी भाषा में बोलना पड़ रहा है। यह बड़ी शर्म की बात है। पिछले दो दिनों में यहाँ जो भाषण दिए गए यदि उनमें लोगों की परीक्षा ली जाए और मैं परीक्षक होऊं तो निश्चित है कि ज्यादातर लोग फेल हो जाएं, क्यों? इसलिए कि इन व्याख्यानों ने उनके हृदय नहीं छुए। मैं गत दिसंबर में राष्ट्रीय महासभा के अधिवेशन में मौजूद था। वहां बहुत अधिक तादाद में लोग इकट्ठा हुए थे। आपको ताज्जुब होगा कि बंबई के वे तमाम श्रोता केवल उन भाषणों से प्रभावित हुए जो हिंदी में दिए गए थे। ध्यान दीजिए यह बंबई की बात है, बनारस की नहीं जहाँ सभी लोग हिंदी बोलते हैं। बंबई प्रांत की भाषाओं और हिंदी में उतना फर्क नहीं है जैसा अंग्रेजी और भारतीय भाषाओं में है। और इसलिए वहाँ के श्रोता हिंदी में बोलने वाले की बात ज्यादा आत्मीय भाव से समझ सके।''3

स्वाधीनता आंदोलन के दौरान गांधी जी के अलावा अनेक अहिंदी भाषी विद्वानों और राजनीतिज्ञों ने राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी की आवश्यकता महसूस की थी और इसके प्रचार-प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाई थीं। इसमें कुछ महत्वपूर्ण नाम सुनीति कुमार चटर्जी, केशवचन्द्र सेन, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, सरदारवल्लभ भाई पटेल आदि लिए जा सकते हैं। भाषा वैज्ञानिक सुनीति कुमार चटर्जी ने राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का स्पष्ट समर्थन करते हुए कहते हैं कि-"एक संयुक्त एकीकृत भारत की एक भारतीय राष्ट्रभाषा होनी चाहिए जो देश की एकता का ज्वलंत प्रतीक हो, और हिंदी ही ऐसी एकमात्र भाषा है जो इस पद पर आरूढ़ हो सकती है।"4

यह विडंबना ही कही जाएगी कि जब राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को कार्यान्वित करने का समय आया तो 'सुनीति कुमार चटर्जी' सहित अन्य कई अहिंदी भाषी नेताओं ने हिंदी का कड़ा विरोध किया। दरअसल होना तो यह चाहिए था कि स्वतंत्रता मिलते ही विदेशी भाषा का उपयोग तत्काल समाप्त कर दिया जाता। शासन-प्रशासन, न्याय, संस्कृति, शिक्षा आदि का माध्यम राष्ट्रभाषा हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के रूप में अनिवार्य कर दिया जाता। आजादी के तुरंत बाद एक अमेरिकी पत्रकार बापू का साक्षात्कार अंग्रेजी में लेना चाहता था किंतु बापू ने ऐसा करने से स्पष्ट मना कर दिया और संदेश भेजा कि उनसे कह दो कि गांधी अंग्रेजी भूल गया।

न्याय और शिक्षा के माध्यम के रूप में भारतीय भाषाओं का उपयोग करने के पैरोकार गांधी बहुत पहले से ही रहे हैं। 1921 के 'नवजीवन' में लिखे एक लेख में वह कहते हैं कि-"अगर मेरे हाथों में तानाशाही सत्ता हो तो मैं आज से ही विदेशी माध्यम के जरिए दी जानेवाली हमारे लड़कों और लड़कियों की शिक्षा बंद कर दूं, और सारे शिक्षकों और प्रोफेसरों से यह यह माध्यम तुरंत बदलवा दूँ या उन्हें बर्खास्त कर दूँ। मैं पाठ्यपुस्तकों की तैयारी में इंतजार नहीं करूंगा, वे तो माध्यम के परिवर्तन के पीछे-पीछे अपने आप चली आयेंगी। वह एक ऐसी बुराई है जिसका इलाज होना चाहिए।"5

परंतु दु:खद पहलू यह है कि अंग्रेजी का शिकंजा ढीला होने के बजाय प्राय: जीवन के सभी क्षेत्रों में क्रमश: कसता ही गया। राष्ट्रभाषा हिंदी अपनी जनोपयोगी प्रवृत्ति के कारण अपना सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व बनाए रखने में बहुत हद तक सक्षम रही। विशाल हिंदी भाषी जनसमुदाय होने के कारण देशके कोने-कोने में ही नहीं बल्कि संसार के अनेक राष्ट्रों में एक महत्वपूर्ण भाषा के रूपमें समादर पाती रही है। वहीं दूसरी ओर अपने ही देश में नीति-नियंताओं की उपेक्षा का शिकार भी होती रही है। शिक्षा, न्याय, रोजगार के स्तर पर राष्ट्रभाषा हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को पीछे ढकेलने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी गई है। उपेक्षा का यह दंश हिंदी को सैकड़ों वर्षों की विदेशी पराधीनता के समय में तो भोगना ही पड़ा, ओछी राजनीति के निहित स्वार्थों के कारण पिछले सात दशकों की अपनी शासन व्यवस्था में भी इसे उपेक्षित ही रहना पड़ा। हम पढ़े लिखे भारतीयों की मानसिकता तो इस हद तक पराधीन हो गई है कि हम अपनी ही भाषा बोलने में लज्जा और पिछड़ापन का अनुभव करते हैं, जबकि अंग्रेजी भाषा का व्यवहार करने में गौरव एवं संभ्रांतता की अनुभूति करते हैं। आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा ने इस प्रवृत्ति पर अपनी टिप्पणी करते हुए कहा है कि-"संसार में कोई देश ऐसा नहीं है जहां के निवासी अपनी भाषा बोलने में संकोच का अनुभव करते हों पर भारत इसका अनोखा उदाहरण है। हम अपनी भाषा बोलने की अपेक्षा अंग्रेजी बोलने में अधिक आनंद तथा गर्व का अनुभव करते हैं, जो वस्तुत: खेद एवं ग्लानि का विषय है। हमें इस कमजोरी को दूर करने का प्रयास करना होगा तभी हमारी जीभ और कान भारतीय शब्दों से अभ्यस्त हो सकेंगे। भाषा अभ्यास की वस्तु है और हम जितना ही उसका व्यवहार करेंगे उतनी ही वह सुगम होगी।"6

इस तथाकथित पढ़े लिखे वर्ग की भाषाई मानसिकता बदले बिना सामाजिक, सांस्कृतिक स्वाधीनता का अनुभव करना बेमानी है आज जबकि हम अपने राष्ट्र की स्वाधीनता का अमृत महोत्सव विधि-विधान के साथ मना रहे हैं, साथ ही अगले 25 वर्षों के लिए आर्थिक, सामाजिक, विकास का एक नया खाका खींच रहे हैं तब भाषा का प्रश्न स्वाभाविक तौर पर सामने खड़ा हो जाता है। भाषिक बाधा के रहते अपनी विशाल युवा आबादी को आर्थिक एवं वैज्ञानिक विकास से जोड़ना संभव नहीं है। हमारा देश विश्व की महाशक्ति बनने के ओर निरंतर प्रयत्नशील है। दुनिया के सबसे अधिक युवाओं वाले राष्ट्र के लिए यह प्रयत्न गलत नहीं कहा जा सकता परंतु भाषिक पहलू का सवाल हल किए बिना आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा को मूर्त रूप देना अपेक्षाकृत दुरूह प्रतीत होता है। इस संबंध में 'गगनांचल' पत्रिका के संपादक एवं कवि 'श्री आशीष कंधवे' ने कई वर्ष पहले ही लिखा था कि,''एक सबल तथा सक्षम राष्ट्रभाषा वाला देश ही आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक वैज्ञानिक एवं सामरिक रूप से महाशक्ति बन सकता है। उधार की भाषा, उधार की संस्कृति, उधार के विचार से किसी भी राष्ट्र का विश्व महाशक्ति बनने का सपना तारे तोड़ लाने जैसा ही प्रतीत होता है।''7

एक सबल और समृद्ध राष्ट्र के लिए राष्ट्रभाषा की अनिवार्य आवश्यकता महसूस करते हुए कंधवेजी अन्यत्र लिखते हैं कि,''आज हम स्वतंत्र हैं। हमारा सपना संविधान है। हम परमाणु संपन्न भी हैं, और हम अपने आपको एक नए विश्वशक्ति के रूप में स्थापित भी करना चाहते हैं लेकिन विडंबना यह है कि आजादी के 65 सालों के बाद भी हमारी कोई राष्ट्रभाषा नहीं है।''8

एक समृद्ध, सुदीर्घ संस्कृति संपन्न राष्ट्र के लिए उक्तटभाषा चिंता बिल्कुल उचित है। इस दिशा में आज भी अनेक व्यक्ति एवं संस्थान स्वभाषा को उपयुक्त स्थान दिलाने के लिए भरसक संघर्ष कर रहे हैं। परंतु इस तरह के संघर्ष को कामयाबी तब तक मिलनी कठिन है जब तक कार्यपालिका, विधायिका, न्यायपालिका तथा अन्य महत्वपूर्ण संस्थानों के शीर्ष पर काबिज माननीयों की भाषायी पराधीनता वाली मानसिकता में अपेक्षित बदलाव नहीं आ जाता। दरअसल स्वाधीनता से पूर्व भाषा मुक्ति के लिए तो प्रयत्न किए जा रहे थे। स्वाधीनता के बाद इसमें अनेक कृत्रिम बाधाएं पैदा कर दी गई। हिंदी, उर्दू, हिंदी हिंदुस्तानी का विवाद तो देश विभाजन के साथ ही कुछ सीमा तक हल हो गया पर कई स्थानीय क्षेत्रपजो कि पहले अपने आपको राष्ट्रभाषा हिंदी का ध्वजवाक कहते थे, अब वही लोग प्रांतीय भाषाओं का मुद्दा उछालकर राष्ट्रभाषा हिंदी के मार्ग का सबसे बड़ा रोड़ा सिद्ध होने लगे। जबकि किसी भी प्रादेशिक भाषा में इतना विस्तार एवं गहराई नहीं थी कि वह पूरे देश की संपर्क भाषा बन सके, इस संदर्भ में आ. देवेन्द्रनाथ शर्मा मानते हैं कि,''वही एकमात्र भाषा थी जो सारे देश को एक सूत्र में बांध सकती थी। यदि इस महान उद्देश्य की सिद्धि के लिए हिंदी ग्रहण की गई तो किसी के अनुग्रह के कारण नहीं बल्कि अपनी अंर्तनिहित शक्ति के कारण।''9

फिर राष्ट्रभाषा विरोधी नेताओं ने एक दूसरा खेल खेला, उन्होंने राष्ट्रभाषा समर्थकों के दबाव में आकर 14 सितंबर 1949 को भारतीय संघ की राजभाषा हिंदी को बना दिया पर इसे शासन-प्रशासन के लिए कम सक्षम कहकर गुलामी की भाषा अंग्रेजी को भारतीय जनमानस पर जबरन थोप दिया। पहले तो अंग्रेजी अगले 15 वर्षों के लिए ही स्वीकार की गयी किंतु संसद के भाषा अधिनियम 1965 के जरिये उपर्युक्त व्यवस्था अनिश्चित काल के लिए उपर्युक्त्कर दी गई। इन घटनाओं के लिए कुछ हद तक दक्षिणी राज्यों के हिंसक भाषा आंदोलन को भी जिम्मेदार

ठहराया जा सकता है। किंतु जैसा कि स्पष्ट है राष्ट्रभाषा हिंदी का संघर्ष अन्य भारतीय भाषाओं से न होकर पराधीनता का प्रतीक एक विदेशी भाषा से है।

हालांकि हिंदी को राजकाज के लिए अधिक सक्षम बनाने हेतु राजभाषा आयोग, राजभाषा संबंधी स्थायी संसदीय समिति, पारिभाषिक शब्दावली आयोग एवं हिंदी निदेशालय निर्माण जैसे कई कदम उठाए जाते रहे हैं। इसके कुछ सार्थक परिणाम भी दिखाई पड़े किंतु धरातल पर कोई बड़ा भाषिक परिवर्तन सामने नहीं आया।

आज भी हिंदी विभिन्न स्तरों पर जैसे अंग्रेजी, अन्य भारतीय भाषाओं तथा अपनी ही उपभाषाओं तथा बोलियों से कमोवेश टकराने के लिए विवश हैं, वर्तमान में जहाँ बहुसंख्यक भारतीय समाज के द्वारा शिक्षा, व्यापार, कला-संस्कृति, साहित्य एवं मनोरंजन आदि के रूप में हिंदी को मजबूती से माध्यम बनाया हुआ है वहीं दूसरी ओर न्याय, विज्ञान, तकनीकि इत्यादि का माध्यम बनने के लिए हिंदी को लगातार जूझना पड़ रहा है। यह सुखद पहलू है कि कम से कम हिंदी प्रदेशों में शिक्षा आदि के माध्यम के रूप में हिंदी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं किंतु विभिन्न विषयों में स्तरीय पाठ्य पुस्तकों की अनुपलब्धता, कुशल अनुवाद की कमी और सबसे अधिक प्रशासनिक उपेक्षा के चलते हिंदी तथा दूसरी भारतीय भाषाओं को भी अपेक्षित विकास करने का वातावरण नहीं प्राप्त हो पा रहा है। स्थिति तब और भयावह दिखाई पड़ने लगती है जब हम दूर-दराज के गांव कस्बों में प्रायः कुकुरमुत्ते की तरह उगने वाली अंग्रेजी माध्यम की निजी विद्यालय रूपी दुकानें धड़ल्ले से दिखाई पड़ने लगी है। गरीब किसान एवं कामगार माता-पिता अपनी गाढ़ी कमाई का बड़ा हिस्सा अपनी संतानों को बेहतर शिक्षा दिलाने के लिए खर्च कर देते हैं। जबकि उन भोले भाले अभिभावकों को यह नहीं पता कि अनुशासन, प्रबंधन एवं अकुशल अध्यापक के द्वारा उन नौनिहालों को न अंग्रेजी का ठीक ज्ञान मिल पायेगा, न ही अपनी भाषा का।

संसार के अनेक देश हमारे समक्ष इस बात का उदाहरण है कि अपनी भाषा में शिक्षा ग्रहण करके एक समृद्ध राष्ट्र का दर्जा प्राप्त किया जा सकता है। जर्मनी, फ्रांस, अरब, चीन, जापान जैसे अनेक राष्ट्र अपने भाषा के बल पर एक विकसित राष्ट्र के रूप में विश्व की प्रथम पंक्ति में अपना स्थान बनाए हुए है। वहीं सर्वाधिक प्राचीन समृद्ध संस्कृति संपन्न हमारा राष्ट्र आज भी भाषिक पराधीनता की मानसिकता से उबर नहीं सका है। ऐसा लगता है कि पिछले एक हजार वर्षों की गुलामी ने इस देश के कर्णधारों के भीतर स्वातंत्र्यचेतना का अपेक्षित विकास नहीं होने दिया है। इन्हीं कर्णधारों की मानसिकता को लक्ष्य करते हुए महात्मा गांधी ने कहा था कि-"इससे बड़ी कंगाली की मैं कल्पना नहीं कर सकता, हम पर और हमारी प्रजा के ऊपर एक बड़ा आक्षेप यह है कि हमारी भाषा में तेज नहीं है। जिसमें विज्ञान नहीं है उसमें तेज नहीं है। जब हममें तेज आयेगा तभी हमारी प्रजा में और हमारी भाषा में तेज आयेगा। विदेशी भाषा द्वारा आप जो स्वातंत्र्य चाहते हैं वह नहीं मिल सकता, क्योंकि उसमें हम योग्य नहीं हैं।10

यह बिल्कुल सही है कि स्वभाषा उन्नति के बिना विशाल जनसंख्या वाले राष्ट्र की पूरी क्षमता का लाभ पाना असंभव है। स्वाभाविक चिंतन के विकसित हुए बिना विकास के अन्यान्य पक्ष कमजोर ही रह जाते हैं। इसका सूत्र आज से लगभग 150 वर्ष पूर्व ही आधुनिक हिंदी के जनक, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने सभी तरफ की उन्नतियों के मूल में भाषा की उन्नति को सर्वोपरि सिद्ध करते हुए कहा था कि-

निज भाषा उन्नत अहै, सब उन्नति कोमूल। बिन निज भाषा ज्ञान कै मिटत न हिय कोसूल।''11

वर्तमान भारतवर्ष आत्मनिर्भर राष्ट्र की पवित्र संकल्पना से ओत-प्रोत जान पड़ता है। आज नए सिरे से अपनी गौरवशाली सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक समृद्धि हेतु कटिबद्धता राजनीतिक, सांस्कृतिक नेतृत्व के भीतर दिखाई पड़ रही है। इस संबंध में भाषा का भी प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। शिक्षा, न्याय, रोजगार, शासन, प्रभृति अनेक क्षेत्रों में राष्ट्रभाषा हिंदी को उचित स्थान दिए बिना आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना पूरी नहीं हो सकती है। ध्यातव्य है कि वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था ने लंबे अरसे से चले आ रहे कई अत्यंत विवादित विषयों को सहजता पूर्वक सुलझाया है। नेतृत्व की यही दृढ़ता राष्ट्रभाषा हिंदी को उसका योग्य स्थान दिलाने में समर्थ सिद्ध हो सकती है। ऐसा करते समय भारत की अन्य प्रांतीय भाषाओं का भी ध्यान रखना आवश्यक होगा। हालांकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मातृभाषा संबंधी नीति के माध्यम से हमारे शासन की भाषा संबंधी गंभीरता का संकेत मिलता है। अभी यह देखना बाकी है कि धरातल पर उपर्युक्त भाषा नीति कितना लागू हो पाती है। इस संबंध में एक जागरूक समाज के तौर पर अपनी भाषा को उचित स्थान दिलाने में हमारी भी भूमिका महत्वपूर्ण साबित होगी।

आशा की जानी चाहिए कि सन् 2047 ई. में जब हम अपनी स्वाधीनता का शताब्दी वर्ष मना रहे होंगे तब राष्ट्रभाषा हिंदी राष्ट्र के सार्वजनिक जीवन में अपना समुचित स्थान बना चुकी होगी। भारत की जनता को उस समय तक हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में शिक्षा न्याय एवं रोजगार पाने में और अधिक सुगमता होगी।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी का प्रसार और प्रचार, पृ. 205, राष्ट्रभाषा हिंदी : समस्याएं और समाधान (आ. देवेन्द्रनाथ शर्मा), प्रकाशक-लोकभारती प्रकाशन
2. शिक्षा, पृ. 80, हिंद स्वराज मोहनदास करमचंद गांधी, प्रकाशक-सस्ता साहित्य मंडल
3. अंग्रेजी में बोलना हमारे लिए शर्म की बात, पृ. 04, गांधी और हिंदी (संपादक-राकेश पांडेय), प्रकाशक-राष्ट्रीय पुस्तक न्यास
4. हिंदी विरोधी तत्व, पृ. 198, राष्ट्रभाषा हिंदी : समस्याएं और समाधान (देवेन्द्रनाथ शर्मा), प्रकाशक-लोकभारती प्रकाशन
5. अगर मैं तानाशाह होता तो... पृ. 43, गांधी और हिंदी (संपादक-राकेश पांडेय), प्रकाशक-राष्ट्रीय पुस्तक न्यास
6. पारिभाषिक शब्दावली की समस्या, पृ. 69, राष्ट्रभाषा हिंदी : समस्याएं और समाधान (देवेन्द्रनाथ शर्मा), प्रकाशक-लोकभारती प्रकाशन
7. महात्मा गांधी की भाषा दृष्टि और वर्तमान का संदर्भ, आशीष कंधवे, पृ. 62 (वर्तमान परिदृश्य और गांधी-संपादक-डॉ. रमा, डॉ. विजय कु. मिश्र) प्रकाशक-संवाद मीडिया प्राइवेट लिमिटेड
8. वही, पृ. 65
9. भाषा और बोली, पृ. 153, राष्ट्रभाषा हिंदीरू समस्याएं और समाधान (आ. देवेन्द्रनाथ शर्मा), प्रकाशक-लोकभारती प्रकाशन
10. हिंदी के बिना हमारा स्वराज्य निरर्थक, पृ. 28, (गांधी और हिंदी राकेश पांडेय), प्रकाशक-राष्ट्रीय पुस्तक न्यास

❏❏❏

एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
मो.- 9968730090, ई-मेल- rajeshhrc@gmail.com

भक्तिकालीन साहित्य की पुनर्व्याख्या : मैनेजर पाण्डेय की आलोचना के संदर्भ में

—देबश्री सिन्हा

भक्ति काव्य की आलोचना, हिन्दी के सभी महत्त्वपूर्ण आलोचना के लिए एक चुनौती रही है। रामचन्द्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामविलास शर्मा, मुक्तिबोध, विजयदेव नारायण साही, नामवर सिंह और विश्वनाथ त्रिपाठी द्वारा विकसित आलोचनात्मक दृष्टियों की शक्ति और सीमा के तर्कसम्मत विवेचन के साथ मैनेजर पाण्डेय ने इस चुनौती के परिप्रेक्ष्य को स्पष्ट करते हुए भक्ति-काव्य की अपार सृजनात्मक समृद्धि और इस काल के रचनाकारों की पारस्परिक विशिष्टताओं और विविधताओं को चिन्हित किया है। तत्कालीन समाज में व्याप्त इन व्यावहारिक और वैचारिक संघर्षो के पीछे वे सभी सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दे थे जो पारम्परिक रूढ़ियों के चलते व्यापक जन-मानस की अपेक्षाओं और आकांक्षाओं को पूरा न कर पाने की असमर्थता से पैदा हुए थे। यह महज संयोग नहीं कि अपनी समस्त विशिष्टताओं और विविधताओं के साथ और भक्तिकाल के सभी रचनाकार लोक-मानस में न केवल सहज रूप से समाहित रहे हैं बल्कि भक्तिकालीन रचनाओं में व्यक्त जीवन-सत्य अपनी समग्र जीवन्तता के साथ जन-जीवन को निरन्तर राह दिखाता आया है। मैनेजर पाण्डेय के अनुसार भक्तिकालीन 'प्रयत्न' भारतीय काव्य में नया है, साथ ही भारतीय समाज में इस्लाम की मौजूदगी से पैदा हुई समस्याओं से मुठभेड़ का प्रतिफल है। यहाँ यह भी कहना जरूरी है कि इस 'प्रयत्न' की व्याख्या करनेवाली दृष्टि भी हिन्दी आलोचना में नई है, जो भक्ति काव्य संबंधी समझ का विकास करती है।

भक्ति काव्य संबंधी चिन्तन के विकास का दावा तो बहुतों के संदर्भ में किया जाता है, लेकिन जिसे मौलिक और सार्थक विकास कहेंगे, वह मैनेजर पाण्डेय के भक्ति विषयक लेखन में दिखता है। कुछ लोग भक्ति-काव्य का मूल्यांकन सिर्फ दार्शनिक और वैचारिक धरातल पर करते हैं और भूल जाते हैं कि वे

मैनेजर पाण्डेय भक्त कवियों की लोकवादिता को उनकी भाषा-दृष्टि में ढूंढ निकालते हैं। संस्कृत के आचार्यत्व के माहौल में जनभाषा में कविता करना मामूली बात नहीं थी। भक्त कवि संस्कृति के 'कूपजल' को नहीं, भाषा के बहते 'नीर को अपनाते हैं।

समाज-सुधार संबंधी साहित्य का नहीं, काव्य का मूल्यांकन कर रहे है। जाहिर है कि ऐसे लोगों के हाथ निराशा लगती है और तब भक्ति काव्य उनके लिए अप्रासंगिक लगने लगता है। मैनेजर पाण्डेय भक्ति काव्य की विचारधारा और संवेदना को दोनों दृष्टियों से जाँचते-परखते है। यही कारण है कि वर्ण-व्यवस्था समर्थक तुलसीदास के काव्य में उन्हें लोक-संवेदना भी दिखती है और स्त्री-विरोधी कबीर के पदों में स्त्री-जीवन के विरह की मार्मिक पीड़ा भी। उतनी ही प्रखरता के साथ उन स्थापनाओं का विरोध करते हैं, जो हिन्दी की मार्क्सवादी आलोचना में रूढ़ि बन गयी है।

पिछले कुछ वर्षों में इस देश में अनेक जन-आन्दोलन हुए हैं और मैनेजर पाण्डेय ने इन जन-आन्दोलनों को भक्तिकालीन काव्य से जोड़ा है। उनके अनुसार निश्चय ही उन आन्दोलनों में भक्त कवियों की याद आती रही है और उनसे शक्ति भी मिलती रही है। जब महाराष्ट्र के दलितों ने वर्ण-व्यवस्था और जातिप्रथा के विरूद्ध विद्रोह किया, तब उन्हें मराठी के भक्त कवि नामदेव, एकनाथ, तुकाराम आदि से प्रेरणा और शक्ति मिली होगी। हिन्दी क्षेत्र का दलित आन्दोलन कबीर से प्रेरित और प्रभावित होता रहा है। यहाँ दलित आन्दोलन के विकास के साथ कबीर और रैदास की लोकप्रियता बढ़ी है। वैसे कबीरदास पहले से ही दलित जन-समुदाय में अधिक लोकप्रिय रहे हैं। मैनेजर पाण्डेय के मतानुसार इधर जब से साम्प्रदायिकता की महामारी फैली है और मस्जिद-मंदिर का झगड़ा खड़ा हुआ है, तब से कबीरदास का महत्त्व साधारण जनता के साथ-साथ विद्वानों की भी समझ में आने लगा है। कबीर ऐसे कवि हैं जिन्हें किसी तरह की साम्प्रदायिकता और कट्टरता न तो अपना बना सकती है और न पचा सकती है। साम्प्रदायिकता, धार्मिक कट्टरता और अनेक दूसरी सामंती रूढ़ियों के विरूद्ध संघर्ष में प्रेरणा का एक अक्षय स्त्रोत है भक्त कवियों की कविता, इसलिए उसमें साधारण जनता के साथ-साथ बुद्धिजीवियों की भी दिलचस्पी बढ़ गई है।

मैनेजर पाण्डेय भक्ति आन्दोलन के व्यापक महत्त्व को दर्शाते हुए कहते हैं कि ''भक्ति आंदोलन के साथ भारतीय समाज, संस्कृति और साहित्य के विकास की नई अवस्था का आरंभ होता है। भक्ति आंदोलन व्यापक संस्कृति आंदोलन है; जिसकी अभिव्यक्ति दर्शन, धर्म, कला, साहित्य, भाषा और संस्कृति के दूसरे रूपों में दिखाई देती है। वास्तव में यह सामंती संस्कृति के विरूद्ध जनसंस्कृति के उत्थान का अखिल भारतीय आन्दोलन है।''[1] भक्ति आंदोलन के चरित्र की यह व्याख्या रामचन्द्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामविलास शर्मा आदि हिन्दी आलोचकों की व्याख्या का विकास है। लेकिन भक्ति आंदोलन के उद्भव के मूल में कौन-से कारण थे, इस संबंध में मैनेजर पाण्डेय भिन्न राय रखते हैं। उनका कहना है कि यह आन्दोलन संस्कृत से भारतीय भाषाओं की मुक्ति के कारण संभव हो पाता है। अगर लोक भाषाओं की मुक्ति संभव नहीं होती, तब न तो शिक्षा से वंचित दलित और पिछड़ी जातियों को रचनात्मक प्रतिभा के विकास का अवसर मिलता और न स्त्रियों की भागीदारी सुनिश्चित होती। मैनेजर पाण्डेय के अनुसार भक्तिकाल में देशी भाषाओं का यह विकास समाज, संस्कृति और साहित्य के नए युग के आरंभ का सूचक है। इस नए युग के आरंभ का कारण देशी भाषाओं का साहित्य की भाषा के रूप में विकास है। सामान्य जनता के जीवन व्यवहार की भाषा और कविता की भाषा के बीच कायम वह

एकता भी है जो भारतीय साहित्य के इतिहास में पहली बार भक्तिकालीन कविता में दिखाई देती है। मैनेजर पाण्डेय ऐसे आलोचक हैं जिनकी आलोचना-दृष्टि में इस बात का आग्रह है कि साहित्यलोक और मनुष्यलोक में एकता स्थापित हो। उन्हें इस एकता की गूँज भक्तिकाव्य की भाषा में भी मिलती है। मैनेजर पाण्डेय लिखते हैं-''भारतीय साहित्य के इतिहास में पहली बार भक्तिकालीन कविता में सामान्य जनता के जीवन-व्यवहार की भाषा और कविता की भाषा के बीच एकता कायम हुई।''[2]

मैनेजर पाण्डेय भक्त कवियों की लोकवादिता को उनकी भाषा-दृष्टि में ढूंढ निकालते हैं। संस्कृत के आचार्यत्व के माहौल में जनभाषा में कविता करना मामूली बात नहीं थी। भक्त कवि संस्कृति के 'कूपजल' को नहीं, भाषा के बहते 'नीर को अपनाते हैं। मैनेजर पाण्डेय जब लिखते हैं-''भक्तिकाल की कविता लोकभाषा में लोकजीवन की कविता है।''[3] तब इस कथन से वे भक्तिकाव्य की लोकवादिता को सामने लाते ही हैं, पर साथ ही लोकसंस्कृति की रक्षा का रास्ता दिखाते हैं क्योंकि लोकभाषा में लोक संस्कृति की अनुगूँज होती है। आज हम जिस भाषाई संकट से गुजर रहे हैं, ऐसे त्रासद समय में संस्कृत के विरूद्ध लोकभाषा को स्थापित करने वाले भक्तकवियों की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है।

भक्ति आंदोलन के उद्‌भव के मूल में इस्लाम और मुसलमानी शासन की कोई भूमिका है या नहीं इस पर पर्याप्त मतभेद हैं। कुछ लोग भक्ति आंदोलन को इस्लाम की प्रतिक्रिया मानते हैं और कुछ लोग उसका सीमित प्रभाव स्वीकार करते हैं। लेकिन भक्ति काव्य पर इस देश में मुसलमानों की मौजूदगी से क्या असर पड़ा, इसकी प्रायः उपेक्षा होती है। मैनेजर पाण्डेय मानते हैं कि मुसलमानी शासन की ऐतिहासिक वास्तविकता का प्रभाव भक्ति काव्य पर पड़ा। मीरा पर यह प्रभाव न के बराबर है। सूर और तुलसी के काव्य में यह प्रभाव है। शब्द और संगीत के रूप में यह प्रभाव उनके काव्य में देखा जा सकता हैं।

मैनेजर पाण्डेय मध्यकालीन साहित्य में नारी-विवाह के कारणों की तलाश करते हैं और सामन्ती व्यवस्था में नारी की दुर्दशा की प्रत्यक्ष अनुभूति ढूँढते हैं। भक्ति काव्य के सन्दर्भ में नारी विषयक भक्त कवियों की दृष्टि और संवेदना की सूक्ष्मता से वे पड़ताल करते है। हिन्दी क्षेत्र में सामंती मूल्यों और रूढ़ियों का जितना अधिक प्रभाव है, उतना देश के किसी अन्य भाग में शायद ही कहीं हो। इसलिए यहाँ स्त्रियों का जैसा शोषण, दमन और उत्पीड़न है, वैसा अन्यत्र कहीं नहीं। यहाँ हत्या और आत्महत्या से बचा हुआ स्त्री-जीवन आग के दरिया से गुजरने के समान है। इस पराधीनता से स्त्रियों के मुक्ति का जो आन्दोलन हिन्दी क्षेत्र में अब आरंभ हुआ है, वह मीराबाई के जीवन और काव्य के विद्रोही स्वरों को पहचान रहा है।

मीरा के काव्य में राजसत्ता, पुरूषसत्ता, लोकरूढ़ि और कुलीनता के विरूद्ध विद्रोह का स्वर जैसा प्रखर है, वैसा उस काल के किसी अन्य कवि के यहाँ नहीं है। यही कारण है की राजस्थान में दिवराला के सतीकांड के बाद इस नृशंस सामंती प्रथा के विरूद्ध जो आवाज उठी और आंदोलन चला उसमें मीराबाई को बार-बार याद किया गया होगा। यह स्वाभाविक और जरूरी भी था। आज भी भारतीय नारी को गुलाम बनाए रखने में राजसत्ता, पुरूषसत्ता, लोकरूढ़ि और

कुलीनता की बहुत बड़ी भूमिका है। मीरा के काव्य और जीवन से इन चारों के विरूद्ध संघर्ष की प्रेरणा मिलती है।

मैनेजर पाण्डेय के अनुसार अभी हिन्दी आलोचना में मीराबाई के वास्तविक महत्त्व की खोज और पहचान बाकी है। अनेक आलोचक तो उन्हें भक्ति काल के कवियों में गिनने के लिए भी तैयार नहीं है, लेकिन जब इस देश में नारी-स्वाधीनता का आन्दोलन पूरी तरह विकसित होगा, वह शहरों से बढ़कर गावों तक पहुँचेगा और यहाँ का स्त्री-समुदाय सचमुच स्वतंत्र होगा तब मीराबाई हिन्दी ही नहीं, गुजराती जनता के बीच भी सबसे अधिक लोकप्रिय होगी। इस तरह हिन्दीभाषी जनता ने अपने जीवन-संघर्ष की प्रक्रिया में भक्त कवियों के महत्त्व को पहचाना है।

मीरा की भक्ति और प्रेम के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए मैनेजर पाण्डेय ने उस समय के पुरूष प्रधान समाज की मीरा को निर्भीक एवं साहसी स्त्री के रूप में दर्शाया है, जो सामंती रूढ़ियों का डटकर सामना करती है और अपनी अस्तित्व की रक्षा करती हुई निरंतर संघर्षशील रहती है। वे मीरा की आवाज को सजग स्त्री-स्वर कहते हैं-''जिसमें आक्रोश की अनुगूंज है, किसी पीड़ित की चीख या पुकार नहीं। इससे यह भी स्पष्ट है कि संकल्प और आस्था के साथ अपनी अस्मिता और स्वतन्त्रता के लिए संघर्षशील अबला भी पुरुष-प्रभुत्व के लिए चुनौती बन सकती है। अपने प्रेम की रक्षा के लिए मीरा का संघर्ष चौतरफा है। उसके विरोध में राणा की राजसत्ता है और सिसोदिया कुल की मर्यादा (कुल-कानि) भी, पुरूष-प्रभुत्व की सत्ता है और सामंती समाज की रूढ़ियाँ (लोक-लाज) भी। इनमें से कोई भी एक स्त्री की स्वतंत्र चेतना की हत्या करने में सक्षम है। फिर जहाँ चारों एकत्र हों वहाँ आतंक का क्या कहना। मीरा ने इन सबका सामना किया है और कभी-कभी आगे बढ़कर उन्हें ललकारा भी है।''[4]

मैनेजर पाण्डेय की यह धारणा तर्कसम्मत है कि मीरा का विद्रोह, एक विकल्पविहीन व्यवस्था में अपनी स्वतंत्रता के लिए विकल्प की खोज का संघर्ष है। उनको विकल्प की खोज के संकल्प की शक्ति भक्ति से मिली है। यह भक्ति-आन्दोलन का क्रान्तिकारी महत्त्व है। मीरा की कविता में सामन्ती समाज और संस्कृति की जकड़न से बेचैन स्त्री-स्वर की मुखर अभिव्यक्ति है। वे मीरा के संघर्ष को कबीर के संघर्ष से भी कठिनतर मानते हैं। मीरा की कविता का सजग और विशिष्ट स्त्री स्वर कबीर, जायसी, सूर और तुलसी से बहुत अलग है। भक्तिकाव्य में मीरा का काव्य एक स्त्री की आँखों से देखा और भोगा हुआ काव्य है। मैनेजर पाण्डेय लिखते है-''उनकी कविता में एक ओर सामंती समाज में स्त्री की पराधीनता और यातना की अभिव्यक्ति है तो दूसरी ओर उस व्यवस्था के बंधनों का पूरी तरह निषेध और उससे स्वतंत्रता के लिए दीवानगी की हद तक संघर्ष भी है।''[5]

भक्ति-आंदोलन के साथ जो नया लोकधर्म विकसित हुआ, वह सभी कवियों के यहाँ एक जैसा नहीं है। दूसरी भारतीय भाषाओं के भक्तिकाव्य के लोकधर्म की स्थानीय विशेषताओं को छोड़ दें और केवल हिन्दी के भक्तिकाव्य को देखें तो भी यह समझना बहुत कठिन न होगा कि कबीर, जायसी, सूर, तुलसी और मीरा के लोकधर्म का रूप एक-सा नहीं है। भक्ति-आंदोलन के प्रत्येक कवि के लोकधर्म का रूप उसकी विश्वदृष्टि के अनुरूप है और कवि की विश्वदृष्टि पर

उस वर्ग या समुदाय की जिंदगी की वास्तविकताओं और आकांक्षाओं की छाप है, जिसका वह सदस्य है। वही विश्वदृष्टि प्रत्येक कवि की भक्तिभावना, सामाजिक चेतना और काव्यरचना के विशिष्ट स्वरूप का निर्माण करती है। कबीर जिस लोकधर्म का विकास कर रहे थे, उसका मुख्य लक्ष्य है मानुष सत्य या मनु यत्व का विकास। आचार्य शुक्ल ने ठीक ही लिखा है कि ''कबीर ने मनुष्यत्व की सामान्य भावना को आगे करके निम्न श्रेणी की जनता में आत्म-गौरव का भाव जगाया।''[6] मनुष्यत्व की भावना को ही आगे रखकर कबीर एक ओर हिन्दू समाज के जातिभेद, धार्मिक रूढ़िवाद, अंधविश्वास आदि की आलोचना करते हैं तो दूसरी ओर मुसलमान समुदाय के धार्मिक बाह्याचारों और रस्मों-रिवाज का विरोध करते हैं। यह आलोचना जनता को जगाने वाली है और रूढ़िवादियों का विरोध वाली। साथ ही यह आलोचना जनता के मन से शास्त्र के भय और सामाजिक रूढ़िवाद के भ्रम को दूर करके उसमें मनुष्यत्व की भावना जगाने वाली है। इस संदर्भ में मैनेजर पाण्डेय के कथन पूर्णतया सटिक है।

मैनेजर पाण्डेय लिखते हैं-''कबीर मनुष्य की स्वतंत्रता के कवि हैं। वह चाहते हैं कि मनुष्य अपनी आस्था, विश्वास और क्षमता के अनुसार अपना जीवन जिये या भक्ति करे। वे मनुष्य की स्वतंत्रता को सीमित करने वाली हर बात का विरोध करते हैं, चाहे वह सामाजिक हो या धार्मिक। वे गौतम बुद्ध की तरह कहते हैं कि अपना दीपक स्वयं बनो।''[7]

सूर काव्य में चित्रित प्रेम के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए मैनेजर पाण्डेय उसे आज के सामाजिक संदर्भ में भी प्रेरणाप्रद पाते हैं। इसका कारण यह है कि आज का भारतीय समाज भी प्रेम संबंधी उन समस्याओं और रूढ़ियों से मुक्त नहीं हो पाया है। उन्हीं रूढ़ियों के कारण मैनेजर पाण्डेय मानते हैं कि 'प्रेम यहाँ आज भी जीवन का उत्सव नहीं, एक अपराध या मानवीय कमजोरी है।' उन्होंने आचार्य शुक्ल के हवाले से एक बार फिर जोर देकर कहा है कि भक्ति-काव्य में केवल शास्त्र और लोक का द्वन्द्व देखना काफी नहीं है, लोक के आन्तरिक अन्तर्विरोध की पहचान जरूरी है।

सूरदास की कविता की आलोचना के संदर्भ में आचार्य शुक्ल के मत को उद्धृत करते हुए मैनेजर पाण्डेय ने लिखा है-''आचार्य शुक्ल जिसे मर्यादा कहते हैं वह वास्तव में रूढ़ि है। रूढ़ियाँ केवल शास्त्र की नहीं होतीं, लोक की भी होती हैं। लोक की रूढ़ियाँ शास्त्र की रूढ़ियों से कम दमनकारी नहीं होतीं। समाज में प्रचलित रीति-रिवाज, मान-मर्यादा, कुल-कानि आदि से उपजा लोकभय प्राय: लोकधर्म बनकर मानवीय भावों और सम्बन्धों के स्वतन्त्र विकास को, खासतौर से प्रेम की दुनिया को छिन्न-भिन्न कर डालता है। गोपियों का प्रेम निर्द्वन्द्व एवं निर्भीक है। वह शास्त्र की रूढ़ि और लोक के भय से मुक्त हैं।''[8]

सूरदास संबंधी अपनी पुस्तक के दूसरे संस्करण के अवसर पर मैनेजर पाण्डेय ने उसके आरम्भ में 'भक्ति काव्य और हिन्दी आलेचना' तथा अन्त में 'सूर का काव्य और किसान-जीवन' शीर्षक अध्याय जोड़कर पूरी पुस्तक को नये नाम 'भक्ति आन्दोलन और सूरदास का काव्य' (1993) से छपवाया। इस पुस्तक के प्रकाशन से पहले प्राय: विद्वानों का यह मानना रहा है कि सूरदास श्रीकृष्ण की भक्ति और लीलागान में इतना तन्मय रहे कि अपने समय और समाज के यथार्थ सन्दर्भों की ओर उनकी दृष्टि गई ही नहीं। मार्क्सवादी आलोचक रामविलास शर्मा भी यह

मानते थे कि जिस तरह तुलसीदास के काव्य में किसान जीवन से जुड़ी संवेदना अपने पूरे उत्कर्ष में दिखाई पड़ती है, सूर के काव्य में वैसा नहीं है। मैनेजर पाण्डेय ने पहली बार अपनी पुस्तक के माध्यम से यह बताया है कि सूरदास के काव्य में ब्रज के लोकजीवन की छवियां तो उजागर हुई ही हैं, कृषि-संस्कृति और किसान-जीवन से जुड़ी संवेदना का भी उनमें अभाव नहीं है। 'किसान जीवन और सूरदास' शीर्षक अध्याय में वे न सिर्फ अलक्षित सूर को प्रस्तुत करते हैं, बल्कि किसान जीवन के सन्दर्भ में सूर-काव्य के सौन्दर्य और उसकी मार्मिकता का उद्घाटन भी करते हैं।

मैनेजर पाण्डेय ने 'सूर के काव्य में चित्रित किसान-जीवन' का विश्लेषण किया है और जोर देकर कहा है, 'सूर का काव्य अपने समय और समाज से जुड़ा हुआ काव्य है। उन्होंने अपने विचारों की पुष्टि के लिए सूर-साहित्य से अनेक उदाहरणों को प्रस्तुत करके यह निष्कर्ष निकाला है कि सूर का काव्य किसान-जीवन का बोध कराने में सक्षम है। मैनेजर पाण्डेय के अनुसार 'सूर के काव्य में खेती से जुड़ी हर छोटी-बड़ी बात का जितना आत्मीय ज्ञान है, वह किसान-जीवन से तादात्म्य के बिना सम्भव नहीं।' इसके प्रमाण के रूप में उन्होंने सूर का निम्नलिखित पद उद्धृत किया है-

''प्रभु जू यौं किन्ही हम खेती।
बंजर भूमि गांउ हर जोते, अरू जेती की तेती।।
काम क्रोध दोउ बैल, बली मिलि, रज तामस सब कीन्हौं।
अति कुबुद्धि मन हांकनहारे, भाया जुआ दीन्हौं।।
इन्द्रिय मूल किसान, महाजन अग्रज बीज बई।
जन्म-जन्म को विषय वासना, उपजत लता नई।।
कीजै कृपादृष्टि की बरषा, जन की जाति लुनाई।
सूरदास के प्रभु सौ करियै, होई न कान-कटाई।।''[7]

उपर्युक्त पद्यांश में खेती से संबंधित आवश्यक बातें की गई हैं; खेती के साधन, उसकी प्रक्रिया, कठिनाइयाँ और किसान के श्रम को कभी सार्थक, कभी निरर्थक बनाने वाली वर्षा भी।' इसी तरह उन्होंने सूर-काव्य से उन मुहावरों, लोकोक्तियों, उपमानों को भी उद्धृत किया है, जिनसे सूर के किसान-जीवन से संबंधित ज्ञान का पता चलता है। जैसे-

1. सूखति सूर धान अंकुर सी, बिनु बरसा ज्यों मूल तुई।
2. सूरदास तीनों नहिं उपजत धनियाँ धान कुम्हाड़े।
3. जैसे प्रथम अषाढ़ आजु तृन खेतिहर निरखि उपाटत।

किसान-जीवन के श्रम-संघर्ष और खेती की तमाम प्रक्रियाओं का अप्रस्तुत के रूप में प्रयोग करते हुए सूर ने उस सामन्ती व्यवस्था के अत्याचार का भी चित्रण किया है, जो किसान-जीवन को दुर्वह बनाता है। निर्धनता के कारण लगान देने में किसानों की असमर्थता, सामन्तों की लूट, कर्मचारियों के अनाचार के वर्णन के लिए सूर ने जो सांगरूपक प्रस्तुत किया है, वह उनके अनुभवात्मक ज्ञान का अद्भुत उदाहरण है-

''अधिकारी जम लेखा मांगै, ताते हौं आधीनौ।
घर गया नहिं भजन तिहारौ, जौन दिये मैं छूटौं।

धर्म जमानत मिलै न चाहै, ताते ठाकुर लूटौ।
अहंकार पटवारी कपटी, झूठी लिखत बही।
लागै धरम, बतावै अधरम, बाकी सबै रही।।''[10]

मैनेजर पाण्डेय के अनुसार सूरदास ने किसानों की दुर्दशा का मार्मिक चित्रण किया है। सूर के काव्य में चित्रित किसान जीवन सामंती व्यवस्था के संदर्भ में है। सामंती व्यवस्था में किसान की लूट से भरी जिन्दगी का एक पद में रूपक के सहारे बड़ा ही जीवन्त वर्णन है – 'अधिकारी जम लेखा मांगे, तातैं हौं आधीनों।' लगान और सूदखोरी में फँसे किसान की व्यथा से सूरदास भली-भांति परिचित हैं। मैनेजर पाण्डेय के मतानुसार सूरदास के मन में ऋण प्रथा की क्रूरता का गहरा प्रभाव था। जिसके अभिव्यक्ति गोपियों की विरह-वेदना के लाक्षणिक उपयोग से करते हैं, 'सूर मूर अक्रूर लै गयो, ब्याज निबेरत ऊधो।''

तुलसीदास को किसान जीवन का प्रतिनिधि कवि कहने वाले आलोचकों पर व्यंग्य करते हुए मैनेजर पाण्डेय ने कहा है कि ''लगता है भक्ति काव्य में ज्ञान से भक्ति का स्थाई विरोध भले न हो, लेकिन भक्ति काव्य की हिन्दी आलोचना में भक्ति का ज्ञान से स्थाई विरोध जरूर है।''[11]

किसान-जीवन का कृषि-कर्म के अतिरिक्त एक पक्ष पशुपालन भी है। सूर के काव्य में गोचारण का 'मनोरम दृश्य' तो है ही, पशु-प्रकृति का गहरा ज्ञान भी है। गावों के रूप, रंग और उसके स्वभाव का न सिर्फ ज्ञान, बल्कि विशद वर्णन भी 'सूर सागर' में भरा पड़ा है। 'अपनी-अपनी गाई ग्वाल सब आनि करौं इक ढौरी' में गायों के नाम और स्वभाव का बड़ा ही जीवन्त वर्णन है। किसान जीवन स्वाभाविक रूप से प्रकृति से जुड़ा होता है। प्रकृति किसान के सुख-दु:ख में शामिल रहती है। 'सूर सागर' में वर्णित सारी कृष्ण कथा प्रकृति के गहरे साहचर्य में घटित होती है। प्रकृति का अत्यंत मनोहारी रूप 'सूर सागर' में है। कृष्ण और गोपियों के प्रेम में लोक बंधनों के अस्वीकार का कारण प्रकृति का खुला और स्वच्छन्द वातावरण है। मैनेजर पाण्डेय के विवेचन से स्पष्ट है कि सूर के काव्य में किसान जीवन की वास्तविकता प्रत्यक्ष और परोक्ष दोंनो रूपों में है।

सूरदास के काव्य में एक बड़ी विशेषता है-गाँव और शहर के द्वन्द्व की अभिव्यक्ति। उनके लिए सगुण गाँव का प्रतीक है तो निर्गुण शहर का। सूर की कविता से यह भी पता चलता है कि निर्गुण भक्ति का ''ज्यादा प्रचार शहरों में था और काशी उसका केन्द्र भी-जे गाहक निरगुन के ऊधौ, ते सब बसत ईसपुर कासी।''[12]

उनके काव्य में 'शहर और गाँव के बीच नैतिक द्वन्द्व भी है।' भ्रमरगीत प्रसंग में ब्रज गाँव सच्चाई, ईमानदारी और सहजता का प्रतिरूप है तो मथुरा शहर छल-प्रपंच, अत्याचार और शोषण का। यह मथुरा माया नगरी है, जो गोपियों का सर्वस्व हर लेती है। 'नगर मथुरा निरमोही' कहनेवाली गोपियाँ नगर की तुलना में गाँव के सहज प्रेम पर जोर देती हैं। मैनेजर पाण्डेय इस प्रसंग में अंतिम रूप से टिप्पणी करते हुए कहते है कि ''शहर और गाँव के बीच द्वन्द्व की जो चेतना सूर के काव्य में है, वह उस युग के किसी अन्य कवि के यहाँ शायद ही मिले। इस द्वन्द्व में सूर की सहानुभूति गाँव के साथ है।''[13]

भक्त कवियों की रचनाओं की गहन छानबीन के बाद जो सवाल बाकी बचता है वह भक्ति-आन्दोलन की विफलता का सवाल है। मैनेजर पाण्डेय के मतानुसार वैसे यह कहना कठिन

है कि भक्ति-आन्दोलन विफल रहा। वास्तव में बृहत्तर भारतीय समाज में जो लचीलापन और सामंजस्य की क्षमता दिखाई देती है उसमें भक्ति-आन्दोलन की प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष भूमिका रही है। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि भक्ति-आन्दोलन ने जिन सामाजिक-सांस्कृतिक लक्ष्यों को सामने लाया, उन्हें पाने के लिए भारतीय समाज द्वारा किया जा रहा प्रयास अब भी अधूरा है। मैनेजर पाण्डेय ने लिखा है-"आधुनिक भारतीय भाषाओं के निर्माण और आधुनिक भारतीय साहित्य के विकास में भक्ति-आन्दोलन की भूमिका को देखते हुए यह कहना सही नहीं होगा कि वह पूरी तरह विफल हो गया, लेकिन यह भी सच है कि उसका सामाजिक उद्देश्य पूरा न हो सका।"[14]

मैनेजर पाण्डेय भक्तिकाव्य की पुनर्व्याख्या करके भारत के भक्तिकालीन स्वर्णिम इतिहास से अवगत कराते हैं। आज भी भक्तिकाव्य जनमानस की भावना में मौजूद है क्योंकि पहली बार भक्तिकाव्य भारतीय सामंती व्यवस्था की वास्तविकता के बोध के साथ-साथ धार्मिक रूढ़िवाद से उपजे भेदभाव को हटाकर मानवीय स्तर पर व्यापक एकता की पहचान और प्रतिष्ठा का प्रयत्न कराता है। पाण्डेयजी का भक्तिकाव्य और सूरदास पर किया गया नवीन मूल्यांकन परवर्ती आलोचकों और साहित्यकारों को निश्चय ही मार्गदर्शित करती है।

संदर्भ :

1. भक्ति आन्दोलन और सूरदास का काव्य-मैनेजर पाण्डेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, आवृति संस्करण: 2012, प्रथम संस्करण की भूमिका
2. वही
3. शब्द और कर्म -मैनेजर पाण्डेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, परिवर्द्धित संस्करण : 1997 पृ. 113
4. भक्ति आन्दोलन और सूरदास का काव्य-मैनेजर पाण्डेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, आवृति संस्करण: 2012, पृ. 41-42
5. वही पृ. 27
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास-आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, मलिक एण्ड कम्पनी प्रकाशन, प्रथम कार्यालय-नई दिल्ली, संस्करण : 2009, पृ. 64
7. हिन्दी कविता का अतीत और वर्तमान-मैनेजर पाण्डेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2013, पृ. 14
8. भक्ति आन्दोलन और सूरदास का काव्य-मैनेजर पाण्डेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, आवृति संस्करण: 2012, पृ. 39
9. वही पृ. 295
10. वही पृ. 297
11. वही पृ. 296
12. वही पृ. 304
13. वही पृ. 305
14. अनभै साँचा-मैनेजर पाण्डेय, पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2002, पृ. 28

❑❑❑

हिन्दी अध्यापिका, अधरचाँद उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सिलचर, असम

संत अक्षर अनन्य का दार्शनिक चिन्तन

—अरुण कुमार द्विवेदी

प्राचीन काल से ही दर्शन मानव जीवन का अभिन्न अंग रहा है। हजारों विचारकों, साधकों तथा तत्वदर्शी चिन्तकों ने कठोर तपश्चर्या का अनुसरण करते हुए अपनी ज्ञानाभा से दार्शनिक तथ्यों का जो रहस्योद्घाटन किया है, वह उनकी साधना एवं चिंतन का ही परिणाम था। प्राचीन काल से चली आ रही चिन्तन की यह परम्परा वेद, उपनिषद् आदि धर्मग्रन्थों के साथ-साथ सम्पूर्ण मध्यकाल में भी अक्षुण्ण बनी रही। प्राय: समीक्षकों ने मध्यकाल में जन्में संतों के संबंध में यह स्पष्ट किया है कि इनके द्वारा अर्जित ज्ञान उनकी स्वानुभूति पर केन्द्रित थे। इन दार्शनिक संतों ने अपने ज्ञान चक्षु से परमतत्व को देखने में सफलता प्राप्त की थी। इस संबंध में कहा गया है कि, ''जैसे आँख आकाश को देखती है, वैसे ही साधक लोग परमात्मा के उच्चतम निवास स्थान को सदा देखते हैं।''[1] इनके द्वारा अनुभूत ब्रह्म, जीव, जगत तथा माया का स्वरूप इस प्रकार प्रस्तुत है-

ब्रह्म :

समस्त धर्म ग्रन्थों जैसे वेद, उपनिषद्, गीता आदि में ब्रह्म की पूर्ण प्रतिष्ठा है। इन ग्रन्थों में ब्रह्म को सम्पूर्ण जगत का सार तथा सृष्टि का निर्माता घोषित किया गया है। इस भौतिक जगत में जो कुछ दिखाई दे रहा है वह पहले कभी नहीं था, जो कुछ भी नहीं है, वह भी पहले नहीं था। 'ऋग्वेद' में ब्रह्म को हजारों सिर वाला तथा हजारों नेत्रों वाला बताया गया है जिसका प्रयोग वह सृष्टि के संचालन हेतु करता है। वह सम्पूर्ण पृथ्वी पर अपनी सत्ता को स्थापित किये हुए है और वह उससे भी दस अंगुल आगे है-

''सहस्रशीर्षा पुरुष: सहस्राक्ष: सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।''[2]

ब्रह्म के स्वरूप के संबंध में 'कठोपनिषद्' में भी विस्तार से चर्चा की गई है। इसमें ब्रह्म को शब्द रहित, स्पर्श रहित, रस रहित, गन्ध रहित, अनादि, अखण्ड तथा असीम बताया गया है तथा वह इन्द्रियों की पहुँच से भी परे है। इसका ज्ञान होते ही मनुष्य जन्म-मृत्यु के बंधन से मुक्त हो जाता है-

कबीर का मत है कि माया दीपक के समान है तथा जीव की स्थिति पतंगे जैसी है। माया से ग्रस्त होने के कारण संसारी जीव विषय वासनाओं में संलिप्त रहते हैं तथा माया को ही सत्य मानकर उसके आगे-पीछे गिरते पड़ते हैं। शायद ही ऐसा कोई मनुष्य हो जो गुरु ज्ञान के प्रभाव से इस माया रूपी मोहिनी से स्वयं को बचा सका हो-
''माया दीपक नर पतँग, भ्रमि भ्रमि इवै पड़ंत। कहै कबीर गुर ग्यान थैं, एक आध उबरंत।।''

''अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययं तथारसं नित्यमगन्धवच्च यत्।

अनाद्यनन्तं महतः परं ध्रुवं निचाय्य तन्मृत्युमुखात् प्रमुच्यते।।''[3]

ब्रह्म स्वयं में पूर्ण है, यह जगत भी उस परब्रह्म से पूर्ण है क्योंकि यह पूर्ण उस पूर्ण पुरुषोत्तम से उत्पन्न हुआ है। उस ब्रह्म से पूर्ण के निकल जाने पर भी पूर्ण ही शेष रहता है-

''ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।''[4]

मध्यकालीन दार्शनिक संतों ने भी ब्रह्म के संबंध में अत्यन्त सूक्ष्मता से चिन्तन किया है। संत कबीर ने ब्रह्म को 'मूलतत्व' या 'सार' की उपाधि से विभूषित किया है। इनके मतानुसार वह ब्रह्म न तो आँखों द्वारा देखा जा सकता है और न ही उसे इन्द्रियों द्वारा प्राप्त ही किया जा सकता है। न उसका कोई आकार है और न ही उसकी कोई रूपरेखा है, न तो वह दृश्य रूप में है और न ही अदृश्य रूप में। वह प्रकट और गुप्त रूप में भी नहीं है-

''अलख निरंजन लखै न कोई, निरभै निराकार है सोई।

सुंनि असथूल रूप नहीं रेखा, द्रिष्टि अद्रिष्टि छिप्यौ नहीं पेखा।।''[5]

ब्रह्म के संबंध में कबीर का मत है कि, ''वह परमतत्व निर्गुण एवं सगुण इन दोनों से परे की वस्तु है और वह अनुभव में आने पर भी अनिर्वचनीय है।''[6]

उपर्युक्त विचारों के परिप्रेक्ष्य में आलोच्य संत अक्षर अनन्य की ब्रह्म विषयक मान्यताओं को प्रस्तुत करना सार्थक जान पड़ता है। इन्होंने निर्गुण ब्रह्म विषयक विचारों को सरल, रुचिकर एवं सर्वग्राह्य बनाने के उद्देश्य से ही साहित्य सर्जना की थी। ये शाक्त मतावलंबी थे तथा शिव शक्ति को ही अपना आराध्य मानते थे। अतः जहाँ कहीं भी ब्रह्म का संकेत करने की आवश्यकता पड़ी है वहाँ अनन्य ने 'शिव शक्ति' शब्द का ही प्रयोग किया है। इनके मतानुसार शिव शक्ति रूप परमतत्व ही जगत के कण-कण में समाया हुआ है। इस संसार की समस्त वस्तुओं पर उसी का आधिपत्य है। चूंकि अक्षर अनन्य समन्वयवादी विचारधारा के पोषक थे इसलिए इनकी दृष्टि में राम-रहीम, ईश्वर-खुदा में केवल नाम मात्र का ही भेद परिलक्षित होता है, वास्तविक रूप से उनमें कोई तात्विक भेद नहीं है। जिस प्रकार 'आतिश' और 'आग' भिन्न-भिन्न नामों से अभिहित एक ही तत्व है उसी प्रकार भिन्न-भिन्न रूपों में विद्यमान ब्रह्म भी एक मात्र परम सत्य है-

''वेद कतेब प्रमान यहै, मरजाद यहै नहिं तत्त जुदा है।

आतिस आग ''अनन्य'' भनै, जग जोई सदा सिव सोई खुदा है।''[7]

महात्मा अक्षर अनन्य एकदेवोपासना के समर्थक थे तथा अवतारों के प्रति इनके हृदय में न तो कोई श्रद्धा थी और न ही विश्वास था। इनके मतानुसार भिन्न-भिन्न नामों से पुकारा जाने वाला तत्व 'शिवशक्ति' ही है। उस परमतत्व को राम, परनाम, कान्ह, गोपाल, अरिहंत, भगवंत आदि किसी भी नाम से पुकारा जा सकता है। तत्वदर्शी ज्ञानियों की दृष्टि में वही परमतत्व शिवशक्ति ही भिन्न-भिन्न रूपों में प्रतिभाषित होता हुआ एकमात्र परम सत्य है-

''कोउ राम कहै परनाम कहै, कोउ कान्ह गुपाल जुबानत है।

अरिहंत कोऊ भगवंत कहै, कोउ दत्त अलेख बखानत है।

वह ईस्वर एक अनेक मतै, अपने अपने उर आनत है।

गज अंधनि गाथ ''अनन्य'' भनै, यह भेद सुजान सुजानत है।।''[8]

अक्षर अनन्य ने शिवशक्ति रूप परब्रह्म के अद्वय रूप को ही मान्यता दी है। इनकी दृष्टि में जीव अज्ञानता वश ब्रह्म के सगुण एवं निर्गुण दो भिन्न रूपों की कल्पना करता है तथा श्रद्धानुसार अपने-अपने मान्य रूपों की सर्वोच्चता सिद्ध करने का प्रयास करता है लेकिन इनके मतानुसार सगुण और निर्गुण में कोई तात्विक भेद नहीं है बल्कि इनका कहना था कि केवल शास्त्रीय वाद-विवादों में पड़ने के कारण ही इस अभेद तत्व में भेद दिखाई देने लगता है जबकि वही शिवशक्ति ही निर्गुण, सगुण, शून्य, ज्योति रूप में सर्वत्र विद्यमान है। वास्तव में जीव, ईश्वर, ब्रह्म तथा माया सब उसी परमतत्व के ही रूप हैं-

''आपु ही निर्गुन आपु ही सगुन, आपु ही निर्गुन भेद बताया।
आपु ही सुन्न है आपु ही जोति है, आपु ही व्यापि चराचर काया।
आपु ही मन्त्र ''अनन्य'' भनै, सिव सक्ति अखंड परापर छाया।
आपु ही जीव है आपु ही ईस्वर, आपु ही ब्रह्म है आपु ही माया।।''[9]

इसी प्रकार गोस्वामी तुलसीदास ने भी सगुण और निर्गुण में किंचित अंतर न मानते हुए अपना मत इस प्रकार स्पष्ट किया है-

''सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा। गावहिं मुनि पुरान बुध वेदा।।''[10]

अक्षर अनन्य ने परम शिव शक्ति तत्व को ही शुद्ध चेतन स्वरूप माना है तथा इच्छा, ज्ञान, क्रिया तीनों शक्तियाँ इसी की हैं। इनकी दृष्टि में शिव शक्ति तत्व के अतिरिक्त कहीं कुछ भी नहीं है। वही शून्य है तथा वही ज्योति स्वरूप है। वही ब्रह्म, माया, ईश्वर, जीव, देव, दानव सभी में विद्यमान है-

''परिपूरन सिव सक्ति अखंडित पर हू अपर निहारौ।
वहै सून्य वह ज्योति सरूपी, वहै बिबिधि बिस्तारौ।
वहै ब्रह्म माया वह ईस्वर, जीव वहै निरधारौ।
वहै देव दानव पुनि वहई, वहै अवनि अवतारौ।
लख चौरासी जीव जन्तु सब, वहै समस्त प्रकारौ।[11]

जहाँ अन्य संतों ने ब्रह्म को मन्दिर-मस्जिद से निकालकर गगन मण्डल या उससे भी परे होने की कल्पना की है तथा उसे पर्वत से भी बड़ा और राई से भी छोटा होने का दावा किया है, वहीं अनन्य द्वारा प्रस्तुत विचारों से ब्रह्म के सगुण एवं निर्गुण दोनों रूप स्वत: ही स्पष्ट हो जाते हैं। अनन्य के संबंध में श्री अम्बाप्रसाद श्रीवास्तव जी का मत है कि, ''न तो वे निर्गुण के निरूपण में ही इतने अधिक लीन हो गये कि उसके सगुण रूप का खण्डन हुआ हो और न सगुण रूप के प्रतिपादन में ही वे इतने रस-विभोर हुए कि निर्गुण का निराकरण हुआ हो। इन दोनों का अत्यन्त सधे हुए और सुलझे रूप में ही वर्णन किया गया है।''[12]

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि अक्षर अनन्य की ब्रह्म विषयक मान्यता अत्यन्त स्पष्ट एवं तर्कसंगत प्रतीत होती है। जहाँ अन्य संतों ने ब्रह्म को घट-घट वासी मानते हुए सगुण-निर्गुण से परे बैकुण्ठवासी या उससे भी परे होने की कल्पना की है वहीं अक्षर अनन्य इससे इतर ब्रह्म के निर्गुण निराकार रूप का प्रतिपादन करते हुए उसे धरती पर जनमानस के सम्मुख लाकर खड़ा कर दिया है। नि:सन्देह अनन्य की ब्रह्म विषयक मान्यता लोगों के मन में व्याप्त संशय को दूर करने में पूर्णत: सक्षम हैं।

जीवात्मा :

जीवात्मा वर्णन की परम्परा वैदिक काल से दृष्टिगोचर होती है। विभिन्न धर्म ग्रन्थों एवं हिन्दू दर्शनों में जीव को ब्रह्म का अंश माना गया है तथा उसे अजन्मा, शाश्वत एवं नित्य कहा गया है। वास्तव में जीव और आत्मा अद्वय रूप हैं। 'ऋग्वेद' में जीवात्मा तथा परमात्मा को शरीर रूपी वृक्ष का आश्रय लेकर हृदय रूपी घोंसलें में रहने वाले दो पक्षियों के समान बताया गया है। इनमें से जीव विषयासक्त होने के कारण कर्मफलों का भोग करता है जबकि परमात्मा इन विषय भोगों से पूर्णत: मुक्त रहता है–

''द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया, समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्य: पिप्पलं स्वाद्वत्तय, नश्नन्नन्यो अभिचाकशीति।।''[13]

वास्तव में यह जीव ब्रह्म रूप में है तथा ब्रह्म ही जीव रूप में विद्यमान है लेकिन माया के प्रभाव से जीव अपनी वास्तविक स्थिति को भूलकर कर्मफलों में बँधा रहता है। 'श्वेताश्वतरोपनिषद्' में इसके संबंध में कहा गया है कि यह जीवात्मा न तो स्त्री रूप में है और न ही पुरुष या नपुंसक है। यह जिस समय किसी शरीर में प्रवेश करता है तत्समय वैसा ही रूप परिवर्तित कर लेता है–

''नैव स्त्री न पुमानेष न चैवायं नपुंसक:। यद् यच्छरीरमादत्ते तेन तेन स युज्यते।।''[14]

'श्रीमद्भगवद्गीता' में आत्मा के संबंध में वर्णित है कि यह आत्मा न तो जन्म लेता है और न मरता है। वह भूत, वर्तमान तथा भविष्य में भी जन्म लेने वाला नहीं है। वह अजन्मा, नित्य तथा पुरातन है, इसलिए शरीर के नष्ट होने पर भी वह मरता नहीं है–

''न जायते म्रियते वा कदाचिन् नायं भूत्वा भविता वा न भूय:।
अजो नित्य: शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।''[15]

जीवात्मा के संबंध में चिन्तन की यह परम्परा मध्यकाल में भी दिखाई पड़ती है। संत कबीर ने आत्मा और परमात्मा के अद्वय रूप को स्वीकार करते हुए कहा है कि जिस प्रकार जलाशय में स्थित कुंभ के अंदर और बाहर जल में कोई अन्तर नहीं होता है क्योंकि घड़े के फूटने पर दोनों जल आपस में समान प्रतीत होते हैं उसी प्रकार ब्रह्म और जीव में भी कोई अंतर नहीं है–

''जल मैं कुंभ कुंभ मैं जल है, बाहरि भीतरि पानी।
फूटा कुंभ जल जलहिं समानाँ, यह तत कथौ गियानी।।''[16]

''जीव ब्रह्म निज जाति एक है यह संदेह न मानौ।
मिलै अविद्या जीव भयौ मिलि विद्या ब्रह्म बखानौ।
विद्या नाम पढ़न कौ नाहीं नहिं पोथी न पुराना।
जैसे कौं तैसौ ही समझौ यह विद्या विग्याना।।''[17]

इसी प्रकार गोस्वामी तुलसीदास ने भी जीव को ईश्वर का ही अंश माना है–

''ईस्वर अंस जीव अबिनासी। चेतन अमल सहज सुखरासी।।''[18]

अनन्य के मतानुसार माया तथा पंच कंचुकों के प्रभाव के कारण जीव अपनी वास्तविक स्थिति को भूलकर स्वयं को सांसारिक बंधनों में बंधा हुआ महसूस करता है लेकिन शुद्ध विद्या के प्रसार होते ही जीव ईश्वर के रूप में परिणित होकर शक्ति सम्पन्न बन जाता है। इनका मत है कि

जिस प्रकार राजा, किसान तथा सिद्ध पुरुष तीनों ही समान रूप से मनुष्य हैं उसी प्रकार जीव, ईश्वर तथा शिव शक्ति में भी कोई तात्विक भेद नहीं है–

''साधै ब्रह्म विद्या विद्यमान होइ ग्यान रूप, ब्रह्म पद पावै तब आवै निज आब है।
भूपति किसान सिद्ध नर ज्यौं 'अनन्य' भनै, एक आतमा के तीन करनी खिताब है।।''[19]

इसी प्रकार अन्यत्र भी अक्षर अनन्य ने जीव के अज्ञानी होने का उल्लेख किया है। इनके मतानुसार अविद्या ग्रस्त जीव भ्रमवश जाति, भेष आदि के बंधनों में उलझा रहता है और आत्म स्वरूप से अपरिचित रहता है लेकिन जैसे ही अविद्या का आवरण हटता है वैसे ही समस्त भ्रम दूर हो जाता है और वह जीव ब्रह्म पद को प्राप्त करने में या तादात्म्य स्थापित करने में समर्थ हो जाता है–

''ऐसे जीव अंस ईस्वर के, परे अबिद्या माहीं।
मानि रहे भ्रम जाति भेष क्रम, आपै जानत नाहीं।
बाघ समान मिलै जब सत गुरु, तब सब भरम भजावै।
कहै अबिद्या बिद्यमान ह्वै, जीव ब्रह्म पद पावै।।''[20]

स्पष्ट है कि अक्षर अनन्य ने जीव को शिव शक्ति के अद्वय रूप में स्वीकार किया है। प्राय: सभी सन्तों ने जीव को ईश्वर का अंश मानते हुए उसके अद्वय रूप को ही मान्यता दी है। इस संबंध में अक्षर अनन्य का मत भी अन्य संतों के मत से साम्य रखता है तथा एक मत से यह स्वीकार किया है कि अविद्या ग्रस्त जीव में विद्या का प्रसार होते ही जीवात्मा परमात्मा से तादात्म्य स्थापित करने में समर्थ हो जाती है।

जगत :

सृष्टि के प्रादुर्भाव से ही मनुष्य अपने चारों ओर विद्यमान प्राकृतिक दृश्यों एवं अलौकिक सौन्दर्य के कारण उसकी ओर आकर्षित होता रहा है। हजारों योजन में फैले नीले आकाश, सूर्य तथा चन्द्रमा को देखकर मनुष्यों का ध्यान इसकी उत्पत्ति एवं स्थिति पर जाना स्वाभाविक था। विभिन्न धर्म ग्रन्थों एवं तत्वदर्शी चिन्तकों ने इस दृश्यमय जगत की उत्पत्ति एवं स्थिति के संबंध में अपने-अपने मत सूक्ष्मता से स्पष्ट किये हैं।

'प्रश्नोपनिषद्' में जगत की उत्पत्ति एवं विकास क्रम का उल्लेख प्रमुखता से वर्णित हैं। इसमें कहा गया है कि पुरुष ने सर्वप्रथम प्राण का सृजन किया, तत्पश्चात् प्राण से श्रद्धा, आकाश, वायु, जल, ज्योति, पृथ्वी, इन्द्रिय तथा अन्न को निर्मित किया। इसके पश्चात् अन्न से वीर्य, तप, मन्त्र, कर्म एवं लोक को विकसित किया, साथ ही लोक में नाम की सृष्टि की–

''स प्राणमसृजत प्राणाच्छ्रद्धां खं वायुर्ज्योतिराप: पृथिवीन्द्रियं
मनोऽन्नमन्नाद्वीर्यं तपो मन्त्रा: कर्म लोका लोकेषु च नाम च।।''[21]

'श्रीमद्भगवद्गीता' में भी सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में विस्तार से चर्चा की गयी है। इसमें भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि यह प्रकृति मेरी प्रमुख शक्तियों में से एक है जो कि मेरी अध्यक्षता में समस्त कार्यों को निरन्तर करती रहती है जिसके परिणाम स्वरूप समस्त चर-अचर प्राणियों का जन्म होता है। इसके अधीन ही यह दृश्यमय जगत बनता और नष्ट होता रहता है–

''मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम्। हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते।।''[22]

जगतोत्पत्ति के संबंध में मध्यकालीन दार्शनिक संतों ने भी अपने मत स्पष्ट किये हैं। संत कबीर ने अद्वैतवादियों के 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' सिद्धान्त के आधार पर इस दृश्यमय जगत को मिथ्या एवं सारहीन कहा है। इन्होंने जगत की तुलना सेमर फूल से की है। इनका तर्क था कि जिस प्रकार यह फूल अल्प समय में ही अपनी आभा खो देता है उसी प्रकार यह जगत भी क्षणभंगुर एवं अस्थायी है–

''यहु ऐसा संसार है, जैसा सैंबल फूल। दिन दस के व्यौहार में, झूठै रंगि न भूल।।''[23]

संत रविदास ने भी इस जगत को मिथ्या, सारहीन एवं प्रपंचमय बताया है तथा इसकी तुलना इन्होंने काजल की कोठरी एवं अहंकार रूपी कुएँ से की है। इनकी दृष्टि में अहंकार संसार को भ्रमित कर उसे खा जाता है–

''यहु संसार काजलि कूं कोठरी, अरु विस हऊं रा कूवा।
कहि 'रविदास' हौमें जग खाया, ज्यौं नलिनी भू सूवा।।''[24]

इस परंपरा में अक्षर अनन्य की जगत संबंधी मान्यताएँ स्पष्ट एवं तर्कसंगत हैं चूंकि अक्षर अनन्य शाक्त धर्म को मानने वाले थे, इस दृष्टिकोण से इन्होंने जगत को शिव शक्ति तत्व से पूर्णतया अभिन्न माना है। वेदान्त दर्शन ईश्वर को जगत का निमित्त एवं कारण दोनों मानता है जबकि शाक्त मतानुसार कार्य रूप जगत कारण रूप शिव शक्ति में निरन्तर वर्तमान रहता है।

अक्षर अनन्य अपनी जगत संबंधी मान्यताओं को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार वृक्ष के मूल बीज में डाल, पत्ते, फल, फूल आदि पहले से ही समाहित रहते हैं उसी प्रकार परमतत्व शिव शक्ति में यह दृश्यमय जगत सूक्ष्म रूप में समूल विद्यमान रहता है–

''बिस्व सकल सिव सक्ति महं, सूच्छम रूप समूल।
ज्यौं तरुवर के बीज महं, डार पात फल फूल।।''[25]

अनन्य के मतानुसार सृष्टि की उत्पत्ति के पश्चात् भी जगत की सत्ता परमतत्व से पृथक् नहीं होती अपितु वह उसी परमशक्ति में विद्यमान रहता है। जिस प्रकार समुद्र में उठने वाली लहरों की स्थिति जल से अलग संभव नहीं है उसी प्रकार इस चराचर जगत की उत्पत्ति और लय भी उसी परमतत्व शिव शक्ति के अधीन है। उससे पृथक् जगत की कल्पना करना भी असंभव है–

''जैसैं समुद्र लहरैं सुभाइ, त्यौं करता महं संसार आइ।
करता के बहु गुन रूप जानि, जे भाँति भाँति पाछैं बखानि।।''[26]

अक्षर अनन्य ज्ञानमार्गी श्रेष्ठ सन्त थे तथा इनमें प्रतिभा अत्यन्त प्रखर थी। इनका मत है कि जिस प्रकार स्वर्ण और उससे निर्मित वस्तुओं में कोई अंतर नहीं होता, साथ ही लकड़ी और उससे बनी वस्तुओं में तथा भूमि और भवनों में भी कोई तात्विक भेद नहीं होता, उसी प्रकार परमतत्व शिव शक्ति एवं जगत में भी कोई तात्विक भेद नहीं है–

''कंचन सो भूषन जो भूषन सो कंचन है, कंचन सौं भूषन सौं भेद न लगत है।
धरनि सो मन्दिर जो मन्दिर सो धरनि अहै, मन्दिर धरनि सौं न अन्तर खगत है।

रंग ही चतेवर चतेवर सो रंग जानि, रंग ही चतेवर कौ रंग ज्यों रँगत है।

एक ही अनेक यौं अनेक एक भिन्न नहीं, ''अक्षर अनन्य'' ब्रह्म मूरत जगत है।।''[27]

अत: स्पष्ट है कि अक्षर अनन्य ने सम्पूर्ण चराचर जगत को शिव शक्ति के अद्वय रूप में ही मान्यता दी है साथ ही जगत को कार्य रूप में मानते हुए कारण रूप शिव शक्ति में वर्तमान रहने का मत भी प्रस्तुत किया है। इनके मतानुसार शिव शक्ति और जगत में कोई तात्विक भेद दृष्टिगोचर नहीं होता है।

माया :

भारतीय वाङ्मय में माया का विस्तारित रूप प्रमुखता से वर्णित है। वैदिक संहिताओं, ब्राह्मण ग्रन्थों, उपनिषदों तथा पुराणों के साथ-साथ तत्वदर्शी चिन्तकों ने भी माया के स्वरूप को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। 'श्वेताश्वतरोपनिषद्' में प्रकृति को माया तथा ईश्वर को परम मायावी कहा गया है-

''मायां तु प्रकृतिं विद्यान्मायिनं तु महेश्वरम्। तस्यावयवभूतैस्तु व्याप्तं सर्वमिदं जगत्।।''[28]

'श्रीमद्भगवद्गीता' में अज्ञानता को माया रूप कहा गया है अर्थात् सम्पूर्ण जगत सत्, रज तथा तम् तीनों गुणों के प्रति अनुरक्त रहता है जिसके परिणामस्वरूप जीव अव्यय रूप परम ब्रह्म की वास्तविक स्थिति से पूर्णत: अनभिज्ञ रहता है-

''त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभि सर्वमिदं जगत्। मोहितं नाभिजानाति मामेभ्य: परमव्ययम्।।''[29]

धर्म ग्रन्थों एवं तत्वदर्शी चिन्तकों की दृष्टि में जीव ब्रह्म का ही अंश है लेकिन जीव माया के वशीभूत होने के कारण वह इस सत्य से अपरिचित रहता है। माया के संबंध में इस प्रकार कहा गया है, ''यह न 'सत्' है न 'असत्'। सत् इसलिए नहीं है कि ब्रह्म का ज्ञान होने पर इसका ज्ञान बाधित हो जाता है। किन्तु यह 'असत्' भी नहीं है क्योंकि 'असत्' वस्तु की प्रतीति नहीं होती जबकि माया की प्रतीति होती है।''[30]

मध्यकालीन संतों ने माया को अपने चिंतन का अभिन्न अंग माना है। सर्वप्रथम संत कबीरदास ने माया को महाठगिनी या महामोहिनी कहा है जो जीव को भ्रमित कर शीघ्र ही अपने वश में कर लेती है।

कबीर का मत है कि माया दीपक के समान है तथा जीव की स्थिति पतंगे जैसी है। माया से ग्रस्त होने के कारण संसारी जीव विषय वासनाओं में संलिप्त रहते हैं तथा माया को ही सत्य मानकर उसके आगे-पीछे गिरते पड़ते हैं। शायद ही ऐसा कोई मनुष्य हो जो गुरु ज्ञान के प्रभाव से इस माया रूपी मोहिनी से स्वयं को बचा सका हो-

''माया दीपक नर पतँग, भ्रमि भ्रमि इवै पड़ंत। कहै कबीर गुर ग्यान थैं, एक आध उबरंत।।''[31]

इसी प्रकार संत मलूकदास ने भी माया को काली नागिन कहा है जिसने संपूर्ण संसार को अपनी माया शक्ति से डस लिया है-

''माया काली नागिनी, जिन डसिया सब संसार हो।''[32]

सन्त कवि अक्षर अनन्य का माया सम्बन्धी विचार अत्यन्त स्पष्ट एवं सारगर्भित है। इन्होंने माया के संबंध में शाक्त दर्शन में वर्णित सिद्धान्त को ही मान्यता दी है। कवि का मत है कि जिस प्रकार भूमि और मिट्टी में, जल और समुद्र में, दीपक और ज्वाला में तत्वतः कोई भेद नहीं है उसी प्रकार ब्रह्म और माया में भी कोई तात्विक भेद नहीं है–

''माटी की भूमि है भूमि सु माटी है, माटिहि भूमिहि भेद न भाया।
पानी कौ सिंधु है सिंधु कौ पानी है, पानिहि सिंधुहि द्वै न बताया।
यों अनभेद ''अनन्य'' भनै, कहिबे महं भेद गुरू समुझाया।
दीपक ज्वाल है ज्वाल सु दीपक, माया सु ब्रह्म है ब्रह्म सु माया।।''[33]

अनन्य के मतानुसार माया शिव शक्ति रूप होने के कारण चैतन्य रूपिणी हैं फिर भी माया शक्ति के रूप में वह स्वयं को स्वयं से आवृत्त किये रखती है जो जीव को भ्रमित कर वास्तविक सत्य से परे रखती है। माया शक्ति के कारण ही जीव को भिन्नता दिखाई पड़ती है। इनका मत है कि जिस प्रकार अग्नि को ज्वाला कहने पर स्त्री का तथा वैश्वानर कहने पर पुरुषवाची होने का आभास होता है, साथ ही शरीर को देह और काया कहने पर क्रमशः स्त्रीलिंग और पुल्लिंग का संकेत मिलता है जबकि इनमें कोई तात्विक भेद नहीं है, ठीक उसी प्रकार ब्रह्म और माया में भी केवल नाम मात्र का ही भेद दृष्टिगोचर होता है। वास्तविक रूप से माया ब्रह्म का ही अंश है–

''ज्वाला कहैं जुवती सी लगै, वैसान्दुर में पुरुषारथ आया।
देह कहैं नर नाम लगै, अरु नारि लगै जब ही कहौ काया।
यों अनभेद ''अनन्य'' भनै, हठि मूढ़नि बादहि बाद बढ़ाया।
एकहि तत्त की माड़ सबै, भल वाही सौं ब्रह्म कहौ भल माया।।''[34]

अतः स्पष्ट है कि अक्षर अनन्य ने माया शक्ति को शिव शक्ति का ही अद्वय रूप कहा है। इनके मतानुसार संसारी जीव माया से प्रभावित होने के कारण इस दृश्यमय जगत को देखकर चित् तत्व शिव शक्ति को भूल जाते हैं और उन्हें तनिक भी भान नहीं रहता कि जगत के रूप में सत्–चित्–आनन्द रूप शिव शक्ति तत्व ही सर्वत्र विद्यमान है। जिस प्रकार ज्वाला और अग्नि में, देह और काया में तथा मिट्टी और भूमि में कोई अंतर नहीं है उसी प्रकार ब्रह्म और माया एक ही परमतत्व के दो नाम है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अक्षर अनन्य का दार्शनिक चिन्तन अत्यन्त प्रभावपूर्ण, स्पष्ट एवं सारगर्भित है। इन्होंने ब्रह्म, जीव, जगत, माया जैसे सभी दार्शनिक विषयों पर अत्यन्त सूक्ष्मता से विचार करते हुए अपनी मान्यताओं को जनमानस के सम्मुख स्पष्ट किया है। इनके द्वारा प्रस्तुत विचार तर्क पूर्ण एवं वैज्ञानिकता से युक्त हैं। कहीं पर भी उनमें शिथिलता नहीं दिखाई पड़ती। निःसंदेह इनकी दार्शनिक मान्यताएँ मानव मन में व्याप्त संशय को दूर करने तथा उनकी जिज्ञासा को शान्त करने में पूर्ण सक्षम हैं।

सन्दर्भ :

1. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् : धर्म और समाज, राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली, संस्करण 1975, पृ. 43
2. ऋग्वेद 10/90/1
3. कठोपनिषद् 1/3/15
4. ईशावास्योपनिषद्, शान्तिपाठ, पृ.1
5. श्यामसुंदर दास : कबीर ग्रंथावली–रमैंणी (बड़ी अष्टपदी रमैंणी), पंचशील प्रकाशन, जयपुर, संस्करण 2016, पृ. 213

6. परशुराम चतुर्वेदी : कबीर-साहित्य की परख, भारती भंडार, प्रयाग, संस्करण 2011, पृ. 92
7. अम्बाप्रसाद श्रीवास्तव : अक्षर अनन्य-जीवनी, साधना सिद्धान्त एवं ग्रन्थावली- द्वितीय खण्ड, ज्ञान पञ्चासिका, मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद्, भोपाल, संस्करण 1969, पद 18, पृ.63
8. वही, पद 19, पृ. 63
9. वही, पद 13, पृ. 62
10. तुलसीदास : श्रीरामचरितमानस-बालकाण्ड, गीताप्रेस, गोरखपुर, संवत् 2065 वि., पद 1/116
11. अम्बाप्रसाद श्रीवास्तव : अक्षर अनन्य-जीवनी, साधना सिद्धान्त एवं ग्रन्थावली-द्वितीय खण्ड, गुणान बत्तीसी, मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद्, भोपाल, संस्करण 1969, पद 23, पृ. 465-466
12. वही, प्रथम खण्ड, पृ. 219
13. ऋग्वेद 1/164/20
14. श्वेताश्वतरोपनिषद् 5/10
15. श्रीमद्भगवद्गीता 2/20
16. श्यामसुंदर दास : कबीर ग्रंथावली, पद-राग गौड़ी, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, संस्करण 2016, पद 44, पृ.124
17. अम्बाप्रसाद श्रीवास्तव : अक्षर अनन्य-जीवनी, साधना सिद्धान्त एवं ग्रन्थावली, अक्षर अनन्य के चिट्ठा-6/15, मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद्, भोपाल, संस्करण 1969, पृ. 25
18. तुलसीदास : श्रीरामचरितमानस-उत्तरकाण्ड, गीताप्रेस, गोरखपुर, संवत् 2065 वि., पद 1/117
19. अम्बाप्रसाद श्रीवास्तव : अक्षर अनन्य-जीवनी, साधना सिद्धान्त एवं ग्रन्थावली, उपासना बोध, मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद्, भोपाल, संस्करण 1969, पद 10, पृ. 52
20. वही, अनन्य प्रकाश, पद 96, पृ. 142
21. प्रश्नोपनिषद् 6/4
22. श्रीमद्भगवद्गीता 9/10
23. श्यामसुंदर दास : कबीर ग्रंथावली-चितावणी कौ अंग, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, संस्करण 2016, पद 13, पृ. 62
24. रामनिवास : संत शिरोमणि गुरु रविदास ग्रन्थावली, वाङ्मय प्रकाशन, जयपुर, संस्करण 2016, पद 133, पृ. 219
25. अम्बाप्रसाद श्रीवास्तव : अक्षर अनन्य-जीवनी, साधना सिद्धान्त एवं ग्रन्थावली, साखी, मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद्, भोपाल, संस्करण 1969, पद 317, पृ. 424
26. वही, अनन्य प्रकाश, पद 38, पृ. 134
27. वही, पद 43, पृ. 135
28. श्वेताश्वतरोपनिषद् 4/10
29. श्रीमद्भगवद्गीता 7/13
30. राम चन्द्र तिवारी : कबीर-मीमांसा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 1995, पृ. 125
31. श्यामसुंदर दास : कबीर ग्रंथावली, साखी-गुरुदेव कौ अंग, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, संस्करण 2016, पद 20, पृ. 48
32. मलूकदास की बानी, मन और माया के चरित्र-शब्द-1, बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद, संस्करण 2011, पृ. 8
33. अम्बाप्रसाद श्रीवास्तव : अक्षर अनन्य-जीवनी, साधना सि)ान्त एवं ग्रन्थावली, ज्ञान पञ्चासिका, मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद्, भोपाल, संस्करण 1969, पद 14, पृ. 62
34. वही, पद 15, पृ. .62

❒❒❒

शोध-अध्येता, हिन्दी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

जयनंदन की कहानियों में मूल्यबोध

—सरिता कुमारी

जयनंदन ने अपनी कहानियों में सामाजिक मूल्यों के बदलते रूप का तथ्यात्मक वर्णन किया है। आज वर्तमान समय में मनुष्य के लिए निजी स्वतंत्रता ही महत्व रखती है। परिवार की महत्ता घटती जा रही है। माता-पिता, पति-पत्नी, भाई-भाई, भाई-बहन जैसे संवेदनात्मक रिश्तों के जगह बौद्धिकता ने ले ली है। परिवार में मौजूद वृद्धों का महत्व आज के समय में सबसे बड़ा संकट बना हुआ है।

जयनंदन समकालीन कथा-साहित्य के एक ऐसे कथाकार हैं, जिन्होंने अपनी कहानियों में वर्तमान समय में व्याप्त मानव जीवन से मूल्यों के ह्रास को दर्शाया है और उनमें नवीन संस्करण की अग्रदर्शी बोध से साकार करने की कोशिश भी करते हैं। इनकी रचनाएँ उनके जीवन के भोगे हुए यथार्थ का अनुभव है। जयनंदन ने अपनी कहानियों में दर्शाया है कि मानव जीवन में 'मूल्य' वह आधारशिला है, जिस पर मानव अपने विचार, अनुभव और चिंतन को नियंत्रित करता है। इनकी कहानियों द्वारा स्पष्ट होता है कि 'मूल्य' मानव हृदय के भावों को नियंत्रित करने के साथ-साथ दिशा निर्देशक का भी कार्य करता है। इनकी कहानियों की कथावस्तु से स्पष्ट होता है कि मानव जीवन के हर क्षेत्र में चाहे वह परिवार, समाज, नीति, प्रेम, संस्कृति, अर्थ, धर्म आदि हो उनमें मूल्यों की विचारधारा निरंतर गतिशील रहती है। लेखक ने अपनी कहानियों के विविध पात्रों द्वारा दर्शाते हुए इस बात की ओर संकेत किया कि मानव का शुद्ध आचरण समाज को सुव्यवस्थित बनाता है। जयनंदन अपनी कहानियों के विविध प्रसंगों से दर्शाते हैं कि आज के परिवर्तनशील दौर में मानव मूल्यों का ह्रास हो रहा है। बड़ी बेबाकी के साथ इनकी कहानियाँ यह स्पष्ट करती हैं कि भारत में जिस तरह से पश्चिमी संस्कृति को अपनाने की होड़ लगी हुई है उसमें यह देखा गया है कि हमारे परम्परागत मूल्यों का पतन हुआ है और इसके प्रभाव ने हमारे जीवन को अनियंत्रित बना दिया है। जयनंदन अपनी लेखनी के द्वारा समाज में व्याप्त विसंगतियों का पर्दाफाश करके नीतिपरक मूल्यों की प्रतिष्ठा करने की कोशिश करते हैं।

बीज शब्द : मूल्य, आधुनिकीकरण, बौद्धिकता, आर्थिक उदारीकरण, भूमंडलीकरण

प्रस्तावना :

जयनंदन की कहानियों में आधुनिक मानव जीवन के कठिन परिस्थितियों का वास्तविक विवरण है तो वही उन्होंने अनागत

के प्रति व्याकुल मानव हृदय के भीतर जीवन को जीने के लिए एक नई आशा की किरण को जागृत करते हैं। इसी संदर्भ में शंभु गुप्त लिखते हैं कि-"जयनंदन ने स्वंय अपना लक्ष्य निर्धारित किया था; मानवीय मूल्यों के ह्रास और उपहास की बहुत ही यथार्थ पकड़ और इस यथार्थ का सूक्ष्म विश्लेषण उनकी कहानियों में शुरू से आज तक मिलता है। यथार्थ को पकड़ने और उसके सूक्ष्म विश्लेषण की उनकी यह कोशिश दरअसल समकालीन परिदृश्य का एक ऐसा शोध-पूर्ण रचनात्मक अध्ययन है, जो एकदम अछूते और अंदरूनी तथ्यों से हमारा कलात्मक परिचय कराता है। जयनंदन बहुत जिज्ञासु और समर्पित भाव से यथार्थ की पतली अँधेरी सुरंग में घुसते हैं और उसका हर-एक कोना-अँतरा जाँच-पड़ताल बेहद आश्वस्ति और आत्मविश्वास के साथ उससे बाहर निकलते हैं। इस पूरी प्रक्रिया में पाठक एक गवाह की तरह उनके साथ रहता है।"1 जयनंदन अपनी रचनाओं में समाज को उसी तरह से पेश करते हैं, जिसे पाठक देख और सुन रहा है।

जयनंदन की कहानियों के केंद्र में गाँव मुख्य रूप से रहा है। गाँव की विवशता को उन्होंने अपने बाल्यकाल से ही देखा है। अपनी आजीविका चलाने के लिए उन्हें गाँव को छोड़कर शहर आना पड़ा किंतु गाँव के प्रति उनका मन हमेशा व्यथित रहा है। गाँव के बदलते रूप को देखकर उनके ग्रामीण हृदय में उथल-पुथल मच जाती है। शहरीकरण के कारण गाँव का परिवेश अब दूषित हो चुका है। परिवार में स्नेह, सौहार्द और आत्मीयता की जगह स्वार्थ का महत्व बढ़ चुका है। गाँव में पनप रही स्वार्थपरत राजनीति, घिनौनी चाल, अपनी प्रतिष्ठा कायम रखने के लिए अनैतिक कार्य, इन सारी विसंगतियों के विरूद्ध लेखक अपनी कहानियों के द्वारा जन को सचेत करते हैं। इसी संदर्भ में आशुतोष कुमार झा लिखते हैं कि "जयनंदन का कथा संसार अनुभव के ठोस यथार्थ पर आधारित है। खेत-खलिहान, किसानी-पशुपालन से होते हुए ग्रामीण समाज के तमाम अंतर्द्वंद्व, सामंती जकड़, सवर्ण अकड़ और परंपरा के नाम पर पाखंड पोषण-यह सब कुछ उनकी कहानियों के वर्ण्य विषय है।"2 'छोटा किसान' शीर्षक कहानी में कृषकों के कृषि के प्रति उदासीन भावना को दर्शाते हुए लिखते हैं-"मारवाड़ियों को देखिए, पूरे देश में फैलकर धंधा कर रहे हैं और क्या ठाट-बाट की जिंदगी बसर कर रहे हैं। उनके पास खेत होने की जरूरत भी क्या है?"3 'कवच' और 'माटी के बलमुंआ' शीर्षक कहानियों में पारिवारिक संत्रास को दिखलाया गया है। इन कहानियों में लेखक ने गाँव में व्याप्त जमीन हथियाने की सच्चाई से रू-ब-रू करवाया है। 'हनकी बूढ़ी' और 'नेटहा काका' ऐसे ही पात्र है जो अपने ही परिवार वालों के हाथों शोषित हैं।

जयनंदन ने अपनी कहानियों में सामाजिक मूल्यों के बदलते रूप का तथ्यात्मक वर्णन किया है। आज वर्तमान समय में मनुष्य के लिए निजी स्वतंत्रता ही महत्व रखती है। परिवार की महत्ता घटती जा रही है। माता-पिता, पति-पत्नी, भाई-भाई, भाई-बहन जैसे संवेदनात्मक रिश्तों के जगह बौद्धिकता ने ले ली है। परिवार में मौजूद वृद्धों का महत्व आज के समय में सबसे बड़ा संकट बना हुआ है। वृद्ध माता-पिता अपने ही संतानों द्वारा प्रताड़ित हो रहे है। 'केंचुल', 'लावारिस पिता', 'खेत की मूली', शीर्षक कहानियों में लेखक वृद्धों पर हो रहे अनकहे अत्याचारों को वर्णित करते हैं। 'केंचुल' शीर्षक कहानी में एक वृद्ध पिता को अपनी ही बहू के हाथों

अपमानित होना पड़ता है। जिस बेटे को पिता ने अभाव में भी रहकर नौकरी के लायक बनाया। आज उसी से मदद मांगने के लिए जब वह उसके फ्लैट पर जाते हैं तो उनकी बहू चंदा की नजर पड़ती है तो उसने अपने नाक-मुंह यू बंद कर लिये जैसे कोई सड़ी चीज देख ली हो। चेहरे पर ढेर सारी हिकारत लाकर दांत पीसते हुए कहा उसने – "भिखमंगों जैसे कपड़ों में यहां आते आपको शर्म नहीं आयी? अच्छा-अच्छा तो बैल खरीदने के लिये भीख मांगने आये हैं। चले जाओ यहां से। इस लिबास में कोई देखेगा तो हमारी इज्जत मिट्टी में मिल जायेगी। साफ-साफ सुन लो यहां कोई पैसे का गाछ नहीं है कि हिलाया और तोड़ लिया।"4 वहीं भूमंडलीकरण के प्रभाव से स्त्री-पुरूष के संबंधों में भी बदलते रूप सामने आए है। दाम्पत्य संबंध अपनी पवित्रता को खोता जा रहा है। समाज में यौन संबंधों के प्रति भी बदलाव आया है। विवाहेत्तर यौन संबंध तथा लिव इन रिलेशनशिप का दौर काफी तेजी से हमारे समाज में फैल रहा है। लेखक ने 'भतरछाड़ी' की 'सतिया' जो अपनी यौन तृष्णा मिटाने के लिए बार-बार अपने पति के घर से भाग जाती है और 'भोमहा' की 'पूनियाँ' अपनी यौन तृष्णा मिटाने के लिए अपने ही पति को घर से निकाल देती है। तो वहीं 'क्षणभंगुर' की नायिका सुगंधा अपने पति के पुंसत्व खो जाने से वह किसी दूसरे पुरूष के साथ यौन सुख प्राप्त करती है। 'सूखते स्त्रोत' शीर्षक कहानी में लिव इन रिलेशनशिप को दिखलाया है कि आज की युवा पीढ़ी विवाह के बंधन में न बंधकर स्वतंत्र रूप में स्त्री-पुरूष एक साथ रहना अपने कैरियर के लिए उचित समझते हैं। संधिनी अपने पुत्र निर्झर और उसकी प्रेमिका लिपी से विवाह करने के लिए कहती है तो लिपी उससे कहती है – "आप जल्दी चाहती हैं, इस खबर से निर्झर ने मुझे अवगत करा दिया है। मैं इस बारे में इतना ही अर्ज करना चाहूँगी कि कृपया हम पर कोई हड़बड़ी न थोपिए। शादी करके हम अपनी सुख-शांति को उर्वर नहीं बनाना चाहते हैं। अभी की स्थिति इस रूप में हमारे लिए सुविधाजनक नहीं है, हम इसे अनुकूल होने का इंतजार कर रहे हैं। हम इस मायने में कोई जोखिम उठाना नहीं चाहते कि इस समय हम जितना खुश हैं, इतनी खुशी भी हमारे पास न रह जाए।"5

आधुनिकीकरण के प्रभाव के कारण मानव जीवन से ग्रामीण संस्कृति विलुप्त होती जा रही हैं। जयनंदन अपनी कहानियों में ग्रामीण संस्कृति के प्रति अपने पात्रों के द्वारा संघर्ष करते हुए उसे पुनर्जीवित करने की कोशिश करते हैं। लोक नृत्य, लोक गीत, उत्सव, लोक कथाएँ आदि ये सारे जीवन के धरोहर है। जयनंदन अपनी कहानी 'नचनिया चोखेलाल' का नायक 'चोखेलाल' और 'रफू मियां नाचवाला' के नायक 'रफू' के माध्यम से लोकजीवन के ये सांस्कृतिक मूल्यों को बचाए रखना चाहते हैं। लेखक इस बात पर भी पाठक को सोचने के लिए मजबूर करते हैं कि अब ये सांस्कृतिक धरोहर कुछ लोगों तक ही सीमित रह गई है। कहानी 'नचनिया चोखेलाल' का नायक 'चोखेलाल' अपने गाँव में लौण्डा नाच के लिए एक प्रसिद्ध फनकार है। लेकिन आज के परिवर्तनशील दौर में प्रहसन, लौण्डा नाच, नौटंकी इत्यादि लोककलाएँ विलुप्त होती जा रही हैं। तकनीकि प्रगति के प्रभाव से चोखेलाल की कला का समाज में अब कोई स्थान नहीं रह गया है। उसे अब खेतों में मजदूर बनकर अपनी आजीविका चलानी पड़ती है। जयनंदन ऐसे फनकारो के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए लिखते हैं कि-"इनकी यह दशा इसीलिए हो गई कि तुम जैसे

जाहिलों और गँवारों के बीच ये फँसकर रह गए। अनाड़ियों ने कोयला समझ लिया और इनकी परख करने के लिए जौहरी इन्हें मिला नहीं। इनमें वो सिफत थी कि बड़े घर में पैदा होते तो बिरजू महाराज बन जाते, जिसे भारत सरकार पद्मश्री से सम्मानित करती और कई बड़े शहरों में इनकी नृत्यशालाएँ चलतीं। इन्हें पंडितजी कहकर पुकारा जाता और इनसे सीखने वालों की लाइन लगी रहती। लोग इनसे सीख-सीखकर धन्य-धन्य महसूस करते। टीवी पर इनका गुणगान और इंटरव्यू प्रसारित होता, अखबारों में आए दिन इनके बयान छपते, इनकी छींक-खाँसी भी खबर बन जाती। बड़े मंचों पर इनका गायन होता और 'मिले सुर मेरा तुम्हारा' में इनका भी चेहरा दिखाया जाता। अवसर और पहुँच का नाम बिरजू महाराज, लता मंगेशकर और किशोर कुमार होता है दोस्त, वरना इस देश में हजारों बिरजू महाराज, लता मंगेशकर और किशोर कुमार विभिन्न गलियों में, झोंपड़ियों में, खोलियों में इसी तरह तुम जैसे अपने सगे लोगों द्वारा प्रताड़ित होकर बरबाद हो जाते हैं।"6

जयनंदन वर्तमान समय के भारत के गाँव और शहर में व्याप्त आर्थिक स्थिति का वर्णन करते हुए मानव जीवन में आए परिवर्तन को दिखलाते हैं। इनकी कहानियों के पात्र वर्तमान आर्थिक स्थितियों से जूझते हुए नजर आते हैं। कठोर परिश्रम करने के बाद भी उन्हें उचित पारिश्रमिक नहीं मिलता। स्वाधीन होने के बाद भी समाज का एक ऐसा वर्ग है जो अपने जीवन को जीने के लिए मामूली सुविधाओं से भी वंचित है। इसी संदर्भ में डॉ. आशुतोष कुमार झा लिखते है – "कथाकार जयनंदन की यह विशेषता है कि वे शहरी तथा ग्रामीण दोनों परिवेशों की कहानियों में आर्थिक परिदृश्य का सूक्ष्मता से चित्रण कर लेते हैं। ग्रामीण परिवेश का चित्रण करते वक्त वहाँ की परिस्थितियों में मानवीय संबंधों में टकराव और बदलाव के विभिन्न आर्थिक संदर्भ उनकी कहानियों में दृष्टिगोचर होते हैं।"7 जयनंदन अपनी कहानियों में शोषित वर्ग के लोगों के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त करते हुए उन्हें इन शोषणचक्र से बाहर निकलने का मार्ग भी दिखलाते हैं। लेखक 'पानी बिच मीन पियासी' शीर्षक कहानी में औद्योगिक मजदूरों के शोषण को दिखलाते हैं। आर्थिक उदारीकरण की नीति के कारण देश के बहुसंख्यक कारखानों में अत्याधुनिक मशीनें लगाई गई। अर्थात लोगों के स्थान पर मशीनों का बोलबाला हो गया। जिसके कारण कारखानों से मजदूरों की छँटनी होने लगी। कारखानों के प्रबंधन का व्यवहार मजदूरों के प्रति और भी ज्यादा रूढ़ होने लगा। लेखक लिखते हैं-"देखते-ही-देखते विदेशों से लाकर कंप्यूटराइज्ड न्यूमेरीकल कंट्रोल्ड मशीनें बैठायी जाने लगीं। अब पचास मजदूरों के काम निपटाने में एक मशीन ही काफी होगी। ऑफिस के लिए भी कम्प्यूटर आ चुका था। भारी तादाद में कारखाने के मजदूर और ऑफिस के बेतेल-पानी वाले कुछ बाबू सरप्लस होने वाले थे। इनकी छँटनी सुनिश्चित थी। यह कैसा अजीब हादसा था कि मुफ्तखोर मालिक को मुनाफे के ऊपर और मुनाफा चाहिए, मगर मेहनतकश मजदूरों को जहालत के ऊपर और जहालत।"8 वहीं ' घर फूंक तमाशा' शीर्षक कहानी में लेखक ने आज के समय के सबसे बड़ी चुनौती को सामने लाते है कि जो लोग गाँव से भागकर शहर की ओर रोजगार की तलाश में आकर इन कारखानों में मजदूर के रूप में बस चुके थे, वे अब कहाँ जाएँगे। लेखक कहानी के नायक टेकलाल के द्वारा मजदूरों के छँटनी की त्रासदी को दिखलाते हुए लिखते हैं कि – "पहले दूरदराज के शहरों या

गाँवों से लोग इस औद्योगिक शहर में आते थे और उन्हें उनकी काबिलियत के लायक बड़े या फिर छोटे कारखानों में प्राय: काम मिल जाता था। आज इस औद्योगिक शहर से विस्थापित हो कर काम की तलाश में दूसरी गैरऔद्योगिक जगह जाना पड़ रहा है। क्या आर्थिक उदारीकरण का लक्ष्य इसी रसातल स्थिति पर पहुंचना था कि देश के तमाम मजदूरी के अवसर और मजदूरों की खुशियों में एक साथ सेंध लग जाये?"9 इस आर्थिक परिवर्तन का प्रभाव समाज के कुछ ऐसे लोगों को भी प्रभावित किया है जो मानव जीवन के दैनिक क्रिया-कलापों से अपना पेट भरते थे। लेखक 'विश्व बाजार का ऊँट' शीर्षक कहानी में इस आर्थिक परिवर्तन के प्रभाव को दिखलाते हुए लिखते है कि - "बीस साल पहले के हमारे रहन-सहन में भारी बदलाव आया है। तब हमारे पास आज की भौतिक सुविधाएँ - फ्रिज, स्कूटर, वाशिंग मशीन, मिक्सी, गैस-चूल्हा, इलेक्ट्रिक-आयरन, एयर-कूलर, टीवी, वीसीआर नहीं थे। इन उपकरणों के कारण परम्परागत पेशे चलानेवाले कई लोगों की हमारे घरों पर निर्भरता खत्म हो गयी। हम कपड़े घर में ही धो लेते हैं; बाल सैलून में जाकर कटवाते हैं।''10

जयनंदन अपनी कहानियों में स्वाधीन भारत में व्याप्त राजनीतिक व्यवस्था को व्यक्त करते हैं और राजनेताओं के निजी स्वार्थ को दिखलाते हैं। स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात राजनेताओं ने देशवासियों को जो सपना दिखाया था, वह सारे झूठ साबित हुए। राजनेताओं ने आम जनता के अधिकारों का हनन और अपनी जेब को भरना ही ज्यादा फायदेमंद समझा। इस मूल्यहीन विचार के कारण शहर और गाँव दोनों ही प्रभावित हुए है। आज वर्तमान समय की राजनीति में भ्रष्टाचार, अवसरवादी, बेईमानी, कपट आदि का ही बोलबाला है। उम्मीदवार के रूप में ऐसे ही व्यक्ति को सामने लाया जाता है, जिसकी नीति ही भ्रष्ट होती है। भारत में मौजूद इस मूल्यहीन वोट की क्रिया-कलापों के विरूद्ध लेखक ने आम जनता को सचेत किया है। उनकी 'नागरिक मताधिकार' शीर्षक कहानी में इसी वोट प्रक्रिया को दिखलाया गया है। लेखक ने कहानी के नायक 'मास्टर रामरूप शरण' के माध्यम से पूरे देशवासियों को यह संदेश देते हैं कि उम्मीदवार का सही चयन करना ही आम जनता के भविष्य को सुरक्षित करना है। परंतु हमारे देश का दुर्भाग्य यह है कि जिन्हें सोचने-समझने की परख है वे ही इन सब बातों से अपना पलड़ा झाड़ लेते है। जब 'मास्टर रामरूप शरण' गाँव के मुखिया, इन्दद्रनाथ सिंह, वकील साहब, प्रोफेसर साहब और बृजकिशोर पांडे को बुलाकर अपना विचार रखते हुए कहते हैं कि - "यही मानसिकता हमलोगों को लगातार क्षतिग्रस्त कर रही है। वक्त आता है और हम व्यक्तिगत रूप से किसी को बगैर जाने-समझे वोट दे देते हैं। भुलावे में डालनेवाले पार्टी की विचारधाराओं और नीतियों से आकर्षित होकर उसके नाम पर खड़े माटी के माधो को भी वोट डाल देते हैं। लेकिन जरूरत है हमें यह समझने की कि नागरिक अधिकारों में मताधिकार सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है, जिसका उचित, सटीक एवं विवेकपूर्ण प्रयोग न होने से व्यक्ति एवं समाज के भूत-वर्तमान-भविष्य तीनों प्रभावित होते हैं। यही कारण है कि आज सर्वत्र अच्छाइयों का लोप हो रहा है, बुराइयाँ हर क्षेत्र में जड़ पकड़ रही हैं।"11 वोट प्रक्रिया के साथ-साथ लेखक राजनीति में व्याप्त भाई-भतीजावाद की नीति का भी पर्दाफाश करते है। 'सन्नाटा भंग' शीर्षक कहानी में इस सच्चाई की ओर इशारा किया गया है कि नेताओं के परिवार जनों को वह सारी सुविधाएँ सहज रूप में प्राप्त होती है, जिसके लिए आम जनता को काफी संघर्ष करने के बाद भी

प्राप्त होना मुश्किल होता है। कहानी का नायक 'रंजन' के बड़े भाई को मंत्री का पद मिलते ही उनके परिवार के प्रति भी समाज का रवैया बदल जाता है। उन्हें हर स्थान पर प्राथमिकता मिलनी लगती है। इस तरह समाज के बदले हुए रवैये को देखकर रंजन सोचता है – "बड़े भैया जनतंत्र के मंत्री बने थे या किसी राजतंत्र के राजा। हर आदमी की निगाह में हमारे पूरे परिवार के लिए असाधारण भाव; हर जगह हमारे लिए रास्ते साफ; हर मुकाम हमारे लिए सुविधा और सहूलियत लिये हुए तैयार खड़ा। यहां तक कि हमारे नये बहाल नौकर तक को देखकर हाट-बाजार और दुकान आदि में भीड़ एक तरफ हो जाती थी; बसों की सीटें तक छोड़ दी जाती थीं। क्रम का कोई मतलब नहीं, किसी काम के लिए आखिरी भी हो तो प्राथमिकता बिन मांगे उपलब्ध।"12

निष्कर्षतः जयनंदन ने अपनी कहानियों को आधार बनाकर मानव जीवन में मूल्यबोध को निरंतर गतिमान रखा है। उनकी लेखनी में आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता एवं उनकी गहन वैचारिक पक्षधरता है। उनकी रचनाओं में उपस्थित मूल्य उनके विचारों की ही उपज है। वर्तमान भौतिक एवं तकनीकी समृद्धि और आपाधापी भरे सामाजिक जीवन के बीच खोते हुए मूल्यबोध तथा तत्संबंधी सांस्कृतिक मूल्य कहीं विलुप्त से होते जा रहे हैं। दरअसल, जयनंदन बहुत पैनी अंतर्दृष्टि के द्वारा उन्हें पुनः खोजने एवं प्रतिष्ठापित करने का रचनात्मक प्रयास करते हुए नजर आते हैं। गहराई से देखा जाए तो इन्हीं मूल्यों के द्वारा सामासिक संस्कृति एवं चारित्रिक प्रोन्नति का मार्ग निकलता है, जो कि जयनंदन के कथादेश में गहराई से फैला हुआ है। इस वैचारिक मनोभूमि एवं सामाजिक संदर्भ सहित इनके कथा प्रसंगों से गुजरना मूल्यबोध भरी एक महान वैचारिक पृष्ठभूमि से रू-ब-रू होना है।

संदर्भ सूची :

1. गुप्त शंभु, कहानी यथार्थवाद से मुक्ति, प्रथम संस्करण : 2016, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. 225
2. सिंह कुमार अविनाश (सं.), इस्पातिका (पत्रिका), संयुक्तांक 6-7, जुलाई-दिसंबर 2013 : जनवरी-जून 2014 पृ. 169
3. जयनंदन, मायावी क्षितिज, पहला पेपरबैक संस्करण : 2021, प्रलेक प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, मुम्बई, पृ. 27
4. जयनंदन, दाल नहीं गलेगी अब, प्रथम संस्करण : 2005, पुस्तक भवन, नई दिल्ली, पृ. 151-152
5. जयनंदन, सूखते स्त्रोत, पहला संस्करण : 2003, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, पृ. 21
6. जयनंदन, गांव की सिसकियां, प्रथम संस्करण : 2012, पुस्तक भवन, नई दिल्ली, पृ. 91-92
7. झा डॉ. आशुतोष कुमार, कथाकार जयनंदन, प्रथम संस्करण : 2017, साहित्य संसद, नई दिल्ली, पृ. 127
8. जयनंदन, सन्नाटा-भंग, प्रथम संस्करण : 1993, दिशा प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 54-55
9. जयनंदन, घर फूंक तमाशा, प्रथम संस्करण : 2004, ज्ञान भारती, दिल्ली, पृ. 9
10. जयनंदन, विश्व बाजार का ऊँट, प्रथम संस्करण : 1997, दिशा प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 21
11. जयनंदन, भितरघात, पहला संस्करण : 2013, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, पृ. 78
12. जयनंदन, सन्नाटा-भंग, पृ. 11

❏❏❏

1. सहायक प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग, बलरामपुर कॉलेज, पुरूलिया, पश्चिम बंगाल
2. पी-एच.डी. शोधार्थी, हिन्दी विभाग, काज़ी नजरूल विश्वविद्यालय, आसनसोल, पश्चिम बंगाल

मृदुला गर्ग का नारी-दृष्टिकोण

—अंजना कनौजिया

मृदुला गर्ग हिन्दी कथा साहित्य की विभिन्न विधाओं की वैसी सिद्ध हस्तशिल्पी हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं में नारी पात्रों का सृजन करते समय "मैं इस पुरुष के लिए क्या हूँ?" के बजाय "मैं क्या हूँ?" प्रश्न को नारी की स्वतंत्रता और सार्थकता की तलाश के संदर्भ में अनवरत रूप से परिभाषित किया है। उनका संपूर्ण रचना संसार मानवीय संवेदनाओं और अनुभूतियों के अत्यंत सूक्ष्म विश्लेषण से परिपूर्ण है जो महिलाओं की मनस्थितियों का विभिन्न परिवेशों और परिस्थितियों में आकलन करता है। बींसवीं सदी के सत्तर के बाद के दशकों में स्त्री-विमर्श विचारधारा की पृष्ठभूमि में परिवर्तनशील भारतीय समाज के स्वरूप का भारतीय जीवनशैली पर जो प्रभाव पड़ा उसके अनुरूप भारतीय नारी के चिंतन, मानसिकता और व्यवहार में आये परिवर्तन मृदुला गर्ग की रचनाओं के केंद्र बिंदु रहे हैं।

अपने बोल्ड और स्वतंत्र लेखन के फलस्वरूप वे स्त्री-विमर्श काल की प्रमुख नारी प्रवक्ता के रूप में सामने आती हैं।

मृदुला जी ने भारतीय नारी के संदर्भ में अपना रचना संसार दो भागों में विभक्त किया है। इसका एक पक्ष पारंपरिक जीवनशैली का निर्वहन करती आदर्श भारतीय नारी को प्रस्तुत करता है तो दूसरा आधुनिक समाज में तेजी से आए परिवर्तनों को स्वीकारती और उसके अनुरूप जीवनशैली में ढली एक स्वच्छंद नारी को। जहाँ आदर्श नारी का प्रस्तुतीकरण आता है वहाँ मृदुला जी की नारियां एक अच्छी बेटी, सुगढ़ सहधर्मिणी, आदर्श माँ, अच्छी मित्र, उपयुक्त सलाहकार, करुणामयी समाज सेविका, पारंपरिक रिश्तों का सम्मान करने वाली, लेखिका दूसरों की मदद को तत्पर नारी आदि के रूप में सामने आती हैं। वहीं दूसरी ओर उसके अमर्यादित, उन्मुक्त जीवन शैली की अनुगामिनी, स्वनिर्णय क्षमता सम्पन्न, जीवनशैली का चुनाव स्वेच्छा से करने वाली, परंपरागत रीति-रिवाजों और संबंधों को नकारने वाली,यौन शुचिता को महत्व न देते हुए पर पुरुषों से संबंध बनानेवाली, विवाह प्रथा को नकारती, स्वतंत्र सोच रखनेवाली और स्पष्टवादी स्वरूप के दर्शन होते हैं।

बींसवीं सदी के सत्तर के बाद के दशकों में स्त्री-विमर्श विचारधारा की पृष्ठभूमि में परिवर्तनशील भारतीय समाज के स्वरूप का भारतीय जीवनशैली पर जो प्रभाव पड़ा उसके अनुरूप भारतीय नारी के चिंतन, मानसिकता और व्यवहार में आये परिवर्तन मृदुला गर्ग की रचनाओं के केंद्र बिंदु रहे हैं।

मृदुला जी की ऐसी नारियां एक उत्कट लालसा से प्रेरित हैं जो संभावनाओं को तलाशती और अनायास प्राप्त क्षणों का सर्वेक्षण से उपभोग करने की क्षमता रखती हैं। नारी के इस परिवर्तित स्वरूप का यह अर्थ कदापि नहीं है कि मृदुला जी ने एक वासनोस्कित, कर्तव्यहीन, संस्कारहीन और उत्श्रृंखल नारी का चित्रण अपनी रचनाओं में किया है। उनकी कृतियों का गहन अध्ययन यह प्रदर्शित करता है कि उनके नारी पात्र आधुनिकता के तीव्र प्रवाह में बहते हुए भी पारिवारिक दायित्वों से मुँह नहीं मोड़ते। वे शिक्षित और आत्मनिर्भर हैं। उनकी निर्भीकता उन्हें आपदपूर्ण मार्ग पर चलने से नहीं रोक सकती। वे कुछ नया हीं करना चाहती हैं। पुरुष की परछाई बन मन-वचन-कर्म से उसके क्रिया-कलापों का अनुसरण न कर वे उनसे कंधे से कंधा मिलाकर अपनी सामाजिक छवि को सुधारने में व्यस्त रहती हैं। वे अपने अधिकारों के प्रति सजग हैं और अपने लिए न्याय मांगने के लिए कटिबद्ध हैं।

भारतीय नारी के इस द्विपक्षीय स्वरूप को मृदुला जी ने अपनी रचनाओं में स्थान दिया है। अत: उनकी रचनाओं को संदर्भित करते हुए इस बोल्ड लेखिका के नारी दृष्टिकोण को निम्न बिंदुओं की व्याख्या के आधार पर समझा जा सकता है :-

नारी का शैक्षणिक स्तर : शिक्षा ने स्त्री को यह बताया है कि वह हीन, भोग्या या सिर्फ उपयोग में लाई जाने वाली वस्तु नहीं है जिसे जब चाहे जैसे उपयोग में लाया जा सके। शिक्षा नारी के आत्मविश्वास की अभिवृद्धि करती है। मृदुला जी की रचनाओं के अधिकांश नारी पात्र उच्च शिक्षित हैं। इसका एक कारण यह भी है कि लेखिका स्वयं उच्च शिक्षित हैं और उन्होंने अपने जीवनकाल में शिक्षा के क्षेत्र में काफी काम किया है। इसकी स्पष्ट छाप उनकी रचनाओं में परिलक्षित होती है। उनकी 'खरीदार' शीर्षक कहानी की नायिका नीना साधारण शक्ल-सूरत की होते हुए भी शिक्षा की बदौलत ही आई.ए.एस. पदाधिकारी बन पायी है और स्वयं को भोग्या या बिकाऊ माल की स्थिति से उबारकर खरीदार की स्थिती तक ला पाई है। उपचुनाव करने की उसकी बारी है। एक अन्य 'कहानी दुनिया' का कायदा की नायिका रक्षा कॉलेज में लेक्चरर है, शिक्षा उसे अपने बौद्धिक विकास के लिए जरूरी लगती है जबकि कॉलेज में पढ़ाना अपनी सार्थकता।

नारी में आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता : इस संबंध में मृदुला गर्ग लिखती हैं ''भरी सभा में समाज में अथवा घर में निडर होकर स्त्री जब अपनी बात कहती है तो यही स्त्री विमर्श की पहचान होगी....उसकी प्रबुद्ध चेतना ही उसके परिवर्तन का द्योतक होगा।''1 आत्मनिर्भरता ही नारी में आत्मविश्वास जगाती है। उनके उपन्यास 'उसके हिस्से की धूप' की त्रिकोणीय प्रेम संबंध में फंसी नायिका के जीवन में एक ऐसा समय भी आता है कि वह अपने दोनों प्रेमी पात्रों से विलग अपने 'स्व' की चिंता करती है। वह सोचती है कि क्या उसके स्वयं का कोई अस्तित्व नहीं है? अपने 'निज' की तलाश उसके अंदर की स्त्री को उस से मिलवाती है और जीवन मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए मार्ग प्रशस्त करती है। उनकी एक अन्य रचना 'तीन किलो की छोरी' की शारदाबेनगांव में जच्चा-बच्चा केंद्र की सेविका है। वह एक नवजात तीन किलो की छोरी को जो उसके माता-पिता की तीसरी कन्या संतान है और वे उसे स्वीकारने में अपनी अरुचि प्रदर्शित करते है, को देखते हुए स्वयं उसके लालन-पोषण का निर्णय लेती है। शारदाबेन निर्धन जरूर है परंतु वह पैसे कमाने वाली एक आत्मनिर्भर स्त्री है और यही आत्मनिर्भरता उसके अंदर छोटे बच्चे को पाल सकने का आत्मविश्वास जगाती है।

स्वनिर्णय की क्षमता : मृदुला गर्ग ने अपने नारी पात्रों का सृजन करते समय उन्हें निर्भीक, भविष्य में आने वाली समस्याओं से जूझने के लिए मानसिक और शारीरिक तौर पर शक्ति संपन्न और तर्क-वितर्क एवं घात-प्रतिघातों से स्वतंत्र होकर स्वेच्छा से अपने प्रति निर्णय लेने की क्षमता विकसित की है। उनके नारी पात्र स्वयं निर्णय लेने के परिणामस्वरूप आगत दुखों को झेलने की दृढ़ इच्छाशक्ति अपने हृदय में संजोए रखते हैं। उनकी एक चर्चित रचना 'मेरा' की नायिका मीता मातृत्व को झेलती अपने स्त्रीयोचित धर्म का पालन करना चाहती है परन्तु उसकी माँ, पति और अन्य उसके इस नैसर्गिक कर्तव्य में बाधक हैं। वे अपनी-अपनी स्थितियों और मानसिकताओं से घिरे स्वार्थ के वशीभूत होकर उसे गर्भपात कराने के लिए प्रेरित करते हैं। किंकर्तव्य विमूढ़ मीता अंतत: इसके लिए तैयार भी हो जाती है परन्तु जब लेडी डॉक्टर गर्भपात कराने के निर्णय की एक पक्षता का वर्णन करते हुए उसे सूचित करती है कि यह केवल और केवल माता का ही अधिकार है कि वह अपना बच्चा रखें या गिराये, तो मीता के अंदर आत्मविश्वास जगता है। वह आगत समस्याओं का आकलन करती है और अपने भौंचक पति की अवहेलना करते हुए बच्चे को जन्म देने का स्वनिर्णय लेती है। मृदुला जी इसे सकारात्मक चिंतन की संज्ञा देती है।

नैतिक मानदंडो की अवहेलना करती नारी : मृदुला गर्ग के नारी पात्र अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व को बनाए रखने के लिए मूल्यों, मानदंडों, नियमों और आदर्शों को, जो केवल स्त्री के लिए ही बनाए गए हैं, से अपने को अलग करना चाहती है। नैतिक मानदंडो और स्त्री पुरुष संबंधों को बनाए रखने का भार सिर्फ वह ही वहन करना नहीं चाहती है। पुरुषों से भी अपने ही समकक्ष नैतिकता की वह आकांक्षी हैं। परंतु स्थिति विशेष में मृदुला जी के नारी पात्र विवाहेत्तर पर पुरुष संबंधों को सहजता से स्वीकार करती नजर आती हैं। उनकी कहानी 'अवकाश' की नायिका पति के सामने सहजता से इसका उल्लेख करती है-''मैं समीर से प्यार करती हूँ, मुझे तलाक चाहिए।''2 इसी प्रकार 'रुकावट' कहानी की नायिका रीता अपने विवाह पूर्व प्रेमी से दैहिक संबंध रखने से नहीं हिचकिचाती। परंतु यह दोनों नारी पात्र वैवाहिक बंधन में बंधी हैं। वे अपने पति, पुत्र और परिवार के उत्तरदायित्व के प्रति सजग है। अपने यौन सुख के लिए पर पुरुष संबंध को वे अपनी जरूरत समझ निभाती आ रही हैं। ये नारी पात्र अपनी नैतिकता की परिभाषा आप दे रही हैं। इस संबंध में मृदुला जी कहती हैं-''पिछले दो दशकों में इस स्थिति में तब्दीली आनी शुरू हुई है। मैं समझती हूँ कि मेरी पीढ़ी की लेखिकाओं का एक वृहत् योगदान यह रहा है कि उन्होंने स्त्री की इंसानी और सामाजिक गरिमा को व्याख्यायित करके आने वाली पीढ़ी के लिए रास्ता साफ किया है कि वे नए संस्कार बनाने के काम को आगे बढ़ा सकें।"3 अंतत: यह कहना सही होगा कि नारी के लिए नैतिकता का दृष्टिकोण बड़ी तेजी से बदल रहा है जिसको मृदुला जी ने अपनी रचनाओं में समर्थन दिया है।

स्वेच्छापूर्ण जीवन जीने की क्षमता : जब कोई स्त्री प्रतिकार और प्रतिरोध की भाषा को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाती है तो इसका अर्थ यह होता है कि वह अपने अनुसार अपना जीवन जीना चाहती है। लेखिका की एक अन्य रचना 'बीच का मौसम' में इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर मृदुलाजी ने चार सहेलियों के जीवन का वर्णन किया है। नायिका माया एक तलाकशुदा नारी है जो अपनी सहेली क्षिप्रा के पति ओबोम के साथ जुड़ी हुई है। पर ओबोम उसके अलावा और किसी तीसरे के साथ भी जुड़ा हुआ है। माया उम्र के जिस मोड़ पर

है वहाँ उसे पूरक-पुरुषों की जरूरत कम होने लगी है। दिन भर काम करने के बाद शाम दोस्तों, परिचितों के सहारे अथवा अकेले पढ़ते-लिखते भी खुशी से कट जाती है। ओबोम को लेकर वह ज्यादा नहीं सोचना चाहती है। वसंत के छोटे से वक्फे को वह मौसम की तरह जीना चाहती है। लेखिका लिखती है-''दुनिया में कितने लोग हैं देखने करने को, दिलचस्प लोग, दर्शनीय स्थान, अधूरे उद्देश्य। सच पुरुष के साथ कदम मिलाकर चलने के किस्से में बहुत कुछ छूट जाता है जीवन में।"5 यदि हम अपने आस-पास देखें तो जीवन को अपनी शर्तो पर जीने की अभिलाषा पालने वाली अनेकों स्त्रियों को समाज में ढूँढ सकते हैं। उनका कार्यक्षेत्र कुछ भी हो सकता है- राजनैतिक, सामाजिक, पारिवारिक या इससे अन्यतर। वे अपने परिवेश से जो चाहे व्यापार, नौकरी, जीव-जंतु या खेलकूद हो, में ऐसी रम जाती है कि पुरुष पात्रों का उनके जीवन में विशेष महत्व नहीं रह जाता है। वे अगर आते भी हैं तो मित्र यह सहकर्मी के रूप में अधिक।

जिजीविषा से परिपूर्ण नारी : कहा गया है कि ''जिंदगी जिंदादिली का नाम है मुर्दा दिल क्या खाक जिया करते हैं'' इस तथ्य को मृदुला जी ने अपनी 'हरी बिंदी' शीर्षक रचना में दिखाया है। कहानी की नायिका नीना को जीवन में एक दिन ऐसा मिलता है जिसका उपयोग उसकी स्वेच्छा पर निर्भर है। ऐसी परिस्थिति में उसकी प्रसुप्त कामनाएं आकार लेने लगती है। वह पिंजरे से छूटे पंछी की मानिंद सभी बंधनों से मुक्त हो स्वतंत्र उड़ान भरने को आतुर हो उठती हैं। अत: वह अपना इस समय इत्मीनान से सोने, नहाकर तैयार होने, बेमेल हरी बिंदी लगाने और चांदी के बड़े झुमके पहने सैर-सपाटा करने निकल पड़ती है। अपरिचित विदेशी के साथ फ़िल्म देखती, कॉफी पीती और टैक्सी में उसके साथ अपने घर तक आती है। अपने अपरिचित साथी के साथ बिताये सुखकर क्षणों की अनुभूति उसमें हर्ष और विवाद के सम्मिलित भाव उत्पन्न करती है। ऐसे नारी पात्र अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व, जो दूसरों से कुछ अलग और आकर्षक हों, के प्रति सचेष्ट रहती हैं।

आधुनिक परिवेश के अनुकूल नारी : मृदुला जी ने अपनी रचनाओं में आधुनिक जीवन शैली को अपनाती नारी पात्रों का वर्णन किया है। ऐसे नारी पात्र उन्मुक्त जीवन जीते अपने माहौल को अपनाते जाते हैं। वे रूढ़िवादिता और दकियानूसी पारंपरिक संस्कारों से खुद को अलग करते जाते हैं और आधुनिक बनने की चाह में मर्यादा का उल्लंघन करते जाते हैं। 'कितनी कैदें' कहानी की नायिका मीना ऐसी ही एक नारी है जो अपने विगत जीवन में एक साधारण सी घरेलू लड़की थी। परन्तु कॉलेज में बिताए समय में उसका संबंध मौज-मस्ती करने वाले एक ग्रुप से हो जाता है। वह मॉडर्न बनने के प्रयास में अपना पहनावा बदलती है, तौर-तरीकों में भी बदलाव लाती है और अंतत: सिगरेट से शुरू होकर ड्रग तक जा पहुंचती है। उसकी पराकाष्ठा उसके सामूहिक बलात्कार और उससे उत्पन्न पारिवारिक बंदिशों और यातनाओं में होती है। मृदुला जी की कुछ अन्य कहानियाँ जैसे - 'रुकावट' और 'अवकाश' के नारी पात्र भी आधुनिक सोच से जुड़े हैं। वे व्यवस्थित परिवार से जुड़े होकर भी अपनी इच्छा पूर्ति के लिए पर पुरुषों से संबंध बनाए रखती हैं और इस स्थिति को सहजता से स्वीकार भी करती हैं। ऐसे नारी पात्र यौन-संबंधों में अपनी संलिप्तता पुरुष के समकक्ष मानती हैं। मृदुला जी ऐसी स्त्रियों को अत्यंत महत्वाकांक्षी मानती हैं।

विद्रोही नारी : मृदुला जी ने अपनी रचनाओं में विद्रोही नारियों को दो वर्गो में रखा है। एक वर्ग सस्वर अपने प्रति किए गए अनाचार, शोषण और अपमान का विरोध करता नजर आता है

जबकि दूसरा वर्ग पूर्णरूपेण अंतर्मुखी हो जाता है। ऐसी स्थिति में केवल उसकी भाव-भगिमाएं ही उसके विरोध को अभिव्यक्त करती हैं। अपनी कहानी 'दुनिया का कायदा' में रक्षा के माध्यम से सामाजिक कुप्रथाओं पर लेखिका ने सस्वर कुठाराघात किया है। अपनी जेठानी की मृत्यु पर रक्षा दुख के प्रदर्शन का अतिरंजित और उपहासात्मक दृश्य देखती है। उस दृश्य की पृष्ठभूमि में ही अपने जेठ के पुनर्विवाह की योजना बनते भी देखती है। जेठानी के लड़के का भार किसी को न लेते देख वह इसका प्रतिवाद करती है और जिम्मेवारियों के निर्वहन का विचार प्रकट करती है। इसी कहानी में अपने विवाह के उपरांत अपने पति सुनील द्वारा अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए पत्नी के प्रयोग का वह प्रतिकार करती है। इसके विपरीत मृदुला जी की एक अन्य रचना 'वितृष्णा' में नायिका शालिनी अपने पति दिनेश द्वारा लंबे समय से उपेक्षित रहने के कारण अंतर्मुखी हो जाती है। संप्रेषण के अभाव में और भावनात्मक स्तर पर न जुड़ पाने के कारण पति के प्रति वह पूर्णरूपेण संवेदनहीन हो जाती है। उसके मन में पति के प्रति वितृष्णा भरी हुई है जिसे वह अपने व्यवहार और भाव-भंगिमा से निशब्द निरंतर व्यक्त करती रहती है। शालिनी के इस मौन यंत्रवत रूप में उसकी उपेक्षाओं का बदला लेने की प्रवृत्ति दिनेश के लिए जानलेवा बन जाती है । हताश दिनेश कहना चाहता है -"अब जो कुछ कहना है हमें एक-दूसरे से ही कहना है। इस तरह चुप्पी साधे रहने से जिंदगी कैसे चलेगी? वह सोचता है वह चीखे...उसके कंधे दबोच लेगा और तब तक उसके बदन को झटके देता रहेगा जब तक वह चीख न पड़े।"5 इस प्रकार मृदुला जी नारी मन के इस रूप को उसके अस्तित्व के हनन और उसके प्रति किए गए अत्याचार के प्रतिकार के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

मातृत्व सुख पाने की चाह : नारी जीवन की पराकाष्ठा उसके माँ बनने में है। माँ शब्द उसे पूर्णता प्रदान करता है और पारिवारिक-सामाजिक स्तर पर प्रतिष्ठित करता है। इस लालसा को सभी स्त्रियों अपने जीवनकाल में फलीभूत होते देखना चाहती हैं। 'एक चीख का इंतजार' में भाभी अपनी देवरानी के प्रसव वेदना के क्षणों में उसके पास निरंतर बनी रहती है। वह उसे बार-बार सांत्वना भी देती रहती है। बच्चा जनते समय जच्चा की चीख का उसे इंतजार है। लेबर रूम में देवरानी को ले जाये जाने के बाद प्रत्येक क्षण उसे भारी लगता है और वह अत्यधिक तनाव से घिर जाती है। मृदुला जी ने भाभी के रूप में एक ऐसी नारी पात्र का सृजन किया है जो अपनी देवरानी के प्रसव में अपना मातृत्व तलाशती नजर आती है।

नारी अधिकारों के प्रति जागरूकता : स्त्रियों के अधिकार क्षेत्र असीमित है। ये पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, कानूनी, शैक्षिक, राजनैतिक और इससे अन्य दर भी हो सकते हैं। ये अधिकार स्त्री को उसके दोयम दर्जे वाली मानसिकता से उबारकर समाज में उसके 'स्व' को प्रतिष्ठित करने में सहायक होते हैं। मृदुला जी के नारी पात्र इन अधिकारों की प्राप्ति के लिए सजग दिख पड़तें हैं। डॉ. भीमराव अंबेडकर का कथन है-"भारतीय समाज व्यवस्था में स्त्री दलितों में भी दलित है। इस व्यवस्था ने न केवल उसकी अस्मिता को नकारा है अपितु उसे हमेशा दोयम दर्जा दिया है। ज्ञानक्षेत्र से लेकर धर्मक्षेत्र तक उसका प्रवेश वर्जित था। हजारों वर्षो से यह स्त्री उपेक्षिता जीवन जी रही थी।"डॉ. अंबेडकर के कथन के अनुरूप समाज में चली आ रही व्यवस्था के विरोध को मृदुला जी ने अपनी-अपनी नारी पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है। वह चाहे एक कुशल प्रशासनिक अधिकारी के रूप में 'खरीदार' की नीना हो या एक लेक्चरर के

रूप में 'दुनिया का कायदा' की रक्षा हो। मृदुला जी का इस संबंध में अपना कथन है–''इस सांस्कृतिक, सामाजिक परिवेश में, राजनीतिक सत्ता में स्त्री की हिस्सेदारी बहुत महत्वपूर्ण हो उठती है। जब कुछ स्त्रियाँ स्थानीय राज्य सत्ता का प्रतिनिधित्व करने वाली ग्राम पंचायत की सदस्य बनीं तो उसके मन में अपनी दृष्टि को लेकर परिवर्तन आया। उन्हें महसूस हुआ कि वे महती महत्वपूर्ण निर्णय ले सकती हैं। पुरुषों के वर्चस्व और स्त्रियों को नामचारे के लिए सदस्य बनाए जाने के प्रसंगों के बावजूद आंशिक रूप से ही सही, स्त्री निर्णायक शक्ति बनी। राज्य सत्ता में भागीदारी के लिए शुरू में स्त्री को आरक्षण की आवश्यकता पड़ सकती है।''7 समाज में अपने अधिकारों की प्राप्ति और उनके संरक्षण के प्रति नारी की कटिबद्धता उसकी प्रतिष्ठा का मानदंड हैं। यह निश्चित करता है कि नारी की वर्तमान स्थिति क्या है? अतः महिलायें अपने अधिकारों के प्रति जितनी सचेष्ट और मुखर होंगी वे उतना ही अग्रसर हो पायेंगी।

इस प्रकार हम देख पाते हैं कि भारतीय नारी के स्वरूप को मृदुला गर्ग जी ने अपनी रचनाओं में विविधता प्रदान की है। उनकी नारियां अपने अधिकारों के प्रति सजग और बड़े आत्मविश्वास के साथ निरंतर अग्रसर है। इनमें संवेदनाएं भरी हुई है। परन्तु ना ये लाचार है और ना उनमें बेचारी हैं। इनमें से कुछ नारियां दाम्पत्य तनाव को झेलती नजर आती हैं परंतु वे सभी परिस्थितियों में समझौता नहीं करतीं। उनका स्वाभिमान और अस्मिता ही उनके लिए सबकुछ है। वे इसकी बलि देकर सुरक्षित जीवन जीना भी नहीं चाहती। अब भारतीय नारी अपनी पहचान खुद बनाने के लिए कटिबद्ध हैं। वे अपने व्यक्तित्व को इतना उठा चुकी हैं कि उसे दबाना संभव नहीं है। अब अपराधबोध उन्हें नहीं ग्रसता। परिवार के दायित्व की पूर्ति के लिए वे पुरुषों के सहयोग की आकांक्षी हैं। उन्होंने अनावश्यक तनाव से बचते हुए सहज रूप से जीवन जीने की कला सीख ली है। ऐसी स्त्रियाँ आपदापूर्ण मार्ग पर भी चलने में संकोच नहीं करती। मृदुला जी ने अपनी रचनाओं में चित्रित नारी को स्वस्थ, दर्पयुक्त, आत्मविश्वासी, जीवन को सार्थक करनेवाली, आत्मनिर्भर, अपनी विशिष्ट पहचान बनानेवाली, दबंग, सामाजिक दायित्व निभाने वाली और उसके लिए हर चुनौती स्वीकारने का साहस रखने वाली स्त्री के रूप में दिखाया है। यह स्त्री सहारा नहीं ढूंढती बल्कि औरों को सहारा देनेवाली हैं। अब वह सुंदर, स्वच्छ विचारों वाली विवेकशील, सफलताओं-दुर्बलताओं से युक्त मानवीय स्त्री है। यह मृदुला जी के भारतीय नारी के संदर्भ में व्यापक दृष्टिकोण को इंगित करता है।

संदर्भ :

1. चूकते नहीं सवाल, मृदुला गर्ग, पृ. 73
2. चर्चित कहानियाँ, अवकाश, मृदुला गर्ग, पृ.10
3. समागम, मृदुला गर्ग, पृ. 32-133
4. चर्चित कहानियाँ, डैफोडिल जल रहे हैं, मृदुला गर्ग, पृ. 97
5. समागम, बीच का मौसम, मृदुला गर्ग, पृ. 108
6. चर्चित कहानियाँ, वीतृष्णा, मृदुला गर्ग, पृ. 134-135
7. चूकते नहीं सवाल, मृदुला गर्ग, पृ. 71

❏❏❏

शोधार्थी, हिंदी विभाग, कोल्हान विश्वविद्यालय, चाईबासा, झारखण्ड-833201.

स्वानुभूति का साहित्य : दलित साहित्य

—डॉ. पोर्शिया सरकार

दलित विमर्श एक ऐसा विमर्श है जिसने सम्पूर्ण भारतीय समाज और साहित्य में एक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया है। जिसके मूल में अस्मिता मूलक जनक्रांति है। 1997 में हंस पत्रिका में धारावाहिक रूप में प्रकाशित ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' ने साहित्य में दलितों के जीवन से जुड़ी कड़वी सच्चाई को दुनिया के सामने प्रकट किया था। यही से दलित साहित्य विमर्श का मुद्दा बना। इस संदर्भ में अगर हम दलित लेखन की बात करें तो हमें पता चलेगा कि सम्पूर्ण हिंदी साहित्य में इस वर्ग की पीड़ा और दु:ख का उल्लेख होना कोई नया विषय नहीं है। इससे पहले भी हिंदी साहित्य में दलित सम्वेदनाओं को थोड़ी बहुत मात्रा में देखा जा सकता है। पर दलित वर्ग के दु:ख और पीड़ा की तुलना में यह कुछ भी नहीं है। बौद्ध काल से ही इस वर्ग की उपस्थिति साहित्य में रही। वैसे इसका इतिहास काफी पुराना है। 13वीं शताब्दी में संतों की वाणी में इसे महसूस किया जा सकता है। जिनके विचारों पर सिद्धों, नाथों एवं योगियों का प्रभाव था। जिन्होंने अपनी निर्गुण वाणियों में सामाजिक असमानता, जाति-पाति, ऊँचनीच, भेदभाव, कर्मकाण्ड, कुरीतियाँ एवं ब्राह्मणवाद के शोषणपूर्ण रवैए पर चोट करते हुए उनका विरोध किया और समानता, भाईचारा और सद्भावना पर जोर दिया। दलित संतो के इस युग को एक प्रकार से आध्यात्मिक क्रांति का युग मानना चाहिए। इस युग में प्राचीन समय से चली आ रही अध्यात्मिक चेतना एवं मूल्य का विरोध किया गया जो मनुष्य-मनुष्य से भेद को स्वीकारता था। उन संतो का एक मात्र लक्ष्य था सभी को समता का अधिकार प्राप्त हो। इस श्रृंखला में महाराष्ट्र के संत नामदेव, संत एकनाथ, संत तुकाराम, दादू पलटदास, सुन्दरदास, रज्जब आदि संतों ने सरल वाणी में मूर्तिपूजन, अवतारवाद, धार्मिक ढकोसलों, धार्मिक कट्टरवादों का खुलकर विरोध किया।

महात्मा फुले और अम्बेडकर का मानना है कि शिक्षा व ज्ञान के अभाव के कारण ही दलितों को इतना दु:ख झेलना पड़ा एवं उनकी स्थिति इतनी दयनीय हो गई। आज दलित लेखन पर्याप्त मात्रा में हो रहा है। जिसने मानो एक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया है। आज का युग एवं साहित्य सही माइने में नवजागरण का युग एवं साहित्य है। दम तोड़ती मानवता आज फिर से जीवित होने का अनुभव कर रही है।

रैदास के काव्य में समता के सौंदर्य को इस रूप में देखा जा सकता है–

''रविदास ब्राह्मण मति पूजिए, जउ होवै गुणहीन। पूजिहिं चरन चंडाल के, जउ होवै गुन प्रवीण॥[1]

आधुनिक युग के हिंदी साहित्यकारों में प्रेमचंद, निराला, दिनकर, अज्ञेय एवं यशपाल के साहित्य में भी दलित सम्वेदनाओं की अभिव्यक्ति मिलती है। कुछ साहित्यकार एवं आलोचक हिंदी में दलित साहिय का आरम्भ 1914 में 'सरस्वती पत्रिका' के सितम्बर अंक में प्रकाशित हीरा डोम की कविता 'अछूत की शिकायत' से मानते हैं। इस कविता में एक दलित आत्मा की गहन पीड़ा और दु:ख को महसूस किया जा सकता है। जिसमें तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक विसंगतियों एवं विद्रूपताओं का बड़ा ही मर्मस्पर्शी चित्रण है–

''हमनी के राति दिन दुखवा भोगत बानी, हमनी के सहेब से मिनती सुनाइबि।
हमनी के दुख भगवानओं न देखता ते, हमनी के कबले कलेसवा उठाइबि।''[2]

सुप्रसिद्ध दलित साहित्यकार शरणकुमार लिंबाले ने इस कविता के विषय में कहा है कि इसे दलित सोच की वर्तमान धारा की पहली रचना कहा जा सकता है चूँकि इसमें केवल दलितों की शिकायत या व्यथा ही दर्ज नहीं की गई बल्कि आक्रोश और विरोध भी जताया गया है। दलित शब्द का शाब्दिक अर्थ है जिसका दलन या दमन हुआ है। विभिन्न विचारकों एवं विद्वानों ने दलित शब्द को अपने ढंग से परिभाषित किया है। 'दलित' शब्द भारतीय समाज में एक खास वर्ग के लिए प्रयुक्त होता है जिसका अर्थ हिंदी शब्दकोश में ''मसला, रौंदा या कुचला''[3] हुआ बताया गया है। हमारा भारतीय समाज विभिन्न जातियो में विभाजित होने के कारण कुछ जातियों का सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक शोषण कर उन्हें समाज की मुख्य धारा से हमेशा के लिए अलग कर दिया गया। जिसका फल वे आज तक भोग रहे हैं। दलित विचारक कँवल भारती ने दलित शब्द को इन शब्दों में परिभाषित किया है–''दलित वह है जिस पर अस्पृश्यता का नियम लागू किया गया है। जिसे कठोर और गंदे कार्य करने के लिए बाध्य किया गया है। जिसे शिक्षा ग्रहण करने और स्वतंत्र व्यवसाय करने से मना किया गया और जिस पर सछूतों ने सामाजिक निर्योग्ताओं की संहिता लागू की, वही और वही दलित है।''[4] डॉ. एनी बीसेंट ने दलित एवं शोषित के लिए 'डिप्रेस्ड' शब्द का प्रयोग किया था। दलित पैंथर्स के घोषनापत्र में ''बौद्ध, अनुसूचित जाति, कामगर, भूमिहीन मजदूर, गरीब, किसान, खनाबदोश जाति एवं नारी समाज को दलित कहा गया। मानव समाज का हर उस व्यक्ति को दलित माना गया जिसका किसी प्रकार से शोषण या दलन हुआ है। वह वर्ग भी दलित की श्रेणी में आते है जिसका सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं मानवीय अधिकारों का हनन हुआ है या जिस पर किसी भी प्रकार का अन्याय हुआ है।''[5] दलित उद्धार को अपने जीवन का उद्देश्य मानने वाले डॉ. अम्बेडकर का मूलमंत्र ही है–'शिक्षित बनो, संगठित हो, संघर्ष करो'। जिन्होंने रही रूप में दलितों में एक वैचारिक क्रांति ला दी और जिन्होंने इनमें समता और बराबरी के भाव को जगाया और दलित संघर्ष को तेज किया। साधारण शब्दों में दलितों द्वारा अपने जीवन और अपनी समस्याओं को केंद्र में रखकर साहित्य में उसे प्रस्तुत करना दलित साहित्य कहलाता है। उत्तर आधुनिकतावाद के इस युग में अन्य विमर्शों में दलित विमर्श ने काफी जोर पकड़ा है। दलित साहित्य आज एक ऐसा विमर्श बन चुका है जिसका अध्ययन किए बिना आज हिंदी साहित्य को पढ़ना और समझना कठिन है। सबसे पहले महाराष्ट्र के लेखकों ने दलित लेखन की शुरूआत की तत्पश्चात सम्पर्ण

भारतीय भाषाओं में दलित लेखकों ने अपनी आवाज बुलंद की। इस समाज ने कुलीन वर्ग और उच्च जातियों द्वारा जिस पीड़ा, शोषण और अपमान का जीवन जिया है एवं जी रहे हैं। उसका अंदाजा लगाना कठिन है। लोकतंत्र में जहाँ हर नागरिक को समानता का अधिकार, अवसर, न्याय एवं स्वतंत्रता का अधिकार प्राप्त है। परंतु फिर भी दलित एवं तथाकथित निम्न जाति एवं वर्णों में उत्पन्न लोगों पर आज भी अमानवीय व्यवहार किया जाता है। मार्क्सवाद जिस शोषण की बात करते हैं। भारतीय दलित समाज उसी अर्थ में प्रताड़ित है। आजादी के बाद दलित साहित्य लिखने वाले चर्चित रचनाकारों में मार्कण्डेय, अमरकांत, राजेन्द्र यादव, नैमिशराय, ओमप्रकाश वाल्मीकि, पुन्नी सिंह, प्रेम कपाड़िया, डॉ. दयानंद बटोही, डॉ. तेज सिंह, बाबूलाल खंडा, रामचंद आदि हैं। महिला रचनाकारों में उषा चंद्रा, रमणिका गुप्ता, रजत रानी 'मीनू' मैत्रेयी पुष्पा, सुभद्रकुमारी आदि शामिल है। दलित पीड़ा और ग्लानि को दलित साहित्यकारों ने अपनी आत्मकथा, कविता, कहानी और उपन्यास आदि विधाओं में व्यक्त किया। सदियों से अपने अंतस में छिपी गहरी पीड़ा, तड़प, कुण्ठा, खीज, ग्लानि, अपमान बोध को कागजों पर उतारने का साहस करना किसी आन्दोलन से कम नहीं है। इस परिप्रेक्ष्य में कुछ महत्त्वपूर्ण दलित रचनाएँ जैसे ओम प्रकाश वाल्मीकि का 'जूठन' (आत्मकथा), पच्चीस चौका डेढ़ सौ (कहानी), 'ठाकुर का कुआं' (कविता), तुलसी राम का 'मुर्दहिया' (आत्मकथा), मोहनदास नैमिशराय का 'अपना गाँव' (कहानी), मलखान सिंह की 'सुनो ब्राह्मण' (कविता), जयप्रकाश कर्दम का 'नो बार' (कहानी), असंगघोष का 'मैं दूंगा माकूल जवाब' (कविता), कौशल्या वैसन्त्री का 'दोहरा अभिशाप' (आत्मकथा), सुशीला टाकभौरे का 'शिकंजे का दर्द' (आत्मकथा) आदि हैं। इनके लेखन में हजारों साल के उत्पीड़न के आक्रोश की झलक है। अपने शरीर और जीवन को अस्पृश्य और अपवित्र मानने के लिए मजबूर करना किसी अभिशाप से कम नहीं है। सैकड़ों साल से अपने निवास स्थान को अपना न कह पाने का दर्द, भारतीय नागरिकता न प्राप्त करने की यंत्रणा, निजि सम्पत्ति का दस्तावेज का न होना कितनी पीड़ादायक है उसे बता पाना कठिन है। उदाहरण के तौर पर-''चूल्हा मिट्टी का/मिट्टी तालाब की/तालाब ठाकुर का'' पंक्तियों में भाषा की सरलता और अर्थ की गंभीरता किसी भी हृदय को भेद कर सकता है। सदियों से साहित्य को सम्वेदना और सहानुभूति से उत्पन्न माना जाता रहा है। भीख पर मिली सम्वेदना और सहानुभूति को यह वर्ग अब घृणा करता है। जातीय दंश से जर्जरित हाशिए पर रखा गया यह समाज अब अपना जीवन, अपना साहित्य और अपना इतिहास खुद रचने के लिए तैयार खड़ा है। अब उसे किसी की सहानुभूति की आवश्यकता नहीं है। अब उसे भाग्य के सहारे जीना कतई स्वीकार नहीं है। बौद्ध दर्शन का एक कर्म सिद्धांत सूत्र वाक्य ''अप्प दीपो भव:'' अर्थात अपना प्रकाश स्वयं बनो का मंत्र आज हर दलित आत्मा का मूल मंत्र बन चुका है। अब वह जान चुका है समाज को बदलने के लिए पहले साहित्य की शक्ति के द्वारा इंकलाव लाना होगा।

किसी भी देश का साहित्य उसके इतिहास में घटनेवाली सारी गतिविधियों, संघर्षों एवं क्रांतियों की गवाह है। परंतु इस बात में कितनी सच्चाई है यह गवेषणा का विषय है। ऐसा माना जाता है कि साहित्यकार एक संवेदनशील प्राणी होता है वह अपने आस-पास जो भी कुछ अनुभव करता है उसे वह अपने शब्दो में व्यक्त करता चला जाता है। आचार्य शुक्ल के अनुसार ''जब कि

प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है, तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है। आदि से अंत तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परम्परा को परखते हुए साहित्य परम्परा के साथ उसका सामंजस्य दिखाना ही। 'साहित्य का इतिहास' कहलाता है।''[6] प्रेमचंद ने साहित्य को जीवन की आलोचना माना है। परंतु क्या समाज की सारी सच्चाई हमारे साहित्य में प्रतिध्वनित होती है। समाज में हरेक पल बहुत कुछ ऐसा घटता चला जाता है जिसे घटित नहीं होना चाहिए पर वह घटता जाता है। परंतु जिसका विरोध भी करनेवाला कोई नहीं होता है। और धीरे-धीरे वह समाज व्यवस्था का हिस्सा बन जाता है। इस तरह जीवन का कलुषित पक्ष धीरे-धीरे और कलुषित होता चला जाता है। यहाँ से कई कुप्रथाओं एवं मान्यताओं का जन्म होने लगता है। पर क्या वास्तव में हमारी समाज व्यवस्था में जो कुछ घट रहा होता है उसका प्रतिबिम्ब साहित्य में पड़ता है। सदियों से हमारा भारतीय दलित समाज नाना सामाजिक कुरीतियों, जातिवाद और धार्मिक कट्टरवाद का शिकार होकर दम तोड़ रहा है परंतु उसका सही माइने में विरोध पहले कभी दिखाई नहीं दिया। दलितों के मसीहा डॉ. अम्बेडकर की प्रेरणा से कुछ दलित लेखकों ने अपने दु:खों एवं आपबीती को शब्दों में लिपिबद्ध करने की चेष्टा की। जिससे प्रेरित होकर सैकड़ों दलित भाईयों ने अपने अधिकारों की रक्षा की गुहार लगाई। सही माइने में इस आन्दोलन को नवजागरण और वैचारिक जागरण का सच्चा रूप मानना चाहिए। अपने अधिकारों के लिए संघर्ष का दूसरा नाम ही दलित साहित्य है। परंतु हिंदी के तमाम आलोचकों को यह साहित्य महत्त्वहीन, कलाविहीन एवं अप्रासंगिक लगता है। बहुत लोगों का इस बात में मतभेद है कि आखिर दलित साहित्य किसे मानना चाहिए। दलित साहित्य के विषय में आलोचकों के दो मत हैं। एक वर्ग दलितों पर लिखा गया साहित्य को दलित साहित्य मानते हैं। चाहे उसका लेखक किसी भी वर्ण का क्यों न हो। इसके विपरीत दूसरा वर्ग दलित लेखकों द्वारा दलितों के लिए लिखा गया साहित्य को ही दलित साहित्य की श्रेणी में रखते हैं। प्रेम कुमार मणि का मानना है कि-''दलितों द्वारा दलितों के लिए लिखा जा रहा साहित्य दलित-साहित्य है।''[7] दलित साहित्य के विषय में मोहनदास नैमिशराय का कथन यहाँ दृष्टव्य है-''दलित साहित्य पीड़ा, वेदना, मुक्ति का ही साहित्य नहीं बल्कि अपने अधिकारों, अस्मिता और पहचान के लिए संघर्ष करने वालों का भी साहित्य है।''[8] जिसमें उन्होंने इस साहित्य का एक मात्र उद्देश्य अस्मिता की पहचान माना है जिसे स्वाभिमान से ही हासिल किया जा सकता है। अपने न्यायपूर्ण अधिकार हक की लडाई से ही मिल सकता है। कलम और कागज इसका सशक्त माध्यम है। वरिष्ठ साहित्यकार ओम प्रकाश वाल्मीकि का मानना है-''दलित साहित्य जन साहित्य है, यानी मास लिटरेचर (mass literature) सिर्फ इतना ही नहीं लिटरेचर ऑफ एक्शन (literature of Action) भी है जो मानवीय मूल्यों की भूमिका पर सामंती मानसिकता के विरुद्ध आक्रोश जनित संघर्ष है। इसी संघर्ष और विद्रोह से उपजा है दलित साहित्य।''[9] डॉ. रामचंद्र का मानना है कि ''एक ऐसी परिघटना जिसने साहित्य के माइने और मानदंडों को रूपायित और अर्थातरित कर दिया है।''[10] आगे उन्होंने इसे सामाजिक और राजनैतिक आन्दोलन के बराबर चलनेवाला एक राष्ट्रीय आन्दोलन माना है। इसमें अभिव्यक्त वेदना एवं चेतना ने भाषा और क्षेत्र की दीवारों को तोड़ दिया है। इस आंदोलन को विश्व बंधुता और स्वतंत्रता की नई संस्कृति का बीजारोपण माना है।

साहित्य का सृजन अनेक प्रकार से होता है परंतु सबसे अधिक भावात्मकता एवं सम्वेदनात्मकता का साहित्य स्वानुभूति से उत्पन्न साहित्य ही है। दलित साहित्य के परिप्रेक्ष्य में अगर समग्र भारतीय साहित्य को देखें तो हम पाएँगे कि बहुत लम्बे समय तक एक बहुत बड़ा वर्ग शोषण, अमानवीयता और नारकीय अंधकार में दम तोड़ रहा था। जिनकी दु:ख और पीड़ा को सुननेवाला कोई नहीं था। सदियों से यह वर्ग गुमनामी के अंधरों में भटक रहा था। ये लोगे क्या खाते हैं? कहाँ रहते हैं? किस तरह का जीवन जीते हैं? क्या सोचते हैं? उनकी इच्छाएँ कौन सी है? आदी बातों को बाहर की दुनिया न के बराबर जानती है। भारतीय वर्ण व्यवस्था जो कि प्रारम्भ में कर्म पर आधारित थी। पहले कर्म से ही व्यक्ति की जाति की पहचान होती थी बाद में उसके जन्म से उसकी जाति की पहचान होने लगी। अब जाति व्यक्ति से हमेशा के लिए चिपक गई। कालांतर में उसी जाति के आधार पर उसे ब्राह्मण या शूद्र और जिन्हें अस्पृश्य और अछूत माना जाने लगा और उन्हें वेद पाठ एवं अन्य ज्ञान की प्राप्ति से सर्वदा वंचित रखा गया। अपने वर्चस्व को बचाए रखने के लिए यह उच्चवर्णों का एक प्रकार से षड़यंत्र था। ताकि ज्ञान के प्रकाश से यह वर्ग कभी आलोकित न हो पाए और ऐसा ही हुआ पीढ़ी दर पीढ़ी यह वर्ग शोषित, पीड़ित और अवहेलित होता चला गया। इस सम्बंध में अनेक बातों का अध्ययन किया जा सकता है। परंतु जातिवाद में पिसनेवाली असंख्य जीवन की तड़प, दु:ख, ग्लानि, अपमानबोध को शायद ही पूरी तरह महसूस किया जा सकता हैं? मूलत: भारतीय वर्ण व्यवस्था ने हमारे समाज को जिन जातियों में विभाजित किया है। वह असमानता, शोषण और वर्चस्व पर आधारित है। भारत का दलित समाज चिरकाल से शोषित एवं पीड़ित है। भारतीय प्राचीन समाज में दलित वर्ग को हर प्रकार के अधिकारों से वंचित रखा जाता था। उनके पास न पेट भरने को भोजन था, न रहने के लिए कोई अच्छी जगह और न पीने को पानी। मनुष्य होने का सम्मान भी उन्हें प्राप्त नहीं था। उनके बच्चों को शिक्षा का अधिकार न था। उन्हें किसी से मिलने जुलने का अधिकार न था और उनके आवास भी गाँव से बाहर गंदी बस्तियो में होता था। उनकी सामाजिक स्थिति की ओर इंगित करते हुए एस. सी दुबे ने लिखा है–''समाज में इनको हर वक्त अपमानित किया जाता था यदि कोई इन्हें छू जाता तो उसे कपड़े समेत स्नान करना पड़ता था। यहाँ तक कि अछूत जाति के लोगों को अपना घर, सवर्णों के घर से दूर बनाने का निर्देश था तथा मंदिर और गाँव की निश्चित सीमा के अंदर प्रवेश करने का अधिकार नहीं था।''[11]

कुलीन समाज ने सदियों से इन्हें पहचान नहीं दी और इनकी आवाज भी अनसुनी कर दी गई। जिनकी शक्ल भर देखने पर जिनका दिन खराब हो जाता था। परंतु इनके घर, आँगन और खेतों का काम इनके बगैर नहीं चलता था। यह कैसी विडम्बना है कि आज भी अधिकांश भारतीय गाँवों और कसबों की यही कहानी है। आजादी के 60 साल बाद भी आज हमारी 90 प्रतिशत आबादी को यह जानकारी ही नहीं है कि दलित और अस्पृश्य कहलाने वाले इन लोगों के परिश्रम और त्याग के कारण ही हम सड़कों, स्टेशनों, पार्कों को साफ सुथरा तरीकों से उपभोग करते हैं। उनके कारण ही हम सही रूप से साँस लेते हैं। वर्ना हमारा जीवन दुर्भर हो जाता।

आधुनिक दलित साहित्य को एक प्रकार से नवजागरण से अनुप्रेरित साहित्य मानना चाहिए। हिंदी के इस नवजागरित युग को एक प्रकार से इन विमर्शों से ही उत्पन्न स्वानुभूति का साहित्य मानना चाहिए। दलित विमर्श आज के युग का एक ज्वलंत मुद्दा है। वास्तव में

सदियों से जिन शक्तियों को अछूत एवं अस्पृश्य कहकर दबाया गया है और जा रहा है वास्तव में यही भविष्य की शक्तियाँ है। आज सम्पूर्ण भारतीय साहित्य में दलित साहित्य पढ़ा एवं लिखा जा रहा है। इसके पीछे महान विचारकों, चिंतकों एवं सच्चे समाज सुधारकों का हाथ हैं। जिसमें दलित संत ज्योतिबा फुले, स्वामी अछूतानंद हरिहर एवं बाबा अम्बेडकर आदि शामिल है। जिनके अथक परिश्रम, संघर्ष एवं मागदर्शन ने दलित नामक जिस शक्ति को आठवे दशक में पहली बार महाराष्ट्र में प्रकट होने और फलने-फूलने का अवसर प्रदान किया उसका आज समग्र भारतवर्ष में इतना प्रचार-प्रसार हो चुका है कि आज हर पिछड़ा व शोषित को बोलने का हक मिल गया है। हर वह व्यक्ति जो कि अपने आप को बाकी दुनिया से अलग रखने के लिए मजबूर था, आज अपनी सम्वेदनाओं को दूसरों तक बिना किसी डर के प्रकट कर रहा है। जिस अमानवीयता को ये जातियाँ सदियों से झेल रही थी। उसका अब वे डटकर विरोध कर रहे हैं। वे विचारक एवं मनीषियाँ जिन्होंने इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया उनका समग्र मानव जाति आभार प्रकट करती हैं। महात्मा फुले और बाबा अम्बेडकर का मानना है कि शिक्षा व ज्ञान के अभाव के कारण ही दलितों को इतना दु:ख झेलना पड़ा एवं उनकी स्थिति इतनी दयनीय हो गई। आज दलित लेखन पर्याप्त मात्रा में हो रहा है। जिसने मानो एक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया है। आज का युग एवं साहित्य सही माइने में नवजागरण का युग एवं साहित्य है। दम तोड़ती मानवता आज फिर से जीवित होने का अनुभव कर रही है।

संदर्भ सूची :

1. सुभाषचंद्र : संत रविदास, आधार प्रकाशन, पंचकूला, (हरियाणा) 2012, पृष्ठ-157
2. हिरा डोम अछूत की शिकायत, https://hindisamaym.com
3. वर्मा, रामचंद्र, प्रमाणिक हिंदी कोश लोक भारती प्रकशन, नई दिल्ली, 1997, पृष्ठ-391
4. वाल्मीकि ओमप्रकाश, दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृष्ठ संख्या-11
5. हिंदी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल) दलित विमर्श विकिपुस्तक hi.m.wikibooks.org
6. शुक्ल रामचंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, लोक भारती प्रकाशन, तृतीय संस्करण 2010, पृष्ठ संख्या-(काल विभाग)
7. प्रतियोगिता दर्पण, नवम्बर 2005
8. नैमिशराय मोहनदास, हिंदी दलित साहित्य, साहित्य एकेडेमी प्रकाशक, 2018, पृष्ठ संख्या-13
9. वाल्मीकि ओमप्रकाश, दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृष्ठ संख्या-15
10. डॉ. रामचंद्र, दलित साहित्य : आशय, आन्दोलन और अवधरणा, http.//w.w.w. igntu.ac.in
11. Dube Shyama Charan, Indian Society, National Book Trust Publisher, 1990 Page. 57

❐❐❐

सहायक प्राध्यापिका, हिंदी विभाग, निस्तारिणी कॉलेज पुरुलिया, पश्चिम बंगाल

पता-हाईलैंड गार्डन, टावर-III, G-6 , देशबंधु रोड, पुरुलिया, पश्चिम बंगाल-723101

मोबाइल : 9832153804, 8250202978 ई-मेल : portiasarkar1@gmail.com

ओमप्रकाश वाल्मीकि के साहित्य में दलित चेतना

—जीभवानी कुमार रजक
—डॉ. रत्नेश विश्वक्सेन

ओमप्रकाश वाल्मीकि एक ऐसा नाम है, जिसने अपनी रचनाओं के माध्यम से कुलीनता और कुलीन संस्कृति के मूल्यों का निर्माण किया है। उन्होंने साहित्य की सदियों पुरानी जड़ता को तोड़ दिया और समाज की तरह उपेक्षित दलितों को साहित्य के केंद्र में लाकर साहित्य के दायरे से बाहर लाये। ओमप्रकाश वाल्मीकि की बातें और लेखन बुद्ध, ज्योतिबा फुले, सावित्री बाई फुले और बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर के दर्शन में निहित हैं, वहीं दूसरी ओर उनकी रचनाओं में मध्यकालीन संत कवियों कबीर और रैदास (रविदास) का अदम्य साहस भी है।

हिन्दी दलित साहित्य के विकास में ओमप्रकाश वाल्मीकि का योगदान अतुलनीय है। प्रारम्भिक दौर में उनकी अभिव्यक्ति का माध्यम कविता रही है। एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में सक्रिय रहने के साथ-साथ कविताओं की ओर उनका झुकाव लगातार बढ़ता गया। हताशा और निराशा के समय कविताओं ने उन्हें सम्बल प्रदान किया। दलित वर्ग के कुलीन वर्ग द्वारा पर्याप्त सहयोग की कमी, महिलाओं को दुनिया के पर्याप्त प्रतिनिधित्व की कमी, आर्थिक दुनिया और शिक्षा में कमजोर और दलित साहित्य को सरकारी संरक्षण की कमी का पूरा सच हमें ओमप्रकाश वाल्मीकि जी के साहित्य में देखने को मिलता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपने साहित्य में दलित जीवन की विभिन्न समस्याओं, यातनाओं एवं अत्याचारों को अभिव्यक्त करते हुए दलित समाज को जाग्रत करने का प्रयास किया है। शोषित मानव की आह ही उनकी कविता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि अपनी कविताओं में चारों वर्णो के समाज द्वारा थोपे गए नियमों को चुनौती देते हैं। भाग्य, ईश्वर, नियति के विरूद्ध वाल्मीकि उनके पीछे व्याप्त स्वार्थ एवं षड्यन्त्र को उजागर करते हैं। प्रस्तुत शोध विषय का उद्देश्य ओमप्रकाश वाल्मीकि जी के साहित्य में दलित चेतना को विस्तार से जानना है। प्रस्तुत शोध में समाजशास्त्रीय शोध पद्धति का प्रयोग किया जाएगा। एक प्राथमिक स्रोत के रूप में इनकी मूल रचनाएँ और दूसरे स्रोत के रूप में शोध विषय से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों, पत्रिकाओं, ब्लॉगों, वेबसाइटों में प्रकाशित लेखों का प्रयोग किया जाएगा।

मुख्य शब्द: दलित जीवन, संघर्ष, समाज, साहित्य, सदी, अभिव्यक्ति, चेतना।

प्रस्तावना

ओमप्रकाश वाल्मीकि का जन्म 30 जून 1950 को मुजफ्फरपुर (उत्तर प्रदेश) जिले के बरला गांव में एक अछूत

वाल्मीकि परिवार में हुआ था। उन्होंने अपनी शिक्षा अपने गांव और देहरादून से प्राप्त की। उनका बचपन सामाजिक और आर्थिक कठिनाइयों में बीता। पढ़ाई के दौरान उन्हें कई आर्थिक, सामाजिक और मानसिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। वाल्मीकि जी कुछ समय महाराष्ट्र में रहे। वहां वे दलित लेखकों के संपर्क में आए और उनकी प्रेरणा से डॉ. भीमराव अम्बेडकर के कार्यों का अध्ययन किया। इससे उनकी रचनात्मक दृष्टि में मौलिक परिवर्तन आया। ओमप्रकाश वाल्मीकि ने हिंदी में दलित साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने अपने लेखन में जाति-अपमान और उत्पीड़न का जीवंत वर्णन किया है और भारतीय समाज के कई अनछुए पहलुओं को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। उनका मानना है कि दलित ही दलित की पीड़ा को बेहतर ढंग से समझ सकता है और केवल वही उस अनुभव को प्रामाणिक रूप से व्यक्त कर सकता है। उन्होंने रचनात्मक साहित्य के साथ-साथ आलोचनात्मक लेखन भी किया है। उनकी भाषा सरल, तथ्यपरक और आवेगपूर्ण है। अभिनय और नाटकों के निर्देशन में भी उनकी रुचि है। अपने प्रारंभिक जीवन में उन्हें जिन आर्थिक, सामाजिक और मानसिक कष्टों का सामना करना पड़ा, उन्हें उनके साहित्य में व्यक्त किया गया है। वाल्मीकि कुछ समय महाराष्ट्र में रहे। वहां वे दलित लेखकों के संपर्क में आए और उनकी प्रेरणा से डॉ. भीमराव अंबेडकर के कार्यों का अध्ययन किया। इससे उनकी रचनात्मक दृष्टि में मौलिक परिवर्तन आया।[1]

हिंदी कहानी की दुनिया में ओमप्रकाश वाल्मीकि एक ऐसा नाम है, जिनकी अनुपस्थिति में हिंदी दलित साहित्य की बात करना बेईमानी लगती है। वाणी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'ओमप्रकाश वाल्मीकि-व्यक्ति, विचारक और सृजक' के संपादकीय में प्रख्यात लेखक जयप्रकाश कर्दम लिखते हैं- 'ओमप्रकाश वाल्मीकि एक ऐसा नाम है, जिसने अपनी रचनाओं के माध्यम से कुलीनता और कुलीन संस्कृति के मूल्यों का निर्माण किया है। उन्होंने साहित्य की सदियों पुरानी जड़ता को तोड़ दिया और समाज की तरह उपेक्षित दलितों को साहित्य के केंद्र में लाकर साहित्य के दायरे से बाहर लाये। ओमप्रकाश वाल्मीकि की बातें और लेखन बुद्ध, ज्योतिबा फुले, सावित्री बाई फुले और बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर के दर्शन में निहित हैं, वहीं दूसरी ओर उनकी रचनाओं में मध्यकालीन संत कवियों कबीर और रैदास (रविदास) का अदम्य साहस भी है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि ने हिंदी क्षेत्र के दलितों को अपनी आवाज दी है। उनकी आत्मकथा 'जूठन' उनके जन्म का एक आत्मकथात्मक लेख है और 1950 के दशक के नए स्वतंत्र भारत में एक अछूत, दलित के रूप में भारत में एक अंदरूनी सूत्र के दृष्टिकोण से दलित जीवन के पहले चित्रणों में से एक है। उन्होंने अपने जीवन के कड़वे अनुभवों को साहस के साथ 'जूठन' में शामिल किया है। इसमें वाल्मीकि जी ने कहा है कि 'हजारों वर्षों से चली आ रही दलित जीवन की कहानी हमारे समाज का कृष्ण पक्ष है।' उन्होंने अपने लेखन से दलितों को एक नई दिशा दी है। इस कारण उनका योगदान सराहनीय है। समकालीन भारतीय हिंदी साहित्य में उनका योगदान महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से दलित लेखकों में स्वाभिमान की भावना जगाकर दलित लेखन की धारा को एक नया मोड़ दिया है।[2]

ओमप्रकाश वाल्मीकि के रचना संसार

ओमप्रकाश वाल्मीकि दलित साहित्य को जनसाहित्य मानते थे। दलित जीवन की पीड़ा और उसका संघर्ष दलित साहित्य में प्रमुख है। इसलिए दलित साहित्य में दलित जातियों की पीड़ा की वास्तविकता उसकी चेतना की आवाज को तेज करती है।

दलित साहित्य के इस अग्रणी की विशेषता यह थी कि उन्होंने साहित्य जगत में एक नई दुनिया की तलाश नहीं की, बल्कि उन सत्यों को साहसपूर्वक सार्वजनिक किया जिन्हें द्विज साहित्य सैकड़ों वर्षों से छिपाने की कोशिश कर रहा था। अर्थात् साहित्य के पारंपरिक स्वरूप को बदलने का प्रयास ओमप्रकाश वाल्मीकि की रचनाओं का मुख्य उद्देश्य था। उन्होंने दलित साहित्य को परिभाषित करते हुए दलित साहित्य को प्रेम, मित्रता और मानवता का साहित्य बताया। वह दलित शब्द के लिए स्पष्ट रूप से कहते हैं कि 'दलित एक सामूहिक शब्द है, जिसमें वे जातियाँ शामिल हैं जिन्हें पीढ़ियों से दबा दिया गया है'।

वर्तमान प्रकाशन से वर्ष 1989 में उनकी प्रारंभिक कृति 'सदियों का संताप' काव्य संग्रह के रूप में प्रकाशित हुई। उन दिनों स्थिति आज जैसी नहीं थी। जागरूकता का भी अभाव था। इसलिए, उन्होंने स्वयं अपनी कविता के इस संग्रह को बेचने का निश्चय किया। ऐसा करके वह अपने लेखन के माध्यम से समाज को बदलने के लिए भूमि तैयार कर रहे थे। यह संग्रह 1974 और 1989 के बीच लिखी गई उनकी कविताओं का संग्रह है, जो जातिवादी व्यवस्थागत भेदभाव और उत्पीड़न को व्यक्त करते हैं। इसी संकलन में संकलित 'सदियों का संताप' कविता में वह लिखते हैं –

"दोस्तों! /इस चीख को जगाकर पूछो/ कि अभी और कितने दिन/इसी तरह गुमसुम रहकर /सदियों का संताप सहना है।"

ओमप्रकाश वाल्मीकि का दूसरा कविता संग्रह 1997 में 'बस्स बहुत हो चुका' (वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली) आया। भारतीय समाज में सामाजिक असमानता के विरुद्ध आवाज को एक पंक्ति देते हुए वे लिखते हैं कि

"झाड़ू थामे हाथों की सरसराहट/ साफ सुनाई पड़ती है भीड़ के बीच / बियाबान जंगल में सनसनाती हवा की तरह / गहरी पथरीली नदी में/ असंख्य मूक पीड़ाएँ / कसमसा रही हैं / मुखर होने के लिए/ रोश से भरी हुई।"

ओमप्रकाश वाल्मीकि का तीसरा काव्य संग्रह 'अब और नहीं' वर्ष 2009 में प्रकाशित हुआ था। अपनी इस कविता संग्रह में वह दलित जीवन की आवाज को मुखर तरीके से अभिव्यक्त करते हैं। जैसे कि –

"छद्मवेशी शब्दों का प्रताप जारी है / सुन चुके अर्थहीन तर्क भी /बहुत दिन जी चुके हताशा और नैराश्य के बीच/कलाबाजी और चतुराई भरे शब्दों को / खेल हो चुका /अब और नहीं।"

दलित साहित्य का लेखन संघर्ष का लेखन है। लेकिन जब कुछ आलोचकों ने ओमप्रकाश वाल्मीकि के कामों को काल्पनिक होने का आरोप लगाया, तो उन्होंने भी बेबाकी से जवाब दिया।

उनका चौथा कविता संग्रह- 'शब्द झूठ नहीं बोलते' वर्ष 2012 में प्रकाशित हुआ था। इस संकलन में शामिल अपनी एक कविता में उन्होंने अपने आलोचकों को जवाब देते हुए लिखा था कि -

"मेरा विश्वास है/तुम्हारी तमाम कोशिशों के बाद भी/शब्द ज़िन्दा रहेंगे/समय की सीढ़ियों पर/अपने पाँव के निशान/गोदने के लिए/बदल देने के लिए/हवाओं का रुख...क्योंकि, शब्द कभी झूठ नहीं बोलते!"

ओमप्रकाश वाल्मीकि की महत्वपूर्ण आलोचनात्मक पुस्तकें "दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र' और 'दलित साहित्य - अनुभव, संघर्ष एवम यथार्थ' हैं। उन्होंने अपनी आलोचनात्मक पुस्तक में दलित साहित्य की परिभाषा का विस्तार करते हुए लिखा है कि 'दलित साहित्य जन साहित्य है। इतना ही नहीं, लिटरेचर ऑफ एक्शन भी है, जो मानवीय मूल्यों की भूमिका पर सामंती मानसिकता के खिलाफ एक अपमानजनक संघर्ष है। इसी संघर्ष और विद्रोह से दलित साहित्य का जन्म हुआ है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि को जो ख्याति कथा-कविता आदि के कारण मिली, वह आलोचना के क्षेत्र में वह नहीं पा सके, लेकिन उनका आलोचनात्मक दृष्टिकोण समाज-शास्त्रीय पद्धति के करीब है। उनकी आलोचना दलित साहित्य के सौंदर्यशास्त्र के संबंध में है, जो एक हवाई किला नहीं बल्कि एक भारतीय सामाजिक वास्तविकता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपनी आलोचना में स्पष्ट रूप से कहा है कि 'दलित साहित्य प्रेम का साहित्य है, और प्रेम विश्वास से अर्जित होता है।' वास्तव में ओमप्रकाश वाल्मीकि उन तथाकथित आलोचकों को भी दिशा देते हैं, जो दलित कथाओं का पाठ न पढ़कर किसी भी रचना और रचनाकार के लिए पहले से ही अपना मन बना लेते हैं। उनका मानना था कि प्रेमचंद को दलित साहित्य के सामने रखने वाले आलोचक किस हद तक सही हैं? यह एक साधारण सी बात है कि 1990 के दशक में हिन्दी दलित साहित्य का आगमन हुआ और ऐसे में दलित लेखकों को नकारने के लिए प्रेमचंद को उठाना कहाँ तक सही है? प्रेमचंद के संदर्भ में वे कहते हैं कि 'मैंने भी प्रेमचंद को पढ़कर कहानियाँ लिखी हैं। लेकिन मेरा सुझाव है कि आप प्रेमचंद को दलित कहानियाँ पढ़कर पढ़ें।[3]

स्त्री विमर्श

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी 'जंगल की रानी' में भी हमें दलित स्त्री विमर्श देखने को मिलता है। सबसे पहले डिप्टी साहब के चंगुल से स्कूल की शिक्षिका कमली अपनी पहचान तो बचाती है लेकिन जान नहीं बचा पाती। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों 'अंधेरी बस्ती' और 'यह अंत नहीं है' में नई पीढ़ी के युवाओं को अपने परिवार और समाज की महिलाओं पर होने वाले शारीरिक हमलों के खिलाफ लड़ने की ताकत है, तो कहानी 'रीत' का नायक अपने पूर्वजों से चली आ रही उस सांमती रीत को तोड़ता है जिसमें नवविवाहित को पहली रात जमीदार के घर गुजारनी पड़ती है। 'यह अंत नहीं है' में हीरोइन बिरमा के साथ रेप की नीयत से की गई छेड़छाड़ का पर्दाफाश होता है। यहां महिला को महिला होने के कारण अपमानित नहीं किया जा रहा है। उनके पीछे मुख्य कारण दलित महिला का होना है।[4]

दलित चेतना

एक कहानीकार के रूप में, ओमप्रकाश वाल्मीकि जाति व्यवस्था की आंतरिक परतों में प्रवेश करते हैं और इसकी संरचना और इसके गठन में योगदान करने वाले कारकों का जायजा लेते हैं। उनकी कहानियाँ बताती हैं कि 21वीं सदी का कुलीन और अभिजात वर्ग जाति की जड़ता को तोड़ने में विफल रहा है। जाति-आधारित और जाति-आधारित लामबंदी ने न केवल समाज को विभाजित किया, बल्कि लोकतंत्र को भी चुनौती दी। जाति और जाति लामबंदी के गठजोड़ ने न केवल दलितों और महिलाओं को अंतिम पायदान पर धकेल कर उनके अधिकारों के दायरे को सीमित कर दिया था, बल्कि उन्हें मानवीय स्थिति से वंचित करने का भी बीड़ा उठाया था। 'सलाम' जातिवाद और सामंतवाद की जुगलबंदी की भीतरी परतों का जायजा लेने वाली कहानी है। जहां जाति संरचना दलितों को शक्तिहीन कर देती है, वहीं सामंती व्यवस्था दलितों का दमन करती है। प्रभु वर्ग ने ऐसे नियम और परंपराएँ बनाई कि दलितों को सार्वजनिक रूप से और उनके रिश्तेदारों की उपस्थिति में अपमानित किया जा सकता था। सामंतवादी ताकतें दलितों के सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में हस्तक्षेप करती रही हैं और उन्हें नियंत्रित करती रही हैं।

ओमप्रकाश वाल्मीकि ने 'सलाम' कहानी में अमानवीय परंपराओं और जातिवाद के भयानक रूप को प्रस्तुत किया है। कहानी का एक पात्र कमल उपाध्याय अपने दोस्त हरीश की शादी में शामिल होने के लिए शहर से गांव आता है। कमल उपाध्याय के दोस्त हरीश भंगी समुदाय से हैं। हरीश की बारात एक ऐसे गांव में आई जहां के माहौल में जातिवाद और सामंतवाद का मेल है। कमल उपाध्याय जब सुबह चाय पीने के लिए गाँव की दुकान पर गए, तो उनका शहरी रूप देखकर चाय बनाने वाले बूढ़े ने उनसे पूछा कि क्या बाबू शहर से आए थे? कमल उपध्याय ने जवाब में कहा कि कल देहरादून से जो बारात आई थी, वह उसी में आया है। यह सुनकर चाय वाले ने कहा कि वह बारात तो चूहड़ों के घर आई है। उसने कहा कि तुम चूहड़े और भंगी हो और हम चूहड़ों-चमारों को चाय नहीं पिलाते। कमल उपाध्याय ने बूढ़े से कहा कि वह चूहरा-चमार नहीं, बल्कि ब्राह्मण है, लेकिन बूढ़े ने उसकी बातों पर विश्वास नहीं किया। यह बूढ़ा आदमी इस बात की बानगी है कि कैसे हिंदुत्ववादी ताकतों ने जनता के मन में जातिवाद के जहर को घोल दिया है।

इस प्रकार ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ समाज के हर तबके से आती हैं। उनकी अधिकांश कहानियाँ दलितों के शोषण और भेदभाव को उजागर करने का महत्वपूर्ण काम करती हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों के दलित पात्र, चेतना से लैस, शोषण और अन्याय का विरोध और प्रतिकार करते हैं। उनके कहानी लेखन में ब्राह्मणवादी और जाति व्यवस्था के प्रति गहरा आक्रोश है। इस कहानीकार की कहानियों में पहचान समानता के स्रोत दिखाई देते हैं। इस कथाकार की कहानियों में सामाजिक न्याय के पक्ष में जबर्दस्त लामबंदी है। शायद यही गुण ओमप्रकाश वाल्मीकि को हाशिए पर पड़े समाज का प्रतिनिधि कहानीकार बनाता है।[5]

ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' में दलित चेतना

वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' में दलित समुदाय पूरी तरह से अपमानित और उत्पीड़ित है। उनके अनुसार दलित जीवन अत्यंत पीड़ादायक है, जो साहित्यिक रचना में स्थान प्राप्त नहीं कर पाता है। हम एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था में पले-बढ़े हैं जो दलितों के प्रति बेहद क्रूर, अमानवीय और करुणामय है। 'जूठन' में जातिगत भेदभाव का चित्रण करते हुए वाल्मीकि जी कहते हैं कि 'जाति' भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण तत्व है। उन्होंने बताया कि 'जाति' जन्म लेने वाले के वश में नहीं होती। अगर यह नियंत्रण में होता, तो मैं भंगी परिवार में क्यों पैदा होता? जो लोग खुद को इस देश की सांस्कृतिक विरासत के मानक कहते हैं, क्या वे तय करते हैं कि वे किस घर में पैदा होंगे - उच्च या निम्न? वाल्मीकि ने 'जूठन' के माध्यम से संदेश दिया है कि 'जाति' ही व्यक्ति की पहचान क्यों है? इस सच्चाई को उजागर करने के लिए उन्होंने 'जूठन' में कई ऐसी घटनाओं और घटनाओं का चित्रण किया है जो एकदम सच साबित होती हैं। जाति के कारण ओमप्रकाश वाल्मीकि को अपने जीवन में कई बार अपमानित और प्रताड़ित होना पड़ा। उनकी आत्मकथा 'जूठन' में एक दलित जीवन के दर्दनाक अनुभवों को चित्रित किया गया है, जिनकी महत्वपूर्ण घटनाएँ और प्रसंग इस प्रकार हैं- ओमप्रकाश वाल्मीकि एक दलित समुदाय की 'चुहड़ा' जाति के हैं, जिनका काम गंदगी साफ करना, झाड़ू लगाना, सूअर चराना आदि था, जिसके कारण उन्हें अपमानित महसूस करना पड़ता था। ऐसे में उनके बचपन का माहौल ऐसा था कि चारों तरफ गंदगी थी. इतनी दुर्गंध कि एक मिनट में सांस घुट जाएगी। वाल्मीकि का बचपन तंग गलियों में घूमते सूअर, नंगे बच्चे, कुत्ते, रोज की लड़ाई आदि जैसे गंदे वातावरण में बीता। वाल्मीकि जी ने 'जूठन' के माध्यम से उस समय के संदर्भ को बताने की कोशिश की है जो दलित जीवन की त्रासदी को उजागर करता है। बात उस समय की है जब ओमप्रकाश वाल्मीकि के घर में छोटे-बड़े सभी सदस्य कोई न कोई काम करते थे। फिर भी उन्हें रोटी के लिए सफाई से लेकर खेती और तागा के घरों में सभी काम करने पड़ते थे। यहां तक कि रात-रात बंधुआ मजदूरी भी करनी पड़ती थी, जिसके बदले में कोई पैसा या अनाज नहीं था। यदि जबरन मजदूरी पर रोक लगा दी जाती तो प्रताड़ना और गाली-गलौज भी नहीं होती। किसी भी सवर्ण जाति को नाम लेकर पुकारने की आदत नहीं थी। इसलिए उम्र में बड़े होने पर उन्हें 'ओ चुहड़े' जैसे नाम से संबोधित करके उनका अपमान किया जाता था और उम्र में छोटा या बराबर होने पर 'अबे चुहड़े'।

ओमप्रकाश से जुड़ा 'वाल्मीकि' शब्द जातिगत हीनता का नहीं बल्कि उसकी अपनी जातिगत पहचान और पहचान के प्रतीक के रूप में उभरा है, जो जाति व्यवस्था और घृणा को विफल कर रहा है। स्पष्ट है कि यह आत्मकथा 'वाल्मीकि' उपनाम के जातिगत भाव की आत्म-स्वीकृति की लंबी यात्रा का वर्णन करती है, जिसमें दलित जीवन की विडंबनापूर्ण परिस्थितियों, जाति व्यवस्था से उत्पन्न अस्पृश्यता के दंश, यातना, यातना के विभिन्न

पहलुओं को उजागर किया गया है। आत्मकथा ओमप्रकाश के आत्म-संघर्ष के साथ उनके उपनाम 'वाल्मीकि' के विवाद के साथ समाप्त होती है और यह उपनाम उनके संघर्षों और चिंताओं का एक साथी बन गया, इसलिए उन्हें बहुत आत्मीय महसूस हुआ। कुछ मित्रों को 'वाल्मीकि' उपनाम आकर्षक लगा तो कुछ को 'जाति' भाव की हीनता की तरह लगा। सच तो यह है कि हमारे देश में आज भी सम्मान को 'जाति' से जोड़ा जाता है, क्योंकि जाति का नाम जानने के बाद लोगों का व्यवहार और आचरण दोनों बदल जाता है। ऐसा कहने वालों में ज्यादातर हमारी ही जाति के पढ़े-लिखे लोग, परिवार के सदस्य, रिश्तेदार हैं। तथाकथित दलित साहित्यकार भी।[6]

निष्कर्ष -

ओमप्रकाश वाल्मीकि की प्रवाहमयी भावाभिव्यक्ति उनकी रचनाओं को विशिष्ट और बहुआयामी बनाती है। उनकी रचनाओं में यथास्थिति के विरूद्ध बार-बार आक्रोश उभरता नजर आता है। उनकी रचनाओं के प्रतीकों में उपस्थित हिंसा व मानवीय घृणा समाज में समता, स्वतन्त्रता और बन्धुता को बढ़ाने हेतु आवश्यक है। वे अन्याय के पक्षधर जातिवादी व्यवहारों पर सख्ती से पेश आते हैं। उनकी दलित रचनाओं में भाव पक्ष की प्रधानता है, लेकिन ओमप्रकाश वाल्मीकि की रचनाओं का सौन्दर्य जाति, धर्म, लिंग, स्थान आदि में न होकर मानवीय गुणों के संघर्ष में है। उनकी रचना शोषण के जाने-माने हथियारों से निर्मित सामाजिक ताने-बाने को नकारकर, न्यायपरक समाज का पुनर्निर्माण करती नजर आती है। इस प्रकार उनके काव्य-सृजन में आन्तरिक यथार्थ स्पष्ट नजर आता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में दलित चेतना एवं स्त्री विमर्श को बहुत ही अच्छे ढंग दिखलाया है। दलितों की हमारे देश में जो स्थिति रही है वह आज तक बहुत दयनीय रही है अत: हम कह सकते हैं कि यदि कोई दलितों की स्थति को जानने की इच्छा रखता है तो वह नि:संकोच ओमप्रकाश वाल्मीकि के साहिय का अध्ययन कर सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ओमप्रकाश वाल्मीकि- परिचय, अधिकारिक वेबसाईट http://gadyakosh.org
2. जीनगर, अमृत लाल, ''दलित जीवन की त्रासदी'', माधव विश्वविद्यालय, पृष्ठ: 1-3।
3. चौधरी, कार्तिक, ''ओमप्रकाश वाल्मीकि, जिन्हें पीढ़ियां याद रखेंगी', फॉरवर्ड प्रेस, 2021, पृष्ठ: 1-4।
4. कुमार, आशीष एवं कामिनी, ''हिन्दी दलित कहानियो में दलित नारी का अवलोकन'', उत्तरवार्ता, 2017, पृष्ठ: 1-7।
5. कुमार, सुरेश, ''दलित कहानियां और जातिवाद के बीहड़ इलाके (संदर्भ-ओमप्रकाश वाल्मीकि)'', फॉरवर्ड प्रेस, 2021, 1-4।
6. जीनगर, अमृत लाल, ''दलित जीवन की त्रासदी'', माधव विश्वविद्यालय, पृष्ठ: 1-3।

❑❑❑

शोधार्थी, हिंदी विभाग, झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोबाइल : 9523706139, ईमेल : jibhawanikumarrajak@gmail.com
शोध निर्देशक, प्रोफेसर हिंदी विभाग, झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय

हिन्दी व्यंग्य उपन्यास परम्परा में आश्रितों का विद्रोह

—बिन्दु डनसेना
—डॉ. बी.एन. जागृत

व्यंग्य उपन्यास की इस परम्परा में श्रीलाल शुक्ल का कालजयी व्यंग्य उपन्यास 'राग दरबारी' 1968 ई. में प्रकाशित हुआ। हिन्दी साहित्य में इस व्यंग्य उपन्यास को मील का पत्थर माना जाने लगा। रामचंद्र तिवारी इस उपन्यास के विषय में लिखते हैं-"यह एक विशिष्ट उपन्यास है। लेखक ने पूरा उपन्यास व्यंग्यात्मक शैली में लिखा है। कथा का केंद्र शिवपाल गंज है। लेकिन यह कथा भारत के किसी भी गाँव की हो सकती है।"

साहित्य समाज का न सिर्फ प्रतिछाया होता है, अपितु वह समाज के वास्तविक मार्गदर्शक की भूमिका का निर्वहन भी करता है। सदैव से ही समकालीन सामाजिक परिस्थितियाँ साहित्यकारों को प्रभावित करती रही हैं। यही वजह है कि उनकी रचनाओं के केन्द्र में मानव समाज, राष्ट्र की विकृत समस्याएँ, वास्तविक स्थितियां ही रही हैं। सहयात्री बनकर साहित्यकार वर्तमान समय की घटनाओं, द्वन्द, तनाव, अन्तर्विरोध को स्वयं अनुभव करते हुए वास्तविक यथार्थ को रचनात्मक स्वरूप प्रदान करते हैं। इन यथार्थ को उजागर करने के लिए कभी-कभी साहित्यकार को व्यंग्य का सहारा लेना आवश्यक हो जाता है। व्यंग्य को माध्यम बनाकर शासन और समाज की विसंगति और विकृतियों का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया जाता है। साहित्य में व्यंग्य की तेज पैनी धार जीवन की विसंगतियों के मुखर अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण साधन है। इसी कड़ी में नरेन्द्र कोहली का व्यंग्य उपन्यास 'आश्रितों का विद्रोह' है जिसमें शासन और समाज की यथार्थ जीवन की स्पष्ट झलक देखने को मिलती है। इस उपन्यास की व्यंग्यात्मक संवेदना शासन विरोधी है। उपन्यास की कथावस्तु राजनीतिक-सामाजिक परिधियों को छूती हुई यथार्थ जन-जीवन की विसंगतियों, समस्याओं का चित्रण के साथ ही समाधान भी प्रस्तुत करती है।

मूल शब्द : साहित्य, समाज, शासन, व्यंग्य, विसंगति, यथार्थ, उपन्यास।

प्रस्तावना-

"केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।।"1

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी की यह पंक्ति समाज और साहित्यकार के मध्य घनिष्ठ सम्बन्ध को व्यक्त करती है। साहित्यकार अपनी रचनाओं में न केवल समाज के गुण-दोषों को प्रकट करता है, अपितु उनमें आवश्यक सुधार का मार्ग भी प्रशस्त करते हैं। साहित्यकार का जिस समाज में रह निवास

होता है, उसकी समस्त परिस्थितियों से वह भलीभांति परिचित होता है। यही करण है कि पाठक उनकी रचनाओं से तादात्म्य स्थापित कर समाज के यथार्थ जन-जीवन के दर्शन करते हैं। साहित्य की विविध विधाओं के माध्यम से साहित्यकार द्वारा समाज के यथार्थ को अपनी रचनाओं में समाहित करने का प्रयास किया जाता रहा है। उपन्यास एक यथार्थवादी सशक्त विधा है, जो समाज और जन जीवन के समग्र पहलुओं का चित्रण इस प्रकार करता है, कि वह उनके मानस पटल पर पूरी तरह अंकित होने के साथ ही मनोवैज्ञानिक स्तर पर भी गहरी छाप छोड़ती है। शुरूआती दौर में उपन्यासों का सृजन मनोरंजन, ऐयारी और समाज को उपेदश प्रदान करने के लिए हुआ। वर्तमान में उपन्यास का प्रत्यक्ष सम्बन्ध जीवन के यथार्थ बोध से है। इसी यथार्थ को अपनी रचनाओं में समेटने के दौरान एवं लेखन कार्य के पश्चात् उपन्यासकार के समक्ष विविध (सामाजिक आलोचना, क़ानूनी समस्याएँ) अवरोध उत्पन्न होते हैं। अत: लेखक को वास्तविक यथार्थ को समाज तक पहुँचाने के लिए व्यंग्य की सहायता लेना आवश्यक हो जाता है। व्यंग्य समाज की विसंगतियों, भ्रष्टाचार, प्रशासनिक नीतियों, वर्तमान राजनीति के गिरते स्तर पर तंज कसता है। व्यंग्य के प्रस्फुटन के विषय में डॉ. नरेन्द्र कोहली लिखते हैं-"अनासक्त विवेक जब न्याय के पक्ष में अपने आक्रोश को कलात्मक रूप में अभिव्यक्त करता है, तो व्यंग्य का जन्म होता है। व्यंग्य की आत्मा है, उसकी प्रखरता और तेजस्विता। हास-परिहास, विनोद, कटाक्ष इत्यादि उसके सहयोगी हो सकते हैं।"2

आजादी के पश्चात् परिवर्तित होते हुए परिवेश और उसमें गहराती सामाजिक, राजनीतिक विसंगतियों ने हिन्दी व्यंग्य विधा को मुखर अभिव्यक्ति प्रदान की है। इसके पूर्व भारतेंदु युग और छायावादी-युग में भी व्यंग्य का प्रयोग हुआ किन्तु परिवेश की समग्र विकृतियों को भोगने और अभिव्यक्त करने का कार्य आजादी के बाद ही अधिक हुआ है। आजादी के उपरांत समाज के हर क्षेत्र (राजनीतिक, सामाजिक, प्रशासनिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत) में विसंगति और विकृतियों ने अपने पैर पसारें हैं, जिससे व्यंग्य विधा को और अधिक विकसित होने का अवसर प्राप्त हुआ। व्यंग्य का जन्म आक्रोश, क्षोभ, विद्रोह, विसंगतियों और विकृतियों के फलस्वरूप होता है। व्यंग्य समाज सुधार का एक साधन है, जो अपने तीखे और कटु प्रहार से सोए हुए समाज को जाग्रत करता है। व्यंग्य एक विशेष परिस्थिति की मांग करता है, जिसमें सामाजिक विसंगतियां, विषमताएं, शोषण, पीड़ा, अनीति, अत्याचार, अन्तर्विरोध तथा सामाजिक, राजनीतिक एवं व्यक्तिगत मूल्यों का ह्रास तेजी से होता है। आजादी के पश्चात् इस प्रकार की विसंगतियों को और अधिक फलने फूलने का अवसर प्राप्त हुआ। गहराती समस्याओं के मध्य साहित्यकारों ने अपने आक्रोश व क्षोभ की अभिव्यक्ति का मुखर माध्यम के रूप में व्यंग्य को चुना। प्रारम्भ में व्यंग्य का उपयोग सभी विधाओं में किया गया जैसे-व्यंग्य नाटक, व्यंग्य निबन्ध, व्यंग्य उपन्यास, व्यंग्य कहानी आदि। इस प्रकार व्यंग्य ने स्वतंत्र अस्तित्व के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज करायी। भारतीय जन-जीवन में फैली कुरीतियाँ, विसंगतियां, भ्रष्टाचार, शोषण और फैली अव्यवस्थाओं को अभिव्यक्त करने का माध्यम व्यंग्य उपन्यास के रूप में समाने आया। सम्पूर्ण युग की पीड़ा, टूटन, संत्रास को

पूर्णत: उजागर करने का सक्षम प्रयास आजादी के बाद के व्यंग्य उपन्यासकारों ने किया। हिंदी उपन्यासों में व्यंग्य को दो प्रकारों से व्यक्त किया गया। एक ऐसे उपन्यास जिसमें व्यंग्य को पूर्णत: केंद्र तत्व बना सम्पूर्ण कथानक का सृजन व्यंग्य को आधार बनाकर किया गया दूसरा वे उपन्यास जिसमें सिर्फ व्यंग्य की झलक ही प्रस्तुत कर समस्त क्षेत्रों की विसंगतियों को लेकर अप्रत्यक्ष व्यंग्य किया गया। व्यंग्य स्वतंत्रता पश्चात कल की देन है, व्यंग्य का अस्तित्व हिंदी साहित्य में आदिकाल से लेकर आज तक के विभिन्न कालखंडों में विविध रूप में देखने को मिलता है। प्रेमचन्द से लेकर भगवती चरण वर्मा के उपन्यासों में व्यंग्य को एक सहायक के रूप में उपयोग कर आवश्यक प्रसंगों में ही व्यंग्य का प्रयोग किया गया किन्तु आजादी के पश्चात् व्यंग्य उपन्यासों की सम्पूर्ण परम्परा सामने आयी। 1952 ई. में प्रकाशित रांगेय राघव की उपन्यास 'हुजूर' जिसमें नायक के रूप में एक कुत्ते को लिया गया है। वहीं राधाकृष्ण की 1954 ई. में प्रकाशित उपन्यास 'सनसनाते सपने' जिसकी कथा के केंद्र में निराश बेटों की कथावस्तु का व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति हुई है। इसी काल का एक प्रसिद्ध उपन्यास कढ़ी और कोयला प्रकाशित हुई जिसमें पाण्डेय बेचेन शर्मा 'उग्र' ने व्यंग्यात्मक शैली में कलकत्ता के मारवाड़ी समुदाय की उन सभी विकृतियों को उजागर किए हैं, जो अनायास धन आगमन के साथ आती है। व्यंग्य शिरोमणि हरिशंकर परसाई के लघु उपन्यास 'रानी नागफनी की कहानी' एवं 'तट की खोज' 1961 ई. में प्रकाशित हुई, जिसमें फैंटेसी शैली के माध्यम से समाज में फैली शिक्षा व्यवस्था एवं राजनीति के क्षेत्र में फैली विसंगतियों का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

उन्होंने स्वयं भूमिका में इस तथ्य को स्वीकार किए हैं "फैंटेसी के माध्यम से मैंने आज की वास्तविकता के कुछ पहलुओं की आलोचना की है।"3

समस्त भारतीय जनता द्वारा आजादी पूर्व देखे गए सपने खंडित हो चुके थे, पास थी तो बिखराव, टूटन और संत्रास, इन सभी की अभिव्यक्ति हरिशंकर परसाई ने अपने व्यंग्यात्मक, मर्मस्पर्शी परिहास द्वारा कटु एवं तीव्र प्रहार किए हैं। 1962 ई. में प्रकाशित उपन्यास चांदी का जूता विंध्याचल प्रसाद गुप्त का जिसमें फैंटेसी शैली के माध्यम से घूसखोरी, भ्रष्ट अफसरों की कार्यप्रणाली पर करारा व्यंग्य किया गया है।

व्यंग्य उपन्यास की इस परम्परा में श्रीलाल शुक्ल का कालजयी व्यंग्य उपन्यास 'राग दरबारी' 1968 ई. में प्रकाशित हुआ। हिन्दी साहित्य में इस व्यंग्य उपन्यास को मील का पत्थर माना जाने लगा। रामचंद्र तिवारी इस उपन्यास के विषय में लिखते हैं-"यह एक विशिष्ट उपन्यास है। लेखक ने पूरा उपन्यास व्यंग्यात्मक शैली में लिखा है। कथा का केंद्र शिवपाल गंज है। लेकिन यह कथा भारत के किसी भी गाँव की हो सकती है। मुख्य समस्या शिवपालगंज कॉलेज की है किन्तु अन्य समस्याएँ स्वार्थ, मूल्यहीनता, अमानवीयता, अवसरवाद, छल प्रपंच, नैतिक गिरावट, कुत्सित राजनीति-इसी के साथ जुड़ी हैं।"4

"राग दरबारी उपन्यास का शिवपाल गंज एक विशेष गाँव न होकर समूचा भारत है। क्योंकि भारत गांवों में बसा है और भारत के समस्त गाँव शिवपालगंज की तरह है। आजादी के बाद भारत का हर गाँव स्वयं पूर्ण विकसित होने वाला था जहाँ न कोई छोटा होगा न बड़ा। साथ ही सारी सुख

सुविधाएँ गाँव में ही मुहैय्या होने वाली थी पर आजादी के बाद शहर के पास बसने वाला गाँव शिवपालगंज, शहरी प्रगति से कोसों दूर है। शहरी पात्र रंगनाथ स्वास्थ्य लाभ करने के लिए ऐसे गाँव में आता है, जहाँ हर व्यक्ति मानसिक दृष्टि से अस्वस्थ है। यहाँ का कॉलेज युवा वर्ग को सुशिक्षित करने की बजाए गुटबंदी के दांव पेंच की दीक्षा दे रहा है, सत्ता की राजनीति के बल पर सनीचर जैसा विदूषक ग्राम सभा का प्रधान हो जाता है। गाँव वालों की सुरक्षा के लिए तैनात पुलिस निरपराधों को पकड़ती है, व्यवस्था ऐसी कि गरीब (लगड़) के न्याय की पुकार मखौल बनकर रह जाती है।"5

इस उपन्यास में व्यंग्य चरमावस्था पर है, प्रतीक शैली अपनाते हुए लेखक ने वर्तमान शिक्षा पद्धति, समाजिक विकृतियों और दूषित एवं भ्रष्ट राजनीति का यथार्थ चित्र को उधेड़ कर रख दिया है। राग दरबारी के पश्चात् अन्य व्यंग्य उपन्यासों का प्रकाशन हुआ, जिसमें डॉ. श्याम सुन्दर घोष ने अपने उपन्यास 'एक उलूक की कथा' 1970 ई. में एक उल्लू को आधार बना वर्तमान समाज का वास्तविक व यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। उल्लू के माध्यम से लेखक समाज में हो रहे घटनाओं, विसंगतियों का सूक्ष्म वर्णन किए हैं जैसे चोरी के माल में हिस्सा लेते नेता, समाज में भैया लोगों की दादागिरी, समाचार पत्र के सवांददाता और संपादक, निजी जासूसों की असंगतियों को अपने व्यंग्य का विषय बनाया है। 1971 ई. में प्रकाशित 'एक चूहे की मौत' बदीउज्जमा का व्यंग्य उपन्यास है। जिसमें उपन्यासकार ने चूहे की मौत को नाम रहित, पहचानहीन वर्तमान जन जीवन का प्रतीक माना है। चूहा फ़ाइल का प्रतीक है, चूहेखाना सरकारी दफ्तरों का चूहे मारने वाला क्लर्क से लेकर भ्रष्ट अफसरों का प्रतीक है। इस उपन्यास का प्रमुख उद्देश्य सरकार एवं प्रशासन वर्तमान व्यवस्था तंत्र पर प्रहार करना है। बदीउज्जमा का ही उपन्यास 'छठा तन्त्र' 1977 ई. में प्रकाशित हुआ, इस उपन्यास में एक बिल्ली एवं चूहे के उपदेशात्मक कथावस्तु को आधार बना समाज को जगाने का सफल प्रयास किया गया है। यह आजादी के पश्चात् भारत में निवासरत आम आदमी की विसंगतियों एवं निरर्थक जीवन व्यतीत करने की नियति का प्रमाणिक दस्तावेज है।

इसी कड़ी में डॉ. शंकर पुणताम्बेकर का व्यंग्य उपन्यास 'एक मंत्री स्वर्गलोक में' फैंटेसी शैली का उपयोग करते हुए मंत्री पद के विसंगति एवं प्रशासन का वास्तविक स्वरूप का चित्रण किया गया है। डॉ. श्रवणकुमार गोस्वामी अपने उपन्यास 'जंगल तन्त्रम्' की रचना पंचतन्त्र की कहानियों को आधार बनाकर किए हैं। इस उपन्यास के प्रमुख पात्रों के लिए उन्होंने मोर, नाग, चूहा और सिंह का चुनाव किया है। इन्हीं का दूसरा उपन्यास 'दर्पण झूठ न बोले' है। इस उपन्यास में लोकतंत्र में प्रशासन, शासकीय कर्मचारी, कार्यालय, पुलिस, सत्तारूढ़ दल एवं विपक्षी दल पर व्यंग्य आकृतियों के माध्यम कटाक्ष किए हैं। 1977 ई. में प्रकाशित यश कोठारी का व्यंग्य उपन्यास 'यश का शिकंजा' आया। आबिद सुरती का व्यंग्य उपन्यास 'काली किताब' में शैतान की परिकल्पना द्वारा वर्तमान भारतीय परिस्थितियों का प्रस्तुतिकरण किया गया है।

व्यंग्य उपन्यास की इस कड़ी को आगे बढ़ाने का कार्य डॉ. नरेन्द्र कोहली के व्यंग्य उपन्यास 'पांच एब्सर्ड' और 'आश्रितों का विद्रोह' है। पांच एब्सर्ड उपन्यास का प्रकाशन वर्ष 1971 ई. है हिंदी व्यंग्य साहित्य में पांच एब्सर्ड उपन्यास सर्वथा नवीन प्रयोग है। जिसमें वर्तमान समाज की वास्तविकता का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया गया है। इस उपन्यास में पांच कहानियां समाहित हैं,

जिसमें लेखक ने आत्मकथ्य शैली का प्रयोग करते हुए समकालीन अर्थहीन जीवन पर करारा व्यंग्य किए हैं। कथ्य एवं शिल्प की दृष्टि से यह व्यंग्य उपन्यास एक नवीनतम प्रयोग है।

'आश्रितों का विद्रोह' का प्रकाशन वर्ष 1973 ई. है। यह उपन्यास कॉलेज के अहाते से गुजरती हुई दिल्ली नगर में रहने वाले आम जनता के विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक परिधि को छूती हुई, वहाँ की विविध समस्याएँ-राशन, पानी, बिजली, दूध, यातायात आदि के साथ जूझने की कथा का यथार्थ चित्रण किया गया है। इस व्यंग्य उपन्यास की संवेदना प्रशासन विरोधी है। फैंटेसी शैली का प्रयोग करते हुए वर्तमान शासन व्यवस्था की विसंगतिपूर्ण स्थिति के विरुद्ध करारा व्यंग्य इस उपन्यास में किया गया है। इस व्यंग्य उपन्यास का मूल उद्देश्य शासन की विसंगतियों को उजागर करना है। सम्पूर्ण हिंदी व्यंग्य साहित्य में संभवत: पहली बार प्रशासन के विरुद्ध विद्रोह की संभावना को चित्रित किया गया है। इस उपन्यास में यह दिखाया गया है कि कैसे आमजनता का जीवन त्रस्त है, दैनिक उपभोग की आवश्यक वस्तुओं की उचित व्यवस्था न हो पाने की वजह से सर्वत्र अव्यवस्था फैली हुई है। इस व्यंग्य उपन्यास में हर वर्ग शासन के विरुद्ध विद्रोह करने को तैयार खड़ा है जैसे-कॉलेज के छात्रों द्वारा परिवहन व्यवस्था के विरुद्ध, राशनिंग की अव्यवस्था के विरुद्ध मि. कालिया का विद्रोह, दुग्ध व्यवस्था के विरुद्ध चेतन के द्वारा विद्रोह की भावना को दिखाया गया है। शासन द्वारा 'आश्रितों के विद्रोह' को दबाने के लिए कारगर उपाय है आपात स्थिति घोषित कर सम्पूर्ण अधिकार अपने हाथ ले लेना। विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के निवासी इस स्थिति से भलीभांति परिचित हैं। यह बात पूर्णत: सत्य सिद्ध होती है कि लेखक अतीत और वर्तमान ही नहीं भविष्य का भी सृष्टा होता है यथा-1973 में प्रकाशित यह उपन्यास और 1975 ई. का सरकारी दमन प्रत्यक्ष है, इससे व्यंग्य की सार्थकता और उपयोगिता सिद्ध होती है।

महानगरों के परिवहन एवं सड़कों के गड्ढों पर कटाक्ष करते हुए लेखक लिखते हैं कि - "दिल्ली की सड़कें चक्की का निचला पाट है और ऊपरी पाट के रूप में यहाँ अनेक ट्रक और बसें घूमती रहती हैं। कुछ दाने जो कुछ असावधान होते हैं और उन सड़कों को 'बाबुल का अंगना' समझते हैं।"6

वर्तमान समय की भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था में शासक वर्ग द्वारा जिस प्रकार लोकतंत्र के नाम पर लोगों को प्रताड़ित किया जाता है, निम्न वर्ग तथा दलित वर्ग का शोषण करते हुए उन्हें निर्धनता में ही जीवन व्यतीत करने के लिए आवश्यक परिस्थितियों का निर्माण करते हैं। प्रशासन पर आश्रित जनता सरकारी व्यवस्था के विरुद्ध अपना विद्रोह प्रकट करने पर विवश हो जाती है, पर राजनीति उसे फिर से अपने छल प्रपंच द्वारा बर्गला कर पुन: प्रशासन तंत्र पर आश्रित होने को मजबूर कर देती है। राजनीति और भ्रष्ट नेताओं पर व्यंग्य करते हुए डॉ. नरेन्द्र कोहली लिखते हैं-"विप्लवी व्यावहारिक राजनीति का मर्मज्ञ था और देश के नेताओं के पद-चिन्हों पर पूरी तरह चल रहा था। न्याय अन्याय या सिद्धांतों से अधिक महत्वपूर्ण चीज इलेक्शन थी। गधा बनकर भी इलेक्शन जीता जा सके तो जीतेगा, जैसाकि अपने देश का रिवाज है। वह अपने देश के रिवाजों के विरुद्ध कैसे जा सकता था, देशभक्त जो ठहरा।"7

इसी प्रकार दिनों दिन गिरती जा रही देश की आर्थिक प्रगति और महंगाई एवं जीवन के सामान्य पक्ष का वर्णन तथा उसके माध्यम से सामाजिक समस्याओं के विरुद्ध तंज कसते हुए लिखते

हैं–"पत्नी की खांसी। वे कुछ चैतन्य हुए। पत्नी का स्वास्थ्य देश की आर्थिक स्थिति के समान बिगड़ता जा रहा था; विशेष रूप से उसकी खांसी दिनोदिन महंगाई के समान बढ़ती जा रही है।"8

इस व्यंग्य उपन्यास में डॉ. कोहली ने विशाल सामाजिक व्यवस्था में बदलाव लाने की मंशा से विद्रोह की भावना को वाणी प्रदान नहीं की है। अपितु इनके विद्रोह का मुख्य उद्देश्य भ्रष्ट और निष्क्रिय प्रशासन व्यवस्था को बदलकर सक्रिय बनाना है।

हिन्दी व्यंग्य परम्परा में अशोक शुक्ल का व्यंग्य उपन्यास 'प्रोफ़ेसर पुराण' भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली पर करारा व्यंग्य है, यह महाविद्यालयों की स्थिति और अध्यापकों की नियुक्ति से साक्षात्कार कराता है। 'हड़ताल हरिकथा' इस उपन्यास में शैक्षणिक जगत की विसंगतियों को उजागर किया गया है। हंसराज रहबर का 'किस्सा तोता पढ़ाने का' मनोहर श्याम जोशी का कुरू कुरू स्वाहा, डॉ. सुदर्शन मजीठिया का कागजी सुल्तान, के.पी. सक्सेना का श्री गुलसनोवर की यात्रा, डॉ. सरोजनी प्रीतम का बिके हुए लोग 1986 ई. में सम्मान की लालसा तथा आर्थिक लाभ प्राप्ति के इच्छुक साहित्यकारों की यादों का पोस्टमार्टम किया गया है।

मुद्राराक्षस का प्रपंचतन्त्र, डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी ने नरक यात्रा, बारामासी, अलग, मरीचिका और हम न मरब आदि व्यंग्य उपन्यासों के द्वारा समाज के कटु सत्य जो पर्दे के पीछे छुपा रहता है उसे परत दर परत उघाड़ते हुए यथार्थ चित्रण किया गया है।

वर्तमान काल में अनेक व्यंग्यकारों के व्यंग्य उपन्यास प्रकाशित हुए, जिन्होंने अपने व्यंग्य उपन्यासों से सामाजिक राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आदि क्षेत्रों की विसंगतियों पर तीखा प्रहार कर हिन्दी व्यंग्य उपन्यासों की परम्परा को और अधिक सुविकसित किए हैं।

निष्कर्षत: व्यंग्य उपन्यासों की इस श्रृंखला में 'आश्रितों का विद्रोह' अपनी सार्थकता लिए हुए है। आधुनिकता के इस युग में परम्परागत मूल्यों का ह्रास और उनके स्थान पर नवीन मूल्यों की स्थापना में संघर्ष एक महत्वपूर्ण आवश्यकता बनती जा रही है। आधुनिकता के रंग में सराबोर व्यक्ति, समूह, समाज और प्रशासन अपने व्यवहार में जिन प्रवृत्तियों को ग्रहण कर रहा है, उनमें अवसरवादिता, रिश्वतखोरी, बेईमानी, विसंगतियां और विकृतियाँ आदि समाज के स्वरूप को कुरूपता प्रदान कर सामाजिक व्यवस्था की जड़ों को नष्ट करते जा रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. www.rachnakar.org, सुरेन्द्र वर्मा, मैथिलीशरण गुप्त की मूल्य चेतना।
2. नरेन्द्र कोहली, त्राहि–त्राहि (समग्र व्यंग्य–2), भूमिका।
3. हरिशंकर परसाई, रानी नागफनी की कहानी लेखक की बात, पृ. 76.
4. रामचन्द्र तिवारी, हिंदी का गद्य साहित्य, पृ. 293.
5. सं. रामवृक्ष सिंह और डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी, रागदरबारी व्यंग्य सन्दर्भ की परख (पुरोवाक्)।
6. नरेन्द्र कोहली, त्राहि–त्राहि (समग्र व्यंग्य 2), पृ. 279.
7. नरेन्द्र कोहली, त्राहि–त्राहि (समग्र व्यंग्य 2), पृ. 252.
8. नरेन्द्र कोहली, त्राहि–त्राहि (समग्र व्यंग्य 2), पृ. 279.

❑❑❑

शोधार्थी, शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महा. राजनादगांव (छ.ग.)

शोध निर्देशक, सहा. प्रा., शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महा. राजनादगांव (छ.ग.)

हिन्दी कविता में ग़ज़लों की स्थिति

—दीपमाला

आज अगर हिन्दी कविता के लोग आवारा, पागल, दीवाना, मस्ताना आदि तखल्लुस का इस्तेमाल कर रहे हैं तो वह भी ग़ज़ल की ही देन है। यही नहीं अगर कविता में कुछ लोग दर्द की कहानियां कह रहे हैं तो इसके पीछे भी कहीं न कहीं ग़ज़ल की ही मौजूदगी है। कुछ अगर ग़जल को इश्क और मुहब्बत, शराब-शबाब और मंचीय गायकी तक सीमित रखकर ग़ज़ल में नहीं उतर सके, उनमें ग़ज़ल की कसक अभी बरकरार है।

मशहूर शायर डॉ. बशीर बद्र का एक शेर है –

नज़्म, ग़ज़ल, अफ़साना, गीत, एक तिरा ही गम था जिसको हमने
कैसा–कैसा नाम दिया है, कैसे–कैसे बाँट लिया है।

इस शेर में डॉ. बशीर बद्र साहब ने भले नज़्म (कविता) और ग़ज़ल को एक ही सीमा में बांधा हुआ है पर जब कविता और ग़ज़ल की परिभाषाएं पढ़ते हैं तो अनेक अर्थ और मान्यताएं सामने आती हैं।

उर्दू के बड़े समीक्षक डॉ. अर्शद ज़माल ने अपने एक लेख में जिक्र किया है–

'स्वर्गीय रघुपति सहाय उर्फ़ फ़िराक गोरखपुरी साहब ने ग़ज़ल की बड़ी ही भावपूर्ण परिभाषा लिखी है–'जब कोई शिकारी जंगल में कुत्तों के साथ हिरन का पीछा करता है और हिरन भागते–भागते किसी ऐसी झाड़ी में फंस जाता है, जहां से वह निकल नहीं सकता, उस समय उसके कंठ से एक दर्द भरी आवाज़ निकलती है। उसी करूण स्वर को ग़ज़ल कहते हैं। आगे अपनी बात जोड़ते हुए डॉ. ज़माल लिखते हैं–'इसलिए विवशता का दिव्यतम रूप में प्रगट होना, स्वर का करुणतम हो जाना ही ग़ज़ल का आदर्श है।

दूसरी तरफ जब कविता के बारे में फिराक साहब से पूछा जाता है तो बात कुछ और निकलकर सामने आती है।

हिन्दी के बड़े समालोचक स्वर्गीय डॉ. प्रभाकर श्रोत्रीय की आलोचनात्मक किताब 'कवि परम्परा–तुलसी से त्रिलोचन' के पहले ही अध्याय, जो कि तुलसीदास जी पर ही है, उसका शीर्षक है–'ध्यान से सुनना सदियाँ बोल रही हैं'। यह शीर्षक, रघुपति सहाय उर्फ़ फ़िराक गोरखपुरी की ग़ज़ल का ही एक मिस्रा है। तुलसीदास जी पर लिखी जा रही समालोचना में फ़िराक गोरखपुरी के मिस्रे का जिक्र और वह भी शीर्षक के रूप में, सबको चौंकाता है। चौंकाने वाली बात यह भी है कि इस किताब के पहले पेज का पहला पैराग्राफ ही उर्दू भाषा से

भरा हुआ है। पहले पैराग्राफ के सातवें शब्द माहिरेनक्कीद से लेकर अजीमुश्शान, हकीक़तआश्ना, तनकीएताम, मुसाहिबे, तुर्शज़बान जैसे अनेक ठेठ और कठिन उर्दू शब्दों का प्रयोग साहित्य की गंगा जमुनी तहजीब का परिचायक तो है ही, कविता में ग़ज़ल की स्थति को भी बखूबी स्पष्ट करता है।

दरअसल फिराक गोरखपुरी साहब की जन्मशती पर 'वागर्थ' पत्रिका के लिए डॉ. प्रभाकर श्रोत्रीय जी को कुछ विशेष सामग्री देनी थी। इसके लिए उन्होंने, उनके अजीज दोस्त रेवतीलाल शाह से मदद माँगी। 'वागर्थ' के इस अंक में रेवतीलाल शाह साहब का भी एक संजीदा मगर दिलकश लेख शामिल था। श्री शाह के इस लेख में हिंदी के जाने माने ललित निबंधकार श्री उमाकांत मालवीय द्वारा फिराक गोरखपुरी साहब से लिए गए एक साक्षात्कार का हवाला दिया गया था। चूँकि फिराक गोरखपुरी साहब हिंदी, उर्दू, अरबी और फारसी भाषा के बहुत बड़े जानकार थे, गोरखपुर में जन्मे होने के कारण संस्कृत पर भी पकड़ रखते थे। उर्दू में लिखते थे और अंग्रेजी के प्राध्यापक थे और शायरी की हर भाषा को गहरे तक जानते थे। उमाकांत मालवीय जी उनसे एक सवाल पूछते हैं – 'आप इतनी भाषा के काव्य से परिचित हैं, किसी एक कवि का नाम जबान पर आएगा तो किसका आएगा?'

उत्तर था – 'तुलसीदास का और किसका?'

आगे पूछा गया–'आपको लगता है कि आप उनके सहयात्री हैं?'

किंचित उत्तेजित होकर फ़िराक साहब ने उत्तर दिया –

'क्या मूर्खतापूर्ण बात करते हो, मैं सूर, तुलसी, कबीर और मीरा के करोड़ मील दूर तक ग़ालिब, इकबाल और टैगोर को नहीं मानता तो मेरी तो बिसात ही क्या है।

खुद रेवतीलाल शाह साहब ने एक बार फ़िराक से तुलसी के बारे में उनकी राय जानना चाही थी, तो कहने लगे थे :

'मियाँ एक लाख फ़िराक मिलकर भी तुलसी का मुकाबला नहीं कर सकते। तुलसी की कविता जब कान में पड़ती है तो ऐसा लगता है कि एक-एक शब्द के साथ कान में अमृत टपक रहा हो।

फिराक साहब ने ताउम्र अधिकाँशत: ग़ज़लें कहीं। उर्दू से अतिशय प्रेम के कारण अपना नाम तक रघुपति सहाय से फिराक गोरखपुरी रख लिया फिर उन्हें तुलसी जी में क्या मिल गया, जो अंग्रेजी, उर्दू, अरबी, फारसी और दूसरी ज़बानों में नहीं था।

कारण साफ़ है कि जब तुलसीदास के सम्पूर्ण जीवन को आत्मसात करने पर उसके मंथन से जो रस टपकता है , उस रस से सिर्फ़ कविता बनती है और जब भागते-भागते जीवन, किसी ऐसी झाड़ी में फंस जाता है, जहां से वह निकल नहीं सकता, पर जीने की उम्मीद बरकरार रहती है, तब वो दर्द भरी आवाज़ ग़ज़ल कही जाती है, ग़ज़ल, कविता का एक प्रकार हो सकती है पर कविता नहीं। यानि अलग से कोई इसका रूप नहीं हो सकता।

हालांकि कविता के विकास में ग़ज़ल की भूमिका, कविता की रस सत्ता में जबरदस्त मिठास घोलती है। यही नहीं तुलसी, मीरा, सूर और कबीर से आगे आते हुए छायावाद की चौखट से थोड़ा अंदर घुसने के बाद जब सचिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय रास्ते में खड़े मिलते हैं, वहां कुछ समय के लिए कविता की गीत धारा टूटती हुई दिखाई पड़ती है और वहीं कहीं बेनज़र दुष्यंत कुमार हिंदी ग़ज़ल के रूप में एक अलग से विशाल मकान तैयार कर रहे होते हैं, जहां कविता को छंद की हल्की सी ताकत मिलती है और धीरे-धीरे ये ताकत कविता को नए प्राण देती है।

दुष्यंत के समय में हिन्दी कविता एक नया रूप अख्तियार कर रही होती है। ऐसे नाजुक दौर में दुष्यंत एक अवसर लेकर ग़ज़ल को हिन्दी में लिखने का प्रयास करते हैं। वो गज़ल कहते नहीं, लिखते हैं इसलिए बहर से बेपरवाह हो जाते हैं पर निराला के गीतों की तरह छंद के आसपास रहते हैं। वे ग़ज़ल के श्रोता नहीं, पाठक तैयार करते हैं और ग़ज़ल के माध्यम से कविता के विकास की नयी इबारत लिखते हुए दिखाई पड़ते हैं।

दुष्यंत कुमार की मात्र 52 ग़ज़लों के सिर्फ एक संकलन 'साये में धूप' ने ग़ज़ल का वह माहौल पैदा किया कि समकालीन अन्य कविताओं की प्रवृतियां वह असर पैदा नहीं कर सकीं। दुष्यंत कुमार के लेखन की शुरुआत नई कविता से हूई। उन्होंने गीत और कहानियां भी लिखीं लेकिन शोहरत हासिल हुई ग़ज़ल से। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि दुष्यंत कुमार ने ही हिंदी कविता को गज़ल के लहजे से जीवनदान दिया। तत्कालीन कवियों ने भले उस समय दुष्यंत को न कवि ही और न शायर ही माना हो मगर आज अगर ग़ज़लकारों की इतनी लम्बी फहरिस्त है और दिन पर दिन बढ़ती जा रही है तो वह दुष्यंत की ही देन है। सरदार मुजावर की आज से 21 बरस पहले 2001 में प्रकाशित कृति 'हिन्दी ग़ज़ल का वर्तमान दशक' के अनुसार सन् 1990 के बाद हिन्दी ग़ज़लों की एक बाढ़ सी आई प्रतीत होती है। अगर दुष्यंत से पहले के बड़े रचनाकारों अमीर खुसरो, कबीर, भारतेंदु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद और निराला को छोड़ भी दिया जाए तब भी दुष्यंत के बाद के बड़े कवियों प्रयाग शुक्ल और रामदरश मिश्र जैसे कवियों का ग़ज़ल में उतरना कविता के विकास में ग़ज़ल की बड़ी दखल है। यहाँ तक कि मंच पर अपनी हास्य कविताओं से सबको लुभाने वाले बड़े कवि अशोक चक्रधर, सुरेंद्र शर्मा, अल्हड़ बीकानेरी और माणिक वर्मा सरीखे कवि ग़जल लिखते रहे हैं /लिख रहे हैं तो यह भी कविता को आगे बढ़ाने में ग़ज़ल का एक अप्रतिम योगदान है।

माणिक वर्मा के ग़जल संग्रह 'ग़ज़ल मेरी इबादत है' की भूमिका लिखते हुए मशहूर शायर डॉ. बशीर बद्र ठीक ही लिखते हैं-'कवि सम्मेलनों में व्यंग्य कविता पढ़कर इन्होंने वो मक़बूलियत हासिल की, जो लोग व्यंग्य और उसकी एक्टिंग करके हासिल करते हैं।.......नए ज़माने की खूबसूरत शायरी तजुर्बो में बसी होती है और ऐसी ग़ज़ल बन जाती है, जो हिन्दी के सरमाये में इजाफा करती है।' यहां डॉ. बशीर बद्र का हिन्दी से आशय हिंदी कविता से है। अगर वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. श्यौराज सिंह बेचैन अपने नाम के आगे 'बेचैन' तखल्लुस के रूप में इस्तेमाल

करते हैं तो वह भी कहीं ग़ज़ल की ही परिणिति है। आज अगर हिन्दी कविता के लोग आवारा, पागल, दीवाना, मस्ताना आदि तखल्लुस का इस्तेमाल कर रहे हैं तो वह भी ग़ज़ल की ही देन है। यही नहीं अगर कविता में कुछ लोग दर्द की कहानियां कह रहे हैं तो इसके पीछे भी कहीं न कहीं ग़ज़ल की ही मौजूदगी है। कुछ अगर ग़जल को इश्क और मुहब्बत, शराब-शबाब और मंचीय गायकी तक सीमित रखकर ग़ज़ल में नहीं उतर सके, उनमें ग़ज़ल की कसक अभी बरकरार है।

समकालीन कविता जो एक समय अपनी भाषा शैली, असहजता और छल के कारण समाज से कट गई थी। उस वातावरण में गजल ने अपने खूबसूरत अंदाज, शिल्प, एक अलग तरह की भाषा और लहजे में सामाजिक शोषण और विषमता के खिलाफ अपनी जबरदस्त उपस्थिति दर्ज की। सबसे बड़ी बात यह भी है कि गजल में निहित उसके प्रेम तत्व ने एक बड़े युवा वर्ग को सदा अपनी तरफ खींचकर रखा। हालांकि प्रेम और प्रकृति के तत्व कहीं न कहीं छायावाद की कविताओं में भी था, लेकिन माना जाता है कि छायावादी कवि मिथक और कल्पना में अधिक जीते थे। शायद इसीलिए दिनकर जी ने भी छायावाद के खिलाफ स्वच्छंदतावाद की बुनियाद रखी और यथार्थ की ओर आने का संकेत दिया। ग़ज़ल अपने लबों, लहजों, अपनी तकनीक अपने मुहावरों, कहन और गीतात्मकता के कारण पाठकों और श्रोताओं की पहली पसंद बन गई। उर्दू गजल में जिस प्रेम का जिक्र था, हिंदी गजल में आकर वह मानव प्रेम में बदल गया। यही वजह है कि भारतेन्दु भी इसे नजरअंदाज नहीं कर सके और उन्होंने ग़ज़लों के साथ साथ ग़ज़ल के अंदाज में कई रचनाएं लिखीं।

हिंदी गजल पर यह आरोप भी धीरे-धीरे मिटता चला गया कि वह काव्य तत्व से दूर थी। वहां जो प्रेम था उसमें पाकीज़गी थी। प्रयोगवादी कविता की तरह वहां रक्त खौला देने वाली बात नहीं थी। लेकिन यह भी मानना होगा कि गजल कोई भी बात खुलकर नहीं कहती। एक शेर के हजार अर्थ होते हैं। पाठक या श्रोता अपने हिसाब से उसका अर्थ निकालता है।

हमने माना कि ये पत्थर का शहर है लेकिन
ये जरूरी तो नहीं खुद को बनालो पत्थर। —ज्ञान प्रकाश विवेक

पूरे बदन पर सलवटें ही सलवटें हैं
चलो रब के घर कपड़े बदलते हैं। —राम अवतार बैरवा

ग़ज़ल ने हिंदी कविता को विकसित ही नहीं किया, कविता को नयी पहचान भी दिलाई। कई शायरों ने जीवन में एक ही अच्छा शेर कहा मगर अमर हो गए। लोग उन शायरों के नाम नहीं जानते पर शायरी के मुरीद हैं-

जब सारा जीवन बीत गया वनवासी जीवन को ढोते
तब पता चला इस दुनिया में सोने के हिरण नहीं होते। —अनाम

हिन्दी में ग़ज़ल कहने या लिखने वाले अलग से नहीं पहचाने जाते, उन्हें अभी कवि ही कहा जाता है।

पर शायद अन्य विधाओं में साथ-साथ लिखने वाले ये अवश्य महसूस करते हैं कि ग़ज़ल का एक शेर वह बयां कर देता है, जो एक पूरा उपन्यास नहीं कह पाता। अगर शेर में एक पूरा उपन्यास कहने की ताकत नहीं तो वह शेर दूर तक नहीं पहुंच सकता। इसीलिए लोकप्रिय शायर रामअवतार बैरवा कहते हैं -

तेरी तर्जे-तहरीर मुझको तब कहीं रूहानी लगे,
तू कहानी कहे तो कविता लगे, कविता कहे तो कहानी लगे।

एक अनाम शेर कैसे मुकम्मल जिंदगी बयां कर जाता है-

बेलिबास आए थे इस जहान में,
एक कफन के लिए इतना संघर्ष करना पड़ा। —अनाम

हां यह भी है कि ग़ज़ल में एक शेर को समझने के लिए दूसरे शेर को पढ़ने की कतई जरूरत नहीं होती पर कविता की स्थिति थोड़ी भिन्न है। बिना पूरी कविता पढ़े इस निष्कर्ष पर पहुंचना कठिन हो जाता है।

भाषाई दृष्टि से एक बात और लाजिमी है कि अगर उर्दू हिन्दी को एक करके देखा जाए तो ग़ज़ल, कविता की जुड़वां बहन दिखाई पड़ती है। खुद दुष्यंत ने भी लगभग 20 प्रतिशत शब्द उर्दू के इस्तेमाल किए हैं। विख्यात कथाकार कमलेश्वर ने 2006 में अपने सम्पादन में उर्दू, हिन्दी के 100 से अधिक श्रेष्ठ शायरों का जो संकलन राजपाल प्रकाशन से प्रकाशित हुआ है, उसे 'हिन्दुस्तानी ग़ज़लें' नाम दिया है। अगर भारत के पूर्व महामहिम राष्ट्रपति श्री के. आर. नारायणन द्वारा 1999 में दिए गए अभिभाषण का जिक्र किया जाए तो उन्होंने भी यह बात कही थी 'उर्दू भारत की सामासिक संस्कृति का ख़जाना है। इस प्रकार उर्दू भाषा विविधताओं भरे हमारे विशाल देश में राष्ट्रीय एकता और अखंडता, साम्प्रदायिक सौहार्द और सामाजिक एकता का एक सौम्य और सशक्त साधन हो सकती है।' कहना और सार्थक होगा कि भारत के तीन बड़े हिन्दी भाषी प्रदेश उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश और राजस्थान के लोगों की ज़बान में 20 प्रतिशत शब्द उर्दू के समाहित होते हैं। हिन्दी कविता तक जीवन, दुकान, ताजा, कत्ल, अखबार आदि विदेशी भाषाओं के सहारे पूर्ण हो पाती है, जब कि उर्दू तो हमारी खुद की बनाई, बढ़ाई भाषा है और जब हिन्दी ग़ज़ल की बात आती है तो दुष्यंत 'साये में धूप' की भूमिका लिखते हुए खुद स्वीकार करते हैं-कि उर्दू और हिन्दी अपने-अपने सिंहासन से उतरकर जब आम आदमी के बीच जाती है तो उसमें फर्क कर पाना बड़ा मुश्किल होता है। मेरी नियत और कोशिश यही रही है कि इन दोनों भाषाओं को और करीब ला सकूं। इसलिए ये ग़ज़लें उस भाषा में लिखी गई हैं, जिसमें मैं बोलता हूँ।

हालांकि जब गूगल पर सर्च करते हैं तो दुष्यंत की 'साये में धूप' किताब का स्वरूप 'कविताएं' मिलता है और ग़ज़ल को यहां विधा कहा गया है। फिर डॉ. बशीर बद्र का जिक्र किया जाए तो उन्होंने अपनी किताब 'अमीर खुसरो-ता-बशीर बद्र' में लिखा है-'कालीदास, मीरा, कबीर, मीर और गालिब किसी भाषा के नहीं बल्कि शायरी के नाम हैं।'

निस्संदेह गजल ने अपने सौंदर्य, लचीलेपन, भाव भंगिमा और संगीत से कविता को नया आयाम दिया है। आलोचक भले गजल को कविता मानने से इनकार करते रहे, पर पाठकों और श्रोताओं की स्वीकृति उसे हरदम मिलती रही। आलोचकों ने तो तब भी और आज भी दुष्यंत कुमार को ग़ज़लकार नहीं माना जब कि दुष्यंत के कारण या यूं कहें कि हिन्दी ग़जल के कारण कविता और ग़ज़ल का भेद मिटा।

दुष्यंत की ग़ज़लें भले पूरी तरह बहर में न हों पर उनकी गजल के साथ ही लगभग एक दशकीय अज्ञेयवादी हिन्दी कविता के समांतर कविता में छंद की वापसी हुई। हालांकि दुष्यंत ने भी नयी कविताएं खूब लिखी। बल्कि यूं भी कह सकते हैं कि अपने ग़ज़लों में नयी कविता के शिल्प को उतारकर देखा और बहुत सफल हुए।

दुष्यंत की ग़ज़लों ने हर सुख-दुख को, हर्ष-विषाद को आशा-आकांक्षा को अपना विषय बनाया। डॉ. आर पी शर्मा महर्षि के अनुसार ग़ज़ल समसामयिक जीवन में उपयोगी तथा अपनी धरती और परिवेश से जुड़ी हुई है। इसलिए हम पक्के तौर पर कह सकते हैं कि हिंदी गजल जिस सामाजिक चिंता से गुजरती है, वह उसे दीर्घ जीवी बनाती है। किसी भी कविता का जनजीवन का सरोकार जितना गहरा होता है, वह रचना उतनी प्रभावी होती है। ग़ज़ल के बारे में डॉ. इंद्रनाथ सिंह का मानना है छांदसिकता, गीतात्मकता आदि कारकों के साथ जीवन के सभी पक्षों को सहजता के साथ अभिव्यक्त करने की अद्‌भुत क्षमता ने ही हिंदी कविता में ग़जल के मार्ग को सुगम किया। एक बात और कि ग़ज़ल लिखना इतना सरल नहीं है पर उसका अपना एक अंदाज है, एक ढांचा है और अगर वह प्रभावित न कर सके तो ग़ज़ल भी नहीं है। डॉ. सरदार मुजावर का विचार है कि नई कविता की छंदमुक्तता, गद्यमयता और सपाट बयानी से निजात दिलाने का काम गजल ने किया। वास्तव में हिंदी कविता में गजल वह काव्य विधा है, जिसमें सबसे पहले युगीन परिवेश और सामाजिक जीवन का यथार्थ साक्षात्कार दिखाई देता है। समीक्षक डॉ. अनिरुद्ध सिन्हा लिखते हैं कि ग़ज़ल मनुष्यता को केंद्र में रखकर ही अपनी बात कहती है।

यह भी कहना जरूरी है कि दुष्यंत से पहले भी हिन्दी में ग़ज़लें लिखी गई हैं। अमीर खुसरो, कबीर, भारतेंदु मिश्र, जयशंकर प्रसाद और निराला सरीखे रचनाकारों ने ग़ज़ल कही हैं मगर ग़ज़ल लिखने का अनूठा प्रयास निस्संदेह दुष्यंत कुमार ने ही किया है। हिंदी ग़ज़ल जब अमीर खुसरो से राम अवतार बैरवा तक पहुंचती है तो उसमें कई नए आयाम, उपमाएं और अलंकार जुड़ जाते हैं। यहां तक कि वो दरबार से निकलकर घर बाहर तक पहुंचकर जन-जन की भाषा बन जाती है। यही कारण है कि चानन गोविंदपुरी को कहना पड़ा कि गजल वह जानदार बूटा है जो हर प्रकार की जमीन में उगने और हर मौसम में विकसित होने का सामर्थ्य रखता है।

आज हिंदी गजल आंदोलन के रूप में खड़ी है। हिंदी में अच्छी ग़ज़लें लिखी जा रही हैं, जिसमें शिल्पगत सौंदर्य भी है और भावगत सौंदर्य भी। हिंदी के कई गज़लगो हैं, जिन्होंने दुष्यंत की परंपरा को सलीके से संभाल रखा है। समकालीन हिंदी के समृद्ध ग़ज़लकारों में जहीर कुरैशी, विनय मिश्र, विज्ञान व्रत, राजेश रेड्डी, रामकुमार कृषक, अदम गोंडवी, पवन कुमार और रामअवतार बैरवा आदि के नाम महत्वपूर्ण हैं।

हिंदी कविता में ग़ज़ल आज अपनी ताकत, संप्रेषण कौशल, प्रस्तुतीकरण और गहराई के कारण फल-फूल रही है। हर आदमी ग़ज़ल का दीवाना है। बड़ा कारण यह भी है कि ग़ज़ल के हर शेर में आम जन को अपनी आवाज सुनाई देती है। हिंदी के कुछ महत्वपूर्ण ग़ज़लकारों के शेर भी इस संदर्भ में देखे जा सकते हैं-

दीवारों पर दस्तक देते रहिएगा, दीवारों में दरवाज़े बन जाएंगे। -डॉ. कुंवर बेचैन

जब जब जोड़ लगाता हूं। अक्सर खुद घट जाता हूं। -विज्ञान व्रत

कोई शिल्पी उसे यूं छोड़ गया, वह न मूरत है अब न पत्थर है। - हरेराम समीप

मुझको उस वैद्य की विद्या पर तरस आता है, भूखे लोगों को जो सेहत की दवा देता है।

-गोपाल दास नीरज

तमाम शहर में घूमकर आ गए बादल, कहाँ बरसते हर तालाब में झुग्गियां हैं।

बिगड़ता है इंसां सुधरते-सुधरते, सुधरती है ग़ज़ल बिगड़ते-बिगड़ते। - रामअवतार बैरवा

कहना न होगा कि अपनी इसी विशेषताओं के कारण हिंदी कविता में ग़ज़ल अपनी स्थिति को दिन पर दिन बढ़ाते और बनाए हुए है। इसका लबो लहजा, अंदाज़ प्रस्तुतीकरण और बुनियादी ढांचा इसे सबसे अलग और सबसे बेहतर असर बनाता है। हिन्दी काव्य मंच पर तो स्थिति यह है कि हर कवि बिना शायरी के अपनी कविता कहता ही नहीं। ग़ज़ल ने भले 'वाह-वाह' शब्द ही उत्पन्न किए हों, परन्तु बहुत से शायर 'आह' शब्द भी उत्पन्न करते हैं। हिन्दी ग़ज़ल अभी भले 50 बरस की ही हुई हो पर जल्द ही वह इस प्रौढ़ता से आगे बढ़ेगी और कविता के 'आह' तक पहुंचकर नए आकाश चूमेगी।

संदर्भ :

1. नचिकेता वर्ष 2014, अष्टछाप पृष्ठ 8, फोनिम पब्लिकेशन दिल्ली 53
2. श्री आरपी शर्मा महर्षि, वर्ष 2005, ग़ज़ल लेखन कला, पृष्ठ 15, मीनाक्षी प्रकाशन दिल्ली 92
3. श्री माणिक वर्मा, ग़ज़ल मेरी इबारत है, वर्ष 2010, डायमंड बुक्स, दिल्ली
4. डॉ. प्रभाकर श्रोत्रीय, कवि परम्परा रू तुलसी से त्रिलोचन, भारतीय ज्ञानपीठ
5. डॉ. नरेश, वर्ष 2004, हिंदी गजल दशा और दिशा पृष्ठ 85, वाणी प्रकाशन दिल्ली
6. सरदार मुजावर, वर्ष 2001, हिन्दी ग़ज़ल का वर्तमान दशक तथा 2007, हिंदी की छायावादी गजल, वाणी प्रकाशन दिल्ली
7. अनिरुद्ध सिन्हा वर्ष 2009 हिंदी ग़ज़ल का सौंदर्यात्मक विश्लेषण, पृष्ठ 20, जवाहर पब्लिकेशर्स नई दिल्ली 16
8. अमीर खुसरो-ता-बशीर बद्र, वाणी प्रकाशन, सन् 2000
9. विज्ञान व्रत, 2018, जैसे कोई लौटेगा पृष्ठ 76 अयन प्रकाशन नई दिल्ली
10. दुष्यंत कुमार नया संस्करण वर्ष 2014 साए में धूप, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली
11. राम अवतार बैरवा के ग़ज़ल संग्रह 1. सुबह 2. दोपहर
12. गूगल सर्च

❑❑❑

शोधार्थी (हिन्दी विभाग), दिल्ली विश्वविद्यालय

सुरेश्वर त्रिपाठी की कहानियों में चित्रित ग्रामीण जीवन

—मंजू देवी

सुरेश्वर त्रिपाठी की कहानियों में गाँव के लोग अभावग्रस्त जीवन जीते हुए भी प्रकृति की गोद में विशाल आकाश के नीचे शांतिप्रिय जीवन राजी-खुशी बिताते हुए दिखाई देते हैं। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए खेती व मजदूरी ही उनके मुख्य साधन है। उनके पास एक अन्य विकल्प गाँव से पलायन है। शहरों में जाकर जीविका कमाना और अपना जीवन निर्वाह करना लोगों को सही लगता है। "अतिथि देवों भवः' परम्परा को गाँव में लोग आज भी जिन्दा रखे हुए हैं।

अपने जीवन का अनमोल हिस्सा गांव में व्यतीत करने वाले सुरेश्वर त्रिपाठी ने अपने कथा साहित्य में ग्रीण जीवन का सजीव एवं यथार्थ वर्णन किया है। त्रिपाठी जी ने अपनी कहानियों में ग्रामीण परिवेश, बोलचाल, रहन-सहन, रीति-रिवाज, जीवन में व्याप्त अनेक समस्याओं को शब्द चित्र द्वारा हर रंगरूप में रेखांकित किया है। खेतों में दूर-दूर तक लहराती फसलें, कड़ी धूप और खुले आसमान के नीचे काम करता किसान, घरों की भागदौड़ संभालती तथा खेतों में मजदूरी करती स्त्रियां, बरगद की जड़ों में बैठी लोगों की मण्डली तथा चारा खाते मवेशी आदि के सजीव चित्र गांव के प्रति त्रिपाठी जी की संवेदना तथा उनके गहन अनुभव को दर्शाते हैं। ग्रामीण अंचल में जन्में त्रिपाठी जी ग्रामीण जीवन की नस-नस से परिचित है। भरतीय ग्रामीण जीवन को उन्होंने सम्पूर्ण यथार्थ के साथ चित्रित किया है।

हमारे साहित्यकार ग्रामीण यथार्थ से अवगत हैं। वर्तमान समय में ग्रामीण संस्कृति में आ रहें उथल-पुथल को वे समझते हैं। इसलिए उनकी रचनाओं में ग्रामीण समाज की वास्तविकता का अंकन देखने को मिलता है। 'बड़की मामी', 'बन्द होठों की चीत्कार', 'छोटी सी भूल', 'कौए की चोंच', 'महुए का पेड़', 'परबतिया के आंसू', 'रतनपुरा की बसंती', 'रिखऊ बाबा', 'मत छूना मुझे', 'जासूस' आदि कहानियों में ग्रामीण परिवेश तथा संस्कृति के हर रंग रूप तथा पहलू के दर्शन होते हैं। बड़की मामी कहानी की शुरूआत में ही ग्रामीण परिवेश की झलक देखने को मिल जाती है – "घर के बाहर ही जामुन, आम, अमरूद, आंवले, नींबू आदि के पेड़ों के कारण वहां काफी हरियाली बनी रहती थी और बड़े पेड़ों की घनी छांव-चारपाइयों पर लेटकर-बैठकर लोग आपस में बातें किया करते थे। वहां का माहौल ऐसा था कि केवल मामा के घर के ही नहीं गांव के आस-पास के लोग भी आकर समय बिताया करते थे। दरवाजे पर ही नाद बने हुए थे जिनके सामने गाय-बैल

और भैंसे बंधी रहती थी। मनोज को देखते ही (बाबू-लाल) ने एक चारपाई बिछायी और गुड़-पानी लाकर दिया।"[1]

लेखक ने बड़की मामी, बुधिया की माई तथा सुरेश की मां आदि मुख्य नारी पात्रों को इन्हीं नामों से संबोधित किया है। इन पात्रों के अपने मूल नाम नहीं हैं। लेखन ने ऐसा ग्रामीण परिवेश तथा संस्कृति को ध्यान में रखकर ही किया है क्योंकि गांव में विवाहित स्त्री को मूल नाम से नहीं पुकारा जाता बल्कि उसके बच्चों के नाम से पुकारा जाता है। लेखक ने 'बन्द होठों की चीत्कार' तथा रिखऊ बाबा कहानी के माध्यम से ग्रामीण लोगों की दिनचर्या पर प्रकाश डाला है।

"लोग भोर से ही दिनचर्या शुरू कर देते हैं। मवेशियों की संख्या के अनुसार श्रम भी करना पड़ता है। जिनके यहां अधिक मवेशी होते हैं, उनके यहां काम भी ज्यादा होता है। रिखऊ बाबा भोर में ही उठ जाते हैं। पहले दरवाजे पर रातभर में मवैशियों द्वारा किये गए गोबर को वे खांची से उठाते, उसे ले जाकर एक गड्ढे में डालते हैं। ये गोबर या तो कंपोस्ट खाद बनाने के काम आता है या इसके उपले बनाये जाते हैं। इसके बाद वे सूखी अरहर से बनी एक लंबी झाड़ू से पूरा दरवाजा साफ़ करते और वह कूड़ा भी खेतों में ले जाकर फेंकते हैं। चारा मशीन से हरा चारा काटकर रखने के बाद नादों में भूसा डालते, उसमें थोड़ा हरा चारा मिलाते और फिर मवेशियों को झोंपड़ी से निकालकर नाद की ओर लाया जाता। कभी-कभी रात में घर के बचे खाने और खीर आदि को मिलाकर मवेशियों के नाद में डाला जाता। यह उनके लिए स्वीट डिश की तरह होता था।"[2]

गांव के लोगों का आर्थिक जीवन प्राय: खेती पर ही निर्भर होता है। अधिकांश लोग खेती करके अपने परिवार का पेट पालते हैं। किसान पूरा दिन मेहनत करके अपना ही नहीं बल्कि पूरे देश के लोगों का पेट भरते हैं। खेतों में लहराती फसलें किसानों में उम्मीद की किरण जगा देती हैं। यही उम्मीद किसान को और अधिक मेहनत करने के लिए उत्साहित करती है। लेखक ने कहीं गेहूं, मटर व चने की फसलों को हरे रंग की चादर में लिपटे हुए दिखाया है तो कहीं गन्ने और अरहर की फसलों को खेतों में लहराते हुए दिखाया है। 'रिखऊ बाबा' कहानी में लेखक ने फसलों की जुताई तथा बुआई का सजीव वर्णन किया है - "खेतों की बुआई के पहले सारे खेतों की जुताई होती। एक दो बार जुताई के बाद पाटा चलाकर मिट्टी को समतल किया जाता। ऐसे समय भोर में ही उठना होता। गाय भैंसों के चारे का नंबर बाद में आता। चूंकि पहले खिला-पिलाकर तैयार करना होता। खेतों की तैयारी के बाद बुआई शुरू होती। जिस खेत में धान की रोपनी करनी होती उसमें पानी का लबालब भरा होना जरूरी होता। बरसात ने कृपा कर दी तो ठीक नहीं तो ट्यूबवेल से पानी भरकर धान की रोपनी करनी पड़ती। दिन भर कीचड़ में इधर-उधर भागना पड़ता।"[3] लेखक ने गन्ने के रस से गुड़ बनाने की पूरी प्रक्रिया का सजीव वर्णन भी अपनी कहानियों में किया है।

गांव वासियों के लिए परम्पराओं तथा रीति-रिवाजों का उनके जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। वे हर छोटी-छोटी से रस्मों को पूरे विधि-विधान तथा उत्साह के साथ करते हैं। लेखक ने 'छोटी सी भूल' कहानी में विवाह के समय निभाई जाने वाली वररक्षा, तिलक की रस्म, दहेज, द्वारपूजा, आदि रस्मों को लेखक ने दर्शाया है। शादी की सबसे पहली रस्म वररक्षा (बरक्षा) होती है। जिसमें लड़की वालों की तरफ से कुछ लोग लड़के वालों के घर आकर लड़के की छोटी सी पूजा करके उसकी बुकिंग कर लेते हैं। पास-पड़ोस में मिठाई बाँटकर विवाह तय होने की सूचना

दे दी जाती है। उसके बाद तिलक की रस्म होती है। तिलक के अवसर पर लड़की वाले तरफ से लड़के वालों को समान तथा दान-दहेज दिया जाता है ं गांव के लोग दहेज लेना और देना गलत नही मानते। "गांव में देने वाले खुशी से दे रहे थे और लेने वाले शान से सिर उठाये दहेज ले रहे थे। इस कुप्रथा के खिलाफ बोलना तो दूर, सोचना भी गांव के उस माहौल में संभव नहीं था।"[4] तिलकोत्सव के दौरान औरतें तथा लड़कियां तरह-तरह के गीत गाती हैं। तिलक की रस्म के बाद लोगों को रात का भोजन करवाया जाता है। 'बड़की मामी' कहानी में लेखक ने लड़के के छ: दिन का होने के बाद मनाई जाने वाली 'छठियार का रस्म' पर भी प्रकाश डाला है। उस दिन पूजा-पाठ तथा भगवत् गीता का महापाठ कराया जाता है। घर में त्यौहार जैसा माहौल होता है। पूजा के बाद गाँवों के लोगों को भोजन करवाया जाता है जिसमें तरह-तरह के पकवान तथा मिठाईयां बनाई जाती हैं।

गाँव में लड़का तथा लड़की की शादी के लिए उनसे सलाह लेना जरूरी नहीं समझा जाता। परिवार के पुरुष स्वयं ही मिल बैठकर रिश्ता पक्का कर देते हैं। लड़का या लड़की दोनों में किसी की हिम्मत नहीं होती कि वे अपनी मर्जी से विवाह कर सकें। 'छोटी सी भूल'- कहानी में यही होता है। अपनी शादी तय होने की बात पर रवि अपने दोस्त उदय से कहता है "अरे नहीं यार, मैं तो उस लड़की को न तो जानता हूं और न ही देखा हूं।"[5]

ग्रामीण समाज में अनेक तरह की समस्याएं दिखाई देती हैं जैसे शिक्षा की समस्या, चिकित्सा की समस्या, यातायात से संबंधित समस्याएं तथा असुरक्षा की भावना आदि। त्रिपाठी जी ने अपने कहानियों में गांव की अभावग्रस्त जिन्दगी का यथार्थ चित्रण किया है। सुरेश्वर ने 'बन्द होठों की चीत्कार' कहानी में गांव में चिकित्सा सुविधा के अभाव की समस्या को दर्शाया है। गांव में अस्पताल न होने के कारण गांव के लोग शहरों में जाकर इलाज कराते हैं। गांव से अस्पताल तक कई घण्टों का रास्ता था। सुनैना के पति को जहरीले सांप ने काट लिया, जिस कारण उसकी जान खतरे में थी "जल्दी ही अस्पताल पहुंचाने की व्यवस्था करनी होगी, तय किया गया कि चारपाई को ही चार लोग उठाकर रामनगर तक ले चलेंगे और वहां से कार से पाहुन को गोरखपुर अस्पताल पहुंचा दिया जायेगा। तीन किलोमीटर का रास्ता तय करने में लगभग एक घंटा लगा। एक आदमी आगे से दूसरा पीछे से टॉर्च जलाते हुए चल रहा था। रामनगर से पाहुन को पिछली सीट पर लिटाया गया। करीब डेढ घंटे में ही लोग गोरखपुर पहुंच गये। वहीं असपताल के आईसीयू में पाहुन को भर्ती करा दिया गया।[6]

गाँवों में यातायात की अच्छी सुविधाएं नहीं हैं। गांवों में सड़कों की कमी के कारण यातायात में बहुत बड़ी समस्या उत्पन्न होती है। गाँवों में पक्की सड़क और यातायात के साधन न होने के कारण लोगों को बहुत कष्ट सहने पड़ते हैं। त्रिपाठी ने 'छोटी सी भूल', 'महुए का पेड़', 'बन्द होठों की चीत्कार', 'तुम जिन्दा नहीं हो' आदि कहानियों में यातायात की समस्या को उठाया है। यातायात के साधनों तथा सड़कों की कमी के कारण दो या तीन किलोमीटर की दूरी तय करने में भी कई घण्टे लग जाते हैं। तुम जिन्दा नहीं हो कहानी में लेखक इसी समस्या पर प्रकाश डालते है - "बडहलगंज से जोगिंदर सिंह के गांव जाना भी अत्यंत दुरुह और रोमांचक होता था। वहां से लगभग बीस किलोमीटर दूर पटना घाट जाना पड़ता। खड़ंजे की सड़के से हिचकोले खाते हुए पटना घाट से लगभग तीन किलोमीटर पहले ही उतर जाना

पड़ता। वहां से पैदल तीन किलोमीटर पैदल और फिर नाव से राप्ती पार करने में कभी–कभी तीन–चार घण्टे लग जाते थे। राप्ती पार करने के बाद एक किलोमीटर फिर पैदल और तब मिलती थी जीप। जीप वाले आदमियों को भेड़ बकरियों की तरह ठूंस–ठूंस कर भरते तभी जीप आगे बढ़ती। पांच–छह आदमी जहां बैठ सकते वहां चौदह पंद्रह आदमी जीप पर लादे जाते। जीप जोगिंदर सिंह के गांव से लगभग डेढ किलोमीटर पर छोड़नी पड़ती। वहां से फिर पैदल चलने पर जोगिंदर सिंह का गांव आता।[7]

गरीबी गांव के विकास की सबसे बड़ी एवं पहली बाधा है। अनेक मुसीबतों को झेलते हुए दयनीय जीवन बिताने के लिए विवश ग्रामीणों का चित्रण सुरेश्वर त्रिपाठी ने अपनी कहानियों में किया है। आजादी के इतने वर्षों के बाद भी ग्रामीण समाज में कोई सुधार नहीं आया है। गरीबी के कारण ग्रामीण को दैनिक जीवन में अनेक यातनाओं को सहना पड़ता है। 'उपकार का बदला', 'बुधिया की माई', 'परबतिया के आंसू', 'महुए का पेड़' 'रतनपुरा की बसंती' आदि कहानियों में लेखक ने गरीबी की मार झेल रहे ग्रामीण परिवारों का वास्तविक वर्णन किया है। 'परबतिया के आंसू' कहानी में मंगरू पंडित का परिवार दरिद्रता के बीच जीवन बिता रहा था। मंगरू का खपड़ैल का घर गिर जाने के बाद वे झोपड़ी में रहने लगे थे। गरीबी ने उन्हें इतना मजबूर कर दिया कि वे हरिजनों की बस्ती में जाकर रहने लगे। परबतिया अपनी पढ़ाई को बीच में ही छोड़कर अपनी मां के साथ मिलकर मजदूरी करती थी ताकि अपने छोटे भाई बहनों को पेट भर सके। "मंगरू पंडित की बड़ी नतिनी परबतिया गांव की अकेली लड़की थी जो ब्राह्मण की बेटी होते हुए भी खेतों में मजदूरी करती थी। घर की दरिद्रता ने लोक लाज त्यागकर उसे गोंड, पासी, दुसाद, नाऊ और हरिजन जैसी जाति की लड़कियों–औरतों के साथ मजदूरी करने के लिए बाध्य कर दिया था। परबतिया की सहेलियों में एक भी ब्राह्मण घर की लड़की नहीं थी। कमला, चमेली और गुलाबों उसकी प्रिय सहेलियां थी।"[8]

त्रिपाठी जी ने गांवों में जातिगत राजनीति पर भी प्रकाश डाला है। 'महुए का पेड़' 'परबतिया के आंसू', 'तुम जिन्दा नही हो' आदि कहानियों में जातिगत राजनीति देखने को मिलती है। परबतियां के आंसू कहानी में गांव का माहौल जातिगत राजनीति में डूबा हुआ है। हरिजन पण्डितों से बदला लेने के लिए गरीब पण्डित की बेटी परबतिया की इज्जत लूट कर हिसाब–किताब बराबर करना चाहते हैं। "कैलाश हरिजन युवकों के बीच एक नेता के रूप में उभर रहा था। वह एक राजनीतिक दल से जुड़ा था, जहां दिन–रात एक बात सबको सिखाई जाती थी कि ब्राह्मणों ने उसके साथ बहुत अन्याय किया है। उसके मन में यह बात भर दी गयी थी कि उनकी बहू–बेटियों की इज्जत जब चाहते हैं, ये ब्राह्मण लूट लेते हैं। कैलाश ने बहुत दिनों पहले ही योजना बनायी कि वह किसी ब्राह्मण की लड़की की इज्जत लूटकर हिसाब–किताब बराबर कर देगा। इसके लिए सबसे उपयुक्त उसे परबतिया ही लगी।[9] 'तुम जिन्दा नही हो', कहानी में भी ब्राह्मण और ठाकुरों के अलग–अलग गुट थे और कस्बों में इन गुटों के आदमी थे जिनमें कुछ खुले तौर पर तो कुछ गोपनीय ढंग से अपने–अपने गुट के नेता के समर्थन में मरने–मारने को तैयार रहते थे।

लेखक ने गांवों में फैले लोकविश्वास और मिथकों का भी कहानियों में चित्रण किया है। 'कौए की चोंच' कहानी गांवों में प्रचलित अंधविश्वास पर आधारित हैं गांवों में लोगों का यह

लोकविश्वास है कि कौआ अगर किसी के सिर पर चोंच मार दे तो बहुत बड़ा अपशकुन हो जाता है। "इस अपशगुन को मिटाने का एक ही रास्ता है, जिस व्यक्ति को कौए ने चोंच मारी हो, उसके किसी परिजन को पहले उसके मरने की खबर दे दी जाय और जब वह आंसू बहा ले, तब उसे बता दिया जाए कि वास्तव में कोई मरा नहीं है बल्कि कौए ने चोंच मारी है।"[10] तुम जिन्दा नहीं हो "कहानी में यह लोकविश्वास है कि यदि किसी लड़की के मन में पति के रूप में किसी लड़के की छवि बन गयी तो वह आजीवन ही उसे अपना पति मानेगी। कहानी में आशा भी शादीशुदा नीलाभ को मन ही मन अपना पति मान लेती है और अपने माता-पिता से कह देती है कि वह शादी करेगी तो नीलाभ से ही करेगी नहीं तो अपनी जान दे देगी।

सुरेश्वर त्रिपाठी की कहानियों में गाँव के लोग अभावग्रस्त जीवन जीते हुए भी प्रकृति की गोद में विशाल आकाश के नीचे शांतिप्रिय जीवन राजी-खुशी बिताते हुए दिखाई देते हैं। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए खेती व मजदूरी ही उनके मुख्य साधन है। उनके पास एक अन्य विकल्प गाँव से पलायन है। शहरों में जाकर जीविका कमाना और अपना जीवन निर्वाह करना लोगों को सही लगता है। "अतिथि देवों भवः' परम्परा को गाँव में लोग आज भी जिन्दा रखे हुए हैं। गाँवों के लोगों की छोटी-छोटी खुशियाँ, मन-मुटाव, एक-दूसरे से ईर्ष्या तथा क्रोध, संस्कार मान-मर्यादा, रिश्ते नातों का बन्धन, ग्रामीण लोक भाषा, किसानी-संघर्ष, आदि सभी पहलू कहानियों में देखने को मिलते हैं। गाँव की छोटी से छोटी घटनाओं को लेखक ने पूरी संजदगी से उठाकर पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष : हम कह सकते हैं कि सुरेश्वर त्रिपाठी जी ग्रामीण के टूटते-बिखरते और जीवित मानवीय संबंधों के कथाकार हैं। त्रिपाठी जी ने ग्रामीण समाज के हर पहलू को उजागर किया है। जिसमें ग्रामीण समाज की लोक संस्कृति, ग्रामीण समाज के भविष्य के प्रति चिन्ता, ग्रामीण समाज में जीवित आत्मीयता स्त्री जीवन, रिश्तों में एकता का भाव, आपसी द्वेष, प्रेम प्रसंग, लोक परम्परा का महत्त्व, अंचल विशेष का वर्णन आदि सभी को देखा जा सकता है।

संदर्भ :

1. सुरेश्वर त्रिपाठी : मैं सिवात्री नहीं हूँ (कहानी संग्रह), पृ. 12
2. सुरेश्वर त्रिपाठी : गीली रेत का घरौंदा (कहानी संग्रह), पृ. 135
3. वही, पृ. 136-137
4. वही, पृ. 26
5. वही, पृ. 24
6. सुरेश्वर त्रिपाठी : बन्द होठों की चीत्कार (कहानी संग्रह), पृ. 22-23
7. सुरेश्वर त्रिपाठी : गीली रेत का घरौंदा (कहानी संग्रह), पृ. 69-70
8. सुरेश्वर त्रिपाठी : परबतियां के आँसू, पृ. 44
9. वही, पृ. 47
10. सुरेश्वर त्रिपाठी : गीली रेत का घरौंदा, पृ. 36

❑❑❑

पीएचडी, शोधार्थी, उच्च शिक्षा और संस्थान, हैदराबाद
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास, खैरताबाद, हैदराबाद-500004

मृत्युबोध के परिप्रेक्ष्य में तेजेन्द्र शर्मा की प्रतिनिधि कहानियाँ

—प्रो. प्रदीप श्रीधर
—चारू अग्रवाल

तेजेन्द्र जी की कहानियाँ सच्ची घटनाओं पर आधारित हैं। उनकी कहानियों में मानव मन की विभिन्न स्थितियों, परिस्थितियों एवं मनोवृत्तियों का चित्रण किया गया है। उन्होंने मृत्यु को भी अपनी कहानियों का एक सशक्त विषय बनाया है। तेजेन्द्र शर्मा किसी एक विधा से जुड़े साहित्यकार नहीं हैं, बल्कि वे एक कहानीकार, कवि ग़ज़लकार, मंच अभिनेता निर्देशक, सिनेमा कलाकार, टी.वी. सीरियल कलाकार, सम्पादक होने के साथ-साथ कथा (यू.के.) संस्था के महासचिव भी हैं।

तेजेन्द्र शर्मा आधुनिक हिन्दी साहित्य जगत् के एक ऐसे प्रतिभाशाली रचनाकार हैं, जिन्होंने अपनी रचनाशीलता और साहित्य सृजन के माध्यम से हिंदी साहित्य जगत् में एक नई पहचान हासिल की है। तेजेन्द्र शर्मा समकालीन कहानी विधा का एक ऐसा उभरा और प्रतिष्ठित नाम है, जो विदेश में रहकर भी हिन्दुस्तान की मिट्टी से जुड़े हुए हैं। तेजेन्द्र जी लगभग पिछले चार दशक से हिन्दी कहानी लेखन में सक्रिय हैं। तेजेन्द्र जी एक ऐसी पृष्ठभूमि और परिवेश के रचनाकार हैं, जिनकी तुलना अन्य किसी रचनाकार या साहित्यकार से करना कठिन हैं। मानवता की समग्र वेदना तथा करूणा उनकी कहानियों में दृष्टिगत होती है। शर्मा जी की कहानियाँ एक नये थीम और नई विषय-वस्तु को हमारे सामने लेकर आती हैं। तेजेन्द्र जी की कहानियों में मृत्यु बार-बार आती है। शर्मा जी ने न सिर्फ मृत्यु को काफी नजदीक से देखा, बल्कि उसे अनुभव और महसूस भी किया। उनकी कहानियों में मृत्यु के अलग-अलग रूप देखे जा सकते हैं।

तेजेन्द्र जी स्वयं इस संबंध में कहते हैं-"मैंने मौत को बहुत करीब से देखा है। पहले पिताजी की दिल की बीमारी से मृत्यु और फिर इंदु जी की कैंसर से मौत। इसके पहले भी विमान दुर्घटना में 329 यात्रियों की मौत जैसे हादसे किसी भी लेखक को लिखने के लिए मजबूर कर देंगे।"1

बीज शब्द : मृत्यु बोध, यथार्थ

प्रस्तावना :

प्रवासी साहित्य आज के समय में कोई नवीन अवधारणा नहीं है। आज प्रवासी साहित्य अपनी एक विशिष्ट पहचान एवं मुकाम बना चुका है। प्रवासी साहित्यकारों से तात्पर्य उन साहित्यकारों से है, जो विभिन्न कारणों से भारत से बाहर रहकर हिंदी साहित्य की रचना कर रहे हैं। प्रवास में रहते हुए उन लोगों

ने अपने संघर्ष, कठिन परिश्रम और अथक प्रयास से विभिन्न देशों में एक अलग और नई पहचान निर्मित की है। प्रवासी परिवेश में रहते हुए भी यह लोग आज भी न सिर्फ भारत बल्कि विदेशी सभ्यता और संस्कृति से जुड़े हुए हैं। इन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से भारत और प्रवासी देश के परिवेश और वहाँ की संस्कृति का साझा चित्रण प्रस्तुत किया है। इनका साहित्य विभिन्न संस्कृतियों का संगम है। प्रवास में रह रहे इन भारतीयों ने जब अपनी अनुभूतियाँ हिन्दी के माध्यम से व्यक्त की तो, उनके साहित्य में न केवल प्रवासी भारतीय समाज को जीवंत किया, अपितु उनकी अनुभूतियाँ और व्यथाओं ने व्यापक स्तर पर मानव मन को भी स्पर्श किया। भारत में वास करने वाले लोगों का और प्रवासी लोगों की परिस्थितियाँ और परिवेश अलग और भिन्न हो सकता है, किन्तु उनका तनाव, मानव मन की मूलभूत प्रवृत्तियाँ और मनोव्यथाएँ बिल्कुल एक सी होती हैं।

तेजेन्द्र शर्मा का संक्षिप्त साहित्यिक परिचय :

तेजेन्द्र शर्मा आधुनिक हिन्दी साहित्य जगत् के उन अभूतपूर्व रचनाकार में से एक हैं, जिन्होंने हिंदी साहित्य जगत् में एक अलग और विशेष पहचान हासिल की है। समकालीन कहानी विधा को रोचक लोकप्रिय और सशक्त बनाने में तेजेन्द्र जी ने अपनी एक अहम और महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। तेजेन्द्र जी हिन्दी के उन बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न रचनाकारों में से एक हैं, जिन्होंने अपनी कहानियों को एक नये धरातल पर लाकर खड़ा किया है। इनकी कहानियाँ काल्पनिक नहीं हैं। तेजेन्द्र शर्मा ने अपनी कहानियों का सृजन यथार्थ के धरातल पर किया है। इन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से समाज में घटित हुई घटनाओं और विसंगतियों का चित्रण प्रस्तुत किया है। तेजेन्द्र शर्मा बहुमुखी प्रतिभा के धनी तो हैं ही, इसके साथ ही साथ वे एक अच्छे कथाकार, अनुवादक, सम्पादक और अनेक साहित्यिक गतिविधियों से भी जुड़े हुए हैं। तेजेन्द्र शर्मा एक ऐसे प्रसिद्ध और सफल कथाकार हैं, जो जन-मानस के विविध पात्रों को लेकर उनके दु:ख-दर्द और उनकी आन्तरिक व मार्मिक दशा को इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं कि, वह पात्र काल्पनिक होते हुए भी सजीव हो उठते हैं।

तेजेन्द्र जी की कहानियाँ सच्ची घटनाओं पर आधारित हैं। उनकी कहानियों में मानव मन की विभिन्न स्थितियों, परिस्थितियों एवं मनोवृत्तियों का चित्रण किया गया है। उन्होंने मृत्यु को भी अपनी कहानियों का एक सशक्त विषय बनाया है। तेजेन्द्र शर्मा किसी एक विधा से जुड़े साहित्यकार नहीं हैं, बल्कि वे एक कहानीकार, कवि ग़ज़लकार, मंच अभिनेता निर्देशक, सिनेमा कलाकार, टी.वी. सीरियल कलाकार, सम्पादक होने के साथ-साथ कथा (यू.के.) संस्था के महासचिव भी हैं। तेजेन्द्र जी हिंदी साहित्य जगत् के एक सफल और प्रसिद्ध कहानीकार के रूप में ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। समकालीन कहानी विधा में तेजेन्द्र शर्मा का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं हैं। इनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह 'ढिबरी लाइट', 'देह की कीमत', 'कब्र का मुनाफा', 'बेघर आंखें', 'काला सागर', 'यह क्या हो

गया, 'दीवार में रास्ता',और 'सपने मरते नहीं' आदि। शर्मा जी की कहानियों के विषय में वरिष्ठ कथाकार कृष्णा सोबती लिखती हैं-"तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों से गुजरते हुए हम यह शिद्दत से महसूस करते हैं कि लेखक अपने वजूद का टेक्स्ट होता है, उसके पात्र जिन्दगी की मुश्किलों से गुजरते हैं और नया रास्ता तलाश करते हैं।"2 तेजेन्द्र जी की कहानियाँ मृत्यु बोध से प्रेरित एवं सत्य घटनाओं पर आधारित हैं। उन्होंने मृत्यु को अपनी कहानियों का सशक्त विषय बनाया है।

मृत्युबोध :

तेजेन्द्र जी ने मृत्युबोध पर लगभग 26 कहानियाँ लिखी हैं, उनकी कहानियों में 'कैंसर', 'काला सागर', 'देह की कीमत', 'अपराध बोध का प्रेत', 'शव-यात्रा', 'कब्र का मुनाफा' और 'सीली आंखों में भविष्य' आदि।

1. **मृत्यु जीवन का शाश्वत सत्य :** वैसे तो जीवन में जो आता है, उसका जाना तय है। हमारे दर्शन में मृत्यु पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है। मृत्यु हर इंसान को होती है, लेकिन उसके आने के तरीके विभिन्न और अलग होते हैं। कुछ लोग मृत्यु से डरते हैं, तो कुछ लोग उसे अंतिम सत्य मानकर स्वीकार कर लेते हैं।
2. **जन्म और मृत्यु दोनों का एक दूसरे से अन्यान्योश्रित पारस्परिक संबंध :** इस दुनिया में जो भी मनुष्य आया है, उसका मरना भी तय है, जो मरा है, उसका फिर दुबारा जन्म लेना भी सुनिश्चित है। जन्म और मृत्यु दोनों का ही आपस में एक दूसरे से पारस्परिक संबंध रहा है। वैसे तो कुछ लोगों ने मृत्यु को भी उदात्त बताया है। इस जीवन के जितने पहलू हैं, उतने ही पहलू मृत्यु के भी है। मृत्यु के आने के भी अलग-अलग तरीके होते हैं, यह मौत। कभी आत्महत्या से, तो कभी दुर्घटना से, कभी जल कर तो कभी पानी में डूबकर। कभी जीवन से हताश होकर, तो कभी बलिदान देते हुए आती है। मृत्यु हमेशा अलग-अलग तरीके से इन्सान के जीवन में आती है।
3. **मृत्यु की भयावहता :** तेजेन्द्र जी की कहानियों में मृत्यु का भयावह रूप हमें देखने को मिलता है। इनकी कहानियों में मृत्यु को बड़ी बारीकी से देखा जा सकता है। तेजेन्द्र जी ने अपने परिवार और पत्नी की मृत्यु के यथार्थ और सजीव रूप को अपनी कहानियों के माध्यम से चित्रित किया है। तेजेन्द्र जी की कहानियाँ मृत्यु के ईर्द-गिर्द घूमती हैं और उनकी कहानियों में मृत्यु के अलग-अलग रूपों को देखा जा सकता है।
4. **मृत्यु मात्र शरीर की ही नहीं भावनाओं की भी :** मृत्यु हमेशा शरीर की ही नहीं होती है, अपितु कभी-कभी वह मन, विचारों और भावनाओं की भी होती है और ऐसे समय में इंसान मृत्यु से घबराता नहीं, बल्कि उसमें समा जाने की भरसक कोशिश करता रहता है। तेजेन्द्र शर्मा की कई कहानियों में हमें मृत्यबोध दिखाई पड़ता है। इसकी वजह शायद उनकी पत्नी

और उनके परिवार के सदस्य भी हो सकते हैं, क्योंकि उन्होंने अपनी पत्नी की मृत्यु को बहुत करीब से देखा है। इसलिए तेजेन्द्र जी उन भावनाओं से भली-भांति परिचित हैं।

तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में मृत्युबोध :

तेजेन्द्र शर्मा की कहानियाँ मृत्यु के इर्द-गिर्द ही केन्द्रित हैं। उनकी कहानियाँ सच्ची और वास्तविक घटनाओं पर आधारित हैं।

तेजेन्द्र जी ने कुछ कहानियों में मनुष्य का सजीव और जीवंत रूप प्रस्तुत किया है। वैसे तो शर्मा जी की कई कहानियों में हमें मृत्युबोध दिखाई पड़ता है, लेकिन कुछ कहानियों में जहाँ मृत्यु के अलग और विभिन्न रूप देखने को मिलते हैं, तेजेन्द्र जी एक संवेदनशील मनुष्य हैं, जो अपनी पत्नी इंदु से बेहद प्रेम करते थे और उनके असमय निधन से वे टूटे तो जरूर, लेकिन उनकी कहानियों में मृत्यु एक नया आकार लेने लगी जो उनको भी पता नहीं चला। तेजेन्द्र जी की कुछ कहानियों में जहाँ मृत्युबोध का सजीव और प्रत्यक्ष रूप मुझे देखने को मिलता है, उनमें से कुछ कहानियों का स्पष्टीकरण इस प्रकार है -

कैंसर :

तेजेन्द्र शर्मा की कहानी 'कैंसर' मृत्युबोध पर आधारित कहानी है। वैसे तो अधिकांश पाठक जानते हैं कि, तेजेन्द्र जी की पत्नी इन्दु जी को कैंसर जैसी असाध्य बीमारी के कारण ही मृत्यु ने असमय ही अपने आगोश में ले लिया था। इस कारण तेजेन्द्र जी बिल्कुल टूट ही नहीं गए, बल्कि खुद को बहुत असहाय महसूस करने लगे। उन्होंने स्वयं लिखा भी है कि 'इंदु' की बीमारी के दौरान बहुत से ऐसे अनुभव हुए, जो मेरी विभिन्न कहानियों में देखे जा सकते हैं। इस कहानी में मृत्यु से पहले का भय, तनाव, द्वंद्व, निराशा, दु:ख और मार्मिकता का साफ और सटीक चित्रण देखने को मिलता है। नरेन को जब यह पता चलता है कि, उसकी पत्नी पूनम को ब्रेस्ट कैंसर है, तो वह अपनी पत्नी के दुरूख को और उसकी ओर बढ़ती मृत्यु के कदमों की आहट को महसूस करता है, चूँकि अभी पूनम की उम्र ही क्या है, मात्र 35 वर्ष। दो छोटे बच्चे। हालांकि नरेन अपने मन को बहलाता है कि, अभी कैंसर आरम्भिक अवस्था में है। पड़ोस की चावला आंटी कैंसर के बावजूद लंबा जीवन जीने वाली ही नहीं बल्कि खुश भी है। नरेन अपने मानसिक द्वंद्व से जूझता है। उसे कभी ख्याल आता है कि जब पूनम के लेफ्ट ब्रेस्ट का आपरेशन होगा, तो सपाट छाती के साथ पूनम कैसे रहेगी? वह खुद से ही सवाल करता है "क्या विवाह का 10 वर्षो का प्रेम छातियों के कारण है ?"3

कई लोग उन्हें अलग-अलग तरह के सुझाव देते हैं। टोना टोटका भी किया जाता है, चमत्कार की कल्पना की जाती है। कोई सरसों के तेल की मालिश की सलाह देता है, तो कोई चने खाने की। इस कहानी में कैंसर के कारण एक ओर पति-पत्नी के संबंधों में आए बदलाव की ओर इशारा किया गया है, वहीं दूसरी ओर समाज में फैली बुराई को कैंसर के रूप में दिखाया

गया है और उसका भयावहता की ओर संकेत किया गया है। पूनम नरेन से सवाल करती है- "मेरा पति मेरे कैंसर का इलाज दवा से करने की कोशिश कर सकता है मगर जिस कैंसर ने उसे चारों ओर से जकड़ रखा है-क्या उस कैंसर का कोई इलाज है?"4

देह की कीमत :

तेजेन्द्र शर्मा की कहानी 'देह की कीमत' मौत के इर्द-गिर्द घूमती रहती है। हमारे देश की युवा पीढ़ी रोजगार पाने के लिए विदेश जाती है। अपने दोस्तों के घर वालों या रिश्तेदारों को देखकर विदेश जाने का सपना हरदीप ने अपने मन में संजोया है। हरदीप अपने पिता के कारोबार होते हुए भी अवैध तरीके से जापान चला तो जाता है। वहाँ होटल में एक वेटर की मामूली नौकरी करके पैसा कमाता है। हरदीप भारत आकर विवाह कर लेता है और अपनी नवविवाहित पत्नी के साथ पांच महीने बिता कर फिर जापान चला जाता है। वहाँ जाकर हरदीप की एक सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो जाती है। अवैध तरीके से वहाँ रहने के कारण कोई भी शव की शिनाख्त कर नहीं पाता है। हरदीप की लाश की शिनाख्त उसके दोस्तों से करवायी जाती है। उसके दोस्त, उसकी लाश को भारत भेजना चाहते हैं। उसके लिए तीन लाख का चन्दा इकट्ठा करते हैं। शव को भेजना ज्यादा महंगा होने के कारण उसके दोस्त सोचते हैं कि हरदीप का सारा क्रिया-कर्म जापान में ही कर उसके लिए इकट्ठा किया पैसा उसकी पत्नी के लिए भेज दें। यह फैसला वे उसके घरवालों पर ही छोड़ देते हैं लेकिन उन पैसों को पाने की होड़ माँ और भाइयों में लग जाती है। बेटे की मृत्यु का दर्द पैसों के सामने फीका पड़ने लगता है। माँ सारे पैसे बहु के बजाय अपने पास रखना चाहती है। भाई भी माँ का साथ देते हैं। पत्नी भी चुपचाप रहकर एक तरह से पैसों की ओर ही इशारा कर देती है। आखिर माँ अपने छोटे बेटे कुलदीप से अपनी बहू पर चादर डलवाना चाहती है, ताकि पैसे घर पर ही रहें।

"उसने तीन लाख रुपये का ड्राफ्ट उठाया। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि, यह उसके पति की देह की कीमत है या उसके साथ बिताए पाँच महीने की कीमत।"5

देह की कीमत तो यहाँ माँ, भाई और पत्नी को मिल जाती है, लेकिन इंसानियत शर्मशार हो जाती है। ऐसे कई हादसे दुनिया में होते रहे हैं। कभी मुआवजे के तौर पर तो कभी दवा के कारण मरने वालों के घरवालों को पैसा मिल जाता है। ऐसे में पैसों के लिए झगड़ते घरवाले दिखाई देते हैं। समाज का वास्तविक वर्णन इस कहानी में दर्शाया गया है।

काला सागर :

'काला सागर' तेजेन्द्र शर्मा की एक सच्ची और वास्तविक घटना पर आधारित कहानी है। ये कहानी घोर यथार्थवादी कहानी है। इस कहानी में दुर्घटना में मारे गए 329 यात्रियों की मौत और उनके घर परिवारों के सदस्यों की अमानवीयता को उन्होंने उघाड़ कर रख दिया है। हर व्यक्ति उस दुर्घटना में मारे गए अपने परिजन के बदले ज्यादा से ज्यादा फायदा उठाने का प्रयास करता दिखाई देता है। यह कहानी संवेदनहीनता का चरम बिन्दु है जहाँ लोग अपने

स्वार्थ सिद्ध करने के लिए मृत्यु जैसी दुर्घटना को भुलाने में भी कोई संकोच नहीं करते हैं। उनकी दिलचस्पी और रुचि इस बात में है कि, परिजनों की मृत्यु पर किसको कितना मुआवजा मिलेगा। यही नहीं अपितु विदेश जाने की ललक और विदेशी वस्तुओं के प्रति अतिरिक्त मोह उनकी मनुष्यता को तार-तार कर देता है। "एक यात्री विमल महाजन तक पहुँचा-मिस्टर महाजन खाना-पीना तो ठीक है, पर हमें कुछ अलाउंस बगरैह भी दिलवाने का प्रबंध कर दें। तो अच्छा होगा।"6

इस कहानी को पढ़ते हुए हमारे मन में इतनी वितृष्णा हो जाती है कि, कैसे लोग अपने स्वार्थ के चलते हुए अपने परिजनों की मौत से दुःखी होने के स्थान पर अधिक से अधिक मुआवजा पाने या लाभ उठाने की सोचते हैं।

सपने मरते नहीं :

'सपने मरते नहीं' कहानी तेजेन्द्र शर्मा की मृत्युबोध से ओत-प्रोत एक ऐसी कहानी है, इस कहानी में इला अपने 'स्टिल बॉर्न' यानी मृत पैदा हुए बच्चे को देखकर मानो बुत सी हो गई है। इसका असर उसके मन पर ही नहीं, बल्कि शरीर पर भी पड़ रहा है। इला की याददाश्त तक कमजोर होती जा रही है। डॉक्टर उसे काउन्सिल करवाने की सलाह देते हैं ताकि वह इस डिप्रेशन से बाहर आ सके। उसका पति नीलेश "इला को यह भी नहीं समझा पा रहा था कि, उसका दर्द इला से कई गुना अधिक है। बच्चा तो दोनों का मरा है। मगर नीलेश को इस दुःख के साथ-साथ इला का दुःख भी बर्दाश्त करना था। न केवल बर्दाश्त करना था, उसे अपने दुःखों को दूर करने के लिए प्रयास करना था और साथ ही साथ दुःखों को एक तरफ सरकाते हुए परिवार को पटरी पर भी लाना था।"7

इस कहानी में बच्चे की मौत से दोनों के जीवन में आये बदलाव को तो दर्शाया ही गया है, इसके साथ ही साथ बच्चे की मौत से दोनों की जिन्दगी किस तरह प्रभावित हो रही है और उनके सपनों को चकनाचूर कर डालती है।

सीली आंखों में भविष्य :

'सीली आंखों में भविष्य' कहानी का अक्षत अपने बड़े भाई प्रतीक की वर्षो पहले एक्सीडेंट में हुई मौत को भूल नहीं पा रहा है। उसके माँ-बाप भी लम्बे अरसे तक अपने बेटे की असामयिक मौत के दुःख को भूल नहीं पाए। प्रतीक को मोटर साइकिल लेनी है, लेकिन उसके माता-पिता अभी नहीं चाहते थे कि, वो अभी मोटर साइकिल ले। बेटे की खुशी के आगे जतिन और शील हार गए और प्रतीक ने मोटर-साईकिल ले ही ली। अचानक से एक फोन ने हँसते खेलते घर की खुशियाँ छीन ली, फोन शील ने उठाया था और रोते हुए जतिन को आवाज लगाई " 'जतिन, प्रतीक....। क्या हुआ प्रतीक को ?' और शील बस रोती चली गई, जतिन ने शील के हाथ से मोबाइल फोन लेकर हैलो कहा, दूसरी तरफ से पुलिस की सधी हुई भावनाओं रहित

आवाज थी, भौचक सा अक्षत भी अपने माँ–बाप की तरफ ताके जा रहा था, उसे कैसे समझाते कि, उसके भाई की मृत्यु हो गई है।"8

इस कहानी में यह दिखाया गया है कि, शील, जतिन और अक्षत के ऊपर प्रतीक की मौत के बाद क्या प्रभाव पड़ा और उनका जीवन पल भर में किस तरह से बिखर सा गया, लेकिन शील और जतिन अब अक्षत के माध्यम से खुशियाँ बटोरने की कोशिश कर रहे हैं।

निष्कर्ष :

तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में मृत्यु से पूर्व और मृत्यु के बाद होने वाले प्रभावों को भली–भाँति दर्शाया गया है। मृत्यु की यादें इन्सान को किस तरह झंकझोर रख देती हैं। मृत्यु की बातें इंसान के मन को दहला देती हैं और उसकी आने वाली जिंदगी पर किस तरह से प्रभाव डालती हैं। इसी का सजीव और यथार्थ रूप हमें तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में देखने को मिलता है। तेजेन्द्र शर्मा की कहानियाँ मृत्युबोध को तो दर्शाती ही हैं, इसके साथ ही साथ मानव जीवन के विविध पहलुओं को भी उजागर करती हैं। तेजन्द्र शर्मा ने बहुत सटीक तरीके से मनुष्य के मन में चलने वाले विचारों को प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपनी कहानियों में पात्रों के विचारों को ऐसे प्रस्तुत किया है, जैसे कि वो पात्र उनके सामने खड़ा हो। किसी के भी घर में होने वाली मृत्यु उसके परिवार के जीवन में बहुत गहरा प्रभाव डालती है। कुछ समय के लिए ऐसा लगने लगता है, मानो जैसे जिंदगी थम सी गई हो, पर जीवन एक चक्र है, जो घूमता रहता है। यहाँ कोई व्यक्ति अपने प्रिय के मृत्यु के कारण दु:खी है। कभी कभी जीवन में ऐसा समय भी आता है कि लोग अपने परिवार के सदस्य के लिए अपने दु:ख को भुलाकर आगे बढ़ते हैं। क्योंकि चलने का नाम ही जिंदगी है। जीवन कभी भी किसी के लिए नहीं रुकता है। हम अपने जीवन से दूर जाने वाले उस सदस्य को कभी भी नहीं भूल पाते हैं, क्योंकि वो हमारी जिंदगी का एक ऐसा अहम और अदृश्य हिस्सा होते हैं, जो ना रहते हुए भी हमेशा हमारे दिलों में जिंदा रहते हैं।

संदर्भ :

1. 'काला सागर', तेजेन्द्र शर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1990.
2. प्रवासी कथाकार तेजेन्द्र शर्मा : मुद्दे और चुनौतियाँ, डॉ. कमलेश कुमारी, पृष्ठ–188.
3. 'सीधी रेखा की परतें' तेजेन्द्र शर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ–20.
4. वही, पृष्ठ–30.
5. वही, वृष्ठ–19.
6. वही, पृष्ठ–274.
7. 'सपने मरते नहीं' तेजेन्द्र शर्मा, सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ–150.
8. वही, पृष्ठ–102.

❏❏❏

1. निदेशक, कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी हिंदी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ, डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा
2. शोध छात्रा, हिंदी–विभाग, के.एम.आई., डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 : मातृभाषा और महात्मा गांधी का दृष्टिकोण

—डॉ. मीरा निचळे

नई शिक्षा नीति-2020 यह 21वीं शताब्दी की शिक्षा नीति है, जिसका लक्ष्य व्यक्ति, समाज, देश के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है। यह प्रत्येक व्यक्ति में निहित रचनात्मक क्षमताओं के विकास पर बल देती है। यह नीति इस सिद्धांत पर आधारित है कि, शिक्षा से साक्षरता और संख्याज्ञान जैसी 'बुनियादी क्षमताओं' के साथ-साथ 'उच्चतर स्तर' की तार्किक और समस्या समाधान संबंधी संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास होना चाहिए बल्कि नैतिक, सामाजिक और भावनात्मक स्तर पर भी व्यक्ति का विकास होना आवश्यक है।

शिक्षा किसी भी प्रगत राष्ट्र का आधार होती है। शिक्षा वह सामाजिक संस्था है जिसके माध्यम से प्रत्येक समाज अपने समूह को मौलिक ज्ञान प्रदान करता है। वह ज्ञान जो मनुष्य को पूर्ण मनुष्य बनाने की प्रक्रिया होता है। शिक्षा में बुनियादी तथ्य, नौकरी और रोजगार का कौशल और सांस्कृतिक मूल्य शामील होते हैं। शिक्षा की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि इससे व्यक्तिगत जीवन में सुधार होता है, व्यक्तिगत जीवन में सुधार अर्थात समाज की उन्नति। शिक्षा से मानसिक, बौद्धिक, भौतिक दरिद्रता को समाप्त किया जा सकता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि एक अच्छी शिक्षा मात्र व्यक्ति के व्यक्तित्व को ही नहीं बदलती बल्कि उसके जीवन, समाज और देश बदलने की भी शक्ति रखती है।

केवल परीक्षायें पास करके अच्छे भाषण देना, डिग्रीयां बटोरना शिक्षा नहीं है। जैसे स्वामी विवेकानंद के शब्दों में "आप उस व्यक्ति को शिक्षित मानते हैं जिसने कुछ परीक्षायें पास कर ली हो, तथा जो अच्छे भाषण दे सकता हो। पर वास्तविकता यह है कि जो शिक्षा जनसाधारण को जीवन-संघर्ष के लिए नहीं तयार कर सकती, ऐसी शिक्षा से क्या लाभ हैं?"1 इसलिए उस शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मस्तिष्क की शक्ति मे वृद्धि होती है, बुद्धि विकसित होती है, तथा जिसको प्राप्त कर व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सकता हैं। गांधीजी के अनुसार-"शिक्षा से मेरा तात्पर्य है, बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा मे पाया जानेवाले सर्वोत्तम गुणों का चहुमुखी विकास।"2 चहुमुखी विकास अर्थात शरीर, ह्रदय, मन तथा आत्मा के समुचित विकास से है। शिक्षा ऐसी हो जिससे बालक की समस्त शक्तियों

का विकास करना चाहिए जिससे वह पूर्ण मानव बन जायें। 'शिक्षा' के Learning outcome के संदर्भ में आचार्य रजनीश कुमार शुक्ल कहते हैं, "शिक्षा के परिणाम के रूप में जो उभरकर आता है वह शिक्षार्थी में निहित आंतरिक गुण होते हैं इस अंतर्निहित को प्रकाशित करना ही अच्छी शिक्षा है।"3

नई शिक्षा नीति-2020 यह 21वीं शताब्दी की शिक्षा नीति है, जिसका लक्ष्य व्यक्ति, समाज, देश के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है। यह प्रत्येक व्यक्ति में निहित रचनात्मक क्षमताओं के विकास पर बल देती है। यह नीति इस सिद्धांत पर आधारित है कि, शिक्षा से साक्षरता और संख्याज्ञान जैसी 'बुनियादी क्षमताओं' के साथ-साथ 'उच्चतर स्तर' की तार्किक और समस्या समाधान संबंधी संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास होना चाहिए बल्कि नैतिक, सामाजिक और भावनात्मक स्तर पर भी व्यक्ति का विकास होना आवश्यक है। इस नई शिक्षा नीति के केंद्र में यही Learning Outcome है। व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के चहुमुखी विकास को वह परिणाम के रूप में देखना चाहती है। यही इसकी नियति है। जिस रोट लर्निंग प्रक्रिया से शिक्षा रचनात्मकता को खो बैठी थी वही रचनात्मकता-सृजनात्मकता अपनी क्षमताओं से साक्षात्कार तथा इसके लिए मातृभाषा का स्वीकार यह इस नीति की महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक है। समाज, राष्ट्र और विश्व के समग्र विकास के लिए युवा पीढ़ी का निर्माण करना है। "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 वास्तव में स्वामी विवेकानंद और पंडित मदन मोहन मालवीय के दर्शन को वापस लाती है। इसका मुख्य उद्देश्य ऐसी युवा पीढ़ी का निर्माण करना है, जिसमें कल्पना का शिखर हो, वास्तविकता के साथ गहरा संपर्क हो,हृदय में संवेदनशीलता हो एवं अपने हाथों का उपयोग करके कठिन से कठिन कार्य को संभालने की क्षमता हो।"4

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने अपने इन्हीं सर्वांगीण उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए मातृभाषा को माध्यम बनाया है।नई शिक्षा नीति सिफारिश करती हैं कि कक्षा पांचवी तक मातृभाषा में पढ़ाई होगी। साथ ही स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा भी पढ़ाई का माध्यम होगी। इसे कक्षा आठवीं या उससे भी आगे बढ़ाया जा सकता है। इस नीति के कारण सबसे पहले मातृभाषा, स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा को सम्मान प्राप्त होगा। जिसे अंग्रेजी के कारण नकारा गया था। 28 मार्च 1918 को अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन के आठवें वार्षिक महाअधिवेशन के सभापति के रूप में गांधी जी ने कहा था-'मुझे खेद है जिन प्रांतों की राष्ट्रभाषा (मातृभाषा) हिंदी है, वहां पर भी उस भाषा की उन्नति करने का उत्साह नहीं दिखाई देता है। उन प्रांतों में आरक्षित वर्ग आपस में पत्र व्यवहार और कार्य अंग्रेजी में करते हैं फ्रांस में रहने वाला अंग्रेज अंग्रेजी में काम करता है जबकि हम अपने देश में अपना

महत्वपूर्ण कार्य विदेशी भाषा में करते हैं। यह उचित नहीं इसी मानसिक और बौद्धिक गुलामी को समूल नष्ट करने के लिए प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक मातृभाषा का पुरस्कार नई शिक्षा नीति करती है।

मातृभाषा राष्ट्र की चिंतनशक्ति है। राष्ट्र को ऊर्जावान बनाने के स्त्रोत सूत्र के रूप में विश्वस्तर पर अनेक राष्ट्रों ने उसे जाना-पहचाना और स्वीकारा है। मातृभाषा के गौरव को गांधी जी ने स्वराज के सम्मुख देखा। गांधीजी एक स्थान पर कहते हैं, "मेरा नम्र लेकिन दृढ़ अभिप्राय कि, जब तक हम भाषा को राष्ट्रीय और अपनी-अपनी प्रांतीय भाषाओं को उनका योग्य स्थान नहीं देंगे तब तक स्वराज्य की सब बातें निरर्थक है।''5 गांधीजी ने आजीवन मातृभाषा का पुरस्कार किया। वह इस सत्य से भलीभांति परिचित थे कि, जिस सक्षमता के साथ मातृभाषा में विचार विनिमय, कल्पना की ऊंची उड़ान भरी जा सकती है, वह अन्य भाषा या दूसरी तीसरी भाषा से संभव नहीं। मातृभाषा ही बच्चों के विकास का मूलमंत्र है जिसके कारण वह स्वयं की सुप्त शक्तियों से साक्षात्कार कर सकता है, स्वाभाविक ढंग से वह ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में अपनी भाषा से सहज होता है। शिक्षा उसे बोझ नहीं लगती और कोई भी विषय कठिन नहीं रहता। यही कारण था कि गांधीजी मातृभाषा के प्रबल समर्थक थे, एक जगह कहते हैं, "युवक और युवतियाँ अंग्रेजी दुनिया की दूसरी भाषाएं खूब पढ़े लेकिन उनसे मैं आशा करूंगा कि वे अपने ज्ञान का प्रसाद भारत को और सारे संसार को उसी तरह प्रदान करेंगे जैसे बोस, राय और स्वयं कवि रवींद्रनाथ ने प्रदान किया था। मगर मैं हरगिज़ नहीं चाहूंगा कि कोई भी हिंदुस्तानी अपनी मातृभाषा को भूल जाए, या उसकी उपेक्षा करें, या उसे देखकर शरमाए अथवा यह महसूस करें कि वह अपनी मातृभाषा में ऊंचे से ऊंचे चिंतन नहीं कर सकता है।"6 विश्वकवि गुरु रवींद्रनाथ ठाकुर का उदाहरण सम्मुख रखकर वे स्पष्ट करते थे कि, ब्रह्मांड का कोई भी ऐसा विषय, दर्शनशास्त्र नहीं है जिस पर मातृभाषा में श्रेष्ठ चिंतन न होता हो।

मातृभाषा के संदर्भ में एक बात को लेकर गांधीजी बहुत ही क्षुब्ध थे। अपने आप को शिक्षित, आधुनिक जताने के लोभ में विदेशी भाषा का अनुकरण तथा मातृभाषा के प्रति हीन दृष्टिकोण से वे दुखी होते थे। 'जिसके मन में अपनी धरती, अपनी भाषा और अपनी संस्कृति के प्रति आस्था एवं विश्वास नहीं है वह सच्चे अर्थों में उस देश का नागरिक कहलाने का अधिकारी नहीं है।' गांधीजी की इसी प्रतिक्रिया की प्रतिक्रिया यह शिक्षा नीति है। अपनी भाषा-राष्ट्र-संस्कृति एवं उसके प्रति आस्था और विश्वास जगाने की प्रक्रिया तथा स्व की जागृति इसका लक्ष्य है। अपनी मातृभाषा के प्रति हीन भावना का त्याग करके उसे गंभीरता और पूरे सम्मान के साथ स्वीकार करने के लिए यह नीति विवश करती है।

लॉर्ड मैकाले ने भारत में जिस शिक्षा की नींव रखी थी, उसने सबको अंग्रेजी का गुलाम बनाया था। आजादी के इतने वर्षो के बाद सच्चे अर्थो में लग रहा है, हम स्वतंत्र हुए हैं, क्योंकि अब हम किसी विदेशियों ने तय किए गए निर्णयों का अनुकरण नहीं करेंगे, बल्कि हमारे देश की प्राचीन ज्ञान परंपरा का पालन करेंगे। अपनी भाषा में उसका विस्तार करेंगे।

निष्कर्षत: भाषा ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम होती है। भाषा शिक्षा प्रदान करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी है। ज्ञान और शिक्षा में अधिक अंतर नहीं होता है। शिक्षा ज्ञानार्जन की एक प्रक्रिया है, जिसे भाषा के माध्यम से सीखा जाता है। भारत जैसे बहुभाषी और बहु सांस्कृतिक देश में शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को बनाए रखा जा सकता है। साथ ही बहुभाषावाद को भी। भाषा न केवल शिक्षा प्रदान करने का माध्यम है, बल्कि यह शिक्षा का विषय भी है। इसलिए इस शिक्षा नीति में भाषा के पक्ष पर विचार करना आवश्यक हो जाता है। संक्षेप में यह शिक्षा नीति मातृभाषा और भारतीय भाषाओं को सशक्त बनाने का जीवंत दस्तावेज है। शिक्षा में मातृभाषा के महत्व को, उसके उपयोग पर हर कोई विचार करने पर विवश है। त्रिभाषा की नीति को बरकरार रखते हुए मसौदा तैयार किया गया है। न तो हिंदी और न ही अंग्रेजी भाषा का कहीं विशेष रूप से उल्लेख किया गया है, किंतु सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करते हुए मातृभाषा को सर्वोच्च स्थान दिया गया है।

संदर्भ :

1. सक्सेना स्वरूप एन.आर., डॉ. चतुर्वेदी शिखा, डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, डॉ. चतुर्वेदी शिल्पा. (2014) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक : मेरठ, आर.लाल. बुक डिपो, पृष्ठ क्र. 355
2. सक्सेना स्वरूप, एन.आर., डॉ. चतुर्वेदी शिखा, डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, डॉ. चतुर्वेदी शिल्पा. (2014) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, मेरठ, आर.लाल. बुक डिपो, पृष्ठ क्र. 320
3. मिश्र, ऋषभकुमार (संपा.) (2021). शिक्षा जो स्वर साध सके : दिल्ली, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ क्र. 13
4. डॉ. सारस्वत बी.के. पुरोवाक. मिश्र, ऋषभकुमार. (संपा.) (2021). शिक्षा जो स्वर साध सके : दिल्ली, वाणी प्रकाशन.
5. केसरवानी, राज (संपा.) (जून 2006) वाग्धारा : इंदौर. राष्ट्रीय हिन्दी सेवी महासंघ. पृष्ठ क्र. 26
6. केसरवानी, राज (संपा.) (जून 2006) वाग्धारा : इंदौर. राष्ट्रीय हिन्दी सेवी महासंघ. पृष्ठ क्र. 30

❑❑❑

सहायक प्रोफेसर, अनुवाद अध्ययन विभाग, म.गां.अं. हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

21वीं सदी के उपन्यासों में चित्रित ग्रामीण परिवेश

—गुरु सेवक सिंह

सभी जनजातीय समूहों की जीवन प्रणाली, उनके आचार-विचार, संस्कृति, परम्पराएँ एवं धार्मिक मान्यताएँ अलग-अलग हैं। किन्तु इतनी भिन्नताओं के होने के बावजूद भी उनके जीवनक्रम, रहन-सहन एवं सांस्कृतिक विकास में कुछ समानताएँ नज़र आती हैं-जिनके आधार पर ही इन समुदायों को सम्मिलित रूप से जनजाति कहकर पुकारा जाता है। 'जनजाति' शब्द अंग्रेजी के 'ट्राइब' का हिन्दी अनुवाद है।

21वीं सदी के विवेच्य आंचलिक उपन्यासों में उपन्यासकारों द्वारा चित्रित अंचल का परिवेश खुलकर सामने आया है। इन उपन्यासों में परिवेश के चित्रण के माध्यम से गांवों में बसे भारत को घेरती अटूट जड़ता, अंधविश्वासों, अशिक्षा, रूढ़िवादी, सामंतवादी और गुलामी की दीवारें स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है। उपन्यासकारों ने इन विसंगतियों का उजागर बहुत जीवंतता के साथ किया है। इन विसंगतियों के लिए परिवेशगत विभिन्नताएं काफी हद तक जिम्मेदार रही हैं। 'सेतुबंध' में गंगा तट पर स्थित खादर के गांव गंगापुर के स्थिति का चित्रण इस प्रकार है, ''खादर में जैसे-जैसे समय बीतता गया वहां के आदमी की जिंदगी दूभर होती गई। बाढ़ और अकाल उस आदमी के भाग्य की कुछ ऐसी अमित रेखाएं बनती गई जिनके आगे मानवता बार-बार घुटने टेकने को मजबूर होती रही।''1 अर्थात गंगा के किनारे का खादर क्षेत्र में स्थित गांव के परिवेश और यहां संबंधित समस्याओं का चित्रण किया गया है।

मूल शब्द : सेतुबंध, वनवासियों, अवस्थित, चेचक, अंचल, पूर्वोत्तर

प्रस्तावना

ग्लोबल गांव के देवता में आदिवासियों वनवासियों से संबंधित असुर जाति के निवास से संबंधित अंचल झारखंड राज्य के बरवे जिले में मौजूद कोयल बीघा प्रखंड में अवस्थित भौरापाट से संबंधित है, ''मीलों तक पसरे पहाड़ के ऊपर का यह चौरस इलाका मन को और उचाट कर रहा था। छिटपुट जंगल बाकी खाली दूर-दूर तक फैले उजाड़ बंजर खेत, बीच-बीच में बॉक्साइट की खुली खदानें, जहां से बॉक्साइट निकाले जा चुके थे वे गड्ढे भी मुंह बाये पड़े थे। मानो धरती मां के चेहरे पर चेचक के बड़े-बड़े धब्बे हों।''2 'बचपन भास्कर का' नामक उपन्यास में उपन्यासकार ने राप्ती और गौर्रा नदियों के बीच मीलों-मील लंबे फैले कछार में अवस्थित गांव माधोपुर के परिवेश का वर्णन इस प्रकार किया है, ''गांव के उत्तर में दो बड़े-बड़े बाग थे। एक पश्चिमोत्तर में एक पूर्वोत्तर में, एक दोनों के बीच में भी था। गांव

के पूर्व तरफ दूर तक कोई गांव नहीं था। बस खेत थे और गांव के सिवान पर टीला था जिस पर दीक्षित वरम बाबा की पीढ़ी थी और उसके बगल में एक पोखरा था। पूर्व दिशा में ही गांव के एक फलांग दूर पाकड़ के दो पेड़ थे। एक के नीचे डीह बाबा का थाना था, दूसरे के नीचे बरम बाबा की पीढ़ी थी। यह गांव का खलिहान भी था। गांव के दक्षिण दिशा में दलितों की बस्ती के पीछे काली माई का थान था और वहां से एक किलोमीटर की दूरी पर एक गांव। पश्चिम दिशा में भी काफी दूर तक खुलापन था। इसी दिशा में पीपल का एक बड़ा पेड़ था जिस पर मृतकों के घंटे बांधे जाते थे। दक्षिण-पश्चिम में भगना नाला था जिससे होकर राप्ती भयंकर उत्पात मचाती थी यानी बाढ़ बन जाती थी।''3 आछरी-माछरी का परिवेश पहाड़ी जन-जीवन से संबंधित है इसकी जानकारी हमें उपन्यास के शुरू में ही मिल जाती है, ''वह दिन था आछरी का अपनों से अलग होने का। सुबह उसकी आंख खुली तो, उस दिन का उषा की लालिमा सदा की अपेक्षा उसे बिल्कुल भिन्न लगी। उसने क्षितिज की ओर देखा तो समझ में कुछ भी नहीं आया। एक आग उगलता क्षितिज। धुंध उसे दूर-दूर तक नहीं दिखी। सामने की पहाड़ियों पर नजर दौड़ाई एकदम नंगी। पहाड़ियों को देखकर उसका दिल बैठ गया। हवा में दूर से आती तैरती आवाज को सुनने के लिए उसने कान के पीछे हथेली लगा उसे सुना। सरसराती हवा के शोर के अलावा उसे कुछ भी नहीं सुनाई पड़ा।''4

मदन मोहन के उपन्यास 'जहां एक जंगल था' का परिवेश उत्तर प्रदेश में स्थित पूर्वांचल का नेपाल से सटा हुआ इलाका है। यहां पर बहुतायत मात्रा में जंगल है तथा यहां पर स्थित बस्तियों का वनटांगिया बस्तियों के नाम से जाना जाता था, ''बीरगंज कस्बा के पूर्वी सीमांत से एक जंगल शुरू होता था-जंगल का सिलसिला नेपाल की सीमा तक पसरा था। बीच-बीच में जंगल का हिस्सा बनती गंवई बस्तियां भी थी। जिन्हें वनटांगिया या बनवासी बस्तियों के नाम से जाना जाता था।''5 आंचलिक परिवेश की पहचान हमेशा उपन्यास के प्राकृतिक परिवेश के द्वारा ही नहीं होती बल्कि कभी-कभी उपन्यासकार सीधे-सीधे प्राकृतिक परिवेश का चित्रण आदि न करके भाषा पात्रों के बोली आदि के माध्यम से विशिष्ट अंचल की पहचान करवाता है। भगवान दास मोरवाल के उपन्यास 'बाबुल तेरा देश में' उपन्यास के परिवेश की पहचान भाषा बोली के आधार पर की जा सकती है। बोली के आधार पर बड़ी आसानी से ज्ञात होता है कि यह उपन्यास राजस्थान के मेवात अंचल से संबंधित है, ''रईसन का बाप, छाती तो मेरी भी फट-फट जावे है। बहू पोतान के बिना पर मैं रांड कहां तलक मांग-मांग के लाउं। एकाध कुढ़ बाड़ी बिसवा भी ना है। जिन्ने काई वणिया-वामण के पै पास गिरवी धरके ब्याज-बट्टा पे पैसा-धेला उठा लेती और याहे कही लपेट देती।''6

सभी जनजातीय समूहों की जीवन प्रणाली, उनके आचार-विचार, संस्कृति, परम्पराएँ एवं धार्मिक मान्यताएँ अलग-अलग हैं। किन्तु इतनी भिन्नताओं के होने के बावजूद भी उनके जीवनक्रम, रहन-सहन एवं सांस्कृतिक विकास में कुछ समानताएँ नज़र आती हैं-जिनके आधार पर ही इन समुदायों को सम्मिलित रूप से जनजाति कहकर पुकारा जाता है। 'जनजाति' शब्द अंग्रेजी के 'ट्राइब' का हिन्दी अनुवाद है। सामान्य व्यवहार में गिरिजन शब्द भी व्यापक स्तर पर प्रचलन में है। संविधान ने जिन आदिम जातियों को सूचीबद्ध किया है वे अनुसूचित जनजाति कहलाती हैं। प्राचीन भारत में हज़ारों वर्षों से भारतीय ग्रंथों में आज भी आदिम जातियों का उनके मूल नामों से उल्लेख किया गया है। यथा-भील, कोल, किरात निशाद आदि। भारत में हज़ारों वर्षों से जंगलों एवं पहाड़ों में रह रही आदिम जनजातियों ने खुले मैदानों तथा सभ्यता के केन्द्रों में बसे लोगों से अधिक सम्पर्क स्थापित किए बिना ही अपनी अस्मिता

को बनाए रखा है। किन्तु ये जनजातीय समाज जब से सभ्य समाज के सम्पर्क में आए हैं अपने प्राचीन स्वरूप को खोते जा रहे हैं और औद्योगिक सभ्यता का विकास सरल जनजातीय संस्कृति को पूरी तरह नष्ट कर रहा है। वे तब से अपने अस्तित्व के साथ संघर्ष कर रहे हैं जब से तथाकथित आधुनिक सभ्यता के ध्वजावाहकों ने उनके समाज में घुसपैठ की है। उनके जीवन दर्शन तथा पारम्परिक मूल्य व्यवस्था बिखराव के कगार पर हैं। जनजातीय समाज उत्कट जिजीविषा एवं स्वच्छन्द विचारों वाला समाज है जो जंगलों एवं पहाड़ों में कठोर से कठोर परिस्थितियों का सामना भी बड़े धैर्य के साथ करता है और प्रसन्न मुद्रा में रहता है। जनजातीय समाज जंगल में मंगल मनाने वाला समुदाय है। समय पर अनेक विदेशियों ने इन पर हमला किया। कभी अंग्रेजों ने तो कभी मुगलों ने इनके शान्तिपूर्ण वातावरण को भंग करने का प्रयास किया। इनको हराने और गुलाम बनाने की कोशिश की, किन्तु जनजातीय समाज ने कभी समर्पण नहीं किया। वे इन विदेशियों से लड़ते रहे, संघर्ष करते रहे। डांग जिले के गोंड हों या राजस्थान के भील, झारखण्ड के मुण्डा हों या बिहार के उराँव–इन्होंने अंग्रेजों को नाकों चने चबवा दिए। अण्डमान के आदिवासी भी संघर्ष करते रहे किन्तु दास नहीं बने। इन्हें मरना मंजूर था, दास बनना नहीं। इसी का परिणाम था कि उन्हें उनके स्थानों से खदेड़ दिया गया। अंडमान के आदिवासी घने जंगलों में रहने के लिए चले गए किन्तु दास नहीं बने। जनजातीय समाज संघर्षपूर्ण जीवन को जीने वाला स्वच्छन्द समाज है। देश के आज़ाद होने और विज्ञान युग में प्रवेश करने के बावजूद भी जनजातीय समाज की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया है। आज भी जनजातीय समाज शेष भारतीय समाज के समकक्ष आने की अपेक्षा देश का सबसे गरीब, निरक्षर, अन्धविश्वासी, सबसे पिछड़ा और बीमार तबका है। उनकी स्थिति हमें सोचने पर विवश करती है कि विकास का ढ़ोल पीटने वाली व्यवस्था में आज भी मानव समुदाय का एक अंश निकृष्ट जीवन जीने को विवश है। उनकी यह स्थिति हमें बेचैन करती है और हमारे भीतर वर्तमान व्यवस्था के प्रति एक आक्रोश की भावना उत्पन्न करती है। आज जनजातीय जीवन की चेतना कहीं खो गई है और निराशा का भाव उनकी ज़िन्दगी में दस्तक देता नज़र आता है। वर्तमान व्यवस्था की घुटन भरी जंजीरों को तोड़कर बाहरी संसार की ओर छलांग लगाने की चेतना का उदय अभी तक उनकी सामूहिक जीवन शैली में नहीं हुआ है। उनके साहित्य को भी कभी कथित मुख्यधारा की रचनाओं में स्थान नहीं दिया गया। ऊँचा बोलना, तेज गति से अभिव्यक्त होना और अपने अहम् की दमदार उपस्थिति दर्ज कराना जनजातीय जीवन दर्शन का अंग नहीं है, बल्कि सहजता, सरलता, जिंदादिली, करूणा, प्रेम, दया एवं भोलेपन से लोगों के दिलों में अपनी पहचान बनाना जनजातीय सभ्यता एवं संस्कृति की प्रमुख विशेषता है। जनजातीय समुदाय विश्व समुदाय में विशेषकर भारतीय समाज में एक ऐसा समुदाय है जो आज भी विकास की रोशनी से दूर, विज्ञान से अनभिज्ञ और अछूता रहकर अपनी 'दुनिया' में सिमटा हुआ है। अपनी संस्कृति एवं जीवन शैली की जिन विशिष्टताओं को सुरक्षित एवं संरक्षित करने के लिए वह मुख्यधारा के समाज से दूरी बनाता रहा। आज विज्ञान एवं विकास ने उन्हीं विशिष्टताओं और संरचनाओं को नष्ट कर डाला। धीरे–धीरे इस समाज के भीतर भी हलचल हुई, विचलन पैदा हुई और परिणामस्वरूप आज जनजातीय समाज की अस्मिता खतरे में पड़ गई है।7

शिवमूर्ति का 'आखिरी छलांग' उपन्यास ग्रामीण जीवन में किसानों की दुर्दशा को व्यक्त करता है। पृष्ठ भूमि है अवध का ग्रामांचल यह उपन्यास सूदखोरी सरकारी तंत्र के मकड़जाल में फंसे आम किसान की कहानी कहता है। गांव के एक आम किसान का नाम है 'पहलवान' इसी के माध्यम से लेखक ने ग्रामीण समस्याओं के चित्रण का ताना–बाना बुना है। यद्यपि पहलवान

का नाम कुछ और रहा होगा परंतु दूसरे गांव के पहलवानों को अखाडे में परास्त करने, सरकार द्वारा कृषि रत्न पुरस्कार प्राप्त करने तथा बेटे के इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा में उच्च स्थान हासिल करने के कारण गांव के लोगों में सम्मार्थ 'पहलवान' के नाम से जाना जाता है। परंतु यह सम्मान अब पहलवान को बचाये रखना मुश्किल प्रतीत हो रहा है, कारण है चारों और समस्याओं का मुंह बाये खड़े होना। जिसका प्रभाव उसकी दिनचर्या पर स्पष्ट दिखाई देता है, ''पर इधर कुछ दिनों से पहलवान को एक-एक करके इतने झोड़ लगे कि उनकी ढर्रे पर चलने वाली आत्मतुष्ट दिनचर्या में खलल साफ दिखने लगा है।8

बेटी के ब्याह की चिंता बेटे की फीस की चिंता ट्यूबेल के बिल की चिंता तथा सोसायटी से ली गई खाद के कर्ज चुकाने की चिंता ने उनके मन को छोटा तथा हंसी को बेआवाज कर दिया है। पहलवान की दशा उसकी पत्नी इस प्रकार व्यक्त करती है, ''कहां तब के वे पहलवान और कहां आज के ये दिनों दिन सिकुड़ते सिमटते जाने वाले। पहलवान की परछाई ?34 पहलवान शब्द सुनते ही जहां एक संघर्ष एवं उत्साह से संपन्न व्यक्तित्व सामने दिखाई देता है आज वही पहलवान आर्थिक धरातल पर कमजोर होने के कारण अपने आप को दीन-हीन एवं असहाय महसूस कर रहा है, ''वहीं पहलवान जो कभी ताल ठोककर पूरे इलाके को ललकारते थे और कोई हाथ मिलाने की हिम्मत नहीं करता था, अपने से एक हाथ छोटे मरियल से अधेड़ चपरासी द्वारा सरे बाजार राह रोककर पकड़ लिए गए थे। पहलवान के बायें पंजे में अपना दाहिना पंजा फसाये वह उन्हें लेकर लाले बनिया की चक्की की ओर चला। पहलवान उसके साथ ऐसे चल रहे थें जैसे पगहे में बंधा बकरा चिकवे के पीछे-पीछे घिसटता चला आता है। मिमियाता तक नहीं।

गाँव वालों के प्रयास से वह फिलहाल अमीन के चुंगल से मुक्त होता है। परंतु समस्या जस की तस बनी हुई है। अखाड़े में तीखे सारे दांव जिंदगी के इस रणक्षेत्र में बेकार साबित हो गये।8

गांव में किसानों के समक्ष हर समय समस्याएं बनी रहती है। न तो वह बेटी का रिश्ता मनपसंद जगह कर सकता है और न ही बच्चे की अच्छी पढ़ाई का ही प्रबंध। हर जगह उनके सामने आर्थिक समस्याएं विद्यमान रहती हैं, जहां बेटी की शादी के लिए वर की तलाश में पहलवान की व्याकुलता इन शब्दों में व्यक्त होती है। ''जो काम लायक लड़के है। उनका भाव तो आसमान पर है ही, जो किसी काम के नहीं है उनके मां बाप भी सीधे मुंह बात करने को तैयार नहीं दिखते।37 इन समस्याओं के निराकरण हेतु पहलवान खेत बेचने का फैसला करता है। यह समस्या केवल पहलवान की ही नहीं बल्कि आसपास गांव के लगभग सभी किसानों की है। ''इस इलाके में दस पंद्रह एकड़ जमीन वाले किसान तो चार छः गांवों में खोजने पर शायद एकाध ही मिलेंगे। सौ में पचीस तीस घर एकदम भूमिहीन हैं। चालीस पचास घरों के पास आधे से एक एकड़ तक जमीन है।38 खेलावन जो कि गांव के सेकरेटरी है। गांव के लोगों की समस्याओं का कारण उनका एकजुट न होना मानते है। वे पहलवान से कहते भी हैं कि बहुत सारे मुद्दे ऐसे हैं जिन पर किसानों को खुद लड़ाई लड़नी होगी। खेलावन कहते है: ''जागना तो पड़ेगा। लड़ना तो पड़ेगा। जिंदा रहना है तो अपने मारने वालों के सामने डटना तो पड़ेगा। जैसे हजारों जातियों, जन-जातियों, पशु पक्षियों की प्रजातियां इस दुनिया से उछिन्न हो गई वैसे ही किसान नाम की प्रजाति भी विलुप्त हो जायेगी।

यद्यपि पहलवान मिडिल, हाईस्कूल एवं इंटरमीडियट तीनों प्रथम श्रेणी में पास करने के बावजूद परिवार के अकेले पुत्र होने के कारण गांव में ही रह गए तथा पिता के देहांत के बाद

खेती-बाड़ी संभालने लगे। खेती उन्होंने अच्छी की परंतु गलत सरकारी नीतियों एवं विचौलियों के साजिश के कारण उन्हें फसल का वाजिब मूल्य नहीं मिलता था। आज पहलवान को अपने बड़े बुजुर्गों की बात में निराशा एवं कोफ्त होती थी और वे भी मानने लगे थे कि ''किसानी के पेशे में बरकत नहीं होने वाली। अपनी लेई पूंजी लगाकर जो फसल वह घर लाता है उसे अज्ञान लाभ समझकर थोड़ी देर खुश हो जाता है। इसलिए की उसे लागत और लाभ की परिभाषा का पता नहीं है। न चाहते हुए भी पहलवान के घर का बछड़ा बिक जाता है। पहलवान को बहुत पीड़ा होती है बार-बार सपने में उसे पांडे बाबा याद आते है जो कि बैंक से ऋण लेकर ट्रैक्टर खरीदे परंतु किस्त न चुका पाने के कारण अंत: परेशान होकर आत्महत्या कर लेते हैं। एक दिन सपने में हंसते हुए पांडे बाबा पूरे देश के किसानों के दुर्दशा का चित्रण इस प्रकार करते है, ''हम विभिन्न प्रांतों के आत्महत्या करने वाले किसान हैं बच्चा तुम हिंदुस्तान में रहकरी किसानी जीवन के दु:ख और दरिद्रता से मुक्ति पाने का सपना देख रहे हो। यह सपना कभी पूरा न ही होने वाला बच्चा। बिना मरे इस से मुक्ति नहीं मिल सकती। इसके लिए भव सागर पार करना होगा।

'गमके माटी गांव की' में लेखक ने भदोही जिले के ईशपुर और हरियॉव गांव तथा आसपास के अंचल की कथा को व्यक्त किया है। पूरे उपन्यास की कथा प्रेम व दलित जीवन की विषमताओं पर आधारित है। सूदखोरी एवं कर्ज की समस्या भी उपन्यास में है। मुंशी रमानाथ के सूदखोरी की चर्चा रंगनाथ इस तरह करता हैं, ''मुंशी रमानाथ का कर्ज जिस पर चढ़ जाता है उतरता नहीं। चिपक जाता है जैसे जोंक चिपकती है। भाषण का भूखा हर आदमी को जानवर समझकर खिलाता है। मेरे पिता को जीवन भर चूसा, इस जोंक ने तो उनकी जान ही ले ली।43 भैयाराम जी मुंशी रमानाथ के बारे में कहते हैं, ''मुंशी तो ब्याज पर ब्याज लगाता है। ब्याज का ब्याज तो कम नहीं होता, फिर मूलधन कैसे पटेगा? गांव में सूदखोरी का हाल यह है कि रंगनाथ के पिता से अंगूठा लगवाकर सौ रूपए के बदले उनके नाम से पांच सौ रूपए का फर्जी कागज तैयार किया गया था और कर्ज उतारते-उतारते रंगनाथ के पिता असमय ही दुनिया से विदा हो गए थे।

संदर्भ :

1. डॉ बसंत सुर्वे: आपात्कालोत्तर हिंदी ग्रामांचलिक उपन्यासों की मीमांसा पृष्ठ-40
2. हरिसुमन विष्ट- आछरी-माछरी पृष्ठ 46
3. हरिसुमन विष्ट- आछरी-माछरी पृष्ठ-293
4. रणेंद्र: ग्लोबल गांव का देवता, पृष्ठ-7
5. हरिसुमन विष्ट- आछरी-माछरी -9
6. रणेंद्र: ग्लोबल गांव का देवता, पृष्ठ 11
7. रणेंद्र: ग्लोबल गांव का देवता, पृष्ठ 12
8. रणेंद्र: ग्लोबल गांव का देवता, पृष्ठ -13
9. रणेंद्र: ग्लोबल गांव का देवता, पृष्ठ-18

❑❑❑

मकान नं. 36ए, VPO-बालासर, तहसील-रानिया, जिला-सिरसा-125075

मोबाइल : 9812666673

जयशंकर प्रसाद व मोहन राकेश के नाटकों में स्त्री पात्रों का वर्णन

—गीतांजलि कालरा

प्रसाद तत्कालीन युग की नारी की तमाम समस्या का समाधान भारतीय संस्कृति में ही खोजने का प्रयास करते हैं। यही कारण कि भारतीय नारी के आदर्श एवं उदार रूप को महिमामंडित करते हैं। भारतीय संस्कृति प्रेम के प्रेम करुणा, दया, कोमलता, स्नेह, सरलता आदि गुणों को स्त्री चरित्रों में मुखरित करते हैं, क्योंकि ये ही गुण भारतीय संस्कृति के प्राणतत्व माने जाते हैं।

भारतेंदु हरिश्चंद्र के पश्चात् हिंदी नाटक के क्षेत्र में जयशंकर प्रसाद और मोहन राकेश युग प्रवर्तक रचनाकार माने जा सकते हैं। प्रसाद स्वतंत्रता पूर्व के तो मोहन राकेश स्वतंत्रता के बाद के भारतीय परिवेश एवं वातावरण का यथार्थ आभास कराते हैं। दोनों ही रचनाकार नाट्य साहित्य द्वारा अपने युग की नारी की वास्तविक स्थिति से अवगत करवाते हैं तथा अपने-अपने स्तर पर नारी की पराधीनता से मुक्ति की पैरवी करते दिखाई देते हैं। स्त्री स्वतंत्रता की उनकी आकांक्षा युगानुरूप ही चित्रित हुई है।

परतंत्र नारी की स्वतंत्रता के लिए वर्षों से पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वान, चिन्तक साहित्यकार, सामाजिक कार्यकर्ता, राजनीतिज्ञ आदि समय-समय पर विभिन्न संस्थाओं संगठनों, पत्रिकाओं तथा साहित्यिक रचनाओं में अपने महत्वपूर्ण विचार व्यक्त करते रहे हैं। अस्मिता का क्षेत्र अपने-आप में विस्तृत होने के कारण व्याख्यायित-विश्लेषित करना कठिन है। अस्मिता का निर्धारण समाज में व्यक्ति की अनेकों पहचानों के संयुक्त संदर्भ से ही निर्धारित हो पाता है, नहीं तो अस्मिता का स्वरूप एकांगी रह जाता है। स्त्री अधिकारों के समर्थकों में पाश्चात्य लेखकों मेरी वोल्सटनक्राफ्ट, जॉन स्टुअर्ट मिल सुलोमिथ फायरस्टोन, सिमोन द बोउआर, वजह्रनिया वुल्फ केट मिलेट, जर्मेन प्रियर आदि का योगदान सराहनीय रहा। भारत में स्त्री स्वतंत्रता के प्रति चेतना पश्चिम की तुलना में लगभग आधी सदी बाद में आई प्रस्तुत शोध में साहित्यिक परिप्रेक्ष्य के अंतर्गत नारी अस्मिता की अभिव्यक्ति के साथ-साथ लेखन कार्य में स्वानुभूति और सहानुभूति के प्रश्न पर भी विचार किया है।

'प्रसाद के नाटकों में नारी अस्मिता' शीर्षक के तहत प्रसाद के समकालीन परिवेश एवं वातावरण को ध्यान में रखकर नारी अस्मिता और उसकी पहचान के प्रश्नों को स्पष्ट किया गया

है। स्त्री–जीवन की पीड़ाओं को व्यक्तिगत तौर पर महसूस करने के बाद ही प्रसाद मानते हैं कि नारी समाज का निर्माण विधाता ने झुंझलाहट में किया है। स्त्री के शोषण उत्पीड़न को देखकर ही प्रसाद उसे सामाजिक जीवन में उच्च स्थान प्रदान करने के लिए अपने नाटकों में राष्ट्रीय आन्दोलन की सक्रिय चरित्र के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं, स्त्री को सर्वगुणसंपन्न चित्रित करते हैं। जिससे कि पुरुष समाज स्त्री की सामाजिक महत्ता एवं उपादेयता से अवगत हो सके। प्रसाद के नाटकों का कथानक चाहे ऐतिहासिक हो, लेकिन उनमें जो स्त्री चित्रित की गयी है वह पूरी तरह से कदम से कदम मिला कर चलने वाली स्त्री है वत प्रसाद के नाटकों में स्वतंत्रता आन्दोलन में स्त्री की महत्वपूर्ण भूमिका को मल्लिका, देवसेना, अलका, सुवासिनी, मालविका, कल्याणी आदि पात्रों में यथार्थ रूप में देखा जा सकता है। राष्ट्र की रक्षा की खातिर अपने प्रेम की आहुति देना प्रसाद के स्त्री पात्रों की महत्व पूर्ण विशेषता है। देवसेना, मालविका, अलका आदि इसी श्रेणी में आते है। प्रसाद के नाटकों का अध्ययन करने पर एक बात तो यह स्पष्ट होती है कि उनके नाटकों के पात्र सामान्य वर्ग से ना होकर राज महलों का प्रतिनिधित्व करते हैं। जब राजमहलों में रहने वाला स्त्री समाज अपने अस्तित्व और अस्मिता के प्रति इतना चिंतित दिखाई देता है तो आम स्त्री की पीड़ा को सहज ही महसूस किया जा सकता है। संपन्न पात्रों को भी राजपरिवार में स्वतंत्र निर्णय लेने में अड़चनें आती हैं तथा पुरुष के आदेशों का पालन करने के लिए मजबूर दिखाई देती है।

प्रसाद तत्कालीन युग की नारी की तमाम समस्या का समाधान भारतीय संस्कृति में ही खोजने का प्रयास करते हैं। यही कारण कि भारतीय नारी के आदर्श एवं उदार रूप को महिमामंडित करते हैं। भारतीय संस्कृति प्रेम के प्रेम करुणा, दया, कोमलता, स्नेह, सरलता आदि गुणों को स्त्री चरित्रों में मुखरित करते हैं, क्योंकि ये ही गुण भारतीय संस्कृति के प्राणतत्व माने जाते हैं। पात्र होने के बावजूद स्त्री की विविधवर्णी छवियाँ देखने को मिलती है लेकिन भारतीय संस्कृति के गुण जिस पात्र में समाहित मिलते हैं वही उनकी दृष्टि में सफल भी होते हैं, आदर्श से पथभ्रष्ट स्त्री पात्रों को प्रसाद जीवन के सफर में सफल नहीं होने देते हैं। इसीलिए आलोचक नंददुलारे वाजपेयी मानते हैं कि नारी–मनोविज्ञान और नारी–चित्रण के उद्घाटन में प्रसादजी को पुरुष चित्रण की अपेक्षा कही अधिक सफलता प्राप्त हुई है। प्रसाद ने अपने नाटकों द्वारा तत्कालीन परिवेश में स्त्री की सामाजिक उपादेयता बतलाई है। राजनीतिक सक्रियता उनके प्रत्येक स्त्री पात्र में मिलती है, समता का सन्देश भी स्त्री पात्र देते हैं, स्वाभिमान के प्रति सचेत मल्लिका, सरमा, देवसेना, जैसे पात्र मिलते हैं, जातीय प्रेम से युक्त पात्र सरमा और मनसा है।

स्त्रीयोचित्त अधिकारों के प्रति जागरूक मल्लिका, सरमा देवसेना आदि पात्र है। जनमेजय का नागयज्ञ में सरमा का अपने पति वासुकी से कहा गया कथन दृष्टवय है। आपको और सब अधिकार है, पर मेरी सहज स्वतंत्रता का अपहरण करने का नहीं। एक दास को कुछ पैसा अवश्य मिलता है लेकिन स्त्री गुलाम होती है जिसका मानसिक रूप से शोषण किया जाता है और उसे

कोई काम नहीं मिलता है बस आजीवन पति की गुलामी में अपना जीवन काटना होता है। पुरुष द्वारा स्त्री जीवन पर लादे गए अनुचित अधिकार तथा वैवाहिक संबंधों में अनेक्तिकता का विरोध प्रसाद के नाटकों में भरपूर मिलता है। प्रसाद के नारी पात्र- मल्लिका, सरमा, देवसेना, अलका, सुवासिनी ध्रुवस्वामिनी आदि सभी कहीं-न-कही पितृसत्ता द्वारा निर्मित स्त्री की काल्पनिक छवि के छद्म को तोड़कर अस्मितानिर्माण में सक्रिय होते हैं। प्रस्तुत शोध में 'मोहन राकेश का नाट्य साहित्य और नारी चिंतन अध्याय पर भी विस्तृत काम किया गया है। राकेश ने सम्पूर्ण नाट्य साहित्य में चित्रित स्त्री की छवि को आत्मसात करते हुए स्त्री संबंधों को अपनी मौलिक रंगदृष्टि द्वारा एक नया बोध प्रदान किया। राकेश ने लक्ष्मीनारायण मिश्र, भुवनेश्वर, उपेन्द्रनाथ अश्क आदि के नाटकों की भांति अपने नाटकों का कथ्य स्त्री-पुरुष संबंधों को ही चुना है लेकिन उनके नाटकों के नारी पात्र सामाजिक चेतना के स्थान पर वैयक्तिक चेतना को अधिक महत्व देते हैं। इस दृष्टि से राकेश स्त्री चित्रण में नवीनता का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके सभी नाटकों में स्त्री ही केन्द्रीय भूमिका का निर्वाह करती है, इसीलिए पुरुष से ज्यादा प्राणवान दिखाई देती है। 'आषाढ़ का एक दिन', 'लहरों के राजहंस' तथा 'आधे-अधूरे' सभी नाटकों में नायिका का कक्ष या घर ही केंद्र में है। विपरीत परिस्थितियों में भी उनके नाटकों की नारी अदम्य जिजीविषा के साथ अस्तित्व की तलाश में निरंतर संघर्षरत दिखाई देती है।

उनके नाटकों के स्त्री पात्र चाहे मल्लिका हो, सुंदरी हो या सावित्री हो, सभी तीव्र वेदना भोगते है लेकिन जीवन से पलायन नहीं करते हैं बल्कि वेदना भोगकर आत्मचेता बनते है। आलोचक गोविन्द चातक स्त्री के इसी आत्मचेता स्वरूप को उसके अस्तित्व की तलाश का मार्ग मानते हैं। लहरों के राजहंस में राकेश ने नारी के भोगवादी दृष्टिकोण को चित्रित किया है जिसमें सुन्दरी के माध्यम से विरागी पुरुष के प्रति स्त्री के विरोध को दिखलाया है। नारी के प्रति राकेश का यह नया बोध है। राकेश ने आधे अधूरे में एक ऐसी नौकरीपेशा आत्मनिर्भर स्त्री का चित्रण किया है, जिसकी आय पर उसका परिवार निर्भर है। जिस प्रकार सदियों से परिवार में पुरुष मुखिया घर खर्च का स्त्री से एक एक पैसे का हिसाब लेता आया है, उसी प्रकार सावित्री पुरुष महेंद्र नाथ से लेती है। पितृसत्तात्मक समाज के उदय से ही स्त्री आर्थिक रूप से पुरुष पर आश्रित रहती आई है राकेश ने आधे-अधूरे में सावित्री के माध्यम से इस परंपरा को तोड़ा है। पितृसत्तात्मक समाज में पुरुष के भोगवादी, वासनात्मक मुखौटे को उघाड़ने का भी कार्य राकेश ने आधे-अधूरे नाटक के माध्यम से किया है। नाटक के सभी पुरुष पात्र वासनात्मक दृष्टि से समान है। स्वतंत्रता के पश्चात् परिवार नामक संस्था में खासकर स्त्री-पुरुष संबंधों के नैतिक आचरण में भारी परिवर्तन आता है जिसको राकेश ने अपने नाटकों में अभिव्यक्ति प्रदान की है। आषाढ़ का एक दिन की मल्लिका जहाँ विवाह नहीं करने का फैसला आधुनिक स्त्री की भांति लेती दिखाई देती है, वहीं वह अपने अधिकारों अपनी अस्मिता के प्रति पूर्णतया आत्मसजग स्त्री है। बाहरी हस्तक्षेप का अस्वीकार भी मल्लिका, सुन्दरी, सावित्री में बराबर मिलता है।

आधुनिक नारी अपनी विशिष्ट पहचान, अस्तित्व की प्रतिष्ठा चाहती है और यह काम स्त्री को नितांत वैयक्तिक स्तर पर आन्तरिक चिंतन-मनन द्वारा अपनी अस्मिता तथा अस्तित्व की निरंतर खोज करवाते चलते हैं। राकेश के नाटकों का कथानक उनके निजी जीवन में भोगे गए जीवन का यथार्थ होने के कारण सजीवता धारण किये है। अम्बिका, सुन्दरी जैसे यथार्थ में जीने वाले पात्र तो हैं ही, साथ ही 'भावना में भावना का वरण' करने वाले पात्र भी अपने जीवन में यथार्थ का सामना अवश्य करते हैं और उनके लिए यही कटु यथार्थ उन्हें अपने जीवन की अस्तित्व की अस्मिता की वास्तविक पहचान करवाता है।

स्त्री-चेतना की दृष्टि से हिंदी एकाकी के क्षेत्र में जयशंकरप्रसाद, भुवणेश्वर, उदयशंकर भट्ट, लक्ष्मीनारायण मिश्र, विष्णु प्रभाकर लक्ष्मी नारायण लाल, मन्नू भंडारी आदि ने महत्वपूर्ण कार्य किया है। रामकुमार वर्मा आदि की ऐतिहासिक एकांकियों को छोड़कर अगर देखा जाये तो हिंदी एकांकियो का मूल कथानक स्त्री-पुरुष सम्बन्ध और उनके अधिकारों की लड़ाई ही है। अधिकारी के प्रति सचेत पुरुष की बन्दी या लौंडी होने का विरोध प्रेम और विवाह पर अपनी मौलिक दृष्टि और सोच पारम्परिक बंधनों से मुक्ति की छटपटाहट, स्वातंत्र्योत्तर शिक्षित, नौकरीपेशा, आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर स्त्री का चित्रण मिलता है। दाम्पत्य संबंधों में आये बिखराव पीढ़ियों के अंतराल, देह की यौन पवित्रता अपवित्रता के प्रश्न को भी इनमें उठाया गया है।

प्रेम और विवाह के मूलभूत प्रश्नों को सामाजिक सन्दर्भ को ध्यान में रखते हुए प्रसाद और राकेश के रंग-चिंतन में अभिव्यक्त किया है। प्रेम संवेदना और विवाह शताब्दियों से पितृसत्ता के अनुरूप ही अपना स्वरूप गढ़ते चलते हैं। जहाँ तक स्त्री के परिप्रेक्ष्य में बात की जाये तो पितृसतात्मक विवाह नामक संस्था स्त्री के प्रेम व संवेदना पर सदियों से कुठाराघात करती आई है। विवाह संस्था के अंतर्गत स्त्री के होने वाले उत्पीड़न, दमन, शोषण के कारण ही पाश्चात्य स्त्री आलोचक मेरी वोल्सटनक्राफ्ट मार्क्स-एंगल्स, स्टुअर्ट मिल, केट मिलेट आदि ने विवाह को 'वैधानिक वैश्यावृत्ति' का दर्जा दिया है। विवाह संस्था के औचित्य-अनौचित्य के प्रश्नों को प्रस्तुत शोध में व्यक्त किया है। जॉन स्टुअर्ट मिल विवाह के कानून को तानाशाही का कानून मानते हैं।

प्रसाद के नाटकों की स्त्री पात्र सरमा, मल्लिका, देवसेना, ध्रुवस्वामिनी आदि पितृसत्ता या समाज द्वारा निर्मित वैवाहिक और संवेदनात्मक बंधनों को नकारती हैं और यही दकियानूसी परंपरागत मूल्यों को नकारने की उनकी आन्तरिक सोच उनमें अस्मिता बोध जगाती है। प्रसाद वैवाहिक संख्या के अनुचित बंधनों से मुक्ति की पैरवी अपने नाटकों में करते दिखाई देते हैं और विशेष तौर पर धर्म के द्वारा स्त्री पर लादे गए अनैतिक बंधनों पर ध्रुवस्वामिनी नाटक में मन्दाकिनी, पुरोहित तथा ध्रुवस्वामिनी के संवाद द्वारा कटु प्रहार करते हैं। स्त्री की निजी इच्छाओं-आकांक्षाओं का प्रसाद विशेष रूप से ध्यान रखते हैं।

राकेश के नाट्य साहित्य में स्वतंत्रता के बाद मध्य वर्गीय स्त्री पुरुष के वैवाहिक संबंधों में आये तीव्र बदलाव को देखा जा सकता है। वर्तमान में विवाह संस्था की नैतिकता कठघरे में होने

के बावजूद स्त्री पुरुष संबंधों में सामंजस्य बनाने वाली विवाह के इतर कोई दूसरी संस्था कारगर भी दिखाई नहीं देती है। लिव इन रिलेशनशिप जैसे आधुनिक तरीकों की विवाह के विकल्प के रूप में प्रासंगिकता अभी संदिग्ध बनी हुई है।

स्त्री अपनी संवेदना या भावावेग अर्थात करुणा, त्याग, दया आदि गुणों के कारण अपने अस्तित्व के प्रति इतनी चेतना शून्य हो जाती है कि उसे अपनी अस्मिता का बोध ही नहीं रहता है। प्रसाद के अजात शत्रु नाटक की शक्ति अपनी अस्मिता के प्रति पूरी तरह जागरूक होने के कारण ही स्त्री के लिए पुरुष सत्ता द्वारा निर्धारित कर्तव्यों-करुणा, दया, शीतलता आदि को स्वीकारने से मना करती है। स्त्री के जिन गुणों को सृष्टि के विकास का आधार माना गया है, उन्हीं गुणों से युक्त स्त्रीजाति पर सदियों से पुरुष शासन करता आ रहा है। स्त्री के इन सद्गुणों को अपनाने से क्या लाभ हुआ? दरअसल ये पितृसत्ता द्वारा निर्मित बेड़ियां ही है। राकेश के आषाढ़ का एक 'दिन' की मल्लिका जीवन में केवल भावना का ही वरण करती है इसीलिए जीवनपथ पर असफल रहती है। जीवन को वास्तविक अर्थ प्रदान करने के लिए भावना एवं यथार्थ का सामंजस्य आवश्यक होता है।

स्वतंत्रता के पश्चात् स्त्री-पुरुष संबंधों में आये बदलाव को हिंदी रंगमंच ने नए आयाम प्रदान किये। मोहन राकेश, लक्ष्मीनारायण लाल, सुरेन्द्र वर्मा, भीष्म साहनी सुशील कुमार सिंह, रमेश वक्षी, मुद्राराक्षस, मन्नू भंडारी, कुसुम कुमार आदि के नाटकों में स्त्री-पुरुष संबंधों की विभिन्न दृष्टिकोण से पड़ताल की गई है। इस दृष्टि से हिंदी नाटकों के अलावा विभिन्न भाषाओं के नाटककारों-गिरीश कर्नाड, विजय तेंदुलकर, महेश एलकुंचवार आदि ने दाम्पत्य संबंधों को केंद्र बनाकर नाट्य रचना की है। इन सभी नाटककारों का प्रयास वैवाहिक संबंधों में व्याप्त अजनबीपन, वैमनस्य, कटुता, तनाव, अलगाव आदि के कारणों की खाई को पाटकर समानता स्थापित करना रहा है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि प्रत्येक मनुष्य को अपनी स्वतंत्रता का निर्धारण करने का हक है, अत: स्त्री को भी जबरन लादी गई परम्पराओं, नैतिकताओं मर्यादाओं, कुरीतियों, धर्मान्धताओं को त्यागकर अपने अस्तित्व निर्माण की प्रक्रिया में स्वयं सक्रिय होना चाहिए। स्त्री को अब किसी संगठन, संस्था या विचारधारा के तहत अपनी अस्मिता का निर्माण नहीं करके अपने अंतर्मन की आवाज सुनकर, सोच के धरातल पर मुक्ति का विचार पैदा करके, निजी अस्मिता प्राप्ति के लिए प्रयास करना चाहिए। अस्तित्व निर्माण की प्रक्रिया में स्त्री द्वारा पुरुष को शत्रु न मानकर एक सहयोगी के रूप में सोचना पड़ेगा। स्त्रियों के प्रति सामाजिक दरिद्रता की स्थिति में व्यापक बदलाव का आना जरूरी है।

❑❑❑

???

विस्थापित जीवन जीने का सजीव चित्रण : 'बसंती'

—डॉ. अचला पांडेय

साहित्य समाज का दर्पण है। इससे अतीत से संबंधों की निरंतरता बनती है तो वर्तमान को व्यवस्थित करने का तरीका मिलता है तथा भविष्य के लिए नूतन दृष्टि मिलती है। प्रेमचंद कहते हैं "साहित्य समाज तथा राजनीति का संबंध बिल्कुल अटल है। समाज आदमियों के समूह को ही तो कहते हैं। समाज में जो हानि लाभ तथा सुख दुख होता है, वह आदमियों पर ही होता है न। राजनीति में जो सुख दुख होता है वह आदमियों पर ही पड़ता है। साहित्य से लोगों को विकास मिलता है।साहित्य से आदमी की भावनाएं अच्छी और बुरी बनती हैं। इन्हीं भावनाओं को लेकर आदमी जीता है और इन सब चीजों की उत्पत्ति का कारण आदमी ही है।"(1) मानव जीवन की सभी समस्याएं साहित्य का विषय बनी है और इस संदर्भ में विस्थापन की समस्या का एक विशिष्ट स्थान है। सामाजिक संचलन, सांस्कृतिक संक्रमण, वैचारिक प्रस्फुरण और आर्थिक अंतरण विस्थापन के संदर्भ में साहित्य विमर्श का विषय बनते रहे हैं।

विस्थापन समाज की स्थापित मान्यताओं पर प्रहार है। इसने न केवल एक नई व्यवस्था को जन्म दिया है अपितु समाज की स्थिरता में निहित मूल तत्वों को भी प्रभावित किया है। रचनात्मक विधाएं सामाजिक परिवेश से ही संजीवनी शक्ति प्राप्त करती हैं। अस्तु, साहित्य की विभिन्न विधाओं पर विस्थापन का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। कहीं यह औद्योगीकरण से नि:सृत दिखता है, तो कहीं प्राकृतिक आपदाओं से, कहीं जीविका की तलाश में भटकते मजदूरों के जीवन से, कहीं बदलते हुए आर्थिक संबंध साहित्य के नए विषय बनते हैं तो अपने स्थान से दूर कहीं नहीं छाया में पल्लवित होता व्यक्ति अपने एकाकीपन से बचने की अकुलाहट को रचनाकारों के लिए विषय स्वरूप प्रदान कर देता है। इस तरह साहित्य जो केवल समाज का दर्पण ही नहीं समाज का मार्गदर्शक भी है; बहुआयामी परिवर्तनों को सहेजता, समेटता, उकेरता उस युगबोध को आधार देता है जिससे मानव समुदाय की पहचान है। इन सभी का परिचय मिलता है कहानियों तथा उपन्यासों में।

विस्थापन समाज की स्थापित मान्यताओं पर प्रहार है। इसने न केवल एक नई व्यवस्था को जन्म दिया है अपितु समाज की स्थिरता में निहित मूल तत्वों को भी प्रभावित किया है। रचनात्मक विधाएं सामाजिक परिवेश से ही संजीवनी शक्ति प्राप्त करती हैं। अस्तु, साहित्य की विभिन्न विधाओं पर विस्थापन का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है।

'बसंती' भीष्म साहनी का यथार्थ की पृष्ठभूमि पर लिखा गया समस्या प्रधान जनवादी उपन्यास है। राजस्थान के सुदूर ग्रामीण अंचल में सूखे व अकाल के कारण जीविकोपार्जन के उद्देश्य से अपना घर-द्वार, खेती-बारी छोड़कर दिल्ली के आसपास बंजर पठारी पथरीली भूमि पर झुग्गी-झोपड़ी बनाकर रहने को विवश लोगों तथा सीमा प्रांत के भी अपने वतन से बिछड़े लोगों की विस्थापनजन्य समस्याओं के कारण अनेक आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक समस्याओं से ग्रस्त लोगों की मानसिक भूमि को संवेदना के स्तर पर जीकर लेखक ने इस कथा का सृजन किया है। इस उपन्यास का मुख्य चरित्र है बसंती जो अपने आप में इतना साफ-सुथरा, निरापद व व्यवहारिक है कि लेखक को इससे अच्छा कोई दूसरा नाम नहीं सूझा और रचना को बसंती के नाम पर कर दिया। बसंती एक व्यक्ति से ज्यादा समस्या है और समस्या के मूल में है विस्थापन। विस्थापन का कारण कुछ अंशों में प्राकृतिक अवश्य है परंतु उससे ज्यादा राजनैतिक भी है।

विस्थापन में पूरा का पूरा जीवन ही उखड़ जाता है, उजड़ जाता है। मनुष्य की स्वाभाविक संवेदना कुंठित हो जाती है। बसंती का पिता तनावग्रस्तऔर ह्रदयहीन हो जाता है। वह परिस्थितियों के सामने घुटने टेक देता है। जीवन को जीवित रखने के लिए सामाजिक, नैतिक व मानवीय मूल्यों की तिलांजलि दे देता है। यहां तक कि वह पिता होकर भी अपनी संतान को संकटापन्न देखकर भी सामान्य बना रहता है विकल नहीं होता यह जानकर भी कि उसके पुत्र के पैर रेल की पटरी पर कट गए। वह देखने तक नहीं जाता है, लड़का मर गया है या जीवित, उसकी खोज खबर तक नहीं रखता। बसंती परिचय देते हुए कहती है-"जब गाड़ी चलने लगी तो कहीं किसी ने चेन खींचकर गाड़ी खड़ी कर दी। लोग चिल्लाने लगे कोई लड़का गाड़ी के नीचे आ गया है ...। किसी ने कहा दोनों टांगे कट गई है...। कोई कहता अस्पताल ले जाओ बहुत खून बह रहा है ...। डिब्बे में हमारे गांव के लोग थे। अगर हमारे गांव का है तो उठाकर डिब्बे में ले आओ कोई कह रहा था।... बापू ने सिर पीछे खींच लिया और चुपचाप अपनी सीट पर बैठ गया।"(2)

बसंती का पिता राजस्थान में जमींदार था, उसकी धाक थी परंतु आज वह नाम मात्र का चौधरी रह गया है। राजस्थानियों कि इस बस्ती में ही सड़क के पास हरियाणा और उत्तर प्रदेश के कुछ नाई, मोची, धोबी भी आकर बस गए थे। लोग अपनी जाति को भुलाकर पेशा करते थे। कोई राजमिस्त्री, तो कोई धुलाई, तो कोई चाय की दुकान पर काम करने लगा। चौधरी नाई की दुकान लगाता था। चौधरी समय को पहचानता था अपने समय का चालाक आदमी था।अपने मन में कहता है-

"अभी कुछ कर लो तो कर लो पीछे नहीं होगा"। आठ बारह सौ रूपये लेकर दो बड़ी लड़कियों की शादी बूढ़ों से करके अपना बोझ हल्का कर लिया है। बसन्ती श्यामा से कहती है-"आपको पता है बीवी जी? क्या? हमारा बापू बेटियां बेचता है......सच, बीवी जी, मेरी बड़ी बहिन का ब्याह भी गांव में किसी बूढ़े से कर दिया। उससे आठ सौ रूपये भी लिए। वह गांव में बैठी घास छीलती है। मुझे भी तो बूढ़े के साथ ब्याह रहा था।" (3)

यह वाक्य उस परिवेश को चित्रित करता है जहां बेटी बोझ है और दूसरी ओर आमदनी का साधन। बोझ समझने के कारण ही बसंती का पिता उसके लिए अपशब्दों का प्रयोग करता है-

"हरामजादी तू कहां भाग गई थी?" (4)

अपने घर को पक्का करने के लिए बसन्ती का पिता बारह सौ रूपये में बसंती को दर्जी के साथ बेचता है।

चौधरी सहित उसके गांव के लोग विस्थापित होकर आबाद अवश्य हो गए थे परंतु प्रतिपल यह डर बना रहता है कि कब पुलिस आएगी और बसा बसाया घर उजड़ जाएगा। यह उजड़ना दो रूपों में उभरता है। प्रथमत: बस्ती का उजड़ना, द्वितीयत: बसंती की जिंदगी का उजड़ना। सरकार के तरफ से बस्ती खाली करने तथा उजाड़ कर फेंक देने का हुक्म हुआ था। बस्ती भी दो चार दिनों की मेहमान थी आज उजड़ेगी या कल? मूलराज लोगों को समझाता भी है कि कोठरी पक्की न करो। न तुम्हारी जमीन, न तुम्हारे नाम का पट्टा। बसे हुए लोगों का यह कहना कि "दस बीस दिनों की बात होती तो कच्ची झोपड़ियों में पड़े रहते।अब तो यहां रहते बरसों बीत गए घर पक्का बना लिया तो क्या गुनाह किया।" (5)

लेखक ने विस्थापित-जनों के संवादों के माध्यम से उनके नागरिक अधिकारों की भी वकालत की है। देश अपना है, सरकार अपनी है, नागरिक ही सरकार को बनाते हैं। यह लोग वर्षो पहले निराश्रित रहकर दिल्ली के फुटपाथ, पार्कों को व बंजर जमीन में खुले आकाश के तले छा गए थे। इन्होंने दिन रात मेहनत करके अपने परिवार का सिर छुपाने को एक कोठरी बना लिए तो क्या आबाद हो गए? सरकार कल इनको पुन: निराश्रित, बेघर, बेरोजगार व विवश बनाकर बर्बाद कर देगी। क्योंकि पक्की कोठारिया बनाना ही नहीं सरकारी जमीन पर कब्जा करना ही गैरकानूनी है। बसंती की शादी उसका पिता बूढ़े दजह्न बुलाकी के साथ बारह सौ रूपये में तय कर दिया। बुलाकी दूल्हा बनकर पंडित जी के साथ आने वाला था कि एक बड़ी आफत आ गई बस्ती के ऊपर। चौधरी ने भागते हुए लड़के से पूछा कि क्या है रे? कैसा हल्ला है?

"पुलिस आई है सड़क पर लारियां-ही-लारियाँ है। वह घर गिराएंगे।" (6)

पुलिस के बड़े अधिकारी जानते थे कि इतनी बड़ी बस्ती एक दिन में नहीं गिराई जा सकेगी परंतु शुरू के तीस-चालीस घरों को तोड़ डालना जरूरी है, जिससे बस्ती रहने के लिए नकारा हो जाए और लोग यहां से भाग जाएं। बस्ती खाली कर दें इसलिए उन्होंने बीस-बीस रूपये का प्रलोभन देकर उस बस्ती के कुछ राज मजदूरों को पकड़ लिया था।

बस्ती के सभी लोग अपना सामान घर गृहस्थी लेकर इधर-उधर कुछ बिखर गए, कुछ लारियों में चढ़कर नगर की ओर चले गए। भीड़ में बसंती ने अपने मां-बाप को देखा "मां के कुर्ते के बटन खुले थे वह सदा की भांति फटे हाल सिर पर कनस्तर और गठरी उठाए घिसटती चली आ रही थी उसका पीला-पीला चेहरा किसी मुर्दे के चेहरे जैसा लग रहा था।" (7)

चौधरी रामू व अपनी पत्नी को लारी में बैठाने के बाद बसंती को लारी में चढ़ने को नहीं कहा बसंती छूट गई-"बसंती का मन व्यथित हो गया। मां-बाप व रामू को दूर देख उसके गले में कांटे चुभने लगे। रामू को ले गए हैं और मुझको पीछे छोड़ गए हैं।....बसंती कुछ देर वही ठिठकी खड़ी रही और फिर सड़क पार करके रमेश नगर के घरों की ओर बढ़ गई।" (8)

बस्ती उजड़ गई थी चौधरी भी अपनी बेटी बसंती के बदले बारह सौ रूपये की भारी रकम लेकर अपनी उजड़ी गृहस्थी लेकर जाने कहीं सड़क के किनारे फुटपाथ या पार्क में शरण ले लिया था। वह जानबूझकर बसंती को छोड़ गया था। बसंती को एक बार पहले भी मालूम हुआ था कि उसकी शादी बुलाकी से होगी तो उसने चूहे वाली दवा खा ली थी। यदि, एक घंटे का भी समय मिल गया होता तो अब तक बसंती साठ वर्षीय दर्जी के घर दुल्हन बन कर बैठी होती परंतु दुर्भाग्य बुलाकी का जो दूल्हा सुना बसंती चंपत हो गई और दुर्भाग्य चौधरी का जो बस्ती ही टूट गई।

घर टूट जाना, नगर छूट जाना माता-पिता से छूट जाना बसंती के लिए समस्या तो थी उससे भी बड़ी समस्या उसकी स्त्री जाति थी। यदि वह लड़की नहीं होती तो बाप बारह सौ क्या बारह हजार में भी नहीं बेच पाता। बसंती के पास बुलाकी के साथ जाने के अतिरिक्त कोई दूसरा रास्ता भी नहीं था। बुलाकी हर स्तर से बसंती को पाने में सक्षम था। राजस्थानियों की पंचायत में एक भी इंसान ऐसा नहीं था जो कह सके कि बूढ़े बुलाकी की शादी चौदह वर्ष की बसंती से अनुचित है। बसंती जीने-खाने की चिंता करें या फिर स्वयं को छुपाती फिर दोनों ही समस्या उसके अस्तित्व को निगलना चाहती थी। बसंती ने रमेश नगर में रहने वाली श्यामा बीवी की शरण ली। वहां उसके गुजर-बसर की व्यवस्था हो गई। बसंती को सहारा मिल गया जबकि श्यामा पुण्य कमा रही थी। बसंती के जीवन का दूसरा महत्वपूर्ण परंतु दुर्भाग्य पूर्ण अध्याय तब शुरू हुआ जब किसी शादी के अवसर पर बर्तन धोते समय उसका परिचय दीनू नामक लड़के से हो गया। एक दिन दीनू के साथ साइकिल के पीछे बैठकर नगर के चक्कर लगाती रही और अंत में उसके साथ हॉस्टल के कोने में एक कमरे में रहने लगी। बसंती ने दीनू से विवाह भी किया।

"यह अभिनय भी था, खिलवाड़ भी था, विवाह भी था, विवाह का स्वांग भी था और भावी दांपत्य जीवन के लिए नारी हृदय की सहमी-सहमी भाव विह्वल प्रार्थना भी थी।" (9)

बसंती श्रम के माध्यम से जीवन यापन करना चाहती है। वह आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर है। उसे अपने जीवन से प्रेम है। स्वभाव से बगावत करती है यह उसके परिवेश की देन है। वह बुड्ढे से विवाह की अपेक्षा दीनू के साथ भागना उचित समझती है। निडर होकर मां-बाप के सामने दीनू के साथ साइकिल पर बैठकर निकलने की क्षमता रखती है यह जानते हुए कि डांट पड़ेगी- एक अजीब जुनून बसंती के सिर पर सवार था। वह बार-बार अपने मां-बाप और संबंधियों के सामने से साइकिल पर सवार होकर निकलना चाहती थी। वह इन सबों को चुनौती देना चाहती है कि तुम मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। मुझे रोक कर देखो, जो रोक सकते हो। बसंती आंख के साथ खेलती है वह अब स्वतंत्र है। बसंती विद्रोह की राह चुनती है यह विद्रोही तेवर परिस्थितियों की देन है। वह भविष्य के बारे में नहीं सोचती क्योंकि वह जिस परिवेश में पल रही है वहां भविष्य कुछ निश्चित नहीं है। दीनू उसे कहां ले जाएगा, कैसे रखेगा, क्या होगा इन सभी से अपरिचित थी। बसंती विद्रोही है, उसका विद्रोह भी प्रेम के आगे झुकता है।इसका पूरा जीवन प्रेम के अभाव में बीतता है, जिसको वह घर के बाहर देखती है। यह तलाश दीनू पर आकर समाप्त हो जाती है। पारिवारिक आर्थिक सामाजिक परिस्थितियां मनुष्य को विवश बनाती हैं।

बसंती का सपना उस समय टूट गया जब उसे पता चला कि दीनू की शादी हो चुकी है। परिवार गांव में रहता है। दीनू उसे बरडू के हाथों तीन सौ रूपये में बेच दिया है। बेचे जाने की प्रक्रिया पिता से शुरू होकर दीनू तक अनवरत चलती है । वह मां बनने वाली थी। बसंती ने जिन परिस्थितियों से उबरने के लिए दीनू का हाथ पकड़ा था उसे फिर उसी वातावरण में लौटने को विवश होना पड़ा। वह अपनी विवशता प्रकट करते हुए श्यामा से कहती है

"वहां कैसे जाऊँ बीबी जी, वहां तो बरडू बैठा है।.... इधर जाऊं तो बाप बैठा उधर जाऊं तो बरडू ।लड़की के लिए सबसे बड़ा आश्रय मां-बाप का घर होता है परंतु उसका बाप बहेलिया की तरह जाल बिछाए बैठा था। वहां तो बूढ़ा दर्जी चक्कर काटता है बीवी जी, बाप मुझे चुटिया से पकड़ कर उसके साथ बांध देगा।" (10)

अब तो बसंती का स्त्री होना और उससे अधिक मां होना उसके लिए खतरनाक बन गया था। आखिर वही हुआ जिससे बच पाने के लिए बसंती भागती फिर रही थी। बूढ़ा बुलाकी उसे ब्याह लाया था और अपनी कामयाबी पर फूला नहीं समा रहा था। "मैं कहूं बसंती रानी आएगी एक दिन अवश्य आएगी"। बसंती एक बच्चे की मां बन चुकी थी उसके सामने बुलाकी की तस्वीर थी और प्रेमी दीनू की भी।बुलाकी ने बसंती को कपड़े व आभूषण से सजा दिया था परंतु वह दीनू को नहीं भूल पाती थी। एक दिन वह पुनः दीनू के साथ चली गई बुलाकी रोने चिल्लाने लगा था। "मैं मुकदमा करूंगा, छोड़ूंगा नहीं बसंती....लौट आ, लौट आ" दूसरी बार दीनू के साथ जाने पर बसंती को कड़ा अनुभव हुआ। वह दो पत्नियों का मालिक था परंतु निकम्मा। चौका बर्तन करके पूरे परिवार का खर्च चलाने के लिए तंदूर लगाया जिसमें सभी कार्य करेंगे और खाएंगे। सहसा एक दिन तूफान फट पड़ा। दीनू अपनी पहली पत्नी रुक्मी को साथ लेकर अपने घर चल दिया–

"क्या कर रहे हो? बसंती ने पूछा तो दीनू ने रुखाई से कहा देख तो रही हो क्या कर रहा हूं हम लोग गांव जा रहे हैं। बसंती का मन कह रहा था कि नहीं लौटेगा। अब मेरी जरूरत क्या है? रुक्मी अपने बेटे को छाती से लगाए बस में बैठी थी। मेरी तरफ देखा तक नहीं पप्पू से बोला तक नहीं। बसंती श्रमजीवी है वह सब कुछ हार कर भी अपने जीवन से नहीं हारी है। अपने मन को संतोष देती है-वह तन्दूर बनाए रखेगी। सारे घर की न सही दो जून की रोटी का जुगाड़ तो हो ही जाएगा। पप्पू उसकी आंखों के सामने तो रहेगा। आगे देखा जाएगा जो होगा।" (11)

बसंती ऐसी लड़की है जो गांव में पैदा होकर रोजगार की तलाश में निकले मां-बाप के साथ महानगरों के फुटपाथ, पार्कों, तथा झुग्गी-झोपड़ियों में पलकर बड़ी होती है। वह अपने परिवार और समाज के नैतिक मूल्यों से विद्रोह करती है। यह विद्रोह भले ही मानसिक शोषण तक ले जाता है, पर उसकी निजता को कोई हादसा तोड़ नहीं पाता। इसी बल पर वह रूढ़ियों और आर्थिक अभावों से मुक्त होने की चेष्टा करती है। जिंदगी को संपूर्ण अर्थों में जीने की बसंती की ललक प्रेरक शक्ति है।

एक दिन अचानक फिर पुलिस वालों की टोपियां और लाठियां सड़कों पर छा गई। इतने ज्यादा पुलिस के आदमी बसंती ने बस्ती तोड़े जाने के समय ही देखे थे। पटरी वाले को उठा रहे हैं। लारी निकल गई तो बसंती ने देखा...

"उसका बाप सड़क पर दौड़ दौड़कर बदहवास हो रहा है। दे जाओ! मेरा थैला दे जाओ! ऐ साहिब, मेरा थैला दे जाओ। उसका नीले रंग का कुर्ता पसीने से भीग रहा था। वह बुरी तरह हांफ रहा था। बाप को देखकर बसंती को रूलाई आ गई। उसका गला रूंध गया। उसने अपने बाप को इस हालत में कभी नहीं देखा था। वह सदा उसकी आंखों में एक दैत्य सा लगा करता था।"(12)

पुलिस वाले बसंती की तंदूर वाली दुकान भी तोड़ चुके थे अब उसे जीविका का कोई सहारा नहीं बच पाया-मिट्टी के मलबे पर दो बास आड़े-तिरछे खड़े थे। इन पर अपना लैम्प टांगा करती थी। खंडहर के सामने खड़ी बसंती अपनी उजड़ी गृहस्थी का रूप देख रही थी। बसंती पप्पू को छाती से लगाए पिछली सड़क की ओर घूम गई। बस्ती के उजड़ने से शुरू होकर पटरियों के उखड़ने पर समाप्त होना, बसंती का अपने माता-पिता के पीछे लौट जाना नए सिरे से जीवन जीने का संकेत करता है। ।जिस ओर से आई थी उसी ओर जाने लगी।

भीष्म साहनी के उपन्यास बसंती की शीर्षक व्यक्तिवाचक होने के साथ ही भाववाचक भी है। बसंती एक उन्मेष का नाम है जो प्रकृति के परिपेक्ष्य में परिवर्तन व क्रांति का अग्रदूत है। लेखक ने इस कथानायिका को ऐसे वर्ग से चुना है जो पहले तो अभिजात कुल से है परंतु प्राकृतिक

आपदा व राजनैतिक द्वन्द्व के चलते उसका जीवन बार-बार उजड़ जाता है फिर भी वह अपने अस्तित्व को कायम रखने में संघर्षशील व प्रयत्नशील है।

स्त्री वर्ग की प्रतिनिधि पात्र बसंती कथा की नायिका है। वह मुख्य चरित्र है जो अपने आप में संकटापन्न है।वह आर्थिक अभावग्रस्त उजाड़ गृहस्थी में पलकर बड़ी होती है। माता-पिता, घर-परिवार कहीं से भी सुरक्षा न पाकर वज्र कठोर बन जाती है और प्रत्येक परिस्थिति में अपने अस्तित्व को कायम रखती है। कथाकार ने राजनैतिक दृष्टि बसंती को नहीं लिखा फिर भी बसंती के निर्माण में और उसकी त्रासद पूर्ण तबाह जिंदगी के पीछे राजनीति कम कारण नहीं है। बसंती उन लाखों लड़कियों का प्रतिनिधित्व करती है जो अपने परिवारों द्वारा समुचित सुरक्षा न पाकर सड़कों पर उतर आती हैं। उनका शोषण होता है फिर भी वह करूण भावनाओं से समाज को सींचती रहती हैं। कथानक को भीष्म साहनी जी ग्रामीण क्षेत्र से शहर में ले आते है। जो प्राकृतिक आपदा के मारे हुए हैं। निरंतर आपदा सहते-सहते जिनका हृदय कठोर हो जाता है और वे मानव आकृति में शैतान हो जाते हैं। मानव के भीतर अमानवीयता उत्पन्न हो जाती है। स्त्री सुलभ कमजोरियों के बाद भी बसंती की अदम्य जिजीविषा जिंदगी को सही अर्थों में जीने की ललक उसे आजीवन संघर्ष करने की शक्ति प्रदान करती है। संकीर्ण व क्षुद्र लोगों के द्वारा निरंतर शोषित उत्पीड़ित होते रहने पर भी वह अपनी अस्मिता को बनाए रखने के लिए परंपराओं का विरोध भी करती और प्रत्येक संकट से बाहर आने का विकल्प ढूंढ लेती है। कठिन परिस्थितियों में भी मुस्कुराते रहना ही कथा की अंतरध्वनि है। रामचंद्र तिवारी भी कहते हैं -

"बसंती एक ऐसी लड़की की कहानी है जो दिल्ली की झुग्गी-झोपड़ी में पली है।उसका भाग्य झुग्गी- झोपड़ियों से जुड़ा है। जैसे झुग्गी-झोपड़ियों को बार-बार उजाड़ा जाता है, वैसे ही बसंती का जीवन भी बार-बार उजड़ता है। अपनी प्रबल जिजीविषा के बल पर निरंतर संघर्ष करने वाली यह लड़की अपना उदाहरण आप है।" (13)

सन्दर्भ :

1. उद्धृत, प्रेमचंद घर में, शिवरानी देवी, पृष्ठ-80
2. बसन्ती, भीष्म साहनी पृष्ठ-39
3. वही, पृष्ठ-40
4. वही, पृष्ठ-31
5. वही, पृष्ठ-10
6. वही, पृष्ठ-20
7. वही, पृष्ठ-31
8. वही, पृष्ठ-32
9. वही, पृष्ठ-69
10. वही, पृष्ठ-101
11. वही, पृष्ठ-179
12. वही, पृष्ठ-180
13. हिंदी का गद्य साहित्य, डॉ. रामचंद्र तिवारी, पृष्ठ-225, 226

❑❑❑

सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में संवाद, नवाचार, और रचनात्मकता का अध्ययन : विशेष संदर्भ उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

—मदन मोहन जोशी
—दीपांकुर जोशी

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, उत्तराखण्ड राज्य का एकमात्र मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा विश्वविद्यालय है, इस विश्वविद्यालय में आठ क्षेत्रीय कार्यालयों एवं 128 शिक्षार्थी सहायता केन्द्रों/अध्ययन केन्द्रों के द्वारा पूरे प्रदेश में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का संचालन किया जाता है।

सूचनाओं का संचार अथवा हितधारकों के साथ संवाद तथा नवाचार और रचनात्मकता किसी भी मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थान के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य होता है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थान में अपने हितधारकों के साथ संवाद हेतु कौन से तरीके अपनाये जा रहे हैं? विश्वविद्यालय ने नवाचार एवं रचनात्मकता के लिए क्या कार्य किये हैं? हितधारकों का उन नवाचार एवं रचनात्मकता के बारे में क्या सोचना है? हितधारकों की चिंताऐं, समस्याऐं और मुद्दे क्या हैं? इन्हें किस प्रकार सुधारा जा सकता है? इन्हीं प्रश्नों के समाधान के लिए इस शोध पत्र में उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय का सन्दर्भ लेते हुए अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में विश्वविद्यालय के सभी हितधारकों (शिक्षार्थी, शिक्षार्थी के माता-पिता, अभिभावक, सरकारी अधिकारियों, शिक्षार्थी सहायता केन्द्रों/ अध्ययन केन्द्रों, एवं जन साधारण) के साथ बात कर योजनाब) रूप से अध्ययन किया गया है। हितधारकों की प्रतिक्रिया कैसी है, यह जानने के लिए संबंधित विषय (theme), ध्यानाकर्षक क्षेत्र (Focus area), वर्तमान अभ्यास (Current Practice), लक्ष्य समूह (target groups), चिंताओं (concerns), समस्याओं (problems) और मुद्दों (issues) की समीक्षा की गयी। लक्ष्य समूह के साथ संवाद के अंतर्गत शिक्षार्थियों, माता-पिता/अभिभावक, सरकारी कर्मचारियों, शिक्षार्थी सहायता केन्द्रों एवं जन साधारण के साथ विश्वविद्यालय ने संवाद की जो व्यवस्था तैयार की है, उसका अध्ययन किया गया है। लक्ष्य समूह के लिए नवाचार और रचनात्मक आचरण के विकास एवं सर्वोत्तम अभ्यास विकास और परिनियोजन के अंतर्गत शिक्षार्थियों, माता-पिता/अभिभावक, सरकारी कर्मचारियों, शिक्षार्थी सहायता केन्द्रों एवं जन साधारण के साथ विश्वविद्यालय ने जो व्यवस्था तैयार की है, उसका भी अध्ययन इस शोध पत्र का विषय क्षेत्र है।

संकेत शब्द- संवाद, संचार, नवाचार, रचनात्मकता, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा, हितधारक

परिचय

भारत की उच्च शिक्षा व्यवस्था में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था (Yadav & Panda 1996) की एक विशेष भूमिका है, क्योंकि यह सकल नामाकंन अनुपात और उच्च शिक्षा के लोकतन्त्रीकरण में विशेष योगदान करती है। यह कठिन भौगोलिक स्थलों, दूर-दराज के क्षेत्रों एवं गांवों में रहने वाले लोगों, समाज के हाशिये पर विद्यमान लोगों, कार्यशील व्यक्तियों, वंचितों एवं शोषितों तथा महिलाओं तक जीवन पर्यंत अधिगम की मांग पूरी करने का एक प्रमुख साधन बन चुकी है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था (Garrison 1989) इन्हीं लोगों की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित हुई है। इस शिक्षा व्यवस्था की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताओं के अंतर्गत पाठ्यक्रम को पूरा करने की गति में लचीलापन, पाठ्यक्रमों में विविधता एवं संयोजन की सुविधा, प्रवेश एवं निकास में आयु की शिथिलता, परीक्षा का संचालन, कम से कम प्रतिबंध और अधिकाधिक खुलापन (Sahoo 1994) इत्यादि को शामिल किया जा सकता है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था खुलेपन के दर्शन पर आधारित है और यह शिक्षा या अधिगम के लिए दूरस्थ प्रणाली का उपयोग करती है (Association of Indian Universities 1997)। अत: कहा जा सकता है कि इस व्यवस्था का दर्शन मुक्त अधिगम है जबकि दूरस्थ शिक्षा इसे प्राप्त करने का साधन।

परंपरागत शिक्षण-अधिगम प्रणाली के विपरीत दूरस्थ शिक्षा प्रणाली (Perraton 2007) में शिक्षार्थी और शिक्षक स्थान एवं समय द्वारा पृथक होते हैं। दूरस्थ प्रणाली में अधिगम विशेष रूप से तैयार स्व-अध्ययन सामग्री एवं सत्रीय कार्य के माध्यम से किया जाता है जबकि अधिगम हेतु शिक्षार्थी सहायता केन्द्रों में किये जाने वाले साप्ताहिक परामर्श सत्र अथवा सम्पर्क कक्षा भी सहायक होती हैं। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में शिक्षक और शिक्षार्थियों के मध्य अंतर-वैयक्तिक संपर्क हेतु ऑडियो, विडियो, प्रिंट, इन्टरनेट इत्यादि मल्टीमीडिया (Dhama & Bhatnagar 2007) का प्रयोग किया जाता है। शिक्षक और शिक्षार्थियों तथा शिक्षार्थी और संस्थान के मध्य संवाद हेतु मुख्यत: इलैक्ट्रोनिक मीडिया का प्रयोग होता है। संचार प्रणाली मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की रीढ़ होती है, दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के हितधारकों के साथ संवाद के स्तर का अध्ययन कर दूरस्थ शिक्षा की गुणवत्ता का मूल्यांकन किया जा सकता है। संवाद का स्तर जितना अच्छा होगा दूरस्थ शिक्षा की गुणवत्ता भी उतनी ही अच्छी होगी। अत: दूरस्थ शिक्षा के अंतर्गत संचार सुविधाओं (Mangal & Mangal 2009) में निरंतर विकास हितधारकों की मांगों की पूर्ति के लिए आवश्यक है, इसके लिए मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में लगातार नवाचार एवं रचनात्मकता एक जरूरी शर्त होती है (Rumble 2001)।

वर्तमान में भारत में छह प्रकार के संस्थानों द्वारा दूरस्थ शिक्षा प्रदान की जा रही है, इनमें इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, राज्यों में स्थित राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों, तथा केन्द्रीय विश्वविद्यालयों, राज्य विश्वविद्यालयों, डीम्ड विश्वविद्यालयों और निजी विश्वविद्यालयों के दूरस्थ शिक्षा संस्थान सम्मिलित हैं। ऐसा ही एक संस्थान उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय है, जो

राज्य मुक्त विश्वविद्यालय है, इसकी स्थापना 2005 में उत्तराखण्ड विधान सभा द्वारा पारित एक अधिनियम के द्वारा की गयी थी। उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के कुछ प्रमुख उद्देश्य (Prospectus 2021-22) इस प्रकार हैं-

विश्वविद्यालय के प्रमुख उद्देश्य

विश्वविद्यालय

''क) शीघ्रता से विकसित और परिवर्तित होने वाले समाज में ज्ञान के अर्जन का संवर्धन करेगा और मानव प्रयास के सभी क्षेत्रों में नव-परिवर्तन, अनुसंधान, शोध के संदर्भ में ज्ञान, प्रशिक्षण और कुशलता बढ़ाने के लिए लगातार अवसर प्रस्तुत करने के लिए प्रयास करेगा;

ख) ज्ञान के नये क्षेत्रों में विद्या की अभिवृद्धि करने और उसे विशिष्टतया प्रोत्साहित करने की दृष्टि से विद्या के तरीकों और गति, पाठ्यक्रमों के मिश्रण, नामांकन की पात्रता, प्रवेश की आयु, परीक्षाओं के संचालन और कार्यक्रमों के प्रवर्तन के संबंध में सुनिश्चय और निर्बाध विश्वविद्यालय स्तर की नई प्रणाली के लिए उपबन्ध करेगा;

ग) औपचारिक पद्धति की अनुपूरक अनौपचारिक पद्धति का उपबन्ध करके और विश्वविद्यालयों द्वारा विकसित पाठों और अन्य साफ्टवेयर का व्यापक रूप से उपयोग करके गुणवत्ता के अन्तरण को और शिक्षण कर्मचारियों के विनिमय को प्रोत्साहित करके शैक्षणिक पद्धति के सुधार में सहयोग देगा। ''

उपरोक्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय ने अपनी स्थापना से ही प्रयास प्रारंभ कर दिये थे। विश्वविद्यालय ने दूरस्थ शिक्षा को कार्यान्वित करने के लिए आई.सी.टी. सुविधाओं के विकास पर ध्यान केन्द्रित किया। संचार के साधनों के संबंध में अत्यधिक सावधानी बरती गयी और नवाचार तथा रचनात्मकता (Chauhan 1979) को प्रमुखता दी गयी। नवाचार और रचनात्मकता किसी भी जीवंत मुक्त और दूरस्थ शिक्षा संस्थान के आवश्यक तत्व हैं। अपने शिक्षार्थियों की आवश्यकता की पूर्ति के लिए मुक्त और दूरस्थ शिक्षा संस्थान निरंतर नवाचार (Rogers 2003) करते है और नवीन विचारों, प्रथाओं, प्रक्रियाओं इत्यादि का सृजन करते हैं। नवाचार का अर्थ किसी नये आविष्कार अथवा किसी नई चीज के परिचय और विकास से होता है। यह चीजों को नये ढंग से करने अथवा विचारों और समाधान की उत्पत्ति हेतु नये ढंग से सोचने की प्रक्रिया है। रचनात्मकता का अर्थ कुछ कल्पनाशील अथवा नये विचारों का निर्माण है जबकि नवाचार इन रचनात्मक विचारों को साधने का उपक्रम है।

सूचनाओं का संचार (Malhan 1992) अथवा हितधारकों के साथ संवाद किसी भी मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थान के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य होता है। यहां संवाद का आशय सूचना देने, प्राप्त करने एवं प्रदान करने से है। एक शैक्षिक संस्थान में शिक्षक एवं शिक्षार्थी एवं स्वयं शिक्षार्थियों के मध्य संवाद (Berlo1960) सबसे महत्वपूर्ण गतिविधि होती है। संवाद के अभाव में किसी प्रकार के अधिगम की कल्पना नहीं की जा सकती है। संवाद के अन्तर्गत निम्नांकित गतिविधियों को शामिल किया जा सकता है- बोलना, लिखना, पढ़ना, सुनना इत्यादि। अच्छे संवाद के लिए सावधानीपूर्वक सुनना और बोलना, स्पष्ट लेखन और अलग-अलग रायों

का सम्मान आवश्यक है। संवाद की प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण होता है कि कैसे एक सूचना विविध संचार साधनों (Amundsen & Bernard 1989) के द्वारा प्रेषक और प्राप्तकर्ता के मध्य संचरित होती है। अच्छे संवाद का अंतिम परिणाम सदैव यह सुनिश्चित करना होता है कि प्राप्तकर्ता सूचना को सही ढंग से समझ सके और आसानी से प्रतिक्रिया दे सके।

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, उत्तराखण्ड राज्य का एकमात्र मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा विश्वविद्यालय है, इस विश्वविद्यालय में आठ क्षेत्रीय कार्यालयों एवं 128 शिक्षार्थी सहायता केन्द्रों/अध्ययन केन्द्रों के द्वारा पूरे प्रदेश में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का संचालन किया जाता है। विश्वविद्यालय में वतर्मान में 90,000 से अधिक शिक्षार्थी 100 से अधिक परंपरागत एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत हैं। विश्वविद्यालय में विभिन्न विभागों द्वारा प्रमाण पत्र, डिप्लोमा, स्नातक, पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा तथा पोस्ट ग्रेजुएट कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। विश्वविद्यालय में किसी भी पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने हेतु अश्वनलाइन की प्रक्रिया अपनाई जाती है, यद्यपि शिक्षार्थियों एवं अन्य हित धारकों की सूचना के लिए विश्वविद्यालय की र्वबसाइट में विवरणिका भी अपलोड की जाती है और प्रवेश अनुभाग द्वारा प्रवेश संबंधी एवं परीक्षा अनुभाग द्वारा परीक्षा एवं प्रयोगात्मक कार्य संबंधी सूचनाऐं समय-समय पर वैबसाइट में जारी की जाती हैं। विश्वविद्यालय ने प्रवेश एवं परीक्षा संबंधी कार्यों को अधिकाधिक ऑनलाइन बनाने का प्रयास किया है। जहां शिक्षार्थी ऑनलाइन प्रवेश लेता है वहीं वह परीक्षा परिणामों की ट्रान्सक्रिप्ट अथवा अंकतालिका भी ऑनलाइन डाउनलोड कर सकता है। बैक परीक्षा फॉर्म, परीक्षा फॉर्म एवं डिग्री प्राप्त करने के लिए भी ऑनलाइन की सुविधा है।

विश्वविद्यालय शिक्षार्थियों एवं शिक्षार्थी सहायता केन्द्रों/अध्ययन केन्द्रों से संवाद के लिए लु संदेश सेवा (SMS) का प्रयोग करता है। विश्वविद्यालय ने अपने शिक्षार्थियों की समस्याओं के निस्तारण के लिए अपनी वैबसाइट में टिकट सिस्टम का निर्माण किया है। इस व्यवस्था में शिक्षार्थी जैसे ही अपनी समस्या अथवा प्रश्न (टिकट) की प्रविष्ठि करता है, यह टिकट तुरंत विश्वविद्यालय के संबंधित कर्मचारी/अधिकारी के मेल पर चला जाता है, संबंधित कर्मचारी/अधिकारी इस टिकट के संबंध में कार्यवाही करता है और समस्या अथवा प्रश्न का समाधान कर शिक्षार्थी को मेल द्वारा सूचित कर इस टिकट को बन्द करता है। इस टिकट व्यवस्था की निगरानी विश्वविद्यालय के आर एण्ड डी (R&D) विभाग द्वारा की जाती है। अगर संबंधित कर्मचारी/अधिकारी द्वारा टिकट पर संज्ञान नहीं लिया जाता है तो यह वैबसाइट में प्रदर्शित रहता है और संबंधित कर्मचारी/अधिकारी के विरूद्ध कार्यवाही की जा सकती है। विश्वविद्यालय ने अपने शिक्षार्थियों की सुविधा के लिए स्टूडेण्ट वन व्यू सिस्टम का निर्माण भी किया है। स्टूडेण्ट वन व्यू सिस्टम में प्रत्येक शिक्षार्थी से संबंधित सूचनाऐं पंजीकृत रहती हैं, शिक्षार्थी अथवा उसके अभिभावकों द्वारा वन व्यू सिस्टम में लॉग इन कर देखा जा सकता है कि सूचनाऐं सही-सही पंजी त की गयीं है। विश्वविद्यालय द्वारा अपने शिक्षार्थी सहायता केन्द्रों/अध्ययन केन्द्रों के लिए स्टूडेण्ट इन्फॉर्मेशन सिस्टम (SIS) का विकास किया गया है। सभी शिक्षार्थी सहायता केन्द्रों/अध्ययन केन्द्रों द्वारा विभिन्न उद्देश्यों के लिए इस सिस्टम का प्रयोग किया जाता है।

कोविड-19 की महामारी के चलते शिक्षार्थियों के सत्रीय कार्य हेतु ऑनलाइन परीक्षा की व्यवस्था भी विश्वविद्यालय द्वारा की गयी है। विश्वविद्यालय की वैबसाइट में सभी कार्यक्रमों के पाठ्यक्रम, LO-अध्ययन सामग्री के रूप में ई-बुक्स, विडियो और ऑडियो व्याख्यान, पुराने प्रश्नपत्रों का कोष विद्यमान हैं। शिक्षार्थियों के लिए प्लेसमेण्ट प्रकोष्ठ, पूर्व छात्र प्रकोष्ठ, एण्टी रैगिंग प्रकोष्ठ, एससी/एसटी/ ओबीसी/ महिला प्रकोष्ठ इत्यादि बनाये गये हैं।

कार्यविधि

अपने हितधारकों (शिक्षार्थी, शिक्षार्थी के माता-पिता, अभिभावक, सरकारी अधिकारियों, शिक्षार्थी सहायता केन्द्रों/अध्ययन केन्द्रों, एवं जन साधारण) के साथ संवाद हेतु विश्वविद्यालय में संचार के कौन से साधन विद्यमान हैं? नवाचार और रचनात्मकता के लिए विश्वविद्यालय ने क्या प्रयास किये हैं? इनकी गुणवत्ता की प्रस्थिति कैसी है? इन सभी तथ्यों की समीक्षा करने के लिए इस शोध पत्र के लेखक-द्वय ने विश्वविद्यालय के दो शिक्षार्थी सहायता केन्द्रों/अध्ययन केन्द्रों (एम.बी.पी.जी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हल्द्वानी एवं यू.ओ.यू. आदर्श अध्ययन केन्द्र, हल्द्वानी) का भ्रमण किया और विभिन्न हितधारकों के साथ बातचीत की। वर्तमान परि श्य को समझने के लिए अनेक अभिभावकों, अध्ययन केन्द्र समन्वयकों, जन साधारण के साथ टेलीफोन वार्ता एवं विश्वविद्यालय के आई.टी. कर्मचारियों से भी बात की गयी। भावी शिक्षार्थियों से भी समय-समय पर बात कर उनकी चिंताओं, समस्याओं और मुद्दों की पहचान की गयी। विषय को सही ढंग से समझने के लिए दो स्तर पर कार्य किया गया (देखिये तालिका एक एवं तालिका दो) प्रथम स्तर (तालिका एक) पर हितधारकों के साथ संवाद/संचार हेतु वर्तमान अभ्यास, उद्देश्य और लक्ष्य समूह की जानकारी प्राप्त की गयी, उनकी चिंताओं, समस्याओं और मुद्दों को पहचाना गया और फिर सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत किये गये। इसी प्रकार विश्वविद्यालय में नवाचार एवं रचनात्मकता (तालिका दो) हेतु किये गये कार्यों की समीक्षा के लिए भी वर्तमान अभ्यास, उद्देश्य और लक्ष्य समूह की जानकारी प्राप्त की गयी, उनकी चिंताओं, समस्याओं और मुद्दों को पहचाना गया और फिर सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत किये गये।

संवाद की प्रस्थिति की समीक्षा

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय में संवाद, नवाचार और रचनात्मकता के कार्य के प्रति कर्मचारी बहुत उत्साही लगते हैं। अपने हितधारकों के साथ संवाद तथा नवाचार एवं रचनात्मकता के जो कार्य विश्वविद्यालय ने किये हैं, उनके विषय में हितधारकों की प्रतिक्रिया कैसी है, यह जानने के लिए संबंधित विषय (theme), ध्यानाकर्षक क्षेत्र (Focus area), वर्तमान अभ्यास (Current Practice), लक्ष्य समूह (target groups), चिंताओं (concerns), समस्याओं (problems) और मुद्दों (issues) की समीक्षा तालिका एक एवं तालिका दो की सहायता से की जा सकती है। तालिका एक में लक्ष्य समूह के साथ संवाद के अंतर्गत शिक्षार्थियों, माता-पिता/अभिभावक, सरकारी कर्मचारियों, शिक्षार्थी सहायता केन्द्रों एवं जन साधारण के साथ विश्वविद्यालय ने संवाद की जो व्यवस्था तैयार की है, उसका उल्लेख है।

शिक्षार्थियों के साथ संवाद

विश्वविद्यालय ने अपने शिक्षार्थियों के साथ संवाद हेतु एसएमएस (SMS), टिकट सिस्टम, स्टूडेण्ट वन व्यू सिस्टम, टॉल फ्री नम्बर, ई-मेल का प्रावधान किया है। अध्ययन केन्द्रों में परामर्श सत्र आयोजित किये जाते हैं, प्रायोगिक कार्यों के लिए कार्यशालाओं का आयोजन भी किया जाता है। शिक्षार्थियों को सूचना देने के लिए विवरणिका, प्रोग्राम गाइड का निर्माण किया जाता है, इसे पुस्तकाकार एवं वैबसाइट में भी अपलोड किया जाता है। शिक्षार्थियों हेतु सूचना के अन्य साधनों के अन्तर्गत समाचार पत्र में समाचार अथवा विज्ञापन, पत्रक (Leaflets), ब्रोशर (Brochures) एवं मासिक समाचार पत्र उड़ान सम्मिलित हैं।

शिक्षार्थियों की चिंताऐं, समस्याऐं और मुद्दे

संवाद के इन साधनों के संबंध में शिक्षार्थियों की चिंताऐं, समस्याऐं और मुद्दे इस प्रकार हैं, शिक्षार्थियों का मानना है कि एसएमएस (SMS) व्यवस्था ठीक है किन्तु सभी शिक्षार्थियों के लिए सामान्य एसएमएस (SMS) आने पर कभी-कभी भ्रम की स्थिति हो जाती है, अधिकांश शिक्षार्थियों को टिकट सिस्टम की जानकारी नहीं है, और वे अपनी समस्या सुलझाने के लिए अन्य उपायों का सहारा लेते हैं, स्टूडेण्ट वन-व्यू सिस्टम को अनेक शिक्षार्थियों ने सराहा है लेकिन अधिकांश ने इस व्यवस्था के प्रति भी अनभिज्ञता प्रदर्शित की है, टॉल फ्री नम्बर के बारे में शिक्षार्थियों का मानना है कि इस नम्बर पर कोई फोन उठाता ही नहीं है, ई-मेल के विषयमें चर्चा करने पर पता चला कि अधिकांश शिक्षार्थी कम्प्यूटर में असहज हैं अथवा उनके पास कम्प्यूटर नहीं है। परामर्श सत्र के बारे में शिक्षार्थियों का मानना है कि अधिकांश अध्ययन केन्द्रों में परामर्श सत्रों का आयोजन नहीं होता है अथवा केवल खानापूर्ति की जाती है। प्रायोगिक कार्यशालाओं को शिक्षार्थियों ने लाभप्रद बताया है और इस तरह की अधिकाधिक कार्यशालाओं के आयोजनों की आवश्यकता बतलाई है। शिक्षार्थी विवरणिका को बोझिल बतलाते हैं और प्रोग्राम गाइड में भी अनेक अनावश्यक सूचनाओं के होने की बात करते हैं। समाचार पत्र में समाचार अथवा विज्ञापन उन तक न पहुंचने की बात करते हैं, पत्रक (Leaflets) और ब्रोशर (Brochures) के बारे में शिक्षार्थी बतलाते हैं कि ये कभी-कभार ही उन तक पहुंच पाते हैं, अधिकांश शिक्षार्थियों को मालूम ही नहीं है कि विश्वविद्यालय मासिक समाचार पत्र उड़ान का प्रकाशन करता है।

सुधार हेतु सुझाव

विश्वविद्यालय की शिक्षार्थियों के साथ संवाद की व्यवस्था के विषय में जिन उपरोक्त चिंताओं, समस्याओं और मुद्दों को शिक्षार्थियों ने उठाया है उनमें सुधार होना आवश्यक है, अतः सुझाव दिये जा सकते हैं कि-शिक्षार्थियों को केवल उनसे संबंधित एसएमएस (SMS) भेजा जाना चाहिए, टिकट सिस्टम की जानकारी अधिकाधिक शिक्षार्थियों तक पहुंचानी चाहिए, स्टूडेण्ट वन-व्यू सिस्टम के प्रति भी शिक्षार्थियों को जागरूक किया जाना चाहिए, टॉल फ्री नम्बर पर विश्वविद्यालय के समर्पित कर्मचारी को बैठाना चाहिए, अपने शिक्षार्थियों में कम्प्यूटर ज्ञान के विकास के लिए अनिवार्य कम्प्यूटर आधार पाठ्यक्रम चलाना चाहिए, अध्ययन केन्द्रों में परामर्श सत्रों के आयोजनों की सख्त निगरानी आवश्यक है, कार्यशालाओं की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए,

विवरणिका और प्रोग्राम गाइड को शिक्षार्थी हितैषी और शिक्षार्थी केन्द्रित बनाया जाना चाहिए। शिक्षार्थियों से सम्बन्धित विज्ञापनों को विभिन्न समाचार पत्रों में इस प्रकार दिया जाना चाहिए कि उसका प्रसारण पूरे प्रदेश भर में हो सके। मासिक समाचार पत्र उड़ान प्रत्येक अध्ययन केन्द्र में भेजा जाना चाहिए, पत्रक (Leaflets) और ब्रोशर (Brochures) का वितरण भी उचित प्रकार से किया जाना चाहिए।

माता-पिता/अभिभावक, सरकारी कर्मचरियों एवं जन-साधारण के साथ संवाद

माता-पिता/अभिभावक, सरकारी कर्मचरियों एवं जन-साधारण के साथ संवाद हेतु विश्वविद्यालय ने वैबसाइट का निर्माण किया है, वैबसाइट में विभिन्न पाठ्यक्रमों, उनकी अर्हता, पाठ्यक्रम की न्यूनतम एवं अधिकतम अवधि, शुल्क संरचना, प्रवेश, परीक्षा, पुस्तक वितरण इत्यादि की जानकारी के अलावा विभिन्न लिंकों के माध्यम से विश्वविद्यालय की समस्त जानकारी उपलब्ध है। माता-पिता/अभिभावक अपने बच्चों से सबंधित जानकारी प्राप्त करने के लिए स्टूडेण्ट वन-व्यू सिस्टम का उपयोग कर सकते हैं, माता-पिता/अभिभावक, सरकारी कर्मचारी एवं जन-साधारण विश्वविद्यालय से सम्बन्धित सभी प्रकार की सूचनाऐं वैबसाइट से प्राप्त कर सकते हैं।

माता-पिता/अभिभावक, सरकारी कर्मचारियों एवं जन-साधारण की चिंताऐं, समस्याऐं और मुद्दे

अधिकतर माता-पिता/अभिभावक विश्वविद्यालय की वैबसाइट के प्रति अनभिज्ञता प्रदर्शित करते हैं जबकि कुछ माता-पिता/अभिभावक ने इसे अच्छी व्यवस्था और सूचना प्राप्ति का एक सुविधाजनक माध्यम बतलाया है। अधिकतर सरकारी कर्मचारी सूचना प्राप्ति के लिए विश्वविद्यालय के फोन पर सम्पर्क को सुविधाजनक मानते हैं, और वैबसाइट के प्रति अनभिज्ञता प्रदर्शित करते हैं। अधिकांश जन साधारण भी सूचना प्राप्ति हेतु फोन का ही प्रयोग करते हैं, यद्यपि जो जन साधारण वैबसाइट का प्रयोग करता है वह इस माध्यम को अत्यंत उपयोगी और सटीक जानकारी हेतु श्रेष्ठ स्रोत मानता है, हांलाकि कुछ का मानना है कि अनेक बार वैबसाइट में पुरानी जानकारी होती है और सूचना को अपडेट नहीं किया जाता है। सामान्यत: कहा जा सकता है कि माता-पिता/अभिभावक, सरकारी कर्मचरियों एवं जन-साधारण में सूचना के स्रोत के रूप में वैबसाइट के प्रति जागरूकता की कमी है।

सुधार हेतु सुझाव

सर्वप्रथम वैबसाइट में सूचनाओं को निरंतर अपडेट किया जाना चाहिए, वैबसाइट को और अधिक यूजर फैण्डली बनाया जाना चाहिए, माता-पिता/अभिभावक, सरकारी कर्मचरियों एवं जन-साधारण के बीच सूचना प्राप्ति के साधन के रूप में वैबसाइट का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए।

शिक्षार्थी सहायता केन्द्र/अध्ययन केन्द्र के साथ संवाद

शिक्षार्थी सहायता केन्द्र/अध्ययन केन्द्र के साथ संवाद के लिए विश्वविद्यालय स्टूडेण्ट इन्फॉर्मेशन सिस्टम (SIS), वैबसाइट उद्घोषणा, ई-मेल, एसएमएस (SMS) का उपयोग

करता है। इनके अतिरिक्त आवश्यकता पड़ने पर अध्ययन केन्द्र समन्वयकों की बैठक भी बुलायी जाती है।

शिक्षार्थी सहायता केन्द्र/ अध्ययन केन्द्र की चिंताऐं, समस्याऐं और मुद्दे

अधिकांश शिक्षार्थी सहायता केन्द्र/अध्ययन केन्द्र के समन्वयक इण्टरनैट कनैक्टिविटी और विद्युत समस्या की बात करते हैं। उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के अधिकांश शिक्षार्थी सहायता केन्द्र/अध्ययन केन्द्र राजकीय महाविद्यालयों में विद्यमान हैं, और शिक्षकों के स्थानान्तरण समय-समय पर होते रहते हैं, अनेक केन्द्रों में समन्वयकों के बदले जाने पर भी उनके मोबाइल नम्बर वही रहते हैं, जिससे शिक्षार्थियों के साथ ही स्थानान्तरित शिक्षकों को भी अनेक असुविधाओं का सामना करना पड़ता है।

सुधार हेतु सुझाव

विश्वविद्यालय द्वारा शिक्षार्थी सहायता केन्द्र/अध्ययन केन्द्र में इण्टरनैट डेटा कार्ड उपलब्ध कराया जाना चाहिए और विद्युत की समस्या के निदान के लिए प्रत्येक केन्द्र में जनरेटर की सुविधा आवश्यक शर्त होनी चाहिए। विश्वविद्यालय में मोबाइल नम्बर अपडेट की प्रक्रिया निरंतर जारी रहनी चाहिए क्योंकि मोबाइल फोन दूरस्थ शिक्षा में संवाद का एक महत्वपूर्ण साधन होता है।

भावी शिक्षार्थियों (Prospective Learners) के साथ संवाद

भावी शिक्षार्थियों के साथ संवाद के लिए विश्वविद्यालय वैबसाइट, समाचार पत्र विज्ञापन, विवरणिका, होर्डिंग्स (Hoardings), पत्रक (Leaflets), ब्रोशर (Brochures), प्रचार यात्राऐं (Promotional Tours) जैसे साधनों का उपयोग करता है।

भावी शिक्षार्थियों की चिंताऐं, समस्याऐं और मुद्दे

दूरस्थ शिक्षा के भावी शिक्षार्थियों में कम्प्यूटर ज्ञान की कमी पायी गयी, उनमें से अधिकांश अपने कम्प्यूटर संबंधी कार्यों के लिए साइबर कैफे पर निर्भर पाये गये। अधिकांश को विश्वविद्यालय की वैबसाइट के बारे में कोई जानकारी नहीं थी, दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वाले भावी शिक्षार्थियों का मानना था कि उनके क्षेत्रों में समाचार पत्र के वे संस्करण नहीं आते हैं जिनमें विश्वविद्यालय के विज्ञापन होते हैं। विवरणिका सामान्यत: उन्हें प्राप्त नहीं होती है और वैबसाइट में प्रदर्शित विवरणिका उनके लिए बोझिल होती है। विश्वविद्यालय की जानकारी से संबंधित होर्डिंग्सं सामान्यत: अध्ययन केन्द्रों या शहरों तक ही सीमित होते हैं, पत्रक (Leaflets) और ब्रोशर (Brochures) उन तक नहीं पहुंच पाते हैं। विश्वविद्यालय की प्रचार यात्राओं की कोई पूर्व सूचना उन्हें नहीं होती है।

सुधार हेतु सुझाव

भावी शिक्षार्थियों में कम्प्यूटर ज्ञान की कमी है, अत: राज्य में भावी शिक्षार्थियों में कम्प्यूटर ज्ञान की कमी की प्रस्थिति पर एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार कर समाधान हेतु राज्य सरकार के पास भेजी जानी चाहिए। समाचार पत्रों के उन संस्करणों में भी विज्ञापन दिये जाने चाहिए, जिनका प्रसार दूरदराज के क्षेत्रों में होता है। दूरदराज के क्षेत्रों में भी होर्डिंग्स लगाने चाहिए, उचित योजना के अनुसार प्रचार यात्राओं का आयोजन होना चाहिए।

नवाचार और रचनात्मकता की प्रस्थिति की समीक्षा

तालिका दो में लक्ष्य समूह के लिए नवाचार और रचनात्मक आचरण के विकास एवं सर्वोत्तम अभ्यास विकास और परिनियोजन के अंतर्गत शिक्षार्थियों, माता-पिता/अभिभावक, सरकारी कर्मचारियों, शिक्षार्थी सहायता केन्द्रों एवं जन साधारण के साथ विश्वविद्यालय ने जो व्यवस्था तैयार की है, उसका उल्लेख है।

नवाचार और रचनात्मक आचरण का विकास एवं मान्यता तथा सर्वोत्तम अभ्यास विकास और परिनियोजन के अन्तर्गत उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय ने एसएमएस (SMS), टिकट सिस्टम (Ticket system), वन व्यू सिस्टम (One view system), टोल फ्री नम्बर (Toll free Number), ई-मेल (E-mails), विश्वविद्यालय पर लु फिल्म, विडिओ लेक्चर्स, विभिन्न अवसरों पर विश्वविद्यालय आने वाले प्रतिष्ठित विद्वानों के विडिओ लेक्चर्स की रिकॉर्डिंग्स , विभिन्न विभागों के कम अवधि के कोर्स, स्थानीय जनता के लिए विश्वविद्यालय द्वारा संचालित आयुष चिकित्सालय, समाचार पत्रों के माध्यम से अधिकाधिक जनजागरूकता, उड़ान-मासिक समाचार पत्रिका, सभी विभागों द्वारा समय-समय पर आयोजित राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठियां, अध्ययन केन्द्रों के अतिरिक्त शिक्षार्थियों के लिए विशेष कार्यशालाऐं, आदर्श अध्ययन केन्द्र, पटकथा लेखन, प्रश्नकोष निर्माण इत्यादि के लिए कार्यशालाऐं, मोबाइल वैन, जॉब फेयर, विभिन्न कम्पनियों के साथ समझौता ज्ञापन (MoU), शैक्षणिक स्टाफ द्वारा अध्ययन केन्द्रों की मासिक निगरानी, उपस्थिति दर्ज करने के लिए बायोमैट्रिक मशीन, कार्य का मासिक मूल्यांकन, वार्षिक सर्वश्रेष्ठ रिजिनल डायरेक्टरेट और अध्ययन केन्द्र पुरस्कार, पांच गांव को गोद लेना इत्यादि को शामिल किया है।

चिंताऐं, समस्याऐं और मुद्दे

विश्वविद्यालय द्वारा सभी शिक्षार्थियों के लिए सामान्य एसएमएस भेज दिया जाता है, जिससे कभी-कभी भ्रम पैदा होता है। टिकट सिस्टम (Ticket system) की अधिकांश शिक्षार्थियों को जानकारी नहीं है, अब तक कुल 19270 शिकायतें दर्ज हुई हैं। वन व्यू सिस्टम (One view system) को कुछ माता-पिता/अभिभावक द्वारा इसे अच्छी व्यवस्था बताया गया है जबकि अधिकांश ने इस व्यवस्था के बारे में अनभिज्ञता बतायी है। टोल फ्री नम्बर (Toll free Number) के बारे में यह आम शिकायत रहती है कि अक्सर इसे कोई उठाता नहीं है। ई-मेल (E-mails) की सुविधा के बारे में कहा जा सकता है कि अधिकांश शिक्षार्थी कम्प्यूटर पर असहज हैं या उनके पास कम्प्यूटर नहीं है। विश्वविद्यालय पर लघु फिल्म के विषय में कहा जा सकता है कि यह विश्वविद्यालय की एकमात्र लघु फिल्म है। विश्वविद्यालय द्वारा बनाये गये अधिकांश विडिओ लेक्चर्स में खराब गुणवत्ता है मल्टीमीडिया का कोई उपयोग नहीं है। विभिन्न अवसरों पर विश्वविद्यालय आने वाले प्रतिष्ठित विद्वानों के विडिओ लेक्चर्स की रिकॉर्डिंग्स एक अच्छी परंपरा है। विभिन्न विभागों द्वारा बनाये गये कम अवधि के कोर्सों की सीमित लोकप्रियता है। स्थानीय जनता के लिए विश्वविद्यालय द्वारा संचालित आयुष चिकित्सालय केवल कुछ समय के लिए ही संचालित रहा और यह वर्तमान में बन्द पड़ा है। समाचार पत्रों के माध्यम से अधिकाधिक जनजागरूकता का सीमित क्षेत्र तक ही

प्रसारण है और उड़ान- मासिक समाचार पत्रिका भी कभी-कभार ही देखने को मिलती है। सभी विभागों द्वारा समय-समय पर आयोजित राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठियां एक अच्छा अभ्यास है लेकिन कोविड काल में इन्हें केवल ऑनलाइन ही आयोजित किया गया। अध्ययन केन्द्रों के अतिरिक्त शिक्षार्थियों के लिए विशेष कार्यशालाऐं केवल बढ़े अयन केन्द्रों तक ही सीमित रहती हैं। आदर्श अध्ययन केन्द्र केवल मुख्यालय हल्द्वानी और देहरादून में ही हैं। पटकथा लेखन, प्रश्नकोष निर्माण इत्यादि के लिए समय-समय पर होने वाली कार्यशालाऐं एक अच्छा अभ्यास है। मोबाइल वैन पिछले कई वर्षो से खराब है और अब पिछले कई वर्षो से जॉब फेयर भी नहीं लगाये जा रहे हैं। विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न कम्पनियों के साथ समझौता ज्ञापन (MoU) एक अच्छा अभ्यास है। शैक्षणिक स्टाफ द्वारा अध्ययन केन्द्रों की मासिक निगरानी अब नहीं की जाती है इसके बदले वर्तमान में सहायक निदेशक क्षेत्रीय सेवायंछ द्वारा निगरानी की जा रही है। उपस्थिति दर्ज करने के लिए लगभग 250 स्टाफ हेतु केवल एक बायोमैट्रिक मशीन है, कार्य का मासिक मूल्यांकन एक अच्छा अभ्यास है। वार्षिक सर्वश्रेष्ठ रिजिनल डायरेक्टरेट एवं और अध्ययन केन्द्र पुरस्कार भी एक अच्छा प्रयास है। पांच गांव को गोद लिया जाना उत्कृष्ट प्रयास किन्तु इन गांवों में कार्य सीमित है और स्पष्ट कार्य योजना का अभाव है।

सुधार हेतु सुझाव

शिक्षार्थी विशिष्ट (Learner Specific) एसएमएस भेजा जाना चाहिए। टिकट सिस्टम (Ticket system) के प्रति शिक्षार्थियों को जागरूक किया जाना चाहिए। वन व्यू सिस्टम (One view system) के प्रति शिक्षार्थियों को जागरूक किया जाना चाहिए। टोल फ्री नम्बर (Toll free Number) में समर्पित कर्मचारी को कार्य दिया जाना चाहिए। विश्वविद्यालय को अपने सभी शिक्षार्थियों को कम्प्यूटर का आधार पाठ्यक्रम करवाना चाहिए और अध्ययन केन्द्रों में कम्प्यूटर की सुविधा देनी चाहिए। विश्वविद्यालय को इस प्रकार की अधिक लघु फिल्में बनानी चाहिए। विश्वविद्यालय द्वारा बनाये गये विडिओ लेक्चर्स में गुणवत्ता का ध्यान रखा जाना चाहिए। विभिन्न अवसरों पर विश्वविद्यालय आने वाले प्रतिष्ठित विद्वानों के विडिओ लेक्चर्स की रिकॉर्डिंग्स एक अच्छी परंपरा है। विभिन्न विभागों द्वारा बनाये गये कम अवधि के पाठ्यक्रमों का अधिक प्रचार होना चाहिए। विश्वविद्यालय द्वारा संचालित आयुष चिकित्सालय को पुनः शुरू किया जाना चाहिए। समाचार पत्रों के प्रसार क्षेत्र को बढ़ाना चाहिए। उड़ान-मासिक समाचार पत्रिका का समयबद्ध प्रकाशन होना चाहिए। सभी विभागों द्वारा समय-समय पर आयोजित राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठियां एक अच्छा अभ्यास है। शिक्षार्थियों के लिए विशेष कार्यशालाऐं अन्य अध्ययन केन्द्रों में भी आयोजित होनी चाहिए। आदर्श अध्ययन केन्द्रों की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए। पटकथा लेखन, प्रश्नकोष निर्माण इत्यादि के लिए समय-समय पर होने वाली कार्यशालाऐं एक अच्छा अभ्यास है। मोबाइल वैन पुनः शुरू की जानी चाहिए एवं जॉबफेयर भी समयबद्ध रूप से आयोजित होने चाहिए। विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न कम्पनियों के साथ समझौता ज्ञापन (MoU) एक अच्छा अभ्यास है। बायोमैट्रिक मशीन की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए। कार्य का मासिक मूल्यांकन एक अच्छा अभ्यास है। वार्षिक सर्वश्रेष्ठ रिजिनल

डायरेक्टरेट एवं और अध्ययन केन्द्र पुरस्कार भी एक अच्छा प्रयास है। गोद लिए गांवों में पूरे मनोयोग से विकास कार्य होना चाहिए।

निष्कर्ष

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा अपने हितधारकों (शिक्षार्थी, शिक्षार्थी के माता-पिता, अभिभावक, सरकारी अधिकारियों, शिक्षार्थी सहायता केन्द्रों/अध्ययन केन्द्रों, एवं जन साधारण) के साथ संवाद हेतु संचार के जिन साधनों एवं तत्संबंधित नवाचार एवं रचनात्मकता का विकास किया उसका अध्ययन उपरोक्त शीर्षकों में किया गया है। इस अध्ययन में हितधारकों के साथ संवाद/संचार हेतु वर्तमान अभ्यास, उद्देश्य और लक्ष्य समूह की जानकारी प्राप्त की गयी, उनकी चिंताओं, समस्याओं और मुद्दों को पहचाना गया और फिर सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत किये गये। इसी प्रकार नवाचार एवं रचनात्मकता पर भी चर्चा की गयी। विश्वविद्यालय ने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में संवाद, नवाचार, और रचनात्मकता के लिए वर्तमान तक जो कार्य किये हैं उनमें से अनेक उत्कृष्ट हैं और उन्हें जारी रखा जाना चाहिए। जिन बिन्दुओं में सुधार के लिए हितधारकों ने अपना पक्ष रखा है उनमें हितधारकों के अनुसार सुधार किया जाना चाहिए। निरंतर नवाचार एवं रचनात्मकता किसी भी संस्था की जीवंतता के लिए आवश्यक है, अत: नवाचार एवं रचनात्मकता पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- Amundsen, C., and Bernard, R. (1989) . *Institutional Support for peer contact in distance education: An empirical investigation.* Distance Education 10 (1):7-27.
- Association of Indian Universities (1997). *Handbook of Distance Education*, AIU, New Delhi.
- Berlo, D.K. (1960). *The process of Communication*. Holt Rinechart and Winston, New York.
- Chauhan, S.S.(1979). *Innovations in Teaching Learning Processes*, Vikas Publishing House, New Delhi.
- Dhama, O. P. and Bhatnagar, O.P. (2007). *Education and Communication for Development*, Oxford and IBH Pub. Co. Pvt. Ltd.
- Garrison, D.R. (1989). *Understanding Distance education: A framework for the future*, Routledge, London.
- Malhan, P. N. (1992*). Communication Media: Yesterday, Today and Tomorrow*, Ministry of I & B, Delhi.
- Mangal, S.K. and Mangal, U (2009). *Essentials of Education Technology*, P.S.I. Pvt. Ltd. New Delhi.
- Perraton, Hilary (2007). *Open and Distance Learning in Developing World,* Routledge, London.
- Prospectus 2021-22. Uttarakhand Open University, Haldwani, Nainital.
- Rogers, E. M.(2003). *Diffusion of Innovation*, 5th Edition, free Press, New York.
- Rumble, Greville. (2001). *The Planning and Management of distance Education,* Croom Helm, London.
- Sahoo, P. K.(1994). *Open Learning System*, Uppal, New delhi.
- Yadav, M.S. and Panda, S.K. (1996). *Distance Higher education in India: A Historical Overview*, Journal of Higher Education, 19(3)

तालिका - एक
संवाद/संचार

विषय और ध्याना-कर्षक क्षेत्र	वर्तमान अभ्यास: उद्देश्य और लक्ष्य समूह	चिंताऐं, समस्याऐं और मुद्दे	सुझाव और सुधार
लक्ष्य समूह से संवाद	**शिक्षार्थी**	**शिक्षार्थी**	**शिक्षार्थी**
	1. एसएमएस (SMS) 2. टिकट सिस्टम 3. वन व्यू सिस्टम 4. टॉल फ्री नम्बर 5. ई-मेल 6. परामर्श सत्र 7. कार्यशालाऐं 8. विवरणिका 9. प्रोग्राम गाइड 10. समाचार पत्र विज्ञापन 11. पत्रक (Leaf-lets) 12. ब्रोशर (Brochu-res) 13. उड़ान-मासिक समाचार पत्र	1. सभी शिक्षार्थियों के लिए सामान्य एसएमएस, जिससे कभी-कभी भ्रम पैदा होता है। 2. अधिकांश शिक्षार्थियों को जानकारी नहीं है, अब तक कुल 19270 शिकायतें दर्ज 3. कुछ माता-पिता/अभिभावक द्वारा इसे अच्छी व्यवस्था बताया गया है जबकि अधिकांश ने इस व्यवस्था के बारे में अनभिज्ञता बतायी है 4. अक्सर कोई उठाता नहीं है 5. अधिकांश शिक्षार्थी कम्प्यूटर पर असहज हैं या उनके पास कम्प्यूटर नहीं है 6. अधिकांश शिक्षार्थी सहायता केन्द्र में परामर्श सत्र का आयोजन नहीं होता है 7. लाभप्रद होती हैं 8. विवरणिका बोझिल होती है 9. अनेक अनावश्यक सूचनाऐं होती हैं 10. सीमित प्रसार 11. ठीक से प्रसार नहीं होता है 12. सीमित प्रसार 13. सीमित प्रतियां होती हैं	1. शिक्षार्थी विशिष्ट (Learner Specific) एसएमएस भेजा जाना चाहिए 2. इस सिस्टम के प्रति शिक्षार्थियों को जागरूक किया जाना चाहिए 3. इस सिस्टम के प्रति शिक्षार्थियों को जागरूक किया जाना चाहिए 4. समर्पित कर्मचारी को कार्य दिया जाना चाहिए 5. विश्वविद्यालय को अपने सभी शिक्षार्थियों को कम्प्यूटर का आधार पाठ्यक्रम करवाना चाहिए और अध्ययन केन्द्रों में कम्प्यूटर की सुविधा देनी चाहिए 6. परामर्श सत्र अनिवार्य रूप से संचालित होने चाहिए और विश्वविद्यालय को इनका निरीक्षण करना चाहिए 7. और अधिक कार्यशालाओं का आयोजन होना चाहिए 8. विवरणिका को शिक्षार्थी हितैषी बनाना चाहिए 9. प्रोग्राम गाइड को को शिक्षार्थी केन्द्रित बनाना चाहिए
	माता-पिता/ अभिभावक	**माता-पिता/अभिभावक** 1. कुछ माता-पिता/अभिभावक	

	1. वन व्यू सिस्टम **सरकारी कर्मचारी** 1. वैबसाइट **शिक्षार्थी सहायता केन्द्र** 1. स्टूडेण्ट इन्फॉर्मेशन सिस्टम (SIS) 2. एसएमएस (SMS) 3. ई-मेल 4. वैबसाइट उद्घोषणाऐं **जन साधारण** 1.वैबसाइट	द्वारा इसे अच्छी व्यवस्था बताया गया है जबकि अधिकांश ने इस व्यवस्था के बारे में अनभिज्ञता बतायी है **सरकारी कर्मचारी** 1. सरकारी कर्मचारियों द्वारा कभी-कभार इसका प्रयोग होता हैं **शिक्षार्थी सहायता केन्द्र** 1. अधिकांश अध्ययन केन्द्र इण्टरनेट कनेक्टिविटि और विद्युत समस्या की बात करते हैं 2. अध्ययन केन्द्र समन्वयकों के फोन नम्बर अपडेट न होने के कारण कभी-कभी समस्या उत्पन्न होती है 3. अधिकांश अध्ययन केन्द्र इण्टरनेट कनेक्टिविटि और विद्युत समस्या की बात करते हैं 4. अधिकांश अध्ययन केन्द्र इण्टरनेट कनेक्टिविटि और विद्युत समस्या की बात करते हैं **जन साधारण** 1. सामान्य जनता इसका प्रयोग करती हैं	10. विभिन्न समाचार पत्रों में इस प्रकार देना चाहिए की उसका प्रसारण पूरे प्रदेश में हो सके 11. उचित वितरण पर ध्यान देना चाहिए 12. उचित वितरण पर ध्यान देना चाहिए 13. प्रत्येक शिक्षार्थी को एक प्रति मिलनी चाहिए **माता-पिता/अभिभावक** 1. इस व्यवस्था की जानकारी अधिकाधिक लोगों तक पहुंचानी चाहिए **सरकारी कर्मचारी** 1. वैबसाइट निरंतर अपडेट होते रहना चाहिए **शिक्षार्थी सहायता केन्द्र** 1. अध्ययन केन्द्रों में पावर बैकअप और इण्टरनेट डेटा कार्ड की सुविधा होनी चाहिए 2. अध्ययन केन्द्रों में पावर बैकअप और इण्टरनेट डेटा कार्ड की सुविधा होनी चाहिए 3. फोन नम्बर अपडेट की प्रक्रिया निरंतर चलनी चाहिए 4. अध्ययन केन्द्रों में पावर बैकअप और इण्टरनेट डेटा कार्ड की सुविधा होनी चाहिए **जन साधारण** 1. वैबसाइट को जनता हितैषी बनाना चाहिए और निरंतर अपडेट करना चाहिए
भावी शिक्षार्थियों के साथ संवाद	**भावी शिक्षार्थियों के साथ संवाद** 1. वैबसाइट 2. समाचार पत्र विज्ञापन 3. विवरणिका	**भावी शिक्षार्थियों के साथ संवाद** 1. भावी शिक्षार्थियों में कम्प्यूटर शिक्षा के ज्ञान की कमी 2. दूरदराज के क्षेत्रों में प्रसार नहीं 3. विवरणिका का बोझिल होना 4. केवल शहरों या अध्ययन	**भावी शिक्षार्थियों के साथ संवाद**

	4. होर्डिंग्स (Hoard-ings) 5. पत्रक (Leaf-lets) 6. ब्रोशर (Brochu-res) 7. प्रचार यात्राऐं (Promo-tional Tours)	केन्द्रों के निकट स्थिति 5. समय पर प्रसारण होना 6. ब्रोशर का सीमित संख्या में होना 7. उचित योजना की कमी	1. अधिकांश भावी शिक्षार्थियों में कम्प्यूटर ज्ञान की कमी है, अतः राज्य में भावी शिक्षार्थियों में कम्प्यूटर ज्ञान की कमी की प्रस्थिति पर एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार कर समाधान हेतु राज्य सरकार के पास भेजी जानी चाहिए 2. अधिकाधिक समाचार पत्रों में विज्ञापन देकर प्रसार को बढ़ाना चाहिए 3. नियमित रूप से अद्यतन करना चाहिए
हितधारकों को संस्थागत प्रदर्शन की जानकारी	**हितधारकों को संस्थागत प्रदर्शन की जानकारी** **सामान्य जनता** 1. समाचार पत्र **सरकार** मासिक प्रगति आख्या **अध्ययन केन्द्र / शिक्षार्थी सहायता केन्द्र** 1. स्टूडेण्ट इन्फॉर्मेशन सिस्टम (SIS) 2. एसएमएस (SMS) 3. ई-मेल 4. वैबसाइट उद्घोषणाऐं	**हितधारकों को संस्थागत प्रदर्शन की जानकारी** **सामान्य जनता** 1. दूरदराज के क्षेत्रों में प्रसार नहीं **सरकार** अच्छा सूचना स्रोत **अध्ययन केन्द्र / शिक्षार्थी सहायता केन्द्र** 1. अधिकांश अध्ययन केन्द्र इण्टरनेट कनेक्टिविटि और विद्युत समस्या की बात करते हैं 2. अध्ययन केन्द्र समन्वयकों के फोन नम्बर अपडेट न होने के कारण कभी-कभी समस्या उत्पन्न होती है 3. अधिकांश अध्ययन केन्द्र इण्टरनेट कनेक्टिविटि और विद्युत समस्या की बात करते हैं	4. दूरदराज के क्षेत्रों में भी होर्डिंग्स लगाने चाहिए 5. उचित समय पर पूरे राज्य स्तर पर प्रसारण होना चाहिए 6. उचित समय पर पूरे राज्य स्तर पर प्रसारण होना चाहिए 7. उचित योजना के अनुसार प्रचार यात्राओं का आयोजन होना चाहिए **हितधारकों को संस्थागत प्रदर्शन की जानकारी** **सामान्य जनता** 1. सूचना का पूरे राज्य स्तर पर प्रसारण होना चाहिए **सरकार** अच्छा सूचना स्रोत **अध्ययन केन्द्र/शिक्षार्थी सहायता केन्द्र** 1. अध्ययन केन्द्रों में पावर बैकअप और इण्टरनेट डेटा कार्ड की सुविधा होनी चाहिए

	5. क्षेत्रीय निदेशकों के साथ बैठक 6. सहायक क्षेत्रीय निदेशकों की मुख्यालय में तैनाती 7. अध्ययन केन्द्र समन्वयकों के साथ बैठक	4. अधिकांश अध्ययन केन्द्र इण्टरनेट कनेक्टिविटि और विद्युत समस्या की बात करते हैं 5. बैठक का आयोजन नहीं होता है 6. अपने तैनाती स्थलों में तैनात नहीं हैं 7. बैठक का आयोजन नहीं होता है	2. अध्ययन केन्द्रों में पावर बैकअप और इण्टरनेट डेटा कार्ड की सुविधा होनी चाहिए 3. फोन नम्बर अपडेट की प्रक्रिया निरंतर चलनी चाहिए 4. अध्ययन केन्द्रों में पावर बैकअप और इण्टरनेट डेटा कार्ड की सुविधा होनी चाहिए 5. निश्चित अंतराल में नियमित बैठकों का आयोजन होना चाहिए 6. कार्यस्थलों पर तैनाती होनी चाहिए 7. निश्चित अंतराल में नियमित बैठकों का आयोजन होना चाहिए
सामान्य जनता और आगंतुकों हेतु सूचना	**सामान्य जनता और आगंतुकों हेतु सूचना** 1. वैबसाइट 2. समाचार पत्र विज्ञापन 3. विवरणिका 4. होर्डिंग्स (Hoard-ings) 5. पत्रक (Leaf-lets) 6. ब्रोशर (Brochu-res) 7. प्रचार यात्राऐं (Promo-tional Tours)	**सामान्य जनता और आगंतुकों हेतु सूचना** 1. सामान्य जनता में कम्प्यूटर शिक्षा के ज्ञान की कमी 2. दूरदराज के क्षेत्रों में प्रसार नहीं 3. विवरणिका का बोझिल होना 4. केवल शहरों या अध्ययन केन्द्रों के निकट स्थिति 5. समय पर प्रसारण होना 6. ब्रोशर का सीमित संख्या में होना 7. उचित योजना की कमी	**सामान्य जनता और आगंतुकों हेतु सूचना** 1. सामान्य जनता को कम्प्यूटर ज्ञान के प्रति जागरूक करना चाहिए 2. अधिकाधिक समाचारपत्रों में विज्ञापन देकर प्रसार को बढ़ाना चाहिए 3. नियमित रूप से अद्यतन करना चाहिए 4. दूरदराज के क्षेत्रों में भी होर्डिंग्स लगाने चाहिए 5. उचित समय पर पूरे राज्य स्तर पर प्रसारण होना चाहिए 6. उचित समय पर पूरे राज्य स्तर पर प्रसारण होना चाहिए 7. उचित योजना के अनुसार प्रचार यात्राओं का आयोजन होना चाहिए

तालिका- दो
नवाचार और रचनात्मकता

विषय और ध्याना-कर्षक क्षेत्र	वर्तमान अभ्यासः उद्देश्य और लक्ष्य समूह	चिंताऐं, समस्याऐं और मुद्दे	सुझाव और सुधार
नवाचार और रचनात्मक आचरण का विकास एवं मान्यता	1. एसएमएस (SMS)	1. सभी शिक्षार्थियों के लिए सामान्य एसएमएस, जिससे कभी-कभी भ्रम पैदा होता है।	1. शिक्षार्थी विशिष्ट (Learner Specific) एसएमएस भेजा जाना चाहिए
	2. टिकट सिस्टम (Ticket system)	2. अधिकांश शिक्षार्थियों को जानकारी नहीं है, अब तक कुल 19270 शिकायतें दर्ज	2. इस सिस्टम के प्रति शिक्षार्थियों को जागरूक किया जाना चाहिए
	3. वन व्यू सिस्टम (One view system)	3. कुछ माता-पिता/अभिभावक द्वारा इसे अच्छी व्यवस्था बतायागया है जबकि अधिकांशनेइस व्यवस्था के बारे में अनभिज्ञता बतायी है	3. इस सिस्टम के प्रति शिक्षार्थियों को जागरूक किया जाना चाहिए
	4. टोल फ्री नम्बर (Toll free Number)	4. अक्सर कोई उठाता नहीं है	4. समर्पित कर्मचारी को कार्य दिया जाना चाहिए
	5. ई-मेल (E-mails)	5. अधिकांश शिक्षार्थी कम्प्यूटर पर असहज हैं या उनके पास कम्प्यूटर नहीं है	5. विश्वविद्यालय को अपने सभी शिक्षार्थियों को कम्प्यूटर का आधार पाठ्यक्रम करवाना चाहिए और अध्ययन केन्द्रों में कम्प्यूटर की सुविधा देनी चाहिए
	6. विश्वविद्यालय पर लघु फिल्म	6. विश्वविद्यालय की एकमात्र लघु फिल्म	6. इस प्रकार की अधिक फिल्में बनानी चाहिए
	7. विडिओ लेक्चर्स	7. खराब गुणवत्ता मल्टीमीडिया का कोई उपयोग नहीं	7. गुणवत्ता का ध्यान रखा जाना चाहिए
	8. विभिन्न अवसरों पर विश्वविद्यालय आने वाले प्रतिष्ठित विद्वानों के विडिओ लेक्चर्स की रिकॉर्डिंग्स	8. अच्छी परंम्परा है	8. इस तरह के और प्रयास होने चाहिए
	9. विभिन्न विभागों के कम अवधि के कोर्स		9. इस तरह के पाठ्यक्रमों का अधिक प्रचार होना चाहिए
	10. स्थानीय जनता के लिए विश्वविद्यालय द्वारा संचालित आयुष चिकित्सालय		
	11. समाचार पत्रों के माध्यम से अधिकाधिक जनजागरूकता		
	12. उड़ान- मासिक समाचार पत्रिका		

		9. सीमित लोकप्रियता	
		10. केवल कुछ समय तक ही संचालन वर्तमान में बन्द	10. पुन: इस चिकित्सालय को शुरू किया जाना चाहिए
		11. सीमित क्षेत्र तक ही प्रसारण	11. प्रसारण क्षेत्र को बढ़ाना चाहिए
		12. सीमित प्रकाशन, समयबद्धता का ना होना	12. छात्र संख्या के अनुसार समयबद्ध प्रकाशन होना चाहिए
	13. सभी विभागों द्वारा समय-समय पर आयोजित राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठियां	13. अच्छा अभ्यास	13. इस तरह के प्रयास निरंतर होने चाहिए
	14. अध्ययन केन्द्रों के अतिरिक्त शिक्षार्थियों के लिए विशेष कार्यशालाऐं	14. केवल बड़े अध्ययन केन्द्रों तक ही सीमित	14. इस तरह के प्रयास दूर-दराज के क्षेत्रों में भी होने चाहिए
	15. आदर्श अध्ययन केन्द्र	15. बहुत अच्छा प्रयास	15. इस तरह के और केन्द्र खोले जाने चाहिए
	16. पटकथा लेखन, प्रश्नकोष निर्माण इत्यादि के लिए कार्यशालाऐं	16. बहुत अच्छा अभ्यास	16. सुनियोजित रूप से और अधिक आवश्यक कार्यशालाऐं होनी चाहिए
	17. मोबाइल वैन	17. पिछले कई वर्षा से खराब	17. दूर-दराज के क्षेत्रों हेतु इसे पुन: शुरू किया जाना चाहिए
	18. जॉब फेयर	18. पिछले कई वर्षा से कोई प्रयास नहीं	18. लगातार जॉब फेयर होने चाहिए
	19. विभिन्न कम्पनियों के साथ समझौता ज्ञापन (MoU)	19. अच्छा अभ्यास	19. इस तरह के प्रयास निरंतर होने चाहिए
	20. शैक्षणिक स्टाफ द्वारा अध्ययन केन्द्रों की मासिक निगरानी	20. वर्तमान में सहायक निदेशक क्षेत्रीय सेवायें द्वारा निगरानी	20. नियमित दौरों की व्यवस्था होनी चाहिए
	21. उपस्थिति दर्ज करने के लिए बायोमैट्रिक मशीन	21. लगभग 250 स्टाफ हेतु केवल एक मशीन	21. मशीनों की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए
	22. कार्य का मासिक मूल्यांकन	22. अच्छा अभ्यास	22. इस तरह के प्रयास निरंतर होने चाहिए
	23. वार्षिक सर्वश्रेष्ठ रिजिनल डायरेक्टरेट एवं और अध्ययन केन्द्र पुरस्कार	23. अच्छा अभ्यास	23. इस तरह के पुरस्कार और होने चाहिए
	24. पांच गांव को गोद लेना	24. उत्कृष्ट प्रयास किन्तु सीमित और अनियोजित कार्य	24. पूरे मनोयोग से विकास कार्य होना चाहिए

सर्वोत्तम अभ्यास विकास और परिनियोजन	1. एसएमएस (SMS)	1. सभी शिक्षार्थियों के लिए सामान्य एसएमएस, जिससे कभी-कभी भ्रम पैदा होता है।	1. शिक्षार्थी विशिष्ट (Learner Specific) एसएमएस भेजा जाना चाहिए
	2. टिकट सिस्टम (Ticket system)	2. अधिकांश शिक्षार्थियों को जानकारी नहीं है, अब तक कुल 19270 शिकायतें दर्ज	2. इस सिस्टम के प्रति शिक्षार्थियों को जागरूक किया जाना चाहिए
	3. वन व्यू सिस्टम (One view system)	3. कुछ माता-पिता/अभिभावक द्वारा इसे अच्छी व्यवस्था बतायागया है जबकि अधिकांशनेइस व्यवस्था के बारे में अनभिज्ञता बतायी है	3. इस सिस्टम के प्रति शिक्षार्थियों को जागरूक किया जाना चाहिए
	4. टोल फ्री नम्बर (Toll free Number)	4. अक्सर कोई उठाता नहीं है	4. समर्पित कर्मचारी को कार्य दिया जाना चाहिए
	5. ई-मेल (E-mails)	5. अधिकांश शिक्षार्थी कम्प्यूटर पर असहज हैं या उनके पास कम्प्यूटर नहीं है	5. विश्वविद्यालय को अपने सभी शिक्षार्थियों को कम्प्यूटर का आधार पाठ्यक्रम करवाना चाहिए और अध्ययन केन्द्रों में कम्प्यूटर की सुविधा देनी चाहिए
	6. विश्वविद्यालय पर लघु फिल्म	6. विश्वविद्यालय की एकमात्र लघु फिल्म	6. इस प्रकार की अधिक फिल्में बनानी चाहिए
	7. विडिओ लेक्चर्स	7. खराब गुणवत्ता मल्टीमीडिया का कोई उपयोग नहीं	7. गुणवत्ता का ध्यान रखा जाना चाहिए
	8. विभिन्न अवसरों पर विश्वविद्यालय आने वाले प्रतिष्ठित विद्वानों के विडिओ लेक्चर्स की रिकॉर्डिंग्स	8. अच्छी परंम्परा है	8. इस तरह के और प्रयास होने चाहिए
	9. विभिन्न विभागों के कम अवधि के कोर्स	9. सीमित लोकप्रियता	9. इस तरह के पाठ्यक्रमों का अधिक प्रचार होना चाहिए
	10. स्थानीय जनता के लिए विश्वविद्यालय द्वारा संचालित आयुष चिकित्सालय	10. केवल कुछ समय तक ही संचालन वर्तमान में बन्द	10. पुनः इस चिकित्सालय को शुरू किया जाना चाहिए
	11. समाचार पत्रों के माध्यम से अधिकाधिक जनजागरूकता	11. सीमित क्षेत्र तक ही प्रसारण	11. प्रसारण क्षेत्र को बढ़ाना चाहिए
	12. उड़ान- मासिक समाचार पत्रिका		
	13. सभी विभागों द्वारा समय-समय पर आयोजित राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठियां		

	14. अध्ययन केन्द्रों के अतिरिक्त शिक्षार्थियों के लिए विशेष कार्यशालाऐं	12. सीमित प्रकाशन, समयबद्धता का ना होना	12. छात्र संख्या के अनुसार समयबद्ध प्रकाशन होना चाहिए
	15. आदर्श अध्ययन केन्द्र 16. पटकथा लेखन, प्रश्नकोष निर्माण इत्यादि के लिए कार्यशालाऐं	13. अच्छा अभ्यास	13. इस तरह के प्रयास निरंतर होने चाहिए
	17. मोबाइल वैन	14. केवल बड़े अध्ययन केन्द्रों तक ही सीमित	14. इस तरह के प्रयास दूर-दराज के क्षेत्रों में भी होने चाहिए
	18. जॉब फेयर	15. बहुत अच्छा प्रयास	15. इस तरह के और केन्द्र खोले जाने चाहिए
	19. विभिन्न कम्पनियों के साथ समझौता ज्ञापन (MoU)	16. बहुत अच्छा अभ्यास	16. सुनियोजित रूप से और अधिक आवश्यक कार्यशालाऐं होनी चाहिए
	20. शैक्षणिक स्टाफ द्वारा अध्ययन केन्द्रों की मासिक निगरानी	17. पिछले कई वर्षा से खराब	17. दूर-दराज के क्षेत्रों हेतु इसे पुन: शुरू किया जाना चाहिए
	21. उपस्थिति दर्ज करने के लिए बायोमैट्रिक मशीन	18. पिछले कई वर्षा से कोई प्रयास नहीं	18. लगातार जॉब फेयर होने चाहिए
	22. कार्य का मासिक मूल्यांकन	19. अच्छा अभ्यास	19. इस तरह के प्रयास निरंतर होने चाहिए
	23. वार्षिक सर्वश्रेष्ठ रिजिनल डायरेक्टरेट एवं और अध्ययन केन्द्र पुरस्कार	20. वर्तमान में सहायक निदेशक क्षेत्रीय सेवायें द्वारा निगरानी	20. नियमित दौरों की व्यवस्था होनीचाहिए
	24. पांच गांव को गोद लेना	21. लगभग 250 स्टाफ हेतु केवल एक मशीन	21. मशीनों की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए
		22. अच्छा अभ्यास	22. इस तरह के प्रयास निरंतर होने चाहिए
		23. अच्छा अभ्यास	23. इस तरह के पुरस्कार और होने चाहिए
		24. उत्कृष्ट प्रयास किन्तु सीमित और अनियोजित कार	24. पूरे मनोयोग से विकास कार्य होना चाहिए

❐❐❐

1. एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास), उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी-263139 (नैनीताल)
2. असिस्टेंट प्रोफेसर (विधि), उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी-263139 (नैनीताल)

प्रकृति के कवि : नागार्जुन

—डॉ. गरिमा त्रिपाठी

नागार्जुन की चेतना पर प्रकृति का गहरा प्रभाव देखा जा सकता है। जैसा कि सर्वविदित है कि प्रकृति और मनुष्य का अन्योन्याश्रय संबंध है। कवयित्री महादेवी वर्मा ने लिखा है कि "प्रकृति के विविध कोमल-कठोर, सुन्दर-विरूप, व्यक्त-रहस्यमय रूपों के आकर्षण-विकर्षण ने मनुष्य की बुद्धि और हृदय को कितना परिष्कार और विस्तार दिया है इसका लेखा-जोखा करने पर मनुष्य प्रकृति का सबसे अधिक ऋणी ठहरेगा। वस्तुतः संस्कार-क्रम में मानव जाति का भाव जगत ही नहीं उसके चिंतन की दिशाएँ भी प्रकृति के विविध रूपात्मक परिचय तथा उससे उत्पन्न अनुभूतियों से प्रभावित हैं।"

बिहार की धरती में जन्मे और आजीवन यात्री रहे नागार्जुन वस्तुतः जन कवि हैं, धरती के कवि हैं। नागार्जुन की कविता बिहार की मिट्टी से निर्मित हुई है, संभवतः इसी कारण बाबा नागार्जुन की कविताएँ भाव, भाषा और मिथिला की जनपदीयता का विशिष्ट रंग-ढंग लिए अलग धरातल पर खड़ी दिखाई पड़ती है।

"संबद्ध, जी हाँ, संबद्ध हूँ
सचर-अचर सृष्टि से/शीत से
ताप से, धूप से, ओस से, हिमपात से...
राग से, द्वेष से, क्रोध से, घृणा से, हर्ष से,
शोक से, उमंग से आक्रोश से..."[1]

उपरोक्त काव्य पंक्तियाँ बाबा नागार्जुन की न केवल कविता है बल्कि एक कवि की अपनी कविता के प्रति प्रतिबद्धता का प्रमाण है जिसका निर्वाह बाबा नागार्जुन आजीवन करते रहे हैं। बाबा नागार्जुन ने अपनी समूची काव्य यात्रा के दौरान मानवीय प्रेम को व्यंग्य से समन्वित कर जिन काव्य संग्रहों की रचना की, उसमें पाठकीय संवेदना को झकझोर देने की असीम शक्ति निहित है।

सन् 1935 ई. से शुरू हुई कवि नागार्जुन की काव्ययात्रा, जो कि सन् 1980 तक निरंतर जारी रही परंतु नागार्जुन प्रगतिवादी कवि ही कहलाए। कवि नागार्जुन ने हिंदी साहित्य को अनेक खूबसूरत कविता संग्रहों से समृद्ध किया। नागार्जुन के काव्य संग्रहों में 'युगधारा', 'सतरंगे पंखों वाली', 'प्यासी पथराई आँखें', 'तालाब की मछलियाँ', 'तुमने कहा था', 'खिचड़ी विप्लव देखा हमने', 'हजार-हजार बाँहों वाली', 'पुरानी जूतियों का कोरस', 'रत्नगर्भा', 'ऐसे भी हम क्या, ऐसे भी तुम क्या', 'आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने', 'इस गुब्बारे की छाया में', 'भूल जाओ पुराने सपने', 'अपने खेत में'।

प्रबंध काव्य-'भस्मांकुर', भूमिजा'

बाबा नागार्जुन कभी जन के गायक बनकर कभी प्रकृति सौंदर्य के गायक बनकर अपनी कविताओं में उभरते हैं। कवि नागार्जुन के बारे में आलोचक विश्वनाथ त्रिपाठी ने उचित ही लिखा है कि "नागार्जुन जनकवि हैं। वह प्रगतिशील कवि भी हैं। जनवादी कवि भी, नवजनवादी कवि भी और राष्ट्रीय कवि भी।"[2]

नागार्जुन की चेतना पर प्रकृति का गहरा प्रभाव देखा जा सकता है। जैसा कि सर्वविदित है कि प्रकृति और मनुष्य का अन्योन्याश्रय संबंध है। कवयित्री महादेवी वर्मा ने लिखा है कि "प्रकृति के विविध कोमल-कठोर, सुन्दर-विरूप, व्यक्त-रहस्यमय रूपों के आकर्षण-विकर्षण ने मनुष्य की बुद्धि और हृदय को कितना परिष्कार और विस्तार दिया है इसका लेखा-जोखा करने पर मनुष्य प्रकृति का सबसे अधिक ऋणी ठहरेगा। वस्तुत: संस्कार-क्रम में मानव जाति का भाव जगत ही नहीं उसके चिंतन की दिशाएँ भी प्रकृति के विविध रूपात्मक परिचय तथा उससे उत्पन्न अनुभूतियों से प्रभावित हैं।"[3] कवि त्रिलोचन ने लिखा है कि "जिस कवि ने प्रकृति की कविताएँ नहीं लिखी हैं, उसे वे प्रगतिशील कवि नहीं मानते। प्रगतिशील कवि कभी भी शुरू से अंत तक आत्मकेन्द्रित नहीं हो सकता, जिससे उसे बाहर की दुनिया से, जिसमें समाज तथा प्रकृति दोनों शामिल हैं, संबंध स्थापित करना ही पड़ता है।"[4] कवि नागार्जुन की अनेक कविताओं में प्रकृति अपने सहज स्वाभाविक रूप में मौजूद है। बाबा नागार्जुन की मशहूर कविता है-'बादल को घिरते देखा है' दृष्टव्य है—

"अमल धवल गिरि के शिखरों पर, / बादल को घिरते देखा है। / छोटे-छोटे मोती जैसे / उसके शीतल तुहिन कणों को, / मानसरोवर के उन स्वर्णिम / कमलों पर गिरते देखा है, / बादल को घिरते देखा है।"[5]

उपरोक्त कविता की विशेषता यह है कि कवि 'देखे हुए' को कविता में चित्रित करता है। कवि ने कोई कल्पना नहीं की है इस कविता में, बल्कि जो यथार्थ है उसे ही कविता द्वारा बयाँ किया है। कवि नागार्जुन ने इस कविता में प्रकृति के नाना रूपों का चित्रण किया है। कवि ओस की बूँदों को कमल पर गिरते देखता है। हिमालय के आसपास विद्यमान छोटी-बड़ी अनेक प्रकार की झीलों को देखता है। वर्षा ऋतु में उपजी उमस से बेचैन होकर हंसों को घूमते देखता है। इसके साथ ही कवि ने एक अद्‌भुत वर्णन किया है। चकवा-चकवी का। चकवा-चकवी के बारे में अनेक लोक-कथाएँ प्रचलित हैं। जैसे कि चकवा-चकवी दिन-भर साथ-साथ विहार करते हैं परंतु रात्रि होते ही बिछुड़ जाते हैं। दोनों रात भर विरहाताप में रुदन करते हैं। प्रात:काल होते ही फिर मिल जाते हैं। कवि ने कस्तूरी मृग, धनपति कुबेर, कवि कालिदास तथा उनके मेघदूत, किन्नर-किन्नरियों की भी चर्चा की है। यह कविता कवि और उसका प्रकृति के प्रति अगाध प्रेम का सुन्दरतम उदाहरण है। बादल पर कवि नागार्जुन ने अनेक कविताएँ लिखी हैं। दृष्टव्य है—

"देखिए तो इनकी लीला / बूँद-बूँद बरसते हैं / टुकड़ों में बँटे-बँटे / नीचे धरती की ओर बढ़ते हैं / फ्रिज के अंदर जम जाते हैं / देखिए तो इनकी लीला।"[6]

कवि नागार्जुन कहते हैं कि क्या ये वही बादल हैं जिन्होंने कालिदास को अपनी ओर खींचा था? क्या ये वही हैं जो कवि को अलकापुरी उड़ा ले गए थे? नागार्जुन की एक अन्य कविता की कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं—

"धिन-धिन धा धमक-धमक / मेघ बजे / दामिनि यह गई दमक / मेघ बजे।"[7]

कवि नागार्जुन ने इस कविता में बादल के भिन्न रूप अर्थात् रौद्र रूप की चर्चा की है। बादलों की गड़गड़ाहट का वर्णन 'धिन-धिन धा' शब्दों के माध्यम से ध्वनित होता है। जब बादल गरजने लगे तो बिजली भी चमकी तत्पश्चात् बादलों ने बरसना आरंभ किया। बादलों के बरसने से धरती पर जो भी गंदगी जमी थी, धुल गई, स्वच्छ हो गई और धरती फिर से निर्मल हो गई। अद्भुत है यह दृश्य! ऐसा दृश्य सिर्फ नागार्जुन ही उपस्थित कर सकते हैं। बादल पर कविताएँ छायावादी कवियों 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' और 'सुमित्रानंदन पंत' ने भी लिखी हैं लेकिन सभी कवियों की कविताओं में बादल के अलग-अलग रूप चित्रित किए गए हैं, सभी कवियों के बादल एक जैसे नहीं हैं। प्रकृति के प्रति अगाध प्रेम की चर्चा करते हुए प्रकाशचंद्र भट्ट ने लिखा है कि "नागार्जुन ने प्रकृति का बड़ा सजीव वर्णन किया है जिसमें कवि की आत्मीयता सहज ही देखी जा सकती है।"[8]

कवि नागार्जुन की प्रकृति चित्रण से जुड़ी एक कविता दृष्टव्य है—

"सावनी बदलियाँ / मेरे रोमकूपों के अंदर / समाती जा रही हैं / मेघ टहल-बूल रहे हैं / मेरे साथ-साथ / लगता है में मेघवाहन हूँ।"[9]

यहाँ कवि ने प्रकृति के विविध रूपों की चर्चा की है। लोक संस्कृति में ऋतुओं को विशेष स्थान दिया गया है। उसमें भी सावन सबसे पत्रि मास माना गया है। सावन का नाम सुनते ही सबसे पहला जो भाव आता है वह है हरियाली और प्रसन्नता का। नागार्जुन को सावन से विशेष लगाव है लेकिन कवि बताता है कि इस मौसम में कब वर्षा हो, कब धूप खिल जाए, कभी बादल दिखते हैं कभी गुम हो जाते हैं। कब रिमझिम वर्षा होने लगे पता नहीं लग पाता है। कवि नागार्जुन ने सावन की बदलियों को रहस्यलोक कहा है। 'मैं मेघवाहन हूँ' कविता नागार्जुन ने जहरीखाल में रहने के दौरान लिखी थी। बाबा की कविताएँ किस प्रकार कल्पना की छवि बुनती हैं यह उनकी कविता 'बरफ पड़ी है' के माध्यम से जाना जा सकता है—

"बरफ पड़ी है / सर्वश्वेत पार्वती प्रकृति / निस्तब्ध खड़ी है।"

कवि की प्रत्येक कविता एक नये सौंदर्य को लेकर सामने आती है। इनकी कविताओं में प्रकृति के साथ-साथ अन्य पदार्थ भी अभिन्न होकर स्थित हैं, जैसे—यहाँ बर्फ कवि को ऐसी

प्रतीत हो रही है मानो पार्वती जो शिव की अर्द्धांगिनी है, मौन मुद्रा में खड़ी हैं। कवि ने लोक में विद्यमान मिथक का सहारा अपनी अनेक कविताओं में लिया है।

कवि नागार्जुन ने प्रकृति में विद्यमान पशु-पक्षियों की भी चर्चा अनेक कविताओं में की है। 'अब के इस मौसम में' नामक कविता में कवि ने कोयल की कूक सुनने की अपनी व्याकुलता चित्रित की है—

"अब के इस मौसम में / कोयल आज बोली है / पहली बार / टूसों को उमगे कई दिन हो गए / टेसू को सुलगे कई दिन हो गए / अलसी को फूले कई दिन हो गए

× × ×

मुँह बा दिया कलियों ने / देखती रह गई निठुराई के खेल / चुपचाप कलमुही / जोरों से कूक पड़ी।"[10]

यह कविता कवि नागार्जुन के ग्रामीण जीवन के गहन अनुभव को दर्शाती है। कवि की स्मृति काफी तीव्र है अर्थात् कवि को याद है कि इस मौसम में कोयल आज पहली बार बोली है। यह प्रकृति में विद्यमान पक्षियों के प्रति कवि के गहरे प्रेम को दर्शाता है। आलोचक नामवर सिंह ने उचित ही लिखा है कि "जो वस्तु औरों की संवेदना को अछूती छोड़ जाती है वही नागार्जुन के कवित्व की रचना भूमि है।"[11] हालांकि उपरोक्त बातें आलोचक नामवर सिंह ने 'पैने दाँतों वाली' कविता के संदर्भ में कही हैं जो कि 'अबके इस मौसम में' कविता के लिए भी सटीक लगती है।

कवि नागार्जुन ने माघ की सर्दी पर कविता लिखी है। माघ की सर्दी में जहाँ जनता अपने घरों में रजाइयों में दुबककर बैठी या सोई रहती है उसी कड़कड़ाती सर्दी में नागार्जुन तालाब के फेरे लगाते हैं जो घास रात्रि भर की ओस से भीगी हुई थी, उस पर नंगे पैर चलने का आनंद लेते हैं। अद्‌भुत है बाबा की फुर्ती। दृष्टव्य है—

"सुबह-सुबह / हाथ पैर ठिठुरे, सुन्न हुए / माघ की कड़ी सर्दी के मारे / सुबह-सुबह अधसूखी पतइयों का कौड़ा तापा / आम के कच्चे पत्तों का जलता, / कड्वा-कसैला सौरभ लिया / आँचलिक बोलियों का मिक्चर / कान की कटोरियों में भरकर लौटा / सुबह-सुबह।"[12]

कवि नागार्जुन की कविताओं में मौजूद प्रकृति चित्रण, प्रकृति और मानव के संबंध को स्थापित करती है। ग्रामीण वातावरण तथा देशकाल को प्रस्तुत करती उपरोक्त कविता सन् 1976 ई. में लिखी गई है। आज भी ग्रामीण अंचल में कहीं-कहीं यह दृश्य देखा जा सकता है, सर्दी में जहाँ घर के बच्चे से लेकर बूढ़े तक भोर में ही उठ जाते हैं और अपने दिनचर्या के कार्यों में लग जाते हैं। सर्दी से बचने के लिए सुाई के दौरान आसपास मौजूद वृक्षों की आम, पीपल आदि की पत्तियाँ इकट्‌ठा करके रख लेते हैं ताकि सुबह-सुबह इन पत्तियों को जलाकर हाथ-पैर सेंककर सर्दी से कुछ राहत मिल सके। यह कविता नागार्जुन के ग्रामीण जीवन के निकट संपर्क तथा प्रकृति प्रेम को दर्शती है।

"प्रकृति और पुरुष, प्राकृतिक परिवेश और मानव समाज, प्राकृतिक सभ्यता और संपदा का विकास आदिकाल से ही इनमें अन्योन्याश्रित संबंध रहा है। आदि कवि वाल्मीकि से लेकर आज तक कवियों का काव्य प्रकृति के विविध रंग और संगीत से अछूता नहीं रहा है।"[13]

'भूमिजा' खण्डकाव्य में भी कवि ने प्रकृति के विविध रूप, जैसे—पेड़-पौधे, नदी, पहाड़ चित्रित किया है। कवि ने कौशल के प्राकृति परिवेश का अद्‌भुत चित्रण भगवान राम के द्वारा करवाया है।

"सच है तात / नहीं मिलेगा ऐसा सुन्दर देश... / नहीं मिलेगी ऐसी उर्वर भूमि / धन्य हमारा कोसल जनपद धन्य / सुजल सुफल बहुविधि धन-धान्य समेत / लता-गुल्म-तृण-तरु-वल्ली परिव्याप्त।"[14]

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि प्रकृति अनेक रूपों में नागार्जुन की कविताओं में सहज-स्वाभाविक रूप से झाँकती हुई प्रतीत होती है या मौद रहती है। कवि के यहाँ प्रकृति और मनुष्य के संबंध का जीवंत चित्रण किया गया है। कवि का प्रकृति से प्रेम, कवि सहृदयता को दर्शाता है। कवि नागार्जुन अपने समकालीन कवियों में इस अर्थ में भिन्न हैं कि उनकी कविताओं में प्रकृति पूरे परिवेश को, मिथिलांचल को रेखांकित करती है। यह प्रकृति ही है जिससे कवि मानव-मन के विविध चित्रों को उकेरता है जिसे पढ़कर कवि के जन-जीवन विविध रंगों और रूपों के दर्शन किये जा सकते हैं।

सन्दर्भ :

1. नामवर सिंह, नागार्जुन प्रतिनिधि कविताएँ, पृष्ठ-15, राजकमल प्रकाशन संस्करण 2014
2. आजकल पत्रिका, जून 1996, पृष्ठ-9
3. रघुवंश - प्रकृति और हिंदी काव्य, पृष्ठ-9
4. नंदकिशोर नवल - नागार्जुन और उनकी कविता, पृष्ठ-74, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 2011
5. नागार्जुन - युगधारा, पृष्ठ-67, 68, यात्री प्रकाशन, संस्करण 2008
6. नागार्जुन - आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने, पृष्ठ-35, वाणी प्रकाशन, संस्करण 1986
7. सं. नामवर सिंह - नागार्जुन प्रतिनिधि कविताएँ, पृष्ठ-68
8. प्रकाशचंद्र भट्ट - नागार्जुन : जीवन और साहित्य, सेवासदन प्रकाशन, म.प्र., संस्करण 1974
9. नागार्जुन - ऐसे भी हम क्या! ऐसे भी तुम क्या, पृष्ठ-40
10. सं. नामवर सिंह - नागार्जुन प्रतिनिधि कविताएँ, पृष्ठ-71
11. वही, भूमिका
12. वही, पृष्ठ-33
13. सं. सोमदेव, शोभाकांत-भूमिजा, नागार्जुन, राधाकृष्ण प्रकाशन, पृष्ठ-94
14. नागार्जुन - भूमिजा, पृष्ठ-37

❑❑❑

अतिथि प्रवक्ता, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007, मोबाइल : 8802279028

Assessing the menopause stress level among the post menopausal women of Imphal East and Imphal West, Manipur

–Aduana Panmei
–Dr. Sampreety Gogoi

In India, menopausal and post menopausal health has emerged as an important public health concern as a result of improved economic conditions, rapid life style changes, and increased longevity. So, knowing more about menopause might empower women to cope better with menopausal changes. In North-East India, very few studies have been done on experiences of menopausal stress in women.

Midlife, the period of the lifespan between younger and older adulthood, has been known as a period of transition in women's lives. At this stage of life i.e. 40-65 years of age, women commonly experience multiple social, psychological, physical, and biological transitions. Menopause is also a stressful life event because of the various changes that occurs in the body. Stress experience by the women can be external and internal. Stress is a reaction by the body to any kind of demand which may be good or bad. It causes change in the body images, attitude towards aging, swinging mood. Therefore, the present study was aim to study the menopausal stress experience by the women in Imphal East and Imphal West, Manipur.

Material and Methods: A descriptive study was conducted in imphal west and imphal east of Manipur. Imphal West and Imphal East district from the other seven districts as a result of high concentration of female population. To ascertain the sample size of the study, Cochran's formula (1977) for infinite population was used. The two districts has 4 (four) blocks each, total 8 (eight) blocks. The total 8 (eight) blocks were purposively selected for the present study. A total sample of 384 post menopausal women (192 of Imphal West and 192 of Imphal East districts) with the age group of 40-60 years, were selected through simple random sampling. Menopause Stress scale developed by Sahoo and Tiwari (2016), consisting of 42 items was ascertain to assess the stress level. The analysis was done in excel using frequency and percentage.

Result: In the present study that majority of the respondents from both the district were in the age

group of 46-50 years (53.13 %) followed by 51-55 years (25.52%), 40-45 years (19.01 %) and 56-60 years (2.34%) respectively. The mean age of the women in the study is 49 years of age and women attains their menopause at 46 years in the present study. The results also reports that respondents majority of the women i.e. 65.36 % in the study were encounter menopausal stress sometimes followed by 32.55% of women were almost never whereas 2.08 % fairly often menopausal stress by the women. The mean of the menopausal stress level is 71.93.

Conclusion: Mean age of attaining menopause was found to be 46 ages in the study. Majority of the women have experienced stress sometimes, whereas followed by almost never and fairly often. Thus, it can conclude that women experience menopausal stress differently. Some may experience severe while another may be mild.

Keywords: menopause, stress, post menopause, menopause symptoms

Introduction: Manipur, the Land of Jewels-Sanaleibak, is a state in North East India with a population of 2.7 million, sharing a common international border with Myanmar. The population of Manipur originally comprised of the 'Meiteis' who dwell in the valley and the tribals who dwell in the hilly region. The people of Manipur have their own culture, way of living and identity. Manipur is also known for the successful role of women's power in the past and in the present day. Women's role in the socio-economic and cultural life is significant in Manipur. They do buying and selling in the markets for their living besides that they also greatly involved in the agricultural farming, handloom and handicraft.

Midlife, the period of the lifespan between younger and older adulthood, has been known as a period of transition in women's lives. At this stage of life i.e. 40-65 years of age, women commonly experience multiple social, psychological, physical, and biological transitions. Due to the gradual changes in the body, an individual's might become more sensitive to diet, substance abuse, stress and rest and begins to show a visible signs of aging. In this stage, women experiences menopause which ends natural fertility. The word menopause comes from the Greek words "menos" and "pause". The term menopause means the end of the monthly menstrual cycle. It is an inevitable part of aging. The age of menopause varies from population to population. Indira (1979) and Kaw *et.al*. (1994) reports that the age of menopause is range from 40 to 50 year. During the menopause women experience menopausal symptoms which can really have an important impact in the daily life. The experience of menopause is also influence by whatever is happening in a woman's life. One's life experience and how she feel and live her life can also impact the way she experience menopause. The common menopausal symptoms experiences by women are hot flush, night sweats, weight

gain, headaches, and vaginal dryness and sleep problems. The severity of symptoms differs among women. Nearing middle age often gives stress, anxiety and fear due to the hormonal changes. Physical and emotional changes like skin changes, physical fitness, worries about getting old, losing love and dear one or children leaving home, family and personal issues like demands of growing children and adolescents.

Menopause is also a stressful life event because of the various changes that occurs in the body. Stress experience by the women can be external and internal. Stress is a reaction by the body to any kind of demand which may be good or bad. It causes change in the body images, attitude towards aging, swinging mood. Menopause is a significant physical and psychological event for women that mark the transition from the child bearing years to the non reproductive stage of life (Bertero, 2003). While some women reached menopause with little difficulty, other women view menopause as a significant stressor with symptoms that interrupt their lives. Each woman who deals with menopause may find that her stress may be needed to adjust with management strategies because of the high level of stress which is occurring due to the physical, emotional, personality, sexual and urinary or digestive changes. Level of menopausal stress experienced by women is usually differ, some may experience mild to moderate while some may go through severe level of stress. Stress affects not only the health but also the relationships, work performance and quality of life. It was reported in a survey conducted in India, 77 percent of menopausal women under stress say that anxiety or disorders such as insomnia or depression interfere their marital relationships (Sengupta, 2003).

In India, menopausal and post menopausal health has emerged as an important public health concern as a result of improved economic conditions, rapid life style changes, and increased longevity. So, knowing more about menopause might empower women to cope better with menopausal changes. In North-East India, very few studies have been done on experiences of menopausal stress in women. Many women are unaware of menopause. Keeping this in mind the present study was conducted to study the level of stress experience by the women in Manipur.

Khan and Hallad (2005) in their study explained that all those women getting their menstruation regularly and not reported any of the menopausal symptoms are defined as 'not in menopausal transition'; those who are found to experience at least one menopausal symptom but having regular menstruation are considered as 'premenopausal'; women who feel some changes in their menstruation either in the frequency of menstrual periods or in the flow of bleeding are defined as 'perimenopausal' women and all those who have not got their periods during last one year are called as 'postmenopausal'.

Chedraui et.al. (2007) conducted a cross-sectional study to assess menopausal symptoms among middle aged women. It was found that in general, peri-menopause and postmenopausal women significantly presented higher rates of menopausal

symptoms when compared to premenopausal women. Women with lower educational level presented higher somatic and psychological scorings in comparison to their counterparts. In addition to these symptoms, women can experience different level of stress and wellbeing also during menopausal and post-menopausal phase of life.

Bauld and Brown (2009) conducted a study on stress, psychological distress, psychosocial factors, menopause symptoms and physical health in women. Results of the study concluded that low emotional intelligence was found to be related to worse menopause symptoms and physical health, and these associations were partly mediated by high stress, anxiety and depression, a negative attitude to menopause and low proactive coping.

A study was carried out by Srivastava S. and. Tanwar K., C. (2011) to explore the difference between stress and wellbeing of menopausal and post-menopausal working and non-working women. The results indicate comparatively better well-being and low stress levels in working menopausal as well as post-menopausal women than non-working women.

A study conducted by Sing A. and Pradhan SK. (2014) focused to determined the age at attaining menopause and the prevalence of various self report menopausal symptoms complained by post menopausal women at the age range of (40-54 years). It was reported that the mean age at attaining menopause was 46.24 and the study also reports the most common complaints of postmenopausal women experienced by women were sleep disturbance, muscles or joint pain, hot flush and night sweats.

Aim and objective of the study

- To study the menopausal stress experience by the women in Imphal East and Imphal West, Manipur.

Method of materials: A descriptive study was conducted in imphal west and imphal east of Manipur. A multi stage sampling was done in the study. Purposive sampling was adopted while selecting the two districts namely Imphal West and Imphal East district from the other seven districts as a result of high concentration of female population. To ascertain the sample size of the study, Cochran's formula (1977) for infinite population was used. The two districts has 4 (four) blocks each, total 8 (eight) blocks. The total 8 (eight) blocks were purposively selected for the present study. A total sample of 384 post menopausal women (192 of Imphal West and 192 of Imphal East districts) with the age group of 40-60 years, were selected through simple random sampling. Interested women from the already selected two districts were drawn as respondents for the study. Menopause Stress scale developed by Sahoo and Tiwari (2016), consisting of 42 items was ascertain to assess the stress level. Interview method was used and the questionnaire were

introduced and explained and asked them to fill the questions. The analysis was done in excel using frequency and percentage.

Results and discussion

Table 1 shows the distribution of respondents according to their present age, it clearly indicates that majority of the respondents from both the district were in the age group of 46-50 years (53.13 %) followed by 51-55 years (25.52%), 40-45 years (19.01 %) and 56-60 years (2.34%) respectively. It is shown that the average age of the women in the study is 49.05 (12.76 %) years of age; it is also reveal from the study that the most of the women were menopause by the age between 46-50 years, the average age of menopause is 46.95 (12.19 %) years. During the study, most of the women i.e. post menopause women reports that face a problems like hot flush, difficulty in sleeping, sweating in the night, felling of gaining weight, more tire than usual, difficulty in remembering things, difficulty in concentrating, irritation, mood swing, hair fall. Likewise, North American Menopause Society (NAMS) reported higher prevalence of menopausal problems like hot flush, night sweats in post menopausal women. Similarly, high proportion of women (92.7%) were lacking energy as per the study in Iran by Abedzadeh-kalahroudi M *et al* and it also reported in the study conducted in Pakistan by Nisar N *et.al* that 83.7 % of women were complaining of physical and mental exhaustion while a study in Egyptian results reveals that physical and mental problem was prevalent among 69.6 % of post menopausal women.

TABLE 1: DISTRIBUTION OF RESPONDENTS ACCORDING TO THEIR PRESENT AGE

Present age of respondents	Women (N=384)	
	F	P
40-45	73	19.01
46-50	204	53.13
51-55	98	25.52
56-60	9	2.34

Fig: 1. Age group of the respondents

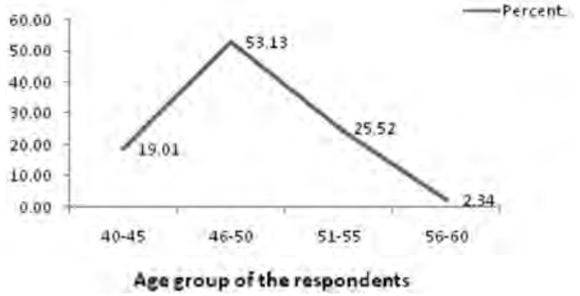

Table 2 illustrates the level of menopausal stress among the imphal East and Imphal west women of Manipur. It clearly had shown from the above table that out of 384 respondents majority of the women i.e. 65.36 % in the study were encounter menopausal stress sometimes followed by 32.55% of women were almost never whereas 2.08 % fairly often menopausal stress by the women. The mean of the menopausal stress level is 71.93. The table clearly indicates that most of the women from the age range of 40-60 years, were found to face a menopausal stress sometimes followed by almost never, which may be the reason due to their busy schedule to fulfill their daily need, to meet their family needs, which sometimes forgets their own problem and burden while busy in some other activities. Few of the respondents were found to face menopausal stress fairly often, which may be due to the family and personal issues such as the demands of the children, children leaving home for boarding or hostel, looking after aging problems or may be having a problem of financial and partner's challenges (not having a husband) or may be due to the hormonal changes like physically, emotionally, personality and changes they experience in their body. Some women have experience negative stress like restlessness; upset easily, anger, out of control, not able to overcome the life challenges they face and some have experience positive stress like confident in themselves, self- happiness which may be due to the changes in the body. A study conducted by Bauld *et.al.* (2009) state that a woman who expect menopause to be a negative experience or are stressed may be more likely to experience a more negative menopause. A study carried out by Nancy F *et al*., (2009) had reported that women who experience the menopausal transition are stress because of the changing in their body, depressed mood and poor health. It is very important to understand how stress affects, as for many women during midlife is accompanied by many negative events such as the death of parents, children leaving home and relationship problem. The menopausal changes is also accompanied by a shift in their societal roles as ends of fertility, experiencing a sense of losing identity which can also be stressful for some women (Duffy O *et.al.* 2011).

Table 2: Level of menopausal stress among Imphal East and Imphal West Women of Manipur

	Number of women (N=384)		**Mean**	**SD**
Level of menopausal Stress	**Frequency**	**Percentage**		
Almost Never	125	32.55	71.93	16.30
Sometimes	251	65.36		
Fairly Often	8	2.08		

Conclusion: The present research study aimed to study the menopausal stress level of women from Imphal east and Imphal west, Manipur. The results have shown that 49 ages is the mean age and women attain their menopause at 46 years in the present study. The result of the study also reveals that out of 384 respondents, majority of the women have experienced stress sometimes, whereas followed by almost never and fairly often. Thus it can conclude from the present study that some of the post menopausal women experienced stress sometimes of some may not experience besides some may experience often.

References:

Abedzadeh-Kalahroudi M, Taebi M , Sadat Z, Saberi F, Karimian Z. Prevalence and severity of menopausal symptoms and related fac-tors among women 40-60 years in Kashan, Iran. Nurs Midwifery Stud.2012:1(2); 88-93. DOI: 10.5812/nms.8358

Bauld ,R and Brown R. F. 2009. Stress, psychological distress, psychosocial factors, menopause symptoms and physical health in women.Maturitas, 62(2):160-165.

Bertero, C. (2003) International Council of Nurses, International Nursing Review. 50, 109–118.

Chedraui P., Aguirre .W., Hidalgo L. and Fayad, Luiggi. 2007. Assessing menopausal symptoms among healthy middle aged women with the Menopause Rating Scale. Maturitas 57 (2007) 271–278.

Duffy O, Iversen L, Hannaford PC. The menopause 'It's somewhere between a taboo and a joke'. A focus group study. Climacteric. 2011;14(4):497–505. pmid:21395452

Nisar N, Ahmed S N. Severity of Menopausal symptoms and the qual-ity of life at different status of menopause: a community based survey from rural Sindh, Pakistan. International Journal of Collaborative Re-search on Internal Medicine & Public Health. 2010; 2(5):118-130.

Khan,C.G. H. and Hallad, J.S. 2005. Age at Menopause and Menopausal Transition: Perspectives of Indian Rural Women.pp. 1-21.

Sengupta A. The incidence of menopause in India. Climacteric. 2003;jun1;6[2]:9.

Srivastava S. and. Tanwar K., C. (2011) Stress and Well-Being in Menopausal and Post-Menopausal Working and Non-Working Women. Indian Journal Of Applied Research: 559-562.

Singh A, Pradhan SK. Menopausal symptoms of postmenopausal women in a rural community of Delhi, India: A cross-sectional study. J Midlife Health. 2014 Apr;5(2):62-7. doi: 10.4103/0976-7800.133989. PMID: 24970983; PMCID: PMC4071646.

Nashwa N. Kamal 1 and Amany E. Seedhom. WHO EMRO | Quality of life among postmenopausal women in rural Minia, Egypt. Eastern Mediterranean Health Journal. 2017; 23(8).

Woods, Nancy Fugate et al. "Is the menopausal transition stressful? Observations of perceived stress from the Seattle Midlife Women's Health Study." *Menopause (New York, N.Y.)* vol. 16,1 (2009): 90-7. doi:10.1097/gme.0b013e31817ed26.

❒❒❒

1. Ph.D Scholar, Deptt. Of Human Development and Family Studies, College of Community Science, Assam Agricultural University, Jorhat Email: aduanapanmei@gmail.com
2. Assistant Professor, Deptt. Of Human Development and Family Studies, College of Community Science, Assam Agricultural University, Jorhat Email: sampreetygogoi@gmail.com

Research Article

Human-Nature Interface in the works of Ernest Hemmingway and Ruskin Bond: An Ecocentric Study

–Ajay Kumar
–Dr. Hemant Kumar Jha

Contrary to Anthropocentrism, where human beings are the central entity, in Ecocriticism, we have the physical setting, environment, and components like Soil, water, forest, air, sunshine, mountains, plains, and valleys. Moreover, the Ecocritical approach is not as simple as it seems to an ordinary reader. Some theorists include social, political, and cultural aspects in it, but on the contrary, others refrain from it.

Studying texts from an ecological and environmental perspective has become inevitable, keeping in view the unprecedented growth and development with the advancement of Science and Technology. The interplay of nature and humans have a significant role in maintaining ecological balance. Literary critics show consciousness concerning growing ecological crises, a risk to environmental balance, and many more anthropogenic factors adversely affecting nature. The current study will try to evaluate the portrayal of the Human-Nature interface in the selected works of Hemmingway and Bond from an Ecocritical point of view. The works of both authors interpret the relationship between the environment and human beings. Methodological tools of Ecocritical theory and close reading of the text have been used as the research methodology.

Keywords: Ecocriticism, Ecocritical Theory, Ecological Balance, Ernest Hemmingway, Ruskin Bond.

Introduction

The study of literary texts from an Ecocritical point of view has recently become a widely discussed phenomenon. Ecocritics also try to investigate whether or not we can deal with the environmental aspects of the literary text as we deal with gender, race, society, and other text elements. According to Richard Kerridge, the ecocritic should track environmental ideas, address debates wherever they appear in the partially concealed cultural spaces, and "evaluate texts and pictures in terms of their coherence and usefulness in response to the environmental crises." (Wallace and Armbruster 153). According to Cheryl Glotfelty, "Ecocriticism is the study of the relationship between

literature and the physical environment." (Fromm and Glotfelty 234).Ecocriticism is an approach in which literature and environment are studied in the tendon. It also deals with the ways literature treats nature and natural phenomena.

The term Ecocriticism was first coined by William Ruckeret in 1978 when he published a famous essay titled "Literature and Ecology: An Experiment in Ecocriticism." Earlier in this essay's publication, ecocritical works were discussed under Pastoralism, regionalism, nature studies, and human ecology. After the publication of the Anthology *Ecocriticism Reader* by Cheryl Glotfelty, Ecocriticism came as one of the leading theories in the literary world. According to the ecocritics, "we are one animal among many in this shared world, living in interwoven interspecies communities" (Feder 25). One of the essential aspects of Ecocriticism is that its approaches are diversified.

Contrary to Anthropocentrism, where human beings are the central entity, in Ecocriticism, we have the physical setting, environment, and components like Soil, water, forest, air, sunshine, mountains, plains, and valleys. Moreover, the Ecocritical approach is not as simple as it seems to an ordinary reader. Some theorists include social, political, and cultural aspects in it, but on the contrary, others refrain from it. Interestingly Peter Berry has followed a middle path while dealing with Ecocriticism by stating that the setting of the literary work is the central entity.

This paper tries to analyze how Ernest Hemmingway and Ruskin Bond have attracted the attention of human beings towards nature and how the love, affection, and sense of belongingness increased among the human as an aftereffect of reading literature by both the authors. The theory of Ecocriticism formally came into existence in the last decade of the twentieth century. Still, in reality, eco-consciousness was in the works of classic writers like Thoreau, Walt Whitman, and Virgil and the famous texts like Ramayana, Mahabharata, and works of great Hindi poets like Kalidass.

Ruskin Bond, born in 1934, is a celebrated Indian author of international repute. He was living with a family adopted by him being single in Landour, Mussoorie, India. The Indian Council for Child Education has recognized and appreciated his role in creating children's literature. He was awarded several literary awards, including the Sahitya Academy Award in 1992 for Our Trees Still Grow in Dehra, his novel in English, the Padma Shri in 1999, and the Padma Bhushan in 2014 respectively.

Mussoorie town is known for its natural beauty situated in the lap of the natural beauty of the Himalayas, and the literary activities of Ruskin Bond have further added to its glory and cultural landscape. This town is the home of the literary personality Ruskin Bond. Bond was not attracted to the facilities in the town of

Mussoorie instead due to the natural beauty, like natural vegetation, wildlife, and innocent rural people of the villages. In today's busy life where nobody has time to look back towards nature, Ruskin Bond's fiction has filled a big void by enriching literature with ecocounscienceness as he deals with nature delicately, precisely, and precisely minutely by providing the minutest details in his fiction. His fiction is endowed with a natural charm that directly penetrates readers' hearts and purifies emotions. Bond has given words to the emotions of the familiar person towards nature. In Maplewood: An Introduction in Our Trees Still Grow in Dehra, he describes the natural beauty of Dehra and Maplewood. He also laments human interference in the wilderness causing deterioration of natural beauty due to the use of heavy machines. Bond is widely acclaimed as a writer, poet, short story writer, writer of children's fiction, and creative writer for all ages. He is also credited as the writer of diaspora and postcolonial literature. He has composed; more than five hundred short stories, four volumes of autobiography, more than five hundred daily news articles, essays, and novels, including fifty books for children. His first work was published in 1951 when he was a teenager. At that time, only a few Indians like Mulk Raj Anand, R K Narayan, and Raja Rao started writing about the life and circumstances of Indians instead of copying foreign authors.

American novelist, journalist, sportsman, and short story writer Ernest Miller Hemmingway was born on July 21, 1899, at Oak Park Ilion, U.S. His adventurous lifestyle and his excellent image among the public brought him admiration. In 1953 he was awarded the Pulitzer Prize in Literature and Nobel Prize in literature in 1954. He is credited for seven novels, two non-fiction works, and six short story collections. Out of seven books, three novels were published posthumously. He also worked as an ambulance driver during World War-I and got seriously injured during the war. His famous work *Farewell to Arms* is based on his experiences and perceptions during the war. He married four times. His famous work *For Whom Bells Tolls* is based on his experiences during the Spanish War. The majority of the literary works of Hemmingway came out between 1920 - 1950. From 1940 to 1950, he remained in Cuba, and during his presence in Cuba, he wrote The Old Man and the Sea.

Ecocritical analysis of Ernest Miller Hemmingway's novella *The Old Man and the Sea* (1952) and his other short stories

Nature and setting are essential in *The Old Man and the Sea* by Ernest Hemmingway. In the novella, the background of the literary work is the wilderness of the sea and its surroundings with tides and waves of the sea, ocean currents, and sea creatures, including flora and fauna of the sea. Hemmingway has beautifully depicted the sea as a living organism and life inside the sea as organs. He has

shown love and respect for all creatures of the sea. The dawn and dusk, day and night, inside the sea and outside the sea, have been beautifully interpreted by Hemmingway. While reading this masterpiece by Hemmingway, one gets involved and submerged in the pictorial description of sea life by Hemmingway.

In the novella, the protagonist Santiago struggles for eighty-four consecutive days to catch fish from the Gulf Stream but cannot achieve his dream goal. On the 85^{th} day, he notices a big Marline, but the goal is still to be completed. He has to struggle for three more days to drag fish from inside the sea to the coast. As soon as he starts pulling fish, heavy bleeding comes out of Marline, which attracts many Sharks who are hungry and drink blood and eat the flesh of Marline. This episode adds to their struggle with Santiago. *Old Man and the Sea* show the heroic quest of the human being. Nature is symbolized in the form of the Marlin-the big fish. The man continues his pursuit of conquering nature but, after a meaningful success, again gets defeated by the interruption by Sharks.

A Warbler bird comes near Santiago, and that bird is allowed to rest on the skiff, which shows affection for the bird. Santiago also feels pity for turtles that get killed during fishing by fishers. Certain sea birds wait for flying fishes to come, and they will eat them, but they can hardly find any fish. Moreover, after a long struggle, when Santiago finds fish, he thinks about who deserves to eat this fish because most of the men are lazy and hardly struggle to catch fish. "Fathers and Sons" is one of the interesting short stories by Hemmingway. In the story, after growing up, Nick forms his own family. One day, he plans to visit his little son and his home in a Northern Michigan village. His son asked him about his town and surroundings when he was young. Nick tells his son that there were a lot of trees and green vegetation during his childhood. He used to live with Indians.

Indians were careful about dealing with nature and natural resources. Indians used to worship nature and trees. They used to pick only fallen leaves for heating and burning purposes. The man was very economical and careful while using natural resources and revered nature. Today the scenario has changed completely. With the advent of Industrialization, everything has become commercialized, and man has become a machine. With the help of this story and the characters of the story, Hemingway has tried to communicate a message of an alarming situation due to undue interference of man towards nature and warned of the dire consequences if a human being did not refrain from such activities. He has succeeded in interpreting undue interference of man in the ecological balance of nature, resulting in ecological crises. The intricate relationship between man and his environment can collapse if proper care is not taken.

In a short story titled "Hills like White Elephants," Ernest Hemmingway tried to portray how human beings have distracted themselves from nature. Here White

Elephant represents a pure environment. In the story's plot, an American man and his associate are waiting for a train from Barcelona to Madrid in the shadow of a bar. Dispute starts between the duos on the issue of the abortion of a girl in which an American man is willing for abortion of an unmarried young pregnant girl. Still, the American man is against abortion. Hemmingway has succeeded through his writing in making man aware of how human beings are destroying nature without caring for the sustainable development of nature and natural resources. In the story, a pregnant girl signifies nature, and an American man represents a human who is asking for an abortion. Abortion of nature by undue interference in the phenomenon of nature is the leading cause of ecological imbalance. The white elephant represents pure nature, and it is difficult to find pure nature in the present scenario of interference in nature by human beings.

Most of his works of Hemmingway, like "Across the River," "Into the Trees," and ``The *Old Man and the Sea*, revolve around nature as a powerful impact on the lives of the different characters in novels and short stories. In the characters' interactions in short stories and novels, Hemmingway considers the role of nature as a heavenly entity. Due to his exposure to nature, Hemmingway has decided to provide nature with such a powerful force in his literary works.

Ecocritical analysis of Ruskin Bond's *My Father's Trees in Dehra* and his selected short stories.

One of the most astonishing characteristics of the works of Ruskin Bond is naturally bringing the essence of love for ecology. The richness of flora and fauna of Nanital, Dehradun, and Mussoorie in the foothills of the outer Himalayas is the best example. In *My Father's Trees in Dehra* author comes to his hometown after a long period of twenty years and finds that though there is enough change in the cultural landscape, the natural landscape is still almost the same with some minor changes in vegetation as most of the trees have been fallen during the construction of roads, and buildings. His father also had a special affection for trees, and along with his father, he used to visit the forest and rest in the natural vegetation. Sometimes he and his father used to discuss how deforestation was taking place. Being a motherless boy, Ruskin Bond used to sit idle in the lap of Mother Nature and enjoy. After the death of his father, his attraction toward nature increased. Most of the poets and authors of his time were busy writing about social, political, and cultural aspects of literature, but Bond was consciously involved in writing for nature. It becomes vital for the lover of nature to write intimately about nature to attract the general public's attention to the conservation of nature and the natural environment. With the protagonists' help in short stories, Ruskin Bond tells us about his visits to forests and plantation drives, which testify

to his love for nature. His association and upbringing in the hills imbibed natural essence in his blood and veins. For him, the foothills of the Himalayas are the symbol of belongingness.

In his short stories like "When You Can't Climb Trees Any More," "A Job Well Done," and *Our Trees Still Grow In Dehra*, Ruskin Bond imagines his father and grandmother coming back into his life. In *Our Trees Still Grow in Dehra,* a short story titled: "Maplewood: An Introduction" laments human beings the way man is clearing vegetation. "If it has gone, don't write and tell me: I'd rather not know " (Bond 65). Due to the tall Maplewood tree, the cottage got its name. "Once you have lived with mountains, there is no escape. You belong to them" (Bond 66).

In the short story "Escape from Java," Ruskin Bond beautifully explains the topography, vegetation, crop fields, coast, and natural environment. After an artificial catastrophe, he, along with his father, has to leave Java, and he has explained the scenic beauty of the landscape, which he observed while traveling on a truck. The short story "Untouchable" talks about the environment surrounding Bond's room and the thunder coupled with lightning that frightened him. "'All Creatures Great and Small" explains the characteristics of pets at his home and the response of family members. All the flora, fauna, and environment surrounding us are the essential parts of our environment, and everything has its significance for maintaining ecological balance.

In another story, "Binya Passes By," Ruskin Bond explains a picturesque hillside landscape, its vegetation, and one shepherd girl, Binya. He falls in love with Binya and visits grazing lands where Binya comes to collect grass and graze a cow. She gives him the fruit of some forest tree, which he eats happily. Ultimately she disappears one day and never appears again. In "Death of the Trees," Ruskin Bond discusses how trees and green vegetation are disappearing quickly.

Another tree I'II miss is the young deodar, the only one growing in this stretch of the woods. Some years back, it was stunted by a lack of sunlight. The oaks covered it with fuzzy branches. So I cut away some of the overhanging branches, and after that, the deodar grew much faster. It was just coming into its own this year; now cut down in its prime like my young brother on the road to Delhi last month: both victims of the roads. The tree was killed by the PWD; my brother by a truck. (Bond 143)

Ruskin Bond compares the felling of the tree with the death of his brother in a road accident. In this way, he considers trees as his family members. Moreover, the views of his milkman and one neighbor are similar to the feeling of trees. The short story "An Island of Trees" presents Ruskin Bond's intimate relationship with nature and his love for fauna. This short story is full of characters that attract

children's attention and explain the role of nature in upbringing children. Another story titled "No Room for a Leopard" depicts the cause of the extinction of the cat family-exporting the skin of leopards by killing them. This short story serves as awareness for the conservation of the Leopard, which is otherwise on the verge of extinction. In a short story titled "The Cherry Tree," a child, namely Rakesh, digs the field and sows the seed of a Cherry; over time, the seed grows and becomes a tree with leaves, flowers, and fruits. This short story gives a moral lesson and inspiration to children to grow more and more trees. Since Ruskin Bond was an orphan, he chose nature as his guardian and decided to live, write, think and play in the lap of nature and admire nature. Unlike Wordsworth, Bond avoided too much theorization of nature but took it lightly.

Future Scope of Research

The current study tried to explore ecocritical aspects of select works of Ruskin Bond and Ernest Hemmingway. The portrayal of social and cultural aspects of life in the works of Bond and Hemmingway can be taken as further research.

Conclusion

Man's dissociation from the natural world is the apparent cause of environmental crises. Man is overconfident in conquering nature. Rising ecological consciousness in the masses and literary writings can lead to respect and a sense of belongingness for nature. The works of Ernest Hemmingway and Ruskin Bond show that both writers have written a lot about ecological consciousness. Most of the works of Ernest Hemmingway are based in and around oceans/seas; on the contrary, most of the writings of Ruskin Bond are composed in the mountainous regions. Ernest Hemmingway was fond of fishing and bullfighting and was an equally ferocious writer of consciousness. Ruskin Bond, an orphan and children's writer, has written many works that have no comparison regarding the rising sense of eco-consciousness among the various strata of society. Both authors have devoted their lives to eco-consciousness, and their efforts to conserve the ecosystem are immense.

Works Cited :

Bond, Ruskin. *Our Trees Still Grow in Dehra*. Penguin Books, 1991.

Feder, Helena.*Ecocriticism and the Idea of Culture: Biology and the Bildungsroman*. Ashgate, 2014.

Fromm, Harold, and CheryllGlotfelty, editors.*The Ecocriticism Reader: Landmarks in Literary Ecology*.University of Georgia Press, 1996.

Wallace, Kathleen R., and Karla Armbruster, editors.*Beyond Nature Writing: Expanding the Boundaries of Ecocriticism*.University Press of Virginia, 2001.

❒❒❒

1. Research Scholar, Amity School of Liberal Arts, Amity University Haryana.
2. Professor, Amity School of Liberal Arts, Amity University Haryana.

Exploration of Identity and Modern Materialism in Kurt Vonnegut's *The Sirens of Titan*

–Gopira M.R.
–Dr. J. Jayakumar

The novel presents a character which goes in search of identity, not for himself alone, but also for the whole community of Jews in an ambience of animosity and hatred. Naturally the journey is not easy and smooth. His efforts are hampered by unforeseen circumstances, racial discrimination and individual disparity. The protagonist Malachi, who is the narrator, also, sets out on the journey of his life with the legacy of a long struggle left by his dying grandfather.

Literature created from the imagination, not presented as fact, though it may be based on a true story or situation. Types of literature in the fiction genre include the, short story, and novella. The word is from the Latin fiction, "the act of making, fashioning, or molding. American literature, the body of written works produced in the English language in the United States.Like other national literatures, American literature was shaped by the history of the country that produced it. For almost a century and a half, America was merely a group of colonies scattered along the eastern seaboard of the North American continentcolonies from which a few hardy souls tentatively ventured westward. After a successful rebellion against the motherland by the end of the 19th century, too, it had taken its place among the powers of the world—its fortunes so interrelated with those of other nations that inevitably it became involved in two world wars and, following these conflicts, with the problems of Europe and East Asia. Meanwhile, the rise of science and industry, as well as changes in ways of thinking and feeling, wrought many modifications in people's lives. All these factors in the development of the United States molded the literature of the country.

Key Words: Modernism, Materialistic Attitude and Plight of Jews

Introduction: This research article traces the history of American fiction and the contributions of American literature. This history of American literature begins with the arrival of English-speaking Europeans

in what would become the United States. At first American literature was naturally a colonial literature, by authors who were Englishmen and who thought and wrote as such. John Smith, a soldier of fortune, is credited with initiating American literature.

Kurt Vonnegut was born in Oklahoma City, USA. Somehow Vonnegut did not like the idea of being named after the great philosopher. He felt so embarrassed that he did not study Emerson's works for several years. Vonnegut's father, Lewis, died in an accident when the novelist was only a three year old child. His mother, Ida, had to work as a domestic and Chaper Afro-Methodist Episcopal Church. Vonnegut had the opportunity to meet the people of other races as his parents had many white friends who visited them frequently when Vonnegut was a small child. Naturally, Vonnegut was free from racial prejudices with his *Sirens of Titan* at the end of the novel.

The novel presents a character which goes in search of identity, not for himself alone, but also for the whole community of Jews in an ambience of animosity and hatred. Naturally the journey is not easy and smooth. His efforts are hampered by unforeseen circumstances, racial discrimination and individual disparity. The protagonist Malachi, who is the narrator, also, sets out on the journey of his life with the legacy of a long struggle left by his dying grandfather. The readers get the impression that the protagonist Malachi would become a fanatic crusader for his community, but strangely enough, he comes in conflict with one such crusader, named Roseveltos the Exhorter, who drives him to take plunge into the manhole for safety of his life, and he comes to join the Brotherhood, (though accidentally) which aims at fighting for those who have been dispossessed of their heritage,' irrespective of their caste, colour and race. The protagonist Malachi rises above the racial prejudices inspite of the exhortation of his grandfather. While lying in the manhole, safe from the petty bickering and prejudices.

He discovers the great truth that diversity is a gift of nature which should be preserved and synthesized. He discovers about the personal greatness that nobody is great all the time and at all places. Mr. Norton who was a picture of greatness in the beginning of the novel is found as a common man, seeking help from the protagonist Malachi at the end of the novel. The protagonist Malachi draws the conclusion. Thus, the novelist propounds the theory that one who loses direction in life loses his face.

The plot of this novel shows Vonnegut's mastery over the craft. He has opened the novel with a prologue to acquaint the reader with the mental state of a tormented

person and his class, and also with what it ought to have been. He is annoyed in the beginning for being invisible-assaults a white man almost to death-but realization comes to him that he acted as an irresponsible man. He says to give a clear idea of what he wants to propound in his novel-"Let me agree with you, I was irresponsible one; for I should have used my knife to protect the higher interests of the society. Some day that kind of foolishness will cause us tragic trouble." It is almost the principle of non-violence that has been recommended (23).

The novelist has beautifully related the prologue and the epilogue by his philosophical propositions and inferences.Then, the plot is an odyssey of the protagonist Malachi comprising many bizarre incidents, including a 'Battle Royal' in which the protagonist Malachi is blind-folded and led into an arena to fight with other Jew boys for the amusement of the white leaders of the town. He is given college scholarship but he is expelled from the college without being given a chance to explain his side of the case.

Dr. Blasse who pretends to be his benefactor as he gives him letters of recommendation turns out to be a malefactor; his experiences on the job in the Liberty Paints are nerve-breaking, and his ordeal in the hospital where experiments are done on him until he forgets his name has almost demented him; his conflict with Roseveltos the Exhorter and leaders of the Brotherhood force him to seek shelter in the manhole of a sewer. These persecutions and conflicts, however, do not distort his vision. The disparate events are well-connected with the personality of the protagonist Malachi and lead him to a healthy conclusion.

All his life the words of his grandfather keep coming to his mind and accordingly he has been fighting. But at the end of the novel, he jumps into the manhole and meditats upon same truths; he becomes eager to know the real meanings of his grandfather's words. He tries to know the implication of the words "Agree them to death and destruction." He is plagued by his death-bed advice, which could be interpreted in several ways. He first thinks that his grandfather wants him to affirm the principle, and not the men. But he is not satisfied with this interpretation, because they have been 'brutalized' in the name of the principle. Then, he thinks that his grandfather might have thought it better to say 'yes' in the line of Christ, lest 'they turn upon us to destroy both it and us'. During the whole of the action in the novel, he acts in vindication of the words of his grandfather. Thus, the message that he receives in the beginning

continued to guide his actions all through his life, and links all the events in a close-knit plot.

This novel is written to present the predicaments of Jews. They are all alone, without support even of his parents, though parents he has. Malachi carries the curses of being a Jew and poor, from a family of slaves. Naturally, he is an easy victim of white persecutors and Jewcondemners. His miseries were augmented by his desire to fight against his invisibility, to get an honorable place for himself in the society. The spirit to rise makes him a speaker of distinction, but his gift of the gab brings him in the eyes of the sadistic white leaders of the town, who force him blindfolded to fight with other Jew boys for delight of the white revelers. He is thereafter thrown on the sea of life, the waves of which tossed him all around merciless.

His odyssey is full of miseries and sufferings. Like a protagonist Malachi of a picaresque novel, he goes from place to place, not of his own volition but under the force of circumstances. He goes to the college wherefrom he is expelled for no fault of his. Then, he goes to the Liberty Paints for a job, but he finds apathy and cruelty even from the Jew bosses. He is virtually thrown into a running machine which injures him. The doctors in the hospital conduct experiments on him as if he was a guinea pig. Mary Rambo takes pity on him, helps him to recover his health, but his destiny pushes him into the clutches of the Brotherhood and eventually exposes him to the attacks from Roseveltos the Exhorter and the Brotherhood. He has no place but the sewer to nave himself. His journey from South America to the sewer in the North gives it the semblance of a pioresque novel, but it lacks the main feature of a roguish hero. Therefore it cannot be said to be picaresque, but the way the

protagonist Malachi has to fight at every stage for his existence makes it existential in character.

The novel contains dramatic turns which surprise the reader not only by their abruptness but also by their antilogy. The protagonist Malachi is chosen to take Mr. Norton on a drive. Mr. Norton was very kind in his remarks and conversation. He goes to the extent of saying that the protagonist Malachi is his 'destiny', but soon that 'destiny' is left to the unjust and cruel treatment of Dr. Blasse. Again, Blasse's supposedly benevolent act of giving letters of recommendation to help the protagonist Malachi find a job for himself turns out to be an act of malevolence.

The protagonist Malachi is attacked by Roseveltos the exhorter though the protagonist Malachi is also planning to work for his community of Jews. Further,

the protagonist Malachi sees light of truth in the darkness of the sewer. The novel is a painting on a large canvas. It presents picture of various aspects of life. Naturally, it has a medley of characters. Mr. Norton, Dr. Blasse, Emerson, Brother Jack, Tod Clifton, Brother Tarp, Sybil, Lucius Brockway, etc. each of whom represents a particular section of the society and reveals the compulsions and constraints working on him. Dr. Blasse, for instance, is a Negro, working as the President of the State College for Negroes. He has to maintain his position and status, for which he can have every Negro in the country hanging on tree limbs by morning if it means staying where Lucius Brockway has the fear that the protagonist Malachi is sent to him to supplant him in course of time. Usually they send down some young white fellow who thinks he's going to watch me a few days and ask me a heap of questions and then take over.

Therefore he doesn't like the idea of having an assistant and tries to get him dismissed on flimsy charges, if he gets one. Earlier Kimbro got rid of him by a trick. Brother Jack inducts the protagonist Malachi into the Brotherhood on the assurance that the organization is to work for the persons dispossessed of their faith irrespective of colour and race, while in fact he wants to undermine the Jews in one way or the other-he suffers from racial prejudices, which is a form of fear mixed with hatred. Tod Clifton leaves the organization and Tarp is suspicious of the intentions and conduct of the white leaders of the Brotherhood. The two women the protagonist Malachi comes to meet use him for satisfaction of lust. Mary Rambo is the only one character who helps the protagonist Malachi without any self-interest. The novelist brings the protagonist Malachi in contact with so many characters to make him realize the truth that the world is generally peopled with selfish, cruel, unscrupulous and narrow-minded persons.

Malachi was instantly hailed as a classic by all the great writers and critics. It was acclaimed by Saul Bellow as something more than a classic. He has observed, "But what a great thing it is when a brilliant individual victory occurs, like Mr. Vonnegut's, proving that a truly heroic quality can exist among our contemporaries. The experiences of the protagonist of twenty also incited him to fight against the tyranny of the whites. He initially believed in the efficacy of humility, but the treatment he received was horrifying. He was among the ten young Jew boys who were blind-folded and led into the arena to fight among themselves for the pleasure of a few.

He was hopefully looking for a better future, but a very ordinary incident dashed his hopes. He was asked by Mr. Norton, one of the founders of the

college, to take him on a drive to the countryside inspite of his dissuasion. There Mr. Norton came to meet one, True blood, who happened to have sex with his own daughter. The heat of the countryside and the harrowing tale of True blood, depressed him so much that he needed whisky immediately. When Dr. Blasse, the President of the college, came to know about the incident, he expelled the Invisible Boy from the college though Mr. Norton had said that the Invisible Boy was not at fault. Dr. Blasse was so much annoyed with him that he gave him seven letters of recommendations which he said would help him in getting a job, but those letters came out to be letters of denunciation, informing the employers that the Invisible Boy had committed an unpardonable offence, the punishment for which he proposed was to leave him in vain hope of getting a job to drive him to desperation.

He saw that an old couple was being evicted from their house in which they had been living for twenty years. He was moved by the sight. He made a speech in ironical language in the manner of Antony of Shakespeare's Julius Caesar to incite the mob to fight against the Marshal. His speech had immediate effect upon the people who fell upon the Marshal and rehabilitated the couple in their house. She helped him in giving a slip to the police, and led him to Brother Jack, The Chairman, who enrolled him as a member of the organization and made him the spokesman of the organization. Most of the leaders of the Brotherhood were white, while the workers were Jew. According to Brother Jack, they were to help those who were dispossessed of their heritage. The *Invisible Man*, on the other hand, had become a non-entity. He was so disgusted with his life that he decided to act on his own and keep the leaders of the organization under the impression that he was following their dictation, because he did not consider it worth-while to leave the organization and go out of history. In fact, it was nothing but sham-the Brotherhood was his reality working for the Jews identity and the materialistic attitude of American society.

Work Cited :

Mckay, Nellie. Critical Essays on Kurt Vonnegut, Boston: Prentice Hall, 1998.

Otten, Terry. The Crime and Voice of Innocence in the Fictions of Kurt Vonnegut. Columbia: UP of Missouri, 1999.

Rigney, Barbara. The Voices of Kurt Vonnegut, Columbus: Ohio State UP of Ohio State 1997.

❒❒❒

1. PhD Scholar (FT), Government Arts College (Autonomous) Salem-636007-Tamilnadu
2. Assistant Professor of EnglishGovernment Arts College (Autonomous) Salem-636007-Tamilnadu

Research Article

The Social Difference in Rohinton Mistry's "A Fine Balance"

–M. Kanagarajan
–Dr. G. Keerthi

Indira Gandhi is regarded as one of the most influential figures in Indian history throughout the twentieth century. The events surrounding the 1975-1977 Indian Emergency have a significant link to Nehru's daughter. In recent years, many Indian artists have been fascinated with the Emergency. Revisiting the tragedy of the Emergency by Rushdie, Mistry, and others exemplifies "the continent's novelists' profound sociohistorical sensibility" (Walder, 2003). Indira Gandhi is found guilty of electoral fraud by a national court in 1971 and 1975. She will step down from her parliamentary seat, which would have forced her to resign as prime minister.

The aim of this paper is to examine how Rohinton Mistry's novel A Fine Balance reflects the fact of India's post-colonial greedy politics of corruption, opposition, exploitation, and violence. Through this novel, Mistry's vehement resistance to social and class divisions has broadened the scope of modern reality. The story takes place in a city setting, specifically Dina Dalal's cramped home in Bombay. The work also provides a glimpse into rural India, focusing on injustice, brutality, and the horrors of poverty. Mistry depicts crimes inflicted on two untouchables from a village in A Fine Balànce, as well as the suffering of the underprivileged characters from the Parsi community. Mistry employs four main characters, one lady and three men, as well as a few notable lesser characters. Each of the four protagonists has a unique tale, and the characters eventually come to live together in the city under one roof. The novel is an examination of the pîîr people's and individuals' hardships and pains.

Key Words: Mistry, Inequality, Untouchability, Parsi, Post colonialism, loneliness

A Fine Balance and Such a Long Journey is concerned with meaningless life in the worlds. Mistry's second novel, A Fine Balance, departs from the plot of his first book in two ways. The second novel by Mistry is narrated in a more conventional manner and explores postcolonial Indian history. Such a Long Journey highlight of Realistic mysticism, A Fine Balance is a novel of classical realist that vividly depicts diverse aspects of postcolonial India. Second, the second novel by Mistry has a broader scope.

While his debut focuses primarily on the Parsis of Bombay, A Fine Balance features Parsis, Hindus, Muslims, and Sikhs in addition to the Parsi community. Lastly, while A Fine Balance emphasizes the central significance of tolerance and solidarity, echoing .

Fine Balance conforms to Lukacs's conception of the historical novel. Recent historical events are described from the perspectives of average-status characters. Luven(1995) writes, "A Fine Balance is not a domestic narrative ; it also recounts significant events in 20th -century Indian history from the perspectives of the Parsi and Hindu communities." Thus, like Such a Long Journey and A Fine Balance, presents history from the margins." (p. 33) Mistry's depictions of historical events are influenced by the protagonists' membership in their respective communities. The majority of Mistry's novel is set during the Indian Emergency, which occurred from 1975 to 1977. Rothermun(1997) states, "After 1947, India is divided into two separate nation states, in accordance with Jinnah's assertion that India has always consisted of "two nations," namely Hindus and Muslims. (p. 114)

Some of its facets are illuminated by A Fine Balance. Maneck Kohlah's father, Farokh Kohlah, is an example of a northern farmer. When he is forced to sell a large portion of his estate and is left with only a small shop, he becomes "locked by history": "A foreigner drew a magical line on a map and labelled it the new border; it became a river of blood." Mountbatten's arbitrary choice, Farokh laments, causes him to fight for his life and against a faceless bureaucracy. Farokh Kohlah fights not only for material wealth, but also for the preservation of nature, which he regards as his greatest source of meaning. His quest to keep beautiful nature alive as a source of meaning is also a fight against the Partition's turmoil.

When sectarian bloodshed along the brand-new border sparked riots across the country, Mountbatten writes, "wearing a fez in a Hindu suburb was as fatal as clutching a foreskin in a Muslim neighbourhood." In Bengal, notably in Punjab, massacres between Hindus and Muslims have escalated to the point of civil war. In A Fine Balance, Narayan and Ishvar face battles throughout their training. With Muslim Ashraf Chacha, intercommunal conflict threatens to destabilise their new home. The precariousness of their situation is echoed in the pervasive racist discourse: "It is better to evict the Muslim threat before our huts are consumed by fire." For millennia, they've encroached on our country, demolishing our temples and stealing our resources." Farokh, who is struggling with the loss of his land, and Hindus, who are experiencing racism and violence, have distinct historical experiences than Dina. Dina is unaffected by the effects of Independence and

Partition because of her family's affluence. The public events, on the other hand, have far-reaching implications for her personal life. Dina is confined to her home, therefore she has to put up with her brother's abuse. "After Partition and the British exit, riots erupted in the city a few days later, and Dina was stuck at home with Nusswan," the fourteen-year-old recalls.

Indira Gandhi is regarded as one of the most influential figures in Indian history throughout the twentieth century. The events surrounding the 1975-1977 Indian Emergency have a significant link to Nehru's daughter. In recent years, many Indian artists have been fascinated with the Emergency. Revisiting the tragedy of the Emergency by Rushdie, Mistry, and others exemplifies "the continent's novelists' profound sociohistorical sensibility" (Walder, 2003). Indira Gandhi is found guilty of electoral fraud by a national court in 1971 and 1975. She will step down from her parliamentary seat, which would have forced her to resign as prime minister. Indira Gandhi, on the other hand, refused to quit and instead established an internal state of emergency, during which she altered the legislation under which she had been convicted of electoral fraud retroactively. Fundamental rights have been suspended, and strikes and the press have been outlawed. Dissidents were imprisoned and the next General Election was postponed. Mass sterilisation is conducted as part of a population control strategy.

According to A Fine Balance. Friendships are ruthlessly destroyed by the Emergency. As a result, Om and Ishvar lose Ashraf, a student leader who vanishes and is tortured to death owing to his resistance to India's official policy, and Maneck loses Avinash, a student leader who vanishes and is tortured to death due to his disagreement to India's official policy. As a result of Ashraf's death, Nawaz's denunciation, and Dina's initial refusal to give them with refuge, Om and Ishvar become homeless in Bombay. They are forbidden from sleeping on the pavement by government law, and their hut in a jhopadpatti (slum) is razed in the cynical pursuit of a more beautiful Bombay. In the story, "moving" refers to the tailors' collective homelessness rather than a spiritual departure and metanarrative development.

The Hindu characters Omprakash and Ishvar Darji shed light on the novel's fundamental theme. Which is how to make life livable despite unfavourable conditions. In addition to the devastating influence of governmental forces during the Emergency, one factor is especially significant: caste, "India's cruellest social limitation."

Ishvar and Om's family histories must be considered in any analysis of caste's effects on them. The Hindu family saga in A Fine Balance begins with Dukhi Mochi,

Ishvar's father and Omprakash's grandfather. Dukhi Mochi is a tanner and leatherworker from the Chamaar caste. "The leather worker is among the lowest of the low, the most polluted of the tainted," writes V.S. Naipaul. (Naipaul, p.60, 1995) Dukhi, like the other chamaars in the area, uses the skins of slaughtered animals to make sandals and harnesses. He is regarded as a social outcast. As a result, he is not a member of any of Hindu society's four main castes: Brahmins-priest, Kshatriyas-warriors, Vaishyas-traders and peasants, or Shudras -lowest caste they are craftsmen and servants. Dukhi is shunned by other castes because he is deemed impure, and untouchability is a social embarrassment.

As a result, one's social status should not be questioned; rather, if one want to thrive in life, one should encourage others to do so. Mistry's description of Hindu culture is important to note because it is not an objective anthropological appraisal of Indian culture. He contends that discrimination based on caste causes serious injustices. Untouchability is severely punished for contributing to Dukhi, Narayan, Ishvar, and Om's loss of significance. The following remark exemplifies their supervisors' harshness and arbitrariness in dealing with them.

Sita was stoned, but not to death, for crossing the upper-caste side of the street; the stones stopped falling at the first drop of blood. Gambhir was not so lucky; molten lead was poured into his ears for approaching the shrine within hearing distance during prayers. Dayaram was forced to eat his landlord's dung in the village square after breaking a promise to plough his landlord's farm. Instead of settling for the few sticks he could expect at the end of the day, Dhiraj tried to negotiate the wages for chopping wood with Pandit Ghanshyam ahead of time. After accusing Dhiraj of poisoning his cows, the Pandit became enraged and ordered him to be hanged.

Dukhi seeks help from Pandit Lalluram when his kids Ishvar and Narayan are beaten for attending the village school because he believes in the Brahmin priest, who is said to be capable of administering justice even to the untouchables. Dukhi, on the other hand, must recognise that he has no right to the concept of justice since he is an untouchable.

Dukhi is regarded to be beyond the reach of justice because he lives outside of society. Mistry satirises Pandit Lalluram as an uncouth, gluttonous reactionary who is worried about justice for everybody. Dukhi sat at Pandit Lalluram's feet, using his well-deserved reputation for justice, and informed him of the assaults on Ishvar and Narayan. The educated man, who had just finished his lunch and was relaxing in an armchair, belched several times during his visitor's story. Pandit

Lalluram murmured “Hai Ram” in gratitude for a digestive tract capable of such feats, while Dukhi politely paused between each eructation.

Dukhi’s life as an untouchable is robbed of meaning and happiness by the injustice done to Ishvar and Narayan, as well as their vain appeals for justice. Dukhi questions his allegiance with the caste hierarchy for the first time in his life because the system dismisses his ambition of transcending himself in his offspring. He defies caste limitations and eventually breaks them, a reaction that reveals itself in his resolve to protect his boys from the immediate impacts of prejudice.

Narayan, Ishvar, and Om have also been forced to flee their homes. Ishvar and Narayan go to Bombay to apprentice as tailors after Maneck’s father forces him to pursue further schooling in Bombay. Unlike his brother Ishvar, who continues his apprenticeship in the city, Narayan returns to the hamlet and becomes a radical political activist. Narayan supports the untouchables’ constitutional right to vote, despite his father’s opposition to caste-based occupational restrictions.

Despite his father’s concerns that he will put his life in risk, Narayan maintains that his life is unworthy of surviving. When he laments that “life without dignity is pointless,” he attests to a loss of significance. By taking on the corruption and favouritism that plagues parliamentary elections, Narayan fights against a life devoid of dignity. She [Radha, Narayan’s wife] eventually brought a lamp to the porch. In a matter of seconds, it drew a swarm of midges.

A Fine Balance demonstrates three caste-related points:

The story begins by looking at the psychological implications of untouchability on individuals. It is the source of sadness and meaninglessness in Dukhi’s and his children’s existence, which is only temporarily and ineffectively prevented by a legal infraction.

Limitations imposed by caste A Fine Balance looks into the injustices of caste and the consequences of standing up to them. Om and Ishvar are compelled to flee and exile while Narayan chooses to join in political resistance. Second, A Fine Balance explains that, while religious allegiance and trust are eroded, this is not always harmful to Hinduism.

Despite the fact that caste has lost its power to order life in a way that assures meaning, Hinduism remains an important reference point for numerous of the novel’s protagonists, notably Ishvar. Third, caste is more prominent in rural regions than in cities as a cultural structure. Despite the fact that India’s constitution declares the country to be “secular,” untouchability still exists across the country. Mahatma Gandhi failed to convey the message that “untouchability taints Hinduism like a

drop of arsenic taints milk" in the 1930s and 1940s. In his absence, the Congress Party has lacked the political clout to enact nationwide nondiscrimination for the untouchables. The concept of invulnerability remains a reality once one travels far enough away from the city. A Fine Balance shows that the further one gets away from the centre of power, the less that center's impact becomes. While "four of the novel's key characters suffer from a sense of rootlessness," this is not the case. (Kapadia, 1998, P.128)

Maneck holds a unique position in the text due to the fact that the effects of migration are most evident in his story .Maneck Kohlah is displaced on two separate occasions. As with Om and Ishvar, he is compelled to migrate to Bombay, moving from a rural to an urban area. In accordance with the capitalist ethos of his community, Maneck leaves Bombay for employment opportunities.

In the Epilogue, when describing Dubai to a Sikh taxi driver, Maneck describes it as having "many large hotels. And thousands of stores selling gold jewellery, stereos, and televisions'" (585). Maneck emphasises the superficiality of Dubai as opposed to imagining it as a place that guarantees a comfortable income and thus material security.

Maneck's homelessness is nearly entirely to blame for his plight in Dubai. The phrases 'trap' and 'exile' suggest that Dubai is regarded as a punishment or, at best, a location where one is trapped. Maneck makes no mention of any lasting friendships during his year in Bombay, in stark contrast to the year he spent there. After eight years, he still has no idea where he was adopted. People, habits, and language were just as unfamiliar to him now as they had been eight years before (585). Maneck has not identified with the city of Dubai, and as a result, it has not become his home. By delaying Maneck's dislocation, Dubai just adds to his identity confusion: "His uprooting seemed to never end."

Maneck, unlike Om and Ishvar, is unable of adapting to his surroundings, which leads to his suicide. Maneck's stay in Dubai can be seen as a metaphor for man's (futile) search for purpose in life. A Fine Balance, like Such a Long Journey, implies that a loss of meaning throughout the action is typically linked to the characters' past experiences. Dina is an excellent example. She loses two important people in her life: her father when she was a child and her spouse when she is 24. Her adult personality is determined by these painful experiences. Both instances demonstrate that the central theme of A Fine Balance, the loss of meaning, cannot be explained solely in terms of culturally specific events, but must also be explained in terms of archetypal experiences, by focusing on the ramifications

of her father's death and then discussing the ramifications of her husband's fatal accident.

Dina Shroff's impending loss of meaning in life is complicated by her fear of dependency. The second big threat to her subject position is death and loneliness. Fears of dependency and solitude stem from a second traumatic incident, her spouse Rustom's death. Dina is haunted by Rustom's death, and it appears that she will never be able to make amends. Dina experiences solitude and loneliness as a result of his death, as well as a loss of significance in her life. Isolation, loneliness, and meaninglessness are all represented as a void: "When the human weight failed to materialise, she awoke to emptiness and relearned her loss in the predawn darkness" Emptiness has to be understood in both literal and figurative terms. It symbolises emptiness as well as the loss of faith in a purposeful life and a well-ordered universe.

As a result, the fear of meaninglessness is portrayed as a terrifying nothingness. A Fine Balance illustrates both the loss and the process of meaning in postcolonial India in a variety of ways. Mistry also delves deeper into his subject from a philosophical and intertextual perspective. Once again, the significance is based on universals rather than cultural distinctions. Acceptance is required for creating balance: "Some things are beyond your control, so you must simply accept them" Balance as acceptance is a state of mind that can accommodate death, loneliness, change, and loss. "Loss is an inextricable aspect of that necessary disaster we call life," says the author. In the narrative, however, equilibrium refers to more than quietly accepting one's fate. Balance necessitates effort, i.e., contrasting sources of hope with causes of despair.

References

Mistry, Rohintion. A Fine Balance, London:Faber And Faber,1996.

Jeffrey, R.What's Happening to India?:Punjab, ethnic conflict, and the test for federalism. basingstoke: Macmillan,1994.

Kapadia, N.the politics of survival and domination in A Fine Balance.in the fiction of Rohintion Mistry: critical studies.London:1988.

Luven, L.V.Review of A Fine Balnce.Quill And Quire,1995.

Naipaul,v.s. An area of darkness.London,2010.

Walder, D. Post Colonial literatures in English: History, Language, Theory. Oxford Blackwell, 2003.

❑❑❑

1. Ph.D Research Scholar, Government Arts and Science College, Komarapalayam.
2. Research Guide, Head, Department of English, Government Arts and Science College, Komarapalayam

Expedition for Distinctiveness in Shashi Deshphande's *That Long Silence* and Anne Tyler's *A Slipping-down Life*

–S. Mercy Lourdes Latitia
–Dr. J. Jayakumar

Jaya's loneliness is further accentuated as she ponders over the intrinsic isolation of the human condition. Jaya appears to be a satisfied housewife married to an apparently caring man and having two normal, healthy children. Ensconced in a comfortable home, without any dearth of material comforts, Jaya seems to lead an enviable life by any standards.

Indian and American literature are one of the leading literary realms when compare with the literatures of African-American, American and British literatures. Indian and American writers in English have made their most significant contribution to literature particularly in the field of the English novel. Indian and American novel has grown considerably in bulk, variety, and maturity. The development of Indian and American novel follows certain definite patterns, and it is not difficult to trace its gradual progression from the imitative stage to the realistic stage. In the growth and development of Indian and American English novel occupy a unique position. During this period of 1980 some of the promising novelists published their first works. Some old masters also came out with their works, which shows that their creative powers of writing different genres. It is during the Eighties that Indian and American novelists earned unheard of honours and distinctions not only in Indian and American but also abroad. Their works speak eloquently about their originality and unprecedented inventiveness.

Indian and American English literature is now a reality which cannot be ignored. During the recent decades, it has attracted a widespread interest both in Indian and American and abroad. What began as a "hot-house plant" has now attained a luxuriant growth, branching off in several directions. The Indian and American writers have made the real and remarkable contribution to the sphere of fiction, which as Kamala Markandaya affirms that, "Come to stay as part of world literature" (25). An idea of the true potential of this form of literature can be had by

comparing the early novels ofIndian and American with the recent arrivals in the field of literary creation.

Key Words: Feminine Sensibility,Uniqueness of an Individual and Quest for Identity.

Introduction: Indian and Americanwriters have significantly contributed to the development of overall world literature. This contribution of Indian and American has been chiefly through the Indian and American writing in English, novelists being in the forefront in this respect. A number of novelists on the contemporary scene have given expression to their creative urge in no other language than English and have brought credit to the Indian and American English fiction as a distinctive force in the world fiction. To attempt creative expression on national scale in an alien medium has seldom happened in human history, and it speaks of the prolific quality of the Indian and American mind to assimilate the newly confronting situations and the complex dilemmas of modern world. The new English fiction exhibits confidence in tackling new themes and experiments with new techniques and approaches to handle these themes. The novelists come to their task without any preconceived notions of what constitutes literary content. This encourages them to focus on a vast and comprehensive canvas and to invest their themes with epic dimensions.

Main Argument: As far as Indian and American literature is concerned, it has perhaps been easier for these third generation novelists to reflect the new challenges and changes because of the simple fact that its vehicle itself is a globalised language. Again, the writers of the new fiction have mostly been a part of the Indian and American Diaspora. Living in the west, and using English almost like a mother tongue, they have been thoroughly exposed to significant modern western literary movements like Postmodernism, and to various narrative techniques like magic realism. This has enabled them to give a fresh orientation to fiction. At the same time, the best of them continue to have strong roots in Indian and American.

As a novelist, Shashi Dshpande's forte lies in her realistic presentation of the life of women in particular. She successfully makes an attempt to explore the inner 'psyche' of these modern women who are at the crossroads between tradition and modernity. She realistically between the ago-old traditional values, inflicted on them right from their childhood and the modern outlook seems to be worse than their education. Their condition seems to be worse than their past counterparts and those of present who still believe in these customs and traditions to which they submit them-selves without any hesitation. Their problem lies in their inability to discard these traditional values at once and follow their newly acquired values. Most of her novels reflect predicaments and struggles of this breed of women.

As a creative writer, Anne Tyler does not create characters that are larger than life. She never creates strong women characters, as she believes in presenting them as they are. Her women protagonists are neither revolutionary in nature nor hysterical like most of the heroines of Tyler. In fact, they are ordinary women caught in certain situations that make them view and review their life that they suffer because they let themselves to be so. They had been blaming the society, the patriarchal culture for their lot, except themselves. All these years, they internalized the patriarchal norms and so conditioned themselves. They had been so blinded to see that "in this life itself there are many crossroads, so many choices." Finally, they are able to hold the reins of their life. They know who they are, what they want and most importantly, how to get them. At the end, the protagonists are heading for a new beginning which is far better and more secure than before as they are no longer fearsome and dependent.

Shashi Deshpande's*That Long Silence*, Deshpandederives the title of her novel from the classic understatement by Elizabeth Robins made in a speech to a world body. This Long Silence was unfortunately punctured by a few early women writers who did not present facts as they were preferring, instead, to dwell on superficial matters and more often than not, churning out mushy, sentimental romances which had no connection with reality. Judged against this backdrop, *That Long Silence* comes relatively close to real life experience. The novel achieves greater credibility from the fact that Jaya, the protagonist, is a very well-read person, processing a literary sensitivity which corresponds with her fictional role.

The novel *That Long Silence* portrays the protagonist's quest for identity, the conflict in the mind between as the writer and the housewife. For seventeen long years, Jaya manages to suppress her feelings, thinking that it is more important to be a good wife than a good writer. She perhaps would have remained in the shadow of her husband, Mohan, for the rest of her life if it had not been for the jolt received to the carefully constructed edifice of her family. A crisis is sparked off by her husband's involvement in a shady deal. There are charges of corruption against him and it is expected that an enquiry will be conducted. He feels consoled to some extent that the children Rahul and Rati are away on a long tour with their family friends. He takes it for granted that his wife will go along with him into hiding. Jaya follows her husband into exile as unhesitatingly as her mythological counterpart Sita.

Jaya's loneliness is further accentuated as she ponders over the intrinsic isolation of the human condition. Jaya appears to be a satisfied housewife married to an apparently caring man and having two normal, healthy children. Ensconced in a comfortable home, without any dearth of material comforts, Jaya seems to lead an enviable life by any standards. However, a closer scrutiny of her life, as gleaned

from the retrospective account of her marriage, reveals that to achieve this stage of fulfillment as a wife, Jaya has systematically suppressed many traits of her personality that could not fit her role as wife and mother. The two most striking things she had to suppress were her writing career and her association with Kamat, her neighbor at one time.

The novelist's use of symbol and metaphor is worth mentioning. In Roots and Shadows, the old house stands for tradition and old values, a symbol of authority as Indu says, 'Yes the house had been a trap too, binding me to a past I had to move away from (204).' Everyone is bound by the strict authority and discipline of Akka, Indu's aunt, a rich widow. After her death, Indu has decided to sell the house, and this is symbolic of her freedom and self-assertion, defying the old authority. By doing so she feels 'as if she had cut away all the unnecessary, uneven edges of me (204). At the very outset of the novel, *In the Country of Deceit*, the picture of the demolition of the old house is presented.

Jaya in *That Long Silence* compares herself with Gandhari who had bandaged her eyes to become blind like her husband, and in the similar manner Jaya had to follow her husband blindly, himself going into hiding following a business malpractice. Thus Deshpande is adept at using the mythical women characters while highlighting the imprisoning effects of modern life brought by men over women. Through this method, voices have finally found their outlets after so many ages of suppression.

As a novelist, it is quite a revolutionary thinking that she neither idealizes social institutions like marriage nor glorifies much celebrated wifehood and motherhood, in a culture that gives much importance to these social positions. Unlike the militant feminist, Germaine Greer, who says, "If women are to affect a significant amelioration in their conditions it seems obvious that they must refuse to marry." Anne Tyler feels the need to live within relationship. What she told, the reviewer Visamber is worth quoting: "It is necessary for women to live within relationships. But if the roles are rigidly laid that as a wife or mother you do this no further, then one becomes unhappy. This is what I've tried to convey in my writing. What I don't agree with is the idealization of motherhood – the false and sentimental notes that accompany it."

Serenity becomes an essential part of life as stated by Evie Decker in*A Slipping-Down Life*. It is perhaps silence or lack of communication between the husband and the wife that cause failure of their relationship once fulfilled and satisfied. The husband, Casey, feels bad and humiliated when others directly or indirectly point out that his wife earns more and is more successful than he is. Then, he becomes a sadist in his attempt to assert his manhood. Decker, recalling

this sad incident with regrets, feels: I should have spoken about it the very first day. But I didn't and each time it happens and I don't speak, I put another brick on the wall of silence between us (35).Again lack of communication between Decker and her mother makes their relationship very bitter.

Conclusion: The protagonists are well aware of the exploitation of women at various levels and the prevailing double standard social, moral, cultural and religious codes that work against women as a group. They strongly condemn the oppressive system of patriarchy that binds them, curbing their rights as individuals. In this culture of male supremacy, craving for male child still continues. Even to-day, baby girls are not welcome and in some parts of the country female infanticide is still a common practice. From time immemorial, women have been denied the basic rights, sometimes, even the right to exist. It is no wonder that parents view their own daughters as "the visible symbols of their failure" in a culture that firmly believes that whatever wrong is done by a man, his son frees him from it all. In *A Slipping-Down Life*, *the* protagonists, Evie Decker, was exposed to such unequal treatment of boys and girls at very early age. She felt neglected when her mother showered all her love and attention upon her younger brother, she was taught that being a girl, she had to accept a second place even in her home.

The novelist's use of symbol and metaphor is worth mentioning. In their novels, the old house customs and traditional bound life stands for tradition and old values, a symbol of authority as their real identity.These two novelists Shashi Deshpande and Anne Tyler stated, 'Yes the mother house and soil had been a trap too, binding me to a past I had to move away from (204).' Everyone is bound by the strict authority and discipline of women. After that they have decided to sell their property, and this is symbolic of their freedom and self-assertion, defying the old authority. By doing so they feel 'as if they had cut away all the unnecessary and uneven edges of them (204). At the very outset of the novel, the picture of the demolition of the mother house is presented as a symbol of culture and their identity.

Work Cited :

Kumar, Jothithya "Invisible Sufferings of Women" New Delhi: Penguin Books, 1989.

Edition cited: Deshpande, Shashi. *That Long Silence*, New Delhi: Penguin Books, 1989.Rangacharya, Adya. "Sexual Discrimination in Indian and American Literature" New Delhi: Shakitya Academy, Sept,-Oct. 1991.

Singh, Sushila, "Recent Trends in Feminist Thought; Ttour de Horizon in Feminism and Recent Fiction in English" New Delhi: Prestige Books, 1991.

Tyler, Anne.*A Slipping-Down Life*New Delhi:Creative Books, 2000.

❒❒❒

1. PhD Scholar (PT), Government Arts College (Autonomous) Salem-636007-Tamilnadu
2. Assistant Professor of EnglishGovernment Arts College (Autonomous) Salem-636007-Tamilnadu

A Critical Study on Mahesh Dattani's Thirty Days in September

–Mrs. A. Nevedhini
–Dr. K. Ramachandran

The title of the play is unique and indicative of the climatic episode of the play. The victimizer in the play, while mishandling the child, requested that she sing the tune learnt in school. It is 'Thirty days has September' April, June and November. February has 28. All bite the dust rest have 31!' he requested that she continue to sing till he stops. The tune turned into the disgusting cadence of her life. She became partial to sex as a game for delight. She began fixing individuals who she preferred best for ceaseless thirty days. Following thirty days, she continued on - looking for people more seasoned than her who were on the right track sort of people for her.

Mahesh Dattani's most recent play Thirty Days in September was first performed at the Prithvi Theater, Mumbai on 31st May 2001. A play about quiet and treachery, it treats the sensitive and taboo issue of child sexual maltreatment. The play was charged by RAHI (Recovery and Healing from Incest), a care group for women overcomers of incest, (RAHI was upheld by the John D. and, Caterine T. MacArthur Foundation) a Delhi-based help place for grown-up women overcomers of childhood abuse. The play tries to lift the cloak of quietness which encompasses child sexual abuse and addresses the issue unflinchingly. The play is portrayed as 'a silent scream ... on the issue of sexual abuse'. Dattani's abundantly acclaimed play, Thirty Days in September was coordinated on seventh April 2006 at FICCI Auditorium. Child sexual maltreatment is an egregious crime in the society. The play, Thirty Days in September is a voice against this quiet and the betrayal of the family. The present reseach makes a modest attempt to explore the critical study of Dattani's drama Thirty Days in September.

Keywords:childsexual abuse, Critical Study, domestic abuse

Dattani feels that Thirty Days in September is his most extreme play till date, negating his typical plan. The seriousnesshas to continue onward all through the play. It is by a long shot the most despairing of every one of his plays, with a weightitiess that is kept up with all through the play. Given the seriousness

of the issue that it tends to a disquietude that can at no level be trifled with, Dattani handles it with crude inclination and the obvious truths are sensationalized strikingly. For need of space, the researcher might want to confine the study of this play just with the thematic concern. It might want to explore the subject of child sexual maltreatment in the play Thirty Days in September and discuss how far Dattani becomes effective in his undertaking to lift the cover of quiet that surroundschild sexual maltreatment by sensitizing the majority about this issue.

Thirty Days in September is a stage play in three acts. The stage is partitioned into four acting areas. The firstarea has an agreeable seat and a straightforward table with magazines and a twofold seater. The seat is reserved for the counselor whom we won't ever see. The second area, possessing the focal piece of stage, is the living room of Shanta and Maia's home in a suburb of Delhi. The predominant aspect is an enormous image of Shri Krishna. Here the family would meet and receive people. The third area is the pooja room which is maybe's behind a scrim with the goal that it is noticeable just when required. The fourth acting area is the most adaptable addressing a few areas - a party hose, two eateries and Deepak's home. During Maia's taped discussion, we see back of a day to day existence measured doll of a seven-year-old girl set on a seat.

The play is altogether Maia's story and Dattani utilizes almost no sub-plot, managing the recollections of the molester, picturing him, and facing those frightening minutes that will leave the onlooker feeling nauseated deeply. The play fixates on a mother, Shanta and her girl, Mala who was physically attacked by her uncle, Vinay, while young. The plot, in any case, is established in this very milieu, the last framework that sells out the individual - a child called Mala - who will convey these seas into adulthood, and at no point ever trust it in the future. The story is about Maia's recuperation and endurance and the sharp feeling of treachery she feels towards her mom. People, who are mishandled when young, go through a scope of feelings beginning from treachery to outrage, to coerce, to feeling that their body isn't their own and that it's a device to stand out. The story is told everything considered through the' I ' eyes of Mala - the survivor. It isn't a fact that child sexual maltreatment happens just in privileged families. Many individuals get it as a common condition, truth be told. Dattani says: "Actually, I would see the setting of Thirty Days in September as upper middle class. I chose this setting, because I did not want them to dismiss sexual abuse as something that does not happen to people like them."(124)

Dattani’s plays catch the beat of metropolitan crowd by mirroring the issue of its day. Notwithstanding, the issue that Dattani has taken care of capably in the play is connected with all classes of society. He has appropriately referenced that the crowd needs to show up “moment oftruth”. In the event that we check out us with open eyes, and read the consistently papers cautiously, we come to reality that this is going on around us, even in the working people, however was not explained with such a concentration by some other writer. Dattani ought to be said thanks to and applauded for this exceptional commitment to the Indian drama in English. He has effectively made a perspective by centering the issue of child sexual maltreatment. His utilization of naturalistic venue leaves the crowd considering such issues around them. They experience what Dattani calls ‘catharsis-like-situation’ and will relate to die characters, look them and ponder such issues with a critical mind. Lillette Dubey, the director of this play, notes down her involvement with the accompanying words: “After every performance, women have come back stage with their own traumatic stories writ large on their faces, grateful for the catharsis the play offers, but even more, I think, for the expiation oftheir own guilt which they have arrived as a heavy burden for so long .... For through it they believe, their silent screams have finally been heard.”(131)

The title of the play is unique and indicative of the climatic episode of the play. The victimizer in the play, while mishandling the child, requested that she sing the tune learnt in school. It is ‘Thirty days has September’ April, June and November. February has 28. All bite the dust rest have 31!’ he requested that she continue to sing till he stops. The tune turned into the disgusting cadence of her life. She became partial to sex as a game for delight. She began fixing individuals who she preferred best for ceaseless thirty days. Following thirty days, she continued on - looking for people more seasoned than her who were on the right track sort of people for her. Whenever she saw a man, she got invigorated, she recalled her uncle and afterward the tune - ‘Thirty days has September... ‘ Thirty days in summer occasions was an endless loop in her life. She moved with this endless loop singing the melody. In this way, the title is symbolic and penetrating.

To conclude, Thirty Days in September is the most grave of every one of his plays with a subject of child sexual abuse, seldom contacted with such an extreme commitment by some other dramatist. This is Dattani’s extraordinary commitment in the field of Indian Drama in English. For the entertainers, who

played the victimizer first, Darshan Jariwala and later, Amar Talwar - it was an interaction that brought them into the core of the murkiness. Their award was the energetic abhorrence they evoked in the crowd for their wonderful depictions. It evoked in crowd astounding profundity of feeling areas of strength for and across the world from varied critics in India to Colombo, to the US and Malaysia. There is a ton of development in the play as far as existence shifts. The discourse is brief and forthright, pregnant with crude inclination scarcely hung on chain. Dattani utilizes talks as taped voices. This method strengthens the compassion of the crowd with Mala. The method is utilized with incredible workmanship to show the casualty gradually recuperating from her mishandled and tormented past. The activity is introduced obviously and undiluted. The portrayal of the mishandled is essentially as bare as could be expected, which in a real sense hauls the crowd into confronting the molester. With Thirty days in September, Dattani pulls up one more 'undetectable issue' from away from plain view and advances before the society. Dattani is for sure, an imaginative virtuoso ready to manage such mind boggling, undetectable issues with reality and understanding. The play is Dattani's interesting creation which uncovers a few seriously frightening countenances that torment the society. As a dim piece, strong and colossally moving, the commercial achievement and critical acclaim of the play were astounding.

References:

Mahesh Dattani. CollectedPlays: Volume Two, New Delhi: Penguin, India, 2005.

Asha Kuthari Chaudhuri. Mahesh Dattani-. An Introduction, New Delhi: Foundation Books, 2005.

Anjalie Multani. Mahesh Dattani's Plays-Critical Perspectives, New Delhi: Pencraft International, 2007.

Miruna George. "Constructing the Self and the Other: Seven Steps Around the Fire and Bravely Fought the Queen", Mahesh Dattani's Plays - Critical Perspectives, ed.

Multani, Anjalie, New Delhi: Pencraft International, 2007.

❑❑❑

1. Ph.D Research Scholar, Department of English, Arignar Anna Government Arts College, Namakkal (TN),

2. Research Guide, Assistant Professor, Department of English, Arignar Anna Government Arts College, Namakkal (TN)

Portrayal of Friendship in J.K Rowling's Harry Potter and The Chamber of Secrets

–Mrs S. Hema Malini
–Dr S. Suganya

Harry failed to tell the Headmaster about hearing voices. Moreover, Ron advised that it's not a good sign in the Wizarding world to hear voices. After getting a few data behind the chamber of secrets from Professor Binns all three went to the same place where Mrs Norris was petrified and as it was filled with water they entered the girls' bathroom which is the place of Moaning Myrtle. Tried to know from Myrtle about what went on the Halloween night, but she dived into the toilet and began to sob in the U-Bend.

Fantasy is a genre in fiction writing which had its ups and downs in various periods. In J K Rowling's life, her imagination spun a success and it was really a good fortune for her to reap many benefits than any other author has received. In her Harry Potter series, she generously accesses myths and legends to make a world of wizards co-existing with the real world. Wizards are also normal human beings with special magical qualities. Rowling has also represented many of the issues that are intense reflections of society. One such attribute is friendship, which is always treasured by many people in life at any point of age. Harry Potter, the protagonist in the series is often facilitated by external factors and mainly with the support of his friends Ron Weasley and Hermione Granger, he fights against the antagonist Lord Voldemort.

Keywords: Friendship, Wizards, attribute, treasure, support.

J. K. Rowling's second novel, *Harry Potter and the Chamber of Secrets*, a fantasy as well as thriller type, expounds on the friendship among three people Harry Potter, Ron Weasley and Hermione Granger. Harry Potter, the Protagonist of the fiction is an orphan who is brought up by his aunt Petunia and family in Privet Drive. He belongs to the wizard family where his mother and father are wizards and are killed by Lord Voldemort. Ron Weasley belongs to a complete magic family where his mom, dad, brothers, and sister are wizards whereas Hermione Granger hails from a Muggle family where her mom and dad are Muggles i.e. non-magical people who don't know anything about witchcraft and wizardry.

Harry Potter, Ron Weasley and Hermione Granger study wizardry at Hogwarts School of Witchcraft and Wizardry, a wizarding academy in Scotland, where the complete event of the Chamber of Secrets happens. Harry in this fiction gets to know a flashback through a diary, which conceals a part of the soul of the You-know-who and overcomes the plot by Lord Voldemort to come back to life through the help and faith of his true legitimate friends, Ron and Hermione.

To begin the paper it is right to start with Harry's summer holidays at Dursley's where he is left alone and was lonely because he didn't get any letters from his dear best friends but it was intercepted by Dobby, a house-elf. On his 12th birthday, Harry missed his best friends Ron and Hermione even more than playing Quidditch, which he liked most. Harry's loneliness is explained in the following lines.

> "Neither of them had written to him all summer, even though Ron had said he was going to ask Harry to come and stay". (Rowling 2014, p. 8)

Dobby, a house-elf, wants Harry not to go back to Hogwarts for Harry's second year, as he will be in mortal danger when he steps inside the Hogwarts School. According to Dobby, a terrible plot, which endangers Harry, is going to be happening at Hogwarts. Harry denies Dobby's request and confesses that in his life the only happy destination is Hogwart's school.

> "See why I've got to go back to Hogwarts? It's the only place I've got- well; I think I've got friends". (Rowling 2014, p. 18)

As a good friend Ron, who was not answered by Harry for his letters to stay with him during the holidays, came to Privet Drive along with his twin brothers, Fred and George, to rescue Harry to their home, The Burrow, in their dad's old turquoise flying car. Harry enjoyed every moment in the home of the Weasleys.

On the day to Hogwarts School in King's Cross station, Ron and Harry were not able to get on to the 9 ¾ platform through the barrier to catch the Hogwarts express and missed the train. Having missed the train both decided to depart to the School in the car and Ron flew Ford Anglia to Hogwarts School and obtained detention from Professor McGonagall for flouting the rules. Even their friend Hermione felt they had made a mistake and after the Howler post arrived from Mrs Weasley only she moved with them in friendly nature.

> "At least the Howler had done one good thing: Hermione seemed to think they had now been punished enough and was being perfectly friendly again" (Rowling 2014, p. 93)

In Quidditch practice when Draco Malfoy offended the Gryffindor team for their broomsticks as the oldest one compared with the Slytherin's new broomsticks Nimbus Two thousand and one, Hermione Granger came to rescue by telling.

> ‘At least no one on the Gryffindor team had to *buy* their way in,’ said Hermione sharply. ‘*They* got in on pure talent.’ (Rowling 2014, p. 117)

Hermione’s answer angered Draco and he called her mudblood, which is an offensive word to say that she hails from a non-magical family and it upset her a lot. Immediately Ron expressed his dislike and pointed his wand at Malfoy, it shot in the wrong way towards himself because of his damaged wand, and he dribbled slugs from his mouth. The magical spell rebounded on Ron and suffered. Harry’s immediate decision to bring Ron to Hagrid’s house was nodded by Hermione and both dragged Ron to Hagrid’s. All these happenings expose the true friendship among the true friends Harry, Ron, and Hermione.

To show respect to Nearly Headless Nick, Ron and Hermione joined Harry and went to Nick’s Death day party on Halloween night. On the way back to the Halloween party Harry heard the ‘voice’, which was not heard by Ron and Hermione.Harry ran up the stairs listening to it and there they found Mrs Norris, the caretaker’s cat, hanging immobile and on the walls, it was warned that the chamber of secrets is opened and enemies of the heir are asked to be bewaring.

Harry failed to tell the Headmaster about hearing voices. Moreover, Ron advised that it’s not a good sign in the Wizarding world to hear voices. After getting a few data behind the chamber of secrets from Professor Binns all three went to the same place where Mrs Norris was petrified and as it was filled with water they entered the girls’ bathroom which is the place of Moaning Myrtle. Tried to know from Myrtle about what went on the Halloween night, but she dived into the toilet and began to sob in the U-Bend.

In the Gryffindor common room again they three had a discussion about the Slytherin heir who would open the chamber of secrets. Deciding to extract news from Malfoy, Hermione suggested having a poly juice potion. With the help of Lockhart, they got the book ‘Moste Potente potions’ and decided to make the potion in the Girl’s bathroom which is restricted for students.

Harry in the hospital wing, for his bones to re-grow, is met by Dobby again and asked to leave the school. To Dobby’s warning, Harry replies that he wants to help one of his best friends, Hermione who is muggle-born as she will also be a victim if the chamber is opened. Dobby feels miserable ecstasy as he finds Harry risking his own life for his friends and this is expressed in the following words by Dobby.

> ‘Harry Potter risks his own life for his friends!’ moaned Dobby, in a kind of miserable ecstasy. ‘So noble! So valiant! But he must save himself, he must, Harry Potter must not -’ (Rowling 2014, p. 189)

Rumour and suspicion went around the school, as Colin Creevy was petrified while sneaking around the hospital wing. Hermione and Ron decided to better get going on preparing the Poly juice potion at the earliest as to extract the data from Draco. To make the potion a few ingredients were to be stolen from Professor Snape's Private Stores. Harry deliberately caused mayhem in Snape's potions class where Hermione stole the ingredients and added them to the cauldron. That night the duelling club's first meeting was held where Harry fought against Malfoy and spoke Snake language to the bewilderment of all.

In Duelling club, combat Harry spoke a language with the serpent that tried to attack Justin Finch-Fletchley. Ron steered him out of the hall Hermione joined them in the Gryffindor common room. Ron questioned Harry why he did not reveal that he was a Parselmouth. However, Harry said he was not aware of his skill of talking the snake language but remembers once in the Zoo he spoke to a boa constrictor. Ron said that it is not a very common gift and Hermione added that speaking to snakes was what Salazar Slytherin is famous for. So, now the whole school will feel Harry as the heir of the Slytherin to open the chamber of secrets.

The next day the whole school spoke about Harry's attempt to speak with the snake when it tried to attack Justin. Harry felt worse about it, moved in a hurry to transfiguration class, and on the way found Justin and Nearly Headless Nick in petrified condition. Peeves, the chaos lover, screamed and all students flooded the floor and professor McGonagall took Harry to Dumbledore's office. In Dumbledore's office to the wonder of Harry he founded a Phoenix, Fawkes, moreover, he came to know from the Headmaster that it has the power to carry heavy loads and its tears have healing powers.

The diary, which conceals the part of the soul of Lord Voldemort, comes into the hands of Ginny Weasley, only daughter of the Weasley family who enters Hogwarts School for her first year. Lucius Malfoy, a death eater and one of the followers of Voldemort slips the diary while buying books for Ginny at Diagon Alley.

The diary belongs to Tom Marvolo Riddle, the younger self of Lord Voldemort is revealed at the end of the novel. Ginny unconsciously follows the order of Lord Voldemort through the diary and opens the chamber of Secret. Tom Marvolo Riddle, who belongs to Slytherin, is very strong in getting rid of "Mudbloods", a term that describes the wizards and witches of non-magical parentage, out of Hogwarts School.

In the chamber of secrets lies an ancient monster, Basilisk, which is very dangerous. When Ginny opens the chamber of the secret it is let out and begins

to attack the students of Hogwarts School. It kills those who make direct eye contact with it and petrifies those who look at it indirectly. Many were attacked and petrified as Mrs Norris, the caretaker Mr Filch's cat, Colin Creevy, Penelope Clearwater, the Gryffindor ghost nearly headless Nick, and Justin Finch-Fletchley. When Hermione Granger is attacked and petrified as well as when Ginny was taken into the chamber, Harry and Ron take steps to unfold the secrets of the chamber.

A new 'Defence against Dark arts' teacher is introduced in this novel Gilderoy Lockhart who acts as though he has done all stuff of magical elements of 'Defence against Dark arts' and has written his personal experiences as books. Harry and Ron seek help from Lockhart when Ginny is taken into the chamber of secrets. Harry got an idea of pipes from Hermione who was petrified at the Library entrance where she found out about the monster, Basilisk, in the chamber. With the clue from Hermione, Harry and Ron come to know that the Basilisk is a snake and that's why Harry, a Parsel mouth, alone hears its voice whereas others in the castle couldn't.

Ron and Harry forcefully entangled Professor Lockhart to the girl's bathroom to question Myrtle about her death. In the girl's bathroom when they conversed with Myrtle they received the news about the sink where Myrtle glimpsed a pair of great big yellow eyes and immediately was dead. Harry went near the sink and found the engraved snake image on the pipe and when he spoke the snake language, the chamber of secrets opened to the shock of all the three.

Harry is let alone into the chamber of secrets due to a clash between Ron, Harry and Professor Lockhart who loses his memory as his memory charm backfired as he used Ron's wand that was damaged. In the chamber, Harry finds Ginny in desperate condition. Moreover, he sees Tom Marvolo Riddle who reveals that he is Lord Voldemort and used Ginny to reach Harry. Even Riddle talks about how Harry would give importance to his friends in the following words.

> "From everything Ginny had told me about you, I knew you would go to any lengths to solve the mystery – particularly if one of your best friends was attacked."(Rowling 2014, p. 330)

Finally, at the end of the novel also when Dobby, the Elf, is freed Harry though weak says 'Well, I'd better go. There's a feast, and my friend Hermione should be awake by now….'. (Rowling 2014, p. 358) In my point of view, it is concluded that the whole novel revolves around three friends who would do anything for the welfare of the other.

In Harry's life from being a child to a mature human being, he goes through many moments to be cherished. One such period is adolescence, in which he

is greatly guided by his two best friends, Hermione and Ron Weasley. J K Rowling has chosen many well-rounded characters instead of just flat fantasy characters as well as has completed her novel in seven novels, which run around two decades.

Harry and his entire student community go through development as Pat Pinsent represents in his essay,

> "Rowling presents a somewhat broader canvas; the greater quantity of material focusing on Harry enables a fuller development of his character over longer period, and allows Rowling to touch on a range of issues…Over the volumes of her series, she is offering a bildungsroman, not only of Harry himself but also of Ron and Hermione". (Pinsent 2004, p. 50)

In reference to Greek mythology, Harry's best friends Hermione and Ron represent his Apollonian and Dionysian sides. In the book 'The Birth of Tragedy' Friederich Nietzche reviewed the ancient Greek concept of dramatic Dionysian and Apollonian dichotomy. In Greek mythology, the Greek God of wine and celebration is named Dionysus and the God of Sun is Apollo. Dionysian half represents liveliness and disorder named after the Greek God Dionysus. The Apollonian half represents the logic and order named after the Greek Sun God Apollo.

In the Harry Potter series, Ron and Hermione represent the Dionysian and Apollonian sides of Harry. Ron's influence on Harry is taking everything in a light manner whereas Hermione's influence on Harry is trying to keep all matters in control and possessing information. Though Ron and Hermione are quarrelsome with each other, they stay undivided with Harry as three best friends.

Friends stood for each other in every complex situation, so all the students of Hogwarts School benefitted. Harry's second stand against Lord Voldemort succeeds because of his strong belief in friendship as portrayed by J.K Rowling in all situations. All people in the world always treasure friendship. In the same way, J.K Rowling in her novel *Harry Potter and the Chamber of Secrets* has valued friendship through her main characters Harry, Ron and Hermione.

References :

Rowling, J.K 2014, *Harry Potter and the Chamber of Secrets, (*Bloomsbury, London)

Pinsent, Pat 2004, 'The Education of a Wizard – Harry Potter and His Predecessors', *The Ivory tower and Harry Potter: Perspectives on a Literary Phenomenon*, ed. Lana A. Whited. (Missourie: University of Missouri Press)

Fry, Carrol Lee 2008, *Cinema of the Occult: New Age, Satanism, Wicca, and Spiritualism in Film*, (NJ: Rosemount Publishing)

❒❒❒

1. Assistant Professor, Department of English, Builders Engineering College, Kangayam, Tamilnadu, India
2. Assistant Professor, Department of English, Bharathiar University Post Graduate Extension and Research Centre, Erode, Tamilnadu

Gender discrimination and Subjugation in the Select Novels of Buchi Emecheta

–Dr. Keerthi
–D. Aruna Devi

The woman cannot implement over rights to live on their own or think on their own. They have to be the underlying gender of the society. The traditional custom handouts the enslavement of women. Depiction of the slavery system and tyranny of slavery through the slave girl in The Joys Of Motherhood, "it occurredto Nnu Ego that she was a prisoner imprisoned…for her family: that was considered below the standard expected of a woman in her position" (137). While Agunwa, the wife of Nnu Ego's father dies, the slave girl of the mistress is buried alive in the ground.

African women are considered as an inferior gender right from birth. The paralyzed gender is being dominated, suppressed, and oppressed by the male. Emecheta, the voice of the declassed woman focuses on the oppressed and paralyzed condition of women in African society, through her novels. Emecheta tries to institute the pathetic condition of women and their struggles as caged birds in the form of tradition and culture. While addressing the second African writers' conference, held in Stockholm, Sweden in 1986, Buchi Emecheta informed that "MY books are like my children"(1986:173). Echoed in her novel, Head Above Water, autobiography: "Most of my early novels, articles poems and short stories are like my children, too close to my heart. They are too real. They are too me" (p 1). This paper examines the gender crisis in Buchi Emecheta's novels of being a girl child, against womanhood, women as a trade product, polygamous marriages, and the brutality of the patriarchy.

Key words: Gender discrimination, female suppression, marital relationship, slavery, Maledomination

INTRODUCTION

Gender is a range of physical, mental, and behavioural characteristics, which distinguish masculine and feminine. Sexuality on the other hand is a bewildered word. Women as an oppressed class in their social hierarchy, they are meant for cooking, bring up their children, and to serve their husband's commands. Throughout their life, women are not

acknowledged in society and therefore they are rebuffed from the political, legal, social, job opportunities, and even marital rights. Women have to sacrifice their desire, opportunities, and rights on the ground of gender. After their marriage, they have to give up their properties, and all their belonging, and they have to surrender their life to their husbands.

Michael Porter in Second Class Citizen: The Point Of Departure For Understanding Buchi Emecheta's Major Fiction states, "of all the women writers in contemporary African literature Buchi Emecheta of Nigeria has been the most sustained and vigorous voice of direct feminist protest"(123). Buchi Emecheta's novels explicit the theme of female oppression, subjugation, and enslavement. Right from their birth, the women are enslaved, they are treated as unsound sex. Women are the owned product by the man in the society from their birth up to their death. The role of women, as the belongings of their father or brother, or her husband, is the judgment in the suppressed society. In The Slave Girl, Emecheta states.

> All her life a woman always belonged to some male. At birth, youwere owned by your people, and when you were sold, you belonged to a new master. When you grew up your new master who had paidsomething for you would control you (p 112).

The woman cannot implement over rights to live on their own or think on their own. They have to be the underlying gender of the society. The traditional custom handouts the enslavement of women. Depiction of the slavery system and tyranny of slavery through the slave girl in The Joys Of Motherhood, "it occurredto Nnu Ego that she was a prisoner imprisoned…for her family: that was considered below the standard expected of a woman in her position" (137). While Agunwa, the wife of Nnu Ego's father dies, the slave girl of the mistress is buried alive in the ground. Before the burial the helpless slave girl pleads for her life, non pays pity or courtesy, the girl curses 'I shall come back'. According to the custom of the African society and the duty of the dead mistress's husband, have to bury the slave girl with her dead mistress. Nnu is believed as the reincarnation of the slave woman, the medicine man confirms, that she is the slave girl, with Agunwa.

> The child is the slave woman who died with your senior wife Agunwa.She promised to come back as a daughter. Now here she is.That is why this child has the fair skin of the water people and the painful lamp on her head is from the beating your men gave her before she fell into the grave, (p. 27).

Society always approves of the birth of male child and the motherhood gains respect, while they yield number of male children. The gender inequality pictured byBrown-Guillor, who states:

> A daughter is raised by a mother to be a nurturing and caring person. The daughter is taught to care for others in the familyand to believe in the ultimate value of the family … favouritismto the son damages not only the daughter but also society. Brown-Guillory (1996:163).

The author acknowledges the man holds supremacy in society, through Ojebeta in The Slave Girl. Ojebeta, the only living female child of her parents, who was sold by Okolie into slavery. Emecheta gives a thumbnail sketch slavery system, through her female characters. The innocent, small girl cries out, 'save me, mother, for now, I am lost'. Chicago, one of the senior slave in Ma Palagada's house hold unscrambles the sexual archetype of the slave girls. The destiny of the slave girls, who are sexually abused by their masters, without freedom or privilege the inferior sex has to undergo towards the will of the man in the society. The girls are neglected to raise voice against their evil.As in the case of Adah, in the Second Class Citizen moves to her relative's home, after her father's death. The girl has been treated as a ward –cum-slave by her guardian. Though the wobbly women in African society, dream to escape from the slavery life and wished to marry. On the other hand, they fall as the prey in the name of marriage. Marriage being an evil custom in the society, where the girls are hooked for bride Price, "Akunna and Ogugua will get married at about the same time.Their bride price will come to me, you see the trend today, that the educated girls fetch more money" (75).The bride price given by the man to the bride's family, makes her as a prey. While Adah marries Francis an educated man but betrayed and trapped into slavery in the name of marriage and culture. Objebeta, cuts her hair in fear of marriage, where any man can cut a curl of a girl and treat the girl as a wife sexually.

> All he (Okoboshi) had to do was cut a curl of her hair. 'Isinmo' – andshe would belong to him for life or he could force her into sleepingwith him, and if she refused his people would assist him in holding herdown until she was disvirgined and when that had been done, no otherperson would want to take her anywhere,...... the men would not beblamed at all, because it was their custom (132-135)

To keep out of the custom of traditional marriage, Ojebeta picks her own husband and becomes a slave to her master (husband), " If this time she must

marry and belong to a man according to the custom of her people..... better to be a slave to a master of your choice, Jacob would be a better choice (168). Akunna of Bride Price, who felt guilt-ridden about her purity, she begins to fear, thinking and "so now I am a woman too. I can be married, anyone can cut a piece of my hair and carry me away that was the tradition" (Emecheta 42), hides her puberty, her biological state from the society. She enters as a slave in the hand of Okonkwo, after her father's death. Ma Blackie inherited by Okonkwo, who mourns for her husband's death enslaved in the name of traditional inheritance, as a woman of secondary sex. Ogundipe-Leslie (1994:154) states: "Sex is used to exclude women from power and privilege and hijack material benefits from women." In Second Class Citizen, Ada, who strengthens her dream of going abroad, works and saves up enough money for herself, her husband and children. She cannot digest that she should stay back in Nigeria saddled with the responsibilities of paying for Francis expenses, As the focus turns towards Adankwo, in Joys of Motherhood, women are presented as commodities or property. Both inheritance andsale as a commodity are undesirable aspects of the culture, on which Emecheta criticizes.In the case of Nnu Ego, who was rejected by her first husband for failing to produce a child. Even before the birth of Nnu Ego, Agbadi's wives were also jealous of Ona.

The concept of societal conspiracy against womanhood In The Joys of Motherhood, Buchi Emecheta depicts the conspiracy against womanhood. Women have to pack of strugglewith the responsibility of taking care of their children on the other hand their husbands are burden free. Nnu Ego's rotten luck drags her into theburden of marriage with Nnaife. Nnu Ego to make her life better sells commodities such as cigarettes and firewood during her husband 's absence. After all her efforts in bringing up her children crown the thorns while the society blames her for her children's misbehavior which made her become emotionally paralyzed, the haunted memories finally drag her to die like a pauper on a roadside. In the caseof Adaku, Buchi exposes the image of one who rejects tradition and finds joy and peace of her own life. Adaku takes her own decision, she steps out of her home and survived with her girls. Emecheta presents Adaku as a woman of couragewho breaks the rule of her societyto survive. Emecheta praises her that Adaku later becomes very rich in her own lifestyle. Adaku educates her daughters with the alphabet and that her stall at the market was stacked full of goods. Through this portraiture, Emecheta depicts that a woman has risen from cruel tradition in the male oriented world.

The theme of tyranny in Second Class Citizen among patriarchal traditional African society, where the system of marriage degrades and debases women. Francis of Second Class Citizen is depicted to be self-centered, cruel, narrow - minded and in fact, downright venal by Emecheta. He brutalises Ada and deliberately tries to inject a feeling of inferiority into her to make her feel her heart bleeding. Throughout the novel, Francis 'conduct is depicted as grounded in patriarchal heritage. Francis is a typical struggle-less husband to his wife even after she nearly died during childbirth. He did not pay courtesy or simple care to his wife, Francis constantly engaged in making Ada pregnant. She had four children in quick succession and Francis turns into a wife beater to earn his living. He invites other tenants and landlords to damage her reputation telling them that his wife has equipped herself with birth control gadgets so that she would be free with other men. Pa Noble,one of the landlords makes Francis stop hitting Ada but Francis sees a woman as a secondary object, to be slept with her at any time, even during the day. While in the case of Ada's objection, he would beat her until admits; he was conscious that she has to wash his clothes and gets his meals ready, at perfect time. According to Francis, there is no need to show soft corner to his wife because she might start getting ideas. Ada realises that Francis was a thornwho tears her flesh to bleed and enjoys in her sufferings. Francis abuses Ada emotionally, psychologically, and physically all their struggles were the hurdle to living her life. Francis reaches the peak of his abuse by burning the manuscripts of Ada's Bride price. Instead, Francis says, You keep forgetting that you are a woman and you are black. The white man can barely tolerate us men, to say nothing of brainless females like you who could think of nothing except how to breastfeed her baby (1974:184). Francis's refusal of reading Ada's manuscripts hurts her so much he could not tolerate the rising of intelligent women. Francis moves a step forward to crush her dream child and burns the manuscripts of her Bride price. Ada laments, ¯Bill (one of her co-workers) called that story MY BRAIN CHILD ... that you could kill my child? Because that is what you have done (1974:187). Francis does not care about the incident which he made to Ada. Ada finally rejects her tyrannical husband who brutally burnt the completed manuscripts of her first book-the Bride price. Making a defining moment Ada decides to grow self-awareness and confidence, she dismisses her life with Francis.

CONCLUSION :

This study has scrutinized the marginalization of African women in the patriarchal society which relegates womanhood to gender roles. Buchi Emecheta raised the voice against the wilderness of the women,Whereshe tries to assert herself. In every page of her novels, Buchi Emecheta's The Second Class Citizen, The Slave Girl, and The Joys of Motherhood throws light upon us, all the ways of using tradition to keep women in a subjugated position. Buchi Emecheta enlightens womanhood in a positive approach through her novels. As a feminist writer, she tells the story of the woman from the woman 's perspective, apparently with a view to countering the seeming marginalization of her sex. She awakens in the reader, the imbalance of power in the gender group. This study has further discovered that illiteracy among women has affected noticeably, the quality of life that female child experiences. Buchi Emecheta has therefore represents education as the most essential atomic weapon in the case of women for challenging one aspect of gender inequality which is the educational disempowerment of the woman. Violence against women is widespread in many African cultures. Emecheta through her novel focuses the pain and terrible condition of women through her female characters. She criticizes the practice in Igbo society in the name of culture and tradition,Marriagebeing a traditional custom of adopting women into slavery. She pictures that the women accept their situation silently and their life in the traditional betraying society.

References :

Brown-Guillory, E. 1996. Women of color: mother-daughter relationship in20th century literature. Austin: University of Texas Press.

Emecheta, Buchi. 1988. The Joys Of Motherhood. New York: Gorge Braziller Publisher, 1979.

Emecheta, Buchi. The Bride Price. London: Heinemann. New York: Gorge Braziller Publisher, 1976.

Emecheta, Buchi. The Slave Girl.. New York: Gorge Braziller Publisher, 1977.

Emecheta, Buchi. *Second Class Citizen*. New York: Gorge Braziller Publisher, 1974.

Ogundipe-Leslie, M. 1994.Re-creating Ourselves: African women & criticaltransformations. Trenton: Africa World Press.

Michael Porter,Abioseh. *Second Class Citizen:* The Point of Departure forUnderstanding Buchi Emecheta's Major Fiction, Drexel University.

❑❑❑

1. HoD &Assistant Professor, Department of English, Government Arts and Science College, Komarapalayam.
2. Research Scholar, Department of English, Government Arts andScience College, Komarapalayam.

Sufferings, Miseries and Panics of Women in the Novels of Shashi Deshpande

–C. Chidambaram

The individual versus society is at the core of her plots. She presents us life-like characters that are usually panic-stricken and tension-tormented. Shashi Deshpande, like George Eliot and Virginia Woolf, spins a veil of finest gossamer in tracing the hidden pathways of feeling and contemplation of women. Shashi Deshpande's women yield to their past memories. Like the modern technique of cinematography, they merge their past into their present. The merger of the separate parts (time past and time present) into the consciousness creates an impression of psychological time, and makes for the loss of the episodic plots in her novels.

Shashi Deshpande is one of the most distinguished and admired Indian novelists of our time. She is India's best-selling author. She earned both name and reputation while working as a free-lance writer and columnist for several leading newspapers and magazines. Shashi Deshpande's novels are *The Dark Holds No Terrors That Long Silence* highly recognized and received a fair critical acclamation. As a writer she is gifted with extraordinary ability to discuss very sensitive aspects of human life tactfully. The way she narrate every aspects of human relationship in general and man-woman relationship in particular.

The orthodox people in India criticize her novel for her open discussion of sexual matters. But her fiction has got tremendous response not only in India but also from several European countries and all over the world.All classes of people read and enjoy her fiction in fact, as a writer she differs considerably from other Indian women novelists writing in English. She is a writer who believes in very frank narration of incidents and absolute open-heartedness. We don't find anything reserved in her fiction from narrative point of view. In my opinion, she is the last person to care for what orthodox readers say about the subject-matter of her fiction. As a creative writer, she is becoming immensely popular day by day.Most of the readers enjoy her extraordinary narrative technique as well as her subject-matter. One of the major reasons of Shashi Deshpande's popularity as a writer is her intimate understanding of the psyche of woman and her problems. Her treatment of the contemporary urban woman's position and the challenges she faces is not without significance.

Key Words-Feminine Sensibility, Emancipation, Female Impersonation

Introduction:

Shashi Deshpande has been many things to many people: super model, celebrity journalist and best-selling author. Her enigmatic personality has held her admirers under sonic kind of a spell.Emphasis Deshpande's well acclaimed novel *That Long Silence*is taken for the research evaluation the anecdote of a young Indian woman's move from her birthplace to the United States. For the moment, the protagonist stood out in popular fiction as a one-woman figure for the South Asian society, and the novel's thematic focus on the protagonist shifting sense of herself offered the text up to the literary-critical preoccupation with identity politics that dominated the 1990s. But critics who looked at the novel - especially from a postcolonial perspective.*That Long Silence,* written about the experience of an upper-middle-class rural Indian women, solidifying Western prejudices and glorifying the position of women in North India by contrast.

Theme:

A closer look at the narrative discourse of *That Long Silence*suggests the novel is not a retro reproduction but rather a poststructuralist critique of the Roman tradition, an experiment in a new, more open-ended form of feminine centric fiction.The previous critiques of *That Long Silence*have, for the most part, overlooked its narrative experimentation with changes in verb tense and disruptions of chronology, as well as its startling refusal to achieve closure.

In addition to these formal departures from the Buildungs roman*, That Long Silence*experimentally represents a narrator who embodies a cross-cultural subjectivity quite different from the heroines of the realist tradition and protagonist who follow her example ultimately discover a stable identity.To be sure, that the novel demonstrates the impossibility of an integrated subject for the heroine, precisely because she does not participate in Western notions of independence and individual accomplishment. While there can be no apology for the caricature of Indian women's experiences reflected in the representation of the heroine's early experiences, Deshpande 's critics are nevertheless attributing to the text a teleology that the novel's cross-cultural approach to subjectivity and its refusal of narrative closure actually combine to repudiate.In spite of structural differences, the novel invites formal comparison too many novels, not only because "Alka" is the name Deshpande 's heroine takes on in Calcutta, but also because the narrator alludes directly to Bronte's novel two separate times.

In one reminiscence the narrator names Alkaamong the other characters she found too difficult to read as a child learning English in India (35); later, she compares herself and her much older, crippled, landowning Calcutta lover to Alka. If Alkais of the feminine identity formation in the English literary tradition, positions itself as that novel's cross-cultural counterpart. Alkashows us what the identity effect

looks like when the heroine's subjectivity is mono-cultural, her Readers are perfectly aligned with the narrator's values and teleology. In this novel, Alka is entirely different from the other characters and her narrative most clearly as cross-cultural.

In this research articleShashi Deshpande has set a stir to the feminist perspective in Indian literature followed by the exceptional novel *The Dark Holds No Terrors*. In *That Long Silence*, Deshpande moved far away from depicting characters in the tradition of Indian womanhood. She stepped out of the threshold of family and tradition to portray the harsh realities that await a woman outside the four walls of her house.

That Long Silence, her most sensational and controversial novel, is the story of the struggled survival of a woman in a sex -starved society. The intention of this article is to focus on Sarita, the central character of the novel taking into account the factors that lead to her explorations vis-a-vis her sexual exploitations in a male-dominated society. Sarita, the unrivalled, ravishing beauty of Bombay celebrity, is a woman with an insatiable libido, thus susceptible to indiscriminate sex with filmy people, producers, directors, heroes, cameramen, high society celebrities and other people also everywhere used, soiled and exploited.

However, there is yet another group of the female characters that stands up to bear their social responsibilities, but fails to realize the movement of time. This failure brings isolation and alienation in their lives. Their ignorance of the fourth dimension of life time creates suffering to them. But their sufferings, miseries and panics evolve in them a self-fairing process by which they realize the truism of life. Thus, the long agonizing story of Sarita begins. Her physical exploitation starts with Kirubha but her mental agony has a regressive link with her past the innocent days of her childhood. When her mother was facing a lot of hardship to bring up her children, as her father never turned to look at them, the days that passed in utter deprivation speculate to see her obsession for toys she partly reveals her sad story.

Sarita has to suffer a lot due to this relationship with Dhuruva. She is humiliated, insulted and rebuked by Kishore's wife Dhanam who curses her for trying to break her marriage. Frustrated, betrayed and humiliated, Sarita tries to commit suicide but fortunately escapes death. But Sarita's homecoming after five years marks a drastic change in her fortune. By that time her sister Sudha had emerged as a big star and as well as the people had not forgotten her. Anyhow at the end of the novel Sarita decided to leave her own country and wanted to settle peacefully with some other country. This article intent to delineate the psychological disparity of the protagonist who tried to present facts from the woman's point of view often succumbed to the feminist ideology of creating strong women characters.

The individual versus society is at the core of her plots. She presents us life-like characters that are usually panic-stricken and tension-tormented. Shashi

Deshpande, like George Eliot and Virginia Woolf, spins a veil of finest gossamer in tracing the hidden pathways of feeling and contemplation of women. Shashi Deshpande's women yield to their past memories. Like the modern technique of cinematography, they merge their past into their present. The merger of the separate parts (time past and time present) into the consciousness creates an impression of psychological time, and makes for the loss of the episodic plots in her novels. In Deshpande 's novels, two streams the vision and search for self run parallel to each other; or better they are the two channels so closely related that the study of one involves the study of the other as well.

Deshpande unveils in the visionary scheme of her novels the existential pursuit of the protagonist vis-a-vis the social forces that subvert his or her progression. A textual analysis of her novels makes one perceive the two-fold visionary prospects in her novels: the varied human relationships; and secondly, the merger of memories and the present action of the protagonist into a unified vision of time as flux. The conflict is between the two selves of an individual: his selfish self and his social self. Consequently, human heart and brain becomes the scene of battle. The male and female protagonists, as such, fall a prey to their inordinate desires and impulses.Their rebellious nature, failure to reconcile with their social surroundings and social obligations makes them suffer.

Conclusion:

The various social problems make them yield to their individual self, resulting a clash between the two selves inside their mind and heart. Sarita's father-obsession, Minx's revolt against her husband, and Sarita's rebellion against conforming to the traditional and dogmatic beliefs of her parents make the novelist envision the deeper cores of human heart and mind.However, there is yet another group of the female characters that stands up to bear their social responsibilities, but fails to realize the movement of time this failure brings isolation and alienation in their lives.The objective of rebellion in the early novels is generally the harsh materialism that denied the deeper wants and aspirations of the ordinary citizen.Their ignorance of the fourth dimension of life time creates suffering to them. But their sufferings, miseries and panics evolve in them a self-fairing process by which they realize the truism of life.

Works Cited :

Santhini, Mariya. The Women Characters of Shashi Deshpande. New Delhi: Prestige, 2000.

Shivanee, Mirunalini. "Indian Women Writers in English." Sensitivity on Indian Creative Writing in English, New Delhi: Prestige, 2006.

❐❐❐

Ph. D Scholar P/T, Department of English, Government Arts College (Autonomous), Salem – Tamil Nadu

Research Article

An Analysis of Lilith's Grief in Octavia Butler's *Dawn*

–Ms. S. Lavanya
–Dr. V. Sangeetha

The first stage of the grief is denial. The Oankali awaken Lilith from her cryogenic sleep several times to question her. They do not reveal themselves to her. She was twenty-six when the nuclear war happened. She concludes that her family would be dead by now. She had a husband and a son who died in an accident before the war. Her captors question her continuously. "I did consider it . . . Along with the possibility that I might be in prison, in an insane asylum, in the hands of the FBI, the CIA, or the KGB. The other possibilities seem marginally less ridiculous" (Butler 10). Lilith believes that she is captured by military and awaits her freedom from her oppressive cubicle.

Octavia Estelle Butler was one of the pioneers of Afrofuturism. Her novel series *Lilith's Brood* (1987-89) consists of *Dawn,Adulthood Rites*, *Imago*. The series begins with the arrival of the alien race called the Oankali with the proposition of gene trade with the humans. It ends with the final stage that is reached in the trade between the aliens and the humans. Lilith is the protagonist of *Dawn*. She shoulders the responsibility of humanity's survival. She becomes a posthuman in order to do that. She has lost her family, friends in the war; she hopes to build a new family with the surviving humans; but destiny has different plans for her. She becomes a scapegoat for the humans as she chooses the peace loving aliens against the violent humans. In this process, she loses herself, struggles with loneliness and grief, and finally accepts her purpose. Butler portrays Lilith's grief in a realistic manner. The aim of this paper is to analyze Lilith's grief using Elisabeth Kubler-Ross's Model of Grief. All the proposed stages of grief perfectly fit Lilith and prepares her to shoulder the responsibility of humanity's future.

Key words: Dawn, Octavia Butler, Lilith, Grief, Kubler-Ross Model

Elisabeth Kubler Ross was a Swiss-American psychiatrist. She was known for her Grief Model in the field of psychology. Her prominent work *On Death and Dying* (1969) deals about grief in detail; it talks about various stages of grief and how one copes with it. Kubler-Ross became interested in pathology and illness when she had a near-death experience at the age of five. Added to this, her work as a laboratory assistant during World War II in Germany sparked her interest in the psychological process of grief. Grief is a natural human process and a very personal one.

It is a kind of response to a loss. The Oxford Dictionary of English defines grief as "something that causes great sadness." It might be a death of a person or bereavement, etc. The Grief model designed by Kubler-Ross is also known as Kubler-Ross Model. There are five stage of grief according to Kubler-Ross. They are denial, anger, bargaining, depression and acceptance. Kubler Ross has designed this model based on the study on terminally ill patients. But this model is applied to analyse an individual's grief too. Kubler-Ross emphasizes that there is no particular order of the stated five stages. They can occur in any order as the grief experience varies from person to person. (Ross 1969).

Kubler-Ross expands this model elaborately in her work *On Grief and Grieving: Finding Meaning of Grief* (2005). Denial is the first stage of grief. The person who is grieving denies his/her position. They refuse to accept the reality and continuously deny what has happened to them. They experience confusion, fear and try to avoid the reality in front of them. Anger is the next change in the process of grief. At this stage, the grieving person experiences shame and embarrassment that they take out on others and sometimes on themselves. They do not know how to accept their loss and lash out at everyone who tries to comfort them. Anger is followed by depression. This is the stage where reality hits the person experiencing grief. There is a lack of helplessness in this stage which is accompanied by uncontrolled and unwanted thoughts. They are overwhelmed by their loss and continue to wallow in sorrow. Getting out of their sorrow seems to be a herculean task for them. Then they reach the stage of bargaining. In this stage, they struggle to find a meaning in their actions and in their lives. The grieving person will search for ways of escape from their sorrows. After this struggle comes the stage of acceptance. Finally they come to the realization that they have to move on. They devise a new plan to carry on their lives forward. This does not mean that they will forget their loss; but they try to live with it. They cope with it in order to live. These are the stages of grieving process as proposed by Kubler-Ross.

Figure 1.Kübler-Ross's (1969) model of grief (81-82)

Octavia Estelle Butler's oeuvre comprises of three novel series, two standalone novels and a short story collection. Octavia Butler bagged the most popular awards in the field of science and speculative fiction. Her writings center on afrofuturism and posthumanism. Butler's uniqueness lies in the fact that she was successful in viewing science fictional stories through the African American history. *Lilith's Brood* (1987-89) consists of three novels – *Dawn*, *Adulthood Rites* and *Imago*. The series tells the story of the gene trade between the alien race Oankali and the humans. *Dawn* was published in 1987.

Dawn tells the story of xenophobia and gene trade. The alien race called the Oankali save the surviving humans after the nuclear war in Earth. They chose Lilith to lead their mission of gene trade with the humans. The novel traces the process of Lilith's training and her convincing fellow humans to understand the Oankali's trade. Lilith is the first person that the Oankali have chosen to test their theory and she undergoes a lot of psychological trauma till the end of the novel. The aim of this paper is to analyse Lilith's grief using Kubler-Ross's grief model. It is used to anlayse Lilith's transformation from a grieving person to that of a saviour of the human race. She fully accepts who she is in the end and decides to help the Oankali as well as the humans.

The first stage of the grief is denial. The Oankali awaken Lilith from her cryogenic sleep several times to question her. They do not reveal themselves to her. She was twenty-six when the nuclear war happened. She concludes that her family would be dead by now. She had a husband and a son who died in an accident before the war. Her captors question her continuously. "I did consider it . . . Along with the possibility that I might be in prison, in an insane asylum, in the hands of the FBI, the CIA, or the KGB. The other possibilities seem marginally less ridiculous" (Butler 10). Lilith believes that she is captured by military and awaits her freedom from her oppressive cubicle. Suddenly, one of her captors shows up in front of her. ". . . what had seemed to be a tall, slender man was still humanoid, but it had no nose – no bulge, no nostrils – just flat, gray skin. It was gray all over – pale gray skin, darker gray hair on its head that grew down around its eyes and ears and at its throat" (Butler 11).

Lilith understands that it is an alien but she is not able to accept it. She is not able to look at the creature. The humanoid introduces itself as Jdahya. Lilith gets too afraid to even talk with Jdahya and avoids it for a longer time. This is the denial stage of Lilith's grief. She tells Jdahya: "I don't understand why I'm so . . . afraid of you, . . . Of the way you look, I mean. You're not that different. There are – or were – life forms on Earth that looked a little like you" (Butler 15). She continuously denies the possibility of an alien present before her. She hides herself in her washroom; she eats nothing given by Jdahya. When she realizes that she has no other option other than to talk to Jdahya, she comes out of the washroom and talks with it. When she has overcome her denial, anger takes hold of her. She

is embarrassed by her actions when Jdahya meant no harm to her. “As though she had suddenly developed a phobia – something she had never before experienced. . . A true xenophobia – and apparently she was not alone in it” (Butler 22).

Jdahya tells her about his race and how they have saved the surviving humans after the nuclear war. The Oankali are practically traders; they have three genders among them – a male, a female and neuter gendered Ooloi. The Ooloi are responsible for reproduction and they are literal genetic engineers. They have come to earth to begin a gene trade with the humans to continue their race on earth. Lilith enquires Jdahya about the scar in her abdomen. Jdahya tells her that she was affected by cancer and an Ooloi removed cancerous cells from her body. Now there is no possibility that she would be affected by cancer. On the one hand, Lilith is not able to believe Jdahya’s words as her mother and grandmother have developed cancer and it runs in the family; on the other hand she gets angry as her body is violated. “This was one more thing they had done to her body without her consent and supposedly for her own good” (Butler 31). She feels like a slave.

Jdahya tells her that she is the first human to be awakened and they are on a ship orbiting around the sun. Jdahya informs her that Lilith is chosen to lead a group of humans who will repopulate earth by entering a gene trade with the Oankali. She has to train the group and make them accept the deal. Lilith gets horrified of this and at one point asks Jdahya to end her life. But she does not have the courage and is embarrassed by her cowardice. Jdahya takes her to meet his family where she would be trained. There she meets Jdahya’s wife Tediin, the Ooloi Kahguyaht, the child Nikanj. When she looks at the Ooloi, she is unable to mask her anger. “It was also one of the creatures scheduled to bring about the destruction of what was left of humanity” (Butler 46).

Lilith is informed that she will be training with Nikanj, the sexless child. She would learn from Nikanj and it would learn from her. Nikanj takes her to meet its friends. “When they [Nikanj’s friends] saw that she would not strip, no more questions were addressed to her. She was first amused, then annoyed, then angered by their attitude. She was nothing more than an unusual animal to them. Nikanj’s new pet” (Butler 55). Nikanj teaches its language to her and comments on her memory when she is unable to retain everything. On Kahguyaht’s suggestion, Nikanj tells Lilith that her memory would be improved after a slight alteration in her brain. Lilith gets angry at this: “I don’t have a disease! Forgetting things is normal for most humans! I don’t need anything done to my brain!” (Butler 74). After arguing with Nikanj, Lilith has no other option other than to let Nikanj alter her memory system. After this alteration, her memory gets improved a lot and she speaks Oankali language. Her anger though remains the same.

The next stage in the grieving process is depression. Lilith truly believes that when she meets another human, she would get more answers and there would be someone to rely on. Then she meets Paul. Though Paul has been staying with

the Oankali for a longer time, he seems ignorant of their ways. Lilith gets uncomfortable when Paul starts discussing about his hybrid children. When he makes sexual advancements, Lilith avoids him; but he continues taunting her. He attacks her: “He kicked her hard. The last sound she heard before she lost consciousness was his ragged, shouted curse” (Butler 94). The Oankali does not come to help and Lilith becomes unconscious. When she wakes up, she is with Nikanj. She tells Nikanj: “Let me sleep again. Put me where they’ve put him. I’m no more what your people think than he was. Put me back. Find someone else!” (Butler 100). Nikanj convinces her and makes alterations in her body chemistry so that she could open the walls at any time. This is not a complete freedom but this is a change for Lilith. Even Kahguyaht brings her reconstructed papers, pens and some novels to change her mood. She falls into complete depression after this. She finally realizes that the humans she has to train will be more or like Paul Titus – angry, non-understanding and most importantly violent. The only thing that brings out of her depression is Nikanj’s metamorphosis. Lilith begins to take care of it and this change her mind a little.

According to Kubler-Ross, bargaining follows depression. Lilith tries to strike a bargain with Nikanj. Lilith wants to stay with a human but this is not granted by Nikanj. She is made to live in a simulation of tropical forest so that she can teach her fellow humans. She believes that once she teaches the other humans, she could escape with them. “What could she do? What could she tell the humans but “Learn and run!” What other possibility for escape was there?” (Butler 118). Lilith starts waking up humans and only a very few such as Tate, Gabriel, Joseph, Leah, Wray choose to be with Lilith. All the others, nearly thirty are against her. They do not believe that their captors are aliens and they take out their anger on Lilith. Two occasions make Lilith question her actions. The first one is when a woman demands meat despite Lilith telling her the Oankali are vegetarians. The woman attacks Lilith in a fit of rage; Lilith strikes back. “Surprised, but far from overwhelmed, Lilith struck back. Two short, quick jabs. Jean collapsed, unconscious, bleeding from her mouth” (Butler 146). The second occasion is when a woman named Allison is about to be raped. Lilith fights her attackers; even Allison doubts whether Lilith is a human. Lilith truly wonders about her position. Nikanj meets her and assures her that once she gets the first batch ready, everything will fall into place and Lilith tries to believe her for her own good.

The Oankali come for the humans and try to get acquainted with them but with no chance. Lilith’s friends plan to leave the Oankali and they ask her to accompany them. Lilith accepts to go with them as Joseph is there in the group. “Lilith went aside to relieve herself and when she stepped clear of the tree that had concealed her, every eye was on her. Then abruptly everyone found something else to notice – one another, a tree, a piece of food, their fingernails” (Butler 214). It is at these times that Lilith wants to get away from everyone. But she

cannot do that as the fate of humanity rests in her decision. During this escapade, Lilith is separated from the group, attacked and left alone; Joseph gets killed by Curt. "She stared, speechless, then rushed to him. He had been hit more than once – blows to the head and neck. His head had been all but severed from his body. He was already cold. The hatred that someone must have felt for him . . ." (Butler 223). A fight ensues soon after Joseph's death. "Lilith found herself standing with aliens, facing hostile, dangerous humans" (Butler 226).

Nikanj's arm is cut off and Lilith rushes to help it. Nikanj regrows its arm with the help of Lilith's dead cancer cells. Knowing the dangers to Lilith, Nikanj stops her from going to earth; all the remaining humans are put on Earth. Lilith is anguished after knowing this. Nikanj gives her the final shock telling that her that it has made Lilith pregnant with Joseph's seed. The child has five parents – the Oankali pair Ahajas and Dichaan, the human pair Lilith and Joseph along with Nikanj. All their seeds and genetic materials are combined to form the first hybrid girl daughter. Lilith gets horrified: "It won't be a daughter. . . It will be a thing – not human. . . It's inside me, and it isn't human!" (Butler 246). But she sees the reason behind Nikanj's action. The humans will never believe her as she has chosen the side of the Oankali. The Oankali on the other hand cannot find a better choice for parenting the humans to repopulate earth. Hence she is a kind of middleman to both of them. Lilith finally accepts her situation. She cannot escape the humans as well as the Oankali. Lilith reaches the final stage of grief.

Thus the Kubler-Ross Grief Model perfectly fits the grieving process of Lilith. When the Oankali finds her, Lilith has already lost her family and friends. She hopes to find a new life but destiny has different plans for her. Lilith undergoes all the stages listed by Kubler-Ross. She experiences denial when she is not able to believe that her captors are aliens and gets frightened by them. She gets anger when she is belittled by her human limitations and treated like a slave, a guinea pig by the Oankali. She undergoes depression when faced with the reality of the challenge that she has to undertake in order to help the humans. She tries to bargain with the Oankali for her freedom but that result in vain. She tries to find a meaning in her life after facing the fellow humans as her enemies. Finally, she understands the enormity of the responsibility that is on her shoulders – the survival of humanity – and agrees to help the Oankali as well as the humans.

Works Cited :

Butler, Octavia E. *Dawn*. Warner Books, 1997.

Kübler-Ross, Elisabeth. *On death and dying*.Simon & Schuster, 1969.

Kübler-Ross, Elisabeth, and David Kessler.*On Grief and Grieving: Finding Meaning of Grief through the Five Stages of Loss.* Scribner, 2005.

❏❏❏

1. Assistant Professor of English, Sri Sarada College for Women, Salem – 16, Tamil Nadu
2. Professor and Head, Department of English, Periyar University, Salem – 11, Tamil Nadu

Research Article

Eternal Search of Identity in Mordecai Richler's Novel Solomon Gursky was Here

–G. Sriram
–Dr. K. Ramachandran

The tally goes on such that the peasants who are from Ukraine, Poland, Italy and Greece are quite comfortable in growing wheat, digging out ore and proceed with the restaurant business in order to restrain their identity in their place. Many flocked together to the border gazing out at the candy store window, intimidated by the Americans on one side and the bush on the other. (SGH 398-399).

Canadian Literature has marked its glorious onset of the 20th century by beckoning one of the great stalwarts in Jewish fiction writing like Mordecai Richler. He has excessive affinity towards the ghettoised attitude which is found reflected on all his fictions. He has handled a unique approach from his writing which makes the readers feel rejuvenated to read his fiction.The common themes handled by the Canadian writers such as Margaret Atwood, Leonard Cohen Margaret Lawrence and Mordecai Richler are Theme of Isolation and Crisis of Identity. His protagonists had undergone a lot of trials to restrain their identity in the alien nation.Richler's novels could be seen as his autobiography in the way he portrays his character. The novel portrays a young youth that yearns to explore the external world by escaping the life in a ghetto to establish a new identity for survival.

The novels by Richler portray their pivotal characters as they are fickle minded and caught in two minds if they have to follow the rites and rituals of the family remaining there in a Jewish ghetto or look for adventurous journey to explore more opportunities for sufferings in alien nation. This paper exclusively deals with the eternal longings in the search to prove the identity in Richler's novel 'Solomon Gursky Was Here'.

Keywords: Expedition, Corrupt, Immigration, Trial, Jewish.

INTRODUCTION:

Richler uses Gursky family's history as a trump card and a prototype to picturise the experience of

Jews with the history of Canada.The novel tells of several generations of the fictional Gursky family, who are connected to several disparate events in the history of Canada, including the Franklin Expedition and rum-running. Some fans and critics have cited this as Mordecai Richler's best book, and in terms of scope and style it is unmatched by his other works. The parallels between the Gursky family and the Bronfmans are such that the novel "may be seen as a thinly disguised account of the [Bronfman] family".[1] The novel 'Solomon Gursky Was Here' have comic effects embedded throughout with whims, fancies and frolics of ruthless Jews engaging in "raw, illicit whisky. Richler does a perfect, irreverent take on all levels of Canadian society, including impoverished, raunchy backwoodsmen, rabid racists, Jewish parvenus and desiccated blueblood Montrealers. If some of his scenes verges on high camp (a bloody Passover seder is a bit outré) he gives readers their money's worth of humor, suspense and all-round entertainment."[2]

Richler laid an emphasis stating the Jews had contributed quite a lot to the growth of Canada as a country but when they are denied to living in Canada, it leads to the rejection of Canada as a whole. The novel is a perfect synchronization of humor and anger. The search for identity of his Jewish clans is deep-rooted in his novels.

He has created credentials of Canadian through Arctic tribe accompanied by a Jewish family and native women. It is a chronological novel which could see its traces spanning since the start of the 19th century to 1983, when a search for Solomon Gursky is withdrawn by Berger, whose roots are traced forty years earlier and thus he was drawn into a confusion between Canadian and world history.

The story revolves around Moses Berger is a poor Jew's son that has ruined his prospects of drunkenness, cannot stand so aloof[2]is obsessive, a Rhodes Scholar turned alcoholic, with Solomon Gursky, in association with his brother Bernard and Morrie, has established McTavish industries which has gained momentum and become millionaires, bootlegging imported Scotch whiskey to American rum runners during prohibition[3] and make it a massive liquor empire. Moses tries to trace the roots of Solomon to write his biography which he has accomplished by probing deep into the complex story of five generations of Gurskys. Ephraim, the grandfather of Solomon is the eldest in the family that has made Solomon a criminal, through his wily tricks.

Pivotal role of grandfather in Richler's novels

The role of grandfather in the novels by Richler is optimal as they remain a guiding force which would decide the future of the protagonist. Richler compares the characteristics of Ephraim to raven as the mere bird flying through the world

with "lust, curiosity, and the unquenchable itch to meddle and provoke things, to play tricks on the world and its creatures.[4]Ephraim is compared with raven because he has managed to escape from the imprisonment which is ruled out for forging documents in 1800s in England, he has remained an integral part of a crew which is set out on a voyage to the Northwest Passage called the Franklin Expedition.

Though the expedition ended up in havoc, Ephraim manages to survive as he is the sole survivor. The youngest Gursky of the five generation is Isaac who is Solomon's grandson. Moses recapitulates all the events by untangling the complex plot of the story of his life in a satirical way for the theme of socio-family relationships, Solomon's exploration is his re-incarnation as Sir Hyman Kaplansky, to secure a bond with his family and their exploits.

The traits of Gursky family

The chief characters of the novel are portrayed as corrupt or failure. Moses succumbs to alcohol and had not done anything to his caliber; Bernard, a greedy who is an introvert; Solomon Gursky is a dacoit from the family of Jews who has earned riches through bootlegging. He is different from his brothers as they concentrate in business and he has chosen a life which is different and unique. Bernard, who is a businessman and Morrie, a man without confidence and a will to lead a life.The impact and instinct for grandfather is found reflecting on most of the fictions of Richler. There is a huge influence of grandfather which is found evident in this novel like few novels such as 'An Apprenticeship of Duddy Kravitz' and 'Son of A Smaller Hero'.

Solomon learning survival traits from his grandfather

Similarly, Ephraim singles out Solomon as most like himself when Solomon is very young and takes him on a trip to the far north, initiating him into the hardships of the world and teaching how to cope with difficulties. He advises Solomon to deal with Bernard as he would with a wolf to leave a knife smeared with honey so the wolf will lick it and cut himself to death.[5] Polar Sea is where Ephraim has taken Solomon initially during his youth hood days; he has learnt Jewish customs, rituals, art of survival and dacoit. His role in World War I have more significance as he supports European resistance of Hitler to contribute more to Jewish immigration to Canada. He has quoted famous quotes from Karl Marx: "The world is interpreted by the philosophers in various ways: the point, however, is to find a change in it" (SGH 159).

Solomon's campaign for Jews has made the whole Gursky family undergo trials owing to bootlegging. Since the members of Gursky family remains estranged and wily, Solomon is entrapped by Bernie who is wicked. When Solomon tries to escape his plight, it is reported that a plane crash somewhere towards the North of Canada has caused his death.

Solomon somehow has managed such an irony and leads a life disguised as Sir Hyman Kaplansky. Richler is meant for his strong satire in his novels as he calls that Canada is a second rated nation and thus he picturises his character as a dacoit or a cheat that would go to any extent to achieve pride, glory and esteem that leads to corruption and failure.

Jewish plight narrated by Moses

Moses says: Canada is a country which has a varied history filled with grief and sorrow of discontented offspring of defeated peoples. The French-Canadian people are consumed by self-pity; the successors of Scott fled the Duke of Chamberlain; Irish succumbed to the famine; and the Jews are the black hundreds.[6]

The tally goes on such that the peasants who are from Ukraine, Poland, Italy and Greece are quite comfortable in growing wheat, digging out ore and proceed with the restaurant business in order to restrain their identity in their place. Many flocked together to the border gazing out at the candy store window, intimidated by the Americans on one side and the bush on the other. (SGH 398-399).

There is an ambiguity which results in the eternal Jewish dilemma; if the people of native Jewish soil think that the Canada is an emigrant country, then how could they are acknowledged as full-fledged Canadians? (Tora 32).The exploits of grandfather Ephraim in the Arctic has added more Canadian credentials for the whole Gursky clan to establish them.

Asserting the identity of clans in their way of life

Bernard, Solomon's brother comments says: The Gursky's originated from shabby and soiled village managed to establish the family in Canada even before Canada is declared a country. When we compare our genealogy with that of Canada as a nation, we are older than that as Ephraim started his career as a coal miner. (SGH 227) Everyone in Gursky's clans tries to establish the identity in their own way. Mr. Bernard sustains as a liquor smuggler and salesman throughout his career to possess social skills to establish his identity. He thinks that he has ended up achieving the goal of his life.After the demise of his brother, Morrie exalts in praise: "Do you know what my poor brother aspired for that he never

got "? What his ambition was that he had to be acknowledged by the Canadians by being appointed as an ambassador like Joe Kennedy" (SGH 261).

There is an instance which is vivid which makes him feel sad as the Jews are not given due recognition of the country. When Mr. Bernard is prosecuted for liquor trafficking by Bert Smith, a customs clerk, in the novel. He says: "Those who accept Jesus can enter into the Kingdom of Heaven" (SGH 336).

The construction of women in Richler's fiction follows consistent patterns. The"good" women are typically the wives of the protagonists: excessively beautiful and quietly intelligent; alluring, but not sexually aggressive; effortlessly graceful and domestic, but not careworn or bedraggled.[7]There are few minor characters in the novel who tastes success of their life such as Backy Schwartz, an ambitious lady who claims for social identity ends up accomplishing her goal. The Gentile girl Diane is a contrast to her whom Solomon has fallen in love but cannot marry her due to Jewish customs and feels terribly upset. He acquired a rich status which helps him to run an aero plane service. Haplessly, the plane is said to be crashed and vanished from one of his trips to Arctic. With this, Richler has let the readers arrive on their conclusions if it is a suicide. Solomon is a willful man who doesn't accept defeat rather he had concluded by destroying himself. Moses knows that getting recognition is not that easy about Canada, an alien soil, so he chooses alcohol for comfort.

Quest for Search for identity of Jews in Canadian soil

It is a debatable question on the quest of Jews for recognition. The search for recognition is really a quest for a home to the Jews. In Tora Clara's essay, "The Question for Recognition",: he opines, In 'Solomon Gursky Was Here', Mordecai Richler sets out to create origins by creating a new Arctic tribe with Jewish family members and native women to legitimize Canadian credentials.

The novelist creates a fusion of Arctic, Jewish, financial and alcoholic histories. The Gurskys is scoundrels, altering between a seedy underworld and a Normal world with a longing for acceptance, recognition and Respectability. (24) The novel spans from the nineteenth century underworld of London, through the Franklin expedition and the Arctic, to the eastern township of Quebec and the prohibition years of Jews to the prairies.Richler's men and women are real and reflecting his own peculiar reality.

Mordecai Richler has made an honest attempt to fuse the Jewish and the Canadian historical experiences of its gleeful obscenity and a dirty dealing through this novel; ''Solomon Gursky Was Here'' is a novel with morality which has a

composition of Rage - moral rage - fuels Mordecai Richler's imagination making every reader feel that his characters boil at a steady simmer: It is a fact that the plot of the novel seems to be unpredictable which its characters often are: Arctic explorers, self-styled messianic prophets, Hasidic survivalists, high-stakes poker cheats, and miscellaneous rakes, rum-runners, racketeers and corporate raiders, all of them caught up in a house of mirrors that ultimately shatters in a vast moral apocalypse.[8]

CONCLUSION:

The central focus on Richler's novels is the presentation of the immigrant society with all its vagaries. The identity quest becomes an indefinable ideal as the characters undergo several torments to establish them. The modern literary imagination lies in its evocation of the individual predicament in terms of alienation or exile or quest for identity.By incorporating part of the Gursky family into the Canadian Arctic, he attempts to create a fait accompli.

Not only are they Canadians, but they are to be considered as part and parcel of the original authentic inhabitants of the land. Their Canadian credentials are thus established and their marginality is to become neutralized. But the world continues to turn and the Jews continue to seek their place in it and above all recognition.

References:

1. Ada.Mordecai Richler: A Life in Ten Novels, 2006.
2. Clara, Tora. "The Question for Recognition", Library Journal, 3 July 2000.
3. Gibson, Graeme. "Mordecai Richler". Eleven Canadian Novelists. Toronto: House of Anansi, 1973.
4. Knopf. Alfred. Solomon Gursky Was Here. Newyork, pp.413.
5. Knopf. Alfred. Solomon Gursky Was Here: Next Door to The Promised Land, pp.48, Craniford.
6. Lakshmi, S The theme of search for identity in the novels of Mordecai Richler.
7. Ramamurthy, S. Malgudi to Montreal: An Assessment of the Novels of R.K.Narayan and Mordecai Richler, Trichy: U.V. Printers, 1996.
8. Richler, Mordecai. Solomon Gursky Was Here. Toronto: McClelland & Stewart Inc., The Canadian Publishers, 1989.
9. Soundararajan, R. Assimilation versus assertion: A study of select novels of Mordecai Richler and AdeleWiseman.
10. Sriram.G, Ramachandran.K.Infokara, Identity Crisis in Mordecai Richler's Novel Solomon Gursky Was Here, Infokara, pp-607-615.

❑❑❑

1. Ph.D Research Scholar, Department of English, Arignar Anna Government Arts College, Namakkal (TN)
2. Research Guide, Assistant Professor, Department of English, Arignar Anna Government Arts College, Namakkal(TN)

Research Article

Apparition of a Working Class Man in Phillip Roth's *I Married a Communist*

–C. Krishnamoorthi
– Dr. P. Kiruthika

A couple of years after his visit to Zinc Town, the young Nathan Zuckerman discovers the mythological narrative behind the Communist retreat from capitalist life. As a college student in Chicago, he finally meets Ira's own mentor, Johnny O' Day, a solitary man and a pure revolutionary, dedicated to a political cause. For a long time unavailable, the meaning of this spiritual transfer of desire into the proximity of one's intimate space is clear to Nathan in a personal experience that no longer involves the haunting presence of Ira Ringold or the threatening personality of Johnny O'Day.

Phillip Roth is one of the most eminent Novelist of American Literature. He is known for his craftsmanship and the neat portrait of characters and events his well acclaimed novel *I Married a Communist* has made an insightful and acute analysis of the private sphere introduces a notion of be travel that is not only related to the frontier between good Americans and evil communists, but also to the issue of a selfishness that manifests itself at the core of the social bond. In *I married a communist* Ira Ringold, who involved in the practice of the democratic game; his role as a radio actor, married to the famous Hollywood star, Eve Frame, keeps Ira's allegiance to communism in the shadow, his ideological initiation denoting a more personal, affective relation to the significance of his past. The conflict between Ira and Goldstein is significant only in so far as it considered the counter point of the major thematic concern of novel, the exposure of the anti-communist hysteria that the novel accomplishes, by concentrating on the private setting of politics. What Nathan learns from witnessing the intense debate on the failures of communism has few ideological implications. Rather, It provides a different story about Ira's own ambiguous past, shows his intention to manipulate bio graphical details, and proves to Nathan that "the spirit of the common man", in its unmediated form, is different from his own fictional projections.

Key Words: Cultural Dilemma, Hallucination, Identity Crisis, Misappropriation, Reality

Introduction

Roth focuses on Ira Ringold's internal contradictions as the main character of the novel incarnates subject positions in an intense, antagonistic rapport. The space where Ira defines himself as

politically active is the shack in Zinc Town, an idyllic place only insofar as one can perceive it as the matrix for the dose of idealism necessary for any socialist adventure. Consequently, the readers should not take the Romanticist idea of living "close to nature" (50) for the personal construction of a mythical space which separates Ira from his urban / bourgeois existence and allows him to engage in political activism. "Ira retreated to Zinc Town to live close to the bone, to live life in the raw talking to the local dairy farmers and the old zinc miners, whom he tried to get to understand how they were being screwed by the system (50). The retreat is thus a political and personal strategy that makes possible the suspension of his particular social role. His new name, Iorn Rinn, identifies him with the "common man" and gives him access to the simple life he was in fact able to overcome. As an "openly sentimental expression of solidarity with the dispensable" (51), the shack also represents the expression of his political desire constructed by the irresistible appeal of some essential form of everyday life, uncontaminated by capitalist culture.

A couple of years after his visit to Zinc Town, the young Nathan Zuckerman discovers the mythological narrative behind the Communist retreat from capitalist life. As a college student in Chicago, he finally meets Ira's own mentor, Johnny O' Day, a solitary man and a pure revolutionary, dedicated to a political cause. For a long time unavailable, the meaning of this spiritual transfer of desire into the proximity of one's intimate space is clear to Nathan in a personal experience that no longer involves the haunting presence of Ira Ringold or the threatening personality of Johnny O'Day.

Roth make a crucial political statement by creating a literary situation which challenging traditional philosophical reflections on political friendship. For example, Ira's interest in Nathan does not fall into the model of militancy illustrated by O'Day's faith in Leninism, mainly because, in this friendship, no other disciple can take Nathan's role. He is thus appreciated in its singularity, not as a member in a group, secretly acting in the name of a specific ideology.

However, this research paper does not address the questions of the new of politics, in an absolute with revolutionary break the previous models of social organization. Written as a realist coming of age narrative, in which Nathan's political initiation plays the central role, Roth's novel *I married a communist* creates a literary figure of the political, which can be described in nostalgic attitude towards a period in American politics preceding the disintegration of American Left in the 1950s. The process of reading and evaluating the knowledge involved in the formation of the modern social imaginary is the main condition for emancipator's political practice. Understanding literacy in a social milieu becomes the main purpose of Nathan's "apprenticiceship" with Ira, whether in Newark or in Zinc Town. The pedagogical praxis does not concentrate on a rigid set of normative principles, but on witnessing two of the central elements creating a notion of the "common

man" : on the one hand, the plurality of common belief or views of the world, and their irregularity in the social space, and on the other, the manifold of life experiences constituted by particular contingent circumstances.

Roth appears close to Hannah Arendt in that his novel address the topic of democratic pluralism : People are political beings because they live in plurality. This plural is not an obstacle to judgment, but its very condition opinions are formed as the original exercise of 'sharing the world with others (28). This theoretical detour calls to our attention a specific scene from *I married a communist* in which Ira Ringold takes Nathan to visit a former army fellow, Erwin Goldstern in, who, after marrying the daughter of a Newark business owner, "had become an adherent of everything he had once opposed" (94). In his narrative, Roth emphasizes the antagonistic rapport and the circumstantial experiential nature of any decision. However, for Nathan, the conflict illustrates the thinking of two "common men" that have differently negotiated their subject positions. Goldstein is not simply an opportunistic figure; he is, according to Ira, the victim of his own fear, "afraid of his wife, afraid of his father-in-law, afraid of the bill collector" (96). Divided by ideological investment and loyalty, the two men use similar argumentative strategies to defend their positions against each other. Goldstein even attempts to discredit Ira by offering a sample of pure commonsense, or at least what now appears to him as common sense-his own version about the ideological operations of both communism and capitalism.

The conflict between Ira and Goldstein is significant only insofar as it is considered the counterpoint of the major thematic concern of this research paper the exposure of the anti-communist hysteria that the novel accomplishes, by concentrating on the private setting of politics. What Nathan learns from witnessing the intense debate on the failures of communism has few ideological implications. Rather, it provides a different story about Ira's own ambiguous past, shows his intention to manipulate biographical details, and proves to Nathan that "the spirit of the common man", in its unmediated form, is different from his own fictional projections.

Facing the particularity of everyday life in Zinc Town, Nathan acknowledges the distance between his desire to go beyond the borders of his world and Brownie's desire to live life within a horizon of pure necessity. The intersection of these two "personal" truths needs to be understood in relation to Hannah Arendt's analysis of in the Greek world: "The world doxa means not only opinion but splendor and fame. As such, it is related to the political realm, which is the public sphere in which everybody can appear and show oneself, to be seen and heard by others" (73). Interpersonal space evoked by this scene from Roth's *I Married a Communist* and narrated by Nathan, Brownie's presence is the concrete expression of a doxa not aiming to go beyond itself; This political revelation refers to a meaning of doxa that articulates personal truth only by submitting it to the "already-made"

prescriptions of socially constructed norms or values, what the French sociologist Raymond Boudon called "decides recues" (received ideas). Lured by the figure of the people, Nathan discovers in Browine a notion of singularity, which naturally falls under the laws of the common, a term used in its ambivalent meaning designating something "ordinary" and also that which governs the social bond. Unable to live directly this experience of the ordinary means in fact that the identification with Ira is also impossible and that their "friendship" remains only a stage in Nathan's development as politically active intellectual.

The reversal of Ira's utopian imagination is thus not the realization of a prophecy, but of the actual historical coordinates of anti-communism in the America. The central rhetorical operation through which politics is articulated to anti-communism is a semantic operation, which centers on substituting betrayal with treason. The gap between trespassing a moral normative order (betrayal) and conspiring with American's enemies (treason) is bridged by the ideological orientation of McCarthyism: "To me, says Murray Ringold, it seems like more acts of personal betrayal were tellingly perpetrated in American in the decade after the war-say, between 46' and 56-than in any other period in our history" (26). The culture of permanent suspicion also constitutes an ironic adaptation of democracy to Stalinist practices. At the heart of American life, the seed of democracy to Stalinist practices. At the heart of American life, the seed of betrayal gives rise to moral compromises in support for a greater cause, the need to identify and expose those who can potentially betray the people as a whole. The rhetoric of betrayal provides the central signifier (traitor), whose function is to institute the frontier between good Americans (the people) and evil communists.

As if in the symbolic responses to Ira's prophetic vision, Gluksman's own version of the future speaks about the dissolution of political beliefs in a larger cultural ideology. "The Culture of the Peasants and the Workers" (28). While the politically progressive potential of rhetoric is realized in Ira's populist message, the demagogical (i.e., mystifying) quality of the anti-communist rhetoric appears in Roth's novel at the center of the private conflict between Ira and his wife".

The last part of the conversation between Nathan and Murrary Ringold focuses on Eve Frame's book about her relationship with Ira entitled I married a communist. Ghostwritten by Eve's friends Katrina and Bryden Grant, the text is not only a personal vendetta, but also an element in a carefully strategic plan to boost Bryden Gran's political career. Becoming a bestseller, the book narrates a story about Ira's subversive communist activities against the American government and his involvement in some sort of Jewish Bolshevist conspiracy to take over New York –based radio stations. By claiming to tell the truth, Eve contributes to Ira's final metamorphosis in the novel-he is forced finally to identify with the spectral image of communism that haunts American, to become its "human face" (274). The false

belief is instituted though the perverse mechanism concealed by the rhetoric of betrayal: 'I married a communist, I slept with a communist, a communist tormented my childe unsuspectingly America listened to a communist, disguised as a patriot, on network radio" (274). As cultural affiant, Eve's story describes the infiltration of the communist spy in the American household, and, according to Murray, it dispassionately offers a hallucinatory scenario, worthy of The Invasion of Body Snatchers, the most vivid anti –communist sciences fiction film released in 1956; "Russian agents. Russian spies. Russian documents. Secret letters, phone calls, hand-delivered messages pouring into the house day and night from communists all over the country" (243). Without being significantly inspired by the plot of Robert Stevenson's 1949 anti-communist film, Roth uses the title of this feature. I married a communist, for Eve's "fictional" story and for his own novel.

Conclusion

As the deceptively fascinating Cold War family drama unfolds in *I Married a Communist,* Roth takes us into the process of creating a political myth signed by a patriotic American woman. Eve's confession is a unique episode in a McCarthy like witch hunt television series; it condenses the belief that 'everywhere' in America, possibly in any household, in any family, the ones who you trust, perhaps your husband or your wife, could be a traitor, an enemy of "the American way of life". Beyond the entertainment factor of this political farce, Eve's revenge against her husband novel *I Married A Communist* underlies the way how Roth's acute analysis of the private sphere introduces a notion of betrayal that is not only related to the frontier between good Americans and evil communists, but also to the issue of a selfishness that manifests itself at the core of the social bond. *I Married a Communist* is not only a cold War text, but it is also a novel about the legitimacy of pragmatic selfishness in American culture. Using as his main example the historical situation of the 1950s, this research study traces an authentic political meaning by calling into question the truth of pragmatic selfishness as betrayal of the idea of the so called communist brotherhood and its central moral value for liberal democracy.

Work Cited:

Badiou, Alain, Abridge de Meta-politique Paris : Seuil, 1998, Print

Boudon, Raymond. The Analysis of Ideology.Chicago : UP of Chicago, 1989. Print

Fiedler, Leslie, Cross the Border-Close the Gap. New York: Stein and Day, 1972. Print

Howe, Irving. Politics and the Novel. New York: Horizon, 1957. Print

Kazin, Micheal. The Populist Persuasion: An American History. New York: Basic, 1995. Print

Lefort, Claude. Democracy and Political Theory in the Novels of Phillip Roth, Minneapolis: UP of Minnesota, 1998. Print

❒❒❒

1. Ph. D Research Scholar (Part Time), Periyar University, PG Extension Centre, Dharmapuri.
2. Assistant Professor, Periyar University. PG Extension Centre, Dharmapuri.

Representation of Multi-culturalism in Yann Martel's *Life of Pi*

–Chandra R.
–Dr. P. Mythily

Generally diversity is the source of conflict and intolerance among people of different cultural affiliations. As a citizen of Canada he has insisted this theory in his novel through incidents and characters. In order to preserve all cultures the cultural difference has to be recognized and has to be represented as equivalent in the common arena. Pluralistic culture goes into alternatives which stops the discriminatory attitudes and tries to maintain the harmonious coexistence of diverse culture. It ensures the originality of the society by protecting different cultures and integrity. Within limited space multiculturalism widens life experiences.

Multiculturalism is an integral part of globalization which is well expressed by diasporic writers. India and Canada are known for their pluralistic culture. The concept of multiculturalism represents social harmony of heterogeneous culture and appreciates its diversity. As a diasporic writer, Yann Martel has well articulated his expertise in multiculturalism through the novel *Life of Pi*. Multiculturalism in creative writings reflects as well as promotes bonding, bridging and linking cultural diversity. Amalgamation of cultures leads to acculturation. Cultural diversity is the product of various reasons, such as evangelist movement, slavery movement, invasion, colonization and recently by globalization. To attain harmony in multiculturalism, the socio-cultural differences have to be acknowledged, valued, respected, equal status ensured and finally the gap to be bridged. The author advocates multiculturalism from the beginning to the end of the novel. The novel begins from the east, the land of India, especially from Pondicherry and ends at the west, Mexico and Canada which are also the lands of diverse cultures. The author convinces the readers that the reason for the successful journey of the protagonist lies in his adaptation to the new culture. Pi, the protagonist represents multiculturalism or coexistence of multiple cultures. The objective of the paper is to highlight the multiculturalistic aspects of the novel and demonstrate the civilization of humankind.

Key words: Multiculturalism, Diaspora, Acculturation, Globalization and Coexistence

Introduction

Science and inventions no longer restrict the culture within boundaries which is an established conviction, morals, tradition and social conduct of a society. Gradually multiculturalism is acknowledged and welcomed by various countries through globalization. The perception of people has changed in multicultural society when they realize that the advantages are more compared to its challenges. The author Yann Martel portrays the advantages and problems of multiculturalism in every aspect of the novel.

The open-mindedness, adoptability, threat and violence are all well portrayed through the novel. As the central character was born and brought up in a multicultural background he is able to adopt a new environment quickly. The author is very particular in choosing the places of beginning and ending, characters, animals and narrative techniques. The pluralistic culture influences and overlaps each other. Less expectation, giving space for other communities and open-mind to accept other cultures are all cultivated by multicultural society. The enrichment of culture is made through multiculturalism and tolerance is the basic quality of pluralistic society. It broadens the views of cultural equality rather than cultural supremacy. The improvisation of life is possible by multiculturalism which leads to come out of narrow social conditioning.

Compared to mono culture, people of multicultural society have more tolerance, respect and love towards other cultures and subcultures by their coexistence which is a required quality of human society. Instead of using melting pot theory, a salad bowl theory is best applicable in pluralistic society. Description of North American culture by Wikipi is "A salad bowl or tossed salad is a metaphor for the way a multicultural society can integrate different cultures while maintaining their separate identities contrasting with a melting pot which emphasizes the combination of the parts into a single whole. In Canada this concept is more commonly known as the cultural mosaic or tossed salad."

Generally diversity is the source of conflict and intolerance among people of different cultural affiliations. As a citizen of Canada he has insisted this theory in his novel through incidents and characters. In order to preserve all cultures the cultural difference has to be recognized and has to be represented as equivalent in the common arena. Pluralistic culture goes into alternatives which stops the discriminatory attitudes and tries to maintain the harmonious coexistence of diverse culture. It ensures the originality of the society by protecting different cultures and integrity. Within limited space multiculturalism widens life experiences. It removes skeptical views on other communities.

The mention of places India, Mexico and Canada all are known for Pluralistic society. The other mention of places is the Pacific Ocean, and the strange unnamed island of the Pacific Ocean. The birthplace of the central character is Pondicherry which is also best known for Indo-French culture. The ocean stands for calmness and stability as it is the connection point of the seas which represents the stability and interdependence of diverse cultures. The central character changed his vegetarianism for his survival, the required skill of adaptability which is imbibed from his multicultural society. The supportive treatment of Mexico and Canada allows him to recover his physical and mental ailments.

Multiculturalism works on the principle of interdisciplinary cultures. From the beginning to the end the author has insisted multiculturalism by name of the countries, animal characters, religious attitude and taste of different cuisine. The central character Pi is an Indo-Canadian castaway who reaches Mexico with an adult tiger and finally settles in Canada at last. He narrates the story to the author.

In India his father runs a zoo who says that the animals can be smoothly handled by providing enough space for its survival because they are also interdependent in nature. It indirectly represents that pluralistic culture is possible only by ensuring recognition, equality and freedom from domination. Multiculturalism supports the peaceful coexistence of diverse cultures which share the same geographical boundary.

The starting part of the novel is India which is known for its multi-ethnic, multi-linguistic nation. And next Mexico and Canada are also land of colonized immigrants. All three nations have the similarity which is their pluralistic culture. Then comes the ship, the crew members are also belonging to different nations. There are many animal names mentioned in the novel as it is a story of a zoo keeper's son. Here the survival animals on the lifeboat are taken for analysis. They are Zebra, Orangutan that named orange juice, the hyena, meerkats and the Bengal Tiger that named Richard Parker

Theoretical framework

In order to explain the concept of multiculturalism the following theory is used "Frye's starting point is to admit the principle of "polysemous" meaning a version of Dante's fourfold system of interpretation. This principle can be called an "established fact" he says because of the "simultaneous development of several different schools of modern criticism each making a distinctive choice of symbols

in its analysis." (AC, 72) Northrop Frye's symbolism can be interpreted by the words of Robert D. Denham as "Frye's theory of symbols results in an expansion and rearrangement of the medieval scheme of four levels of interpretation, according to which literal meaning is discursive or representational meaning. Its point of reference is centrifugal. When Dante interprets scripture literally, he points to the correspondence between an event in the Bible and a historical event, or at least one he assumed to have occurred in the past. In this sense, literature signifies real events. (37)

Representation of Animals

The first known survivor of the lifeboat jumps into the lifeboat is zebra which is the origin of South Africa and migration is its survival tricks. Zebra symbolizes individualism and the dangers of passivity which represents how the non-dominant culture is affected by the dominant culture and its passivity adds more suffering to it.

The animal already occupying the lifeboat is the hyena which is the origin of Africa. The hyena symbolizes treachery, negativity, stamina and ferocity which represent how some cultures exercise power on less dominant cultures and disturb the peacefulness of the pluralistic society.

The animal that floats on the bananas is the orangutan which is the origin of southeast countries and one the endangered species. The orangutan symbolizes intelligence and caring which represent how dominant culture holds power over non-dominant cultures and subcultures. The endangered species is on the verge of extinction of cultures.

The animal reaching the lifeboat at last is the Bengal tiger which is the origin of Southeast Asia. The tiger symbolizes strengths and fearlessness which represents the possibility of smooth survival of diverse cultures. Though it is powerful it does not exercise its power till it is required and represents giving space for other culture is one of the traits of multiculturalism

And he comes to a carnivorous island before reaching Mexico beach. When he watches from the lifeboat it is full of trees he thought it would be an illusion, but it is a forest of a low lying island. The whole land is covered with algae, which has multiple taste, similar to its nature, he tastes its sweeten part and leaves out the remaining. He and the tiger return to the lifeboat for sleeping. Other than vegetation he sees plenty of meerkats, he hesitates as he knows that they are carnivorous but they do not harm him. And the island seems to be so mysterious because there are no reptiles or birds. The island make both of them self dependent

for food and water. The self-dependence or less dependence for food on him make him to doubt that Richard parkar would be a threat. In order to avoid that he prefers to stay on trees even at night but Richard parker sleeps on the lifeboat regularly.

During the night all the meerkats sleep on the branches of the trees. When he tries to sleep on one branch of tree many meerkats accompanies him. While he wakes up in the mid night he happens to see a big dead shark floating. The next day he spends time to search for it but he could not find. And the next night he pushes one of the meerkats to the pool, it howls and comes back to the same place and he tries himself by getting down and touches the water of the pool, he feels the irritation on his leg. He understands the reason for the freshwater of the island though is in the middle of the sea. The fresh water is the product of the algae and it turns to be acidic at night which is the reason for the irritation on his leg when touches the water and the reason for the disappearance of the big dead shark. The sea fish gets into the freshwater and they die and they are easy to catch for the meerkats . During night the water turns into acidic so it eat away anything in the pool, so at night the meerkats choose to stay on trees and on lifeboat by Richard parker as they know the reason.

He searches for fruit in trees and finds one at last. While he tries to eat by peeling it but it is not a fruit at all it is a dense accumulation of leaves glued together in a ball and there are human teeth in it and understand the mystery of the island and its carnivorous nature especially the top of the tree and pool at night. He understands the reason for the meerkats who sleep in between. When he comes to know about it he decides to move out of the carnivorous island though it provides food, water and physical comfort. He waits for the return of Richard Parker with loaded meerkats, algae and freshwater for their feeding.

When he narrates the story to the Japanese officials they don't believe it as the meerkats are of South African region especially belong to the desert land. Here the author portrays them on a fresh water island and as harmless animals. Meerkats symbolizes survival and adaptability which is a required quality of multiculturalism. Initially he doubts why there are numerous meerkats and his doubts get cleared after his search and finding. Through this island the author insists that no place is devoid of threat, the meerkats become slave to the comfort and unaware of the dangers. Though there are no predators for meerkats, the

island itself is treacherous in nature. Mutual trust and dependence should be positive in multiculturalism but here the author portrays in a negative way which is unfit for living. So Pi decides to move away from the place but waits for Richard Parkar which signifies his trust on Richard Parker.

The central character Pi is a multi-religious person though he is a young boy he believes in the faith of all three major religions of India. He is opposed by their religious gurus and his parents yet he decided to practice all three religions simultaneously which says the similarity and specialty of all religions.

In pluralistic society people have the choice of different cuisine which is well portrayed in Pi's house while the author goes to listen to his story, he is treated with eastern and western cuisines.

Conclusion

The author insisted multiculturalism in the novel which is very familiar to him. As he has personal experience in it he represents the qualities in his novel which makes readers of different countries to read the story. The advantages of multiculturalism are adaptability, tolerance and tastes of different cuisine as well as the challenges of domination, clashes are all well portrayed by the author. The tolerance is the basic trait of multiculturalism which makes Pi and the tiger to reach the land successfully.

References :

Barry, Peter. 2018. Beginning Theory An Introduction to Literary and Cultural Theory. Newdelhi: Viva books private Ltd.

Frye, Northrop. 1957. Anatomy of Criticism: Four Essays. England: Princeton, Princeton University Press. 2000. Ebook

Martel, Yann. 2003. Life of Pi. Edinburgh: Canongate Books Ltd.

https://animalhype.com/symbolism/hyena/

https://en.wikipedia.org/wiki/Salad_bowl_(cultural_idea)

https://macblog.mcmaster.ca/fryeblog/critical-method/theory-of-symbols.html

https://whatismyspiritanimal.com/spirit-totem-power-animal-meanings/mammals/orangutan-symbolism-meaning/

https://whatismyspiritanimal.com/spirit-totem-power-animal-meanings/mammals/meerkat-symbolism-meaning/#:~:text=Meerkats%20symbolize%20group%20efforts%2C%20f

https://www.safari-center.com/daily-life-interpretations-of-zebra

https://www.worldbirds.org/tiger-symbolism/

❒❒❒

1. PhD Scholar, PG & Research Department of English, Thiruvalluvar Govt Arts College Rasipuram, Tamilnadu, India.

2. Associate Professor & Head, PG & Research Department of English, Thiruvalluvar Govt Arts College, Rasipuram, Tamilnadu, India.

The Objective Outlook in J.M Coetzee's *Disgrace*

–Nithya M
–Dr E. Kumar

Coetzee is an outsider observing the incident in the novel, but there is no subjective notion to it, only an objective mission.But the reader will surely get a sense that the author, J.M. Coetzee, is not part of the narrative. JM Coetzee speaks through the main character, whose name is David Lurie, who is actually a professor at Cape Town Technical University. He was divorced twice. And rather, unfortunately, he thought he had solved the problem of his middle age crisis of having sex.Every Thursday afternoon, he visits a prostitute named Soraya, and he is involved in a very mechanical way of lovemaking. Every time he met her, she asked the same question.

J. M Coetzee is a wonderful South African writer whose works are not only about the apartheid period, but they do have an universal appeal. He is one of those rare writers whose books are globally read and appreciated. The authors present a very objective view in the Novel. Events like racism, rape, and sensitive issues are all seen in an objective way. He is brutal in his depiction, and he is conscious of have a secular outlook on life which is void of God. In this paper, J.M Coetzee can be seen as very objective writer and a prophet of pain. Especially when one considers his novel Disgrace.

Keywords: Objective, Coetzee, Subjective Fiction

Introduction

J.M. Coetzee is a wonderful South African writer whose works are not only about the apartheid period, but they do have a universal appeal. He is one of those rare writers whose books are globally read and appreciated. He has two Man Booker Prize-winning novels to his credit, as well as the Nobel Prize.He also engages in intense disputes about racial and political power and engages in conversation with the great European novelists. The Master of Petersburg, by Fyodor Dostoevsky, is a response to Robinson Crusoe in Foe, by J.M. Coetzee. *Waiting for the Barbarians, Life and Times of Michael K, The Master of Petersburg, and Disgrace* are among J.M. Coetzee's best-known books. He has also written two memoirs, *titled Boyhood and Youth*, which chronicle his childhood and adolescence. As a visiting professor, Coetzee has held positions at many prestigious universities, including Harvard, Texas A & M, Johns Hopkins, and the Universities of Chicago and Adelaide.

Objective Outlook

Coetzee is a person who tries to depict things as objectively as possible. There are very few subjective ideas in his novels. He's blunt about things and his eyes for such objective third-person understanding of ideas help his fiction to reveal the true self and nature of human beings. In this paper, J.M. Coetzee can be seen as a very objective writer and a prophet of pain. Especially when one considers his novel, *Disgrace.* Disgrace won the Man Booker Prize and is one of those rare novels that makes the reader think about the idea of shame. The main character, the plot, and the inherent ideas of the novel all exhibit the great theme of *shame*.

The novel *Disgrace* is scintillating right from the start, even the very first words, the opening lines, which are considered by poets as well as novelists to be of prime importance. J.M Coetzee does begin with an objective opening. He says, "For a man of his age, fifty-two, divorced, he has, to his mind, solved the problem of sex rather well." This direct, matter-of-fact tone is sustained throughout the text.

Coetzee is an outsider observing the incident in the novel, but there is no subjective notion to it, only an objective mission.But the reader will surely get a sense that the author, J.M. Coetzee, is not part of the narrative. JM Coetzee speaks through the main character, whose name is David Lurie, who is actually a professor at Cape Town Technical University. He was divorced twice. And rather, unfortunately, he thought he had solved the problem of his middle age crisis of having sex.Every Thursday afternoon, he visits a prostitute named Soraya, and he is involved in a very mechanical way of lovemaking. Every time he met her, she asked the same question. Have you missed me? And he will reply, "I miss you all this time. Make love." The narrator, or the narrative by this time, does not explain much. But there is an uncanny feeling that the question is cordial by Soraya. But his reply is mechanical. This mechanical nature can be seen throughout the novel. And when Soraya leaves him as she has her own family, David is distraught. This is when he starts to have an illegal affair with the student. But this affair led to all kinds of problems in his rather systematic mechanical life. A committee is allowed to question this behavior. Unfortunately, David Lurie pleads guilty. But what is interesting about the jury is that the people who make up the jury want him to just apologize, bear the shame, and get back to work. But David is not such a person. He wants them to punish him. For his misdeed, The novel and all the remaining chapters can be read closely; one can understand different ideas being sown throughout the novel, yet they are objective in nature and never subjective. From what Jim writes in this novel, a completely objective viewpoint

The first chapter talks about the problems of David and Soraya. However, once the story moves on to the sexual affair with Melanie David, the student is summoned before the Committee of Inquiry and, as already mentioned, they ask David to discreetly come to a compromise so he will not lose his job. They asked David to apologise and be repentant. However, the sixth chapter contains an outstanding description of the heading for the committee. When one reads this, one

will be reminded of Kafka. The reply by David is interesting, without doubt, and it is interesting even in its melancholic tone. David takes an almost very stubborn stand as far as the committee is concerned, and the committee is frustrated by David's amnesia. For instance, David says, frankly, Frankly, what you want from me is not a response but a confession. Well, I make no confession. I put forward a plea, as is my right. Guilty as charged. That is my plea. That is as far as I am prepared to go. ' When finally the committee asks David to issue a statement of apology in the spirit of repentance, he replies, "We went through the repentance business yesterday." I told you what I thought. I won't do it. I appeared before an officially constituted tribunal, before a branch of the law. In front of that secular tribunal, I pleaded guilty, a secular plea. That plea should suffice. Repentance is neither here nor there. Repentance belongs to another world, to another universe of discourse.(25)

Repentance belongs to another world, not the one of discourse. This dialogue clearly shows that the Christian idea of repentance is not the one that David is going to embrace. Coetzee is an objective writer, and he talks about such subjects in a subtle manner. Even the metaphysics of God, religion, and clergy are abstract and don't exist. It is more of an atheist revolt against the worldview. David does not wait for the punishment to be announced. He leaves his job. And he leaves to visit his daughter Lucy. His daughter is a small farmer in the suburbs. Just like her father, Lucy is very stubborn, but intelligent and independent. They live in a place where the black people of South Africa after the end of apartheid are free. Petrus is a black-aged man with whose help she runs the farm, and he has two wives and a lot of children, but he has an eye on Lucy and her farm too.

While he stays at Lucy's place, David joins a charity animal welfare clinic, and this is the only place where they treat sick, crippled, and abandoned animals at the clinic. And this is the only place the novel shows the human condition as well. It could be read in a metaphorical sense and, unfortunately, in an atmosphere of crime and lawlessness and in the new political freedom that is enjoyed by blacks.

Then a terrible incident happens on Lucy's farm. They forcibly entered the farmhouse where they raped Lucy and tried to burn David to death. However, Lucy keeps mum and she gets pregnant. David gets angry with her for her decision to keep quiet about the rape. But Lucy tells him, with firmness, that this assault on her was historically due. At the present time, South Africa.This stubbornness of the characters can also be understood as the way Jim Coetzee has an objective sense of his characters as well. They do not regularly showcase subjective emotions. They are blunt about accepting things as they are.

If one continues to read the novel, the end of the novel is unbearably tragic, and the reader's heart will sink in the deepest sorrows. This is a ruthlessly pessimistic novel. The only thing that is pro-life is his daughter's pregnancy. However, he somehow recombines with his daughters and demons, and he decides to stand with them. In fact, it's a very normal part of David's life but often ignored by critics as well.

There's an interesting conversation between Lucy and David. If she has already started loving the unborn child, but 'the child? No.How could I? But I will. Love will grow—one can trust mother nature for that. ' This profound insight —'Love will grow'—one can trust mother nature for that'(160).

One can trust Mother Nature for that, and as a profound insight, one can trust Mother Nature for the same. This seems to counterpoint the opening insight, or rather mocks the empty human soul, an observation made by the writer previously in the novel. For Coetzee, mother nature and God are separate. But in most religions, they are both the same. For him, Mother Nature has a womb and she's full of love, as God is not. God does not love. His idea of God is different and it is moving a bit away from the spiritual emptiness of modern men. In fact, many of the modernist writers who wrote this kind of novel faced two problems: self-deceit and concealment. And it can also be seen as the narrator is continuously quarrelling with God about God without mentioning the word God as much as possible. So this is probably an embarrassment, as writers do not want to be termed as religious. In a very dramatic moment in the story, when David meets Melanie's father in order to apologize, an argument starts between them on the principle of life. In Repentance the girls' father agitatedly asks David, "'

"May I pronounce the word God in your hearing? You are not one of those people who get upset when they hear God's name? "(73)

As Ranajit has pointed out, God cannot be taken out of such discourses. This place belongs in the tradition of Kafka and Beckett, but because his purpose was to read this novel with all the trappings of a metaphysical novel, even of its highly concealed modern versions, one can appreciate Coetzee for being successful in this project. He achieved the difficult goal by adopting a multi-layered plan in the conceptualization and construction of variations in confusion. One can see that J.M. Coetzee was an impassive truth seeker. He almost appears as the linguistic Bone Collector of reality. There is not a single shade of fantasy to creep into his narrative. And without a doubt, God's not out there, and as with his predecessors in their total denial of existence, there is no trace of spirituality in human nature in this novel. Thus, it is imperative to end by saying that because the writer is completely objective, spiritual or God, the idea of things having a meaning and purpose is non-existent for him. J.M. Coetzee might simply be a Prophet of Pain.

Works Cited:

Coetzee, J. M. Disgrace. Vintage, 2000, https://doi.org/10.1604/9780099289524.

Das, Ranajit. "Prophet of Pain—J.M. Coetzee and His Novel 'Disgrace.'"Indian Literature, vol. 48, no. 1 (219), 2004, pp. 165–73, http://www.jstor.org/stable/23341436. Accessed 13 May 2022.

❒❒❒

1. Ph.D Research scholar in English (part time), Karuppannan Mariappan College, Muthur
2. Research Supervisor, Assistant professor & Head, Department of English, Shree Venkateshwara Arts and Science (Co-Education) College, Gobichettipalayam, Erode.

Research Article

Female Psyche's Quest for Liberation - From Subservience to Challenging Authority: Mahesh Dattani's "Bravely Fought the Queen"

–R. Mythili
–Dr. V. Suganthi

The play unveils the real attitude of men towards women through the portrayal of Jiten. A discussion among Trivedibrothers on promoting their ReVaTee manufacturing company's women's nightwear through an advertisement shows how males perceive the world of women.

Mahesh Dattani's craft of making drama is unique as his plays bring to the surface human being's conceited behaviours, hidden sufferings and swallowed truths.The play "Bravely Fought the Queen" exposes the impact of male tyranny on the lives of two sisters Dolly and Alka married to two brothers Jiten and Nitin who live as a joint family with their aged mother-in-law Baa. The play depicts how a selfish, arrogant, deceitful, disloyal and lecherous male leads his life focussing on his own interests and priorities ignoring the physical and psychological wellbeing of his life partner, children or other family members. Each female tends to react in her own way according to the level of imposed subjugation. The amalgamation of patriarchal mindset of the male protagonists, the conditioned mindset of the old generation female character and the economical dependency of the educated female protagonists intensify the complexity of their lives in the Indian patriarchal societal set up. Exploring the worlds of both men and women, penetrating through the interiors of female psyche, this play of Mahesh Dattani makes everyone realize that crystallization of the dogma of feminine liberation is only possible when the worlds of both men and women, instead of being indifferent to each other, converge to break the shackles and come out of the imposed patriarchal ideology of the society.

Key Words: male supremacy, subjugation, Patriarchal mindset, dependency, feminine liberation, patriarchal ideology

Introduction

Mahesh Dattani's craft of making drama is unique as his plays bring to the surface human being's

conceited behaviours, hidden sufferings and swallowed truths.His plays expose the longing of the deserted selves, hollowness in their lives and their struggle for individuality. His play "Bravely fought the Queen" authentically reflects the plight of Indian women who suffer by the chauvinistic attitude and behaviour of their male counterparts, endure the consequences of transmitted belief system of the patriarchal society and struggle for their liberation. The play exposes the impact of male tyranny on the lives of two sisters Dolly and Alka married to two brothers Jiten and Nitin who live as a joint family with their aged mother-in-law Baa. The playwright explores both the masculine and feminine worlds through which the impact of male supremacy over the females and the reaction of the female protagonists towards the subjugation have been revealed.

Interpretation and Discussion

The play evinces how a selfish, arrogant, deceitful, disloyal and lecherous male leads his life focussing on his own interests and priorities ignoring the physical and psychological wellbeing of his life partner, children or other family members. Each female tends to react in her own way according to the level of the imposed subjugation.In the interview of Lakshmi Subramanyam, Mahesh Dattani states, "I am not sure I have portrayed the women as victims in *Bravely Fought the Queen*. I see men as victims of their own rage and repression. This has serious consequences on the lives of women" (130). As he rightly pointed out the men in the play too are the victims of patriarchy; they have been brought up seeing the subjugation of women and as a result, at the later stage, they tend to exhibit complex behavioural abnormalities which affects the psychological wellbeing of their spouses and other family members.

Men's perception of women

The play unveils the real attitude of men towards women through the portrayal of Jiten. A discussion among Trivedibrothers on promoting their ReVaTee manufacturing company's women's nightwear through an advertisement shows how males perceive the world of women. Jiten's response to Sridhar's suggestion reflects his illusions on women and his negligence of women's opinions. His sexist perspective makes him comment on women's complaint of commodification as their pretence. He has neither respect nor consideration towards women. He views women as the objects for gratifying males' desire. With his focus on property and its expansion, he seldom values the female counterparts' opinions. It is evident from the dialogue between Jiten and Sridar. Jiten says, "…Yes! So there's no point in asking a group of screwed-up women what they think

of it. They'll pretend to feel offended and say, 'Oh, we are always being treated like sex objects" (CP 276).

Patriarchy, Domestic Violence

Praful, Alka's brother who has a homosexual relationship with Nitin, treats her sister brutally on an occasion before the marriage of Nitin and Alka when he sees her returning home with a boy. The playwright makes the audience realize how women are subjugated and deceived by the patriarchy and the system of marriage.Praful, being a homosexual, deceives both his sister and his lover Nitin by fixing their marriage. Being responsible for the marriage for her sister, he exploits the situation for his selfish motives. Alka becomes an alcoholic in her attempt to escape from the harsh reality. As per Freudian psychology(45-6l) defense mechanisms of denial and rationalization are being operated as the reaction against the injustice done to her by his brother and husband and eventually, she becomes a boozer.Nitin has neither love nor any concern for Alka.He himself declares, "Alka can stay here, or go away, or drink herself to death, I don't care. It doesn't make a difference to me!"(CP 305).

Jiten, is a stereotypical male. Hedisrespects women, commodifies them and brings prostitutes to his office through Sridar, his company manager. Being rude and lustful, he murders the old beggar woman. He always quarrels with his wife Dolly and assaults her. As Jiten has grown seeing his father's oppressive and aggressive nature throughout his childhood, Freud's repression theory (183) can be attributed to his abnormal behaviour. His rudeness and harshness make him assault his pregnant wife and consequently Dolly gives birth to a spastic child. Motherhood which is an adorable experience becomes a painful endurance to Dolly. Her conversation with Lalitha reveals the pain of a mother of a physically challenged child, although she laughingly emulates her daughter's dance like movements during her physiotherapy.

Collective consciousness and Transmission of patriarchy

The play exposes the transmission of patriarchy through the portrayal of Baa, the mother of male protagonists. Baa is also a victim of patriarchal subjugation. Her present mental disorder is the result of the torture and turmoil experienced by her in the hands of her tyrant husband in her past life. Being aged and bed ridden, she has nothing else to think of and so, can not get rid of her haunting memories of the past. Baa tells Lalitha, "Ten years old and he is afraid of the dark. Afraid to sleep in the dark.Afraidof his father - who is as black as night!"(CP 272).

Baa's act of rejecting Jiten who resembles his father and pampering Nitin and upbringing him as mom's boy also play a significant role in the personality development of both Jiten and Niten. While Jiten becomes violent, Nitin develops Oedipus complex (294-297)The later gets attracted by the father like figures and becomes a homosexual. Being a mother-in-law, she imposes her own anguish upon her daughters-in-law.It is ironical that herself being a victim of authority with her own internal conflicts, she is insensitive towards the sufferings of her daughters-in-law. She carries over the patriarchal mind set and humiliates her daughters-in-law by often naming them as the daughters of whore. She cannot digest the fact that their mother was a mistress of their father.Her conservative mentality finds fault only with the mother of her daughters-in-law.If their mother were the wife and their father had an extramarital affair with another woman, it would not have mattered to her.Mandal's statement clearly depicts this, "Male domination is so rooted in our collective unconscious that we no longer see it. It is so in tune with our expectations that it becomes hard to challenge it" (12).

Defence Mechanism

The imposed roles of the patriarchal society demand women to wear masks and deprive them of their rightful freedom to be themselves. Germaine Greer in "The Female Eunuch" has aptly commented, "Women have been charged with deviousness and duplicity since the dawn of civilization so they have never been able to pretend that their masks were anything but masks" (129). Dolly in the beginning scenes wishes to wear masks and even does not even laugh to keep the mask undamaged. Here, the mask serves as a symbol of patriarchy where men do not allow women to show/exhibit their real selves and keep them subservient to men's identity. The women in the play,due to males' indifference, find their own ways to pacify their longing souls. Kanhaiya, an imaginary lover is the invention of the oppressed sisters Alka and Dolly. Commodification of women is challenged by their creation of a world of fantasy. Feminine self is not satisfied with its existing state. It seeks for self-expression which is denied.Dattani makes it clear that in his plays, "… gender has to do with my own comfort with both the feminine and the masculine self in me…the masculine self is very content; it doesn't need to express itself. But the feminine self seems to seek expression…And since I have the male self, which is equipped to fight as well, it is a proportionate battle" (Chaudhuri 47-48.)

Lack of Identity of women

In the Indian society, it is the men who have their own identity and the identity of the father or the husband becomes the identity of the woman. The play shows how, in the Indian society, women's identity is eclipsed as a daughter by that of her father and as a wife, by that of her husband. Mahesh Dattani has brought out this tendency of the society through the conversation between Dolly and Lalitha. He has made the audience to contemplate on this through making Dolly repeatedly ask the question "Whose wife are you"?(CP 234-235).

Stunted Growth of Women

Lalitha, Sridar's wife is not affected much like Alka and Dolly due to the system of marriage yet her identity is overshadowed by her husband's identity.As her husband is always preoccupied with the official duties, her loneliness and emptiness compel her to be occupied with her own interests and priorities. She tries to fill her vacuum by keeping herself engaged and growing bonsai trees. The playwright through the technique of symbolization reveals how the natural growth and development of women is restricted by the society. Bonsai has been used as a significant symbol of limitations imposed upon women. Acclimatizing to its environment, the tree survives, even bears fruits with the stunted growth and it remains as a dwarf; with all the potentiality, women's growth is stunted by the patriarchal society.

Transformation of Women

Mahesh Dattani's female characters, though in the beginning, being passive sufferers do not resist the male supremacy, gradually realize and get matured enough to question the autocracy and transform themselves to be the warriors. They voice their feelings and questions the authority. In an interview to the *Seagull Theatre Quarterly*, Dattani himself states, "The feminine self is not a victim in my plays. Its subsumed, yes, its marginalized but it fights back" (STQ 32).The paradigm shift of the protagonists from passive sufferers to challengers of male supremacy can be seen in the progressive scenes of the play. At the ball, when Alka expresses her desire to be dressed like Jansi Rani, Dolly likes to be dressed up like whore on the influence of Naina Devi, a great queen,who opted to gratify her interest of singing thumri which is usually sung by the whores, surpassing the social resistance and criticism.

Dolly, who appears to be subservient and week in the beginning of the play, dares enough to unmask herself, prefers to be herself and revolutionarily changes at the end. Like Jansi Rani who fought bravely against the colonizers,

Alka starts to fight against the injustice done to her by her husband and brother to liberate herself from the clutches of oppression. It is seen that the transformation in the thought process occurs amongst both the oppressors and the oppressed. When the oppressors are questioned, they tend to regret their act of cruelty which is an initiation of catharsis. They regret, but they do not reform.

Conclusion

The amalgamation of patriarchal tendency of the male protagonists, the conditioned attitude of the female character of the old generation and the economical dependency of the educated female protagonists intensifies the complexity of their lives in the Indian patriarchal society. The play shows how females transform themselves from their state of being subservient to the male supremacy, by gradually mustering up their courage, gaining momentum in their journey, reach the state of questioning and fighting against the male authority. Exploring the worlds of both men and women, penetrating through the interiors of female psyche, this play of Mahesh Dattani makes the readers and audience realize that crystallization of the dogma of feminine liberation is only possible when the worlds of both men and women, instead of being indifferent to each other, converge to break the shackles andfree themselves from the imposed patriarchal ideology.

Works Cited :

Chaudhuri, Asha Kuthari. *Mahesh Dattani*. Cambridge University Press (Foundation Books Imprint), 2005.

Dattani, Mahesh.*Collected Plays*.Vol. 2,Penguin Publishers,2005.

Freud, S.The neuro-psychoses of defence.Standard Edition, 3, Hogarth Press, 1962.

Freud, S.The Interpretation of Dreams. An imprint of Harper Collins Publishers,1998

Greer, Germaine.*The Female Eunuch.Flamingo,1993.*

Katyal,Anjum.(1999).Of Page and Stage: An Interview with Mahesh Dattani. *Seagull Theatre Quarterly* 24,32

Mandal, Sagar Taranga.*Studies in Mahesh Dattani's Bravely Fought the Queen*.Booksway, 2009.

Subramanyam, Lakshmi (ed).*Muffled Voices: Women in Modern Indian Theatre*.Shakti 2002.

❑❑❑

1. Senior Lecturer, DIET Perundurai, Erode District
2. Assistant Professor, PG and Research Department of English, Thiruvalluvar Government Arts College, Rasipuram

Research Article

Human entrapment due to Cultural Confrontation : A Study on Anita Desai's Novel Fasting Feasting

–Dr. K. Ramachandran
–R. Madhan

Ludmila Volná , in her research article, "Anita Desai's Fasting, Feasting and the Condition of Women" recommends the combined effort of both male and female to work towards the liberation of women slavery in India. Uma recognises her predicament in the end and tries to get maximum happiness through making use of the opportunities she gets. Arun too recognises his sister's predicament and wants to liberate her.

The novel *Fasting and Feasting* is different from all other novels written by Anita Desai. Most of her novels are deeply involved with feminism. She used to expose the patriarchal domination and their adverse impacts on women in general. However in this novel *Fasting Feasting,* she explores the pertinent issue of existence of life on earth. Life has become meaningless and painful for the people belonging to various cultures. It has become all the more difficult for the people aspiring to adapt other culture. This paper investigates how the cultural confrontation due the adaptation of new culture has an adverse impact on the individuals either in India or abroad. It further foregrounds the fact that both sexes, men as well as women are equally affected in different way. Transformation from one culture to another culture couldn't make one's life easy and comfortable. Fasting is the symbolic image of Indian diet while feasting is the symbolic image of the diet followed in the western world. Fasting culture in India has made women subordinate and dependent on others. Women have to cook for the whole family but they would eat the remaining food in the end. In contrast, women enjoy freedom and get unlimited food in America. They suffer from overeating and thus ending in misery. Real happiness is not found in any culture whether it is conservative or liberal.

Key-words : Entrapment, predicament, Confrontation of culture, overeating, scarcity, traditional diet, existence, survival

Introduction

Anita Desai is a popular Indian fiction writer. She has been acclaimed for her novels exposing the hardship experienced by the women in a patriarchal

society. Feminism is the focus point almost in all of her novels. However, the novel, *Fasting and Feasting* is an exception. It questions the human existence. She explores the unhappy life undergone by the characters in various situations belonging to two different cultures of India and America. With flashbacks and forewords depiction, Anita Desai tries to pinpoint the limitations of human happiness. Different cultures are in confrontation with each other. They are illustrated with the depiction of four main characters. They are Uma, Aruna, Anamika and Arun. They live in different places and brought up in different environment. They all live in misery. They search for peace and happiness even outside their culture but couldn't find real happiness and peace.

Research Purpose

The purpose of this research article is to foreground how the cultural confrontation could lead to a meaningless life resulting into the entrapment of misery and domestic slavery. It further investigates human predicament in different cultures and the result is that everyone is entrapped and has to lead a miserable and painful life. Beauty, intelligence, boldness and innovative mind do not help to escape human entrapment in any culture. Given the situation, women are the unfortunate victims as they are entrapped into marriage and then have to lead a slavery life in her in-laws' house. Even men are also no exception to the human predicament of misery and pain as they can't do what they wish to do. The family set up in India creates so many barriers to the individual quest. It is not so different in western culture. People are entrapped into the plenty or feasting.

Methodology

This study is based on quantitative and qualitative analyses of various research articles, books, news and other media reports.

Literature Review

A literature review is an evaluative report of information found in the literature related to my selected area of study. It describes, summarizes, evaluates, clarifies and substantiates my research. The following are the research articles related to the topic.

Ravichandran, T. in his research article, "Entrapments at Home and Abroad in Anita Desai's Fasting, Feasting" outlines how the women as well as men are entrapped in their social set up. They try to confront the culture and finally surrender to them by accepting the human predicament enforced by the cultural set up in India and abroad. He analyses character by character and reveals how human existence is meaningless in different cultures to both the sexes and to different

personalities. Asok A.R in his research article "Projected Dichotomies and the Bi-Cultural Pulls in the novel, Fasting, Feasting" summarizes the themes like gender equality, resistance to other culture and the dilemma to adapt or remain in the same predicament of existence in one's culture (Asok, 2019).

Ludmila Volná , in her research article, "Anita Desai's Fasting, Feasting and the Condition of Women" recommends the combined effort of both male and female to work towards the liberation of women slavery in India. Uma recognises her predicament in the end and tries to get maximum happiness through making use of the opportunities she gets. Arun too recognises his sister's predicament and wants to liberate her. In this way, the synthesis of understanding and effort can go miles to being gender equality in India as well as abroad. (Volna,2005).

Syed Hajira Begum, in her paper, "Culture-Based Reading of Anita Desai's novel

Fasting, Feasting," states that unlike other feminist writers, Anita Desai focuses on psychological aspects of women characters in all her novels. In the novel, *Fasting, Feasting,* she explores further deep into the psychological suffering of human in general, women in particular. Women remain passive throughout the novel. They bore all the suffering meted out to them by the patriarchal culture in India and the individualistic society in America. The elaborate portrayal of the characters like Uma, Melanie and her mother, Mrs Patton, she wants to point out how patriarchy is all encompassing irrespective of any culture in any place (Begum, 2017).

Elena Stoican, in her research paper, " Indian Female Identities, Between Hindu Patriarchy and Western Missionary Models in Anita Desai's Fasting, Feasting and Clear Light of Day" emphasizes that transcendent urge to reconstitute their acquainted cultural models along Western culture. Whether involved in migration or living in with the usual existence in India, Uma (Fasting, Feasting), Arun, Aruna and Anamika are exposed to cultural confrontation which leads to identity negotiation (Elena, 2015).

The above articles, summaries and research papers focus mainly on women identity and their oppression in a patriarchal society. In this way this research paper investigates vividly how the cultural confrontation brings misery and unhappiness to both the men and women equally.

Fasting and Feasting

The title is suggestive of two different and contrasting cultures with extremely opposite lifestyle involved. Fasting suggests people in India eat less or they get

less to eat. Sometimes fasting is forced upon especially on women. Men get the first preference to eat, then the children and finally the women have to eat the remaining the little food. Fasting do not make people good or bad in any sense. Uma, the main character projected in the plot, undergoes ill treatment at the hands of her own parents Papa Mama.

"All morning Mama Papa have found things for Uma to do. It is as if Papa's retirement is to be spent in this manner—sitting on the red swing in the veranda with Mama, rocking, and finding ways to keep Uma occupied. As long as they can do that, they themselves feel busy and occupied"(133).

It is really shocking to know how a daughter is being used as a domestic servant in her own house. She is being deprived of her basic rights such as education and the right to the freedom of speech. She is asked to drop out of the school to take care of her own little brother. She has been married twice and divorced once. Though she wanted to go abroad she was not allowed and asked to help all the family members especially her brother Arun. He has been provided all the care and facilities to make life more comfortable and happy.

Aruna is Uma's younger sister. She is beautiful and married to a rich businessman in Mumbai. Aruna is also found unhappy and miserable as she has to follow what her mother in-law's and husband. Anamika was a clever and active girl. She is cousin to Uma. She used to be creative and smart. Her creativeness and smart work couldn't save her life as she was murdered for dowry. Through the portrayal of the characters Uma, Aruna, and Anamika, Anita Desai wants to show entrapment of women in the society.

Arun lives in the world of Feasting. i.e. America. However, he can't eat the food they eat. He desists eating raw meats and steaks. He likes to eat only vegetable food. He goes against the wish of his father as for as the food is concerned. The family with whom he stays fail to understand his way of life. He didn't like to go abroad. It was his father who took initiative and arranged for scholarship. Hence Arun also leads a life of misery there. The character Melanie the daughter of Mr Patton is symbolic image of how people suffer of over eating.

Entrapment

Almost all the characters present in the novel fall into entrapment. Uma who looks ugly, clumsy and unintelligent is trapped in her home. Her entrapment is ironically set as she has become a victim to her own parents. They treat her as a slave and never allow her to go outside. She lives in her house as a baby sitter. She takes care of her own brother and serves for all. Uma wants to continue

her education. She pleads with the nun in the convent. She is forced to drop out of the school stating that she is not fit to study. When Uma protests, she is coaxed and cajoled to look after her own baby brother. She is also threatened of dire consequence.

'But ayah can do this—ayah can do that—' Uma tried to protest when the orders began to come thick and fast. This made Mama look stern again. 'You know we can't leave the baby to the servant,' she said severely. 'He needs proper attention.' When Uma pointed out that ayah had looked after her and Aruna as babies, Mama's expression made it clear it was quite a different matter now, and she repeated threateningly: 'Proper attention' (31).

Her entrapment is due to her physical and mental infirmities. She accepts her predicament silently. Her protest is over powered by the Mama Papa in the house. She has no holiday. She has to work more during the weekends. Thus life meant nothing and meaningless to her existence.

"There were the wretched weekends when she was plucked back into the trivialities of her home, which seemed *a denial*, *a negation of life* as it ought to be, somber and splendid, and then the endless summer vacation when the heat reduced even that pointless existence to further *vacuity*"(21)

Aruna is a younger sister to Uma. She is presented as beautiful, bold and intelligent. She is given good education and married to a rich businessman. Despite her positive qualities and richness, she is too entrapped to her husband's domination. She can't take any decision. She is dependent on her husband's family. Aruna's wisdom and richness do not make her happy and content. "the wisest, … the handsomest, the richest, the most exciting of the suitors who presented themselves"(101).

Aruna is angry over little things happening around her. Her temperament makes her unhappy and trapped into a meanigless life in her husband's house.

Seeing Aruna vexed to the point of tears because the cook's pudding had sunk and spread instead of remaining upright and solid, or because Arvind had come to dinner in his bedroom slippers, or Papa was wearing a t-shirt with a hole under one arm, Uma felt pity for her: was this the realm of ease and comfort for which Aruna had always pined and that some might say she had attained? Certainly it brought her no pleasure: there was always a crease of discontent between her eyebrows and an agitation that made her eyelids flutter, disturbing Uma who noticed it (109).

Anamika is Uma's cousin. She is projected as very pretty, liberal and smart girl. She is too entrapped to her in-laws. She suffers so extreme in the sense

she has been burnt to death in the end. Anamika lives in a patriarchal society that considers higher education to beAnamika's parents are indifferent her beauty, intelligent and boldness. They think to get a good husband to save family prestige. So they have chosen an old man to be her husband who is "totally impervious to Anamika's beauty and grace and distinction" (70). She is enslaved to her in-laws' house. Though she got the scholarship, she couldn't get her husband's permission. In fact she has to eat in shifts "first the men, then the children, finally the women"(70). After a miscarriage, she is burnt to death citing by her in-laws.

Arun is the main male character in the novel, who seems to enjoy more privilege than anyone. However, he too is entrapped to the wishes of his parents. He goes to America unwillingly. Arun hates non-vegetarian food. His father is disappointed with his desire for vegetarian food. His father is vexed at this.

Papa was always scornful of those of their relatives who came to visit and insisted on clinging to their cereal-and vegetable-eating ways, shying away from the meat dishes Papa insisted on having cooked for dinner. Now his own son, his one son, displayed this completely baffling desire to return to the ways of his forefathers, meek and puny men who had got nowhere in life. Papa was deeply vexed (32- 33).

The people in America too entrapped to their lifestyle of having plenty to eat. Through the character Melanie, Anita Desai wants to convey that individuals do not live happy life in a country which celebrates individual freedom. Mrs. Patton's daughter, Melanie, finds the vegetarian food revolting, but refuses to taste it, Arun has to eat it all. Melanie suffers from bulimia—a disorder in which overeating alternates with self-induced vomiting, fasting, etc. Her bulimia and her mother's craze for buying food items to fill the freezer, indicate the consumerist society that she come from, where excess becomes the sickness. "one can't tell what is more dangerous in this country, the pursuit of health or of sickness"(204-205).

This predicament of educated women can be traced to the similar work 'As if I am Not There' by Slavanka Draculic and 'What the Body Remembers' by Shauna Singh Baldin. S. is the heroine and is a teacher. She is entrapped into the hands of military when there started Bosnian civil war. Her beauty and education could not save her from the enemy soldiers who rapped and abused her (Justin, 2016).

Conclusion

Cultural confrontation is normally not an easy thing when there is an upraise of nationalism and patriotism all over the world. Hence, whoever wishes to challenge the cultural setup are trapped into another culture that easily enslaves them. America

has boasted of its progress and the individual freedom for many years. However those wishing to adapt that culture fail miserably like Arun. In the same way Melanie who wished to adapt Indian diet fails miserably. She too feels entrapped by the benefit of Indian food. On the other hand Uma, Aruna and their cousin Anamika also end up in misery as they try to challenge their culture. Uma could not obtain any freedom or happiness while trying to escape from the clutches of her domestic slavery enforced by her own parents. She learns to accept the limitations of her culture and tries to find happiness in whatever freedom she could get in the busy domestic life she endures. Aruna, though married to a wealthy businessman is not happy when she tries to dominate the family members. She is rather upset and vexed to have married to a wealthy husband. However, she too learns to accept her predicament by putting up her smiling face making to believe that she is happy. Arun, though well educated and settled in America is not entirely happy as it was his father's wish he carried out. Hence beauty, wealth, intelligent and boldness do not help to escape from the entrapment one falls by confronting one's culture.

References :

Anita, Desai, *Fasting, Feasting* (London: Vintage, 1999) 3.

Asok A.R "Projected Dichotomies and the Bi-Cultural Pulls in the novel, Fasting, Feasting." *Quest Journals*, Journal of Research in Humanities and Social Science:*Volume 7.4 (2019)pp.:14-17*

Elena, Stoican. " Indian Female Identities, Between Hindu Patriarchy and Western Missionary Models in Anita Desai's Fasting, Feasting and Clear Light of Day." University of Bucharest Review: Literary and Cultural Studies Series, January 2015.

Justin, Z. "An Effective use of Traumatic Narrative in the Post-conflict Novel *As If I am not There."* Man In India: Serial Publication, 96.9.(2016).

Magda Costa, "Interview with Anita Desai, *Lateral* (March 2001). http://www.umiacs.umd.edu/users/sawweb/sawnet/books/desai_interview.html. [12/02/2021].

Ravichandran, T. "Entrapments at Home and Abroad in Anita Desai's Fasting, Feasting" Department of Humanities & Social Sciences, IIT Kanpur. Retrieved 12th February, 2020

http://home.iitk.ac.in/~trc/Anita%20Desai-ff.pdf

Syed Hajira Begum (2017). Culture-Based Reading of Anita Desai'S Novel

Fasting, Feasting. International Journal of English Language, Literature in Humanities, 5.10, October.

Sylvia Brownrigg, "Fasting, Feasting" by Anita Desai.http://archive.salon.com/books/review/2000/02/17/desai/print.html. [12/02/2021].

Volná, Ludmila. "Anita Desai's Fasting, Feasting and the Condition of Women." CLCWeb: Comparative Literature and Culture 7.3 (2005):<https://doi.org/10.7771/1481-4374.1272>

❒❒❒

---

1. Assistant Prof. of English, Arignar Anna Govt Arts College, Namakkal.
2. Research scholar (Ph D), Arignar Anna Govt Arts College, Namakkal.

The Idea of Psychological Consciousness of Beauty in Toni Morrison's *The Bluest Eye*

–Dr. G. Ruby
–S. Raja

Morrison coins the word, Suspended Woman, and uses it much more frequently in the novel. She wants to identify Picola as someone who is suspended because; she is a bundle of self loath. Moreover she is prone to psychological trauma because she has been subjected through a lot of sexual violence and incest that she cannot but understand whether or not her pains are justified in the novel. one has to understand that The Bluest Eye has become a subject of debate when it was first published.

The paper aims to disseminate and discuss the color consciousness and color complexities in the framework of race, sex and class. The novel, *The Bluest Eye* differs in range, scheme and context compared to the other novels which glorify whiteness and the white people. One of the most intricate complaints of Morrison is the attitude of the black women who have a lion's share in racial segregation. These women go behind pseudo beauty and therefore can never bring in a tight water mark to define beauty. The basic question the novel raises is, whether or not beauty is skin deep. The novel makes the readers rethink on the idea of beauty and its detrimental effects on the children of the prospective African American generation.

Key Words : Beauty, Race, Class, Sex, Sexuality, Blackness.

Toni Morrison began her career at Harvard trying her hands at teaching and lecturing. In the evenings, she had interactions, discussions and deliberations on the ideas of race, class and sex. She began writing tracts and projected her socio-political ideologies at the outset. The idea of novel writing came to her when she wanted to expose the pangs of psychic turmoil which she had seen others, especially her students at the university experienced the sense of segregation and disintegration. The novel was essentially her tool to expose and expunge the politics of racial discrimination.

The writer talks about two dimensions to vulnerability when writing the novel or even before the idea of conceiving to write the novel. The first is the illusionary idea of how much intense the feeling of being ostracized in the name of race could reach

the African American children. More overtly, how can the beauty standards of being a black girl dehumanize Picola? These are some of the most intricate complexities which the novelist had to confront internally when trying to write out her mind in her debut novel. The New York Times regards the novel as a piece of work so much akin to prose where one does not read the work as prosaic but rather look at the writing of Morrison as a speech vented out in anger and disgust. To pay back by the same coin as how the westerners have used racism against the Black people.

The novel's structure outlines the various family set ups which existed in Ohio during the early 1940s. Picola, the novel's narrator and Claudia, the next door neighbor have the same familial situations. Both of them belong to the black community and hence they are themselves alienated from the rest of the crowd for they are thought to be too much dark compared to the others in their living area. The novel delineates two different kinds of people who think that black is a color to be neglected and done away with. The first is Picola, who understands that she is hated by her own self and the ones around her for the sake of her color. The other is the character of her mother Pauline who thinks that watching over Hollywood movies can bring her close to the white culture. Picola thinks that eating candies can make her fair while her mother thinks that watching movies can bring her close to white skinned realities. Invariably both the mother and the daughter are trying to play the games of self destruction and self deception thinking of the fact that they are ugly because they are black.

Morrison coins the word, Suspended Woman, and uses it much more frequently in the novel. She wants to identify Picola as someone who is suspended because; she is a bundle of self loath. Moreover she is prone to psychological trauma because she has been subjected through a lot of sexual violence and incest that she cannot but understand whether or not her pains are justified in the novel. one has to understand that The Bluest Eye has become a subject of debate when it was first published.

This is because the novel did not have the acceptability and reliability of looking at it as a work of vehement criticism against the American culture. Although deemed as one of the cult classics of the American literature, the novel still can't be kept on line with the European literature which glorifies the English race and class. On the contrary, the novel is seen as a work of immaturity where a woman tries to blame the dominant white people who have given them their space to live and employment to survive. Scientifically and culturally, the novel is an attack on the climatic conditions of a country which decide the color culture of its people. The Africans are dark because they live on Grass lands and deserts unlike the Americans who are much more exposed to colder climates. On the whole, the nature and the climatic conditions are to be blamed in the context and not the ones who

are born with a particular color faculty. Although most of the novel remains autobiographical, there are many passing references to The Harlem Movements and The Black Renaissance where people are coerced to go back to their roots and feel proud of their color and culture and not be bogged down by the white man's theory of considering white as the most beautiful color and black as an inferior color and race.

A lot of influences had sourced her writing. The most prominent of them was the dual contradictory influences that shaped not only her writing but also the culture of African American ways of life. On the one hand, she had the Black Renaissance which gave much impetus to the idea of looking within, realizing the fact that beauty did not rest in whiteness but blackness also contributed facets to beauty. The other was the Vietnamese war which brought the interference of the United States in support of Vietnam. Strong herbicides were used during the war and therefore the entire environment went degraded.

As a writer Morrison wanted to turn tables and look at the idea of race through the eyes of envy and jealousy. She created the character of Picola from the movie, imitation of life, where a character Piola was transposed to Picola. And this being the debut novel of Morrison, she wanted to highlight the trauma faced by children who suffer the infringements of color politics. She had said in one of her interviews that no author had never ever tried to project the psychological predicaments of a child and therefore she took up the task of showing the world that even children can be and become victims of segregation and apartheid. As a writer, she has always been obsessed with the idea of the other, which is opposed to the matrix of set civilization. One could find a cultural binary where one segment of the people are civilized and celebrated while the other section of the people are dehumanized as the other or dismissed as slaves or unrefined people. She draws the same parallel to Picola and the rest of the world where the western world looks at the slaves as the other, as someone who needs more civility and humaneness. The same can be seen in the concept of gender where a man calls himself complete because he is all powerful and undermines women as the other or someone inferior. The novel looks at the idea of gender and race through the eyes of Picola. One has to understand that the novel talks about race and gender in terms of the otherness. As a child, Picola is ignored not because, she is of a lower color and lower class too. Simone Debeavoir in her work, *The Second Sex* explores the ideas of the other, as seen in the society as

Thus humanity is male and man defines woman not in herself but as relative to him; she is not regarded as an autonomous being… She is defined and differentiated with reference to man and not he with reference to her; she is the incidental, the inessential as opposed to the essential. He is the Subject, he is the Absolute – she is the Other.(15)

The novel explores the subtle idea of stigma when the author wants to differentiate the differences between the other and the duty of an individual to make the other realize his uniqueness as being the other and not as someone who needs support and solace among the white crowd. Morrison herself says that the sufferings of a little girl must be brought to the centre and her inhibitions to the periphery. The naming of the novel sections to different seasons instill the ideas of compulsive change in the minds of the slaves which they have expecting ever since they were brought to the European land as slaves and serfs. The use of the Primer in the novel amounting to present the lives of Dick and Jane are only reminders of the fact that happiness and completeness in life can be attained only through being a part of a happy family as presented through the family of Dick and Jane.

The novel was an expansion of the idea of a short story which Morrison wrote in her days at University where she had to support her children. Literature was her only source and solace and therefore she began to look at literature as a life giver as well as financial strength. Though vividly based on the idea of her school mate who prayed for blue eyes ever since she was a child, the novel looks at the pseudo envy created by the society which says that beauty lies in the eyes of the westerners and the rest of them are unworthy of being called beautiful. To Picola, beauty was equated with goodness where she had convinced herself that the only solace she could get would be the pair of blue eyes after which she would cease to see any evil around her. On the whole, her eyes, especially bluest eyes represented the personification of all goodness. The novel represents multiple voices in narration where one of the voices expresses concern over the eyes and says, "she would see only what there was to see: the eyes of other people" – looking at her and judging her not worthy of looking at" (35).

The intensity of psychic disintegration begins in the novel when a character called, Soap Head Church, a gay and a misanthrope gives Picola a dog and tells her that the day the dog begins to show signs of love or anything pertaining to closeness with her, that would be the day when she would get a pair of blue eyes. Ironically, the day never came to her and the prophecies of Soap Head were falsified. In the turn of events, he even mixed up some poison and asked Picola to feed the dog. Moments after the dog had eaten the poisoned food, it died and the death of the dog showed her signs of tragic trauma. She began to lose her esteem and felt that she would never beget blue eyes. The novel explores the idea of how the concept of beauty had definitely been swayed away or even digressed in the name of putting the west first. One could find that Picola's father, Cholly was always haunted by the thoughts of being called a " Coon", a cat breed which was lousy and timid. On the other hand, Pauline, the mother of Picalo, had dreams of being equated herself to the popular American actress Jean Harlow.

The concept of considering the beauty of whiteness and equating blackness to ugliness had been ingrained in the family of Breedlove ever since they migrated to the northern frontier of the United States. When Picola, left her mother's womb, she was told incessantly and indirectly that her ugliness was the reason for her not being accepted in the society and the family. She therefore made up her mind to become beautiful and the only way was to get an eye replacement. One has to understand the fact that Picola was never ugly she was rather haunted by the corrupt thoughts of hypocrisy instilled by the snobbish white community that success and money chased only the ones with white skin tone and blue eyes. W.H . Grier in the book Black Rage comments on the inferiority of Picola and her obsession with whiteness as

Her blackness is the antithesis of a creamy white skin, her lips are thick, her hair is kinky and short. She is, in fact, the antithesis of American beauty... There can be no doubt that she will develop a damaged self concept and an impairment of her feminine narcissism which will have profound consequences for her character development (32).

The entire novel deals with the various ways by which beauty has been ingrained psychologically. The characters are misled by the turn of events which tell them outright that black is ugly and beauty is in being white. This can be seen even in the smallest examples where the doll which was given to Claudia is white. There is also a high sense of glorification to Shirley Temple. This results in the scenarios where even the adult women try to come terms with the fact that their bodies are agents of self hate. They could not stand any instance of a black blemish across any part of their body. The reason Breedlove family hates their own daughter is because, she is black and is therefore ugly. Morrison tries to infuse the idea of oppression where black women are themselves not trying to allow the fact that they would look beautiful only if they improve their skin tone. This is one such novel where the mind is altered to the expectations of the body. Picola herself comes to terms with the notion that the reason why their family is ill treated by the English is because, they are not white. On the whole, the novel is an ode to the unsung black color which is considered evil not in reality but in the perceptions of beauty created by the white people.

Works Cited :

Morrison, Toni. *The Bluest Eye*. Chicago. Vintage Classics. 2008.

Beauvoir, Simon De. *The Second Sex*.NewYork.Vintage Press. 2009.

Grier, W.H., and Cobbs M. *Black Rage*. New York: Basic Books, 1968.

❒❒❒

1. Research Supervisor, Government Arts and Science College, Komarapalayam, Namakkal dt
2. Research Scholar in English, Government Arts and Science College, Komarapalayam, Namakkal dt

Research Article

Traces of Sigmund Freud's Psychological Elements in the Characteristic Features of Arun Joshi's Protagonists

–Mrs. A. P. Nandhini
–Dr. G. Ruby

The parental loss and his ruthless love for Anna and Kathy made him broken and anchorless which inhibited him from any kind of emotional involvement. Former loved him to regain lost youth whereas latter left him and united with her husband. Consequently, he reflected his foreignness everywhere and examined as an alien. He posed himself as a man of no responsibility, no morality, no ambition, and no involvement and even as no purpose in life.

The present research paper investigates how literature and psychology are inter-related and how Freud's concepts like Mourning and Melancholia, Repression and Uncanny etc. advanced in literary endeavors and gained its shape through the literary characters. Exclusively, it deals with how reflection of the state of mourning and melancholia, Repression, Uncanny having its imprints in the characteristic features of Arun Joshi's novels. Mourning and Melancholia, an essay of Sigmund Freud, in which Freud advocated the possible ways in which the mind grows and functions. In the essay, Freud also attempted to explain how the mourning and melancholic state originates and progresses in humans. The protagonists of Arun Joshi were portrayed in such a way. Obviously, almost all the protagonists of Joshi's novels were unclear about the object that caused loss in their life. Consequently, the protagonists suffer from psychosis. The loss, further, made them traumatized, disturbed, and also distressed. Therefore, they suffer from alienation and aloneness. The paper explores the Joshi's protagonists become victims of Freud's theoretical state of mourning and melancholia. They haunted by their own thoughts, brooding over their state and sinking in the sea of melancholia, uncanny feelings and repression.

Key words: Mourning, Melancholia, psyche, alienation, uncanny, Repression.

Introduction:

'Literature is a Mirror of Life' is a frequently used quotation to describe the reflective nature of literature. It reflects the image of human life. Most art forms reflect human life. Thus, the literature is an art produced on the basis of human life.Human life is an

amalgamation of sociology, politics, psychology, fundamental science and environmental science. Among these elements the psychology forms the vital aspect of literature.

The study traces the traces of psychological imprints in the psyche of the Arun Joshi's protagonists. They were subjected to psychoanalysis according to the Freud's psychic elements mourning, uncanny and repression. In recent days Psychology has become an associated and an integral discipline of literature. There is no human life without psychology and also there is no psychology without human life. Every human move is related to psychology. Literature and psychology are inter-related disciplines. As an art form, Literature not only portrays human life but also the intrinsic nature of the very human being. It cannot be said that the writer is consciously incorporating the psychological elements in his character portrayal because literature is a creative art. The portrayal of different actions and indifferent situations of the characters would lead us to measure their traits with the psychological scale.

The psychological evaluation plays an integral role in character analysis. Literary writers write skillfully with the help of their innate sense. Their skills cannot be enhanced by a trainer or a training. Their creative skill is an inborn one. Sometimes the writers acquire writing skillsby reading the books of eminent writers or by following the style of the versatile writers. But the uniqueness can be ensured only with the writer's innate sense.

The writer skillfully manipulates his mind to dissect and describe the minds of the characters pertaining to the external circumstance. The external circumstance make them to feel and fear, sometimes react and reflect depends upon their psychic moves. Thus, the predicament of human behavior is a central part of literature and the psychology and the literature are inter-related.

Advancement in science and technology caused metaphysical issues among human beings. Everyman lives in two landscapes called exterior and interior. The actions of the former is visible to others but in the latter case actions are invisible to others. There the psychoanalytical scale (approach) is used to measure the intensity and in-depth of the man's mind. Sigmund Freud, C. G. Jung, William James, and Jacques Lacanset theories to diagnose the interior mindscape of human beings.

The protagonists of Joshi's novels are put through extreme psychological pressures. The sense of psychological void they developed and suffered led them

to experience the “chaotic feeling of rootlessness” (M.K.Bhatnagar, 131) and also constantly obsessing their psyche.

Mourning and Melancholia, an essay on psychoanalysis by Sigmund Freud has been playing a pivotal role in the description of literary characters. Freud’s theory helps not only to understand the characteristic features and behaviors of fictional characters but also showcasing the diagnosed image of their unconscious.

Mourning is a process of grieving over a loss of loved human personality or thing or a close-held idea or an idealistic view about something. Melancholia cannot be taken easily as mourning because it keeps the victim in a pathological state and leads to medical treatment. Further, the state of melancholia can be explained as, the victim would experience painful suffering due to dejection, ending of interest “in the outside world” (244), the victim would inhibit all of his or her external activities, lowering one’s own self, developing illusionary expectation of punishments. Almost all the features are same in mourning except self-regard. Mourning would not compel the victim to undergo medical intervention

The state of melancholia is dangerous since it make one to develop suicidal thoughts and necessarily the victim has to undergo medical intervention psychological counselling. A person can be transformed from the state of mourning and the loss can be recovered by replacement but it is not easily possible in the state of melancholia.

Sindi Oberoi:

The Foreigner is a seminal novel of Arun Joshi. Sindi Oberoi, the protagonist was a person who lost every loved one in his life. Sindi a young man from Kenya who lost his parents in his infancy. He witnessed his parents only in the wrinkled photographs. Later, his uncle who brought up him was also died. The continuous loss of loved ones in such a tender age caused him metaphysical problems. Fortunately, Sindi was academically good. Wherever, Sindi goes his psyche encountered the sense of alienation and aloneness due to the loss of his blood relations. Consequently, his soul probed to the mourning and melancholic state alternatively.

The parental loss and his ruthless love for Anna and Kathy made him broken and anchorless which inhibited him from any kind of emotional involvement. Former loved him to regain lost youth whereas latter left him and united with her husband. Consequently, he reflected his foreignness everywhere and examined as an alien. He posed himself as a man of no responsibility, no morality, no ambition, and no involvement and even as no purpose in life. All these irrational behaviors are

mere reflection of his mourning over lost relationship and further he needs no medical intervention or psychiatric counselling as Freud stated and justified in his essay. In his case, he needs only self-realization to overcome his psychic dilemma.

Later, he met June Blyth, an American girl. June was very beautiful and gentle. She became very affectionate with Sindi in a short span of time. In passionate love they had sex abundantly. June wanted him to marry her but his emotional sterility led him to neglect her proposal. He replied plainly "I can't marry you because I am incapable of doing so. It would be going deliberately mad." (133)

Sindi's pompous philosophy put him in an extremely miserable state. In Sindi's case, mourning occurred not only of his lost parental love but also of his close-held idea of being loved is thwarted by his circumstance. His visit to India paved him a way to treat his mourning without his knowledge. In India, he joined Mr. Khemka was imprisoned for his fraudulent income-tax filing. The business began to collapse. Consequently, the laborers of his company began to starve and requested Sindi to take in charge of business. Sindi's detachment compelled him to withdraw his duties. His visit to Muthu's place brought a dawn to Sindi's false belief of detachment. Muthu, the clerk of Khemka's firm explained him that real detachment lies in getting involved. Sindi confessed his belated realization as "Detachment consisted of right action and not escape from it." (The Foreigner, 204) Later, there was a development of understanding between Sindi and Sheila, Khemka's daughter which gives us inkling of future marriage.

Billy Biswas:

In Freud's general thesis uncanny was explained as the uncanny is a feeling of adulthood that reminds us of earlier psychic stages like unconscious life, or of the primitive experience of the human beings. Further, he explained, the process of uncanny can be witnessed in the form of Castration, double, involuntary repetition and animistic conceptions of the universe which is equal to the power of the psyche and stronger than reality.

According to Freud, Uncanny is a process of reviving infantile repressions and confirmation of surmounted primitive beliefs. Freud discuss the term "Uncanny" in the basis of German term *unheilmlich*, a feeling of unease and uncomfortableness. The word uncanny can be defined as mysterious or unfamiliar feeling which would frighten or make uneasy or preternaturally strange; eerie, weird etc.

Arun Joshi's second novel was *The Strange Case of Billy Biswas*. Billy, the Protagonist's very nature parallels to the Freud's theory of Uncanny. Billy

found life terrifying and full of betrayal in a materialistic society. His case was double as his split personality struggle between “the primitive and the civilized” (Siddhartha, 38).

The Strange Case of Billy Biswas delineated with the problem of strange eerie feeling of the protagonist. Billy Bimal Biswas. Billy belonged to Aristocratic class of Indian society. His father believed that Billy had been pursuing engineering in America. But Billy joinedAnthropology out of his interest in primitivism. Consequently, he developed an admiration for the locations of aboriginal tribes and wanted to meet the aborigines as portrayed in his preferred text books. His deep rooted primitivism made him to upset with the superficialities of modern society.

It was an intense opposition for sophisticated life of materialistic world that turned him away from the reality and made him to develop a libidinal attachment with the primitive life. His interest for primitivism was not just an interest but it was an entrenched hallucination. Freud reflected the same as “This opposition can be intense that turning away from reality takes place and clinging to the object through the medium of hallucinatory wishful psychosis”. (Mourning and Melancholia, 245)

Freud’s concept of Repression is redefined by Pamela Thurschwell as “An operation whereby the subject repels, or confines to the unconscious, a desire that cannot be satisfied because of the requirements of reality or of the conscience.” (Pamela, 21) Billy’s yearnings for primitive life was repressed in his unconscious mind. He has hidden his hallucination from his family members because the requirement of the reality (modern society) does not encourage this kind of desire. It was repressed in his unconscious mind that make Billy to behave consciously in front of his family members. He is not aware that the repressed memories and thoughts would bring tremendous disaster to his self and complicate his future outcomes.

Billy was in the state of oppression that made him to feel life as a bleak business. It was due to his “predicament results from the confusion of values in civilized society” (M.K.Bhatnagar, 49) When he extended his presence in the civilized world, his band of repression expanded. He fears that band may cut or break. Repressions were dangerous and causes degradation.

His life in the civilized world is intolerable and curse for him. He repressed all his hatred. His repressed realities would blast like volcanoes one day. Before the eruption volcanoes would release steam and emit heat which harms living

things. Likewise Billy's repressed hallucination squeezed out when he seduces Rima Kaul. It shows his fraudulent nature. It reflected his uncivilized trauma of unconscious. After the seduction, he realizes that his very nature is degrading. He feels that the "tremendous corrupting force" (189) is working on him.

The seduction he had been undertaken was an expression and expansion of repressed primordial urge. There he understood the repressions of unconscious aggravates his behavior. He expressed his realization of aggravated behavior as follows "my soul is taking revenge on me for having denied for so long that other thing that it had been clamoring for" (189).

Only the process of metamorphosis is a right choice. His idea of metamorphosis gained shape during one of his expeditions to the Mikala hills where he lost himself. In the dark woods of the hills his repressions become light. Only there he relieved from his psychological repressions. Finally, his soul solace in the wilderness. Similar to Elizabeth in Freud's case study, Billy finds his expedition as a right chance to execute his repressed love for primitive life.

Conclusion:

The new psychological paradigm became a need of an hour of twentieth century society. Sigmund Freud's analysis of psychological elements with human nature parallels with the study of fictional characters. Arun Joshi's protagonists' are exhibiting the complex nature of twentieth century men. Their psychic instincts are signals of shifting human values.

References:

1. Freud, Sigmund ([1917] 1978) 'Mourning and melancholia', in The Standard Edition of the Complete Psychological Works of Sigmund Freud, Vol. 14, and London: The Hogarth Press, pp. 243-58.
2. Joshi, Arun. The Foreigner, Delhi: Hind Pocket Books, 1968.
3. Joshi, Arun. The Strange Case of Billy Biswas, Delhi: Hind Pocket Books, 1971.
4. Swain, S.P. & Samartray, S. "The Problem of Alienation and Quest for Identity in Joshi's Novels," The Novels of Arun Joshi: A Critical Study, edited by M.K.Bhatnagar, New Delhi: Atlantic Publishers and Distributors, 2001.
5. Sharma, Siddhartha. "Arun Joshi's Novels: A Critical Study", New Delhi: Atlantic Publishers and Distributors, 2004, 38.
6. Thurschwell, Pamela. "Sigmund Freud", London and New York: Routledge, 2004.

E-References:

7. http://courses.washington.edu
8. https://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/40922/6/06_chapter2.pdf

❑❑❑

1. Ph.D. Research Scholar, Government Arts and Science College, Komarapalayam, Tamil Nadu.
2. Research Supervisor, Assistant Professor of English, Government Arts and Science College, Komarapalayam, Tamil Nadu.

Crisis of Dual Identity in Rita Chowdhury's *Chinatown Days*

–Sima Nath

These indentured labourers were destined to work in an alien territory. "Whenever the old people met at any function, they talked about their past. Remembering their motherland and the days of suffering, they became nostalgic." (Chowdhury, 159) The agony of losing ancestral homeland had a disintegrating effect on the mind of the indentured labourers. They feared that they will never be able to see their family members again. "They feared never seeing their homeland or their loved ones again. In the beginning, some of them rebelled and refused to work..."

One of the key issues addressed in migrant fiction is the dilemmas of dislocated individuals in an unknown territory. Such literature explores how migrants are torn between two cultures, two locations. They experience crisis of dual identity because for them two cultures, two homes remain alive and they have to find a passage between the two. Such dilemmas are more acute among the first generation migrants than the second and third generations.Rita Chowdhury's *Chinatown Days* explores such dilemmas and uncertainties of the Chinese migrants in the Indian territory. The novel focuses on the dislocation and its resultant suffering of Chinese indentured labourers and their struggle to assimilate in a new environment. Even after a successful socio-cultural assimilation in the Indian territory, they became victims of racial hatred and politics during the time of Indo-Chinese conflict in 1962. It is also important to see that Chowdhury remained critical of the idea of ancestral homeland as the land of security, love and comfort.The Chinese Indians who returned to China due to Indo-Chinese conflict had to face humiliation and atrocities of the Chinese Government. The purpose of this study is to examine how Rita Chowdhury in *Chinatown Days* portrays the psychological effects of dislocation, as well as the dilemmas of dual identity.

Keywords: migrant, dislocation, dual identity, home

People are compelled to leave their home countries and settle in new environments for a variety of reasons. Religious or racial persecution, lack of political freedom, and economic hardship are just a few of the reasons why people migrate. Internal

migration is when a person relocates within a country, usually for economic reasons. Internal migration is most commonly associated with people moving from rural to urban regions.

External migration refers to people moving from one country to another. Despite the fact that this form of migration is a centuries-old phenomena, modern times have seen the movement of a large number of people from one country to another for a variety of reasons. It is important to recognise that not all migrants leave their homeland on their own volition. People are sometimes compelled by external circumstances over which they have little control. As a result, migration may be either voluntary or forceful. War, slave trade, indentured labourers are identified as some of the factors of forced migration.

Nostalgia, recollection, and the loss of home are some of the themes addressed by migrant literature. It deals with the physical and psychological impacts of being uprooted from one's homeland and relocated to another. It causes identity crisis and alienation since one's ancestral homeland is important in the creation of one's identity, and the loss of that land creates a sense of rootlessness and identity crisis. As a result of the breach created between a human being and their native land, the migrant condition causes profound psychological and emotional impact of loss.

John McLeod in *Beginning Postcolonialism* makes an important observation: "[I]t is more accurate to talk about 'diaspora identities' rather than 'migrant identities'; not all of those who live in a diaspora, or share an emotional connection to the 'old country' have experienced migration" (207) So, it is important to note that as only the first generation diasporas have direct experience of 'past migration' ; the sense of alienation they encounter is more intense than their inheritors. The later generations of diasporas may not feel the same emotional attachment with the homeland of their ancestors.

The relationship of migrants with their homeland is usually characterized by ambivalence. The migrant subject is always at odds with oneself, attempting to reconcile conflicting feelings resulting from allegiance to the ancestral homeland and assimilation in the 'new home.'Usually, first generation migrants have strong sense of 'double consciousness.' They experience feelings of "unhomeliness," as they live on the borders of two cultures while not really belonging to either.However, a second or third generation immigrant who has been entirely or partially acculturated in the country of adoption will not be able to relate to their homeland in the same way that their parents or grandparents can.

Migrants are constantly confronted with concerns of identity reconstruction. Their identity remains as a work in progress. They always remain in state of dual consciousness. They take part in the assimilation process in the adopted country, and simultaneously, continue their attempt to maintain a racial, cultural and linguistic

connection to their homeland. In *The Post-Colonial Studies Reader*, Ashcroft *et al* argue that the term diaspora contains a fundamental ambivalence: a dual ontology in which the diasporic subject looks in two directions – towards a historical cultural identity on the one hand, and the society of relocation on the other. (425)

Chinatown Days (2018), a novel by Rita Chowdhury – published in Assamese as *Makam* and translated into English by the author – is about the struggle and pain of Chinese indentured labourers brought to work in Assam's tea estates. These Chinese workers came to Assam during British rule to work in the tea gardens in the early half of the nineteenth century. Most of them were forcibly brought as indentured labourers by human traffickers. Following that, a large number of individuals voluntarily travelled to this region in pursuit of a better life. The experience of the Chinese indentured laboureres was bitter and painful. They were unaware of their destination. They were not even aware of the works they would have to do. They were given the hope of arriving at a land of opportunity and promise. Ho Han, a member of the first generation Chinese migrants, was tried to be convinced that they will be able to live a life of comfort and prosperity in Assam.

> **'There is a place called Assam some distance away, where there are tea gardens. That's where you will go. The people who have come with you may be reluctant. You will have to convince them. They all seem to listen to you. There will be no problems in Assam. As a matter of fact, you will be in greater comfort there…' (Chowdhury, 60)**

These indentured labourers were destined to work in an alien territory. "Whenever the old people met at any function, they talked about their past. Remembering their motherland and the days of suffering, they became nostalgic." (Chowdhury, 159) The agony of losing ancestral homeland had a disintegrating effect on the mind of the indentured labourers. They feared that they will never be able to see their family members again. "They feared never seeing their homeland or their loved ones again. In the beginning, some of them rebelled and refused to work. Gradually they came to accept their fate and this place as their own." (Chowdhury, 63) So, first generation Chinese diasporas had to push themselves to cope up with the multi cultural environment of their adopted land.

Gradually, a vast majority of the Chinese migrants had settled down and married local girls and createdtheir "new home" in Assam. The Chinese were joined by other bonded labourers from Central India who were also brought to work in the tea gardens. With the passage of time, these Chinese labourers became a part of Assamese life and assimilated themselves in the new region. "They made

it their home." (Chowdhury,197). They began accepting India as their new homeland.Despite their Chinese ethnicity, they began to see themselves as Indian citizens.

In the novel, Choudhuryshows how these Chinese diasporas collaborated with the region's local labourers, and culturally and socially got mixed up. But after the independence in India, when in 1962, China and India had border line issues and both the countries got involved in war, the people of Chinese origin had to meet with terrible experiences. They were targeted by the administration and even by the locals during the war. The seeds of distrust and strife were planted. The novel shows how the idyll of the lives of the people of Chinese origin is destroyed by politics and racial hatred leading to an atmosphere of hopelessness and despair.

It's worth noting that while some displaced people adapt quickly to their new surroundings, while others are resistant to such cultural blending. They face crisis of dual identity. In the novel *Chinatown Days* dilemma of dual identity crisis is seen in the case of name changes. Changing one's name is a crucial step in altering one's identity. Tung Chin and Lee Chang's formal names, Ramakanta and Haranath, are evident indicators of identity negotiation. They face a psychological issue when their Chinese names are replaced with Assamese names. The other boys ridiculed Tung Chin and Lee Chang as they walked home from school, calling them by their new names.

The two boys begged their parents to meet with the headmaster so that their names in the school registration might be corrected. Their parents, on the other hand, didn't listen to them. "Although hardly used, the names stuck. The friends, however, called them by their original Chinese names. Lee Chang changed the name back to Lee Chang through an affidavit. Lee Tung Chin did not." (Chowdhury, 108). Here, Lee Chang's wish to preserve the Chinese name can be interpreted as a sign of maintaining a connection, an unseen link to the ancestral homeland. Thus, the second and third generation diasporas face this crisis of dual identity due to different cultural origins of their parents. On the one hand, they are not fully accepted as pure Chinese, and, on the other hand they are not fully received as Indian. The novel also exemplifies dilemma of double consciousness as result of mixed marriages. The children carry the identity of both their father and mother which led to the production of multiple identities.

> **Yiu Yi's uncle had come with his family from Tinsukia. He had married a girl from Shillong who was half Chinese, half-Khasi. They had six children. Another uncle had come from Silghat with his wife and five children. This uncle had married a girl from tea garden community. (Chowdhury, 122)**

Suspicion about the Chinese in Makum grew during the time of Indo-China war. People of Chinese origin were looked at with mistrust. Their loyalty to India is tested which created a deeper sense of dejection, anxiety and hopelessness among the people of Chinese origin.

> **He [Liang] had never imagined that a day would come when his identity would be in question, that people would look at him with mistrust and suspicion. All of a sudden, many of the things which he believed to be true had become untrue. All those people whom he considered his own had become strangers. He had discovered that he was an outsider. When he saw people looking at him and making harsh comments, misery clouded his mind. (Chowdhury, 210)**

Choudhuri depicts the steady infliction of pain on Chinese origin people, as well as the loss of mutual faith between locals and the people of Chinese origin. As the Indo-Chinese conflict intensifies, people began to suspect that the Chinese community is still in touch with China and is working as spies for the Chinese government. As a result, the population were divided into two groups: 'locals' and the people of Chinese descent. The war caused identity crisis, bewilderment, and anxiety among those people of Chinese origin who had lived in India for generations and were Indian citizens. In this way, the lives of a community were entangled in a greater history of national rivalry. Government officials along with policemen went door to door looking for Chinese origin people in order to capture and deport. Entering the house of Pramila, the policeman stated that they had orders to take the Chinese people with them—Ho Min Fu, his three sons, Wenling, and Wenling's five children—and that the rest of the family could remain at home.It created total confusion and disbelief in the family, as the family members are divided on the basis of ethnic identity.

Pramila looked at the officer in disbelief.

> **"What are you talking about? What kind of justice is this? If my husband is Chinese, I am Chinese too. If I am Assamese, so are my children. If my son is Chinese, how can his children not be Chinese? If you take one, you will have to take us all."**
>
> **"We won't go. What do you think of us? We are Indian citizens, just as you are. We haven't attacked India. We are not India's enemies," Wenlin flared up. (Chowdhury,228)**

Thus, those people who accepted Assam and Makum as home were considered as enemies of India. Many of them were considered as spies having links with China. Many of them were arrested. The Chinese members in the family were separated from their Assamese partners. Even mothers with newborns were arrested and deported, along with children of Chinese descent who did not even know a word of Chinese.

The administration gathered all the Chinese origin people suspecting them of being spies to China government and detained them in a camp in Deoli. They had to suffer a lot in their journey from their respective residences to reach Deoli. In their detention camp, there was scarcity of food, clothes and even the minimum essentials. Reaching their ancestral homeland they had started believing that they would be able to live in China comfortably. "They had started to think that the bad days were over at last." (Chowdhury, 332) But the harsh reality is that their new life in communist China became more pathetic as they have to come to terms with the tough ways of the Chinese government. In China, they have to face more cruelties and hardships."Mei Lin and others slowly being transformed into farmers under the guidance of the local experts. In the beginning they cried, unable to bear the toil. But slowly the tears had began to dry. They had started accepting the tough rules and regulations of Communist China. They had no other options but to work. They had to face punishment if they refused." (Chowdhury, 338) Moreover, conflicts began between local villagers and the returnees. "They considered the returnees encroachers. They thought the returnees had occupied their land. For them these people were foreigners. Outsiders." (Chowdhury, 340)

Thus, the novel portrays the suffering, loss, and disintegration of the people of Chinese origin who settled in Assam. It depicts how the Indo-Chinese conflict rendered India uninhabitable for them. During the conflict, people who had migrated from China many years before and had fully blended into Assamese society, were viewed with mistrust. The identity of these people remained in a state of flux between India and China, between 'home' and 'foreign.'

References:

Ashcroft, Bill, Gareth Griffiths and Helen Tiffin. ed. *The Postcolonial Studies Reader*. London:1995. Routledge, 2008. Print.

Chowdhury, Rita. *Chinatown Days*. New Delhi: Macmillan, 2018. Print.

Cohen, Robin. *Global Diasporas: An Introduction*.1997. 2nd ed. London: Routledge, 2001.Print.

Hall, Stuart. "Cultural Identity and Diaspora." *The Postcolonial Studies Reader*. 1995. Ed. Bill Ashcroft, Gareth Griffiths and Helen Tiffin. London: Routledge, 2006. pp 435-38.

McLeod, John. *Beginning Postcolonialism.* New Delhi: Viva Books, 2010. Print.

Said, Edward. *Culture and Imperialism*. London: Vintage, 1994.Print.

Baruah, Ankitaa. "The Chinese-Indians after the Indo-China War of 1962: A Study of Community and Identity in the Face of Chaos"*International Journal of Science, Engineering and Management (IJSEM)*Vol 5, Issue 10, October 2020. Web. 3 April 2022.

Boruah, Rimjim, Rajashree Boruah. "The "Stranger Kings" in Rita Chowdhury's *Chinatown Days*: A Study"PJAEE, 17 (7)(2020). Web. 3 April 2022.

❑❑❑

Assistant Professor, Department of English, Jhanji Hemnath Sarma College, Sivasagar-785683 (Assam)

An Eco Spiritual Approach to Thakazhi Sivasankara Pillai's *Chemmeen*

–Radhika J.
–Dr. T.S. Ramesh

Further, the fisherman could estimate where the Chakara would arrive based on the monsoon's current. Kerala's shoreline is notably fish-friendly due to significant rainfall and a huge number of rivers. The mud banks, known as Chakara in Malayalam, are a unique feature of the Kerala coast. After monsoon, the accumulation of clay and organic materials on the coast occurs, with the sea remaining calm, resulting in an excellent fish harvest.

Every human being is subjective and always a vital part of the happenstances. Campbell in his book The Dancing Wu Li Masters adduces Gary Zukav's words "there is no such thing as objectivity. We cannot eliminate ourselves from the picture. We are a part of Nature and when one studies Nature, there is no way around the fact that Nature is studying itself" (129). Even when the world lets slip the awe of Nature, there are always people who worship Nature as God. One such group of people is portrayed in Thakazhi Sivasankra Pillai's novel Chemmeen, the fisher gen, who conserves a committed interrelation towards the sea, which is the source of their survival. The paper deals with the Eco-spirituality which is an insight that emerges from deep ecology, ecofeminism, and Nature religion as the world is becoming consumeristic and materialistic. Pillai has penned about how the people living in the sea is worshiping it as 'Kadalamma', the sea goddess, and also how their lives are intertwined with Nature.

Keywords: *Eco-spirituality, Nature religion, Kadalamma, Consumeristic.*

Emerson succinctly posits his views on Nature as "Nature is a mutable cloud which is always and never the same" (8). Perhaps, a formal definition of Nature is just not enough or there are not many words to describe what we see, feel, touch, smell or experience. Those many unforgettable senses that arouse the spirit and awaken the soul can speak more to the heart than man's defined terminology. Remarking on Nature, sea cannot escape one's memory. Sea is a huge body of salt water and covers seventy percent of the surface of our planet Despite its size and the repercussion that it causes on every

organism on the Earth it persists in being mysterious. It is obscure that how many disparate species clepe ocean as their tenement. Sea takes a lion's share in the universe known to be inhabited by organisms.

Humans have an unfathomable affiliation with the sea. The sea fosters human's life. Thakazhi Sivasankara Pillai, through *Chemmeen* depicts the unstained sustenance of people who rely their plenary livelihood with the sea whom they revere as 'Kadalamma'. Their life, which entails blithesome and grieve-stricken eventualities cliqued with the nature of the sea, is ascribed to their food provider. The fishermen have an upfront cognisance and expertise of the sacred in the ecology which provides them as a pragmatic search to live reliably from the sea's resources. They perpetuate an affinity for, connection to, and rapport with the sea goddess which they refer to as 'Kadalamma' with a conception that one's own consummateness or well-being is coordinated with the entirety and well-being of the planet.

Kate Chopkins in her book *The Awakening* states, "The voice of the sea speaks to the soul" (12). Similarly, Thakazhi has portrayed a picture of people who are ready to be ruled by nature and always wants to heed ears to the rhythm of the sea. As natural resources are used without regard for future survival, the spiritual rituals of the fisherman community might be used as a model for rethinking human relationships with environment. Deep ecology is a spiritual belief that asserts humans are a part of the environment and completely rejects anthropocentrism; as a result, it has impacted the creation of eco-spirituality, on which the events in *Chemmeen* is based.

There is a research that states people who live by the sea reports rates of good health than people living in land as they have better mental and physical health. There are numerous health benefits on walking in the sea shore. This is seen in the novel when Karuthamma states "I was just out wandering on the beach " (7) clearly indicates how there are numerous health benefits walking on the sea shore. While walking on the sea shore endurance of an individual grows coupled with the physical strength of the individual. The characters in the novel have been extant near the sea from their ancestry. Hence, every character in the novel has an infinite affiliation towards the sea. As their genealogy continues to live by the shores of the sea, they partake a sense of revere by even at the sight of the sea. While gazing the sea shore Chakki daydreams and her sub conscious mind is activated where she enters into a new world, and this world which makes her to forget all her pain and sufferings. The sea not only looks after their physical

and mental health, but also tries to meet their needs of the day. Pillai highlights the excitement of each and every fisherman, when Kadalamma blesses them with abundance of hope and joy when they hit the season of rain. This is being highlighted in the following lines:

The ensuing currents make them decide that this year the big catch would be on their shores. The yes of fishermen lit up with the radiance of hope…the sea turned and tossed. Everyone leapt in joy. Dreams burst into bud…it would give rise to their prosperity…it was the season of rains. (76)

In addition, the fishermen also keep track of the sea's mood. They tie their actions to the Kadalamma's reactions by being aware of the character of the sea they face every day.

Chemban Kunju father Karuthamma forecasts the day's haul by sensing the weather, "Did you see the richness of the sea? Lovely sunshine and weather. Today is an ideal day" (56). Generally, fishermen are brave and navigate resourcefully with their skill and also with the help of their knowledge of their local ecology. According to Kurien,

It is a cultural continuum of habituated practice stored in the memory and passed on to the next generation in the process of learning-by-doing. It is practical knowledge conditioned into cultural practices. It also represents their "world view" of "mother ocean" as a life-giving system rather than a hunting ground, with the living resources in it being "limitless" and their ability to individually bring ruin to it being rather remote. (204)

Further, the fisherman could estimate where the Chakara would arrive based on the monsoon's current. Kerala's shoreline is notably fish-friendly due to significant rainfall and a huge number of rivers. The mud banks, known as Chakara in Malayalam, are a unique feature of the Kerala coast. After monsoon, the accumulation of clay and organic materials on the coast occurs, with the sea remaining calm, resulting in an excellent fish harvest. The indigenous fisher clan, who eagerly awaits the blessing of their sea goddess with marine riches, stands in stark contrast to the phenomena of mechanisation in fisheries, which tries to devour marine treasure all year. Mechanized fishing has been identified as a major contributor to the massive ecological implications that have resulted in a significant drop in fish yield. The age-old wisdom of the older fishermen, as depicted by Thakazhi, warns us of the current age's covetous scenario that, because maritime treasure supports a large number of human lives, it should not be overexploited to feed the unjustified gluttonous nature that exists in most parts of the world.

When Chemban Kunju desired another haul following his first successful bounty during the Chakara season, Achankunju, a fellow fisherman, had a strong view, "Just because you can make money, you can't empty the sea out. Besides, it wasn't the accepted norm to go to sea twice a day. It wasn't allowed" (79). This vividly depicts the indigenous conviction in reverencing nature and using it exclusively for the sake of survival, never daring to exploit it to meet the ever-increasing demands of the fast-paced world. This also expounds how people living near the sea are contented.

In this modern world, man is holding down a job around the clock. He does not have bounteous time neither for his family nor for himself. But people prevailing in the sea are disparate as they fritter away their day in the lap of nature "A little girl who collected shells from the beach and ran to gather silvery minnows that flew off the nets the men flung out of their boats"(5). This shows that they are serene with nature rather than the money they possess. Being affluent is nothing but gratified with 'enough'. The modern psychological theory states, once a human reaches the level of satisfaction then the efficacy of the product begins plummeting. In simple terms, once a person has replete money to cope with all his prerequisites the adequacy of the wealth begins to wane. Once a person has ample money getting extraneous of it will not at any time make him exuberant. This can be summarized by the quote from Greek philosopher, Socrates as: "Contentment is natural wealth; luxury is artificial poverty". The life of the hoi polloi is all about earning money and material possessions which is an ephemeral relief but living with the mother nature gives a sense of gratification that is eternal and indisputably rich.

Perseverance is an immense aspect of success. This line is evidently ascribed to the fishermen folk. Though they go to the rough sea for fishing they do not give upon fishing. And they never set aside for any other job rather fishing. They think living in alliance and rapport with nature is their felicity. In Hemingway's *The Old Man and the Sea* provides a great example for staunchness. Santiago is an eighty-year old man still his eyes are as blue as the sea filled with cheerfulness and unrelenting spirit. In the beginning of the novel, he would fail to catch the fish for consecutive eighty-four days. Even then he did not relinquish his certitude. He never ceases to do whatever he was doing to the beat of his ability, no matter what tribulation befall him. In *Chemmeen,* Pillai also highlights the same incidence, where Palani the husband of Karuthamma, after knowing about her quondam relationship vents out his

anger by saying the following words: “I am a fisherman, girl. Will live as a fishermen and die as a fisherman!... who has the right to declare that I am unfit to go to sea? I am born to work the sea. Everything in the sea is mine. Who has the right to deny that? “(181).

Fishing is often mentioned as a difficult way to make a living. It is physically demanding and the fatality is more than thirty times when compared to other occupations. But for anyone job satisfaction is a must. One has to love his job so that he can perform better in his job. Like-wise, the fishermen do not want to go for any other work rather fishing. They the fishermen think that sea is their everything so they do not want to move to the city either or leave their occupation. Most of the fishermen want their children also to continue their work though the children are educated. They believe that the sea is their food provider, which has been taking care of them for generations. In the novel Pillai also highlights Palani words as” A fisherman won’t go out to till the soil or dig the ground. Palani will not do that either. That’s for sure. And then Palani assuaged his wife. You don’t worry. Palani will live off what comes from the sea”(181)

In many parts of Africa, fish is their major source of protein. They are dependent on fisherman for their daily dose of protein. In Africa there are not only men who go for fishing it also the women who are brave and strong enough to go for fishing. Those people are fighting for access to food, jobs and also healthy sea which their basic rights. In spite of these struggles, women go for fishing. Their voices are unheard till now, but they have hopes that they will soon come into the limelight. Women in these parts are treated as critical contributors to development of their community. The duty of these women do not end by fishing, selling them and making money. But they also fight for the sea which is their food provider. In the novel, Pillai has also made such strong women characters even in the early times of 1950’s. Pillai’s women characters such as Karuthamman and Chakki both are proud of being a fisherwoman. Karuthamma in spite of carrying a child in her womb wanted to help her husband by selling fish in the market. Karuthamma feels a stir and says:

If he was a fisherman, she was a fisherwoman. She too must live off the wealth of the sea. No fisherwoman lived by husking coconuts or spinning rope. It wasn’t meant for her. She asked, ’Shall I go east to sell fish’ Palani refused, ‘No you stay at home. There is need for you to haul a heavy basket around dragging that belly with you.’ ‘I am all right; I am not weak or tired.’ (181)

Although the major action of the novel revolves around myth and custom but the underlying meaning implies how the fishing clan, revere the sea as goddess through their periodical fishing and not thinking about exploiting the nature more than their basic needs. Having a spiritual connection to their food supplier, Kadalamma, allows indigenous fishermen to connect with their fellow humans and all other living things without the desire to exploit them. Unlike the cultural and political gaps that often obstruct the modern world's concerted action to reverse ecological degradation and prevent calamity, eco-spiritual justice provides a foundation for them to transcend any slight or big disparities among them. The spiritual orientation of the indigenous fisher folk to Kadalamma provides a foundation for collective action among fishermen based on their cultural belief systems, which is set in accordance with the responsibility to achieve ecological justice, and which can be adopted by the modern mechanised fishing arena. The beliefs and practices held dearly by the indigenous can certainly heal the modern man's long fractured relationship with mother earth.

REFERENCES:

Campbell Sueellen. "The Land and the Language of Desire". Eds Cheryll Glotfelty and Harold Fromm. The Ecocriticism Reader: Landmarks in Literary Ecology. Athens and London: University of Georgia press, 1996.

Chopin, Kate. *The Awakening*. Penguin Classics, 2018.

Emerson. *Emerson's Nature: Origin, Growth, Meaning.* New York: Dodd, Mead, 1969.

Kurien, John. "The Socio-Cultural Aspects of Fisheries: Implications For Food And Livelihood Security: A Case Study of Kerala State, India". Ed Goodwin J.R.M Understanding the Cultures of Fishing Communities: A Key to Fisheries Management and Food Security. FAO Fisheries Technical Paper 401, 2001.

Lincoln, Valerie. *"Journals". American Holistic Nurses' Association. p. 227.*

Pillai, Thakazhi Sivasankara. Chemmeen. Translated by Narayana Menon, Mumbai, Jaico, 2005. Print.

Russo, Herrerla Carla (2017), *"16 Reasons to love and respect ocean".*

https://www.huffpost.com/entry/reasons-to-love-the-ocean_n_5456678 Accessed on 17 June 2022.

Thune, Kent (2015), *"3 Life Lessons from 'The Fisherman's Parable".*

https://celebratehiltonhead.com/article/4604/3-life-lessons-from-the-fisherman-s-parable Accessed on 19 June 2022.

❑❑❑

1. Ph.D. Research Scholar (FT), PG & Research Department of English, National College (Autonomous) Affiliated to Bharathidasan University, Tiruchirappalli, TN (j.radhika06@gmail.com)
2. Associate Professor and Research Supervisor, PG & Research Department of English, National College (Autonomous) Affiliated to Bharathidasan University, Tiruchirappalli, TN (drtsramesh@gmail.com)

Research Article

Recasting Women in History: A comparative Study of Bernard Shaw's *Saint Joan* and Bhabendra Nath Saikia's *Amrapali*

–Montu Saikia
–Dr. Manab Medhi

Women's rights, poverty and, capitalist base with its superstructural agency behind social inequity and malevolence are always the major issues in the plays of George Bernard Shaw.Bhabendra Nath Saikia, a noted playwright, fiction writer, editor, and film and theatre director from Assam, also takes up issues connecting to women's conditions in society.

The present paper is a comparative study on two characters from two plays composed by two playwrights hailing from two different literary and cultural spheres widely apart in terms both of time and space. Saint Joan from George Bernard Shaw's play *Saint Joan* and Amrapali from Assamese playwright Bhabendra Nath Saikia's *Âmrapâlî*have numerous common features as both characters are involved in a politically troubled situation caused by foreign invasion of their homelands. The similarity between Shaw and Saikia as playwrights is they both of them were interested in portraying strong women characters that would often stand out in their times. It cannot be ignored that they were driven by the zeal for bringing social change through their characters. This paper tries to make a comparative analysis of the two characters in their own contexts and understand how historical characters are reconstructed in order to serve certain needs of the time that the authors feel.

Keywords: *heroic character, woman and history, Buddhist text and legend, nationalistic and human interest, modern woman.*

Saint Joan and Amrapali are the central characters of the plays named after them, composed respectively by George Bernard Shaw(1856-1950) and Bhabendra Nath Saikia (1932-2003). Shaw's *Saint Joan* (1923) reflects a phase of the European history during the Hundred Years' War (1337-1453) fought between France and England. The protagonist, Saint Joan, with her unsurpassable vitality, leads the French soldiers from the verge of sheer defeat, to liberty through the path of nationalistic self-assertion against the offensive English army, even at the cost of her

own life. Bhabendra Nath Saikia's *Âmrapâli*, on the other hand, is a story of an extraordinarily vigorous woman who saves her motherland through transforming a violently megalomaniac and aggressively invading emperor, to a compassionate soul. Thus, both these plays in their unique ways, celebrate the conquest of philanthropic and judicious cause against political antagonism while changing the course of history of their respective motherlands. Both the protagonists under question, two women of distinction, have been the victims of extreme political schemes, social injustice and personal inequity, and above all, of the essential male discourse.They make the incredible sacrifices and stand instrumental in the indispensable change in the course of history. Hence, Saint Joan and Amrapali prove to be two women of distinctive courage, sacrifice and personal integrity. It is in the light of this commonality that the present paper proposes to study Saint Joan and Amrapali as empowered women who took active part in the political domain.

Women's rights, poverty and, capitalist base with its superstructural agency behind social inequity and malevolence are always the major issues in the plays of George Bernard Shaw.Bhabendra Nath Saikia, a noted playwright, fiction writer, editor, and film and theatre director from Assam, also takes up issues connecting to women's conditions in society. As a playwright Bhabendra Nath Saikia worked in three distinct fields of Assamese drama- Radio Drama, amateur theatre and 'BhrâmyamânTheatre' (mobile theatre). His dramatic talent attained its inclusive exposure in the plays he composed for the professional mobile theatre groups known as the 'Bhrâmyamân Theatre' of Assam.

The major concern of Bhanendra Nath Saikia's plays is always the foundational problems of the middle-class Assamese society that has eventually given way to realistically ventilating the social issues provoking deeper concerns in the minds of the audience. Referring to the invaluable contribution of Bhabendra Nath Saikia and his generation of dramatists through *Bhrâmyamân Theatre* Bhoopen Talukdar justly observes, "The eighties was the pompous decade for the Bhrâmyamân Theatre. The entry of some famous writers in to the Bhrâmyamân Theatre, their assurance and acumen brought some changes to the Bhrâmyamân Theatre. In addition to the day-to-day glee and grief, disturbances and dissonance of the Assamese society, the ever-changing countenance in the face of the socio-economic and political milieu got to be staged in the plays in the Bhrâmyamân Theatre. Among the noted dramatists of this period were Dr Bhabendra Nath Saikia, Mahendra Borthakur…" (115)[1]Saikia composed a total of 24 plays for the Bhrâmyamân Theatre leaving the 25th play incomplete at the time of his death in 2003.

Shaw's *Saint Joan* relates the historical account of energizing the confounded French army by a peasant girl, Joan of Arc, who claimed to be having communiqué

with the divine power during the Hundred Years' War (1337-1453) against the invading English forces. In spite of her decisive role in the salvage of her nation's sovereignty, she is victimized by the French authorities in the name of heresy, sorcery, Protestantism,delinquency and blasphemy etc. Eventually she is executed for heresy by burning in a stake. After long twenty-five years of her execution, she is restored and canonized. The play in short, is dramatization of a historical incident centering a brave Maid's heroism and sacrifice, and her sanctification from a 'Maid' to a 'Saint'. At the same time, it is anartistic documentation of a few Shavian ideas that the playwright is peculiarly known for, including woman as victim of male chauvinism, heroic woman endowed with mental, physical and spiritual strength, and above all, his concept of New woman.

Âmrapâli by Bhabendra Nath Saikia is a play on an imaginary story on two historical characters belonging to ancient Indian history. Powerful Magadha King Bimbisar invades neighbouring Licchavi kingdom of Vaishali. Besides his political intension of occupying Vaishali, the other primary purposebehind was winning the charismatic beauty, and an excellent dancer, the Licchavi princess Amrapali. Here the male discourse proves its authority very distinctly when she is made the royal courtesan as the only resort to get rid of the enemy of the country both from outside (Magadha king Bimbisara) and within (crazy Licchavi youths fighting to attain Amrapali) following the existing law of the land. The Senapati, along with his confidantes, is the preserver of the male discourse and applies the law of the land-"When a lot many go mad to attain a maiden … she is made the royal courtesan." (Scene 11)*(Translation by the authors of this paper)*While doing that, he is not inspired by his royal duty, rather he applies it as a scoundrel to avenge his injured pride. He is overpowered by the temptations for the princess, and transforming the princess into a royal courtesan is just a part of his design to attain her. The ultimate pathetic issue is the king's inability to protect Amrapali- as an innocent subject of his kingdom, and as his daughter. He helplessly proclaims his daughter the royal courtesan following the related law of the land. Thus, an innocent girl is victimized by the patriarchal discourse, be it Bimbisara's invading a peaceful neighbouring kingdom for attaining a lady beauty, the Senapati's misappropriation of the law to fulfill his evil desire, or Mahanam's inability to safeguard an innocent maiden whether as a father or as a king with his submission to the laws and traditions of his kingdom without rationally considering the entire issue.

Both Amrapali and Joan are women with dauntless courage, devoted patriotism and real sacrifice. Bhabendra Nath Saikia was a dramatist silently working for the great causes of man's freedom, goodness and larger social progression. Men and women in his plays fight their own battles to break the barriers in the way

of achieving those finer goals set by their creator, the hope for a better and enlightened time to come overcoming all the odds and evils. (Dutta 18) For that sometimes they fight against obstacles raised by the man-made system and sometimes against the environment.Amrapali is an ultimate specimen of Heroic Women from the world of Bhabendra Nah Saikia's plays. It is in the thirteenth scene of the play that Amrapali comes to know the identity of the disguised Licchavi soldier, who has done immense good to her, and with whom she has developed an emotional attachment. But the moment she comes to know that the soldier is the arch rival of her country, Magadha king Bimbisara in disguise,she straightly rejects any further emotional bond with the Soldier (Bimbisara). She even regrets for unknowingly having proximity with an enemy king. Even at that utter wreckage of her womanhood (after being proclaimed the royal courtesan), as a woman with highest self-respect, patriotic zeal and dignity, she apologies within herself-

O dear motherland, Vaishali! Please forgive me. Everyone has betrayed me, but knowingly I have betrayed none. Even not (betrayed) you. My dearest motherland, I will never blemish my love for my motherland for my inconsequential love.(Scene 14)

Her dauntless courage added with unconditional love for her countrymen, she reveals herself before Bimbisara to save her motherland from the wrath of the invader:

I've come to know that Licchavi subjects are being tortured to find out my whereabouts. Lo, I've come according to my own accord. Torture of innocent subjects be stopped, threat to their life and property be ended. If otherwise, kill me first. (Scene 18)

Bimbisara immediatelynot only stops wreckage of Vaishali, he even gets enchanted by Amrapali's latest demeanor, who has of late transformed to a Buddhist *bhikshuni* (female monk). Spellbound Bimbisara follows Amrapali without knowing where. Amrapali's winning over the hardcore invader, Bimbisara here is no less heroic and momentous than winning in the forefront. Amrapali's speeches while leading Bimbisara amidst the devastation and wreckage caused by his soldiers is an ultimate voice for humanitarian concerns and a preference for a life of austerity in the penultimate scene:

I spent my life surrounded the ember of wealth and pelf. I've seen the splendor of life, have seen the mayhem of youth, have seen the spiteful humdrums of politics, have seen the cruelty of injustice and iniquity, (and) finally I've seen this (pitiable) condition of the Licchavi people. I've attained some new realizations in this long journey of my life, My lord. If I think of my love, I'd feel myself mean and spiteful in front of their (pointing to the soldier's dead body) souls. I am utterly impatient.

This way of life just fails to bring me peace (of mind). I would be going ahead in search of a new truth (of life). Adieu soldier (as she used to address Bimbisara before getting to know his real identity)…You may follow if you please. (Scene 19)

Hypnotized Bimbisaraaccordingly follows her. The last scene makes it clear that Amrapali is leading Bimbisara towards a life of absolute austerity following the path of the Lord Buddha since at the background the chanting of the Buddhist monks can be heard at a distance- *"Buddham saranam gacchami, sangham saranam gacchami*" (the primary Buddhist chanting "I go to the Buddha as my refuse, I go to dhamma (religion) as my refuse, I go to the sangha (community of monks) as my refuse").

Thus, by the end of the play Amrapali aptly moves and transforms Bimbisara, the megalomaniac invader and leads him towards the blessed ultimate ascetic path of *nirvana*, a path of salvation from humanly weakness for power, beauty and renown, to a divine vigor of *nirvana,*the ultimate freedom from the self. Amrapali thus is an ultimate specimen of Heroic Women from the world of Bhabendra Nah Saikia's plays.

Shaw's Joan or the Maid has always been projected as an epitome of dauntless courage,leaderlike virtues, ultimate sacrifice and heroic prowess in women for the cause of her country.Sangeeta Jain justifiably showcasesJoan as a "Heroic Woman".[6]A Heroic woman, in Sangeeta Jain's term, is a woman, martyred for faith and piety as a result of conflict between Private judgment and the social authority. She is the symbol of Nationalism, Protestantism and female militarism latent in New Women. Joan has been so drawn "to represent a heavenly spirit conflicting and struggling with the ephemeral and worldly powers constituting religion and state."(Jain 134) She is the embodiment of the independent religious inspiration in one hand and a patriot on the other hand. The first comes into direct conflict with established religious order, namely the Catholic Church. She essentially conflicts the statesmen, both of them representing the prevailing order of the day. Sangeeta Jain quotes A. C. Ward's observation in this context: "… the political leaders also became alarmed, for they saw that their authority, too would be in danger."(Jain 134)Bhabendra Nath Saikia's Amrapali too comes under this category of the Heroic Woman. The differences between Joan and Amrapali are not in essence, but in degree and range. This difference in degree and range between the two women characters is genuine without doubt. Joan and Amrapali are characters created by two playwrights writing in two distinct domains of time and space.

Amrapali and Joan are two women characters apparently very widely apart from each other. Joan is a French peasant girl living in the fifteenth century, her

identity being distinctly historical, while Amrapali, is the princess of Vaishali, the ancient Indian kingdom. Her identity is rooted basically in mythical origin. She never goes to the forefront to resist, and to defeat the invading enemy soldiers like Joan. Amrapali does not have to make ultimate sacrifice of her life for her cause like the French Maid who is captivated, tried, and then is burnt to death. Amrapali does not face identical animosity at the face value from the rivals of the cause she is concerned with. Hers is a willing sacrifice that can guarantee sustenance and prosperity of her community. Eventually she ends up with transforming herself to the path-finder for salvage of the entire human community from its ephemeral and material requisites when she becomes a *bhikshuni*, a female monk of the Buddhist order. In spite of all such disparities, an unseen parallel is always felt in the obstacles both Amrapali and Joan face, rivals they fight and win over, the heroic sacrifice they make, and the final communiqué they leave behind them by the end of the plays they are parts of. Despite the factual differences between the two characters, what strikes out as the common feature is their active participation if the domain where women are not frequently seen. When contextualized in their times and spaces, it can be understood how both playwrights were inspired by a common motive – to bring certain positive changes to their societies through their theatrical works. So both Joan and Amrapali come out as modern confident women despite being historical characters.

Notes :

1. Translation from original Assamese is done by the authors of this paper.
2. see Jain, Sangeeta. pp. 1-5.

Work Cited :

Bhikshu, Prajnanjyoti (Ed). *Dharma Sangrah, Part II*, Sibsagar: Tripitaka Prakashan Sangrah, 1993.

Dutta, Utpal. 'Foreword'.*Bhabendra Nâth Saikiâr Nâtya Sambhâr*. Guwahati: Jyoti Prakashan,2008.

Gainer, J. Ellen. *Shaw's Daughters: Dramatic and Narrative Construction of Gender.* Ann Arbar:University of Michigan Press, 1991.

Jain, Sangeeta. *Women in the Plays of George Bernard Shaw*. New Delhi: Discovery Publishing House, 2018 (2006).

Lahkar, Achyut. *Bhrâmyamân Theatre*. Pathsala: Book World Publication, 2010.

Saikia, Bhabendra Nath. *Bhabendra Nâth Saikiâr Nâtya Sambhâr*. Guwahati: Jyoti Prakashan, 2008.

Talukdar, Bhoopen. 'Bhrâmyamân Theatâror Nât-Baisitra Âru Swarûp' in *Asomiyâ Nâtya Parikramâ*. Ed. Amal Ch Das. Guwahati: Banalata, 2018.

❒❒❒

1. Assistant Professor, Dept of English, Pub Kamrup College, Assam
2. Assistant Professor, Dept of English, Bodoland University, Assam

Research Article

Intricate Delineation of Women–an Unhabitual Inquiry of Salma's the *Hour Past Midnight*

–Bavatharani A.
–Dr. T.S. Ramesh

The story follows the younger girls as they try to make sense of the often stifling world they live in, and hesitantly ask often forbidden questions; older girls as they begin to accept the rules of the community. Salma also examines how women come to have beliefs, especially those that are generally considered to be repressive, and perpetuate them to posterity. She highlights the suffocation that her women experience, some quietly protesting, others welcoming it and even imposing it on their kin, she portrays the community, the lives and marriage as the way they usually are - a mixed bag.

Salma, a renowned Tamil poet who has faced many obstacles in her homeland, has written *'Irandaam JaamathinKadhai'* which was translated as *'The Hour Past Midnight'* by Lakshmi Holmstorm. It describes the treatment of women belonging to Muslim community. This article deals with the portrayal of women and their sufferings as narrated by Salma. It also depicts their everyday struggles and worries. It presents the conservative life of Rabia, her mother Zohra and Firdaus. The suffering of Wahida explained by the author was evocative. The paper also describes how the lives of women are not their lives to live. However, the novel is almost painful and sad, it is often a study of celebration of female community and their friendship. It is shown how through suffering and oppression, anger is born that has destructive consequences. Inside their male dominated world Rabia, Zohra, Firdaus, and many others make their small rebellions and compromises, friendships are made and broken, families come together and fall apart, and almost imperceptibly change creeps in.

Keywords: Women, status, Muslim community, sufferings, rebellions

The subcultures that were explained by many writers in India were valuable recordings of a way oflife disappearing fast such as, Hepsibah Jesudasan documented the Christian community around Cape Comorin in her Tamil novel *Putham Veedu* (the new house), Thopil Mohamed Meeran recorded the life of Muslims in a fishing village of southern Tamil Nadu in his moving novel *OruKadaloraGiramathinKathai* (the tale of a coastal village). This English translation of a celebrated Tamil poet Rajathi Salma, *The Hour Past Midnight*, is set in the backdrop of Muslim

community in central Tamil Nadu. The name of the original work is *'IrandaamJaamathinKadhai'* which was translated as *'The Hour Past Midnight'* by Lakshmi Holmstorm. It describes the treatment of women in an evocative manner. Nearly a decade and a half ago, Salma attracted attention as a promising young poet through the pages of the literary magazines *Kaalachuvadu* and *PuthiaPaarvai*. Patriarchal eyebrows went up when her poems echoing the voice of women. Her extraordinary life and struggle against subjugation have been chronicled in the eponymous film, Salma.

When Salma, a young Muslim girl growing up in a South Indian village, was thirteen years old, her family shut her away for eight years, forbidding her to study and forcing her into marriage. After her wedding her husband insisted her to stay indoors. Salma was unable to venture outside for nearly a decade. During that time, words became her salvation. She began covertly composing poems on scraps of paper, and, through an intricate system, smuggled them to the outside world.The status of women in India has been subject to many great changes over the past few millennia. The issues concerning women that can possible be discussed in the Muslim communities were stated by Salma as,

Minor matters, generally related to family arguments, regularly flared into wider disputes in our community. Often one side would take the matter to the police while the other would come looking for us. Malik would try to assess which side was right and advise them accordingly about how to solve the problem. That night a man who was drunk had allegedly beaten his wife. The woman's family reported the matter to the police and then both sides marched over to our house, accompanied, it seemed, by most of the village. Such experiences weren't new to me and so, before waking up Malik, I began speaking to them myself (85).

The portrayal of women in literature was inevitably one-sided. It is realized that there is always a keen focus on how they're struggling so hard to balance life and work. There are very few texts and authors specifically dealingwith the role of women. Among them Salma has written what can truly be called a women's novel, a novel that celebrates women, explores and delineates in great detail their lives, thoughts, struggles and friendships. The village setting is timeless, and rural life is often unencumbered by technology, and there are little clues in the everyday lives of the people.Women were often portrayed as secondary characters to the greater men who carried the story-line along, while the females simply offered a supporting role in the midst of the action. Salma describes the discrepancy that

was witnessed by her as, My brother was allowed to go as usual. I asked why I was being singled out in this way and was told it was because I was a girl. As such, I had brought disrepute on the family. From that day on, I was told, I was not to step out of the house. I protested and cried when I heard this news but it had no effect on my mother's decision (96).

The Hour Past Midnight is a women-centered novel set in a conservative Muslim business community in rural Tamil Nadu. Most of the men are away in Singapore, Sri Lanka, or even Saudi Arabia, visiting their home town every few years to marry, procreate, or marry again, bringing gold, sweets and imported soaps. The girls are allowed to go to school until they hit puberty, at which point they are forced to stay indoors, away from the eyes of men who are not one among the members of family. The book sings with different voices, from the child Rabia, a girl who is about to come of age but as yet is still a young girl, her mother and aunt Zohra and Rahima, and the cousins, neighbors and women who make up their small and intimate community.

The story follows the younger girls as they try to make sense of the often stifling world they live in, and hesitantly ask often forbidden questions; older girls as they begin to accept the rules of the community. Salma also examines how women come to have beliefs, especially those that are generally considered to be repressive, and perpetuate them to posterity.She highlights the suffocation that her women experience, some quietly protesting, others welcoming it and even imposing it on their kin, she portrays the community, the lives and marriage as the way they usually are - a mixed bag. Simone de Beauvoir delineates such suffocation and the imprisonment of woman in the marriage by delineating the ratiocination of family and marriage

Integrated into family and society, woman's magic fades rather than transfigures itself; reduced to a servant's condition, she is no longer the wild prey incarnating all of nature's treasures. Since the birth of courtly love, it has been a common place that … rites are originally intended to protect man against woman; she becomes his property… (211)

However the busy narrative weaves the lives of the women together, a heartfelt exploration of the lives of Tamil village women living in modern India was shown. Rabia is a growing child in a conservative family in southern India. One day, she and her friends sneak off to the pictures. She was caught on her return home by her mother, Zohra, who cries as she beats her daughter into submission. Rabia fails to understand why her male friend (who she is in love with) is allowed to

go to the cinema whilst she is beaten for doing the same (Hemalatha and Rajesh 259). In this community there is one rule for men and one rule for women. This comes through strongly in seeing the world through Rabia's eyes. The double standards between male and female behavior culminates in a devastating and heartbreaking event with family and friendship betrayed.

A girl's freedom over her body is traditionally prescribed in tiny communities. It is considered to be a blasphemy when a widow dresses in fancy garments. Salma delves into these complexities in *The Hour Past Midnight* through her exquisite words and dramatic story. She also describes the obstacles to sexual liberation in a restricted context, for which she has received severe criticism.

Salma demonstrates how religious morality can result in something of a twisted morality. She describes how the women who transgress are punished in the name of religion, when really all they are doing is standing up for their own selves and their own hearts. Because the story is told from the different perspectives of the women in the village, Salma can really exploit how the women view and react to the situations they are witness to and experience. A real insight into the characters and their lives is depicted through her writings. Thus,it is perceived how through suffering and oppression, an anger is born that can only have destructive consequences. The cause for the deprivation of Muslim community is perceived by Abdul Shaban, the author of *Mumbai: Political Economy of Crime and Space* (2010),

One of the reasons for the deprivation of Muslims in the country has been the endemic violence against the community. Violence not only destroys the material wealth of the community, but also weakens its capacity to rebuild its financial strength, pushing its members to adopt conservative attitudes and seek refuge amongst themselves, in ghettoes, and in their religion. (Shaban xxviii)

A lot of the novel is painful and sad to read, as we live through the characters' pain and struggles with their lives. But more than this, the novel is often a joyful study and celebration of female community and friendship. Some of the most wonderful moments in the novel are when the women are all together, talking about their lives, bodies, marriages and sex lives to one another.Laughing, cooking, eating and sharing their lives with each other. Hence, the terrible events and betrayals in the novel are never and cannot be ignored. Firdaus is beautiful and of marriageable age. A groom is found for her, a wealthy man who lives abroad. On her wedding night, she takes one look at him and says, "I'm not going to live with you, don't

touch me!" (126).She is forced to live in disgrace for having left her old and wealthy husband who she didn't love.

Firdaus is not the first in Zohra's family to leave a husband. Zohra's maternal aunt, Maimoon, too, had done the same.Another divorced young woman was Maimoon, whose parents plan to get her married again. But before that, something has to be done about the baby she is carrying. The midwife is summoned in secret to perform an abortion. But Maimoon's body cannot withstand the hellish twig-and-ointment operation. She dies a slow and painful death along with the baby that drops from her body in clots of blood.Mumtaz is afraid that her husband will take another wife when she doesn't get pregnant; Wahida is dismayed that her husband has had affairs whilst she is a virgin. Yet for all that the women are taught to be submissive and obedient, they are strong, daring and brave. They are resourceful and clever and loving.

Wahida, one of the prominent characters in the novel, is forced to confront the perils of physical intimacy. She is perplexed by the one she is married to as she was forced into the marriage during her adolescent beyond her will. She is immersed under the confusion of her father-in-law's caramelized conversation and unpleasant sexual deeds. She ponders the truth and imaginary aspect of relationships and love in the novel. She explains her experience of all aspects of life as a woman. The tenacity and the defiance of Firdaus stand in stark contrast. She overcomes the impalpable prickly gates of traditions in *The Hour Past Midnight*, from resisting to get bodily intimate with her spouse whom she deemed repulsive to find her stand against the socially built norms. She is considered to be intelligent and well aware of the implications whose determination when faced seems remarkable.

The story has a Tamil Muslim atmosphere, which is both unique and universal. What is special about Salma's work is that it takes you by the hand as it were inside the unseen world of Tamil Muslim women and the problems encountered by them in that milieu. That includes the utter lack of space for women, child sexual abuse, and the persistence of caste prejudices among Tamil Muslim, malaise that could be traced in any Indian community. The terrible memories and their stories destroyed the women who lived but did not change their attitude. For Firdaus, the penalty for falling in love, again, is a glass of poison the mother raises to her lips. Legal abortion is not allowed, at a time when the country has all the requisite legislation in place to prevent feticide and access abortion legally. Amani Al-Khatahtbeh, the author of *Muslim Girl, A Coming of Age*, explains about

such life of Muslim women with intricate struggles which can be compared to the writings of Salma,

Elementary school was a very difficult period in my formative years concerning the development of my self-esteem and self-identity as a Muslim girl. By the time I finished elementary school, the U.S. was already involved in the Iraq and Afghanistan wars. The feelings of vulnerability and lack of protection were only second to those that I experienced in middle school, where the early teen years got really brutal. (10)

The novel immerses the readers in the world of these women, in the life of the village, and examines the minutiae of the daily lives of the women and their relationships and inner feelings. The strict differences in the way the sexes are treated is brought sharply into focus with the return to the village from Saudi Arabia of Mumtaz's husband, and the strict rules he insists the mosque lays down to restrict the freedom of the village women.Salma does not touch the issues concerning Muslims in Tamil Nadu. Among her cast of characters, there are non-Muslims such as Mariyayi, dalit mistress of Karim, through whom the author highlights the Tamil Muslim attitude to caste and women.*The Hour Past Midnight* is not the life story of Salma. Nor is it the story of any one woman. It is the story of the daughters and sisters and hapless mothers and grandmothers, all caught in an inexorable web of growing up, getting married, bearing children and dying. It is the story of 'woman in the set framework'.

References:

Al-Khatahtbeh, Amani. *Muslim Girl: A Coming of Age*. Simon & Schuster, 2016.

Boarde, Constance and ShielaMalovany- Chevallier, Translators. *The Second Sex*. By Simone deBeauvoir, Vintage, 2011.

Hemalatha, Annalakshmi, and Rajesh. "The World of Salma's Women: Muslim Women Community of Southern India as Portrayed in 'The Hour Past Midnight.'" *Ijcrt.Org*, https://ijcrt.org/download.php?file=IJCRT2102031.pdf. Accessed 14 June 2022.

Salma. *Hour Past Midnight*. Translated by Lakshmi Holmstrom, Zubaan, 2009.

Salma, Rajathi, et al. *Salma: Filming a Poet in Her Village*. OR Books, 2013.

Shaban, Abdul. *Lives of Muslims in India: Politics, Exclusion and Violence*. Edited by Abdul Shaban, 2nd ed., Routledge India, 2018.

❑❑❑

1. Ph.D. Research Scholar (FT), PG & Research Department of English, National College (Autonomous) Affiliated to Bharathidasan University, Tiruchirappalli, TN (bavatharanianantharaja@gmail.com)
2. Associate Professor and Research Supervisor, PG & Research Department of English, National College (Autonomous) Affiliated to Bharathidasan University, Tiruchirappalli, TN (drtsramesh@gmail.com)

Research Article

Reflections of Postcolonial Disorder in V.S Naipaul's *The Mimic Men*

–Dr. Junti Boruah

In the very opening pages of the novel, we find Ralph saying, "We lack order. Above all, we lack power…Our transitional or makeshift societies do not cushion us." (Naipaul, 10). In search of order and stability Ralph leaves the island society and comes to London. In the city he tries to maintain his idea of London as a city of "Magical Light". He does, however, come across the horrible metropolis, which is full of noise, packed hotels and dirty surroundings. Ralph realizes that neither London nor the home countries provide any sense of solace, security and stability.

The novel *The Mimic Men* (1967) by VS Naipaul depicts the postcolonial state of Isabella, a newly independent country in the Caribbean. It depicts the lives of the island's once colonised people who are unable to restore order and manage their country. These people regard themselves as inferior to the coloniser as a result of their colonial experience. Cultural colonization creates a deep psychological inadequacy among them and they began to see the world of the master as one of order, accomplishment and achievement. They try to see themselves through the colonizer's eyes and consider themselves to be inferior to the European.Such acceptance of the western culture and education, as well as estrangement from their own culture, customs and traditions resulted in dislocation, fragmentation and loss of identity. Furthermore, the people of the newly independent country are unable to associate themselves successfully with the western world. The purpose of this study is to provide a critical examination of the postcolonial disorder as shown in *The Mimic Men*.

Keywords:alienation, disorder, identity

V. S. Naipaul's *The Mimic Men* is a postcolonial novel that depicts the effects of colonialism on colonized people. The novel exemplifies the impact of colonialism on the psyche of the colonized and how it affects the social, political, and psychological aspects of the people of the island of Isabella, a newly independent country in the Caribbean. Since, the inhabitants of the island are far away from their original homelands, their own cultures have become insignificant for them. Loss of roots and alienation from familiar surroundings createa sense of disillusionment among them. Even independence has become

meaningless to them as political freedom couldnot liberate them from psychological bondage. Thepsychological inadequacy created by colonialism is a hindrance to form a society having order and stability even after independence.

Ralph Singh, the novel's protagonist and narrator, a forty-year-old colonial politician exiled in London, is a representative of displaced colonial individuals. By writing his memories, Singh tries to impose order on his life, reconstruct his identity, and forge a meaningful relationship with himself and his surroundings.In his hotel room he is reconsidering his life in the hope of achieving order, as the place where he was born couldnot provide a sense of security and identity. He says: "To be born on an island like Isabella, an obscure New World transplantation, second-hand and barbarous, was to be born to disorder." (Naipaul, 141)

The novel is not written in the style of a chronological memoir. Ralph Singh, the narrator, imposes a deliberate order on the events and experiences of his life in order to build a solid identity. With an adult mentality, he contemplates over his early events dispassionately and critically. To give structure to the past and his experiences, Singh swings back and forth in time, writing about his youth and adulthood, his life in England, his political career and marriage, and his education. He analyses his experiences to find some sort order amidst chaos of the present and the uncertainty of the future.

> It was my hope to give expression to the restlessness, the deep disorder, which the great explorations, the overthrow in three continents of established social organizations, the unnatural bringing together of peoples….But this work will not now be written by me; I am too much a victim of that restlessness which was to have been my subject. And it must also be confessed that in that dream of writing I was attracted less by the act and the labour than by the calm and the order which the act would have implied. (39)

Ralph interprets his life's events and experiences in order to rediscover the meaning of his life as the present reality doesnot hold promise of order and stability. Ralph opens the story by recordling his impressions of the city. He is aware of a sense of disorder in his search for identity and order there.

> For here is order of a sort. But it is not mine. It goes beyond my dream. In a city already simplified to individual cells this order is a further simplification. It is rooted in nothing; it links to nothing. We talk of escaping to the simple life. But we do not mean what we say. If is from simplification such as this that we wish to escape, to return to a more elemental complexity. (Naipaul, 42-43)

In the very opening pages of the novel, we find Ralph saying, "We lack order. Above all, we lack power…Our transitional or makeshift societies do not cushion

us.” (Naipaul, 10). In search of order and stability Ralph leaves the island society and comes to London. In the city he tries to maintain hisidea of London as a city of “Magical Light”. He does, however, come across the horrible metropolis, which is full of noise, packed hotels and dirty surroundings. Ralph realizes that neither London nor the home countries provide any sense of solace, security and stability.

The sense of inferiority and insecurity from an orderless life gives rise to a tendency to see oneself through the eyes of others. Ralph becomes aware of himself when Leini, the Maltese housekeeper of Mr. Shylock, the Jewish Landlord, calls him a rich colonial. It indicates that an alienated and dispossessed individual can be made to be fit into any identity imposed to him by others. Ralph says,

> We becomes what we see of ourselves in the eyes of others… It was Leini who told me that my eyes might disturb and that my dark, luxuriant and very soft hair might be a source of further disturbance. (Naipaul, 25)

Many of Ralph’s outbursts indicate his disillusionment. In that despondent mood, he wanders aimlessly about England, where he meets Sandra. This chance encounter eventually leads to marriage. Singh keeps track of the aspects of Sandra that intrigue him. One of the most important aspects was language. Sandra was from England and with her “the mere fact of communication was a delight” (53).Then there’s her secluded status, which is similar to his, and her extreme dislike of commonness.

> …I had such confidence in her rapaciousness, such confidence in her as someone who could come to no harm-a superstitions reliance on her, which was part of the strength I draw from her that in that moment it seemed to me that to attach myself to her was to acquire that protection which she offered, to share some of her quality of being marked, a quality which once was mine but which I had lost. (Naipaul, 56)

Ralph leaves Isabella with a lot of dreams and a lot of firmness and self-assurance, seeking to mend the damaged pieces of his life through a new relationship—the marriage connection with Sandra. Their relationship, however, was short-lived. When Ralph married Sandra, he looked for her “confidence, ambition, rightness” (Naipaul, 81) Ralph later on realises that Sandra carries her own personal darkness. His affection for her begins to fade as he understands her nervousness and sense of displacement. When Ralph and Sandra arrive in Isabella as a married couple Ralph’s mother performs various Hindu religious rites. This is a way to establish a link with the past and to gain a sense of continuity and identity. The Indians in Isabella are alienated from their own cultures and selves. As a result, fantasising about India, their homeland, is a means of achieving emotional fulfilment.

Migrants have a proclivity for romanticising the past and imagining lost homelands.Hock, Ralph's Chinese friend, idealises his background and reads books on his origin. Browne, Ralph's black revolutionary comrade, has a room full with photographs of black leaders. They are attempting to maintain an ethnic and linguistic link with an older territory. However, there is no permanent way to escape from these present realities. Moreover, intermixing of cultures does not always provide solace for the discomfort brought on by geographic shifts.Isabella's hybridised society lacks an internal source of power since there is no stable interaction between people and the landscape, and people are not brought together by common interests.

Singh's idea of self is formed through a collision of disparate realities. Singh is surrounded by realities as a child that are divided among his race's Aryan past, his current circumstances on Isabella, and Western influences. He sees his stay in Isabella as a blip on the radar, an unhappy "shipwreck." He fantasises of escaping to his race's glorious Aryan past and a future in London.When England and his English wife fails to bring coherence in his wrecked life Singh turns to India as the center of his dream. As a child, Singh responds to his sense of dereliction by dreaming of India, the homeland and reads books on Asiatic and Persian Aryans.

Ralph's desire for a perfect Aryan past can be equated to a desire for an abstract ideal world. When his father kills Tamango, the racehorse, he is profoundly perplexed. The sacrifice is performed in order to obtain success, wealth, and fertility. Singh romanticises his Hindu heritage and culture, yet he is unable to comprehend Hinduism. When the horse is killed, the perfect past crumbles and the child is left befuddled by the concrete experience.

Despite Ralph's understanding of the act's symbolic meaning, he feels betrayed and seeks only to leave Isabella and begin a new life. He began to have mixed feelings about Hinduism. As long as Hinduism remains restricted to his inner dreams, he finds it enthralling. But when its rituals are put into action, he is repulsed. It's an activity that symbolises his broader issue of wanting to live in an idealised mental realm free of actual action. To put it another way, Ralph's sacrifice enables him to view an Indian world that is diametrically opposed to the noble and ideal sphere of his vision.

The facts that surrounded Singh were split into three categories: his racial past, the circumstances on the island Isabella, and London's effects. He lives in a fantasy world and does not perceive his life on Isabella as genuine. On the one hand, the colonizing culture has influenced this imaginary world. He regards his current position on Isabella as a transient one, and he fantasises of escaping

to his race's glorious past and a future in London. Singh tries to live in a fantasy world, denying the island's realities. But he fails because the reality with which he is confronted on a daily basis mingles with his illusions.

Moreover, Ralph's colonial education has taught him that England is the symbol of order. When he studies English culture and history, he feels that his own culture is inferior to that of the colonizer. Hence, Singh's colonial education created a sense of alienation and inferiority. In his attempt to find his identity and the ideal landscape, Singh goes to London only to realize that he can never identify himself with the land of the master. The alienation and rootlessness created by colonialism is addressed by Frantz Fanon in his influential text Black Skin, White Masks. Fanon focuses on colonialism's harmful psychological effects on colonised people's lives. Fanon shows how colonialism's withering impact leads to a crisis of identity among the colonised, who reject their own traditions in favour of white colonial ideals, beliefs, and language.They lose their sense of self and identity by attempting to be as "white" as possible, as the "white mask" over their dark complexion distances them from their cultural roots and instils in them a sense of inferiority.

Ralph's attempt to rewrite his history through writing reveals a 'lack' as the process of rebuilding the past takes him away from the 'original.' The 'original' loses some of its authority when it goes via the world of language in this process of recreating the past. In this context Homi K. Bhabha's comment in The Location of Culture,is noteworthy : "The desire to emerge through 'authentic' through mimicry – through writing and repetition is the final irony of partial representation." (88).

Isabella is shown in the novel as an artificially created world, designed for colonial profit, in which people from many territories are compelled to coexist. It is worth noting that the hybridised society offers no alternative or comfort to its people. Hybridity does not always lead to comfortable cultural interaction in a colonial society. Naipaul's story shows the difficulty of a comfortable hybridity:

> [T]he restlessness, the deep disorder, which the great explorations, the overthrow in three continents off established social organizations, the unnatural bringing together of people who could achieve fulfillment only within the security of their own societies and the landscapes hymned by their ancestors ... the empires of our time were short lived, but they have altered the world forever; their passing away is their least significant feature. (52)

In the novel, Ralph Singh aspires to become a politician to satisfy his psychological need for identification and fulfilment after being entirely ostracised on the island of Isabella and having no solid past to cling on to.As a political

figure, he attempts to achieve order, meaning, and success. He chooses a political career with no grand ideals or feeling of purpose. Furthermore, Isabella's lack of political consciousness produces politicians who suffer from their own insignificance and displacement. There is no true sense of identity without a political reality.On an island like Isabella politics has no real significance.

In conclusion, migrant subjects construct their sense of being and becoming in response to the interrelated space. In the novel, migrants/settlers from various socio-cultural backgrounds negotiate their identities in hybrid in-between spaces. In the globalised world, people's transnational migration is challenging long-held notions about identity. The environments in which the characters of the novel exist are in a constant state of negotiation and change. Because these locations are defined by ambivalence, the characters who inhabit them feel both at home and alienated.Ralph Singh fails to establish his ties to India and London. He also recognises the lack of cultural, historical, and ethnic uniformity in colonial society of Isabella. Finally, he understands that there is no 'ideal' location with which he can identify.

References:

Asangaeneng, Joseph, Monica Udoette."The Politics of Home and Identity in V.S. Naipaul's The Mimic Men"International Journal of Arts an d Humanities (IJAH)EthiopiaVol. 8 (1), S/No 28, JANUARY, 2019: 56-65. Web. 9 June 2022.

Bhabha, Homi K. The Location of Culture. London and New York: Routledge, 1994.Print.

Cudjoe, Selwyn R. V.S Naipaul: A Materialist Reading. Amherst: Massachusetts UP, 1988. Print.

Fanon, Frantz. Black Skin, White Masks. Trans. Richard Philcox. New York: Grove Press, 2008.

Harode, Reeta."Postcolonial Chaos in V.S.Naipaul's The Mimic Men"IRWLE VOL. 8 No. I January 2012. Web. 7 June 2022.

Loomba, Ania. Colonialism/ Postcolonialism. 1998. London and New York: Routledge,2005. Print.

McLeod, John. Beginning Postcolonialism. New Delhi: Viva Books, 2010. Print.

Naipaul, VS. The Mimic Men. New York: Macmillan, 1967. Print.

Nayar, Pramod K. Contemporary Literary and Cultural Theory: From Structuralism to Ecocriticism. New Delhi: Pearson, 2011.

Nandan, Kavita. "Exile in The Mimic Men" in VS Naipaul: An Anthology of Recent Criticism (ed.) Purabi Panwar. New Delhi: Pencraft International, 2003.

Singh, Veena. "A Journey of Rejection: V.S.Naipaul's The Mimic Men. V.S. Naipaul: Critical Essays Vol. III, edited by Mohit K. Ray. New Delhi: Atlantic, 2005.

Singh, Inder Manjit. Writers of the Indian Diaspora: V Naipaul. Delhi: Rawat, 2002. Print.

❑❑❑

Assistant Professor, Department of English, C.K.B College, Teok, PO: Jogduar (Teok) District: Jorhat Pin:785112 (Assam)

An Evaluative Study of the Essay "On the Abolition of the English Department" by Ngugi Wa Thiong'o

–Projnya Paromita Kaushik

The aspect of oral tradition is something which has been underlined in this essay titled On the Abolition of the English Department. This is mainly because Africa has been hallowed with a rich oral tradition and according to Ngugi this oral tradition is still "a living tradition". However, very unfortunately the educated Africans not only have forgotten their identities, but they have also forgotten their root culture, i.e. the oral traditions.

This paper deals with an essay titled "On the Abolition of the English Department" written by Ngugi Wa Thiong'o, where he talks about the obliteration of the entire English department and the establishment of an African department of literature and culture. This essay has been and will influence and stimulate the generations of postcolonial students and thinkers to come. In this essay, Ngugi strongly disagrees with the fact that the concept of "English" has become the fundamental idea in the study of literature and language. This is mainly because the source of influence on modern African literature not only includes English but other languages and literatures such as French, Swahili, Portuguese, Arabic, Asian Literature and African Traditions. Thus this entire process of abolishing the English Department is mostly emphasised on by Ngugi in this essay as it will ultimately result in restoring the very essence of African-ism which was gnawed by colonialism.

Keywords- Abolition, English, African, Literature and Language, Oral Traditions.

James Thiong'o Ngugi, popularly known as Ngugi Wa Thiongo is a famous Kenyan writer who has a large literary collection to his credit including *Decolonizing the Mind; Weep Not, Child; A Cake of Wheat; The River Between; Devil on the Cross* and many more. He primarily writes in the Gikuyu language. The present essay for study entitled "On the Abolition of the English Department" is also a very significant work of Ngugi. This essay published in the year 1972 inspires generations of thinkers and students of postcolonial literature in English to give second thoughts on the various colonial practices. Ngugi's essay "On the Abolition of the English Department"

is actually a comment on the paper presented by the Acting Head of the English Department at the University of Nairobi on 20th September, 1968. The paper presented by the Acting Head essentially focused within the Arts faculty and its close alliance with the Department of English. The paper threw light on the position of modern languages like French, the role of the English Department, the surfacing of the Department of Language and Linguistics and lastly, the position of African language like Swahili. Most importantly, the essay throws light on the "oral traditions" of Africa.

Furthermore, the paper highlights major issues questioning the position of the English Department in an African setting, suggesting a slim chance of establishing a Department of African Literature and Culture. Ngugi asserts on the fact that English has been kept as the official language because of certain "reasons of political expediency". The main goal should be to place "Kenya, East Africa and then Africa" in the centre instead of the West. This is the main reason because of which suggestions were made to abolish the English Department and establish the Department of African Literature and Languages. Ngugi also discusses about what the "primary duty" of such departments should be. He says:

"The primary duty of any literature department is to illuminate the spirit animating people, to show how it meets new challenges ant to investigate possible areas of development and involvement." (Ngugi 439)

Ngugi emphasised on the fact that both literature and linguistics must be studied together and not in isolation. He even suggests a brief sketch of the syllabus to be followed in the Department of Literature in Africa.

The aspect of oral tradition is something which has been underlined in this essay titled "On the Abolition of the English Department". This is mainly because Africa has been hallowed with a rich oral tradition and according to Ngugi this oral tradition is still "a living tradition". However, very unfortunately the educated Africans not only have forgotten their identities, but they have also forgotten their root culture, i.e. the oral traditions. Ngugi says that these educated Africans are taken in by the modernist aspirations which are propagated by Western imperialism, and therefore by African literature and culture, they only refer to the written literature. This is the basic reason because of which the task of abolishing the English Department has become very important. Moreover, after the abolition, another department of African language and literature should be at the centre. Ngugi also opines that African language is a highly cultural language which is not only dependent on verbal communications. Instead, it is generated with performances, songs, dances and the like. Delinking oral traditions from African culture will only make the African culture imitative of the West.

In order to maintain the authority of the African culture, the study of the oral tradition is a must and also it should be linked to different other branches of study like Music, Sociology, Anthropology, History, Philosophy, Religion and so on. Ngugi says:

> The study of the Oral Tradition would therefore supplement instead of replacing courses in Modern African Literature. By discovering and proclaiming loyalty to indigenous values, the new literature would on one hand be set in the stream of history to which it belongs and so be better appreciated, and on the other be better able to embrace and assimilate other thoughts without losing its roots...(Ngugi 441)

In his *Decolonizing the Mind*, a collection of essays, Ngugi puts forward his plan of doing away with English completely, just like he had said in the essay "On the Abolition of the English Department". However, he did not propose to abolish the centrality of English because according to Ngugi, English has to continue as a medium of communication.

Ngugi argues that the coloniser introduces his language in the colonies with an aim to make the natives' outlook of his culture as inferior and to be forsaken for the superior culture of the colonizer. Ngugi uses the case of a child's learning of the coloniser's language in order to analyse its role in the process of alienating the native from his culture. The coloniser's language is forced upon the native child because it is the medium is which education institutions are run. The spoken language however remains the native tongue which causes "a break in harmony between the written and the spoken work. Ngugi writes:

> English became the language of my formal education : In Kenya, English became more than a language .....one of the most humiliating experiences was to be caught speaking Gikuyu in the vicinity of the school. The culprit was given corporate punishment three to five strokes of the cane on bare buttocks-or was made to carry a metal plate around the neck with inscriptions such as I AM STUPID OR I AM A DONKEY....Thus, children were turned into which witch-hunters and in the process were being taught the lucrative-value of being a traitor to one's immediate community. (Ngugi 278)

Thus, the above quoted lines make us understand that talking in the mother tongue is regarded to be shameful. This linguistic orientation, that the colonizers have instilled in them, according to Ngugi, has made the Africans suffer throughout their lives. This is true to other colonized cultures as well. Thus, Ngugi's prioritization of oral tradition in Africa so far is very much essential.

Chinua Achebe, another great African writer also disregarded the use of English language as a medium of literary production and interaction. In his essay titled "The African Writer and the English Language", Achebe expressed himself through the following words:

"Is it right that a man should abandon his mother tongue for someone else? It looks like a dreadful betrayal and produces a guilty feeling. But for me there is no other choice. I have been given the language and I intend to use it." (Achebe 117)

In one of his other essays, titled "Colonialist Criticism", Chinua Achebe points out the fact that European critics have failed to completely understand the African literature by their own account. Achebe stated that Europeans considered themselves to be superior leading to the rise of the doctrine of what is known as "the white man's burden". He writes:

To the colonist mind it was always of the utmost importance to be able to say: 'I know my natives'. In addition to this, in this essay, he declined the idea of writing like an author from the West. (Achebe 119)

The position taken by Achebe and Ngugi, was also taken by the Indian writers like Raja Rao, Mulk Raj Anand and many others with the same frequency. Raja Rao focused on the fact that English is the language of our intellectual makeup only and not of emotional makeup

Thus, to conclude, we can state that the essay, "On the Abolition of the English Department" is not only an attack against European colonization, but, it is also a critique of those native Africans who are taken in by the modernist aspirations generated by Western imperialism. Ngugi concludes the essay by questioning the concept of "literary excellence" which actually implies peak works of English literature. Ngugi says:

For any group it is better to study representative works which mirror their society rather tha to study a a few isolated 'classics', either of their own or of a foreign culture.(Ngugi 441).

The quoted line is the basic reason for establishing the Department of African languages and literature and also to see things from an African perspective. Ngugi therefore, suggests to appoint a representative committee in order to "work out the details and harmonize the various suggestions into an administratively workable whole." The importance of the 'Oral Tradition' is vividly brought out in the essay by Ngugi wa Thiongo.

Works Cited:

Achebe, Chinua. "Colonialist Criticism." *Home and Impediments: Selected Essays.* New York: Penguine Books, 1988. Print.

Achebe, Chinua. "The African Writer and the English language". *Morning Yet on Creation Day*. Africa: Helnemann Publishing's, 1975. Pdf.

Thiong'o, Ngugi, "On the Abolition of the English Department." *The Post-Colonial Studies Reader.* Ed. Bill Ashcroft, Gareth Griffith and Helen Tiffin.London and New York: Routledge. 1995. 438-442. Pdf.

Thiong'o, Ngugi, *Decolonizing the Mind.*: *The Politics of Language in African Literature*. London and Harare.: James Currey Ltd and Zimbabwe Publishing House, 1986. Print.

Wali, Obiajunwa."The Dead End of African Literature". *Transition.* New Haven: Yale University Press, 1963. Print.

❑❑❑

Research Scholar, Department of English, Cotton College State University, Phone- 8638042632
Email Id- pprojnya@gmail.com

Research Article

Social media & Online Education in Open and Distance Learning

–Dr Rakesh Chandra Rayal

During the lockdown when all educational institutions were closed, online education remained the only option to remain connected and keeping the teaching and learning processes running. The government is yet to conduct a national level survey on the impact of online education but some efforts have been made in this direction at different levels. The key findings indicate that there is hardly any difference in access to resources across institutions whether private or government and across states among students and teachers. But a difference is generally seen in the quality of resources and education provided.

India has witnessed a major shift from an elite centric education system to massification with major emphasis on access and equity while maintaining quality and excellence. The gross enrolment ratio (GER) is 26.3 per cent in higher education in the country which is much below the global average. Social media is playing a vital role in online education and providing strong platform for online education.The learners of twenty first century are more techno friendly and eager to use media in learning processes. Online education is effective mode of teaching highlights the need of quality online education in present time of uncertainty and rapid change where new normal in every field are urgent need of society. Media broadens sources of knowledge in any particular and specific topic, media motivates to explore, creates interest & keeps engaged, for effective learning these are essential elements of learning in which online education in Uttarakhand Open University is working continuously. Online services provided by UOU were easily accessible represents that Uttarakhand Open University is marching ahead in online education for inclusion of technology in higher education. Students are ready to accept online education mode of education for better opportunity and quality. UOU effectively and efficiently practicing online education incorporating social media and digital learning system.

Key words-social media,online education, distance education, odl.

Introduction:

ODL institutions are catering to around 10 per cent of GER and are able to massify higher education to some extent but the dependence on learner support centres for catering to distance learnersneeds restricts

large scale expansion. ICT enabled education offering low cost, flexible anytime, anywhere,individualized and just in-time learning seems to be a viable solution. Appropriate use of ICT can overcome barriers of physical distance and time and lower costs. It also has the potential to increase student enrolments. There were around 687 million internet users in India and around 629 million mobile internet users in January 2020 (Statista, 2020). Though India is the second largest online market, the internet penetration rate in the country was just around 50 per cent of the population at the start of 2020. India's digital environment is increasing rapidly and is expected to reach 1 billion internet users by 2025 (Analytics Insight, 2020). The number of mobile users is also likely to increase to 966 million (68 per cent of the population) by 2023.

The COVID-19 pandemic all over the world revealed new challenges for the ODL system. Steps have to be taken to redesign pedagogy, updating study material, updating the ODL and OER policy, along with improving learner-based co-creation of resources, updating technology for teaching-learning and evaluation, facilitating teaching staff and students with a technology enabled learning environment, and skill enhancement of students. These need to be done for enhancing the ODL system and providing learners with access to quality education during the pandemic(Panigrahi M. 2021).

The COVID-19 Pandemic and its impact on Online Education The COVID-19 pandemic brought major disruptions in higher education, transforming the centuries old chalk and talk model to a technology driven model. It called for a multipronged approach to manage the crisis and build a robust education system in the country. With the lockdown in March 2020 as colleges and universities closed there was a sudden surge in demand for online classes and courses. Faculties were taken unaware and many were unprepared and had to adopt and adapt to the online teaching-learning mode. They were under tremendous stress to address issues like online pedagogy and deliverables.

The Professor Nageshwar Rao Committee looked into issues related to promoting online education. On the aspect of methodology to integrate and enhance various efforts for online education, the committee recommended 'One India One Content,' an integrated e-content portal to be made live at the earliest. On methodology to conduct online examinations ensuring credibility and transparency, the committee recommended that online examinations should not be made mandatory and the universities may device their own mechanisms for conducting examinations including mode of evaluation keeping in mind the concerns of the learners. The committee further proposed to raise the current limit on online teaching of 20 per cent as stipulated in UGC Regulations, 2016 to 40 percent.It also suggested that universities with either a valid NAAC score equal to or greater

than 3.01 or with a rank in the top-100 in the overall NIRF rankings at least once in the last two cycles, should be allowed to proceed with online learning facilities without UGC's permission. The committee's recommendations were integrated with the Merged Regulations for ODL and Online Education 2020.With the thrust from MoE on using online platforms and regular advertisements for these on different social media platforms, the government was able to generate awareness and interest in online education to some extent. The pandemic has to some extent been able to generate interest in online educational resources and courses and the learner and teacher communities have started adopting the online teaching-learning environment.

Need of study:

During the lockdown when all educational institutions were closed, online education remained the only option to remain connected and keeping the teaching and learning processes running. The government is yet to conduct a national level survey on the impact of online education but some efforts have been made in this direction at different levels. The key findings indicate that there is hardly any difference in access to resources across institutions whether private or government and across states among students and teachers. But a difference is generally seen in the quality of resources and education provided. The deployment of services is also not uniform wherein private institutions seem to have an edge in terms of hours of online classes attended by learners. In the context of modes of content dissemination, it is found that the most common methods used were online classes followed by document sharing through e-mails or WhatsApp.

Objectives of study:

- To find out opinion on influence of social media.
- To know about the preference towards social media and online education.
- To know about preference for future classes.
- To find out view on online education is effective mode of teaching.
- To explore view on content and presentation quality of online sessions attended.

Hypotheses:

- There is significant difference in opinion on influence of social media between male and female respondents.
- There is significant difference in preference towards role of media in learning process male and female counterparts.
- There is significant difference in preference on future classes between male and female respondents.
- There is significant difference in opinion on online education is effective mode of teaching between male and female respondents.
- There is significant difference in preference towards content and presentation quality of online sessions attained by male and female counterparts.

Review of studies:

Pandey J.(2021);find out in his study, Experimenting with Online Learning at Uttarakhand Open Universitythat the learners were satisfied with the support provided by the counsellors and the sessions were interactive and useful. Any changes in schedules were communicated on time and they also received timely response on their queries. Their experience with support staff was also satisfactory. The learners agreed that the infrastructure and other facilities provided by the university were good.

Kulal,Nayak(2020);opined in their study on perception of teachers and students toward online classes in Dakshina Kannada and Udupi District that e-learning has a more significant role to play in the future, but it cannot be a replacement to traditional face-to-face classroom learning. A complete transition to online learning is quite tricky. However, we cannot ignore the benefits derived from e-learning. As such, there is a need to understand the obstacles that come in the way of accepting online learning and take corrective measures to overcome it.

Wagdi S.(2020);find out in his study on response to COVID-19 in higher education social media usage for sustaining formal academic communication in developing countries,that social media platforms such as Facebook and WhatsApp have been used effectively to sustain formal teaching and learning in institutions which lacked technological platforms and formal online learning management system

Ansari(2020);revealed in their study on exploring the role of social media in collaborative learning that there is a significant positive association between online knowledge sharing behaviour and student's behaviour indicates that more engaged students in collaborative learning via social media leads to better academic performance.

Research Methodology:

The study investigated the student's perception of online classes &social media in open and distance learning.The study utilized a descriptive Quantitative design to obtain opinion of respondents.The respondents of study all the students enrolled in B.Ed.&B.Ed.(spl).Around 1340 students are pursuing teacher education programme in Uttarakhand Open University.Students were selected for this study in random basis.Simple random selection techniques were used for selection of sample.The sample size consists 60 male &60 female students.Five point Likert scale was used to collect the opinion of students in online classes,social media,open and distance learning.Five point Likert scale indicates with 1 being strongly disagreed & 5 being strongly agreed.Questionnaires were distributed to participants by using Google form and participants were informed that all opinion provided by them were kept confidential.The data were collected and recorded in systematic way analyzed by using statistical package for social sciences(SPSS).Secondary

sources were used for review the concept and supporting the findings.A questionnaire was developed by investigater for collection of data from students enrolled in B.Ed.&B.Ed.(spl).

Analysis of Data,Interpretation and Discussion of results

Analysis of social media influences

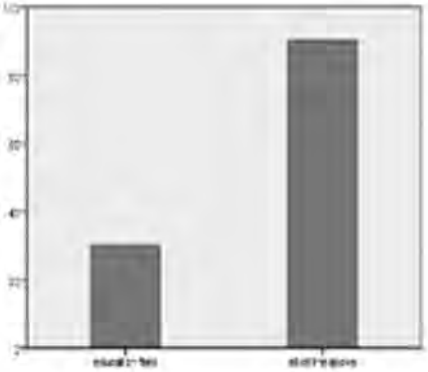

Fig.1

Fig.1 reveals that 8.3%(10)respondents that social media influences education field while 91.7%(110) represented that social media influences all fields including education field, professional field, personal field now a days. Social media influence is growing rapidly in every sphere of life. By using social media intelligently, it will be helpful in making teaching learning process more interesting and motivating as social media is playing an integral role in our daily lives. The respondents were student who are working as teacher in elementary education in remote areas of different states of India.Hence results are very interesting and reflecting grassroot situation in our society.

Table. 1

Group Statistics

	gender	N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean
social media influences	male	60	3.40	1.210	.156
	female	60	3.10	1.386	.179

Independent Samples Test

		Levene's Test for Equality of Variances		t-test for Equality of Means							
						Significance				95% Confidence Interval of the Difference	
		F	Sig.	t	df	One-Sided p	Two-Sided p	Mean Difference	Std. Error Difference	Lower	Upper
social media influences	Equal variances assumed	6.469	.012	1.263	118	.105	.209	.300	.238	-.170	.770
	Equal variances not assumed			1.263	115.884	.105	.209	.300	.238	-.171	.771

On independent sample test it was found that the mean of both gender lies in same range .The mean difference is greater than .05 hence inference can be drawn that there is no significant difference between male and female counterparts on social media influences in education ,professional, personal fields of individuals at present time. Both groups by at par in social media influences.Hence hypothesis 1 is rejected.

Analysis of media's role in learning process

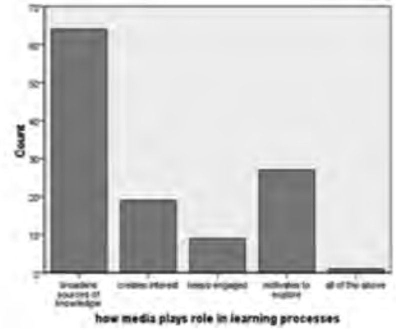

Fig. 2

Fig. 2 reveals that 55% (66)respondents shows that media broadens sources of knowledge,20% (24)opines that use of media motivates to explore,16.7%(9)shows that media creates interest,7.5%(9) shows that media keeps engaged,0.8%(1) shows that media broadens sources of knowledge, creates interest in learning, keeps engaged & motivates to explore .student's engagement consequently affects students learning.This supports to bring changes in traditional education system and inclusion of media in our education system to make it more productive and innovative.

Table. 2

Group Statistics

	gender	N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean
how media plays role in learning processes	male	60	1.80	1.162	.150
	female	60	2.23	1.332	.172

Independent Samples Test

		Levene's Test for Equality of Variances		t-test for Equality of Means							
						Significance				95% Confidence Interval of the Difference	
		F	Sig.	t	df	One-Sided p	Two-Sided p	Mean Difference	Std. Error Difference	Lower	Upper
how media plays role in learning processes	Equal variances assumed	3.846	.052	-1.899	118	.030	.060	-.433	.228	-.885	.019
	Equal variances not assumed			-1.899	115.846	.030	.060	-.433	.228	-.885	.019

The table 3.0 shows that the mean difference is greater than .05 reveals that the difference is not significant .shows that male and female counterparts are at par in opinion about role of social media in learning process. Respondents support that at present time social media is entering rapidly in every sphere of human life due to better internet connectivity and availability of various platforms. Use of social media in education process broadens source of knowledge, creates interest, keeps engaged, motivates to learn .Social media communication devices facilitates students to be more enthusiastic and dynamic. Hence hypothesis 2 is rejected.

Analysis of Preference for future classes

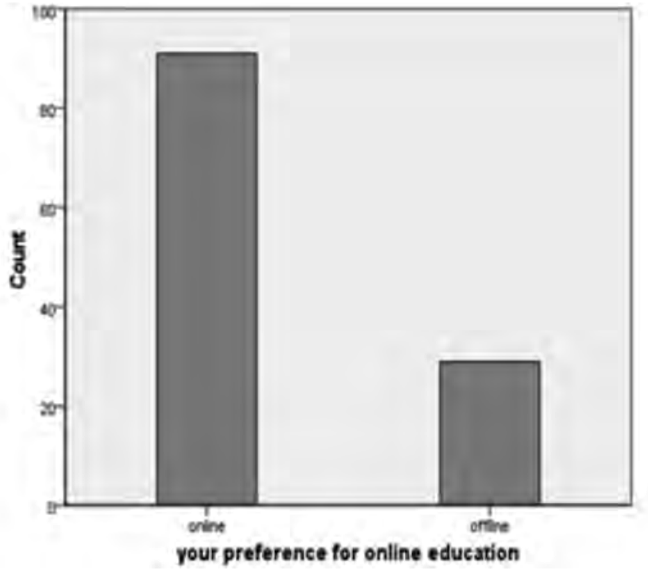

Fig. 3

Fig. 3 On opinion on preference for future classes 57.8%(91)respondents preferred online classes ,gives very interesting resultit may be due to that enrolled almost respondents are working and engaged in teaching professions while 24.2%(29) were in favor of offline classes .as students can attend classes from anywhere and both class and learning content becomes easily accessible hence respondents prefer online classes.Online classes necessitate a learner centred environment required for self-motivated and self -directed learning. This reveals that pandemic has to some extent been able to generate interest in online educational resources and courses and the learner and teacher communities have started adopting the online teaching-learning environment. A very significant and sustainable innovation in the form of Open and Distance Learning (ODL) was necessary for making education accessible to everyone.

Table. 3

Group Statistics

	gender	N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean
your preference for online education	male	60	1.13	.343	.044
	female	60	1.35	.481	.062

Independent Samples Test

		Levene's Test for Equality of Variances		t-test for Equality of Means							
						Significance				95% Confidence Interval of the Difference	
		F	Sig.	t	df	One-Sided p	Two-Sided p	Mean Difference	Std. Error Difference	Lower	Upper
your preference for online education	Equal variances assumed	35.797	<.001	-2.841	118	.003	.005	-.217	.076	-.368	-.066
	Equal variances not assumed			-2.841	106.644	.003	.005	-.217	.076	-.368	-.065

Table 5.0 shows that the mean of male students and female students were similar shows that they are at par on online education is effective mode of teaching. Mean difference greater than .05 reveals that male and female counterparts are at par on online education is effective mode of teaching .Shows that pandemic has to some extent been able to generate interest in online educational resources and courses and the learner and teacher communities have started adopting the online teaching-learning environment. A very significant and sustainable innovation in the form of Open and Distance Learning (ODL) was necessary for making education accessible to everyone. This supports practices done by Uttarakhand Open University for massification of quality higher education in India. Hypothesis 3 is rejected,

Online education is effective mode of teaching

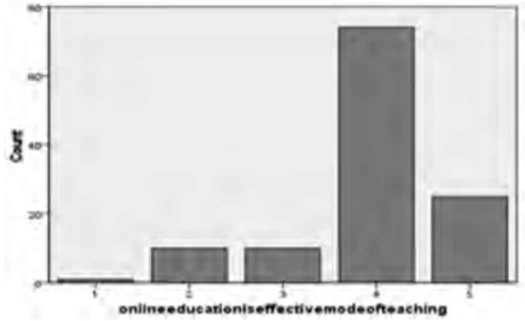

Fig. 4

fig.4 shows 61.7%(74) respondents were agreed that online education is effective mode of teaching, shows that learners are positive towards accepting changes required .20.8%(25)were strongly agree that online education is effective mode of teaching gives very encouraging results towards online

education.8.5%(10)were disagree that online education is effective mode of teaching. Online learning has helped students to become independent learner .Student got opportunities to explore new learning applications and platforms for development new skills and capabilities.

Table. 4

Group Statistics

	gender	N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean
online education is effective mode of teaching	male	60	3.98	.854	.110
	female	60	3.90	.796	.103

Independent Samples Test

		Levene's Test for Equality of Variances		t-test for Equality of Means							
						Significance				95% Confidence Interval of the Difference	
		F	Sig.	t	df	One-Sided p	Two-Sided p	Mean Difference	Std. Error Difference	Lower	Upper
online education is effective mode of teaching	Equal variances assumed	.072	.788	.553	118	.291	.581	.083	.151	-.215	.382
	Equal variances not assumed			.553	117.433	.291	.581	.083	.151	-.215	.382

Table 6.0 shows means of male and female counterparts in online education is effective mode of education. Mean difference is greater than .05reveals that there is no significant difference in opinion. Male and female counterparts are at par in opinion that online education is effective mode of education.online education enriches learning based on collective exploration and interaction which encourages students towards online education.

Analysis of content/presentation quality of online sessions

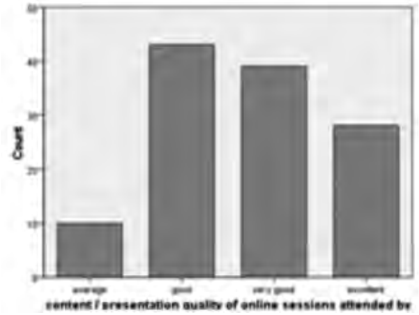

Fig. 5

Fig.5 shows that 55%(66) their experience is excellent & very good on content and presentation quality of online sessions attended indicates that University is marching towards online education successfully while 36.7%(44) were good ,8.3%(10) were on average. The mode of learning used during online sessions by Uttarakhand Open University was simpler encouraging and engaging which are required for education at present.

Table. 5

Group Statistics

	gender	N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean
content / presentation quality of online sessions attended by you	male	60	3.77	.890	.115
	female	60	3.65	.954	.123

Independent Samples Test

		Levene's Test for Equality of Variances		t-test for Equality of Means							
						Significance				95% Confidence Interval of the Difference	
		F	Sig.	t	df	One-Sided p	Two-Sided p	Mean Difference	Std. Error Difference	Lower	Upper
content / presentation quality of online sessions attended by you	Equal variances assumed	.916	.340	.693	118	.245	.490	.117	.168	-.217	.450
	Equal variances not assumed			.693	117.442	.245	.490	.117	.168	-.217	.450

Table 7.0 shows that mean of male and female counterparts were in same range. The mean difference is greater than .05 reveals that male and females do not differ significantly on content /presentation quality of session attended by them. They are at par on content and presentation quality of online sessions in School of Education. Hence hypothesis 5 is rejected.

Findings and Conclusion:

Social media is playing a vital role in online education in open and distance learning.96% respondents were in favor that social media is providing strong platform for online education shows that the learners of twenty first century are more techno friendly and eager to use media in learning processes. Online education is effective mode of teaching was favored by more than 86%respondents highlights the need of quality online education in present time of uncertaintyand rapid change where new normal in every field are urgent need of society. On role of media in learning 52.2%respondents opined that media broadens sources of knowledge in any particular and specific topic,22,2%represents that media motivates to explore,18.9% shows that it creates interest &6.1%shows that it keeps engaged, for effective learning these are essential elements of learning in which online education in Uttarakhand Open University is working continuously. In content and presentation quality of online sessions attended by them 55%(66) shows that their experience is excellent & very good on content and presentation quality of online sessions attended indicates that University is marching towards online education successfully while 36.7%(44) were good ,8.3%(10) were on average. The mode of learning used during online sessions by Uttarakhand Open University was simpler encouraging and engaging which are required for education at present. Shows that students are ready to accept changes in conventional mode of education for better opportunity and quality.The learners enrolled in teacher training programs belong to different states of India like Delhi,Rajasthan,Haryana,Uttar Pradesh &Uttarakhand most of them are in-service teacher in Primary level in different remote areas of India.

The findings of study are really interesting that twenty first century learners are digital natives they ready to accept changes in conventional education system with interest and enthusiasm. it is time that a concerted effort is made at all levels to gradually start adopting online tools and platforms for both online and classroom-based education. In the long term this will help in achieving GER targets and providing quality education. NEP 2020 provides a clear-cut framework for implementing online education in the country and with Online Education Regulations in place a major shift towards online education is expected in the coming years.A very significant and sustainable innovation in the form of Open and Distance Learning (ODL) was necessary for making education accessible to everyone.Proper use of social media could promote new era of social learning social presence and alternative platform to foster online learning in developing countries.Online meeting platforms like google classroom, Zoom strengthened online education in Open and Distance learning.

References:

Armstrong, D.A. (2011), Student's perceptions of online learning and instructional tools: a qualitative study of undergraduate students' use of online tools, Turkish Online Journal of Educational Technology, Vol. 10 No. 3, pp. 222-226.

Ansari, J.A.N., Khan, N.A. Exploring the role of social media in collaborative learning the new domain of learning. Smart Learn. Environ. 7, 9 (2020). https://doi.org/10.1186/s40561-020-00118-7

Kulal,Nayak(2020); A study on perception of teachers and students toward online classes in Dakshina Kannada and Udupi District https://www.emerald.com/insight/publication/issn/2414-6994

Pande. J(2021),Experimenting with Online Learning at Uttarakhand Open University. Student's satisfaction without Open Distance learning ;experiences of Open Universities CEMCA, New Delhi,pp79-91.

Rayal R.(2019), Bharat mei Electronic evam New Media, Samay Shakshya Publication, Dehradun, Uttarakhand.

Social Media in Teacher Education: Education Book Chapter | IGI Global (igi-global.com)

Wagdi. S(2020);social media offers platform for online learning.https://www.universityworldnews.com/post.

https://www.cemca.org/ckfinder/userfiles/files/Student%20Satisfaction%20in%20Open%20Distance%20Learning-Experiences%20of%20Open%20Universities.pdf

https://timesofindia.indiatimes.com/readersblog/expressons4b/the-impact-of-online-classes-on-students-39348/

https://www.emerald.com/insight/content/doi/10.1108/AAOUJ-07-2020-0047/full/html#sec002

https://slejournal.springeropen.com/articles/10.1186/s40561-020-00118-7

https://www.cemca.org/ckfinder/userfiles/files/HandbookonOnlineEducationinCommonwealthAsiaByDrPanigrahiandDrPhalachandra.pdf

❑❑❑

Associate Professor, School of Journalism &Media Studies, Uttarakhand Open University Haldwani rrayal@uou.ac.in

Social Media Platforms– Assessment of the journey, trends and impacts

–Mini Srivastava
–Prof. (Dr.) Arvind P. Bhanu
–Prof. (Dr.) Ashwani Kr. Dubey

One of the most common harms is hate speech. Social media platforms is flooded with content where a person or group or community is attacked on the groundsof gender, race, religion, ethnicity, sexual orientation, disability or any other ground. Such content is harmful and affects users in many psychological ways but more than that, it has also been linked to several violent crimes like mass shootings, lynching, ethnic cleansings etc. Incidents of hate speech are reportedly observed in every continent.

The article focuses on the tracing the journey of social media platforms from their inception pinpointing at some of the biggest developments in the ICT World. It also shows the current statistics about social media in the world and in India. Also, today's generation probably takes few minutes to learn the basics of using latest social media platforms however very few people pay attention to the safety aspect. Consequently, serious psychological and legal harms are rampant globally. As leaving social media totally is not feasible in this technology-dependent world and there are immense benefits attached to it, hence the best strategy is to learn to use it safely and responsibly. Platforms and governments also need to contribute to ensuring safety of users on these platforms.

Abstract

Social media is one of the greatest revolutions of the 21st century. It has become the preferred way of communication for people across the world in the last two decades. Its characteristics like easy to use, free of cost, easily accessible, ability to communicate with many and instant communication makes social media so popular amongst people from all ages, backgrounds, and nationalities.Today there are hundreds of social media platforms available for catering different types of needs – be it socializing, learning, business, professional or any other need. The five most preferred social media platforms in India are Instagram, Facebook, Twitter, LinkedIn and Pinterest. Among the messaging apps category,

Whatsapp dominates the space followed by Telegram, Facebook Messenger, Snapchat and Skype.

In this hindsight, this article at first highlights the growing presence of social media everywhere including lives of ordinary people, businesses and governments. The second part of the article looks at some serious psychological effects that users are facing by regular use of social media. The third part deals with some crimes and harms that are commonly occurring with the help of social media. The last part provides some solutions for keeping social media open, safe and trustworthy.

Keywords: Social media platforms, Facebook, IT Rules 2021, Online Harms, Psychological impacts

Introduction

The evolution and growth of social media is indeed a very interesting story. Tracing the history of social media[1], one of the earliest inventions which can remotely be linked to it has been the invention of the morse code (1844) for telegraph. The first telegraphic message was sent between Baltimore and Washington D.C. Coming to modern day context, vast credit for growth of internet and social media is given to ARPANET (1969), a digital network created by US Department of Defense. It helped scientists from four universities in US to get interconnected for sharing of information.[2]This network laid the foundation for the growth and development of Information and Communication Technology.

Development of popular social media websites over the years

One of the earliest sites of social media was SixDegrees.com (1997) which allowed the creation of profile page, list of connections and sending messages to people in network.Thereafter, one after the other, many social media platforms emerged tapping the varied needs of people. For example, Friendster (2002) and My Space (2003) catered to friendships and dating especially among teens, Facemash (2003) which later got renamed as The Facebook (2004) and just Facebook (2005), LinkedIn (2002) for professional networking, Photobucket and Flickr for photosharing, WordPress for blogging, YouTube (2005) for videos, Twitter (2006) for sending status updates to friends in network, Instagram for photo sharing (2010), Pinterest as a visual pinboard (2010), Snapchat brought concept of serialized short videos i.e. stories (2011), TikTok also for sharing short videos (2016) etc.

Some other significant developments in the journey of social media have been the Arrival of hashtag on LinkedIn (2007) which became a tool for awareness

for both political organizers and ordinary people, Adoption of emojis by Unicode (2010), Arab Spring uprising toppling many governments in Middle East and North Africa region due to widespread public protest with the help of platforms like Facebook and Twitter(2011), Facebook celebrating one billion users (2012), Facebook Live (2016), Instagram stories (2016), US elections and social media's fake news crisis (2016), Cambridge Analytica scandal (2018) and so on and so forth.[3]Some trends that will rule in near future will be Metaverse in social media (especially in the light of Facebook's ambitious plan to transform into augmented and virtual reality (AR/VR), voice based social networks like clubhouse, Non-Fungible Tokens (NFTs) and blockchain on social media, More growth in the social media commerce through availability of UPI feature and Tightening of rules to increase accountability.[4]

Latest statistics aboutSocial Media in World with special focus on India

According to Hootsuite's Global State of Digital 2022 Report[5], some of the key global statistics relating to social media as (in Jan 2022) areas follows:

- Total social media users in world – Over 4.62 billion out of a total world's population of 7.9 billion
- Yearly compounded growth of social media is 12% since 2012
- Every second, 13.5 new users join social media.
- Over three quarter of world population in the age bracket of 13 and above use social media
- Out of regular internet users, over 93%usesocial media
- On an average, people spend around 2.27 hours every day on social media

As far as India is concerned, the India related section of the above report[6] providesthe following key statistics relating to social media (as in Jan 2022) are:

- India's total population has been 1.40 billion out of which 658 million (47%)use internet and 467 million (33%) use social media.
- Top 15 reasons for using social media are communication with family and friends, reading news and current affairs, researching information, filling spare time, remaining updated on latest talks and trends, watching live streams, making new contacts, following sports, looking for things to do or buy, activities for work, sharing opinions, celebrities and influencers, shopping, finding content from brands and supporting good causes
- Top 8 most used social media platforms are WhatsApp (81.2%), Instagram (76.5%), Facebook (74.7%), Telegram (56.9%), Facebook Messenger (49.3%), Twitter (44.9 %), Snapchat (42.9%) and LinkedIn (37.2%).

Rising psychological harms on social media

Technology is a neutral thing. If used constructively, it can prove to be a great asset. However, it used destructively, it can also prove to a great source of misery and pain. The same is applicable to social media also. Notwithstanding the immense utility of social media, there are some serious psychological harms that the users often experience particularly if they are using regularly for long duration.

According to Help Guide, a nonprofit guide to mental health and awareness[7], several studies have linked social media to feelings of hopelessness, nervousness, isolation, self-harm and suicidal tendencies. Further, social media can aggravateadverse experiences like feeling of less achievement in life than others, inferiority complex about looks or social status, fear of missing out,loneliness, cyber bullying and remaining in own thoughts.Also, accessibility of social media on our smart phones or tablets and internet connectivity ensures that social media is always accessible.

Further, this 24x7 connectivity with alerts and notifications constantlycan have a deep impact on the ability to focus, disturbsleep pattern, and making us literally a slave of our gadgets.Social media platforms are designed to be addictive for its users. The more time one spends on it, the more companies monetize. Particularly, social media creates psychological cravings. Just like addiction for gaming, lottery, nicotine, alcohol or drugs gives a high to the user, in the same manner, every like, share or favorable comment on social media can stimulate the release of dopamine in the brain.Hence, the user on getting positive response, likes to spend more and more time on social media even at the cost of other important aspects of life.

Rising crimes and harms on social media

Apart from above mentioned psychological issues relating to use of social media, it is also emerging as a source of several serious online harms. Some of the main online harms are Hate speech, Privacy violation, Intellectual Property violations, False Information including Fake News, Obscenity and Pornography, Defamation, as well as Cyber crimes like Data mining, Phishing attacks, Cyber bullying, Malware sharing and Botnet Attacks etc. At micro level, these harms can have a serious impact on life, property or reputation of an individual. At a macro level, these crimes have the potential to severely impact the peace and harmony in any society and security and integrity of nation and even several nations owing to the transnational nature of internet and social media. In this article, three online harms are covered – Hate Speech, Fake news and Privacy Violation.

Hate speech

One of the most common harms is hate speech. Social media platforms is flooded with content where a person or group or community is attacked on the groundsof gender, race, religion, ethnicity, sexual orientation, disability or any other ground. Such content is harmful and affects users in many psychological ways but more than that, it has also been linked to several violent crimes like mass shootings, lynching, ethnic cleansings etc. Incidents of hate speech are reportedly observed in every continent. Many hateful offenders, in fact use social media platforms to publicize their acts and provoke others to do similar acts. For example, attacks on refugees in Germany, racists attack on colored people by white supremacists in US, mass shootings of jews in a US Synagogue, mass shootings in a mosque in New Zealand, Ethnic cleansing of Rohingya muslims in Myanmar, Communal violence against several religious communities in different parts of India etc. are just some cases in point.[8]Infact, studies suggest that the extent of hateful content on social media is so much that most of it goes unreported. Hence, the actual impact that hateful content has on society can never be clearly and fully measured.[9]

False Information (including Fake News)

Another serious harm is spreading of false information. It may include fake news as well as other types of incorrect information that can be in the form of news, stories or hoaxes which have been deliberately created to mislead or deceive the readers. It can be in the form of clickbait, propaganda, satire, parody, sloppy journalism, misleading headlines, biased newsetc.[10]Some of the main reasons for spread of false information (including fake news) arepolitical, business or ideological motives. Even algorithms used by social media platforms also promote in sharing false information as they are designed to promote that content which gets maximum attention and response from users.Not surprisingly, this phenomenon of sharing false information has been used as a potent tool for weakening the established and legitimate governments and for disturbing the social amity amongst countries around the world. Generally, many disinformation campaigns get active during highly sensitive times like during 2016 indian currency demonetization, Citizenship (Amendment) Act related protests, spread of coronavirus, general elections of 2014 and 2019, revocation of Article 370 and changing of status of Jammu from state to union territory, etc. Internationally, a lot of false information was circulated allegedly by Russian bots during 2016 and 2020 US presidential elections, Brexit, Capitol Hill Riots, and recently in continuing Russia-Ukrainian War.

Privacy Violation

There are several factors through which a user's identity and his/her online content could be breached. The most common way is the default settings of several social media websites. Most users do not change the default settings which allows everyone to see their profile and posts. Till 2014, Facebook also had such feature which later got changed to friends only.[11] Another way of losing privacy is through data mining. Many people put their basic but most crucial information on social media pages like Family members' names, age, birthday, location, pictures etc. Many companies store such personal data of users and later sell it to advertising companies. The infamous Cambridge-Analytica Scandal was one such scam where privacy of 87 million Facebook users of US was compromised.[12] Yet another way of privacy violation is online frauds with the help of phishing attacks wherein personal details are asked by cheaters through deceptive techniques. Also, malware sharing is also done these days for stealing sensitive information from targeted computer or for extortion of money. Yet another way of compromising privacy is through Bot net attacks where bots (automated social media accounts) are used to spam people, send malware and perform all kinds of malicious activities.

Conclusion

The article traces the journey of evolution, growth and development of social media from early days till now. The whole world is amazed at the phenomenal growth of internet and social media in last 20 years or so. From the timewhen there was practically no computers, our generation has seen a global revolution in relation to social media. Today, technology has almost assumed omnipotent, omniscient and omnipresent role in our lives. This is particularly true considering the staggering statistics both at the global level and in India in particular. Further, the article also takes journey into some of the latest trends which will be growing in future like Meta verse, NFTs and Blockchain etc. Thereafter, it focuses on the serious psychological harms that are caused by regular and long hours of social media usage. Lastly it discusses some of the harms that are extremely concerning for users as well as for the society and state in general.

As far as solutions are concerned, in my opinion, there can be a three-pronged approach. Many of online psychological and legal harmscan be minimized if the three stakeholders – users, platform providers and the governments all work together in a cohesive manner. The users should focus not only on how to use these platforms technically but also strive to gain some insight into how to use these platforms safely in an open and trustworthy manner. Social media platforms

are just like public squares so people must learn to use them with care and caution. Further, social media platforms must also play active role by weeding out harmful content from their platforms through user based complaints, fact checking, automation and other techniques. The harms of social media are so vast and severe that mere self governance by companies will not help. Governments also need to create effective and robust mechanisms through law to ensure that using internet becomes an open, trusted and safe experience.

References:

1. The Evolution of Social Media: How Did It Begin, and Where Could It Go Next? https://online.maryville.edu/blog/evolution-social-media (Accessed on 19 June 2022).
2. John Leyden, ARPANET anniversary: The internet's first transmission was sent 50 years ago today https://portswigger.net/daily-swig/arpanet-anniversary-the-internets-first-transmission-was-sent-50-years-ago-today (Accessed on 19 June 2022).
3. Alexandra Samur, The History of Social Media: 29+ Key Moments https://blog.hootsuite.com/history-social-media/ (Accessed on 19 June 2022).
4. Abhijit Ahaskar, 5 trends that will change social media in 2022. https://www.techcircle.in/2021/12/27/key-social-media-trends-to-watch-out-for-in-2022 (Accessed on 19 June 2022).
5. Claire Beveridge, 150+ Social Media Statistics that Matter to Marketers in 2022 https://blog.hootsuite.com/social-media-statistics-for-social-media-managers/ (Accessed on 19 June 2022).
6. Simon Kemp, DIGITAL 2022: INDIA https://datareportal.com/reports/digital-2022-india (Accessed on 20 June 2022).
7. Social Media and Mental Health, https://www.helpguide.org/articles/mental-health/social-media-and-mental-health.htm (Accessed on 20 June 2022).
8. Zachary Laub, Hate Speech on Social Media: Global Comparisons https://www.cfr.org/backgrounder/hate-speech-social-media-global-comparisons (Accessed on 20 June 2022).
9. Hate speech and violence, https://www.coe.int/en/web/european-commission-against-racism-and-intolerance/hate-speech-and-violence (Accessed on 20 June 2022).
10. Explained: What is False Information (Fake News)?, https://www.webwise.ie/teachers/what-is-fake-news/ (Accessed on 20 June 2022).
11. Facebook increases privacy on all new posts by default https://www.theverge.com/2014/5/22/5739744/facebook-changes-default-privacy-of-posts-from-public-to-friends(Accessed on 20 June 2022).
12. Cambridge Analytica whistleblower: 'We spent $1m harvesting millions of Facebook profiles' *available at:*https://www.youtube.com/watch?v=FXdYSQ6nu-M(Accessed on 20 June 2022).

❑❑❑

---

1. PhD Scholar and Assistant Professor, Amity Law School Noida;
2. Professor and Acting Director, Amity Law School Delhi;
3. Professor, Amity School of Engineering and Technology

Research Article

IOT technology impact in Real estate Market

–Vardan Dikshit
–Dr. Abhishek Upadhyay

Many different BMS utilise their own standards, resulting in various protocols; according to a 2014 poll, over half of respondents said that 50 percent of their building conversion projects had multiple protocols that did not interact with one another. 23 Another issue is sensor owners relinquishing control to users so that different sensors can communicate with one another. Furthermore, system integration is frequently a low priority, as corporations prioritise minimising early costs over cooperation, particularly during the building design process.

THE INTERNET OF THINGS (IoT) is a collection of technologies and applications that enable devices and places to create a wide range of data, as well as to link those devices and locations for real-time data analysis and, ideally, "smart" action. The Internet of Things (IoT) is a concept that refers to physical items being able to communicate data about their status, location, or other qualities over the Internet backbone. Understanding how various types of sensors can track features such as motion, air pressure, light, temperature, and water flow and then enabling the BMS to autonomously sense, communicate, analyse, and act or react to people or other machines in a nonintrusive manner with the Internet backbone may be most relevant to CRE companies(see figure 1). We predict more CRE businesses to use IoT applications as the cost of sensors, data storage, and connectivity continues to reduce. According to a recent Deloitte Center for Financial Services report, IoT technology has enormous promise in CRE: Sensor deployment in the

industry is expected to rise at a compound annual growth rate of 78.8% to over 1.3 billion between 2015 and 2020 (see figure 2 and appendix 1–2). The Internet of Things (IoT) promises to transform every thing into a source of information about that object and its surroundings using such sensors. This provides a new method to distinguish products and services as well as a new source of value that can be maintained independently.The Information Value Loop is a paradigm that captures the series and sequence of activities through which enterprises create value from information in order to realise the IoT's full potential (see figure 3). In the context of CRE, the value created by IoT-enabled buildings' information has the potential to broaden the lens on value creation beyond location by demonstrating a level of efficiency and effectiveness that could differentiate buildings in a marketplace in terms of desirability and profitability.

Figure 1:-

Figure 1. IoT information value stack for CRE buildings

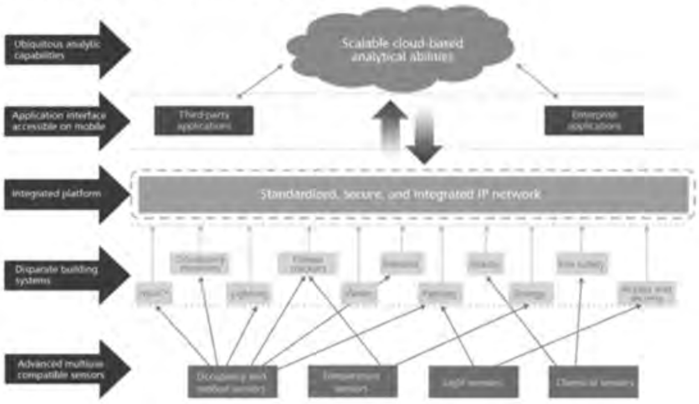

Figure 2:-

Figure 2. Potential growth in worldwide IoT sensor deployments for CRE (2015–20), millions

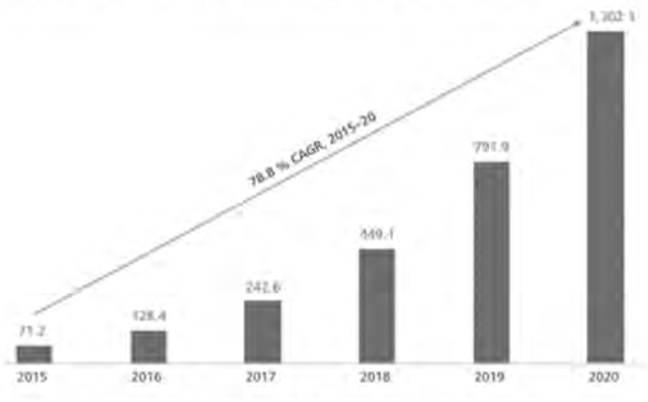

Source: Chart created and analysis performed by the Deloitte Center for Financial Services based on Gartner research: "Forecast: Internet of Things, endpoints and associated services, Worldwide, 2015," Gartner Inc., October 29, 2015. For more information on categories and sensor types included in the graph, please refer to appendix 1.

Figure 3:-

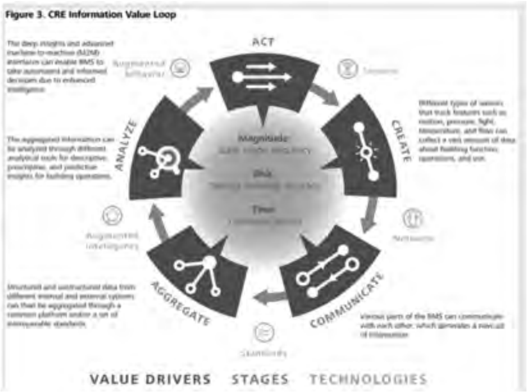

Basic difference between Traditional BMS and IOT Technology:-

So, the main difference between traditional BMS and IOT technology-based BMS is the value of data and analytics that IOT technology can provide, and with those data, you can create some analytical reports about the equipment that is running inside your building, whether it is a commercial or residential building..

The core of this system will always be IOT technology, which delivers analytics and in-depth knowledge about energy leakages and waste while running your building efficiently and effectively.

No, I'm wondering if we make it a regulation in India that no building can function without automation. This would save 97 percent of the energy consumed by commercial and residential buildings in their everyday operations, and we'll save a lot of energy, the environment, and money.

So, with the aid of Figure 4, you will be able to comprehend in a simple manner about traditional BMS and IOT technologies on top of it.:-

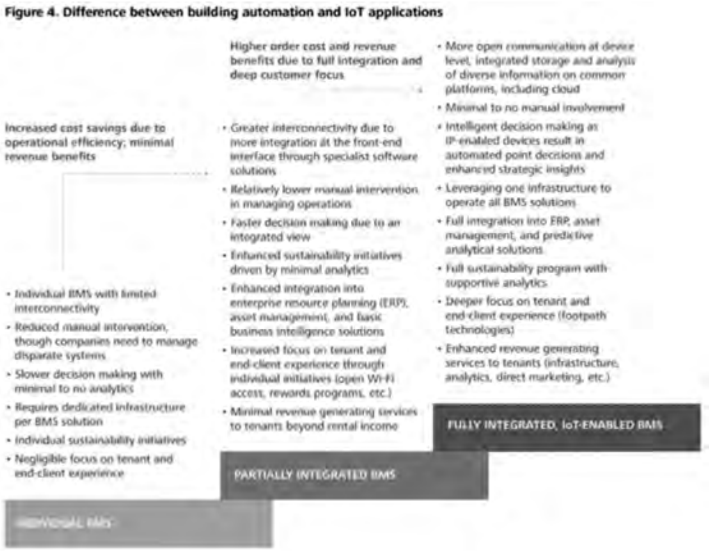

How to maximize IoT value?

We think that CRE firms will gain a competitive advantage if their IoT strategy reduces bottlenecks and maximises the utilisation of the huge amounts of structured and unstructured data generated by multiple value loops. Integration and interoperability of technology IoT applications must bring together many different sorts of data from many different sources to accomplish the fully integrated BMS with all of its promises of greater efficiency. The bottleneck in the Information Value Loop occurs at the aggregate step. IoT technology is dynamic and ever-changing, posing constant problems. For example, the lack of industry standards and benchmarks makes it difficult to communicate between competing and outdated IT systems.

Table 1. Bottlenecks and key challenges to value capture Value to CRE Bottleneck Key:-

Value to CRE	Bottleneck	Key Challenges
Efficiency	Aggregate	Technology Integration and interoperability
Differentiation	Analyze	Ability to leverage the data created by IOT-enbaled buildings
New Revenue	Act	Visualize and display data to customers on real time basis
CyberSecurtiy and Data Privacy		

Many different BMS utilise their own standards, resulting in various protocols; according to a 2014 poll, over half of respondents said that 50 percent of their building conversion projects had multiple protocols that did not interact with one another. 23 Another issue is sensor owners relinquishing control to users so that different sensors can communicate with one another. Furthermore, system integration is frequently a low priority, as corporations prioritiseminimising early costs over cooperation, particularly during the building design process. To promote technological integration and interoperability, CRE organisations might take the following steps:

- Develop sophisticated mobile computing capabilities: CRE firms will likely profit from creating a flexible mobile application platform that can accommodate future IoT data collection and monitoring requirements.
- Buy specialist software solutions that integrate siloed and disparate building systems and increase interoperability: Owners of existing buildings should explore purchasing specialised software solutions that integrate siloed and fragmented building systems and improve interoperability. Similarly, owners of new buildings should think about using the most up-to-date integrated IoT technologies.

- Use common standards and protocols: Gradual unification of many BMS protocols will aid in the development of benchmarks that will allow IoT technology to be fully utilised. The OASIS Open Building Information Exchange initiative is a global industry-wide attempt to create common web protocols for communication across different BMS. Finally, parties must agree on benchmarks to improve interoperability between systems used by various industries.

Ability to leverage data created by IoT-

enabled structures If a CRE firm wants to employ IoT apps for more than just increasing efficiency and providing tenants with new goods and services, it must first overcome a different challenge: evaluating the massive amounts of data generated by the applications and extracting insights from it. This analysis is tough due to the number and variety of data: Most traditional CRE systems can manage structured data, but IoT data is becoming increasingly unstructured—in fact, unstructured data is expanding at twice the pace of structured data and already accounts for 90% of all business data. Furthermore, data acquired from numerous devices comes in a variety of formats and sample rates (the frequency with which data is collected). Companies in the real estate industry would also have to select data that is actually helpful. Machines will create 10% of global data by 2020, according to IDC, with the volume of meaningful data produced growing to over 35%, up from 22% in 2013. To relieve this delay at the analysestage, CRE organisations should employ proper data structure and analytics technologies. This allows CRE firms to distinguish their homes and even charge premium pricing, giving them some breathing room in a market when margins are razor-thin. Aside from that, the journey to deploying IoT applications to produce whole new revenue streams has its own set of difficulties. While data indicating how people walk around a place may be valuable to advertising and others, CRE organisations would need to have adequate data-provisioning skills in order to act—that is, give the data to various players in the ecosystem. The Internet of Things in the Commercial Real Estate Industry What can CRE firms use with the data generated by IoT-enabled buildings? Companies in the real estate industry may wish to concentrate on improving their data management and analytics skills, concentrating on topics such as:

- **Developing sophisticated data aggregation and processing capabilities:** CRE firms may use advanced big data technologies to collect enormous data sets, both structured and unstructured, and analyse them in a variety of ways.
- **Creating a flexible platform:** CRE firms should think about including flexibility into the platform that will gather and share building data throughout the value loop, since data standards continue to evolve, making previous platforms outdated.

Developing technical skills: As firms adopt big data tools, their existing labour pool may lack the necessary abilities to use them, thus retraining current employees or acquiring new specialised talent to gather, analyse, and manage the data is likely to be beneficial. Data privacy and cybersecurityAt every stage of the Information Value Loop, increased interconnectivity and data capture exacerbates cybersecurity and data privacy concerns. Although cybersecurity and privacy issues are not new, they are amplified in an IoT-connected society. The more IoT-enabled devices there are, and the more integrated the various building systems are, the more detailed and sensitive the data collected becomes. This is expected to increase the attack surface for hackers, giving them additional opportunities to do financial and reputational harm, as well as real life loss. Even when buildings are partially linked, recent data breaches demonstrate the magnitude of financial and reputational harm to tenants caused by cyber incursions through building systems. According to IDC estimates, 40% of the data in the digital world requires some kind of security, yet only half of that data is secured (20%). What can CRE firms do to mitigate the security and privacy risks posed by IoTtechnology?They can make several moves to become secure, vigilant, and resilient, as detailed in Deloitte's Safeguarding the Internet of Things report, the source of the following steps:

- **Rather of retrofitting or expanding** the functionality of old systems in ways for which they were not designed, firms should strongly consider totally new, secure BMS created expressly for the IoT.
- **Establish defined obligations for your ecosystem's actors:** Rather than distributing responsibility across a diffuse ecosystem, players should know where their responsibilities begin and finish, as well as what they must safeguard.
- **Establish a baseline of data:** Viewing IoT systems more broadly and monitoring environmental attributes such as usage, location, and access could better enable enterprises to gather a broad enough scope of data to establish a baseline, helping companies to discern what is normal and what constitutes a suspicious aberration.
- **Implement data governance:** Businesses should consider taking a more active part in data governance by defining which data to protect, what it means to be adequately safe, and, as a result, which products are capable of achieving that aim. Guidance on how to gather, handle, and retain data securely can help prevent undesired breaches.
- **Create loosely linked systems:** Make sure devices in an ecosystem are loosely coupled and robust so that one device's failure does not result in widespread failure.

Endnotes:-

1. Gartner, "Gartner Says Smart Cities Will Use 1.6 Billion Connected Things In 2016," December 7, 2015, www. gartner.com/newsroom/id/3175418.
2. Jim Eckenrode, The derivative effect: How financial services can make IoT technology pay off, Deloitte University Press, October 13, 2015, http://dupress.com/articles/internet-ofthings-iot-in-financial-services-industry/.
3. Jonathan Holdowsky, Monika Mahto, Michael E. Raynor, and Mark J. Cotteleer, Inside the Internet of Things (IoT), Deloitte University Press, August 21, 2015, http://dupress.com/articles/ iot-primer-iot-technologies-applications/.
4. IC Insights, "Sensor shipments strengthen but falling prices cut sales growth," April 8, 2015, www.icinsights.com/news/ bulletins/Sensor-Shipments-StrengthenBut-Falling-Prices-Cut-Sales-Growth/.
5. John Moore, "Building automation systems: Internet of Things meets facilities management," TechTarget, January 2014, http:// internetofthingsagenda.techtarget.com/feature/ Building-automation-systems-Internet-ofThings-meets-facilities-management.
6. Memoori, "Building automation prepares for the Building Internet of Things (BIoT)," May 1, 2014, www.memoori. com/building-automation-prepares-forthe-building-internet-of-things-biot/.
7. Gartner, "Gartner Says Smart Cities Will Use 1.6 Billion Connected Things In 2016," December 7, 2015, www. gartner.com/newsroom/id/3175418.
8. Building Efficiency Panel, "Where can smart equipment technology reduce the headaches?," Johnson Controls, http://ar.johnsoncontrols. com/content/dam/WWW/jci/be/industryinsights/Building%20Efficiency%20Panel%20 Smart%20Equipment%20Survey%20 Report.pdf, accessed March 22, 2016.
9. IOTWorm.com, "How Internet of Things will help in weather forecasting," February 6, 2015, http://iotworm.com/internet-ofthings-technology-weather-forecasting/.
10. Joe Costello, "Unlocking the IoT in commercial buildings with smart sensor technology," Construction Executive, with content repurposed from Construction Executive's Tech Trends eNewsletter, September 1, 2015, https://enewsletters.constructionexec. com/techtrends/2015/09/unlocking-theiot-in-commercial-buildings-with-smartsensor-technology/. Copyright 2015.
11. SurabhiSheth, Commercial real estate redefined: How the nexus of technology advancements and consumer behavior will disrupt the industry, Deloitte Center for Financial Services, October 2015, www2.deloitte. com/content/dam/Deloitte/us/Documents/ Real%20Estate/us-cre-outlook-2016.pdf.
12. Dan Ledger, Inside Wearables Part 2, Endeavour Partners, July 2014, http://endeavourpartners.net/assets/Endeavour-PartnersInside-Wearables-Part-2-July-2014.pdf.

❒❒❒

1. Research Scholar, JS University, Shikohabad
2. Guide, JS University, Shikohabad

Silence of the male poet and voice of the female poet: Seamus Heaney's *Punishment* and Mamta Kalia's *Tribute to Papa*

–Dr Sekh Abdul Hakim

The poet describes the dead in the marsh under the pressure of the stone; the weight of it did not let the mystery to come to surface. The other items like buoyant 'rods and boughs' mean the hidden nature of men's crime against women who are made silent in a patriarchal society. The woman could not protest and the poet has not described in any occasion the voice of his subject.

The silence of the male poet is the acceptance of cruelty against women while the voice of the female poet is the revolt against patriarchy. Seamus Heaney has portrayed the savagery and brutality meted out to women, through the representation of a bog dead body of a woman in his poem *Punishment.* From a feminist outlook, woman are attributed the qualities of virtue like shame and virginity and that has become the cause of doom for the unfortunate woman. The women received severe punishment as a result of adultery. The dead body represents the loss of all values for a woman in the society. Male have the privilege to enjoy the rights including sex while women are chastised on the smallest pretext. The poet has drawn an analogy with the modern women's plight who submit to their destiny, particularly the Irish women, through visualization. The victim was silent just like her modern counterparts. The poet has become an artful bystander while sympathizing with the woman. As a feminist poet, Mamta Kalia's *Tribute to Papa* challenges patriarchy in the form of her father. The title is ironical as it is a challenge to the authority of a father. Her voice is very radical in challenging the authority of a father and the societal norms ingrained in his believes. She is vocal from the beginning towards the end of the poem, in her visualization of her dead father. The father is silent here while the female protagonist is silent in *Punishment.* This paper is a humble attempt to show the silence of the male poet in the poem *Punishment* and the voice of women poet in the poem *Tribute.*

Key Words: Silence, Voice, Heaney, Kalia.

Methodology: The research is analytical. It uses secondary data collected from books. Internet source is also used for data collection.

Seamus Heaney (1939-2013) is an Irish poet who is concerned about Irish society and its norms. *The Tollund man* (1972), *Grauballe Man* (1975) deal with the life of the bog. His poem *Punishment* published in North(1975), deals with the savagery of tribal society against a woman for adultery. In this society, men are free for carnal pleasures with woman without penitence; on the other hand, women are brutally chastised, even unto death. The poet draws a body of a naked woman buried in a peat long ago that reflects the treatment meted out to women from primitive times. It is symbolic of the loss of all rights and values of a woman. Through the discovery of an ancient body, the poet metaphorically suggests a link of the ancient and the present. He visualizes the woman in modern society and so he creates a mental picture of the girl and shares his feeling for the victim. He has a feeling for the girl as he expressed in the first paragraph. He feels the rope that is hung around her neck which was used to drag her body. The wind was blowing from the opposite side that was beating her body which is stripped of clothes.

Heaney makes a bridge between ethnic savagery and modern Ireland to focus "on the predicament of Ireland . . . . using similes, metaphors, alliteration and allusion" (Multani 3).

The poet describes the dead in the marsh under the pressure of the stone; the weight of it did not let the mystery to come to surface. The other items like buoyant 'rods and boughs' mean the hidden nature of men's crime against women who are made silent in a patriarchal society. The woman could not protest and the poet has not described in any occasion the voice of his subject. She is dead and has been silent for centuries after being a 'scapegoat'. The poet himself is silent but artistically. He feels a love for the girl. Her body is aesthetically presented but he has no option except shedding tears. He is voiceless and sheds the drops of silence as he is a powerless artist who himself has expressed his position as an artist: "I am the artful voyeur" (32).

The speaker is chronologically separated from the time of the revenge; but through his perception visualizes the woman to be of his own age or himself as existing in the age of the victim. He reinforces his powerlessness in the face of a large tradition of autocracy and barbarism. His love for the girl is useless but a creative record of history. The male counterpart in the poem is supposed to get exoneration. The feminist thinkers protest this dualism in contemporary society. In the context of her own country, the Nigerian author Adhichie says, "These Nigerians have been raised to think of women as inherently guilty. And they have been raised to expect so little of men that the idea of men as savage beings with no self control is somehow acceptable" (33).

The poet reinforces his powerlessness in the face of a large tradition of autocracy and barbarism. His contemporary women face the same problem of silence and

they are also voiceless against a Petrarch of a different situation. They have nothing to do or protest except shedding tears. Thus, the poet reveals the silence of the victims and the muteness of the artists. The latter represent a passive minority of consciousness who remains futile in their artistic protest. The artists are outraged for the injustice prevalent in society, albeit they are detached, voiceless. The modern ethical form of brutality overlooks such type of artful voices or protests. That is the clear message that Heaney wants to give by comparing the plight of Irish women of his age and the marsh woman centuries back.

However, in one direction we can see the poem as a protest against the inhuman treatment as the poet has opened the eyes of millions. His comparison with modern context is itself a protest. In poems like *Punishment* and other poems, the poet expresses the voice for others and this is "woven together by a central commitment to compassion and the need to make space for the voices of others who are absent to his readers" (Thakur 1). He confesses his guilt by the word 'connive' and procreates the body of the girl in erogenous details through his crafty description of her bodily sensation like beaded nipples. By uncovering the viciousness of the primitive ethnic impulses, Heaney in a way tries to draw out in an artistic way the awareness of his natives and by this way elicit commiserating response towards them. The comparison of the women wailing silently for breaking sexual fidelity in Northern Ireland during the days of conflict with the British and the body found in the marsh of an unchaste woman punished for breaking tribal sexual allegiance reveal preservation of ferocity.

Mamta Kalia's (b.1940) *Tribute to Papa* (1970) is a voice of a female poet who challenges father figure by interrogation. There is an irony in the title of *Tribute* as the devotion is not what it means literally. Her tribute is not a submission but a challenge: "Tribute to Papa is a title but there is no tribute" (Singh 6). She challenges not only father figure but also all the traditional customs, values, rituals, discriminations and 'shame' that girls are supposed to maintain. Adichie says, "We polish girls. We praise girls for virginity but we don't praise boys for virginity (32). In a feminist poem *I am a Warrior* (2017) by Kallolikar, the poet states its revolt against all patriarchy: "People changed, now customs need to" (8).

In *Tribute,* the rebel poet lashes patriarchy by moving from one poignant statement to another. The expectation of a father from a daughter is dealt unexpectedly in an adverse manner along with a scornful rejection of ideals of a father. The normal way of life that the father lives, draws the ideal expectation of an Indian society. She is to deconstruct the ideals of the society in its totality by her revolt against her father who represents male dominance. So she promulgates, "Everything about you clashes with nearly everything about me" (27). In a comparison of the 'Father figure' in Mamta kalia and Kamala Das' poetry, Jalpa Rana says, " Their poetry becomes confessional and a form of protest against

a male-dominated society" (612). Another thing that she brings into her ambiance of criticism is the financial restraints that religion has imposed on devoted persons. Her father is engaged in devotion as he finds nothing to engage with: "When you can't think of doing anything / You start praying" (14-15). Smuggling is better than leading a worthless life, according to the poet. Her longing after modern life is evident when she openly expresses the fanciful love affair with the fulfillment of carnal desires. She fancifully questions her father whether he suspects about a love affair that she is engaged for some days. But she disregards her father by attributing shyness to him in verifying her love affair. She further intensifies the interrogation by going to the extreme point of defying her shy father: "What if my tummy starts showing gradually/ And I refuse to have it curetted (30-31)? As opposed to her frankness, her father is a modest traditional type. The contrast between the ideology of her father which has restrained him in his domestic life along with a limited economic affluence and her longing for the fascination of modern living without moral values is brought out in the opening lines of the poem when she in a rhetorical question denies the gravity of a father: "Who cares for you Papa?"(1)

As a rebel daughter, she even thinks of disowning her father which is her ultimate form of rebellion. She virtually defies all the established patriarchal conventions manifested in her Father figure. This is a clear indication of the mistrust of a daughter on her father and the hatred she rears against her farther. She expresses her disenchantment with her father as he is an impotent person in worldly affairs who has remained unsuccessful in his life from providing a 'cozy' atmosphere to himself and his family. She wishes he had the guts to 'smuggle eighty thousand watches'; so that she would proudly tell that her father deals in 'import export business'. She further reveals her frustration with her father as he is not concerned about the proper definition of what is greatness that he nourishes as an ideal. She ironically questions her father's wish to pursue his style of living by her. His ideal has an alternate in the character of Lakshmibai who is a much regarded Indian heroin.

In her depiction, there is an undercurrent of "ardent feminist within her. She goes to embrace the ideology of feminineness that has been indoctrinated into the women of her generation" (Ganvit 17).

The mention of Lakshmibai is ironical and it is not related with nationality as the character of Lakshmibai is generally associated with but with feminist thinking. Souza, in the context of comparing women's role in nation movement and her challenge from patriarchy in her *Introduction to Women's Voices,* commented that it was a paradoxical situation to connect women's participation in nationalism; it was again the echo of patriarchy in place of nationalism. (xvii). From an analysis of her less promulgated story, it is apparent that she was in a sense restrained in conventional patriarchal society. She needed to free herself from the bonds

and constraints “imposed upon her by this society.”(Singh 7). Mamta kalia’s poem *Tribute* is a poem expressing woman’s fight for identity, a new way of woman’s freedom to live and take a decision herself in an erstwhile thought male dominated society. However, the ending of the poem is a compromise as she has a heart not to throw her father to death as it will be unbearable for him if she refuses to curette her tummy which may start to enlarge due to some prohibited relationship and so, he may commit suicide. Here, she has expressed a sympathetic understanding with her father. In this context, the view of Menon is worth quoting: “Feminism is not about that moment of final triumph, but about the gradual transformation of the social field so decisively that old markers shift forever” (222).

While Punishment deals with the elementary oppression against woman, *Tribute* focuses on the psychological, social and cultural restraint of woman in our society. The latter is a revolt against patriarchy to become equal with male and maintain the own identity of women. Simone de Beauvoir (1908-86), Mary woolstonecraft, Virginia Woolf (1882-1941), Elain Showalter (b.1941) were the notable feminist thinkers who influenced women writers all over the world. The French philosopher Simone de Beauvoir made a thought provoking remark when she proclaims that woman is the inessential while male is the essential, male is the subject and male is the absolute. In a sense “she is the other” (7). This view of Beauvoir found its cause in many feminist poems and this is the point that *Tribute* virtually condemns and positions women’s voice in the foremost place. As Elain Showalter has divided three phases[1] of women’ writing (Nabi 4-5), Mamta Kalia’s poem *Tribute* falls to the last phase. In Mamta Kalia’s poems we find the delineation of the predicament of a woman who is sensitive and intellectual “in relation to her parents, family, domestic and professional life and the large outer social life” (Nabi 39) . As a result, her poetry deals with the sufferings of women, a fight to free women from biased values and norms and wants to create a different identity for women. Ganvit says that Mamta Kalia is moved by the frustration and the aversion while experiencing with her reality and her impulses has compelled her “to embark on a quest or a search for an identity”(18).

In a interview with Eunice de Souza, Mamta Kalia herself commented that where irony is manifested in *Tribute* as a collection of poems. Here she confessed that she aimed to make a parody of the relationships that are close to women. She had a firm faith in the vocation of a poet and so she felt that her pen would do that. As such, her poems in this collection, particularly the poem of the same title were designed “against established values, established relationships . . . . Instead of talking about post-modernism we should talk about post-barbarism” (Kalia 60). She is careless in challenging her father’s ideology. In the contemporary world, People engage in prayers as a means of “concealment for inactiveness and lack of aptitude” (Nabi 44). She questions her father’s idealism. In a similar

way, another poem of the same title by Sylvia Plath *Daddy*(1965) portrays her father as a Nazi and finally disowning her father by calling him a bastard and she is "taking over discursive control after exorcising the father figure" (Nabi 46). However, Mamta is different from Plath as far as she submits at the end of the poem to the vanities of her father. Thus, both the poets have spoken about their vocation of a poet through their poetry. Heaney has silently exposed as an artist the tyranny against women without a strong voice and Mamta as a feminist poet revolts openly with the *statuesque*.

Notes:

1. Elain Showalter in *A Literature of Their Own* (1977) grouped three phases of women's writing as the feminine phase (1840-1880), feminist phase (1880-1920) and the female phase (1920 onwards).

Works Cited:

Adhichie, Chimamanda Ngozi. *We Should All Be Feminists.* Fourth Estate, 2014.

Beauvoir, Simone de. *The Second Sex*. Vintage Books, 2015.

Ganvit, Paliben Lahanubhai. "A Critical Study of the Mamta Kalia Poems Reflected into the Indian Feminist Movement". Voice of Research vol. 6, no. 2, September 2017, ideas.repec.org/p/vor/issues/2017-23-04.html.

Heaney, Seamus. *Punishment.* New Selected Poems 1966-1987. London: Faber and Faber, 1990. .

Kalia Mamta " Interview with Eunice de Souza". Talking Poems : Conversation with Poets. Ed Eunice de Souza. Oxford UP, 1999, pp. 57-60.

Kalia, Mamta. "Tribute to Papa". *Nine Indian Women Poets*. Ed. Eunice De Souza. Oxford UP, 2001.

Kallolikar, S. Abhishekkallol. "I Am A Warrior." Shreya Pataskar, Comp. *Breaking the Shackles of Patriarchy*. Notion Press, 2021.

Menon, Nivedita. *Seeing Like a Feminist.*Penguine Books, 2012.

Multani, Navleen. "Bog Body, Violence, and Silence in Seamus Heaney's Punishment". *Dialog*. No. 34. 2019, dialog.puchd.ac.in/dialog-34-spring-autumn-2019/.

Nabi, Naziyah. *Rewriting the Self: A Study of the Poetry of Mamta Kalia and Imtiaz Dharkar*. Diss. U of Kashmir, 2013. docplayer.net/118599078-Rewriting-the-self-a-study-of-the-poetry-of-mamta-kalia-and-imtiaz-dharker-dissertation.html.

Singh, Shruti. " Quest for Identity in the Poems of Mamta Kalia". *The Criterion*. No. 12. 2013, vishwanathbite.blogspot.com/2013/03/the-criterion-issue-12-feb-2013.html?m=1.

Souza, Eunice de. "*Introduction". Women's Voices: Selections from Nineteenth and Early Twentieth Century Indian Writing in English.* Oxford UP,2004.

Thakur, Dipsikha. "The Poetics of Witnessing in the Works of Seamus Heaney." *Inquiries*. Vol.10. no. 3 2018, Web. 27 April 2022. /www.inquiriesjournal.com/archives/2018/10.3.

❑❑❑

Assistant Professor, Department of English, Nonoi college, Nagaon, Assam
Email dr.sa.hakim@gmail.com
Correspondence Address :
Dr Sekh Abdul Hakim C/O Abbash Ali
Vill & P.O.& P.S.–Changsari (Opposite of SBI Branch and near Railway Station)
Dist : Kamrup (Assam), Pin – 781101, Contact no 9864920239

Research Article

Rise of a Heroine: Puyanu in B.M. Maisnamba's *Ningthemnubi*

–Elangbam Priyokumar

The term 'Ningthemnubis' refers to those who were used as political tools or the royal consorts whenever the need arose. Therefore, it is necessary to mention the story of 'Ningthemnubis' as documented in the* Puya. *Some stories of 'Ningthemnubis' were fortunate enough to be recorded in the sacred book,* Puya, *the historical chronicle and some never found their place in the pages of history. And the writer through this historical novel seems to bridge the gap in the story. He also adds that during the internal and external combat women mostly 'Ningthemnubis' were used as tools to negotiate and bring power to their respective sides.

Literature is presumably considered a site of contestations of a multiplicity of issues and themes which often entangle and intersect together. The dynamism of society and its complexities is often written eloquently in the literature. Manipuri literature has passed through its different phases of the literary movement. It records the events and happenings of the different periods, thereby reflecting the zeitgeist or the spirit of each era. Thus, it is relevant to study the writer and his writings to make us knowledgeable of the societal framework. In this context, the writings of B.M. Maisnamba is highly regarded for its thematic contents on issues of women and the politics of Manipuri history. The present paper will discuss how Manipur's fictionality has been intertwined with the actual historical events and happenings that occurred inside the Palace. It will further deliberate on how Maisnamba writes this novel, collecting, re-hunting, and observations based on many old scripts of Manipur history and various oral traditions. The paper will also discuss the character Puyanu and how she unfolds the political intrigue and murkiness of the Royal palace through her ordeal and experiences.

Keywords: Historical Novel, Manipuri literature, Puyanu, Rebellion.

Introduction

History is often tinged with distorted facts. It is told from the partial eyes of those in power. The historical representation is done to give voice to those who were once silenced and subjugated in the conundrum of power politics. Historical fiction mainly deals with the real historical account by intermingling the actual and prominent figures from the historical past with the fictional character who will facilitate in

linking the missing gaps which have been left in historiography. Historical fiction as a narrative technique has been utilized " to discuss and thematize history both as an account of what happened in the past and as a cognitively constructed view of those events as history " (Hatavara 241-42). Even in Manipuri literature, the interest in historical fiction has lately been increasing. Among the writers dealing with the history of Manipur, B.M. Maisnamba is often revered for its works, particularly emphasizing the re-creation of history. He is highly regarded for the use of thematic content focusing on the politics of Manipuri history involving the royal families, the armed rebellion movement of Manipur and its impact, and most prominently, the subjugation of women in the society. He has shown his keen and insightful interest in studying the ancient scripts (*Puya*) of Manipur and the historical events. He averred that "With the historical re-recreation of some events and stories, I wrote some novels on the contemporary theme" (YouTube). In the preface of *Ningthemnubi* (2006), he had admitted that his stories are based on the fictional recreation of history. Nonetheless, he also accepts the factual elements in his fictional recreation. He has come across many historical novels, issues, and ingredients from which he attempts to recreate his artistic world, thereby admitting that his fictional recreation has its root and foundation in actual historical events. Furthermore, he mentions that he has come across many beautiful stories, dirty stories, stories of lamentations and complaints, rippling stories surrounding the history of Manipur. His inclination to write about the history of Manipur grows with the materials that he has got from different sources, which gradually absorb his mind and body, and eventually, he writes by recreating the events in history (5).

The present paper will accentuate the woman character Puyanu in *Ningthemnubi* (2006). Through this historical narrative, Maisnamba has attempted to narrate the position of women, their role, and their rebellion against the system through the character. This paper will also discuss how Manipur's fictionality has been intertwined with the actual historical events and happenings that took place inside the Royal Palace. Graving out the buried stories of the *Puya*, many archaeological sources, and a historical context, the writer tries to give a new rebirth and create the historical occasions of the time. Puyanu's character will be investigated meticulously to bring forth the dirty politics of the Royal palace through her ordeal and experiences, which eventually leads to the rise of Puyanu as a vociferous woman who defies the social strictures and customs.

In the novel B.M. Maisnamba recreates the history of Manipur by highlighting the arguments and complexities of the politics in Royal Palace, which never became part of the public discourse. The novel revolves around the recreation of historical figures in history mixed with his fictional character; therefore the novel is considered

historical fiction. A form of fictional narrative reconstructs the history and re-creates it imaginatively. Both historical and fictional characters may appear. Though writing fiction, the good historical character novelist researches their chosen period thoroughly and strives for verisimilitude (Cudon 383). Despite the debate surrounding historical fiction regarding its historical accuracy, historical fiction is becoming significant in questioning the authoritative facts subjectively written by a particular historian. The purpose of historical fiction is not to distort the facts given in history but to question, analyze and scrutinize the missing links or the gaps which have never found their relevancy in the historical records. Ina Ferris emphasizes what Scott has asserted "his deference to history, aiming to fill the gaps left by the historical record, but not to challenge, displace or otherwise distort history with his fiction" (qtd. by Mitchell and Parsons 3).

Ningthemnubi, which was published in 2006, revolves around the three 'kuu (wife)' of the Meitei king. The writer narrates the history of Manipur through the novel compiling half of the novel with actual historical events that happened inside the Royal Palace and the other half with his fictional recreation. He writes this novel collecting, re-hunting, and observations based on many old scripts of Manipur history and various oral traditions. This novel is a compilation in the form of a trilogy: "Ladies in Bondage," "The women in the political trap," and "A woman in the Historical court."

Journey of Puyanu: From Victimisation to a Rebellious Character

The novel talks about the historical events that happened in Manipur dated back to 1853. The prominent female character in this trilogy is Puyanu, and the trilogy is more or less the story of this fearless character who, despite playing a poignant part in the political issue of Manipur, never found its trace in the history of the Royal Palace. She is a fictional character who B.M. Maisnamba has created as a strong, beautiful, talented, and kind-hearted woman. In the preface to the novel, Maisnamba mentions that the curiosity to know the lost record of Puyanu heightened, and later on, the story of Puyanu was created again to infuse life to her existence (5-6). He especially ransacked the story of Puyanu, which was not found in the Royal chronicle. Though he failed to get the complete story of Puyanu, he gave heart and soul to the character of Puyanu by recreating her character against the backdrop of the ancient history of Manipur. He infused his artistic creation, thereby using both the fiction and the real in this novel (7). By creating a fictional character like her, Maisnamba has endeavoured to reconstitute a past with a daring woman characters and varied roles played by her in the history of Manipur. Her story was brought out from the dungeon, and he recreated her character. Her story is giving prominence to expose the deep social and cultural fifth and unscrupulous account of the Royal palace through her insurgence.

In olden '*Puya'* the character 'Puyanu 'has been written clearly, but we have found her name and her story erased from the records of the Meitei Maharanis' list. Therefore, Maisnamba wails for those Puyanus or the Ningthemnubis who bloom unknown and die inside the Palace. They have their stories and emotions unheard to anyone. Though the character of Puyanu may be fictional, the events in the novel chronicled the real and factual stories surrounding the palace politics which had been hidden from the public discourse or which had not been recorded in history. As the brutal truth about the Royal palace cannot be exposed blatantly, the author utilized the character of Puyanu to expose the undisclosed events of the palace politics. Through her, the obscured past has been told with more freedom which will not find utterance in historiography. Just like history is treated simply as a text with its documentation, fiction is also a text which can be taken into account while analyzing the historical past. The reconstruction of the past is significant to know about the social practices and power dichotomy prevalent during the ancient past.

The term 'Ningthemnubis' refers to those who were used as political tools or the royal consorts whenever the need arose. Therefore, it is necessary to mention the story of 'Ningthemnubis' as documented in the *Puya*. Some stories of 'Ningthemnubis' were fortunate enough to be recorded in the sacred book, *Puya*, the historical chronicle and some never found their place in the pages of history. And the writer through this historical novel seems to bridge the gap in the story. He also adds that during the internal and external combat women mostly 'Ningthemnubis' were used as tools to negotiate and bring power to their respective sides. Here it can be noticed that the condition of some of the women was miserable whereas queens, princesses, and women in authority enjoyed a higher position in Manipuri society. Puyanu was one such Ningthemnubi who despite fighting for her rights never came across in the history of Manipur. Maisnamba has re-enacted the history of the Ningthemnubis with his vision of history and endeavoured to address some of the poignant issues surrounding these women who were objectified and used for the Royal Palace. Through the fictional character of Puyanu, the author has readdressed the condition of such women who were subjected to the worst forms of violence and atrocities.

In this historical fiction, Puyanu is the daughter of Pamheibi and Pathoi. As her father and mother belonged to the same family clan, they were left in Chasat hill by her father, Pathoi. Since her childhood, she had been portrayed as a daring figure and her dexterity in martial arts which she had learned from the Chasat king Lanthouyang had been highlighted to show her strength and toughness. The story of her killing two tigers and even caught two more by herself had also been emphasized to bring out the magnanimity and fearlessness of her character. She

had also been given the title of 'Keiphabi' along the Chasat Chingsang. At the same time, Maisnamba also portrays Puyanu as a kind-hearted woman in his lines even though she is a tiger slayer. Puyanu being praised for her bravery also wanted others to remember her as an individual who had her feelings and emotions which were mostly veiled behind the identity given by the society. She said:

I am Sabhabi, yes, I am a tiger slayer. But I can feel the emotion too. I feel pity. I took out the two arrows immediately, blood flows out and I kneel, hold for a moment, and looking for some medicinal plants. But I couldn't find it. (26)

The role of Puyanu is fictionalized to unfold the tradition which also witnessed the unconventional narratives on women which had been never recorded in political history. The author draws her character in such a way to narrativize a kind of woman who played myriad roles: a fearless woman, a caring woman, a political mediator, a mysterious woman, a harlot, etc. She is inclusive of all that a woman should be. She was a woman who could stand for her own decision. She even pointed an arrow at her grandfather, Lanthouyang and she played a political mediator and stopped the war between the Meiteis and the ethnic tribal thereby bringing a sense of brotherhood between the two communities.

While acknowledging her courage, Puyanu was brought to the Palace by Queen Ponglenkhombi also known as Leimabi to make Puyanu her daughter-in-law for her son, Ningthem Pishak. After learning about her family background about her being born out of an incestuous relationship, she was disowned by the Queen as she was inferior to them in social status and position. Therefore, she revolted against such authority and such constructed rules. She was grounded in the darkroom and was tortured inhumanly for her rebellion against the Royal Palace. She is the 'woman in bondage' as in Maisnamba's historical fiction. She was not only tortured for the crime which she had never committed but she was relegated to somebody who did not deserve the love of a Royal Prince. She was subjected to inhuman treatment and put in bondage for so many years only to silence her. But with her sheer strife and courage and with the help of Loikhomshang Hanjabi she came for revenge against Ningthem Pishak and the authority in a new identity as Nuyam Saphabi.

The first part of the novel "Ladies in Bondage" started with a trial of Puyanu. Puyanu was charged with being wooing menfolk in the Palace and also being charged for threatening Angom Chanu with a knife. But on the contrary, this Angom chanu sent her brother, Angoton to rape and kill Puyanu. Victimization of the woman by the womenfolk itself had also been described in this novel. Puyanu symbolized those women who belonged to the marginalized community and how they were exploited by the powerful group for not upholding the customs and norms of the Royal Palace. The trial was carried out in the Women's court headed

by King Nongdrenkhomba's Queen Ponglenkhombi, Kumudinis, Aboksi, and many other senior Ningthemnubis. They were all real historical characters who witnessed the atrocities of many Ningthemnubis in the Royal court. Puyanu remained silent during the trial despite having her own stories. She knew all the dirty affairs happening around. In old Manipuri tradition, a woman like Ningthemnubi could have many affairs and they could have a relationship with them but she had to manage in proper timing and situation. Such rights were given to women but they could not go beyond the norms of society. They were more or less like the concubines whose duty was to produce male heirs and also to satiate the pleasures of men. On many occasions, they were employed as mistresses and sent to gratify the desires of the enemy. There were the exploitation of women, treating women as commodities thereby neglecting their existence. The writer protests against such discrimination. Many women were thrown out and were buried without even a trace inside the Palace. Even Puyanu had the royal blood of the king but she had been criticized, ridiculed, despised, and unrecognized among the Ningthemnubis as she belonged to the less privileged section of society. Women in the Palace had many secrets and many unheard stories of subjugation and injustice which had never been chronicled in detail. But not a single person could take action against them despite knowing the infringement on women's integrity and chastity. The theme of power conflict among the women of different ranks and status had also been reflected in the novel between the characters Puyanu and Angom Chanu.

The second section of the novel "Women in the Political Trap" speaks about the place of Puyanu in the Royal Palace. She could not be accepted as the queen of Ningthempishak as she was unrecognized and their marriage was not a valid one. Puyanu has been trapped in Royal politics. The conspiracy inside the Palace framed her in their political trap. As the conspiracy progressed, Puyanu was put under another trial. This time it was about the 'Marei pareng' (Necklace) that belongs to Queen Kumudini. She gave his son Ningthempishak the family necklace to give to the next queen, Angom Chanu. But Ningthem gave the necklace to Puyanu and the incident led to the chaos in the Palace again. They suspected Puyanu and charged her that the necklace had been stolen by her. The trial went on and she has been framed with so many charges only to suppress her. She was even tested pregnancy by the court in the courtroom itself which was amounted to the humiliation of privacy. There was no law for the authority, they were the law themselves. Puyanu was found pregnant with the blood of Ningthempishak but the Court did not accept her in public. Her identity and being was crumbled in public but the Court allowed her to give birth to her child in a dungeon away from the public eyes.

Eventually, Puyanu spoke in the last part of the novel and clarified all the allegations put on her. Clarifying her allegations, she only narrated that she had kept the necklace after she found it under the corner of the Sangaiyumpham (House). She said that she had her purpose of not standing against the accusation. Later on, she gave back the necklace to Angom Chanu with a smile. She sacrificed everything and she accepted her trial, but her last battle demanding a place of the Ningthemnubis in the Palace was successful. Puyanu may be taken as a symbolic figure of many such Ningthemnubis who were wrongly accused and charged with the crimes for not acting or working in favour of the Royal customs and traditions. Many voices might have been subdued and many children might have never seen the dawn simply for the reason that they were not recognized in the Royal court or they were the result of the illegitimate relationship. Like many stories of Ningthemnubis, the story of Puyanu has been wiped out from the history of Manipuri royal chronicle and the writer instigates the reader to make a trace the past to know about many untold stories.

Conclusion

History is often narrated from the perspective of victors but not the victims. The purpose of chronicling history is always to enforce the authority of those in power and the exclusion of those belonging to a less privileged group. History is always ideologically driven and it narratives the ideas of the affluent people. The character of Puyanu dismantles the whole structure of the political intrigue of the Royal Palace. She represents a class of people who was silenced to uphold the rules, customs, and decorums of the Royal Palace. Many women had lost their integrity, chastity, and identity while fulfilling the demands and exigencies of the Royal Palace and many women had sacrificed their lives for the society and nation. Their sacrifices were never mentioned in the historical text as they represented the voices of the losers.

Works Cited

"An Interview with B.M. Maisnamba (Wakma Khongul Liba)".YouTube, Doordarshan Manipur, 7 Sep 2018, https://www.youtube.com/watch?v=aMQIS_lh4t8.

Cuddon, J.A, *Dictionary of Literary Terms and Literary Theory.* Penguin Books, 1998. pp. 383.

Hatavara, Mari. *"Historical Fiction: Experiencing the Past, Reflecting History."* 2014. Accessed on April 9, 2021. Web. https://www.degruyter.com/document /doi/10.1515/ 9783110303209.241/html.

Maisnamba, B. M. *Ningthemnubi*. Yaibiren communications, 2006.

Mitchell, Kate, and Nicola Parsons, editors. *Reading Historical Fiction The Revenant and Remembered Past*. Palgrave Macmillan, 2013. pp.3.

❑❑❑

Research Scholar, Department of English and Cultural Studies, Manipur University
Email id:pkelangcha98@manipuruniv.ac.in, Contact: +919612056098

Research Article

Self: A Comparative Study of Laxminarayan Tripathi's *Me Hijra, Me Laxmi* and Living Smile Vidya's *I am Vidya: A Transgender's Journey*

–Shilpa Rani
–Dr. Deepti Dharmani

A person's self begins to develop from early childhood. According to Lewis, there are two aspects of selfnamely existential self and categorical self. As the existential self, children realize that they are separate from others. As the Categorical self they realize that they are an object in the world and can be experienced. The other variables that determine self arephysical features, gender, age etc.

What a person thinks about him/herself is called a person's self. Various psychologists and philosophers have written about the concept of self. Many a time, a person's self-concept differs from the self that society thinks they are. This incongruence leads to despair which they try to break free of. Two transgender authors Laxminarayan Tripathi and Living Smile Vidya, in their respective autobiographies namely *Me Laxmi, Me Hijra* and *I am Vidya: A Transgender's Journey* share how they developed the concept of their own selves and how their selves developed over time.

Keywords: self, self-concept, transgender

A person's overall idea of who he or she is called self-concept. According to J. Bailey, "Self-concept is generally thought of as our individual perceptions of our behavior, abilities, and unique characteristics— a mental picture of who you are as a person" (Cherry). According to Crisp and Turner individual self is decided by the attributes that distinguish a person from others. Relational self is defined by other relations such as friends, siblings, spouse etc. And lastly collective self refers to the self in social groups such as American, Indian, homosexual etc. (Cherry). As a social being, a person is involved in interaction with others during which the individual impacts others and is also impacted by them. Hence, interpersonal interactions also determine a person's self.

According to Braumeister, self is "…the totality of an individual's thoughts and feelings having reference to himself as an object" (Ackerman). Self is created with the concept in mind that an individual is both the subject as well as the object of his/her own perceptions.Leary and Tangney present their views regarding this concept— "The term *self* includes

both the actor who thinks ("I am thinking") and the object of thinking ("about me")Moreover, the actor is both able to think and is aware of doing so"(71). So not only thinking but also awareness of this thinking is important. Thus, what one thinks about oneself is his/her self. This is not limited by what people tell an individual of how s/he is supposed to behave. "Self-concepts are cognitive structures thatcan include content, attitudes, or evaluativejudgments and are used to make sense of theworld, focus attention on one's goals, andprotect one's sense of basic worth" (72). The content of this self-concept is the ideas one has of oneself.

A person's self begins to develop from early childhood. According to Lewis, there are two aspects of selfnamely existential self and categorical self. As the existential self, children realize that they are separate from others. As the Categorical self they realize that they are an object in the world and can be experienced. The other variables that determine self arephysical features, gender, age etc. Children first categorize themselves according to their hair colour, likes and dislikes etc. Later on they also start thinking about how they feel psychologically and also how they are perceived by others. ("AP Psychology Study Resource: Self-Concept") In this way their sense of self starts developing and expanding.

According to Carl Rogers there are three facets of self namely self-image, self-worth and self-actualization. Self-image is how one sees oneself and how one would like to appear to others. Self-worth is the importance one gives to oneself and self-actualization implies actualization or achievement of one's ideal self: "self-actualization occurs when a person's "ideal self" (i.e., who they would like to be) is congruent with their actual behavior (self-image)" (McLeod). But this self-actualization is not always easy as often one finds it to be in opposition to the supposed order of the society. In such cases, people often act contrary to how they want to. According to Carl Rogers, acceptance is a basic need of a person but people are accepted only if they fulfil certain conditions. These conditions often come from people who are the closest and to get their acceptance, individuals often succumb to their conditions and instead of acting out their true self, act in accordance with their expectations. When a person is not recognized as legitimate in a social order, no stone is left unturned to change that person. Unable to do so, they are pushed to the margins and various stereotypes are attached to them. These stereotypes are the negative consequences of not being able to suppress one's true self. Thus this condition gives rise to conflicts, which may be internal and external. The self of a transgender too undergoes such turmoil for the body is treated socially as one entity while the body experiences itself as something other. The narratives of the transgendered people capture this prime dilemma and conflict of the self. Since a person invariably internalizes the social stereotypes, often the self is experienced as a split because one finds oneself torn between the two selves. It is also observed that such persons struggle to define their self socially in a way that would explode the stereotypes.

Laxminarayan Tripathi is an Indian transgender activist author. She was as the eldest sonborn in an upper class Brahminfamilyin 1979 in Thane, Maharashtra. *Me Hijra, Me Laxmi* is her autobiography that represents her self as evolving over time. It narrates the conflict that went on within her body because though she was born a boy she felt like a woman and her re-negotiations to redefine herself. She starts with her childhood and the sexual abuse, of how her male body experienced rape. The consequent trauma deeply shaped her sense of self. Her childhood was marred by sexual abuse and physical ailments. This trauma was accentuated by the anxiety stemming from her sense of her femininity. Her inner self was different from how she looked to the others. So it was difficult for her to come to terms with her true self initially. She met a man called Ashok Row Kavi and others who told her for the first time that she was not abnormal. She was told that she was gay. Getting a name for herself brought her some relief but she later came to realize that this term too did not define her true self. The men she met were gay and wanted to remain as men. But she wanted to be a woman which was not their intention at all. The word meant something else though initially it gave her a sense of belonging as well as an ease with herself. Her inner conflict persisted. Though she had relations with boys and she could think of herself as gay but her desire of femininity did not match the gendered selfhood of gay men. She became bewildered as more and more questions regarding her true self started popping up in her mind.

As Laxmi grappled with the conflicts of her gendered self, socially she sought to define herself as a dancer. Dancing had a therapeutic effect on her traumatic self. She narrates how the gender dilemma made her feel terrible so much so that she wished she were dead but dancing saved her. Dancing helped her experience her feminine side. In her own words, "Dancing transported me to another world where I could be my true self (23)." A dance teacher "taught me how to be myself, without compromising on my dignity and self respect (25)." Laxmi became a dancer and started giving dance classes. She tried many other jobs from model coordinator to dancing in a dance bar. The glamour world made her feel easy in her skin as, "Artistic people are actually supposed to possess angularities that mark them out from run-of-the-mill (33)." It made her want to open up about her sexuality but she found it difficult because "I was also in need of social acceptance (33)." Thus, she met people and found activities that made her feel comfortable in her own skin and made her want to be open about her true self. But in search of her identity and self, she needed to be socially accepted. Social acceptance was a barrier for her initially. Her sense of justice improved when she became aware that in the competition she won an award an injustice had been done to the girl who had lost the contest only because her audio cassette had failed her. Her feminine self and her emotions as a woman imprisoned in

her male body was/ were abused and exploited sexually again and again. But through the goodness of a man, her faith in males was restored and realized that not all men were the same. The noticeable thing here is that not for once did she feel bad about her true self, even though she was scared to project it out.

When she worked in a dance bar, she was expected to be involved in sex work. She mentions that she refused sex work and even if she did have sex, it was not in exchange for money. She proudly asserts and claims her self, "I have always considered myself to be a monarch of my body (35)." During that time, she learnt about the horrible conditions many dancers lived in. Later on when she met Shabina, a Hijra, she was introduced to the term Hijra that raised eyebrows in society. "The word *hij* refers to the soul, a holy soul. The body in which the holy soul resides is called 'hijra' (39)." She had never run away from her true self but here she asserted the validity of the term as she came to realize what she was. She got the courage to actualize her self. She went on to become a Hijra. She asserts, "I had my own identity. I no longer felt like an alien (43)." Though she felt comfortable as her self matched her social identity, she still lacked the courage to assert the fact to her family. She kept it a secret from her family though she decided to reveal it to a few intimate friends. Except for one friend, others reacted negatively. Eventually with a dramatic turn when the family came to know of it they reacted negatively. Though the inner conflicts were more or less resolved the external conflicts lingered. After all one gets an identity only when people accept one by that.

Despite the social and familial resistance, Laxmi did not stop at being a Hijra, though she did not opt for castration. Hence even while assuming the self of a Hijra, she subverted the identity of a Hijra by refusing to be castrated. The new identity triggered a new phase in her life. It ushered her into a phase of becoming yet another self, carving a new identity for herself. Being a Hijra she realized all the brutal conditions they lived in so she decided to change it. She became an activist. It became an integral part of herself. Laxmi never bound herself with any identity. She was a Hijra but she chose this identity to liberate herself instead of limiting herself. The second transgression as a Hijra was that she chose to live with her parents. She chose to dress up as a male at home. She also refused to live in hiding like other Hijras. Instead she opened up and made appearances on media. Opposing to the secretive lifestyle of Hijras, Laxmi chose to be visible. The autobiography, thus, is a representation of her self in all its plurality. The awards, accolades and wide acclaim that Laxmi received as a dancer, as an activist and a Hijra are testimony of her negotiations and renegotiations and her rise to dignity and fame, for reconstruction of her self-image and for her self-dignity and self-achievement.

Vidya, the author of *I Am Vidya: A Transgender's Journey* went through all the hardships to actualize her true self and she had to face all the repercussions of not being able to hide her self. Vidya, born with the name Saravanan by her parents

is an Indian transgender activist. She was born in Chennai and is a Postgraduate. She got recognition with her autobiography named *I am Vidya*, originally published in Tamil, but translated into seven languages. The autobiography inspired a movie demonstrating her life, named *Naanu Avanalla...Avalu* starring Sanchari Vijay and was directed by B. S. Lingadevaru. It earned for her awards as well as recognition.

Her autobiography *I am Vidya: A Transgender's Journey* is a representation of the self, her struggle for self-dignity and her journey of how she realized her true self. She was born as a boy named Saravanan in a poor family. She had three elder sisters and she as a boy was the only hope of her father for a better future. And it was also because she was a bright student in school. Her true self was different from what was thought of her by her family as well as the society. She got all the benefits as well as disadvantages of being the only son in a poor patriarchal household. She was cherished as the only son. She was not allowed to do any household chores and was asked to focus completely on her studies. She was beaten black and blue if she got fewer marks than what her father wanted for her. She was cherished as the only son but was not allowed to mingle with other children of the locality as her father thought that they were not at par with his son.

As she was growing up she realized that she did not enjoy the activities that other boys of her age did. But she also realized that it was not considered natural in the society as it did to her. Whenever she did something out of character of a boy, she would be slapped or given some similar punishment. People's mocking glances and her fear of shattering her father's heart kept her away from making a move and expressing her true self openly.

> I started noticing a difference in the way people approached me—the way they looked at me. My old ways—the same habits which had been dismissed lightly as childish pranks—were now viewed with disfavour. Chithi and Radha scolded me for my acts, and Appa thrashed me regularly. (22)

This non-acceptance created dilemmas as questions arose in her mind. Her inner femininity was in experiences as in conflict with her social identity. She was told directly and indirectly that she was a boy. She was also expected to behave like one. She was made fun of for being different in her school. She thought of herself as a boy with different preferences but with time she realized that she was a girl and wanted to behave like one without inhibitions. She reminisces, "I was a girl...I made strenuous attempts to swagger like a man and speak like one" (33). She had been seeking acceptance of her true self-image but was unable to get any simply because her self-image was not given validation in her surroundings. The day she came in contact with a person, who she could identify with, she saw of flicker of hope and possibility of her self-actualization.She learnt about an NGO "where people like us" as Vidya puts it, "were welcome (39)." She could say "us" and feel like she belonged. When she came in contact with Tirunangais, she decided to herself to become one.

She went on to become a Tirunangai and was accepted in a parivar which was a sort of organisation that brought them together. She was desperate for her Nirvana. So she started begging like others to get enough money to her Nirvana. The painful procedure that helps them get rid of the male body is quite meaningfully called Nirvana.

> In Buddhism, the Pali word *nibbana* (*nirvana* in Sanskrit) was first used by the Buddha to describe the highest state of profound well-being a human is capable of attaining. The mind awakens from delusion, is liberated from bondage, is cleansed of all its defilements… (Olendzki)

Here the word is used for the process that leads to their freedom from the bondage of a male body. But soon she became dissatisfied with the life she was living. She neither limited herself to the identity that she was given nor did she limit herself to the identity she had chosen for herself.

Both Laxmi and Vidya underwent conflicts because of the discrepancy that occurred between their self-image and their social identity. Nonetheless, they went to the extent of reconstructing their identity to resolve these conflicts. They kept negotiating and renegotiating and worked persistently to achieve self-worth and self-actualization. They both did not let anything limit them. Laxmi became a Hijra but went out of prescribed Hijra domain and chose a path for herself andso did Vidya. Laxmi did not accept Nirvana as Vidya did. Laxmi's family accepted her new identity while it was not so with Vidya, However, both persevered and did not let other deter them from pursuing their objectives to win for themselves a positive self- image, self-worth and self- actualization. They transcended the limitations of the parivar and gharana, though the terms used for the new identity are different because of the different regions they belonged to.

Works Cited

Ackerman, Courtney E. What is Self-Concept Theory: A Psychologist Explains." *PositivePsychology.com*.

"AP Psychology Study Resource: Self-Concept." *AP Psychology*. Accessed 15 Nov. 2019.https://www.appsychology.com/self-concept

Cherry, Kendra. "What Is Self-Concept? The Psychological Exploration of "Who Am I?" *Very Well Mind*. Nov. 07, 2019.

Leary, Mark R., and June Price Tangney, editors. Handbook of Self and Identity. 2nd Ed., The Guilford Press, 2012, pp. 69-104.

Mcleod, Saul. "Carl Rogers." *Simply Psychology*, Feb. 5, 2014. https://www.simplypsychology.org/carl-rogers.html

Olendzki, Andrew. "What's in a Word? Nirvana." *Tricycle*. Accessed 17 Nov. 2019.https://tricycle.org/magazine/what-is-nirvana-in-buddhism/

Vidya, Living Smile. *I am Vidya: A Transgender's Journey.* Rupa Publication, 2013.

❏❏❏

1. Author, Ch. Devi Lal University, Sirsa
Contact No.: 9416210203, 9215216046, Email ID: shilparani118@gmail.com
2. Co-Author/Supervisor, Affiliation: Ch. Devi Lal University, Sirsa

Research Article

Sleuthing and Disability: A Study on the Refashioned Gaze

–Dr. T.S. Ramesh
–P. Yogapriya

As the story goes, Oedipus commits the murder of King Laius and he marries his mother Jocasta. There is another character Tiresias, a blind seer who can be considered as the pioneer to blind detectives. He is famous for his clairvoyance and he is also transformed into a woman for several years. His ability to foretell events though he is blind is supernatural as well as deductive. In the later part of* Oedipus Rex, *Oedipus after coming to know all that he has done takes two pins from the dead Jocasta's brooch as pierces his eyes, thereby losing his eyesight. So the myth of Oedipus can be used as an example of the disabled as the criminal and disabled as a detective.

Detective fiction is the genre which addresses matters of social justice, inequality and cultural conflict. The basic of detective fiction is social order and the interpretation of signs and clues primarily physical. The genre of detective fiction is so well positioned as to engage the social model of disability. The social model of disability focuses on the hardships faced by the disabled which are a product of cultural bias and prejudice than it is inherent in an individual. Michael Cohen in his work *Detective as the other* says that detectives and criminals are persons who are abnormal. Their activities can be termed as characteristic quirk, which can stem out of any kind of abnormality, burden or impairment.

Detectives have singular features which distinguish them. These features can be physical or behavioural but there is always a deviance. As mentioned earlier, disability is also identified with criminal deviance. This is the point where the two concepts – disability and detective fiction meet and intermingled. From the beginnings in literature one can find that there are a lot of instances where the criminal, culprit or the perpetrator as they were called had some deformity on their part. This quality is seen from the earliest of epic stories. . Crime fiction has its earliest origins in the Book of Daniel from the fourth to first century BCE. The Biblical story of Susanna is the earliest recorded example of detective fiction. In the Hercules myth, we come across the story of Hercules and Cacus the thief. Sophocles's play Oedipus Rex first performed in 430 BC draws all the central tenets of detective fiction; which includes a murder mystery (whodunit), a closed circle of number of suspects and at last the unveiling of the crime and the whereabouts of the hidden past. These early stories are the beginning of the genre of detective fiction.

Key Words : Disability, detective fiction, inequality, social and sleuthing.

The myth of Oedipus is an age old example of the character or the protagonist playing the dual role, the role of the criminal and that of the detective. The Oedipal myth has a very different story as it suggests in the chorus itself that the hero of the play will kill the father and marry his own mother. Such a hideous crime or action had to befall on the part of the hero. The story of Oedipus also reveals that when Oedipus was born the oracle foretells the dangers of keeping Oedipus alive. So, the king Laius asks his shepherd-servant to throw him in to die on a mountainside. King Laius wanted to make sure that his son dies, so before leaving his son to die, he pierced the ankles of the child and fastened it together so that he could not crawl. The shepherd servant gave the boy to another shepherd and finally Oedipus reached the house of Polybus, the king of Corinth. The Corinthian King adopted Oedipus as he did not have an issue of his own. The baby was then three day old and named after the swelling from the injuries and feet, hence the name Oedipus or the one with the swollen foot.

As the story goes, Oedipus commits the murder of King Laius and he marries his mother Jocasta. There is another character Tiresias, a blind seer who can be considered as the pioneer to blind detectives. He is famous for his clairvoyance and he is also transformed into a woman for several years. His ability to foretell events though he is blind is supernatural as well as deductive. In the later part of *Oedipus Rex,* Oedipus after coming to know all that he has done takes two pins from the dead Jocasta's brooch as pierces his eyes, thereby losing his eyesight. So the myth of Oedipus can be used as an example of the disabled as the criminal and disabled as a detective.Detective fiction looks at the cause and effect of the crime or the criminal as to understand why a crime is committed. Hence throughout the evolution of the genre the use of disability either as criminal deviance or as clues to deductions or in later stages the detective he is prevalent.

Sherlock Holmes considered being the greatest fictional detective has become a byword for detectives and detective fiction.Sherlock Holmes' stories feature a lot of disabled people as culprits. Though their malice comes from deep rooted revenge and the oppression they had to face because of their disability, it is likely that they are caught due to their disability. The first example taken for the critical analysis is the novel *The Sign of Four* by Sir Arthur Conan Doyle. It is the second novel featuring Mr. Sherlock Holmes. The story involves the Great Agra treasure and the mutiny of 1857. Captain Morstan hides the treasures for himself out of greed. Jonathan Small, the antagonist kills Sholto's son Barthalomew with an accomplice from the Andaman Islands. This accomplice is an islander capable of throwing poisoned darts. The culprit Small loses his right leg to a crocodile while bathing in the Ganges. Hence uses a stub and a stick. Holmes finds out the features of small from the clues he left.

But a cripple! Said I. What could he have done single – handed against a man in the prime of life? He is a cripple in the sense that he walks with a limp; but in other

respects he appears to be a powerful and well-nurtured man. Watson, the weakness in one limb is often compensated for by exceptional strength in others. (Doyle 141)

In the short story *The Man with the Twisted Lip* Sherlock Holmes seeks to find the missing case of Neville St. Clair is a respectable gentleman with a family in the country. St. Clair takes customary visits to London on business. The man disappeared suddenly and in his place there was a dirty, disfigured beggar by the name Hugh Boone was found. I was, as you can imagine, pretty down on my luck at this time, for I was a useless cripple though not yet in my twentieth year. (Doyle 210)

Another short story *The Adventure of the CrookedMan*is also a story which revolves around the concept of disability. Colonel Barclay of the Royal Mallows is dead and Mr. Sherlock Holmes is hired to look into that matter. It is deduced that Barclay had died seeing a deformed man, hence the name – crooked man. It is not the deformity that killed the Colonel but rather the reproach that he was responsible for the antagonist to became such a crooked person. Henry wood and James Barclay sought the hand of Nancy during the time of the mutiny of 1857. A volunteer was sent to help at that time and the duty fell to Wood. Barclay tricked him into going in an unsafe route and there by Wood got arrested by the rebels. It was sheer torture that turned him disfigured..

What use was it for me, a wretched cripple, to go back to England or to make me do that? I had rather that Nancy and my old pals should think of Harry Wood as having died with a straight back than see him living and crawling with a stick like a chimpanzee.(Doyle 179)

The next novel taken up for study is *The Alienist* by Carr. The Alienist series feature Dr. Laszlo Kreizler, a psychiatrist, is a specialist in child and criminal psychology. His application of the theory of 'Context', the ideology that an individual's personality and behaviour is mostly determined by their childhood experiences is a unique one. He does the task of profiling of the criminals being pursued by the investigative team. Even Kreizler's childhood had a profound impact on him. Behind closed doors, Kriezler's father was an alcoholic and abusive parent. The physical abuse started when Laszlo was three years old and at one point the boy's left arm had been smashed by the father. Laszlo suffers from recurring pain in the bones and muscle. His arm is underdeveloped and so he has difficulty in doing his everyday activities.

"His black eyes, so much like a large bird's, flitted about the paper as he shifted from one foot to the other in sudden, quick movements. He held the times in his right hand and his left arm, under developed as the result of a childhood injury was pulled in close to the body." (Carr 34)

Laszlo is of the strong notion that criminals, especially serial killers have a difficult childhood. The author Caleb Carr wanted to show the character Laszlo as someone who has just a thin line from becoming a world class criminal. By the end of the story one finds that Laszlo finds out the serial killer who had been preying on young boys. The other two novels *The Angel of Darkness* and *Surrender,*

Newyork (2016) has serial killing. The factor to note here is that the disabled who had been portrayed as the criminal in the earlier works of the genre has now found himself in the high pedestal – The detective. He is the one who solves the murder mystery which is baffling to most police officials and investigators. One has to see that the gaze on the disabled as being the criminal has changes here.

The Bone Collector by Jeffrey Deaver is the next work taken for the analysis. The protagonist Lincoln Rhyme appeared in Bone Collector for the first time and there have been fourteen books on the character which is termed as the *Lincoln Rhyme series*. Lincoln Rhyme was the head of NYPD's central Investigation and Resource Division. He became a Quadriplegic when an accident at a crime scene, where an Oak beams fell on him and crushed his C4 vertebrae. He can only move his shoulders and left ring finger.

He'd lost the use of his legs and arms. His abdominal and intercostals muscle were mostly gone and he could move his head and neck, his shoulders slightly. The only fluke was that the crushing oak beam had spared a single, minuscule strand of motor neuron, which allowed him to move his left ring finger. (Dearer, 44)

In the beginning of the novel, the Quadriplegic Lincoln Rhyme is considering the suicide with the help of Dr. Berger but his ex-partner Sellitto comes to his apartment asking for help in a kidnapping case. This give Lincoln to ponder and thinks of living and uses Amelia Sachs as his "legs and eyes" to collect clues from the crime scene. Here the detective who is a Quadriplegic and who can barely move solves the mystery of a serial killer known as the 'Bone Collector'. In the later part of the story it is unravelled that the killer is Peter Taylor, Lincoln's doctor. Taylor had lost his family when Lincoln had failed to fully check the crime scene. So he creates a false identity for himself and becomes a copy cat killer. He uses the methods used by James Scheneider, who was then called 'The Bone Collector' in the 1900s.In both the novels taken up for study such as *The Alienist* and *The Bone Collector* the detective is a disabled person who uses their ability in different ways to bring out the killer to justice. As post modernism grew the stereo type of an able-bodied detective disappears.

The genre of detective fiction gives much importance to the characterisation of the detective. Example, Sherlock Holmes, the brilliant Sleuth created by Sir Arthur Conan Doyle is considered as a template for all fictional and actual detectives. In the first novel features Sherlock Holmes, *The Study in Scarlet*, Conan Doyle lists the character's qualities in detail. His height, complexion, gait, strength, and posture - everything comes in the character sketch. This phenomenon is followed by many authors over the years in the field of crime narratives.The gaze on disability and the characterisation of detectives changed with the passage of time and the tides have turned. The disabled who were considered the criminal and the victim incarnated as the detective himself. In their seminal book, Hoppenstand and Browne mention the term 'Defective Detectives'. They list eight different detectives who are short, blind, one-eyed, amputated, impaired, shell-

shocked, deaf, missing a lung, struck by lightning or having asperger's syndrome, with OCD and autistic. Some detectives are violently concussed deformed, paraplegic and quadriplegic. Most of these defective detectives have some kind of powers which might rise out of disability or it may be a compensation for the disability. Example: If the disabled detective is blind, he or she would have an abnormally great hearing skill that can surpass others.

It can be safely said that nearly every detective is burdened with some sort of disability. These disabled detectives prolong their impairment as something that is broken in them and solving crimes helps them to heal. Defect in one part is compensated by a greater ability in the other. The impairment of the detective gives rise to mental powers. The detective in the novel *The Curious Incident of the Dog in the Night Time*, Boone is autistic. He is a person who can understand logic but cannot understand character, love, desire, kinship or emotion, hence his failure to solve the mystery,a post modern trait very helpful for the able disabled. Post Modernism does not believe or give importance to 'closure' a convention which was followed by the modernist philosophy.

If one takes up the classic case of Sherlock Holmes, the detective El magnifico, and use the tenet of Post Modernism such as refashioning or re-interpretations one can see that Mr. Sherlock Holmes himself suffers from a kind of disability leaning on the psyche. The critic Sonya Freeman Loftis says that Holmes is unusually observant, has fits of imagination and phenomenal memory capacity but Holmes lacks empathy, emotion and communication. His mind is communicated to us mostly by his sidekick - Dr.John Hamish Watson. He is our mediator who goes between the strangeness and the quirkiness of Mr. Holmes and the reader's normalcy. Holmes' mood swings are taken as sign of schizophrenia and his oddities in behaviour is considered by critics as him having an obsessive compulsive disorder. So in the gaze of post modern disability theorists, disability is a normal phenomenonand even the great Holmes is an able -disabled.

Works Cited

Baldick, Chris. *The Oxford Dictionary of Literary Terms.* Oxford Up, 2008.

Carr, Caleb. *The Alienist.* Random House, 1994.

Carr, Caleb. *The Angel of Darkness*. Random House, 2017

Chabon, Michael. *The Final Solution,* Harper perennial, 2005.

Davis, Lennard J, editor. *The Disability Studies Reader*, 4th ed, Routledge 2013.

Deaver, Jeffrey. *The Blue Nowhere*. Hodder Paperbacks, 3rd Ed, 2016.

Deaver, Jeffrey. *The Bone Collector*. Hodder and Stoughton, 2000.

Doyle, Arthur Conan. *The Complete Sherlock Holmes.* Geddes & Grosset, 2002.

❐❐❐

1. Associate Professor of English, National College (Autonomous), (Affiliated to Bharathidasan University) E-mail : drtsramesh@gmail.com
2. Full-Time Research Scholar, National College (Autonomous), (Affiliated to Bharathidasan University) E-mail : yogaammu97@gmail.com

Research Article

Effect of Selected Drills on Sub-maximal Oxygen Consumption of Soccer Players

–Thokchom Somorjit Singh
–Dr. Laishram Thambal Singh

In the present sports world, soccer is the most popular and dominant team sports played around the world, which is performed with high intensive physiology and psychological fitness demands during the actual competition and have to play for a long duration of 90 minutes or more. Therefore, the physical and physiological work efficiency, which can be expressed in terms of aerobic and anaerobic capacity of a player, are considered the most important factors that influencing performance.

Different soccer drills can improve the physical fitness, skill performance and physiological work efficiency too. Various intensive drills are recommended to improve the skill abilities as well as the motor qualities that required during the actual game situations, which can be prolonged for 90 minutes or more at all. Therefore, soccer players are emphasized to train various manipulative drills with or without ball so, as to enable the players to perform the best.

Objective: The objective of the study was to investigate the effect of selected drills on sub-maximal oxygen consumption (VO2 max) of soccer players.

Hypothesis: It was hypothesized that there might be significant effect of selected soccer drills on sub-maximal oxygen consumption (VO2 max) of soccer players of Manipur.

Method: For this study, 30 state level male soccer players between 20-30 years of age were selected randomly. Subjects were divided into experimental and control group of 15 subjects each, and the experimental group was advocated to undergo 6 weeks selected soccer drills training program. Cooper's 12 min run-walk test was administered to obtain the data respectively before and after the training.

Result: There was significant difference between the pre and post test means comparison of VO2 max for experimental group as the obtained 't' =4.78 is greater than the tabulated 't' =2.145 at 0.05 level of confidence. However, insignificant difference was found for the control group's pre and post test means comparison of VO2 max as the calculated 't' =1.28 is lesser than the tabulated 't' = 2.145 at 0.05 level of confidence. Further, by employing the ANCOVA, the significant effect was found as the calculated 'F'

= 8.69 is greater than tabulated 'F' = 4.21for the selected drills on VO2max of soccer players.

Conclusion: The study was concluded that six weeks selected soccer drills training program was sufficient to improve the sub-maximal oxygen consumption (VO2max) of soccer players.

Keywords: Soccer drills, Cooper's 12 min run-walk, VO2max.

1. Introduction

In the present sports world, soccer is the most popular and dominant team sports played around the world, which is performed with high intensive physiology and psychological fitness demands during the actual competition and have to play for a long duration of 90 minutes or more. Therefore, the physical and physiological work efficiency, which can be expressed in terms of aerobic and anaerobic capacity of a player, are considered the most important factors that influencing performance. Cardiovascular fitness is one of the most important aspects of physical fitness in soccer (Da Silva et al., 2008; Nikolaidis, 2011; Stølen et al., 2005). In this context, well-developed aerobic fitness helps soccer players to maintain repetitive high intensity actions within a soccer match, to accelerate the recovery process, and to maintain their physical condition at an optimum level during the entire game and season (Stølen et al., 2005). Aerobic capacity is the functional capacity of the cardio-respiratory system (the heart, lungs and blood vessels). It refers to the maximal or sub-maximal amount of oxygen consumed by the body during an intense exercise in a given period. To improve and get the peak level of aerobic capacity we need to do various kinds of exercises and drills. Soccer drills training can be improved the physical fitness, soccer skill performance and physiological work efficiency.

2. Objective

The objective of the study was to investigate the effect of selected drills on sub-maximal oxygen consumption (VO2 max) of soccer players.

3. Hypothesis

It was hypothesized that there might be significant effect of selected soccer drills on sub-maximal oxygen consumption (VO2 max) of soccer players of Manipur.

4. Methodology

For this study, 30 male soccer players between 20-30 years of age those were represented at least state level were selected randomly and divided into two groups as experiment and control consisting of 15 subjects each. Only the experimental group was administered the selected soccer drills training for a duration of 6 weeks. The Cooper's 12 min. run-walk test was chosen as the criterion test to evaluate and collect the data on VO2max. The study was designed as an experimental and followed the pre and post test data evaluation. The data were analyzed by using descriptive, paired sample 't' test and ANCOVA statistical techniques.

The soccer drills-training plan for 6 weeks is show in the table 1.

Table-1 : Soccer Drills-Training Plan for 6 Weeks

Training Week/Day	Type of Drills/Exercises	Duration/Repetition Required	Total Duration
I & II (Mon, Tue, Thur, Fri & Sat)	Warm Up 20m shuttle dribbling Zig-zag dribbling Diagonal shuttle dribbling Repeated passing Juggling Dribbling and dragging Ball shuffling Game play Limbering down	15 min 1 min 1 min 1 min 1 min 1 min 1 min 1 min 15 min 10 min	47 min
III & IV (Mon, Tue, Thur, Fri & Sat)	Warm Up 20m shuttle dribbling Zig-zag dribbling Diagonal shuttle dribbling Repeated passing Juggling Dribbling and dragging Ball shuffling Game play Limbering down	15 min 1.3 min 1.3 min 1.3 min 1.3 min 1.3 min 1.3 min 1.3 min 15 min 10 min	47 min
V & VI (Mon, Tue, Thur, Fri & Sat)	Warm Up 20m shuttle dribbling Zig-zag dribbling Diagonal shuttle dribbling Repeated passing Juggling Dribbling and dragging Ball shuffling Game play Limbering down	15 min 2x1 min 2x1 min 2x1 min 2x1 min 2x1 min 2x1 min 2x1 min 15 min 10 min	54 min

5. Findings

The mean (M), standard deviation (SD) and standard error (SE) were calculated by using the descriptive statistics. The pair sample t-test was applied to find out the mean difference between pre and post tests of VO2 max for both experimental and control groups. The data were further examined by applying the analysis of covariance (ANCOVA) to find out the significance differences among the pre and post test means of VO2 max between the experimental and control groups. The level of significance was set at 0.05.

The mean (M), standard deviation (SD) and paired sample t-test of pre and post test of VO2 max for experimental group is shown in table 2.

Table - 2 : The Descriptive and Paired Sample 't' test of Experimental Group

Variable	Test	N	Mean	MD	SD	SE	df	t
VO2max	Pre	15	41.85	3.57	6.41	0.74	14	4.78*
	Post	15	45.42		7.51			

**Significant at 0.05, where tabulated* $t_{(0.05)}(14)=2.145$

Table 2 reveals that the means (M) and standard deviation (SD) of pre and post-tests of VO2 max for experimental group were 41.85±6.41 and 45.42 ± 7.51 respectively, and found the calculated 't' =4.78. Therefore, there was found the significant improvement of selected drills on VO2 max of soccer players as the calculated 't'= 4.78 is greater than the tabulated 't' =2.145 at 0.05 level of confidence. The graphical representation of means comparison is shown in figure 1.

The mean (M), standard deviation (SD) and paired sample t-test of pre and post test of VO2 max for control group is shown in table 3.

Table –3 : The Descriptive and Paired Sample 't' test of Control Group

Variables	Test	N	Mean	MD	SD	SE	df	t
VO2max	Pre	15	42.52	1.16	4.30	0.90	14	1.28@
	Post	15	43.68		3.52			

@Insignificant at 0.05, where tabulated $t_{(0.05)}(14)=2.145$

Table 3 reveals that the means (M) and standard deviation (SD) of pre and post-tests of VO2 max for control group were 42.52 ± 4.30 and 43.68 ± 3.52 respectively, and found the calculated 't' = 1.28. Therefore, there was the insignificant improvement on VO2 max of soccer players for the control group as the calculated 't'= 1.28 is lesser than the tabulated 't' = 2.145 at 0.05 level of confidence. The graphical representation of means comparison is shown in figure 1.

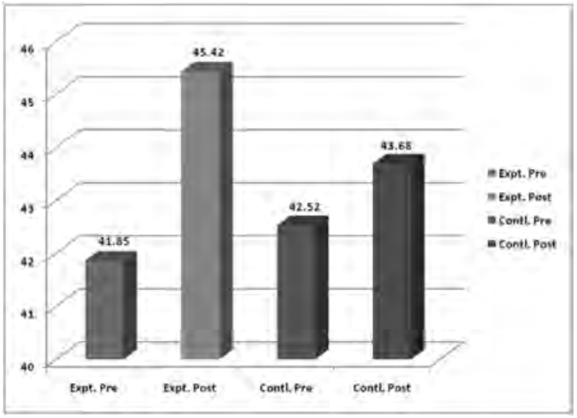

Figure-1

Pre and Post Test Means Comparison of Experimental and Control Group

To find out the significance differences among the pre and post test means of VO2 max between the experimental and control groups the analysis of covariance (ANCOVA) was employed and shown in the table 4.

Table- 4 : Pre and Post Means Comparison of VO2 max between Experimental and Control Groups (ANCOVA)

Variables	Source	Type III sum of Squares	df	Mean Square	F	Sig.
VO2max	Group	56.196	1	56.196	8.69*	0.000
	Error	174.52	27	6.46		
	Total	59413.34	30			

**Significant difference at 0.05 level of confidence, where tabulated* $F_{(0.05)(1,27)}=4.21$.

Table 4 reveals that there were significant difference among the pre and post test means of VO2 max between experiment and control groups as the obtained critical 'F'=8.69 were greater than the tabulated 'F'=4.21 at 0.05 level of confidence.

6. Discussion of Finding

From the pertaining data, the results of paired sample t-test had shown that there was the significant difference between the pre and post test means of VO2 max for experimental group as the obtained 't' =4.78 was greater than the tabulated 't'=2.145 at 0.05 level of confidence.There was the insignificance difference between pre and post test means of VO2 max for control group as the calculated 't' =1.28 was lesser than the tabulated 't'= 2.145. Further, by employing the analysis of covariance (ANCOVA), it was revealed that there were significant differences among the pre and post test means comparison between the experimental and control groups as the obtained critical value of F=8.69 for VO2 max, which is greater than the tabulated F=4.21at 0.05 level of confidence. Therefore, it was proved that 6 weeks of selected soccer drills training were effective for the improvement of sub maximal oxygen consumption of soccer players.

7. HypothesisTesting

It was hypothesized that there might be significant effect of selected drills on VO2 max of soccer players. From the above findings, significant differences were found for experimental group by employing paired sample t test and ANCOVA statistical techniques. Hence, the research hypothesis was accepted. Moreover, insignificant difference was also found on VO2 max for control group. So, the research hypothesis was rejected and the null hypothesis was accepted.

8. Conclusion

In the light of the findings, it was concluded that six weeks selected drills training was improve the VO2max of soccer player. The reasons may be due

to the selection of subjects, training means, load and intensity, and active participation of subjects. More over the training design and duration might be changed for different purposes.

Reference :

1. Aziz A.R, at al. (2000). The relationship between maximal oxygen uptake and repeated sprint performance indices in field hockey and soccer players. *Journal of Sports Medicine and Physical Fitness*, Volume 40(3), PP 195–200.
2. Cervantes-Tapia, et al. (1998). Maximum Anaerobic Power in Elite Soccer Players of Mexico. *Medicine & Science in Sports & Exercise,* Volume 30 - Issue 5 - p 325.
3. Cunha G. D. S, et al. (2016). Aerobic fitness profile of youth soccer players: effects of chronological age and playing position. *Revista Brasileira de Cineantropometria & Desempenho Humano,* vol.18 no.6, PP 700-712.
4. Da Silva, et al. (2008), A review of stature, body mass and maximal oxygen uptake profiles of U17, U20 and first division players in Brazilian soccer. *Journal of Sports Science Medicine.* Volume 1(3), pp 309–19.
5. Gligoroska J. P. et al. (2015), Body composition and maximal oxygen consumption in adult soccer players in the Republic of *Macedonia. Journal of Health Sciences.* Vol 5 No 3.
6. Higino.W.P, et al. (2017). Determination of Aerobic Performance in Youth Soccer Players: Effect of Direct and Indirect Methods. *Journal of Human Kinetics.* Volume 56, pp 109–118.
7. Helgerud J, et al. (2001). Aerobic endurance training improves soccer performance. *Med Sci Sports Exerc.* Volume 33(11): pp 1925-31.
8. Helgerud J, at al. (2001). Aerobic endurance training improves soccer performance. *Medicine and Science in Sports and Exercise*, Volume 33(11), pp 1925–1931.
9. Mohammed Zerf, (2017). Maximal aerobic capacity versus vital capacity which Cassel relationships determine the cardiorespiratory fitness among soccer players. *Turkish Journal of Kinesiology,* Volume 3, Issue 3, Pages 49 – 53.
10. Mohammed Z, et al. (2018), VO2max Levels as a Pointer of Physiological Training Status among Soccer Players. *Acta FacultatisEducationisPhysicae Universitatis Comenianae,* Volume 58(2), pp 112-121.
11. Manari D, et al. (2016), VO_{2Max} and VO_{2AT}: athletic performance and field role of elite soccer players. *Sport Sciences for Health.* Volume 12, Issue 2, pp 221–226.
12. Nikolaidis PT. (2011), Cardiorespiratory power across adolescence in male soccer players. *Hum Physiology.* Volume 37(5), pp 636–41.
13. Stølen et al. (2005), Physiology of soccer. *Sports Medicine.* Volume 35(6), pp 501–536.
14. Slimani M, et al. (2019), Maximum Oxygen Uptake of Male Soccer Players According to their Competitive Level, Playing Position and Age Group: Implication from a Network Meta-Analysis. *Journal of Human Kinetics.* Volume 66, pp 233–245.
15. Tønnessen E, et al. Maximal Aerobic Power Characteristics of Male Professional Soccer Players, 1989–2012. *International Journal of Sports Physiology and Performance.* Volume 8, pp 323-329.

❑❑❑

1. Research Scholar Department of Physical Education and Sports Science Manipur University, Imphal. Email-somorjit1957@gmail.com
2. Assistant Professor Department of Physical Education and Sports Science Manipur University, Imphal. Email-thambalsingh@gmail.com

Dominant Tradition and Socio-Cultural factors in Chirta Banerjee Divakaruni's The Mistress of Spices

–S. Shanmugam
–Dr. G. Keerthi

Tough is what they need, I say. And here is what I don't say: But you're kind also. You've known the hard streets, their pull. You too have heard death's siren song, the one she sings especially for the young. Maybe you will have the power to pull them back from her, to make them see how beautiful is sunshine, the curve of a wing in flight, sprinkle of rain on the hair of the one you love.

Chirta Banerjee Divakaruni is a notable literary figure in the Into-American multicultural society. In her fiction, she has discussed social variation and diasporic culture. The dominating tradition and socio-cultural elements have served as the foundation for the Diaspora and immigrants. Divakaruni has affirmed the realism, individualism, and modernism of Indian and American society. The author has focused on changing hegemonic tradition with the help of contemporary men and women. To decide on life and mannerism, the novelist debated tradition versus modernity. Divakaruni's portrayal of her own effectiveness, wit, and pursuit of literary curiosity is impressive. Her wealth has made it easier for her to balance self-congratulation with the ease and duration of life. The author has described the promise of adventure, assistance, and optimism. She discussed the significance of spices in Indian cooking tradition. The genuine significance of self-satisfaction, delicacy, multiculturalism, Diasporas, and economic systems in Indian life and society have been caricatured by the author.

Keywords : multiculturalism, Dominant Tradition, Socio-Cultural factors

Divakaruni discussed many condiments and spices in the novel "The Mistress of Spices" The author can recall a number of fatal illnesses and old age. Divakaruni has presented the world and society of her fictional universe. Her literary success has contributed to exposing the magical qualities of spices and their situation. The author has portrayed the

thematic and linguistic experiments on women's delicacy as having social significance. In her novel, "The Mistress of Spices," she stressed the status of limitless potential. The author also emphasised the significance of spices in daily life.

> Fennel, which is the spice for Wednesdays, the day of averages, of middle-aged people. Waists that have given up, mouths droops with the weight of their average lives they once dreamed would be so different. Fennel, brown as mud and bark and leaf dancing in a fall breeze, smelling of changes to come.(104)

The author mentioned people's monotones. She has dealt with humanity's predisposition toward wrongdoing and guilt. She had hated the hostile, sympathetic, and isolated predicament. The author's preference has been violated by her. It has to do with the heroine's fate. She gave rationalist explanations of structural elements, behaviour, and tendency some thought. People in their middle age have connected natural occurrences and variations, such as lip droops, dirt, bark, and leaves, to relate natural changes for the vast potential of the novel "The Mistress of Spices." She has drowned numerous facets of society's monotony.

> Who? Her magenta lips purse around the pellet of the word. „Do you have an appointment? No? In their armor of mascara her eyes rake my cheap coat and boots, the package I have brought all the way from the spice store wrapped in old newspaper. My umbrella pooling dark wetness like pee on her carpet. Her spine is stick- straight with disapproval(132)

Chitra Banerjee's spicy novel is titled "The Mistress of Spices." She has pictured mascara-covered eyes and magenta lips. Over successes, the author has portrayed tipped fingers and her scar. The physique of the body is covered. Divakaruni has discussed how women are typically sober. The author has looked at how women behave while they are stanching and buzzing. The author of the novel holds a contradictory view of women's unrestricted self-determination. She has discussed the value of using spices for cooking as well as the usefulness of cosmetics for drawing attention to certain body regions. People have a responsibility to keep their bodies symmetrical and organised.

> Yes, ma'am, he says with mock humbleness. So now my American is sitting on the counter swinging his legs and eating hot snack mix from his peppercorn as though he's done it forever. His feet are bare. He took off his shoes at the door. His shoes, handmade of softest but somewhere deeper. Shoes Haroun would have loved and hated. (150)

Divakaruni has described the conditions of counter style of American people. The person of America has countered the body parts legs and feet wearness.

The writer has written various distracters and greatness of love and hot in “The Mistress of Spices”. It is a splendid, beautifully concaved and crafted novel. Really, she has intended spicy culture is panacea to remove all illness and pain. Chitra Banerjee’s novel has dramatized possibilities the relationship of woman and spices. The author permits her to speak without the narrator intervention.

> Tough is what they need, I say. And here is what I don’t say: But you’re kind also. You’ve known the hard streets, their pull. You too have heard death’s siren song, the one she sings especially for the young. Maybe you will have the power to pull them back from her, to make them see how beautiful is sunshine, the curve of a wing in flight, sprinkle of rain on the hair of the one you love.(176)

Divakaruni is an amazing novelist with a strong American enterprise and spicy customisation. In defence of American civilizations, she has pictured allied slinking of flame-colored dusk and immorality. The author has discussed the sorrow of rejection, the purging of evil, and the healing of slight. In “The Mistress of Spices,” she has focused an impermissible longing. She created a new cream culture and believed in the goodness, beauty, and toughness of people. The author has discussed some of modernism’s restrictions and customizations.

It is clear from reading Divakauni’s novels that the protagonist strives for self-hood and independence in the carnal world of Indian English fiction while also using narrative methods to investigate self-discovery. Divakaruni is a woman artist in reality. She has discussed style and dominant attention as a psychological and provable thematic concern. The author also discussed the historical and multi-cultural aspects. She gave a protagonistic description of human nature. She has emphasised the need for new sex and natural pursuits. The challenges of old age and society are greatly dominated by the elderly man.

> I think the old man saw it too. His voice changed, grew hard as well, and formal .And though it was not loud it boomed against the walls of the room like a waterfall. Granddaughter, he said, I had hoped not to say this but now I will. I ask it as debt- payment for all those years you lived with me, all that I gave which you threw away when you left.(200)

The permissive, name prominence, and standing in society around which Bengali culture’s traditions were based. She has viewed birthrights as a position of achievement because of how frequently performance has been questioned. The author has mentioned all theosophical moment, detested indignity, and systemic ovation. The author has highlighted numerous flaws in the caste-class relationship

of Bengali families. She preserved the pricier and more enticing aspects of the past, present, and future prattle white lotus. Divakaruni is aware of the dreadful burden of modernity's cultural division.

She detailed the awful state of her life. She has portrayed the development and collapse of our modernist society's relationships and culture. Throughout life, the authorial propensity has spanned a number of reformatories occasions. She has demonstrated the weariness and predictability of life. She has won over the idea of social class. Diarchy in society and the family is a result of Divakaruni.

"The Mistress of Spices" is a flagrant novel. The author has described the importance of Makaradwaj in our percolating life. Makaradwaj is an ayurvedic condiments, she has boosted immunity power of the people old age and measured contentment of Makaradwaj. It has symbolized the power of strength, omnipotent and stigmatic. She has explained Makardawaj efficiency and offering of the potential power.

Makaradwaj and Amla both are unique knocking behavior of the human body. Amla is an important ingredient of the medicine in different type of soup, jelly and jam. Chitra Banerjee has depicted indulging quality of the mankind,Makaradwaj and Amla have handled of human potency, love and strength.

The feeding habits have a particular taste for the lotus root. Humans' passionate, energising desires are a result of the lotus root. Pratha and Curry have combined the lotus root. For enhancing breathing power, it has bundled a variety of spices. The lotus root has been thought to boost sexual and physical power by the American playboy. The author conjured up a variety of disappearances and treatment options for the man's body.

> O Spices who know so well my deepest weakness, pride, it is the perfect sentence. For how can I go to those I helped, who feared and admired me all this while, who loved me for all I gave, as this naked eroded self. How can I stand the pity in their eyes, and under it the revulsion as I hold out my begging hand.(297)

The sesame tree is a symbol of age and prolongation. Despite the horror, broken hearts, and loneliness of lost love. The energetic Power of humanity has been transformed into the sesame ash. For the purpose of creating spiralling space and time, the sesame tree has provided a canopy. According to the author, sesame is a source of nectar, gum, resin, and bark that can be used for supplying or making medicines. In order to plant the seed of optimism, Divakaruni has created happening and miss happening. Divakruni revealed the theory behind spices in our nation. Indian postmodern culture has reacted with social sophistication and

meanness for the perceptive and socially adept. Really, the author has described how gingers are cunning.

The writer has explained the spices' defence mechanisms in remorseless detail. The poignancy ginger has received the conviction from Divakaruni. Ginger is a representation of the body's heat, sturdiness, and warmth. The ginger spice has an aggressive tendency and attracts fleeting interest, curiosity, and joy. Ginger has a role in our society's social mirroring of Indian culture and the natural world.

> Yes, mam, he says with mock humbleness. So now my American is sitting on the counter swinging his legs and eating hot snack mix from his paper cone as though he's done it forever. His feet are bare. He took off his shoes at the door. His shoes, handmade of softest leather, whose shine comes not from the surface but somewhere deeper.Shoes Haroun would have loved and hated.(150)

The author has described an importance of peppercorn, it is spicy and medicine significant .The mock humbler has displayed love and hate of the society. The people of modernistic society have liked mockers and mockery to the character and behavior. Peppercorn is a distractive mouth-freshener and ting of many aspects in the puzzling of life and various imaginations for the flouting attention in the mock people. Peppercorn is remember of spices grow up pretty and proper culture of human being .

The most sophisticated female character in contemporary Indian-English fiction can be found in Divakaruni's novel. She has singled out the constraint as a general human condition. She bases her beliefs on the work of female authors today. The female character's ability to take herself seriously has been described by the novelist. The writer has managed the mode of developing and solving various conflict in Divakaruni's nature and her expectation. Actually, "The Mistress of Spices" is a novel about character conversion and the reader's love for the character's huge personality. In general, the portrayal of women has taken on fresh qualities and aesthetic focal points to isolate as a universal human predicament.

References:

Divakaruni, ChitraBanerjee. The Mistressof Spices, Black Swan Britain, 2005, Print.

Agarwal Beena, Women Writers and Indian Diaspora, New Delhi, Author Press, 2001.

AryaSushma, SikhaShalini, New Concerns Voice in Indian Writing, Mac Millan, India, 2006.

❒❒❒

1. Assistant Professor, Arignar Anna Govt Arts College, Attur. 636121

2. Govt Arts and Science College, Komarapalayam 638 183, Namakkal Dt

Research Article

Cultural Conflict in Chetan Bhagat's *2 States: The Story of My Marriage*

–S. Rajaprabu
–Dr. G. Keerthi

The mother of Krish claims that these black South Indians practise black magic. They manipulate people's minds in order to seduce North Indians, especially Punjabis. Hatred towards Tamils, according to C. Bhagat, is not at all out of date. Krish selects Chennai as his top choice for a placement, and while it is handy for him, his mother, who is aware of his Punjabi lineage, is roasted with contempt by a Madrasi girl. Her index finger was injured in the confusion of chopping bhindi. Blood is still dripping, but the cut's anguish was less severe than the pain associated with the thought of getting married to a Madrasi girl.

One of C. Bhagat's well-known novel is 2 States. The plot of the novel is on a couple who desired to wed despite coming from various states, castes, and religions. This is India, the country that is home to TajMahal, the symbol of eternal love. However, it is still true that diversity did not bring to unity. The young couple's struggles to persuade their parents to approve of their marriage are the subject of this novel. It is about a love marriage and the struggles the main character and his wife had. They come from many parts of India. C. Bhagat has addressed a number of touchy subjects, including inter-caste weddings in India as well as topics like cultural conflict, love-hate relationships, life philosophy, flawed educational systems, and national integrity. The cultural tensions in 2 States are the main theme of this article.

Keywords: Cultural Conflict, inter-caste marriages, culture and traditions

The growth of international corporations has removed cultural divides, but it also plays a damaging role in the dissolution of marriages based on cultural differences. Every culture promotes its own set of rules, and because these norms are so rigorous, there is little space for human emotions inside them. There is more to India's cultural divide than first appears.

The cultural rivalry between the two States has been successfully revealed by C. Bhagat. Through the romance between the hero and his beloved, C. Bhagat exposes how North Indians (Punjabi) treat South Indians (Tamilian). The main character Krish, a Punjabi man, is in love with Ananya, a Tamil woman. They both must deal with the cultural divide. The problem of inter-racial marriages is addressed by C. Bhagat. The love affair and subsequent marriage with the girl he adores are based on the author's own

experiences. Ananya's scholarly achievements are valued by Krish, but when it comes to marriage, they both need to persuade their parents to make accommodations. The way that their initial encounter is shown is excellent.

> She stood two places ahead of me in the lunch line at theIIMA mess. I checked her out from the corner of my eye, wondering what the big fuss about this South Indian girl was. (Bhagat 3)

The murky and complicated nature of Krish and Ananya begins relationship when their parents showed up for their last convocation. The two opposite poles of Indian geography, one Tamil and the other Punjabi, collide. At this point, C. Bhagat is carefully manipulating the conflict between the two families on their various habits, rituals, and traditions. On this occasion, he presents a very amusing anecdote in which Krish's mother for being "Madrasis" mocks Ananya's family. To refer to them as "Tamilians," Krish urges. C. Bhagat mocks the regionalism of the Indian mentality in this passage. Even Krish's mother is included in C. Bhagat's satire of the customary attitude of contempt against South Indians:

> These South Indians don't know how to control their daughters. From HemaMalini to Shridevi, all of them trying to catch Punjabi men. (Bhagat 48)

The mother of Krish claims that these black South Indians practise black magic. They manipulate people's minds in order to seduce North Indians, especially Punjabis. Hatred towards Tamils, according to C. Bhagat, is not at all out of date. Krish selects Chennai as his top choice for a placement, and while it is handy for him, his mother, who is aware of his Punjabi lineage, is roasted with contempt by a Madrasi girl. Her index finger was injured in the confusion of chopping bhindi. Blood is still dripping, but the cut's anguish was less severe than the pain associated with the thought of getting married to a Madrasi girl. Even though Krishna is scheduled to be posted in Chennai, Krishna's mother is still trying to persuade him, "open this album. See the girl dancing in the baraat next to the horse" (Bhagat 57). She also persuades him that he needs to get to know the girl. Krish jokingly queries, "What is so special about her?" (Bhagat 58) Mother in all elation admits; "They have six petrol pumps" (Bhagat 58).

C. Bhagat depicts the mindset of Indian parents in this passage. In the evolving pattern of behaviour in multi-cultural and multinational societies, C. Bhagat demonstrates the concept of the dowry system in conventional marriage and the shifting paradigms of matrimonial relationships. His mother intends to set up a formal meeting with Pammi Aunt's daughter very seriously. Krish makes a direct admission, "I allowed my mind to be trapped again by thoughts of my South Indian girl" (Bhagat 60).

C. Bhagat highlights the cultural differences between Tamil and Punjabi families by contrasting the attitudes of Krish and his mother. He acknowledges that the entire trajectory of marriage alliances needs to be reoriented. To ensure happiness in society, it is crucial. His mother believes that under the conventional views of marriage, dowry and attractiveness are important. Such cultural activities not only make up a significant

current in native literature but also contribute to diaspora literature. However, Krish eventually lands a decent position at Chennai's Citi Bank after graduating from IIM. Krish communicates with Ananya's parents and treats them with all due respect. Krish, who works in Chennai, is looking for a safer way to get away from his parents' excessive expectations. The very first thing he observes in Chennai is that 90% of the population has dark skin. The author wants to expose regional language variations in Exodus of the Population. A barrier entraps Krish. Similar to language and general cultural traditions, these obstacles exist. The components of the fundamental habits are described in the passage that follows. He outlines his own problem:

> However, it did feel different. First, the sign in everyshop was in Tamil. The Tamil font resembles those optical illusion puzzles that give you a headache if you stare at them long enough. Tamil women, all of them, wear flowers in their hair. Tamil men don't believe in pants and wear lungis even in shopping districts. The city is filled with film posters. The heroes' pictures make you feel even your uncles can be movie stars. (Bhagat 77)

Such a description exhibits a masterful blending of humour with the subdued irony of Tamils' way of life. They feel comforted by his interaction with a Sardar-ji in Tamil Nadu. Sardarji speaking fluent Tamil and it is astounded him., "It is fascinating to see a Sardar-ji speak in Tamil. Like Sun TV's merger with Alpha TV" (Bhagat 79). Krish found it hard to comprehend that a Sardar-ji could speak Tamil so well. Additionally, he claims that a Sardar-ji from Chennai asked him to find a polar bear in Delhi. He receives a tip from his co-partner Balakrishnan as a result of his social integration into the Tamil community and his professional success. Bala advises daily reading of these reports. He further asserts that Tamilians value education. With this in City Bank, Krish enters a society where utilitarian goals dominate. He had no interest in assimilating into Tamilian society; his only goals in life were to get wealth and have fun. He states, "Four lakh a year, that is thirty-three thousand a month, I chanted the mantra in my head" (Bhagat 84).

Krish in Chennai has to deal with Tamilians' attitudes as well. His awareness of Punjabi sensibility demonstrates how cultural identities also travel with geography, wherein it becomes a force that shapes human consciousness. Krish's cultural awareness alternates between Tamil and Punjabi. Bhagat penned, "The house had an eerie silence. A Punjabi house is never this silent even when people sleep at night" (89). He finds himself so confused that even he hesitatestohave water. Every word of Krish is calculated because he is anxious of adverse reactions that might ruin the possibilities of his union with Ananya. He makes a confession of his suffocation in that family. "What the fuck am I doing here in this psycho home?" (Bhagat 91)

He becomes engrossed in the sharp Carnatic music and prayer chanting that characterise a South Indian family. He will be asked various questions about his family and job, among other things. It was challenging for Krish to overcome the differences in culture, location, tradition, attitudes, language, and behavioural expectations. He concedes

his predicament: “How am I going to win them over? It is impossible to get through sitting with your father is like being called to the principal’s office” (Bhagat 95).

In essence, it makes fun of parental authority. C. Bhagat skilfully weaves tensions between the intensity of emotion and the impending uncertainty in social norms into the novel’s plot. He simultaneously depicts two levels of the plot, one of which is made up of Krish and Ananya’s inner passions and the other of which is made up of parental racial prejudices.

The thoughts of C. Bhagat on the blending of cultures through marriage are quite important. Bhagat portrays a socially conscious writer in his story. He sees the collective system being reoriented. This social structure can provide humans greater room to survive. The friendship between Ananya and Krishna could have helped to end biases against cultural differences and to advance happiness for all people.

One can see the cultural differences in the novel where the parents possess the orthodox dogmas of traditional ways but true love never dies. Because after facing all obstacles both families agree for Krish and Ananya’s marriage. In short, this is a witty account of love marriage style where the inter-caste marriages bring cultural shocks. In this novel, Bhagat highlighted different cultural diversities and tries to show that true love never dies.

In this way, C. Bhagat’s success of his love is the biggest achievement of his life. It is a story of two different people, caste and state is really tough. The waythey deal with their parents and making them understand is very good. In this book, the author makes the point that states both make and divide countries. Every state has its own traditions and culture. Even though the couple belongs to the same caste, people discourage interstate marriage because they are unsure of how to adapt to the various cultural norms.

Bhagat concentrates on how the pair persuaded their parents that they wanted to get married with their gracious consent. Instead of fleeing, Krish and Ananya made the right choice by choosing to get married in front of their parents. In general, when a couple falls in love, they try to go, but Krish and Ananya made every effort to persuade their parents to let them stay. Here, C. Bhagat attempted to illustrate a crucial point: if your parents are unhappy as a result of you, you would not experience the true meaning of life. For the next generation, this message is crucial.

References:

Bhagat, Chetan. 2 States. New Delhi: Rupa Publication Indian Pvt. Ltd, 2009.Print.

Harish, Trivedi. Colonial Transactions: English Literature and India. New York: Manchester University Press, 1996. Print.

Richard, Reyckman. Theories of personality. America: Wadsworth Publication, 2012. Print.

❑❑❑

1. Research Scholar (Ph.D), Dept. of English, Government Arts and Science College, Komarapalayam.
2. Assistant Professor, Dept. of English, Government Arts and Science College, Komarapalayam.

Understanding Manipuri Women Writers and the Emerging Issues in their Writings

–Dr. Ph. Jayalaxmi

Finally, when she was alone she imagined and invoked all the Goddesses of Hindu Mythology who were the epitome of womanhood to question about what women's rights meant to them. She summoned and invited all the Satis who were "epitomes of piousness and chastity, exemplary models for all women, respected, idolized and worshipped both in heaven and on earth..."(134). She started with Sita and questioned the practice of Swayamvar where a woman was treated as a prized possession of men who won the hands of a woman.

Manipur is known for its enthralling beauty with its rich tradition and culture. Manipur literature has also witnessed the historical uprisings which have informed the minds of many writers who have taken recourse to arts and literature to express their anger, befuddlement and discontentment. Concerning Manipuri women writers, though overshadowed by the male writers for many decades they have eventually succeeded to make themselves visible in the literary circle. They have emerged from the shadow of male writers by asserting their subdued voices. This paper seeks to address some of the evocative issues which have affected the lives of women in Manipuri society. Through the narratives of women writers, many crucial elements affecting the women in Manipur society have resurfaced especially in relation to their personal lives like sexuality, desire, identity, entrapment, among other things. Women in Manipur are often in the forefront in many historical wars and societal problems by fighting against the British imperialism or against the anti-social elements detrimental to the society. They are revered for their contributions but many do not attempt to penetrate their personal space where they have to endure manifold problems. This paper will fill the absence of women's lives and silences which never find utterance in the general discourse.

Keywords: Manipur, Women Writers, Crafting the Word, Manipuri Literature, Conflict

Introduction

Manipur as one of the Northeast states of India has been known for its unique and diverse cultural heritage and is a home for several ethnic communities. Though different ethnic communities have their own distinctive culture, food habits, folklore, language,

traditions, and literature, the Meiteis who constitute the majority of the valley have their rich literature primarily written in regional Manipuri language. Manipuri literature has produced many novels, short stories, prose and poetry and has many prominent writers to its credit. From chronicling the hymns and ritual songs in the early part of the seventeenth century to the influence of English and Bengali literature in their use of themes and imageries and reflecting the exigencies of common people in the modern time, Manipuri literature has witnessed the social, political and historical transformation that has been taking place in the society. Even with the aesthetic beauty, style of writings with its unique contents, Manipur literature remains inaccessible to the readers beyond Manipur. With many translated works coming up in the recent time, there is an eager contemplation on the researchers to investigate the manifold issues reflected in Manipuri literature.

The revivalism of the past lives by reliving the memories through the local culture, folklore, myths, legends and ecology has mostly occupied the artistic expression for the writers from the Northeast. The pioneers of Manipuri literature also began with serenading the beauty of the nature and they aroused "a new consciousness in the people of the richness of their language and also the taste of vernacular literature" which had been in a deep slumber for many years (Singh 219). With the intense consciousness of the significance of our own regional literature, Manipuri literature has also grappled with the estrangement due to the armed conflict in the post-independence period. We could discern the constant attempt in Manipuri literature to find an alternative discourse to address the multiplicity of problems like political unrest, insurgency and displacement which echo the new reality of the contemporary situation. K. C. Baral while articulating the literature of Northeast profoundly recalls the fact that:

If the past has a rootedness in harmony among communities and cultures, the present is a reality of profound disaffection. The violence that stalks this land is part of everyday life that adds to the fragility of the human condition. (6)

The situation of Manipur is more or less similar to its counterparts and the persistent struggle to recover the cultural loss is tangible acutely in Manipuri literature too. The pioneering works of these writers unveil a new awareness of their lost history and identity along with the reinvigorated perception of the emerging social and intellectual concerns of the post-independence period and the evocative power of their language or the other improved qualities of style. The writers are constantly under pressure to bridge the gap between the regional language and the English language.

The writings of women bring forth some of the vexation and discomposure which has been troubling the women writers in particular. The present paper seeks to address the profound issues and challenges of being women in Manipur society as reflected in the short stories written by Manipuri women writers. For the analysis, *Crafting the Word: Writings from Manipur* (2019) edited by Thingnam Anjulika

Samom has been taken up to have a deeper understanding of the women's quandary in Manipuri culture and society. The powerful short stories from Manipur take us to the lives of women but also open a plethora of insurmountable problems confronted by the people of Manipur. This paper intends to study some of the short stories in the collection to envisage the emerging issues regarding women and society manifested in their writings. Most of the writers taken up for analysis are those who are informed by numerous perplexed problems sprang from violence, question of survival, gender disparity, queer problems, stereotypes, sexuality, moral standards, victimization of women, and so on.

Question of Survival in the Time of Conflict

Maya Nepram's "The Crimson Tide" translated by Paonam Thoibi narrates the story of Tondonbi who along with her husband depended on the Loktak Lake (the floating lake) for survival and how they were deprived of their livings when the conflict was escalating in Manipur which displaced many families. *Phumdi* or floating lake which happens to be the source of livelihood for many inhabitants were encroached by the insurgents to make it their hideouts. Once the crimson tide used to enhance the beauty of water mesmerizing the hearts of people but the ensuing conflict between the armed forces and the insurgents has stained the water with blood. Tondonbi could remember the last night when she and her husband spent the night at *phumdi* as they were given the dateline to vacate the hut which they had built atop the *phumdi*. Tondonbi questioned the very essence of such revolutions which claimed to have stood for people and the land on one hand and deprived the rights of people and their needs on the other. She insisted her husband not to leave the hut as it reminded them of their hardships and struggles. She said whether they resist them or not "death is inevitable" and "this life is like being dead" (106). She did not even have the audacity to fight and resist openly. The resentment rising in her heart was palpable but many people like her could not openly voice their anger as their lives depended on the armed men who held power and dominance in their hands. Out of fear, they pretended to sympathize the insurgents but many loathed the inhuman acts exhibited by them in the name of freedom and liberation. The thought of submission to their pressure had tormented Tondonbi as she knew what Loktak Lake was for them who survived only on fishing. Tomchou, her husband, was more of a positive person who believed in struggle without surrendering to defeats. The home which they had built with so much love and sweats was snatched away and in a moment their lives turned into a horror when they, while moving away from the hut, were stopped by some people in the middle of the lake. As they reached the shore, someone suddenly dragged her husband and started beating him up. They inquired: '" Tell us where they got off. What were you guys carrying back and forth? Guns? Or food supplies for them? Go on, take us there..."'(110). In spite of pleading them of their innocence,

they were threatened by the armed forces. They took away Tomchou and a helpless Tondonbi could only wail at the receding boat. The lake was cordoned off and Tomchou became the victim of the gory crime with no trace of human emotions. Tomchou misled the armies to save the lives of the insurgents even though they were the ones who displaced them. In the morning, "the bluish-green waters of Loktak lake too changed in colour, assuming a monstrous and fiery red blue. There he lay peacefully in his own boat, seemingly in a deep slumber, clad only in his *loukhao* shirt and *khudei* loincloth, both dyed red in his own blood" (112). This is the price the common people have to pay for the freedom and liberation. They are the worst victims in time of wars and conflicts. They are entrapped in between these two forces which know no human sympathy. And the question remains, whose fault is it?

Question of Women's Empowerment and Rights

"Sati Interview" by Ningombam Sanatombi which is translated by Kundo Yumnam is another riveting story which unravels the hypocrisy of society which celebrates the International Women's Day and talks about women's empowerment when the reality is something different from what has been portrayed by the society. The protagonist in the story was writing a seminar paper on the women to be presented in the International Women's Day and her topic was "Women's Rights in Hindu Mythology". She herself was a graduate with Political Science but she was seen being entrapped in the domesticity and its mundane activities with no life of her own. She was often ridiculed by her husband and her daughter thereby not recognizing her efforts. Her opinions and even her endeavour to write a paper were not encouraged by her family who frequently saw her as a housewife doing household chores.

Finally, when she was alone she imagined and invoked all the Goddesses of Hindu Mythology who were the epitome of womanhood to question about what women's rights meant to them. She summoned and invited all the Satis who were "epitomes of piousness and chastity, exemplary models for all women, respected, idolized and worshipped both in heaven and on earth..."(134). She started with Sita and questioned the practice of Swayamvar where a woman was treated as a prized possession of men who won the hands of a woman. She put the pertinent question on patriarchy and how women were not given any right to choice. Sita only answered whatever she had done was according to dharma. Even when Lord Rama told her to prove her chastity, she did it in accordance with what dharma had taught her and she never felt threatened as she did not violate the dharma. She then turned to Kunti and asked why she did not claim any privilege from the Sun deity. She was astonished by what Kunti had replied to her query in which she said that she treated the Sun as God but not her husband. Then, she swiftly went to question Panchali or Draupadi about her love for Karna and why she did not choose Karna in spite of them being in love with each other.

She replied she could not go against the choice which her father had made for her. For her whatever her father had chosen was the ultimate desire for her as well and she did not have any right to vent her anger and discontentment. She again asked why she did not protect herself when she was disrobed by Dushasana in full public view. To which she replied, a person who was ignorant of dharma shastra could not be taught what dharma is all about. Then she moved to Radhika, Saraswati and ultimately to Goddess Durga. She inquired Goddess Durga about her likes and dislikes and why she did not express her desires to Shiva as his consort. After interviewing the Satis of Heaven, she turned to Ine Sakhi, the Meira Paibi leader who for many years had protected the people with torch in her hands in dark night. Eventually, Ine Sakhi started questioning the dharma or ethics in which Dharmaraj Yudhishtira had lost Draupadi in the game of dice. She vehemently was against such dharma in which a wife had to suffer ordeals to prove her chastity. The story ends with the declaration that there was "no mention of women's rights in the ancient scriptures or mythology" (139). Though we always worshipped these women, they were the most powerless women who were only pawn in the power politics who were trained to portray the ascribed roles given to them by the cultural norms and patriarchy.

A Lesbian Story

Nee Devi's "The Nightmare" translated by Soibam Haripriya is a story which poignantly encapsulates the struggle of lesbian and how they have to put up with the ire of society which does not accept their relationship which eventually leads to the tragedy of life. In the story, Somorani never considered herself neither a man nor a woman since her birth. She had never worn *phanek* or wrap-around like other women and she easily outshone other boys of her age. Her grandfather's words often reinforced her thought of being a man rather than a female. Her grandfather often used to say, '"My grandchild is not a female, she is a male" ' (161). These words were encouraging enough to embrace the masculine traits and she started thinking of herself as a man performing the duties of a man. Later on, Somorani who assumed herself as a man started living with Leishna. Their relationship was approved neither by the society nor by their families. On the pretext of attending to her ailing mother, Leishna left Somorani and made her to think of this whole world as "a pretence, filled with betrayal and deception" (163). She always protected Leishna for many years from the scornful eyes of the people not letting even her mother to speak harsh words against her. When Leishna's family took her, she vehemently questioned the tradition which allows only a man and a woman in union but not with the same sex. She always anticipated with fear for the day when Leishna would leave her and that day came when Leishna being forced by her family decided to go with Bikash. Eventually, Somorani out of embarrassment took her own life. She succumbs to the pressure where society does not allow a homosexual relationship.

Different Moral Standards for Men and Women

Man-woman relationship is structured in such a way that a woman is taught to endure the violence at the hands of her husband. In many cases, woman does not reveal the severity of violence to save the marriage. She has to bear the adultery of man but she as a woman has no right to indulge in anything which is against the moral standards set up by the society. Woman has to suffer silently for the family. Such story is palpable in many Indian societies. The instance of mob justice is a frequent incidence where woman is humiliated and ostracized by the people who take law in their hands to punish those who drift from the ascribed moral standards.

Kshetrimayum Subadani's "As Spring Arrived" translated by Sapam Sweetie is a distressing story of a woman called Ibemnungshi who has been ostracized by society for having an adulterous relationship in the absence of her husband. Ibemnungshi was at the prime of her age when she had to struggle selling vegetables at market when her husband never returned home. Many believed that Thoiba had married another woman in the hills where he was posted but she knew that her husband fooled around women. In the absence of her husband, Tada Toyaima who was like a brother offered to help her in taking care of children. Women in neighbourhood advised her to go and stay with Thoiba for sometimes as they said it should be the responsibility of a woman to hold on tightly to her man. If such enticement failed then they counselled her to "look for spells and amulets, consult shamans and astrologers" (88) to control her husband. When every attempt to bring back her husband failed, she single-handedly with the assistance and support of Tada Toyaima started living her life. Such is a society that a single woman is not even allowed to breathe peacefully. Not long after people began to question their relationship which made Tada Toyaima to stop visiting Ibemnungshi and her children. One rainy night, Tada Toyaima came to take shelter from rain. Unexpectedly a crowd including local women and youths thronged inside her house and humiliated their chaste relationship. They shaved her head and smeared it with lime and turmeric and later on a decision arrived to banish her from the locality for indulging in an illicit relationship in the absence of her husband. As part of the mob justice which is mostly executed by the mob without even interrogating the matter properly, the crowd decided to give away Ibemnungshi to Tada Toyaima in a *keina katpa* ceremony (a giving away of the bride as part of a punishment for going against the tradition). Now they were declared as a man and a woman. She could not raise her voice and accepted the humiliation and shame without even questioning the norms of the society. Thoiba came after hearing the news of his wife and he added another wound by beating her up black and blue and dragged her out of the house. As a man, Thoiba's morality was never questioned and he was entitled to punish his wife as she strayed from

the established norms of marriage. Even in the absence of her husband, she should stay within the ambit of societal standards. With no option left with her, Ibemnungshi left home and stayed at hotel and only for survival she was forced into prostitution by the hotel owner. Eventually, she started earning to support herself which in a way gave her freedom. After ten years, her husband after realising the truth came looking for her and asked her to return home. The story reveals a harrowing experience of a woman who in the absence of a male member in a family becomes fragile and insubstantial in the society which invariably defines a man in terms of power and dominance who controls the well-being of the family. A house without a man would mean a house without a roof which can crumble and fall apart at any moment. When a man is absent in a family, that family often becomes the object of disrespect in the society as a woman is always taken a dependent who requires the support of a man.

Untold Woman's Desires

Sunita Ningombam 's "The Debt Repaid" translated by Natasha Elangbam deals with the life of a young widow, Lalita, who suppresses her desire to have a relationship with a man called Shyamo who is a paan seller. The narrative revolved around Lalita who used to eat paan on credit from Shyamo's shop sharing light jokes and conversations which later on turns into an intimate affair when Shyamo expressed his eagerness to be with Lalita. Though Shymo used to address her as Iteima (sister-in-law), he always admired the beauty and youthful attraction of Lalita. Due to peril of life she was enduring after the death of her husband, everything about her was charming except the sunken cheeks and some wrinkles on her face. They had never realised how the playful jokes turned into sexual innuendos and the desire to be together burning inside their hearts. Lalita began to question her own wayward desire and entangled herself between right and wrong of her action which was against the moral norms of the society. In one of the unguarded moments, she dreamed with her eyes wide opened when she chanced to see the bare-chested Shyamo resting flat on his bed. "She started to shiver. A hot wave of desire suddenly rose high, burning up her heart" (144). When Shyamo caught her watching him, he who wanted to unburden himself offered Lalita to be with him instead of selling clothes in the market they could run the small shop together which would be enough for their survival. Lalita though refused the proposal Shyamo began to question the desires of a young widow. She pondered:

> How can you say that the hearts of those lonely women, those without husbands, have dried up? What should have flowed freely has been dammed up by society and its rules. Behind this barricade, a widow clutches the memory of her lost husband and lets all that flows from her heart stream down as tears. Only then is she called a woman, allowed to live and go about. (145)

The society does not allow a widow to have wantoned desires and a thought of remarriage would mean to go against the prevailing societal structure which only allows men to have the freedom to choose multiple life partners. Human desires are most of the time suppressed by the society which contrives to make different moral standards for men and women where women are subjugated by tradition. In the end, Lalita loathed her own action and she was remorseful of not controlling her desires and action. In order to avoid any untoward incident, she chose to let go her feelings and she paid all the debts of Shyamo. Though it was the debt of paan, it could also be "the price of the unworthy love, paid with interest" (147).

Conclusion

The discourse surrounding Manipuri women is produced in such a way that there will be hardly any question on the problems and predicaments of women. The personal lives of women have never been part of the general discourse on women related issues. The perpetual discourse on women predominantly accentuates the courage, valour and valiance which are being highlighted in local legendary stories and historical narratives. Manipur is abounding with numerous stories of brave women but whether such narratives are empowering or not need to be reviewed and studied meticulously as these stories invariably fail to address multiple problems pertaining to women's personal lives.

Works Cited

Baral, Kailash.C. "Articulating Marginality: Emerging Literatures from Northeast India." *Emerging Literatures from Northeast India: The Dynamics of Culture, Society and Identity*, edited by Margaret Ch. Zama, SAGE Studies on India's North East, 2013, pp. 6

Elangbam, Natasha, translator. "The Debt Repaid" by Ningombam Sunita. *Crafting the Word: Writings from Manipur*, edited by Thingnam Anjulika Samom, Zubaan, 2019, pp.141-147.

Haripriya, Soibam, translator. "Nightmare" by Nee Devi. *Crafting the Word: Writings from Manipur*, edited by Thingnam Anjulika Samom, Zubaan, 2019, pp. 154-165.

Singh, Ch. Manihar. *A History of Manipuri Literature.* 1996. Sahitya Akademi, 2013, pp. 219.

Sweetie, Sapam, translator. "As Spring Arrived" by Kshetrimayum Subadani. *Crafting the Word: Writings from Manipur*, edited by Thingnam Anjulika Samom, Zubaan, 2019, pp. 86-93.

Thoibi, Paonam, translator. "The Crimson Tide" by Maya Nepram. *Crafting the Word: Writings from Manipur*, edited by Thingnam Anjulika Samom, Zubaan, 2019, pp. 104-113.

Yumnam, Kundo, translator. "Sati Interview" by Ningombam Sanatombi. *Crafting the Word: Writings from Manipur,* edited by Thingnam Anjulika Samom, Zubaan, 2019, pp. 132-140.

❏❏❏

Assistant Professor, Department of English and Cultural Studies, Manipur University
Email : phjayalaxmi@manipuruniv.ac.in, Mobile: 0897404526

A Critical Perspective on the Development of Indian Nationalist Literature

–Dr. Ramyabrata Chakraborty

Indian literature and the emerging scenario of Indian struggle for independence cannot be separated in any discourse of the genre. The socio-political status of India was full of chaos and confusions before Independence as the national freedom movement was at its peak during this period. Literary activities in vernacular languages as well as in English language were trying hard to reflect the main socio-political stream of their respective time frame. Thus a new kind of literature evolved and it was coined as 'nationalist literature'.

Indian Nationalist literature in the form of novels, essays and patriotic poetry play an important role in arousing national consciousness. These writings are excellent examples of the writers' or poets' delineation of the idea of nation. *Anandamath* by Bankim Chandra Chatterjee was a source of great inspiration to all the nationalist leaders. Tagore's Bengali novel, *Ghore Baire* (*The Home and the World***,** 1916) also vibrates with the idea of nation and nationalism but from another stand-point. A variety of historical novels like S.K. Mitra's *Hindupur* (1909), Venkataramani's *Marugan, The Tiller* (1927) and *Kandan, The Patriot* (1932) pave the way for the birth of Indian English Fiction which becomes popular with the arrival of the big trio—Mulk Raj Anand, Raja Rao and R.K. Narayan in the literary arena. The process continues with the publication of Salman Rushdie's epical *Midnight's Children***.** Rushdie's novel is remarkable for it is a movement away from the nationalistic novels of the triumvirate—R.K. Narayan, Raja Rao and Mulk Raj Anand and an attack into the fundamental concept of the national narrative. The present study tries to discuss this development of nationalist literature from Bankim Chandara Chatterjee to Salman Rushdie.

Key Words: Nationalist literature, historical novels, nationalism, nation, colonialism, self-reflexive, allegory.

INTRODUCTION

A work of art takes birth in a definite time frame historically and that time frame contains several units of the family, the immediate society, the larger social background and at last the status of the country in relation to the world (Goswami 11).

Indian literature and the emerging scenario of Indian struggle for independence cannot be separated in any discourse of the genre. The socio-political status of India was full of chaos and confusions before Independence as the national freedom movement was at its peak during this period. Literary activities in vernacular languages as well as in English language were trying hard to reflect the main socio-political stream of their respective time frame. Thus a new kind of literature evolved and it was coined as 'nationalist literature'. Nationalist literature—with all its biases and ideological problems—was anti-colonial in sentiment. It sought to define a native identity different from European constructions of the same. The main purpose was to raise 'national consciousness'. This meant constructing images of a tribe or region's history, glorifying its pasts, reviving myths, and rejuvenating pride in its cultural forms. Thus the nationalist project was always a cultural one. There was nothing inherently unified about the diverse cultures, religions and languages that comprised the Indian subcontinent under colonialism. The European model of nationalism, which took for granted the existence of one religion, one language or one ethnicity was doomed to failure. It was for this impossibility that the British argued that India was not fit to rule itself. It was on behalf of this sense of identity that, beginning in the nineteenth century, Indian writers of literature began to imagine cultural unity through their fictional and poetic works.

DISCUSSION OF THE PROBLEM

Coming to Indian Nationalist literature it is to be found that this particular type of literature in the form of novels, essays and patriotic poetry played an important role in arousing national consciousness, both in pre and post Independent India. These writings are excellent examples of the writers' or poets' delineation of the idea of nation. For example, the novel *Anandamath* by Bankim Chandra Chatterjee was a source of great inspiration to all the nationalist leaders. This Bengali novel vibrates with patriotic fervour and which was arguably the precursor of the latter writers of the genre Indian Writing in English.

The content of *Anandamath* is a historical anachronism but all the same the book has a place in the evolution of Indian novel, partly because of its structure and partly because it reflects so faithfully the idea of nation and search for identity which are everlasting cries for the people of India.

Another Bengali novel, *Ghore Baire* (*The Home and the World,* 1916) written by Rabindranath Tagore which also vibrates with the idea of nation and nationalism but from another stand-point. The book illustrates the battle Tagore had with himself, between the ideas of Western culture and revolution against the Western culture for the sake of Indian nationhood. To depict his idea of the nation Tagore in this novel intermingles the two contrasting ideas—'religion' and 'nationalism'. In this novel, religion can be seen as the more 'spiritual view' while nationalism can be seen more as the 'worldly view'. Nikhil's main perspective in life is by the moral and intangible while Sandip is more concerned about the tangible things,

which to him is reality. Sandip believes that this outlook on life, living in a way where one may follow his or her passions and seek immediate gratification, is what gives strength and portrays reality, which is linked to his strong belief in nationalism. Both Nikhil and Sandip seem to represent two opposing visions for the nation. Nikhil's vision is one of enlightened humanitarian and global perspective, based on a true equality and harmony of individuals and nations. On the other hand, Sandip's radical, parochial and belligerent nationalism, which cultivates an intense sense of patriotism in individuals, threatens to replace. The novel occupies Tagore's anti-nationalist sentiment conceived against a backdrop of a larger ideology of love, creation and global human fellowship.

A variety of historical novels paved the way for the birth of Indian English Fiction. These historical novels are *Hindupur* (1909) and *The Prince of Destiny* (1909) written by S. K. Mitra and S. K. Ghose respectively. As time passed by the novel form become increasingly popular with creative artists. After a long gap during which practically no Indo-Anglian novels appeared, around 1930, we find some historical novels such as K. S. Venkataramani's *Marugan, The Tiller* (1927) and *Kandan, The Patriot* (1932), A. S. Panchapakesa's *Baladitya* (1930) and Ram Narain's *The Tigress of the Harem* (1930). Then one year later after the publication of K. S. Venkataramani's *Kandan, The Patriot* Umraon Bahadur's *The Unveiled Court* (1933) was published which, too, was more or less a historical novel, exposing defects in the government under the regime of a prince. But the initial vogue of the historical romances, obviously associated with the awakening of Indian nationalism, soon started coexisting with the more recent social and political awareness which swept over other Indian literatures of the time. As nationalist feeling came to the forefront of Indian life, even purely novels on social reform were inflamed by politics since any desire to improve the lot the of people was bound to be linked with political independence.

Up to 1920s the Indian English fiction was experimental. The writers of that period were experimenting to provide recognition to the Indo-Anglian fiction. They wrote social, historical and detective novels but historical romances were much popular. The period between 1920 and 1950 was dominated by novels with political and social themes. During the 1950-1985, the writers like R. K. Narayan, Mulk Raj Anand, Raja Rao, Kamala Markandeya, Anita Desai, Bhabani Bhattacharya, Manohar Malgonkar, Shashthi Bhatta, Ruth Prawer Jhabvala, Arun Josi, Khuswant Singh, D. F. Faraka, Nirad C. Choudhury, Salman Rushdie and others are attempting their art of fiction writing with unlimited and unrestricted themes. Today, the themes of the Indian English novel are many and varied. K. B. Vaid, commenting on the themes of the Indian novelists, says that the thematic preoccupations of these novelists are: portrayal of poverty, hunger and disease; portrayal of wide-spread social evils and tensions; examinations of the survivals of the past; exploration

of the hybrid culture of the educated Indian middle classes; analysis of the innumerable dislocations and conflicts in a tradition-ridden society under the impact of an incipient, half-hearted industrialization (quoted in Sinha 40).

Some other themes are inter-racial relations, the Indian national movement and the struggle for freedom, the partition of India, depiction of hunger and poverty of Indians, conflict between tradition and modernity etc. The younger novelists like Anita Desai and Arun Joshi display an increasing inwardness in their themes. The Indian novel in English is thus characterized by a variety of themes. It continues to change and grow.

With the publication of Mulk Raj Anand's *Untouchable* (1935) and *Coolie* (1936) and Raja Rao's *Kanthapura* (1938), the Indian English novel started a new journey. This journey achieved a success with the arrival of R. K. Narayan in the realm of Indian English fictional world. These three constitute the big trio of the Indian English novel. All the three deal with the idea of nation and nationalism in different ways. Raja Rao in his novel *Kanthapura* deals with the theme of Indian Nationalism in the background of Gandhiji's struggle for independence, Mulk Raj Anand in his *Untouchable* presents the theme in its social perspective. Both tried to sow the seeds of nationalism among the Indians by dint of their writings. On the other hand some novelists tried to reflect a certain ambivalence towards the freedom movement and to show that ambivalence the novelists like R. K. Narayan used the self-reflexive or gentle comic style in their novels.

The next great development or re-awakening of the Indian English novel took place in the eighties and the decades that followed it with the publication of Salman Rushdie's epical *Midnight's Children*. Rushdie's novel is remarkable for it was a movement away from the nationalistic novels of the triumvirate—R.K. Narayan, Raja Rao and Mulk Raj Anand and an attack into the fundamental concept of the national narrative. For Rushdie, it was a redefining of the relationship between the Self and the Nation and in doing so, he opened up new avenues for an entire generation of 'post Rushdie' writers of Indian English who treading on his path were able to express themselves in a variety of voices and modes. Ramyabrata Chakraborty in his seminal work, *Nation and It's Narration: A Re-reading of R. K. Narayan's Novels* (1919) posits: Rushdie's allegory is not of the nation as that might be imagined to exist outside the world of texts, but of the nation as already mediated by the 'pretext' of national history. This is Indian history in its canonical form, as found in encyclopedias and textbooks (Chakraborty, 97)

CONCLUSION

Therefore it is seen that Indian English fiction is a powerful representation of the culture of Indian people of both pre and post independent era. The mutual relation that exists between society and literature, between the prevailing social, economic and political conditions and the portrayal of the characters, can be aptly

illustrated in the novels written by Indian English novelists. During the colonial period the Indian English Novel was concerned with and delved into the problems of identity of the Indian people suffering under the British yoke and hence was entirely of a different mould compared to post-independence novels. After Indian Independence, Indian writers started looking at the Indian context and scenario from a post-colonial point of view though the concentration on identity problems continued. But at the same time, there were new hopes, which in turn no doubt led to the development of newer and varied problems—social, economic, religious, political and familial—that had been previously submerged in the deluge of the national movement and drew the attention of the creative writers. The partition, the communal riots after partition, the stigmatic caste system, the suppression and lack of individuality of women, the poverty of the uneducated Indian populace became the central focus. However, the reflections of the idea of Nation and Nationalism varied with the writers and also the changing scenario of same writers.

WORKS CITED

Anand, Mulk Raj. *Untouchable*. New Delhi: Penguin, 2001. Print.

Chandan, Amarjit. "Citizens of the World with Roots in the Punjab." *South Asian Ensemble* 2.3. (Summer 2010): 90-99. Print.

Chakraborty, Ramyabrata. *Nation and It's Narration: A Re-reading of R. K. Narayan's Novels*, Mauritius, Scholars' Press, 2019. Print.

Chatterji, Bankim Chandra. *Anandamath*. Trans. Basanta Koomar Roy. New Delhi: Orient Paperbacks, 2006. Print.

Choudhuri, Indra Nath. "The Other and the Self: Tagore's Concept of Universalism." *Tagore—At Home in the World.* Eds. Sanjukta Dasgupta and Chinmoy Guha. New Delhi: Sage Publications India Pvt Ltd, 2013. 104-124. Print.

Dwivedi, O. P. "Nation and History: A Postcolonial Study of Salman Rushdie's Midnight's Children (1981)." *Journal of Alternative Perspectives in the Social Sciences* 1.2. (2009): 498-522. Print.

Goswami, Ketaki. *Mulk Raj Ananad : Early Novels*. New Delhi: PHI Learning Private Limited, 2009. Print.

Kortenaar, Neil Ten. "Midnight's Children and the Allegory of History." *Ariel: A Review of International English Literature* 26.1. (April 1995): 41-62. Print.

Rao, Raja. *Kanthapura*. New Delhi: Orient Paperback, 1970. Print.

Rushdie, Salman. *Midnight's Children*. London: Vintage, 2010. Print.

Singh, R. S. *Indian Novel in English*. New Delhi: Arnold Heinemann, 1977. Print.

Sinha, P. N. "Manohar Malgonkar: The Novelist as Historian." *Studies in Indian Writings in English*. Vol. 1. Eds. Mittapalli Rajeshwar and Pier Paolo Piciucco. New Delhi: Atlantic Publishers and Distributors, 2000. 35-40. Print.

Tagore, Rabindranath. *The Home and the World,* 1916. Trans. Surendranath Tagore. London: Penguin, 2005. Print.

❑❑❑

Assistant Professor & Head, Department of English, Srikishan Sarda College, Hailakandi, Assam
Email: ramyabrata1@gmail.com, ramyabrata@sscollegehkd.ac.in

Research Article

Cultural Identity and A Gastropolitical Study in M. G. Vassanji's *No New Land*

–G. Gokula Nandhini
–Dr. T. Alagarasan

It is an important episode that Nurdin refers to in detail about his experience with the realities of Tanzania beyond the affairs of his own urban- based Indian community. Generally, the views of the Shamsi sect of Islam to which he belongs, find food with a lot of difference that one can separate him from the black villagers and their world. Food materializes to mark his racial and religious status as an Indian Muslim and brings into a deep focus on the fact of his location as a member of an urban middle class in a largely poor country.

Culture is the manifestation of human of human dignity. It can be exhibited in their endeavours and their way of life in a particular society. It is the characteristics and knowledge of a particular people on language, religion, music, literature, arts, and social behaviour, dress and food habits. Gastro-politics is specific part of one's culture. It is a literary term which defines the cultural conflicts over food and it interrogates the complexities of what it means to identify the ethical eater in the contemporary food world. The present paper entitled "Cultural Identity and A Gastropolitical Study in M.G. Vassanji's *No New Land"* focuses on how the 'Shamsis', a sect of community of Middle East, South Asia and North Africa tries to adapt its emotions in the new land through the follow ups of the ethical cuisine and food culture.

Keywords: Gastro-Politics, multiculturalism, conflicts.

"It happens that when I write of hunger, I am really writing about love and the hunger for it... and warmth and richness and fine reality of hunger satisfied...and it is all one." **(M.F.K. Fisher 75)** Love, sex, companionship, family, economy, comfort, obsession, pleasure, control, desire, shame, disgust, fear, hatred, work, leisure, sickness, death, birth and so on are all contrasting aspects of life at various shades that give food a defining meaning. Extremely social, tediously mundane, highly problematic or very simple eating connects to the very interior of us. The language of eating and food encompasses a culture like formula that covers the tongue. At times, nothing is sacred

and persistently bombarded with instructions about what and how to eat. Eating allows us to rethink the ethics of bodies.

Food plays a seminal role in the East African Indian literature. Generally, human beings create a strange and influential semiotic device by converting their environment into food. The power of food which allows a social message is amplified. Many anthropologists have shown food in various guises, perspectives and tasks which indicate the rivalry, solidarity and community, identity or exclusion and intimacy or detachment. Food has a powerful association with the human cycle between the positive memories of nurture and equally negative experiences of early human life. In the contemporary South Asian society, a casual visitor is being impressed by the importance of food in day- to-day life and discourse. It is regarded as an important medium of the contact between mankind with the society which rests on the regulations of such contact; food is a focus of taxonomic and moral thought.

If we are what we eat, we also are what we don't eat. People moralize constantly about what they will and will not eat. To eat is to distinguish and discriminate, include and exclude. Food choices establish boundaries and borders. In the modern era this process of culinary differentiation may entail major modification of traditional foods; few people today eat exactly what their grandparents ate fifty years ago, and many of us also like to cross group boundaries to eat the "Other".(*Carnal Appetites: Food Sex Identities* 11)

According to Arjun Appadurai, what people eat or drink providing in East African Asian literature is a peculiarly powerful semiotic device. Food and drink do remind in the members of immigrant communities a sense of arousing their past into multiple migrations, within and out of East Africa. Also, they are influencing index of a sense of security and belonging, or the feeling of being aimlessness in the strange worlds. On the other side, the immigrant characters in literatures, eat and drink may indicate their struggle to the principal systems that try to assimilate them, and on the other hand it may also act as a symbol of their defeat of their undesired cultural influences. In the East African Asian literature, Food marks the border between the communities that is why it acts as one of the most important techniques for building bridges between the hostile to adapt to the culinary practices of others and to accept their food habit and becomes a thoughtful gesture of recognition.

The present study focuses on the fundamentality of food as material reality and shows how and why it is particularly notable in the writer's imagination of the Indian presence in East Africa. It is to show why and how food intervene

the acquaintance of displacement in literature which is called as gastro-politics. Appadurai calls and explains the term 'gastro-politics' that what does symbolism of food tells about the disputes between Indians and Africans and in what way food enables the writers to visualize a world beyond such conflicts. For illustration, how, for better understanding, food acts as a symbol for the changing social status of Indian East Africans in the immigrant journey that takes them through colonial and post- colonial East Africa and their ultimate second migration to Europe and North America. In the literary sense, how does food encode histories of partisans, housing and cultural exchanges in circumstances which are marked variously by racialism, violence, communal eliminations and inequality? Why do the writers find in food and drink engraved communal boundaries or act as inventories of social status, personal character or even gendered power? The above ideas are brought out by examining one of the novels of M. G. Vassanji, *No New Land*.

In *No New Land,* when Indian East African immigrants' community arrive Toronto, they are welcomed by the committees of the white Canadian Christians who provide them with clothes, food, and Bible. It is being observed by the people from Africa that they are "hungry pagans" (*NNL* 49) of "starving and naked pot- bellied children with runny noses, suffering dreadful diseases like beriberi and kwashiorkor" (*NNL* 49). The Indian East Africans who belong to the Shamsi sect of Islam, in order to profess a sense of exclusiveness and dignity in a context, they are allocated generic and humiliating Third world identities who generally insist on their own dressing styles, cuisines and religion. Cuisine is a highly developed and highly differentiated one and even the diets of the modest peasants have some variety. Feasting and fasting have powerful associations with generosity and asceticism. Food in Indian East African writing surpasses its basic function as a source of provision and comes to stand for a sense of dignity and the history for the immigrants in a way is at a difference with the dominant image of Africa.

In Toronto, the new African immigrants are welcomed by the Canadians. Nurdin, the protagonist received a call from John McCormack who has forcefully brought back Nurdin from his memories**.** The party is especially welcoming the new comers so that the new Canadians can meet the old ones to share their experiences. Mr. and Mrs. Lalani are much excited and enthusiastic to attend the party. The party is at the Don Mills Inn on Eglinton Avenue; their names are duly ticked in the guest register only when they are admitted to the party. John McCormack insists much on pronouncing each of their names correctly

at which they are impressed. They are much touched to look at the people's presence of all races, from every corner of the world form groups and talking of their new experiences which would thrill them "like the first day at school (*NNL* 53).

In fact, the association of Africa hunger and indignity are seen in the central character Nurdin and his friend Charles, a black African stagger upon a group of starving villagers in the interior of newly independent Tanzania. Both Nurdin and Charles were the salesmen of Bata shoes who travelled periodically from the proportional affluence of the capital city Dares Salaam to the rural out backs. Nurdin recalls the encounter from the vantage point of Toronto, where he has been forced to move by the economic and political betterments initiated by the new independent Tanzanian government. The picture brings to mind in Nurdin's memory in which the hungry Africans were prominent especially in the mid of 1980s:

He and Charles had cooked some maize meal and beans under an ancient tree, and, while eating, quiet and absorbed, something had made them both look up. They saw an eerie sight that shattered their peace that sent a shiver up Nurdin's spine. They were being watched. Some fifty yards away stood a group of people, black people in rags, in loose formation. Looking strange in the distance, waiting and watching, silent and intimidating... until suddenly and details of the men, women, and children registered horribly, in Nurdin's mind. Thin emaciated, the women with sagging breasts and exhausted looks; the children with flies buzzing around their noses, eyelids, and sores; old, pathetic grey- haired men shorn of all dignity- all patiently waiting. From time to time someone would go to take a drink from a muddy puddle. The area was suffering a drought, he recalled. Nauseated, feeling the hungry eyes on every morsel of food he tried to raise to his mouth to swallow, he could not finish the meal. (*NNL* 169-170)

It is an important episode that Nurdin refers to in detail about his experience with the realities of Tanzania beyond the affairs of his own urban- based Indian community. Generally, the views of the Shamsi sect of Islam to which he belongs, find food with a lot of difference that one can separate him from the black villagers and their world. Food materializes to mark his racial and religious status as an Indian Muslim and brings into a deep focus on the fact of his location as a member of an urban middle class in a largely poor country. Nevertheless, his migration to Canada menaces to disturb his sense of his place in the world, cultivated through the symbolism of food, among various

components. The very gastronomy that would have marked him in East Africa as a member of a wealthy community in Canada comes to be regarded as the sort of distant that he and his family needs to give up if they are to become fully Canadian. The things that he spoke of his superior status in East Africa turns to inferior in a new land in which his history is collapsed with that of the "third world" on the whole.

Nurdin is socially decomposed and fascinates to ask "when does a man begin to rot?" (*NNL* 82). It sets in a movement by various factors that are trying to make a victorious crossing from Nurdin's African past to his Canadian present. Haji Lalani, a strict Muslim would have objected the most swamping sense of culpability of his feeling that was being entertained. It is deliberate that food and drink are the vital part of the unwelcoming pleasures to which Nurdin is attracted in Toronto and he found himself caught between his old life in East Africa and his existing life in Canada. His social decomposition is a result in his attempt to perform a crossing from the old world to the present existing land which is found appropriately through gastronomical tropes. Nurdin involves himself in Canada because for him, it is a land about which the Shamsi had elaborated their dreams even when they were in Africa. But, it is worried about the potential loss of cultural anchoring that migration poses. One of his friends Romesh who is an Indo- Guyane has no dietetic conscience introduces him to alcohol, pork- sausage and obscenity which approach to represent Nurdin's sense of his own unalterable dislocation:

The pig, they said, was the most beastly of beasts. It ate garbage and faeces, even its babies, it copulated freely, was incestuous. Wallowed in muck. Eat pig and become a beast. Slowly the bestial traits- cruelty and promiscuity, in one word, godlessness- overcame you. And you became, morally like them. The Canadians. (*NNL* 127)

Noticing to food and eating, it is experimented with forms of pleasure that are not the first and foremost one confined to sexual pleasures. Parallel to the representations of sexuality which are often paired with food as a way of exploring different modes of sensuality, People live with an insufficiency of pleasure, rendering the explorations of the senses both exciting and problematic. Obviously, pleasure comes in an explosion of tastes. In eating, pleasure offers itself to be problematical. As it brings ones sense to life and forefronts the viscerality of life.

The food cultural studies bring the development in a polarization of culturalist and structuralist methods which are partially and temporarily resolved through

the adaptation of Gramscian hegemonic theory. Analysis of this moment returns to the fundamental issue for any kind of cultural study of complex relationship between power structures of various kinds of human agency. A hegemonic approach is used to suggest one way in which dominant ideologies and the aspirations of subordinate groups might be usefully articulated together. Gramsci in his volume *Selections from the Prison Notebooks* defines Hegemony as a form of control exercised by a dominant class, in the Marxist sense, a group controlling the means of production. It acts as a critical guide to the structuralist, culturalist and Gramscian approaches to the study of food culture and a history of food's place in the evolution of cultural studies. In order to foreground these concepts, the pig is taken to explore as a gustatory culture. According to Jane Grigson in her book *Charcuterie and French Pork Cookery:*

It could be said that European civilization... has been founded on the pig. Easily domesticated, omnivorous household and village scavenger, clearer of scrub and undergrowth, devourer of forest acorns, yet content with a sty- and delightful when cooked or cured, from his snout to his tail. There has been prejudice against him, but those peoples... who have disliked the pig and insist he is unclean eating, are rationalizing their own descent and past history. (7)

Although the heroic tone in which the pig is celebrated, the reader will be conscious about the values of civilization which are generally held to be present in the opposition to the animal's uncultivated characteristics. Unlike the other animals, the pig exists only as the subject or the object of digestion. It eats and is eaten itself is a signifier of appetite. The pig's appetite enters popular perception as something uncontrolled and unrefined, whereas the civilized appetite is considered to be a reason by social convention and self discipline.

There is a question that why the symbolic language of dislike constructed around this animal. She notices that the pigs are perceived as opposition between pork (uncivilised) and civilization. She precisely points to the ways in which the meaning is segregated through separation of civilization which is distinct from animality. The very distinctive feature is closely observed through various taboos and symbolic forms which play a binary opposition between civilization and barbarism. 'Piggishness' is considered to be a stigma of uncivilized and it is psychological aberration which leads to anxiety and danger. The structuralist attempts to theorize the places of power and differentiate them culturally. For structuralism, the meaning is produced through the systematic generation of difference and the separation of self from the other. To explain this hypothesis of a system of difference has been used within the food cultural studies.

It seems that there is no connection between food and eating and it is also difficult to establish the uses of food but it has its own deep rhizomatic logic. The frame of eating juxtaposes the near and the far, the individual and the social, the natural and the cultural. Food determines the identity of a society. If one changes the food practice according to the place where he inhabits, he feels inferior that he loses grip over his own home culture. It also disturbs him to feel that the new food practice is a stigma on him. As eating revives the force of identities and enables the cultural mode of analysis that is conscientious with the familiar sex, wealth, ethnicity, poverty, geopolitical location, class and gender. It always matters with its actual bodies within the relations. Then it becomes a congenital token of how one can inhabit the axes of economics, intimate relations, gender, sexuality, history, ethnicity and class. It matters not only what to eat but also equally when, how, and with whom to eat has formed a stable and moral formation of identity.

Nurdin's impulsive friend Nanji reminds him that"once you've had it, the first time, tasted the taste so distinct you can- not cheat yourself, you are no longer the same man: something has turned inside you, with a definite click" (*NNL* 129). The Gastronomic preference has an intense ontological implication that not only distinguishes the Shamsi immigrants from the Canadians, but also symbolizes the process of estrangement that Nurdin undergoes an attempt to achieve a spiritual crossing from one land to another. Actually, it is to crouch behind the celebration of eating and food to considerations of some of the menacing thematic that arises in eating. The nullifying point is that eating is both pleasurable and painful, boring and stimulating, a luxury and a necessity one. Conclusively, it is the ways in which eating reveals oneself at the most vulnerable, hungry, solitary and needy, as it simultaneously brings us together in combinations of commensality**.** Eating pork symbolizes that altogether a man kind completely changes to another kind like a transformed man, almost a beast.

Nurdin's communal death does not mean that all the Shamsi immigrants in Toronto recognize the fact of their dislocation. In fact, many immigrants make a complex attempt to recreate in Toronto the social texture and material cultures of their past African lives and a strategy of social facsimile which contradicts their desire to find a new space in Canada. For better understanding, Zera, Nurdin's wife, invites one of the old Muslim priests from Dar es Salaam, who is simply named as Missionary so that he may help the Shamsi immigrants survive what she considers the heathen environment of

Toronto. Zera's mission of spiritual resumption is accompanied by the immigrants' compulsive transfer of cuisines from their African homelands to their new Canadian homes. Nurdin and his family live in the apartment block and are described as:

Whatever one thinks of the smells, it must be conceded the inhabitants of Sixty- nine eat well. Chappatis and rice, vegetable, potato, and meat curries cooked the Goan, Madrasi, Hyderabadi, Gujarati, and Punjabi ways, channa the Caribbean way, fou- fou the West African way. Enough to make a connoisseur out of a resident, but a connoisseur of smells only because each group clings jealousy to its own cuisine. (*NNL* 65)

Food aromas in *No New Land* are meant for the firm occupation of space by immigrants. To inculcate the air of a city to which one has newly arrived with the fragrance of another land is to state that one will belong in the city in one's own terms and not slavishly do as the Romans do. However, the immigrants in *No New Land* are those who yearn for belongings in terms to set for the "hosts" and hence who "There are those, usually immigrants, who find the smells simply embarrassing" (*NNL* 64). Those immigrants' transplantation of cultural belongings by the Shamsis is a hindrance to social assimilation which is against the ultimate cultural autonomy.

The concept of cultural argument in the novel explains that the immigrants' obsession with cultural conversation is itself a sign of their radical displacement. The migrant communities however tried to recreate Dar es Salaam in Toronto through the Indian East African cuisines, is not the same. "their Dar, however close they tried to make it to the original, was not quite the same." Thus, Vassanji explores the immigrant's mind through the aspects of material culture- food and the consumption in multicultural contexts. It is the food that always means to access the history and reveals that people will slowly adapt to the argument that migration is a one way trip and there is no home to go back.

Works Cited:

Fisher, M. F., and Joan Reardon. *The Art of Eating*. Houghton Miffli Harcourt, 2004. P 75.

Vassanji, M.G. *No New Land*. Emblem Editions, 2012.

Probyn, Elspeth. Carnal Appetites: Food Sex Identities. Routledge, 2003. P 11.

❒❒❒

1. Ph. D., Research Scholar (Full Time), PG & Research Department of English, Government Arts College (Autonomous), Salem-07. Email: ggokulanandhini@gmail.com

2. Associate Professor, PG & Research Department of English, Government Arts College (Autonomous), Salem-07. Email: t.alagarasan2324@gmail.com

Consequences of Economic Power : A Study of the Selected Novels of Chitra Banerjee Divakaruni

–Priyanka
–Dr. Anu Shukla

The highest degree of satisfaction in incongruent circumstances can be seen in the case of Draupadi from* The Palace of Illusions. *The precise utilization of power has been done by Draupadi. Even in absence of sources, she puts all her efforts to help the females of Hastinapur. When one puts extraordinary efforts for others selflessly, it is not the benefit that is involved in the task rather these are the personal emotions of the doer that are involved.

Power is myriad when it is studied intensively as it has innumerable aspects. The more one studies the more aspects one becomes aware of. Power is a word which has infinite connotations and can be understood differently in different contexts. It has been studied, analyzed, and comprehended by researchers as well as critics all over the world. It has been a widely chosen topic for research as well as in general discussions. Researchers discuss various aspects and types of Power, but the consequences of Power have rarely been studied or discussed. The paper is a sincere attempt to look into the consequences of Economic Power. Delving into the works of Chitra Banerjee Divakaruni in context of Economic Power with the lenses of Theory of Congruity features consequences that will be explored in this paper.

Key Words: Economic Power, Theory of Congruity, Expectations, Actuality, Positive Incongruity, Positive Congruity, Negative Congruity, Negative Incongruity, Satisfaction, Dissatisfaction.

"Power is ability to do something; strength, force; vigour, energy; ability to control or influence others, ability to impose one's will… (qtd. in Clegg) according to *The Penguin English Dictionary.* Power in an individual is the strength that can take him/her even towards seemingly impossible actions. But even in an individual, power has different facets. If a person is utilizing his power, then it is the positive facet of power but on the flip side, if the same power compels an individual to hurt others, to do immoral acts and to become a criminal then it is the negative facet of power. Sometimes, a person is seen in dilemma because of his inability to decide which facet of power he should adhere to. So, even in an individual, power

has two sides, one which inspires one to bring positive outcomes by utilizing it and the other which takes one towards crimes, darkness and immorality. Itayi Garande states "You are free to the choice that you want, but you are not free from the consequences of that choice" (www.goodreads.com). Every action has consequences according to the choices one makes for the execution of the action. Likewise, exercising any type of Power has specific consequences.

M. Joseph Sirgy in his Theory of Congruity throws light on both the sides of any action done by any human being in an intense manner. According to Sirgy, there are four types of congruity: Positive Incongruity resulting into the highest degree of satisfaction, Positive Congruity resulting into moderate satisfaction, Negative Congruity resulting into moderate dissatisfaction and Negative Incongruity resulting into the highest degree of dissatisfaction (qtd. in Meadow 28). "…satisfaction is measured within our mind on a continuous scale ranging from completely dissatisfied to completely satisfied" (Praag 2). But satisfaction as well as dissatisfaction has some parameters. Sirgy depends on two major parameters to differentiate among these types of congruity including "expectations" and "actuality".

Economic Power is one of the branches of Power which is not merely necessary to survive but also for the growth and the development of a person, nation and world. Economic Power is the power that "… avails itself of the possession of certain goods…" (Poggi 20). Economic Power deals with materialism. The novels of Chitra Banerjee Divakaruni depict various types of power and Economic Power is one among them. The cases of Sudha from *The Vine of Desire*, Korobi and Seema from *Oleander Girl* and Draupadi from *The Palace of Illusions* are based on their different types of need. Sudha, after leaving Anju's house, looks for a job that can fulfill her basic needs. She does not indulge in any immoral act or any shortcut to have money rather she earns it through her efforts and hard work. Her expectation from her job is merely to have meals and shelter for herself and her daughter. Her needs are finite with low expectations. Expectations are low because of the circumstances that she has to face being alone in a foreign country. Sirgy, in his Theory of Congruity, apparently states that the highest degree of satisfaction can be achieved when one has low expectation (qtd. in Meadow 28). In case of Sudha, her needs are basic. She never demands anything other than food and shelter. She does all the household chores and also takes care of the old man for whom she is kept at the job of caretaker. The old man behaves with her in the worst possible manner. She tolerates his behavior without complaining about it as she needs to fulfill her basic requirements. Being a single woman in a foreign country where she does not know anyone other than her sister Anju, Sudha's expectations can be estimated as dark and negative. The most satisfactory condition according to Sirgy is when negative expectation turns into positive outcomes:

> Sirgy argued that the highest degree of satisfaction will be experienced under a positive incongruity condition, followed by positive congruity, negative congruity, and negative incongruity. For example, an individual judging his/her actual life circumstances is predicted to experience the highest degree of life satisfaction if there is a perception of low expectation life accomplishments and the individual perceives that he/she has exceeded his/her expectation. (Meadow 28)

Sudha has the lowest expectation of getting any job in absence of probabilities. A person who has no idea about the next street in a foreign country cannot expect to find a job with ease. Moreover, different language, unexplored country and no social connections decrease the possibility of having any expectation. Sirgy avers it the highest degree of satisfaction when someone exceeds low expectations one has (qtd. in Meadow 28). Satisfaction of Sudha with her job can be observed in her efforts that she puts for the old man happily. She gets to fulfill her basic needs when she has no expectation. "Wealth consists not in having great possessions, but in having few wants" (Epictetus 87). Hence, she feels completely satisfied even with the least she gets.

Korobi resembles Sudha as she also needs money to make her ends meet when she is in a foreign country. When she spends all the money in search of her father, it becomes impossible for her to spend even a day. She cannot even look for a job while staying in America because she devotes all her time in finding her father. She needs money for the fulfillment of her basic needs and to pay the charges of the detective who is looking for her father. Her situation becomes worse than Sudha as she is not even in condition to earn by doing a job. Her expectations of earning are lower than Sudha and that is why when she gets a chance to earn, she does not pay attention to what she is going to compromise in return. Her need is the most urgent one and it is apparently visible in her act of selling her hair as no one can take such step out of greed or something unnecessary. Her need amidst the lowest expectations turns into the highest degree of satisfaction when she ultimately gets money and meets her father after a couple of days. Dana L. Alden throws light on incongruity in general when he discusses about television advertisement, "the degree of "stimulus schema" incongruity can be viewed as the extent to which ad content differs from generally expected beliefs, attitudes and/or behaviors" (2). He concentrates on the difference between expectations which are based on general beliefs and attitudes and the actual activity that takes place (advertisement in case of Alden). The degree of Incongruity gets higher with the higher difference between expectations and actuality. If the difference decreases lower than expectations, it is Negative Incongruity and if the difference

increases more than expectations, it takes form of Positive Incongruity. In case of Korobi, when she does not have any hope of earning, she gets money to fulfill all her requirements which is the case of Positive Incongruity because the difference between the expectations and the actuality is high. The satisfaction is nonpareil when one faces abundant obstacles to surpass the difference between expectations and actuality to achieve the target.

Satisfaction and dissatisfaction are always a matter of sufficiency and insufficiency as it can be noticed in the deeds of Mr. Bhattacharya from *Oleander Girl* who is a politician as well as economically powerful persona. In the bollywood movie *Aamdani Atthani Kharcha Rupaiyaa*, the character played by Johnny Lever states, "…money has value, everything else is a catch… (translation mine)" and Johnny Lever represents Mr. Bhattacharya in this context. The family of the Boses puts their finest efforts to impress Mr. Bhattacharya so that he can help them in promoting business, but Mr. Bhattacharya asks for fifty percent partnership in place of helping them. He does not value his contact with the Boses rather he focuses on his financial benefit. Economic Power, in case of Mr. Bhattacharya, is based on greed as it does not suffice him no matter how much money or economy he has. His tricks to enhance Economic Power put him in contrast to Sheikh Rehman because Bhattacharya cannot feel satisfied even if he gets all the property of the Boses. He already has abundant and his efforts to have more is merely based on his greed and it falls into the category of "expectations based on significant others" (Meadow 29). He is a political leader and so is his thought process as he does not estimate about the declining condition of the Boses. His only concern is his benefit. He wants more Economic Power so that he can impress the people and can earn more voters. His investment in people is also based on his greed to win election. In a nutshell, his purpose is to show himself better than his competitors. His efforts are to defeat other leaders who can be better than him as one needs to put extra efforts only when one does not have quality. The actual quality does not need pretensions that Mr. Bhattacharya needs to befool the innocent voters. He represents the apparent misuse of power and how it keeps on turning into insufficiency and dissatisfaction.

"Congruity is often first conceptualized as a dichotomous variable (congruent vs. incongruent situations)" (McLaughlin 2). This is a clear indication towards circumstances. If a person performs in congruent circumstances, the consequences can be Positive Congruity or Negative Congruity. The performer cannot be highly satisfied or highly dissatisfied with the consequences. But if the performer performs in incongruent circumstances, the consequences will be highly satisfactory or highly dissatisfactory. The highest degree of satisfaction in incongruent circumstances can be seen in the case of Draupadi from *The Palace of Illusions*. The precise

utilization of power has been done by Draupadi. Even in absence of sources, she puts all her efforts to help the females of Hastinapur. When one puts extraordinary efforts for others selflessly, it is not the benefit that is involved in the task rather these are the personal emotions of the doer that are involved. Having fruitful and colorful consequences of the task being started from scratch needs abundant efforts and such hard efforts can be consequences only of one's emotions. When she observes the condition of the widows in the kingdom, she realizes that she needs to help them primarily because she can imagine the future with existing realities and secondly because she feels connected to the females based on her past experiences, "Men would appear from nowhere claiming to be relatives and take control of the family fortunes. The women became unpaid servants…It was a terrible situation… I knew how it felt to be helpless and hopeless" (Divakaruni *TPI* 277).

Therefore, her expectations from herself can be put into the category of "expectations based on what one predicts will occur" and "expectations based on past experience" (Meadow 29). In absence of the correct guidance, the male relatives from the neighborhood start misguiding the widows and this can lead to the loss of properties that the widows have. She predicts the loss of property not because she doubts the widows rather, she is aware of the innocence that females have. Other than this reason, her past experiences as a female is another reason that compels her emotionally to belong to the females. The insult done by the Kauravas reminds her that females are merely to be objectified because if her husbands can see her insult and still their blood remains cold then the male relatives of the widows are no one to think good for them. These are the primary expectations that are based on her past and these expectations lead to the expectations based on prediction. These expectations are certainly bad expectations and these expectations are termed by Sirgy as negative expectations (qtd. in Meadow 28). Draupadi's efforts based on these negative expectations are the part of positive incongruity as these negative expectations are contrary to the actuality. She uses such negative expectations as strength and turns the negativity into fruitful consequences. She vindicates what Sirgy states in Theory of Congruity. Satisfaction is the only outcome of Draupadi's efforts to have Economic Power in order to help the widows.

"Negative incongruity i.e., an object/person/event perceived as highly discrepant from positive expectation" (Meadow 28). The Boses put efforts with positive expectations that they will get support of Mr. Bhattacharya in establishing their business which is on the edge of declination. Making a good impression on Mr. Bhattacharya can give their gallery back to them and additionally the political influence that they can get will work as a bonus because people usually notice

the people in limelight. They follow famous personalities from politics, cinema and other public figures. Therefore, the expectations are getting back Park Street Gallery and having more customers in the influence of Mr. Bhattacharya. The expectations are high as well as positive. According to Sirgy's Theory of Congruity, positive expectations are either linked to Positive Congruity or Negative Incongruity (qtd. in Meadow 28). In Positive Congruity, the actuality is the same as positive expectations. The Boses' expectations, in spite of being positive, do not seem to meet the reality. So, the case of the Boses cannot be put into the category of Positive Congruity. Second type of congruity that deals with positive expectations is Negative Incongruity. Incongruity where actuality is highly different from positive expectations is Negative Incongruity and in case of the Boses, the expectations are highly positive, but the expectations have no link to their consequences in reality. The way they expect the favour from Mr. Bhattacharya and they get nothing from him vindicates Negative Incongruity. When reality is different or highly different from the expectations one gets sheer dissatisfaction. The Boses also feel dissatisfied when Bhattacharya, in place of helping them, asks for fifty percent partnership in their business. So, the efforts of the Boses to have Economic Power turn into sheer dissatisfaction.

"…he/she will experience the lowest degree of satisfaction (or the most dissatisfaction) given a comparison between a high expectation and low actuality" (Meadow 28). Negative Incongruity that is apparently visible in the Boses' actions always results into the lowest degree of satisfaction or it can be said that the outcomes of Negative Incongruity are the most dissatisfactory ones because of the difference between positive expectations and actual outcomes. Another character whose efforts result into dissatisfaction is Mitra. Mitra, caretaker of the Boses' business in New York, gets his salary for managing their business but he does not find that amount sufficient. He tries to get more Economic Power by using or misusing that money in gambling and consequently he loses everything in gambling. His expectations as a gambler are to have abundant benefit from it. He invests not merely the money he gets from the Boses rather he puts on stake precious paintings from their gallery in New York and lies to them. He does not limit himself to gambling rather he tries every way to have money from the Boses as well. When he comes to know about Korobi's father who is an African, he tries to blackmail Mr. Bose in New York. The Boses, being significant faces in India, need to save their image as they cannot bring a girl to their house who is an offspring of two different races. Mrs. Bose's words define the actions of Mitra as a highly greedy human being. "What do you mean, Mitra's trying to blackmail us about Korobi's father?" she asks her husband. "Has he gone crazy? He knows he'll go to jail if the police get hold of him, so now he's clutching at straws?" (Divakaruni *OG* 262). Mitra's efforts to be wealthy result only into self-destruction

and dissatisfaction as Mr. Bose files a case against him for blackmailing them and for selling the painting from the gallery in New York. This is how his Positive expectation to enhance the wealth he has results into actuality that is completely different from his expectation.

The consequences of Economic Power can be concluded with two types of congruities, and these are Positive Incongruity and Negative Incongruity. The cases of Sudha, Korobi and Draupadi fall into the category of Positive Incongruity as they are the characters who achieve the highest degree of satisfaction through Economic Power. All these characters face the worst circumstances but still fight with the circumstances and achieve far more than their expectations. This is how they belong to the category of Positive Incongruity and experience the highest degree of satisfaction. On the flip side, the cases of Bhattacharya, the Boses and Mitra belong to the category of Negative Incongruity. They keep high expectations, but the expectations turn into disappointment leading to the category of Negative Incongruity. The highest degree of dissatisfaction is faced by these characters in case of Economic Power. These characters' efforts to have Economic Power turn into sheer dissatisfaction as the root behind their efforts is greed.

Works Cited

Aamdani Atthani Kharcha Rupaiyaa. Dir. K. Raghavendra Rao. Annapoorna Studios, 2001. Film.

Alden, Dana L., et al. "The Effects of Incongruity, Surprise and Positive Moderators on Perceived Humor in Television Advertising."*Journal of Advertising*, Vol 29, No. 2. Summer 2000. DOI: 10.1080/00913367.2000.10673605.

Clegg, Stewart. *Power, Rule and Domination*. Routledge, 2013.

Divakaruni, Chitra Banerjee. *Oleander Girl*. 2nd ed. Penguin Random House, 2014.

---*The Palace of Illusions*. Picador, 2008.

---*The Vine of Desire*. 2nd ed. Abacus, 2003.

Epictetus. *The Philosophy of Epictetus: Golden Sayings and Fragments*, edited by Janet Baine Kopito. Dover Publications. 2017.

McLaughlin, Caitlin Michelle. *Congruity Theory: The Relation between Context Type and Advertising Appeal*. 2009. Michigan State University, Dissertation. https://books.google.co.in/books?id=trm_HQnCn4AC&newbks=1&newbks_redir=0&printsec=frontcover&dq=theory+of+congruity&q= theory+of+congruity&hl=en&redir_esc=y.

Meadow, H.L. "A Life Satisfaction Measure Based on Judgment Theory." Social Indicators Research, Vol. 26, No. 1, Feb.1992, pp. 23-59.

Poggi, Gianfranco. *Forms of Power*. Blackwell Publishers, 2001.

Praag, Bernard Van, and Ada Ferrer- Carbonell. *Happiness Quantified: A Satisfaction Calculus Approach*. Oxford University Press, 2008.

❏❏❏

---

1. PhD Scholar, Email : priyankanain7@gmail.com
2. Professor, Department of English & Foreign Languages, Chaudhary Devi Lal University, Sirsa, Haryana Email : anushukla@cdlu.ac.in

Research Article

"Fountain of Emotions in Female Voice"-An Analysis of Chitra Banerjee Divakaruni's Select Works

–A. Akthar Parveen
–Dr. P. Kumaresan

Here as Anu's lover was an Afro- American, she was pressurized by her father not to marry him. As Bimal Roy, Anu's father feels that his social status will be collapsed if Anu marries an Afro-American he is not allowing her to marry. He feels the racial inferiority. Anu symbolizes helplessness. Anu who got the freedom of going abroad for studies but she didn't get the freedom of marrying Afro-American. She was not able to marry him even though she was pregnant.

Emotions play a vital role in human life. They differ from person to person depending on the thoughts, feelings, memories, behavioural responses and the degree of pleasure or displeasure. Diasporic emotions include fear, depressions, loneliness, stress and cultural trauma. The prolific writer Chitra Banerjee Divakaruni's themes include alienation, nostalgia, discrimination, feminism, modernism, east-west conflict multiculturalism; identity crisis, human relationship etc are analyzed and examined by various researchers from different point of view. This paper is our sincere attempt to discuss various emotions of the female protagonist of Chitra Banerjee Divakaruni's works and we take immense pleasure to point out the feelings of Diaspora from female point of view. This paper focuses on Chitra Banerjee Divakaruni's popular first collection of short stories *Arranged Marriage* (1995) and the novel Oleander Girl (2013).

Key words: Emotions, Oleander Girl, Arranged marriage.

Emotions play a vital role in human life. They differ from person to person depending on the thoughts, feelings, memories, behavioural responses and the degree of pleasure or displeasure. Brody and Hall (2008) report that women generally smile, laugh, nod and use hand gestures more than men do. The only known exception to this rule is that men more frequently express anger. However, all of these effects are not commonly observed until after preschool, suggesting that these differences might be the result of certain socialization processes.[3] Women are also more accurate at expressing their emotions, when "posing deliberately and when observed unobtrusively."

Gender differences result from socialization. It is society and social laws that frame a set of cultural expectations for each gender and children are taught to conform to what society expects. *Oleander Girl* apparently presents such social issues and social and gender awareness in creating identity. The characterization of Sarojini, Anu and Korobi shows the various emotions like identity crisis, discrimination, struggle, sufferings and human relationship.

Korobi's identity is entangled with the reputation of the family and the good old family name. She finds herself worthless when she knows the true identity of her father and her racial inferiority considered by Indians, being the daughter of an African American man because she enjoyed and admired her status of being the granddaughter of the Roys and also being the fiancée of the most desired and the richest man of the town. She is taken aback when she discovers the secret of her family about her father who is not an Indian but an Afro-American. It is a great shock for Korobi to learn from her grandmother Sarojini that her father was not an Indian, a foreigner, not a lawyer and that he did not die in a car accident. Anu her mother, was in love with him during her stay in America when she had been there for higher studies on a scholarship. Anu wanted to marry that man who also loved her dearly but did not get the permission from her father Bimal Roy. Anu had to come back in hope of getting her father's consent but she was already carrying Korobi then. Though she tried all possible ways of convincing her rigid, conservative father, it was all futile. In a rage of arguments she slipped from the staircase and started bleeding. That is how she died in the hospital giving birth to Korobi. It was a severe heartbreak for Bimal Roy and Sarojini losing their only loving child in front of their eyes and the only light of hope for them to survive was the newly born baby, Korobi whom they would not lose at any cost and who was the only one to tie Anu with them. Bimal Roy took a promise from Sarojini in their temple not to reveal these facts to any one not even to Korobi as she grows or to leave him for good, which again reveals patriarchal attitude and strong desire of cultural and traditional clutch in Bimal Prasad Roy's psyche.

Here as Anu's lover was an Afro- American, she was pressurized by her father not to marry him. As Bimal Roy, Anu's father feels that his social status will be collapsed if Anu marries an Afro-American he is not allowing her to marry. He feels the racial inferiority. Anu symbolizes helplessness. Anu who got the freedom of going abroad for studies but she didn't get the freedom of marrying Afro-American. She was not able to marry him even though she was pregnant. Here sufferings and indirect social pressure is vividly picturised.

In spite of being adorable darling of grandparents, Korobi muses over her mother and meaning of her own self and her name given to her by her mother. The Oleander, Korobi's namesake, is a beautiful but poisonous plant, and it is discovered that Korobi's mother gave her the name because she wanted her

daughter to be able to protect herself from predators. Korobi again expresses her confusion in front of her father why she has been named on poisonous flowers, which is hardly very popular. Korobi asked her father,

Did my mother ever tell you why she wanted to name me Korobi?" Her father tells her the reason: "She did actually, because the Oleander was beautiful—— but also tough. It knew how to protect itself from predators. Anu wanted that toughness for you because she didn't have enough of it herself. (253). The protagonist Korobi in the novel *Oleander Girl* starts her adventure to find her bicultural identity through her quest to find out her unknown father in an alien country. The whole story revolves around Korobi's quest for identity and her struggle to fix her identity in totally unacceptable social conditions. Here social identity and ethnic identity is a big question mark for her.

"My characters surprise me all the time," says prolific author Chitra Banerjee Divakaruni. Going on to describe the main character of the book Oleander Girl, Korobi, Chitra Banerjee says:

She's this really young and sheltered girl who has grown up with her grandparents in this really old and traditional house. I wanted her story to be about how we find courage within ourselves when the world throws at us that is unexpected and new.

The book itself is a story about the toxicity of family secrets and the importance of communication. A lot of times, the secrets are secrets because of the shame that is associated with it. This is when everything goes wrong; when we start worrying about what society thinks rather than what the family understands.(Brown Girl Magazine, March 18,2013)

As interviewed by DeRosa, chitra Banerjee was asked about using this particular flower and its importance in the story, she replied as: "The oleander seemed to be the perfect symbol for the book on many levels. It is ambiguous, positive and negative, beautiful and dangerous —and hardy, capable of protecting itself. It is central to the mystery of the protagonist Korobi's mother Anu, because Anu (dying at childbirth) chooses to name her daughter after this complicated flower. A question that drives the novel is why Anu chooses to name her daughter Korobi after this flower. Why not Rose or Jasmine or Lily, as is more common? It is also a flower that grows in both India and America, connecting the two worlds through which the novel and our protagonist travel".

Short stories are the effective examples of how the different genders, view from their prospective and represent their own world. Divakaruni's 'Arranged Marriage' (1995) is a collection of eleven short stories; basically she talks about women in India and America. She depicts women's plight, condition and their existence, search for identity, discrimination, hybridization of culture, stereotype of tradition and the struggle for survival. In Arranged Marriage,"Clothes","Silver

Pavements, Golden Roofs" and "ultrasound "are the three short stories are taken for analysis. In Clothes-short story, Clothes play a major role in the story, exquisite saris from India, bold dresses from America, symbolizing the strengths and weaknesses of each culture. From wearing pink, blue, red and orange - the colours of transition, possibility, marriage and new beginnings, Sumita is forced to wear white - the colour of widowhood. But, Sumita's final choice of wearing a long flowing skirt gifted by her husband proves that she has been able to synthesize the best in both cultures. Divakaruni also offers a poignant glimpse into how cruel Indian society can be to widows, so heartless that death becomes an attractive option when compared to life. Sumita's choice to live and to live on her own terms is heroic -

> ... I cannot go back. I don't know yet how I'll manage, here in this new, dangerous land. I only know I must. Because all over India, at this very moment, widows in white saris are bowing their veiled heads, serving tea to in-laws. Doves with cut-off wings. ... I tilt my chin, readying myself for the arguments of coming weeks, the remonstrations. In the mirror, a woman holds my gaze, her eyes apprehensive yet steady (Arranger Marriage 33).

'Silver Pavements, Golden Roofs', the next story, gives expression to the desires and ambitions of Jayanti, a young girl from a conservative Bengali family who wins admission to the University of Chicago. She is excited by the glitter of the first world and immensely relieved to escape from the terror of an arranged marriage. . Reduced to poverty by racist violence, Jayanthi's uncle Bikram is a frustrated man. Aunt Pratima is a woman whose beauty and talent are wasted and who is not allowed to step out of her house by her husband who fears she may be attacked by racists.

The open-minded American society permits certain liberties to the women, but their traditional mindset doesn't allow them to enjoy. Pratima obeys the words of her husband. Almost all the immigrants who immigrated from Indian to America face the clash of opposing cultures, a feeling of alienation which is followed by the attempts to adjust, to adapt and to accept. This story presents two contrasting views of America and suggests that reality is a mixture of the good and the bad. While Jayanti visualizes America as a magic land with silver pavements and golden roofs, her uncle Bikram calls America a witch who pretends to give and then snatches everything back. Even after the ugly racial attacks Jayanthi feels that the land is a mixture of both good and bad. She feels the same even after the bitter reality.

> " It is snowing. I step outside onto the balcony, drawing my breath in at the silver marvel of it, the fat flakes cool and wet against my face as in a half-forgotten movie. ... The snow has covered the dirty cement pavements, the sad warped shingles of the rooftops, the rough noisy edges of things. I hold out my hands to it, palms down, shivering a little. The snow falls on them, chill, stinging all the way to the bone. But after a while the excruciating pain fades .....the snow has covered my own hands so they are no longer brown

but white, white, white. And now it makes sense that the beauty and the pain should be part of each other (Arranged Marriage 55,56).”

This story “The Ultrasound” is basically set in India touched various issues of women in their married lives such as abortion, violence and gender biased lenses are very crucial issues of Indian society. The central character of story is Runu who belong to conservative traditional Indian family suffered lots of problem because of her In-laws and her rigid husband. In her family, in-laws and her husband forced her to go through ultrasound to know whether is there girl or boy child in her womb but she is rejects due to love for unborn baby. She is curious about as she wants to give birth of child. The issue of sexual harassment and women’s relationship with their husbands as well as with other people in new surroundings has been aptly illustrated.

She has one friend who lives in California. They were always talking on telephone, tells her family gossips. “They want to kill my baby.”... They want me to have an abortion.” Divakaruni has condemned Indian society for such kind of activities and the mindset of patriarchal society who always curious about male child. Her in-laws with her husband forced to do what they want but her husband fails to convince her. After that she decides to leave her husband’s house forever “Just in case I decided not to go back” (Arranged Marriage). In this way, women should defense themselves from such attack which forces them to participate in criminal activities. Here Charles Darwin’s theory of “Survival of the fittest” aptly used for the conclusion. This is a great message of Divakaruni’s story to not only Indian but also all women of the world.

References:

1. Brown Girl Magazine ,March18, 2013. An interview with Author: Chitra Banerjee Divakauni
2. Brody, L. R.; Hall, J. A. (2008). “Gender and emotion in context”. Handbook of Emotions. 3: 395–408.
3. Diasporic Feminism and Locating Women in Chitra Banerjee Divakaruni’s Arranged Marriage Bhagyashri Shrimant Pawar-.Global Research Forum on Diaspora and Transnationalism March2019.
4. Diaspora and Feminism in Chitra Banerjee Divakaruni’s Arranged Marriage.-Rositta Joseph Valiyamattam. “, (*LITERARIA*: An International Journal of New Literature Across the World - Special Issue on Indian Diaspora, Vol. 3, No. 1, Jan-Jun 2013, pp. 24-40).
5. Divakaruni, Chitra Banerjee. (1997). Arranged Marriage. London:Black Swan.
6. Divakaruni, Chitra Banerjee Oleander Girl. Penguin books India.2013.Print2
7. ”Interview with the author of Oleander Girl” DeRosa,Debby. March28,2013.Web 25th January2014.

❑❑❑

1. PhD Research Scholar, P.G and Research Department of English, Sudharsan college of Arts and Science, (Affliated to Bharathidasan university, Thiruchirappalli), Perumandu-622104
2. Associate professor& Research Advisor, Sudharsan college of Arts and Science, (Affliated to Bharathidasan university, Thiruchirappalli), Perumandu-622104

Research Article

Cross-Linguistic Influence in French phonology acquisition: Learning experiences of Malayalam speaking students in Coimbatore

–Anuja Koothottil
–Dr. Jeevaratnam G

The recent trends of globalization has led us to live in a highly virtual world where being a polyglot has become particularly relevant from a cosmopolitan perspective. Young professionals and students are rushing to acquire foreign languages (L3) so as to enhance their career opportunities and to attain universal citizenship.

The recent trends of globalization has led us to live in a highly virtual world where being a polyglot has become particularly relevant from a cosmopolitan perspective. Young professionals and students are rushing to acquire foreign languages (L3) so as to enhance their career opportunities and to attain universal citizenship. Studies on third language acquisition (TLA) are developing continuously, owing to the growing interest in multilingualism. While assisting the new learners of French, we noticed that our Malayalam speaking learners of French often have the tendency to commit certain pronunciation errors. Thus from here, we arrived at the fundamental research question - to what extent the learners' L1 (Mother tongue-Malayalam)and L2 (English) influence the acquisition of L3 (French), in terms of pronunciation. Also we wished to study the recurrent pattern of phonological errors committed by the learners. The study is based on the assumption that there is a close association between antecedently known languages and the newly learning language, and that some features are transferable between these languages. Fifteen Malayalam speaking learners of French were invited as participants to the study using a random sampling method. At the time of study, they were learners of French as a third language, at the elementary level in Nirmala College for Women, Coimbatore, Tamilnadu, India. The participants were asked to read out selected French words and phrases individually and the process was recorded and analyzed. They were transcribed using the International Phonetic Alphabet to understand the learning difficulties vis-à-vis the pronunciation of the newly acquired French language. Results demonstrate that the learners have certain difficulty in pronouncing French vowels that are absent in their L1 and L2

phonology. Further, the learners exhibit pronunciation errors which occur due to the influence of their previously acquired languages.

Key words: L3 acquisition, phonological errors, pronunciation difficulties, L1 interference

1. Introduction

The recent trends of globalization has led us to live in a highly virtual world where being a polyglot has become particularly relevant from a cosmopolitan perspective. Young professionals and students are rushing to acquire foreign languages (L3) so as to enhance their career opportunities and to attain universal citizenship. Nevertheless, these youngsters face challenges to reach the required international proficiency; the cross-linguistic influence being one of the major concerns. Consequently, we find contemporary research and empirical investigations in the field of cross-linguistic influence and its effects on TLA (Third Language Acquisition) are gaining momentum. De Angelis (2007) defines cross-linguistic influence as the influence of prior linguistic knowledge on the production, comprehension and development of a target language.

In spite of the explorations on the typological distance and the second language (L2) status factor, there exists a huge research gap in the amount of investigations done on cross-linguistic influences of Indian languages on French L3. Though there are several studies carried out in the domain of SLA (Second Language Acquisition) and influences of Malayalam (L1) on English (L2), it is observed that only a few investigations are conducted in French (L3) involving Malayalam (L1) and English (L2). Hence the current study examines the impact of cross-linguistic influence on adolescent/ adult non-native TLA of French phonology in the Indian context, precisely the case of Malayalam (L1), English (L2) speakers learning French (L3) in Coimbatore.While assisting the new learners of French, we noticed that our Malayalam speaking learners of French have often the tendency to commit certain pronunciation errors and so the aim of this research is to discern if

- there is a recurrent pattern of phonological errors committed by the learners
- these phonological errors result from cross-linguistic influences
- the errors are linked to their L1 or to the L2 that they have already acquired in school.

However, a comprehensive study of all the factors leading to linguistic interference will definitely surpass this research.

2. Review of related literature

Cross-linguistic influence is considered as a fundamental area of study in the discipline of Second Language Acquisition (SLA)and applied linguistics since its emergence in 1950s. Uriel Weinreich's publication of 'Languages in Contact' in 1953 was a breakthrough in the field of SLA and this work discussed closely about theinterferences in language learning process. Weinreich (1953) defines

interference as "instances of language deviation from the norms of either language which occur in the speech of bilinguals as a result of their familiarity with more than one language".

Furthermore, the Contrastive Analysis hypothesis proposed by Lado (1957) has been for several decades the base for understanding the process of cross-linguistic influence. As stated by Lado (1957), "Individuals tend to transfer the forms and meanings, and the distribution of forms and meanings of their native language and culture to the foreign language and culture".

Researchers have used various terms to name this phenomena: linguistic interference (Schachter and Rutherford, 1979; Ringbom, 1987).Language mixing (Selinker, 1972; Kellerman, 1983), language transfer (Lado, 1957; Selinker, 1972; Kellerman, 1983)

2.1 L3 Acquisition

Studies on TLA are developing continuously, owing to the growing interest in multilingualism. It has been noticed that L1 as well as L2 influence L3 acquisition. Hammarberg (2001) demarks clearly L1, L2 and L3 in his quotation: "In order to obtain a basis for discussing the situation of the polyglot, we will here use the term L3 for the language that is currently being acquired, and L2 for any other languages that the person has acquired after L1."

2.2 Transfer

In TLA, the term 'transfer' is used to talk about the cross-linguistic influences that occur during the process of learning a new language. Odline (1989) describes 'transfer' as follows: "Transfer is the influence resulting from the similarities and differences between the target language and any other language that has been previously (and perhaps imperfectly) acquired".

The investigations in the field reveal various factors that lead to cross-linguistic influence. These factors vary from typological similarity between languages (Kellerman, 1983, 1995), learner's proficiency level (Kellerman, 1983; Odlin, 1989), L2 status (Jessner, 2008, cited in Byram and Hu, 2013) to recency (Hernández-Campoy & Cutillas-Espinosa 2012).

2.3 Typological distance

French and Malayalam belong to two different families of languages; French belongs to the Indo-European family of languages whereas Malayalam, mainly spoken in the state of Kerala, India is a Dravidian language. The subjects of this study have the task of learning an L3 which is typologically very far from their L1. English, a Germanic language and French, a Romance language belong to the same family of Indo-European languages. Dewaele (1998) suggests in his study that English is Germanic language with regard to basic morphosyntactic structure but can also be considered as a Romance language at a lexical level. We know that the learners of an Indo-European L3 of Non-Indo-European L1 will have a tendency to rely on his knowledge of vocabulary and structures of the Indo-European L2. (Singh& Carrol 1979).

In summary, the literature review to date validates that there is a close connection between formerly learned languages and the newly learning language, and some features are transferable between these languages. In addition, at the present time, cross-linguistic influence is considered as an essential topic of investigation in the discipline of SLA and TLA.

3. Methodology:

3.1 Participants:

The fifteen Malayalam speaking learners of French aged between 17 years to 19 years, were invited as participants to the study using random sampling method. At the time of study, they were learners of French as a foreign language, at the elementary level in Nirmala College for Women, Coimbatore, Tamilnadu, India. All participants belong to the same linguistic background of the Malayalam speaking community and some of them also have learnt French as a foreign language during their secondary education. They have completed their schooling in English medium.

3.2 Procedure:

The participants were asked to read out selected French words and phrases individually and the process was recorded through an online meeting platform. The subjects were introduced to the rudimentary of French phonology and they were asked to familiarize themselves with the words and phrases by reading them many times, prior to the recording process. Each participant had to read at a normal speed and the recordings were replayed and studied to identify the various pronunciation errors committed. They were transcribed using the International Phonetic Alphabet to understand the learning difficulties vis-à-vis the pronunciation of the newly acquired French language. Each recording was approximately 15 minutes long.

3.3 Observations:

The following observations are the recorded data scrutinized and documented based on the subjects' enunciations of the French words and phrases. The observations are made for the pronunciation of selected vowels.

3.3.1. /i/

Table 1

S. no	Phoneme	Word	Meaning	Actual pronunciation	Observed pronunciation
1	/i/	isoler	to isolate	/i.zɔ.le/	/aɪsɔle/
		psycologie	psychology	/psikɔlɔʒi /	/saɪkɔlɔʒi /
		nuit	night	/nɥi/	/nuit/

The study shows that when /i/ is in the initial or medial position of a word and followed by an oral consonant, learners replaced /i/ with /aɪ/

When phoneme/i/ is preceded by phoneme /y/ in French, the semivowel /ɥi/ is pronounced. Learners substituted /ɥi/ by phoneme /u/.

3.3.2. /e/

Table 2

S.no	Phoneme	Word	Meaning	Actual pronunciation	Observed pronunciation
2	/e/	ainé(e)	elder	/ene/	/eɪne/
		aimer	To like	/eme/	/eɪme/

If in the initial or medial position of a word, the graphemes /ai/ and /aie/ are present, the vowel /e/ is pronounced in French. The participants replaced /e/ with /eɪ/.

3.3.3. /ɛ/

Table 3

S.no	Phoneme	Word	Meaning	Actual pronunciation	Observed pronunciation
3	/ɛ/	**treize**	thirteen	/tʁɛz/	/tʁe:z/
		faire	to do	/fɛʁ/	/faɪʁ/

It was observed that the participants substituted the phoneme /ɛ/ with the phoneme /e:/ in the initial and medial position of a word.

The graphemes /ai/, /ait/, /aix/ and /haie/ are represented with the phoneme /ɛ/ in French. The participants replaced the latter phoneme with /ai/.

3.3.4. /a/

Table 4

S.no	Phoneme	Word	Meaning	Actual pronunciation	Observed pronunciation
4	/a/	madame	madam	/madam/	/ˈma.dəm/
		dates	date	/dat/	/deɪts/
		moi	me	/mwa/	/mɔɪ/

In words in which the letter 'a' has to be pronounced as phoneme /a/, it was noted that the participants replaced it with phoneme /ə/. It was also observed that in certain words were phoneme /a/ has to be pronounced; participants substituted it with phoneme /eɪ/. When the graphemes /oi/ occur in a word, it is represented by the phonemes /wa/. Nevertheless it is perceived that the participants wrongly pronounced the graphemes /oi/ as /ɔɪ/.

3.3.5. /ɔ/

Table 5

S.no	Phoneme	Word	Meaning	Actual pronunciation	Observed pronunciation
5	/ɔ/	pomme	apple	/pɔmə/	/pomə/
		école	school	/ekɔl/	/ekol/

It was also perceived that the participants often replaced / ɔ/ with /o/. It was the most frequent pronunciation mistake by the learners.

3.3.6. /y/

Table 6

S.no	Phoneme	Word	Meaning	Actual pronunciation	Observed pronunciation
6	/y/	tu	you	/ty/	/tu/
		rue	street	/ʁy/	/ʁui/

Further, it was observed that the participants tended to substitute the phoneme /y/ with /u/.

3.3.7. /ø/

Table 7

S.no	Phoneme	Word	Meaning	Actual pronunciation	Observed pronunciation
7	/ø/	bleu	blue	/blø/	/blju:/
		feu	fire	/ fø /	/fju:/

When the phoneme /ø/ is present at the final position of the word, it is observed that this phoneme is usually replaced with /u:/.

3.3.8. /œ/

Table 8

S.no	Phoneme	Word	Meaning	Actual pronunciation	Observed pronunciation
8	/œ/	seul	alone	/sœl/	/sɛl/
		sœurs	sister	/sœʁ/	/sɛʁs/

It is noted that the participants substituted the phoneme /œ/ with the phoneme /ɛ/, occasionally.

4. Analysis and discussion:

As anticipated, the participants did not encounter difficulty in pronouncing certain vowelsowing to the fact that these phonemes exist in the learners' L1phonology.

However, it is very evident that 80% of the subjects failed to distinguish the differences between /ɥ/ and /u/, /ɔ/ and /o/, /ɛ/ and /e/, /œ/ and /ɛ/, /y/ and /u/. They have the tendency to substitute the phoneme /ɔ/ with /o/ and the phoneme /y/ with /u/.

Additionally, learners, influenced by English L2, often pronounced all the graphemes in the word, articulating also the /s/ which is used as a plural marker in nouns. Since the participants were asked to read out the words and phrases, it was noted that they wrongly pronounced certain graphemes and digraphs. This difficulty could be due to the complex nature of the French graphemes wherein

a single phoneme can be represented by various graphemes and their combinations and also due to the fact that in the learners' L2, these graphemes represent different sounds.

5. Conclusion

Recent researches on acquisition of languages focus on understanding the best method to develop multilingualism among students and also on the cognitive processes which take place during their learning. This investigation offers new perspectives in the flourishing domain of TLA, notably acquisition of phonology by exploring particular phonological patterns of L1 Malayalam speaking learnerswith L2 English, acquiring L3 French. The research scrutinized the nature of common errors committed and searched for evidence of language transfer and cross-linguistic interference on the acquisition of French phonology by the Malayalam speaking learners of French. It has been remarked that the lexical, syntactical, phonological dissimilarities between the L1 and L3 and the absence of francophone learning atmosphere render the language acquisition process difficult for a Malayalam speaking learner.

However, the results suggest that the learners' L1-Malayalam and L2- English lead to cross- language interference while learning L3- French language. It is noted that the learners often resort to English and use its phonological characteristics while speaking in French, owing to the typological similarity amidst them and further, the study presents supplemental evidence for the influence of L2 in the pronunciation of the third language, French. It is remarked that the learners systematically substitute the unknown phonemes with the nearest phoneme already acquired from L1 or L2.

S. Jayalakshmi (2020) in her study relating to language learning suggests that " it becomes imperative on the part of the teachers to introduce the practice of making the language learners gain self-awareness through more feasible modes like learning styles and portfolios and thereby apply the same in self-directed learning." The research could help the French teachers in identifying the common phonological errors committed by Malayalam speaking learners and to implement strategies of portfolios and corrective phonetics to train students to pronounce French more effectively and to help them progress towards self-directed learning.

The study was conducted on the French pronunciation of a selected group of Malayalam speaking French learners whose medium of instruction in school and college is English. This is an indicator for the participants' good knowledge in English which they have acquired as a second language. The articulation errors could be the influence of both the languages acquired already by the learner. Hence, a complete generalization of the results to all the Malayalam speaking French learners could be questionable. Furthermore, as the recording was done with the consent of the participants, they were rather vigilant not to make many pronunciation errors.

Future research can explore if the structural dissimilarity (the lexical, syntactical, phonological dissimilarities) between the L1 and L3 render the acquisition process

difficult for a Malayalam speaking learner and the methods in which these influences can be surmounted. Further studies should be undertaken in this domain to obtain more information on nasal vowels, consonants and other aspects including lexical, syntactical, morphological categories to understand better third language acquisition in multilingual contexts.

These findings can be instrumental for linguists, didactic designers and French language teachers in designing precise syllabi and courses, selecting the suitable pedagogical strategies based on the linguistic context of that region. This research will be beneficial also to throw light on the factors influencing the L3 acquisition and to encourage multilingualism.

References :

1. De Angelis, Gessica, (2007). *Third or additional language acquisition*, Multilingual Matters LTD, Clevedon, Buffalo, Toronto.
2. Dewaele, J. M. (1998). Lexical Inventions: French Interlanguage as L2 versus L3. *Applied Linguistics*, 19, 471-490.
3. Hammarberg, B. (2001). *Roles of L1 and L2 in L3 production and acquisition*. In J. Cenoz, B. Hufeisen& U. Jessner (Eds.), Cross-linguistic Influence in Third Language Acquisition. (pp. 21-41). Clevedon: Multilingual Matters.
4. Hammarberg, B, (2006). *Activation de L1 et L2 lors de la production orale en L3* . in AILE 24, Acquisition et interaction en langue étrangère, pp. 45-74, Paris, Encrages.
5. Hernández C. J. M., & Cutillas-Espinosa, J. A. (2012). *Style-shifting in public: New perspectives on stylistic variation*. Amsterdam: John Benjamins Pub. Co.
6. Jayalakshmi, S. (2020). Enhancing Self-Directed Language Learning through Learning Styles and Portfolios.*Purakala*. Vol 31 (pp 111-118).
7. Kellerman, E. (1983). *Now you see it, now you don't*. In S. Gass & L. Selinker (Eds.) Language transfer in language learning (pp.112-134). Rowley, MA: Newbury House.
8. Lado, R. (1957*). Linguistics Across Cultures* Ann. Arbor: University of Michigan Press.
9. Odlin, T. (1989). *Language transfer Cross-linguistic influence in language learning*. Cambridge: Cambridge University press.
10. Ringbom, H. (1987). *The role of the first language in foreign language learning*. Clevedon: Multilingual Matters.
11. Schachter, J. & Rutherford, W. J. (1979). *Discourse function and language transfer*.Working Papers in Bilingualism, 19, 1-12.
12. Selinker, L. (1972). Interlanguage. International Review of Applied Linguistics in Language Teaching (IRAL). In J. C. Richards (Ed.).
13. Singh, R., & Carroll, S. (1979). L1, L2, and L3. *Indian Journal of Applied Linguistics*, 5, 51-63
14. Weinreich, U. (1953). *Languages in Contact: Findings and Problems*. The Hague: Mouton.

❑❑❑

1. Assistant professor in French, Nirmala College for Women, Coimbatore and Research Scholar, Avinashilingam Institute for Home Science and Higher Education for Women, Coimbatore. E-mail:anujarose@gmail.com, Ph: 9884267150
2. Associate professor in French, Avinashilinagam Institute for Home Science and Higher Education for Women, Coimbatore-641043, Ph: 9443250005

Research Article

Digital Marketing : A Review

–Partho Banerjee
–Dr. Abhishek Upadhyay

Technology advancement and the growth of digital marketing go hand in hand. Ray Tomlinson sent the first email in 1971, and his invention created the framework that made it possible for users to transmit and receive information using various equipment. Computers' storage capacities were already sufficient in the 1980s to accommodate massive amounts of client data. Companies were deciding against limited list brokers in favor of online strategies like database marketing. These databases changed the way that buyers and sellers interacted by enabling businesses to track client information more efficiently. The manual procedure, however, was not very effective.

Digital marketing is the practice of promoting goods or services through the use of digital technology, primarily the Internet, but also mobile devices, display advertising, and other digital media. The growth of digital marketing since the 1990s and 2000s has altered how companies and brands use technology for marketing. Digital marketing efforts are becoming more common and effective as digital platforms are integrated into everyday life and marketing strategies and as individuals utilize digital gadgets rather than go to physical stores. This essay primarily focuses on a conceptual understanding of digital marketing, how it benefits modern businesses, and a few examples of actual cases.

KEYWORDS : media, key performance in dicators, mail, search engines, consumers

INTRODUCTION

I. Whatis Digital Marketing?

All marketing initiatives that make use of technology or the internet fall under the category of digital marketing. To engage with present and potential customers, businesses use digital channels including search engines, social media, email, and their websites. The terms "online marketing," "internet marketing" and "web marketing" can also be used to describe this. Utilizing a variety of digital strategies and platforms to connect with clients online, where they spend a significant amount of time, is the definition of digital marketing. A wide range of strategies fall under the category of "digital marketing" including websites, email marketing online brochures, and other online branding assets for businesses.

The marketing of goods or services through the use of digital technology, primarily the Internet but

also including mobile devices, display advertising, and any other digital medium, is known as "digital marketing."

Search Engine Optimization (SEO), Search Engine Marketing (SEM), Content Marketing, influencer marketing, content automation, campaign marketing, data-driven marketing, e-commerce marketing, social media marketing, social media optimization, e-mail direct marketing, display advertising, e-books, and optical disks and games are just a few of the digital marketing strategies that are becoming more and more popular as technology advances. These days, digital marketing includes non-Internet platforms that offer digital media, like mobile phones (SMS and MMS), callback services, and on-hold ringtones.

II. A transition from traditional to digital marketing:

Technology advancement and the growth of digital marketing go hand in hand. Ray Tomlinson sent the first email in 1971, and his invention created the framework that made it possible for users to transmit and receive information using various equipment. Computers' storage capacities were already sufficient in the 1980s to accommodate massive amounts of client data. Companies were deciding against limited list brokers in favor of online strategies like database marketing. These databases changed the way that buyers and sellers interacted by enabling businesses to track client information more efficiently. The manual procedure, however, was not very effective.

With the introduction of server/client architecture and the widespread use of personal computers in the 1990s, when the phrase "digital marketing" was first used, Customer Relationship Management (CRM) software emerged as a key component of marketing technology. Vendors were compelled by fierce competition to include more services, such as apps for marketing, sales, and service, into their software. After the creation of the Internet, marketers were also able to hold vast amounts of online customer data through e CRM software. Companies might receive the priority of customer experience and update data on customer wants. Due to this, the "You Will" campaign by AT&T, which was the first clickable banner ad, went online in 1994. In the first four months after it went live, 44% of all viewers clicked on the ad.

Customers began conducting product research and making judgments about their needs online before consulting salespeople in the 2000s as a result of an increase in Internet users and the introduction of the iPhone, which presented a new challenge for a company's marketing department. Additionally, a poll conducted in 2000 in the United Kingdom revealed that the majority of retailers had not set up their own domain name. These issues forced marketers to look for digital means of market expansion.

The growth of digital marketing since the 1990s and 2000s has altered how companies and brands use technology for marketing. Digital marketing efforts are becoming more common and effective as digital platforms are integrated into everyday life and marketing strategies and as individuals utilize digital gadgets rather than go to physical stores.

The idea of marketing automation was introduced in 2007 to address the aforementioned issue. Companies were able to conduct multichannel marketing campaigns, segment their consumer bases, and give customers personalized information thanks to marketing automation. However, it took too long for it to adapt to consumer electronics.

In the 2000s and 2010s, when there was a significant increase in the number of devices that could access digital media, digital marketing grew more sophisticated. Statistics from 2012 and 2013 indicated that the digital marketing industry was continuing expanding. Customers developed a strong reliance on digital devices in daily life as a result of the rise of social media in the 2000s, including LinkedIn, Facebook, YouTube, and Twitter. They anticipated a seamless user experience when looking for product information through various media. The diversification of marketing technologies was improved by the shift in consumer behavior. Particularly since 2013, the term "digital marketing" has become the most used worldwide.Online ad servings were predicted to increase by 4.5 trillion per year, while digital media spending increased by 48 percent in 2010. Businesses that utilize Online Behavioral Advertising (OBA) to target advertising at internet users account for an increasing share of advertising, yet OBA creates issues with consumer privacy and data security.

III. Examples of Digital Marketing Techniques

Digital marketers are responsible of generating leads and increasing brand awareness across all available paid and free digital media for their firm. Social media, the company's own website, search engine rankings, email, display advertising, and the company blog are some of these channels. To accurately gauge the performance of the business across each channel, the digital marketer focuses on different key performance indicators (KPI) for each one. Today, digital marketing is used in various marketing jobs. One generalist may control many of the aforementioned digital marketing strategies simultaneously in small businesses. In larger businesses, these strategies are handled by a number of specialists, each of whom specializes in just one or two of the brand's digital channels. Here are a few instances of these experts:

The finest digital marketers have a clear understanding of how each campaign supports their main objectives. Additionally, marketers can support larger campaigns through available free and paid channels, depending on the objectives of their marketing plan. For instance, a content marketer can write a series of blog entries to drive traffic to a new eBook the company just published. The social media marketer for the company could then assist in promoting these blog pieces via paid and unpaid posts on the company's social media pages. Maybe the email marketer designs an email campaign to provide those who download the eBook with more details about the business. The following list includes some of the most popular digital marketing strategies and the channels used:

- **Search Engine Optimization (SEO):**The technique of optimizing a website to "rank" higher in search engine results pages will increase the volume of natural

(or free) traffic to your website. Sites like blogs, infographics, and websites all benefit from SEO.

- **Social Media Marketing:**This technique uses social media platforms to advertise your brand and your content in order to build brand recognition, increase traffic, and produce leads for your company. You can utilize Facebook, Twitter, LinkedIn, Instagram, Snap Chat, Pinterest, and Google+ as social media marketing channels.
- **Affiliate Marketing:**It is a sort of performance-based advertising in which you are compensated for promoting the goods and services of others on your website. Hosting video adverts through the YouTube Partner Program and posting affiliate links from your social media accounts are examples of affiliate marketing channels.
- **Native Advertising :**It is the term for commercials that are mostly content-driven and placed next to unpaid content on a platform. Buzz Feed sponsored posts are a good example, but many people also view Facebook and Instagram advertising as "native" social media advertising.
- **Marketing Automation:**Itis the term for the software that helps you automate your everyday marketing tasks. A lot of marketing departments may automate repetitive processes that they would otherwise have to do by hand, such sending out email newsletters, planning social media posts, updating contact lists, creating workflows for nurturing leads, and tracking and reporting on campaigns.
- **Email Marketing:**It is a tool used by businesses to reach out to their audiences. Email is frequently used to advertise events, promotions, and special material, as well as to point customers toward a company's website. Blog subscription newsletters, follow-up emails to website visitors who downloaded something, customer welcome emails, holiday promotions to loyalty program members, and tips or similar series emails for customer nurturing are some of the types of emails you might send during an email marketing campaign.

IV. The power of digital marketing for today's businesses:

No matter what your firm sells, digital marketing still entails developing buyer personas to pinpoint the needs of your audience and producing worthwhile online content.

- **B2B Digital Marketing:** If a company engages in business-to-business (B2B) transactions, its digital marketing initiatives are probably focused on generating online leads with the ultimate objective of getting those leads to contact a salesperson. Your marketing strategy's goal is to use your website and other supporting digital channels to draw in and convert the highest quality leads for your sales team. In addition to your website, you'll probably decide to concentrate your efforts on business-focused networks like LinkedIn where your target audience is active online.
- **B2C Digital Marketing:**Digital marketing for business-to-consumer (B2C) companies aims to get visitors to websites and convert them into consumers without

ever having to engage a salesperson, depending on the price point of the products. Because of this, you're probably less likely to concentrate on "leads" in the conventional sense and more likely to concentrate on creating an accelerated buyer's journey that runs from the time a visitor lands on your website to the time they make a purchase. Because of this, your product may frequently appear in your content earlier in the marketing funnel than it would for a B2B company, and you may need to utilize stronger calls-to-action (CTAs). Channels like Instagram and Pinterest are more important for B2C businesses than business-focused platforms

- **Website Traffic:**Using the digital analytics tools offered by marketing platforms like Hub Spot, you can instantly observe the precise number of visitors to the homepage of your website. among other digital analytics information, how many pages they viewed, what device they were using, and their source. Based on the quantity of visitors those marketing channels are bringing to your website, this knowledge enables you to decide which marketing channels to spend more or less time on. For instance, if just 10% of your traffic originates from organic search, you are aware that you likely need to invest some time on SEO to raise that figure.
- **Content Performance and Lead Generation:**When you develop a product brochure and mail it through people's letterboxes, you are engaging in content performance and lead generation, even though the brochure is offline. The issue is that you have no idea how many people looked at your brochure or how many just dumped it in the garbage.
- **Modeling of attribution :**Itis the process of connecting an efficient digital marketing plan with the tools and technologies that enable you to track every sale back to the customer's initial digital interaction with your company. It enables you to spot trends in consumer product research and purchase behavior, empowering you to make better informed choices about which aspects of your marketing plan require further focus and which phases of your sales cycle require improvement. Making the connection between marketing and sales is crucial because, according to Aberdeen Group, businesses with excellent sales and marketing alignment see a 20 percent annual growth rate compared to those with weak alignment, which experience a 4 percent revenue decrease. Utilizing digital technologies can enhance your customers' trip through the buying cycle.
- **Collaborative Environment:** To maximize effort, resource sharing, reusability, and communications, a collaborative environment can be established between the company, the technological service provider, and digital agencies. Customers are being invited by businesses to assist in improving their understanding of how to serve them. A large portion of data is obtained via company websites where the business invites people to offer ideas that are then assessed by other website visitors. Utilizing this technique for gathering data and creating new goods can improve an organization's interaction with its customers and generate concepts that might not otherwise be considered.

- **Accessibility:** Encouraging digital marketing customers and enabling them to interact with the business through service and delivery of digital media is a crucial purpose. Internet users have access to a wide range of digital platforms, including Facebook, YouTube, forums, email, and others. Through digital communications, a multi-communication channel is created that allows anyone, regardless of who they are, to swiftly transmit information around the globe.

V. How are digital marketing campaigns' success rates assessed?

According to their type and duration, the metrics and evaluation criteria for digital marketing initiatives are categorized. Either rate campaigns "Quantitatively" or "Qualitatively" depending on the category. The terms "Sales Volume" and "Revenue Increase/Decrease" are examples of quantitative measurements. While improved "Brand recognition, image, and health" as well as "connection with the customers" are examples of qualitative metrics.

In order to determine whether the whole effort was successful or not, we may need to measure certain "Interim Metrics" that provide us with information during the journey as well as some "Final Metrics" at the conclusion of the journey. For instance, the majority of social media metrics and indicators, such as shares, likes, and comments on engagement, may be categorized as interim metrics, but a final gain or reduction in sales volume is unmistakably from the final group. There ought to be a correlation between these categories. Otherwise, the final outcome can be unsatisfactory.

VI. Digital marketing's benefits and drawbacks:

Real-time analytics provide marketers access to precise outcomes. It is challenging to determine how many readers actually turned to that page and read the advertisement when it is placed in a newspaper. There is no definite way to determine whether that advertisement contributed to any sales at all. However, digital marketing may help you understand the market for your product or service, communicate with potential customers, have a global presence, and advertise in a tailored way. However, there are significant drawbacks to digital marketing.The internet is a key component in digital marketing. because users' internet connections could be unreliable or specific places might not have access to the internet. Marketing professionals struggle to separate out from the clutter and encourage people to talk about a company's brand or products because of this.

However, having a lot of rival products and services that use the same digital marketing techniques might be a drawback. Due to the volume of advertising that appears on websites and social media that may be considered fraudulent, some customers may have a poor perception of some businesses.Even one person or a small group of people can damage a brand's reputation. Digital marketing merely provides information to potential customers, the majority of whom lack purchasing authority or power. Therefore, it is doubtful whether digital marketing actually increases sales.

VII. Real-world examples under the heading of digital marketing:

- **Every Laugh Counts: Britannia Good Day assists newborns with cleft lips.**The Every Smile Matters initiative was introduced by Britannia Good Day on October 5th, World Smiles Day. The campaign focuses on the crucial idea that we don't smile enough and take smiles for granted in the modern world. The world's premier cleft charity, Smile Train India, which offers free cleft surgery and care to children, has joined with Good Day. A Smile Train study found that 1 in 1,000 Indian babies are born with cleft lips, a common birth defect that can happen on its own or as a result of a hereditary disorder or syndrome. This condition makes it impossible to smile, but it can also make natural actions like eating and drinking difficult.
- **HDFC Ergo uses "Ab Take It Easy" to promote its new app:**Ab Take It Easy demonstrates what it preaches by guaranteeing policyholders that in the event of a medical emergency, you should come first and foremost, not insurance paperwork. HDFC Ergo Health Insurance unveiled their new, smart phone apps with Ab Take It Easy, which helps put policyholders first and formalities second. Ab Take It Easy depicts the panic-induced jitters that one experiences during the "moment of truth," wherein the focus of family and friends should be immediate attention to the patient. Ab Take It Easy demonstrates how a watchful father's routine preparedness drill everytime he hears ambulance sirens in the distance allows him to put his worries to rest by providing all of his health insurance information, andlocation of nearest cashless hospital are available in moment.

VIII. Conclusion:

In summary, despite its advantages and disadvantages, digital marketing has a promising future for the long-term viability of the product or services in the contemporary technology market.

REFERENCES:

1. Chaffey, D. and Ellis-Chadwick, F. (2012). Digital Marketing : Strategy, Implementation and Practice. 1sted. Harlow : Pearson Education.
2. Dahiya R., "A Research Paper on Digital Marketing Communication and Consumer Buying Decision Process: An Empirical Study in the Indian Passenger Car Market", Journal of Global Marketing 31(2) : 1-23, September 2017.
3. Elizabeth S. B," Digital Marketing", February 2011, web services.itcs.umich.edu/.
4. French, A. and Smith, G. (2013). Measuring brand association strength : a consumer based brand equity approach. European Journal of Marketing, 47(8), pp.1356-1367.
5. Marr, B. (2012). Key performance indicators. 1st ed. Harlow, England ; ; New York: Pearson Financial Times Pub.

❐❐❐

1. Research Scholar, JS University, Shikohabad
2. Guide, JS University, Shikohabad

Research Article

The comparative study among the Cricket and Basketball players on selected motor fitness components in Pithoragarh college students

–Pushkar Singh Bisht
–Prof. Sophie Titus

Cricket is a game which was originated in south-east England in the mid 16th century. The game was popularized or spread by the British Empire. In Samuel Johnson's Dictionary, he derived cricket from "cryce, Saxon a stick." This game is top-rated in the Indian subcontinent and requires more physical fitness and skills, and techniques than cricket.

The study aimed to evaluate and compare selected motor fitness components in cricket & basketball player's college students. Players who has represented college team in university, those are physically fit were chosen as test participants for this study. The 40 participants were divided into cricket (N=20) and Basketball (N=20), which were compared. Participants were put through their paces in terms of agility, speed, endurance, muscular endurance, explosive strength, and shoulder strength factors. Independent two-tailed "T" tests in the form of at-ratio were calculated to determine the significance of the difference between cricket players and basketball players. The study's findings revealed differences in data analysis, with basketball players having a more excellent average value in agility and flexibility than cricket players. At the same time, endurance and shoulder strength results show that cricket players perform better than basketball players. The significant difference between these groups is speed, agility, and endurance. As a consequence of the findings, those basketball players perform better than cricket players.

Introduction-

In modern days, sports are an integral part of our life. Physical fitness helps us improve our physiological systems and increases our immunity. Today in education, physical education is an essential subject in which such programs are included to improve the physical fitness of an individual. Physical fitness and health are the essential prerequisites for personality development. The main components of the motor and physical fitness are speed, endurance, agility, balance, flexibility, strength, and power. "Physical fitness is the ability to perform the routine activity with mental

strength and wakefulness without undue fatigue and with ample energy to engage in leisure pursuit and to meet emergencies (Clarke, 1976). All sports require all physical fitness components for best performance.

Today, Basketball is the most popular game in the world. It was invented by Professor James Naismith in December 1891, in Y.M.C.A. training school, Springfield, Massachusetts, U.S.A. Basketball is an indoor game. This game helps develop physical and mental fitness like the presence of mind and tactical and technical development of an individual; it develops speed, agility, muscular strength and abdominal strength, cardiovascular endurance, coordination ability, and reaction time. Due to these physical fitness abilities, this game is one of the fastest. This game requires a player who plays Basketball to be physically fit (Naismith & Stark, 2021).

Cricket is a game which was originated in south-east England in the mid 16th century. The game was popularized or spread by the British Empire. In Samuel Johnson's Dictionary, he derived cricket from "cryce, Saxon a stick." This game is top-rated in the Indian subcontinent and requires more physical fitness and skills, and techniques than cricket. The importance of physical fitness in any game cannot be underlined. Healthy individuals are performing to their best in sports. The healthy persons are playing to their best performance. However, cricket examines talent. "Cricketing skills involve stamina, speed, and endurance." (D. Sarkar & Kandar, 2022).

Statement of the problem: -

The objective of the current study is to compare the motor fitness variables of university-level Basketball and cricket players of L.S.M.G.P.G.C. Pithoragarh.

Delimitation of the study: -

1. The study is delimited to L.S.M.G.P.G.C. Pithoragarh cricket and basketball players who represented their college in 18-25 years of university-level tournaments.
2. A.A.H.P.E.R. test is used to measure motor fitness.
3. The study is delimited to 40 male basketball and cricket players of Pithoragarh college.
4. The study is delimited to cricket and basketball players of sessions 2020-22.

Limitations of the study: -

1. Subjects are not psychologically motivated.
2. Factors like rest, sleep, socioeconomic factors, and daily habits.
3. Limited availability of time.
4. Natural factors like climate, environment, and altitude of the subject.
5. Ground conditions and physical factors.
6. Instruments used for calculating data are limited and not of a high standard.
7. Caste, religion, and family background of the players were not considered.

Objective or significance: -

1. The study is also helpful in knowing the motor fitness level of cricket and basketball players.

Significance of the study: -

1. The study helps basketball and cricket players to improve their motor fitness levels.
2. It also helps in improving their gaming habits.
3. It helps select cricket and basketball players.

Review Literature: -

(Arafat et al., 2020) has evaluated a comparative study between long-distance runners and sprint runners in Bangladesh. The study shows that sprint groups of athletes are better in speed, agility, and explosive strength, while long-distance runners are better in endurance. There is no significant difference between the two groups in speed, agility, and explosive strength.

(D. Sarkar & Kandar, 2022) have investigated selected motor fitness variables between university-level cricket and football players and found that football players are better than cricket in muscular strength.

(Mahipal et al., 2016) has compared physical fitness components between state-level athletics and football in district Panipat. The results show that Athletes are better in Agility, Speed, and explosive Strength than football players and muscular strength; there is no significant difference between the two groups.

(Kant, 2017) has investigated a comparative study of flexibility, agility, and body mass index of Basketball and football players and found there were significant differences in agility and flexibility but significant differences in body mass index.

(Lone, 2021) has evaluated a comparative study of physical fitness between male Kho-Kho and Kabaddi players of the Shopian district of J&K. The result shows no significant difference in flexibility and strength agility.

(S. Sarkar & Paul, 2015) compared health-related physical fitness components between tribal and non-tribal school-going boys in their study. They conducted their study on the sixty boys from both groups, ages 12-14 years, from Hoogly District, West Bengal. The result showed that tribal boys had good body mass, cardiorespiratory endurance, and upper body strength, while non-tribal boys were better in flexibility, abdominal strength, and endurance.

(Suma & Giridharaprasath, 2022) have evaluated a comparative study on the arm and leg explosive strength between Volleyball and Basketball players and found that basketball players are better than volleyball players in both physical fitness components.

Hypothesis: -

There will be no significant difference between Basketball and cricket players on motor fitness components.

Methodology: -

The current investigation compares the motor fitness components between cricket and basketball players of L.S.M.G.P.G.C. Pithoragarh college-level players.

For this study, 40 players, 20 from each group who represented the college in university-level tournaments, were selected, ages ranging between 18-25 years. These tests have compared primarily using the AAHPER test.

They were used to compare motor fitness components between two groups. Two chances are given to each subject in each variable. The best one is selected.

Materials and Methods: -

A.A.H.P.E.R. motor Fitness tests were used to compare Agility, Speed, Endurance, Explosive Strength, Muscular Endurance, and Muscular or Shoulder strength were tested through 4*10 Yards shuttle run, 50 Yard dash, 600yard run, standing broad jump, knee bent sit-ups, and chin-ups.

VARIABLES&TEST&UNITS:-

N	Variable	Test	UNIT
20	Agility	4*10 Yards Shuttle Run	Second (s)
20	Speed	50 Yard Dash	Second (s)
20	Endurance	600 Yards Run	Minute (min)
20	Explosive Strength	Standing Broad Jump	Meter (m)
20	Muscular Endurance	Knee Bent Sit-Ups	Number (no.)
20	Shoulder Strength	Chin-Ups	Number (no.)

Methods: -

1. Shuttle Run - 4×10 Yards. A shuttle run was used to measure the agility of the players. A shuttle run estimated the skill of a sportsperson which is measured in seconds. Two replicated trials were given for each person, and the average was taken for further statistical analysis.
2. 50 Yard Dash: - This test was used to measure the speed of an individual. It was estimated in seconds.
3. 600 Yard Run: - We were used to measure the players' endurance, and time was recorded in minutes.
4. Standing Broad Jump: - This test was used to measure the explosive strength of the legs. It was estimated in meters.
5. Knee Bend Sit-Ups: - It was used to measure the muscular endurance of an individual and was measured in numbers. One minute duration was given. Correct attempts were counted.
6. Chin-Ups: - This test was used to measure the shoulder strength of a player. Correct Chin-Ups in routine were counted in numbers.

Statistical Analysis-

The collected data were analyzed and normalized for the process of normalization. Descriptive statistics, t-Test, and one-way ANOVA analysis were used for all the collected data. All statistical data were analyzed by using a Graph pad prism.

Result-

The figures and tables show that all factors of college students differed significantly at a significance level of 0.05. It provides cricket and basketball players data on specific motor fitness factors such as 50-yard runs, 600-yard runs, several chin-ups, standing broad jumps (S. B. jumps), and shuttle runs.

1. **50 Yard Run-** Table 1 shows that the mean and SE values of Speed motor fitness measures for cricket and basketball players were not the same. There were several distinctions. The cricket players have more speeds than the basketball players, and they also show a more significant difference between themselves (Fig. 1). Table-3 presents the results of the statistical T-test, which was used to understand the statistical significance of these discrepancies.

Table .1- Comparative descriptive statistics of 50 yard running of Cricket and Basketball player

50 YARDS (Minute)			
Sr.No.	Detail	Cricket Player	Basketball Players
1	Number of values	20.00	20.00
2	Minimum	5.57	6.19
3	Maximum	6.63	7.00
4	Mean	6.17	6.48
5	Std. Deviation	0.25	0.26
6	Std. Error of Mean	0.06	0.06

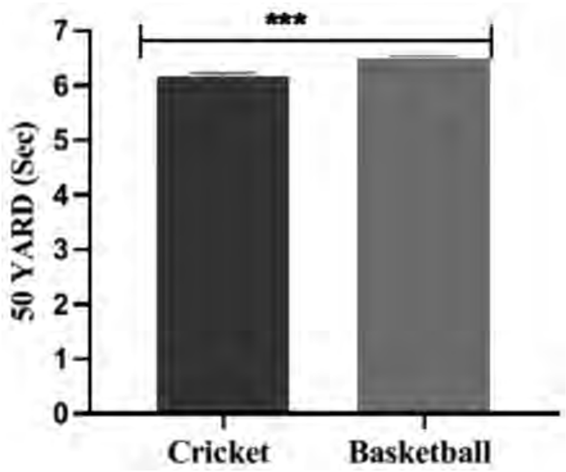

Figure. 1 Graphical representation of 50 yard runs between Cricket and Basketball player (Mean±SE)

2. **600 Yard run-** The computed mean and standard error of 600 yard run in Cricket and basketball players of sports person are (1.54±0.029 and 1.50 ±0.33) respectively, at the 0.05 level of significance. The compared "T" value was 0.869 for 38 degrees of freedom at the significant level of P=0.3899. As a result, the cricket and basketball players show significant differences among the Cricket and basketball players (Fig.2 and Table.2).

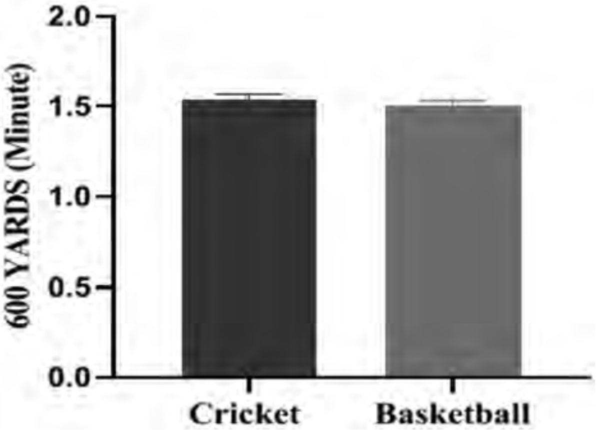

Figure. 2 Graphical representations of a comparative study of Cricket and Basketball player (Mean±SE)

Table .2- Descriptive statistical analysis of cricket and basketball player on selected (600 yard run) endurance fitness component has displayed.

600 YARDS (Minut)			
Sr.No.	Detail	Cricket Player	Basketball Players
1	Number of values	20.00	20.00
3	Minimum	1.37	1.31
4	Maximum	2.01	2.01
5	Mean	1.538	1.499
6	Std. Deviation	0.1308	0.1486
7	Std. Error of Mean	0.02925	0.03322

3. **Number of Chin-ups-** According to table 3, the mean and SE values of the number of chin-ups (shoulder strength), cricket, and basketball players were (10.3±0.85 and 8.4±0.62), respectively, at the P<0.05 significant confidential level. These data under subject to Two-tailed T-tests; "T" value was 1.805 for 38 degrees of freedom at the significant level of P=0.079, which shows no statistically significant difference but does show difference across data observation (Fig.3 and Table.3).

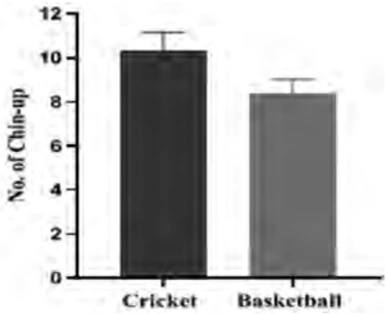

Figure. 3 A graph illustrating the mean and standard speed error among football and cricket players (boys).

Table .3 Comparative mean and standard error difference in number of chin-ups between cricket and basketball player students.

Number of Chin-up			
Sr.No.	Detail	Cricket Player	Basketball Players
1	Number of values	20.00	20.00
2	Minimum	3	5
3	Maximum	18	14
4	Mean	10.3	8.4
5	Std. Deviation	3.799	2.78
6	Std. Error of Mean	0.8495	0.6215

Standing Broad Jump (Meter)-Tables 4 and 4 indicated that the mean values of S.B. jump for cricket and basketball player groups of participants were not the same. There were several distinctions. Table-4 illustrates the results of the statistical analysis 'T-test, which was utilized to understand the significance of these discrepancies among the cricket and basketball players (Fig 4).

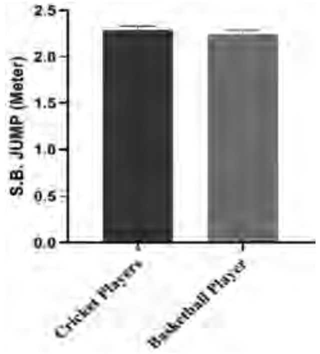

Figure. 4 Bar graphs comparing S. B. Jump among the Cricket and Basketball player on the Physical Fitness Test

Table 4: Demonstrate the descriptive statistical analysis of cricket and basketball players on selected explosive strength fitness components (S.B. jump).

S.B. Jump (Meter)			
Sr.No.	Detail	Cricket Player	Basketball Players
1	Number of values	20.00	20.00
2	Minimum	1.94	1.8
3	Maximum	2.71	2.65
4	Mean	2.29	2.237
5	Std. Deviation	0.1877	0.2228
6	Std. Error of Mean	0.04196	0.04982

Shuttle Run (Second) According to table 5 and figure 5, the statistical analysis (mean and standard error) values of shuttle run speed of cricket and basket ball players were (8.89± 0.07) and (9.59± 0.09) respectively. The estimated 'T' values were 5.878 for 38 degrees of freedom at the significant level of ($P<0.0001$); it is proven that there is a statistically significant difference in agility between basketball and cricket players. Cricket players have more agility than basketball players.

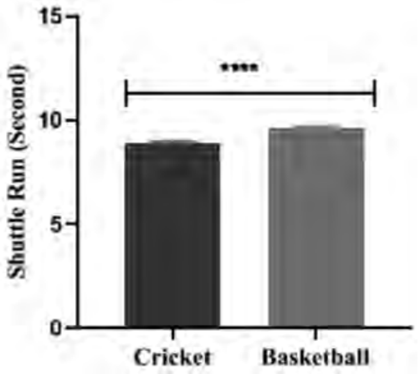

Figure. 5 Illustration of shuttle runs of mean and S.E. significance difference of cricket and basketball player

Table -5 Represent the statistical analysis of the shuttle run agility fitness test (Mean and S.E.) of Cricket and basketball players.

Shuttle Run (Second)			
Sr.No.	Detail	Cricket Player	Basketball Players
1	Number of values	20.00	20.00
2	Minimum	8.190	8.780

3	Maximum	9.540	10.29
4	Mean	8.892	9.597
5	Std. Deviation	0.3182	0.4314
6	Std. Error of Mean	0.07115	0.09646

Knee bend sit-ups- During the observation of knee bend sit-ups between basketball and cricket players of college students, the mean and S.E. value were in that order (43.90± 2.12 and 39.25± 1.44), at the 0.05 level of significance. Under the two-tailed "T" test analysis, these observatory values were 1.814 for 38 degrees of freedom at the level of P=0.0776, which has no significant level among the college students' cricket and basketball players.

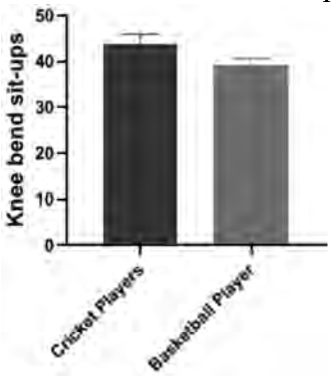

Figure. 6 Graphic of knee bend sit-up of difference between cricket and basketball player

Table. 6 Correspond to the statistical analysis of cricket and basketball players' Knee bend sit-up fitness test.

Knee bend sit-ups			
Sr.No.	Detail	Cricket Player	Basketball Players
1.	Number of values	20.00	20.00
2.	Minimum	20	24
3.	Maximum	64	50
4.	Mean	43.90	39.25
5.	Std. Deviation	9.48	6.45
6.	Std. Error of Mean	2.12	1.44

Discussion-

In the comparative observational study of a 50-**yard** run between basketball and cricket players of college students, the cricket players were faster than the basketball players. The length and frequency of a person's steps determine how

fast he can run. As a person's body size increases and the level, length, and strength of its components, the length and speed of their walk increase.

In the study of a **600-yard** run, there were less significant differences in cardiovascular endurance, speed, and endurance between cricket and basketball players in college students in terms of the factors of motor Abilities. Basketball players have more muscular leg and endurance power than cricket players of college students, whereas cricket players dominate male basketball players in terms of speed. Basketball players continuously move in the playground for defending and attacking mood, but in the case of cricket, the leading players (bowlers and batsman are more active compeered to rather than others). On the base of agility, the study had gone similar to the "comparison of motor fitness components among basketball and volleyball players" (Singh & Singh, 2017).

Another parameter of the motor fitness component is the chin-up. The number of chin-ups between a basketball and a cricket player was compared in the motor fitness component (shoulder strength). In which the observatory results had more cricket players than basketball players.

The studies on **standing board jump** findings revealed that basketball players had more speed, leg strength and shoulder strength, and accuracy than cricket players. Basketball players have more explosive strength than cricket players because they need it to accomplish strength abilities like jump shots, layup shots, and receiving the ball with a fast jump. These skills are essential for outstanding performance (Singh & Singh, 2017). Long approaches with three steps are a must in basketball games involving leg force ((Trikha, 2018).

The number of knee bend sit-ups performed by a cricket player and a basketball player was compared in muscular endurance of the motor fitness component. During the **Shuttle run**, when the average values of both groups are compared, it is clear that the cricket players have more agility than the basket ballplayers. Moreover, cricket players showed a more significant difference than basketball players. There were more cricket players than basketball players in the observatory results, but they did not show significant differences.

Conclusion-

The present study concluded a considerable difference in motor fitness between cricket and basketball players among college students. Cricket players have the highest mean value, which might be due to their better fitness and higher playing efficiency than basketball players, as a result of which they were fitter and physically fit.

Recommendation-

1. To make the study more reliable and valid, many samples will be taken.
2. A similar type of study may be developing on different games and sports, female players, and different age groups with large sample size.

3. This study helps the players evolve their physical fitness and helps complete plans such as programmed weak more fitness components.
4. A psychological study will be done with the same group of students.
5. A similar type of study can be conducted between players and non-players.
6. The same type of study may be conducted by testing psychological variables on the same subjects and others.
7. The same study may be conducted on different age groups, game players, and different levels of standard.
8. This study may help the physical education teachers and coaches select their teams and plan the physical fitness of players.
9. A similar type of study may be conducted all over Uttarakhand College to know all motor fitness of players.

References: -

Arafat, Y., Rickta, J. F., Tus, F., & Mukta, J. (2020). *A comparative study of motor fitness between sprinter and long-distance runner in Bangladesh*. 18–22.

Clarke, H. H. (1976). *Application of Measurement to Health and Physical Education*. Prentice-Hall. https://books.google.co.in/books?id=ZFUE7NlSHkwC

Junior, M., & Coach, A. (2016). A COMPARATIVE STUDY OF SELECTED PHYSICAL FITNESS VARIABLES AMONG STATE LEVEL ATHLETES AND FOOTBALL PLAYERS OF DISTRICT PANIPAT. *Times International Journal of Research*, 11–21.

Kant, S. (2017). Comparative Study of Flexibility , Agility and Body Mass Index. *NTERNATIONAL JOURNAL OF ENGINEERING SCIENCES & RESEARCH TECHNOLOGY*, *6*(9), 539–547.

Lone, S. A. (2021). *A study of physical fitness components between kho kho and kabbadi players*. *8*(1), 93–94.

Naismith, J., & Stark, D. (2021). *The James Naismith Reader: Basketball in His Own Words*. Nebraska. https://books.google.co.in/books?id=bN0PEAAAQBAJ

Sarkar, D., & Kandar, B. (2022). A comparative study of selected physical fitness variables between university level cricket and football players. *International Journal of Physical Education, Sports and Health*, *9*(1), 354–357. https://doi.org/10.22271/kheljournal.2022.v9.i1f.2396

Sarkar, S., & Paul, A. (2015). COMPARATIVE STUDY ON HEALTH RELATED PHYSICAL FITNESS BETWEEN TRIBAL AND NON TRIBAL SCHOOL GOING BOYS. *International Journal of Advanced Research in Management and Social Sciences*, *4*, 317–323.

Singh, K., & Singh, R. (2017). Comparision of selected physical fitness components of badminton and basketball players. *International Journal of Applied Research*, *3*(4), 236–240. www.allresearchjournal.com

Suma, R. S., & Giridharaprasath, R. G. (2022). *Comparative study on arm and leg explosive power between volleyball and basketball players*. *9*(1), 12–14.

Trikha, S. (2018). *Comparative study of selected motor abilities and body mass index of basketball and handball players*. *4*(1), 67–70.

❑❑❑

1. Research Scholar Banasthali Vidyapith Rajasthan, Email. Pushkarsinghbisht43@gmail.com
2. Co-ordinator & Head Department of Physical Education Banasthali Vidyapith, Rajasthan, India

Research Article

An Exploration of Generation Clash, Marital Disharmony and Family Conflict in Amit Chaudhuri's *A New World*

–V. Senthil Nathan
–Dr. N. Ramesh

The novel also depicts the story of infidelity and domination of Indian woman Amala because of following western philosophies in her life. Amala takes care of Bonny. Jayojit is simply allowed to be with Bonny during the school vacation. Jayojit thinks that he is accountable for taking Bonny to Calcutta to see his grandparents. At the point when Jayojit and Bonny starts their journey they enter into the new world.

Marital disharmony and family conflict are mainly resulted from psychological, gender related, sexual, socio-cultural, and economic factors. Marital conflict leads to tremendous negative consequences. The conflicts not only affect the conflicting couples but also their children and family. This paper discusses generation clash, marital disharmony in family through Amit Chaudhuri's *A New World.* In this novel the admiral and his wife were blindly following the old traditions. They believed that following the tradition was a sacred thing, where progressive women started increasingly adopting the free way of living, not loyal to traditional family institution that brings more disharmonies at family and home.

Keywords: Modernization, Cultural Change, family, Marital Conflict, Disharmony

In *A New world* the author speaks about the change in culture of Indians due to western influence and its reflections. The protagonist of the novel is Jayojit. He is working in America and his married life is unsettled because of divorce. Jayojit's spouse Amala was from Bengal. She is separated from her husband due to her relationship with the gynaecologist without marrying him. Bonny lives with his mother Amala. He goes with his father Jayojit during the school vacation from April to August. Jayojit parents' Admiral Chatterjee and his mother didn't see their grandson. They wanted to move to the United States. But when they knew about their child's unhappy married life with Amala, they dropped their plan to go to the United States. So, it appeared that Jayojit will come with his son Bonny to Calcutta during vacation.

In India the notion of marriage as a holy rite has started missing in the minds of many Indian men and

women because of following extreme western and modern philosophies in their life. Therefore, we can see many arranged marriages are failure and divorce has become very common in many Indian families. In the modern era women boldly go for divorce because they are economically independent. In olden days pregnancy and childcare are the prime reasons which make women close to home. But in the modern era women want to ensure freedom and equal rights from men. They are trying to follow progressive philosophies and they feel that depending on men like their female ancestors as a primitive mindset. Today many highly educated women see the world in a different way. Most of the women are giving more importance to their personal empowerment and professional achievements. In the modern society, education made women financially and psychologically independent. This in turn leads to women's unfaithfulness towards a family life. In the novel we can witness how education and empowerment of Amala has shattered her family life.

In this novel *A New World*, the writer utilizes an imaginative idea of 'family' that is totally different from the traditional Indian family set up. Amala is separated from her husband. Her separation gives great pain to Jayojit family members. In the novel Jayojit's father worries for his son's unhappy life who spends a year in America and comes back to India during vacation. His mother does not know about Jayojit pathetic life in America, According to James Gerein,

> The father-and-son sojourn back to the city in which Jayojit grew up can be seen as a hiatus of recovery and reflection for Jayojit before he resumes his busy life in the United States. Jayojit no longer feels at home in India, he is also estranged from his adoptive America. When he thinks of his life there, what comes to his mind is wandering the aisles of Achill supermarket hoping to bump in to an acquaintance. The ties that once bound him to an identity are broken or frayed and the novel charts his minute progress in trying to re-establish a workable sense of himself 'Jayojit's mother could not know of his secret life in that continent, of driving down the motor way, going to the supermarket, filling up a trolley with things, his orphan hood and distance...even imagine it' (316).

The relationship between Jayojit and Bonny start when they take taxi from the air terminal to their folks' home, and their folks send them off, loading onto the plane. At the point when the two get onto the plane, plainly Jayojit won't be getting to India to give pleasure once again to his nation, however he looks forward for another life in the United States. Though he feels boredom and irritated

in America, it is also the place which gives him contentment. The novel ends with Jayojit's evacuation with his son for Claremont in the States. His son stays with him till the end of July and goes to his mother, who is living with her boyfriend without marrying him. Through Chaudhuri's nitty gritty and great articles, readers find out with regards to Jayojit's internal life and history, particularly his memorable battles in India and in the United States. *A New World* likewise portrays the marital life and its disappointment.

The novel also depicts the story of infidelity and domination of Indian woman Amala because of following western philosophies in her life. Amala takes care of Bonny. Jayojit is simply allowed to be with Bonny during the school vacation. Jayojit thinks that he is accountable for taking Bonny to Calcutta to see his grandparents. At the point when Jayojit and Bonny starts their journey they enter into the new world. Jayojit advises his son to be careful while he is playing in his grandparents' house. He gives more care and affection to Bonny because he is new to the ambience of his grandparents' house in India. Here Jayojit cares his son too much because he was not aware of the Indian environment. Amit Chaudhuri views how Indian father take cares of their children. In the western countries children are left free to live in their own way. Though Jayojit lives in America, he strictly behaves like an Indian father.

The novel *A New World* compares the two generations of Indian family. Though, Admiral follows British authoritarian attitude in his life, he represents himself as a

> ... strict man and was one of those men who had inherited the Britishers authority and position. He had particular club cuisine and table manners. He never liked his wife as she could not come up to his expectations. He wanted her to be a 'memsahib' as he was a 'sahib'. She was afraid of him. He was also afraid of two things on which he would become strangely Bengali and native (NW 7).

He is a liberal man and he wants his wife to be a free and empowered woman. In India, cultural values get shattered due to the adherence of men and women to the western culture and tradition. Jayojit, who is accustomed to the western way of his life, wants his mother to be free from the domestic works of the family like women in the foreign counties. So he decides to buy a washing machine for his mother. But his father opposes to buy it in order to reduce the domestic chores of his mother. The attitude of Jayojit and his father shows how the influence of the two different cultures has created a gap between father and son. Though his father wants his wife to be modern, he couldn't agree it. It is due to his family

background and strict adherence to the Indian tradition. The attitude of Jayojit's father explicates how the diasporans struggle to make their parents agree their foreign ways of life. Chaudhuri beautifully depicts the relationship between the parents and children in the novel.

In the novel the old style and the modern thoughts are contrasted in a subtle conversation. Jayojit's father is a retired Admiral in the Indian navy. After the retired life, the old man and his wife count every penny of their dwindling savings. The retired Admiral is a kind of stingy person, who always roams towards the bank by bus because he can no longer afford a chauffeur for his battered old car. Jayojit's mother is a traditional woman who strictly follows the Indian values and culture. She never speaks against her husband's decision. It is a kind of strong sentiment exists in the Indian tradition. It develops the social respect and dominance that highlighted during 1980's in Calcutta. Jayojit's father is not always fond of his wife but they depend on each other. This shows the different pattern of relationships in upper-middle class Bengali household where the emotional bond is replaced by formal decency. The impact of modernization and western culture leads to weaken the family-ties.

Amit Chaudhuri also portrays cultural and social issues in the novel. We come across an Indian man who becomes uncomfortable in his own house after returning for the foreign country. When Jayojit returns to his homeland, he refuses to accept the native city's corporeal pleasures and he is too careful about the change in his food habits. He keeps himself brand name clean by going to a chemist to order his Colgate tooth paste, Dove soap and his ponds talc. The closest he gets to real interaction with Calcutta, the little trips he makes to the bank where he quietly imagines filtrations with the tellers. Chaudhuri clarifies new world in all things. Arranged marriages are accepted in the Indian families. Jayojit feels that his parents will be worried when they know about his divorce from Amala. It is due to the fact that in the Indian tradition divorces are not accepted in the families. But due to Amala's acclimatization with the western culture makes her to divorce her husband and have a relationship with a man even without marriage.

> In spite of an 'arranged marriage' having failed once, they were both prepared to give it a second go; he still didn't have confidence in 'love'; it was other things - understanding, mutual needs - that held a marriage together. 'But not a Hindu wedding, God, no; I couldn't take another one of those,' she'd said. 'Just a registry.' Everything had been going smoothly and then, almost without warning, he'd realized, after a little more than a month, that something

was holding her back, she'd changed her mind and wouldn't go through with it. (149)

Therefore we can see that many marriages ended up in divorce. Married couples engage in extra marital and illegal relationships. The holy concept of marriage has found a new paradigm and it is seen as a contract between man and woman for love and sex. The impact of westernization has brought a significant change in marriages which are very sacred in ancient India and it is seen as a mere contract in the modern era. When women migrate to the new place they face innumerable physical and psychological problems. They undergo the problem of living in a dual space 'associated with leaving one society and adjusting to another' (qtd in Paranjape 166). Indian women are more traditional bound. When they migrate to the host land they couldn't adjust with the alien culture and also at the same time they try to adhere their native culture also. But in the course of time, their economic freedom and education gives them courage to cope up with the new ambience. After few years they try to imitate the host culture which makes to live in an ambivalence state. Thus Amala's changing way of life makes her to take bold decisions even without thinking about her ancestral culture and tradition. Through the character of Amala, Chaudhuri exemplifies how globalization and education have created avenues for women to enhance their well-being.

The exploration of the novel *A New World* reveals that cultural change has happened in many Indian middle-class families because of modern education and culture. The impact of western philosophies has created women to become more modern and empowered. Though women's empowerment is viewed as a positive change in their lives, it also created negative impact in their personal life. Their liberty in words and deeds has shattered their happy married life which in turn affects the psyche of the children of diasporans. The 'New Woman' attitude of Amala psychologically wounds the heart of her husband and his family members.

Works Cited :

1. Chaudhuri, Amit. *A New World*. Picador, 2000.
2. Gerein, James. "Rev. of *A New World*." World literature Today, vol.75, no.2, Spring 2001. Pp.316.
3. Paranjape, Makarand. "One Foot in Canada and a Couple of Toes in India: Diasporas and Homelands in South Asian Canadian Experience." In Diaspora: Theories, Histories and Texts, edited by Makarand Paranjape, Indialog Publications, 2001, pp. 161-170.

❐❐❐

---

1. Ph.D Research Scholar (PT), Periyar University, Salem-11, TN.
2. Research Supervisor, Assistant Professor, Government Arts and Science College, Pappireddipatti, Dharmapuri Dt. TN.

Quietness to Viceas Emergeda New Woman in Manju Kapur's Home

–P. Kumar
–Dr. K. Dharaniswari

Nisha as aseparate could create isolated room for her in home and society. She is an educated and determined new women, could refuse to be preserved as an object instead that tried to begin her own identity. Her pursuit for self-identity, struggle for economic independent presence and her equality with men hang on upon Indian social ethos. The ending again beautifully carries out how life can look up again-with a slight re-adjustment of one's expectations after suffering a blow. Nisha discovers her happiness when she least expects it.

The advent of the women writers in the opening of the 19th century is the milestone in the history of the world literature. The liberation of women literature is the unrestraint of the new woman herself. The new occasions and of moreenergeticcontributions from her side in the society. Feminism emerged as a very influentialdrive to safe the rights of woman and to springdifferent opportunities to the fair sex. This movement provided her power to brawl for her acknowledgment and existence and made them recognize that the time has come when they can interruption the chain of oppression and should break suffering inaudibly in vulnerability. Manju Kapur is a novelistfloating her voice in her works over the characters. Her novels pact with women who increase voice in their life for appreciation of their self. 'Home' is anabode where a girl in her childhood days becomes attached to the roots that is the old-style values of her family which, after her marriage she brings with herself to her new home.

Keywords:advent, liberation, influential, existence, inaudibly

Introduction

Meanwhile the setting up of the society woman is named as the weaker sex, deprived of full justice, social security, economic liberation and political awareness. Aconsciousness of the variationscurrent in society flagged way to broaden the women's liberation movement in the mid-19th century. Consequently the feminist consciousness is the consciousness of persecution, to detain oneself as prey

is too aware of an unfamiliar and hostile force which is accountable for the deliberately unjust treatment of women and for roasting and unfair system of sex role. It is exciting to discovery that Kapur's novels overflow with female protagonist's feminist consciousness and this is a feminist mannerism. Her female characters typically aware on an edge and are motivated to despair, breathing in a conventional and narrowed atmosphere. They placed up a struggle, though it is a silent one and refuse to be restrained. It is true that Kapur's protagonists are never competent to display resentment willingly, much less rebellion, yet they are very conscious of conquest and oppression and are reluctant to take it in their progress.

Kapurwishes to present-day evidence through her woman protagonist that, "a woman ought to be aware, self-controlled, strong- willed, self-reliant and rational, consuming faith in the inner strength of womanhood. A meaningful change can be transported only from within by presence free in the profounder psychic sense". She detains the approach of an apocalyptic social climate with the rise of the fundamentalists and extremists in nation's counterfeit politics that take religion to be ultra-patriotic.

Throughout her life she maintains a long silence to domestic violence and traditional values that is passed from one generation to another.But,today,she has opened her eyes wide enough to see the world through her own perspectives and raises her voice in the world to protest against the male dominant society. She is a symbol of roots which is nourished with traditional values to become a sacrificial daughter, a wife and a mother. She knows her prerogatives in life and is aware of the balance she has to maintain in life. In this paper, an effort is made to present the image of a 'new woman' who fights for her identity and emancipation from her roots, not at the cost of her family. Nisha, Manju Kapur's protagonist in Home is a bold character that passes through a number of ebbs and flows since her childhood days. Crumbled with the burden of traditional values in the later part of the novel,she raises her voice against the traditional values, and her family, not only for higher education but also to establish her own identity by opening a boutique with the name of 'Nisha Creations.'

Home is where we have to collect grace. This is a perfect saying by Nissim Ezekiel in his famous poem originality in which he exposes that one can feel quietness at one's own house and nowhere else.And this statement is truly applicable for Nisha Kapur's bold and self-confidentcharacter of Home who from her very childhood was prone to a number of fights and battles both internal

and external but ultimately she is fulfilled with herself and her own decision to stay with her family. Because she has been revolting against all the old behaviors and practices that were practiced in her home since the subsistence of her grandfather Banwari Lal.

As the title 'Home' shows the novel centerson the concerns of womankind more than those of males, and some of the foremost concerns of womankind as discussed in it are grant and marriage depending on it, barrenness and education and financial independence. According to the pioneer feminist Simone de Beauvoir, the two fundamentals for women's freedom are 'economic independence and freedom from orthodox traditions of society' (god) while dowry and emptiness are apparently visible in the BanwariLals,

Through her life a woman be contingent on her father, brother, husband and son and consequently, she drops her own identity. But, always remains awish in her heart to verify herself and gain self-identity. All the female writers highlight the need of education to free women from the commands of patriarchy, but in terms of education also there is a stark contrast. Infact, education and economy are closely related and thus, Virginia Wolf in A Room of One's Own has said that "a woman must have money and a room of her own if she is to write fictional". Kate Millett's observation in Sexual Politics is in league with the assumptions of the advanced nations.Collected works by women, about families, always has these larger considerations, with years of studying tests, it develops almost second nature to look beneath the surface at social and economic forces, gender relationships and how they are frolicked out in an arena that, in my writing happens to be the home. But then, all kind of things happening outside do touch what is happening inside the home.

Totally the sufferings in the world was not enough to make that woman human. Though weeping, she might still find drive to taunt. She spoke of love, but she knows the meaning of the word? If she concerned for her daughter, would she have allowed her to be murdered? Could she believe the lie that her clothes caught fire while cooking? They all knew how badly off she was, still they neglected her.The untimely death of her sister-in-law gives Sona the charge of her son Vicky who is rejected by his father to taken care of. Sona is not at all happy to be the mother of that ugly son ofSunita but time and again she is consoled by her husband, sister and mother-in-law that may be it is the quilt of her prayers which is fallen in her lap as a blessing of the God. But, suddenly after ten years of her marriage a may be by chance or buy the blessing

s of God Sonaconcevies a baby and with the birth of Nisha, she feels little elevated in family but it is only with the birth of a boy she feels her importance in the family.

Kapurhighpoints their importance of boy in the family by writing, "The mother of a son, she could join Sushila as a woman who has done her duty to the family, in the way the family understood it. Gone was the disgrace, the resentment, gone with the appearance of little Raju, as dark land pain-featured as his father but a boy, a boy… At last the name of his father and grandfather will continue" (49). One of the most celebrated Indian writers, R.K. Narayan expresses this view over this situation in his work My Days," Man assigned her (woman)a secondary place and kept her there with such subtlety and cunning that she herself began to lose all notions of her independence, individuality, stature and strength".Even today, thousands of girls sit within the four walls of their houses and wonder why they do not have the right to close their own lives, decide for themselves whether they want to be homemakers or move. Marriage4 is still the reason for their birth. Freedom is more than just being aloud out for a pizza with friends.

Nisha as aseparate could create isolated room for her in home and society. She is an educated and determined new women, could refuse to be preserved as an object instead that tried to begin her own identity. Her pursuit for self-identity, struggle for economic independent presence and her equality with men hang on upon Indian social ethos. The ending again beautifully carries out how life can look up again-with a slight re-adjustment of one's expectations after suffering a blow. Nisha discovers her happiness when she least expects it. She grows into an entrepreneur woman; she works spontaneously for two years. It takes to her sense of achievement in life helping her to make her own identity, her own voice and her own place in the society and home. This success clues her to get marry and fulfill her journey for home. Feminism representations the systematic social injustice produced by gender discrimination. Manju Kapur who conquers an important place in the world of Indo-English literature strained to deal with physical, psychological and emotional stress syndrome of women's inacceptable plight in her novels. She increases the innumerable issues that are deep-rooted within the familyrevolt against the age old traditions. The search for individuality, the place of women in Indian society.

Nisha now senses complete change in her outlook that lends her courage to grow their hair cut to please Suresh. "Who provided you permission to cut

your hair, suddenly you have develop so independent, youchoose things on your own, where did you find the money, the time, the beauty parlor, where did you find all these things? , asks her mother". Having dreamt Suresh her future husband from last three years Nisha sends Suresh to see her father and ask her hand for the marriage but after all the enquiry and her brother finds out that the boy is not fit for the marriage to such a beautiful and competent girl who is pursuing English Honours from D.U. The sudden change in the attitude of all the members of the family after the discovery of her relation is the most hear6t rendering part of the novel. Suddenly and surprisingly the princesses of the family loses her position and say and becomes the victim of the guilt.

Nisha wept, Sonahowled, Yashpal cried, but the end result was the same. The first step the family took was to ban her college-going. She was as yet openlyunblemished, they hoped to contain the damage… the easiness between her and her family evaporated. She encouraged like a guilty thing among them, worse than the grime under their feet. She was not permitted upstairs… All day she continued in the house, a prisoner of her deed, a prisoner of their words. She was suspected too much to be certified to put a foot outside. A padlock was put join the phone, only incoming calls could be established without the key.

A major obsession in recent Indian women's writing has been a description of inside life and subtle interpersonal relationships. In a culture where independence and complaint have often remained alien ideas and nuptial bliss and the women's role at home is a central focus, it is interesting to see the emergence of not just avital Indian sensibility but an expression of cultural dislodgment. Manju Kapur has combined the growing number of women writers form India on whom the twin of the suffering but indifferent woman eventually breaking traditional boundaries has had a significant impact.

Kapur'soriginal is founded on the assumption that women insist on liberation from patriarchal social structure and thinking; that they strongly dissent against every brutalitydedicated on them by any fair name of religion or goodness. She also contracts with the position of woman as daughter, a wife and mother. All her female character hailing from middle class status encounter the existing socio-cultural male-controlled system. In the social milieu, they are educated, modern, intelligent, bold and assertive. While they try to exceed the social hierarchy by demolishing it, they often feel women protagonists. Her novels type a significant involvement in this direction.

The novel gifts Manju Kapur's accepting of human characters and her maturity as a novelists, "My own feeling is designated me any way you similar, as long as I am pertinent, as long as I am delivered, I don't really care..... cultural styles, gender relations, class equations, all of them are seen intensely in the novel." says Manju Kapur. The novels call to her not only as a writer, but as a teacher as well. As a writer of new group in an atmosphere of the nation's socio-political flux, Kapur has documented the truth in her fictive narrative with Zeal to change the Indian brand awareness. She pronounced the upsets of her female protagonists from which they grieve and perish in for their triumph. Manju Kapurgifts in their novel the varying image of women moving away from traditional depictions of enduring, self-sacrificing women towards self-assured, confident and desires women making society aware of their stresses and in this way providing a moderate of self-expression.

Works Cited :

Badode, Rambhau M. The Novels of Doris Lessing. New Delhi: Creative books: 2004. Print

Baier, Annette C. Moral Prejudices: Essays on Ethics. Cambridge, MA: Harvard University Press. 1994. Print

De Beauvoir, Simon. The Second Sex. Tran H.M. Parshley. New York: Vintage, 1974.

Deshpande, Shashi. That Long Silence. New Delhi: Penguin Books, 1989. Print.

Kapur. Maju. Difficult Daughters. London: Faber and Faber, 1998 print.

Kaumar, Dr Ashok. "Portrayal of New women: A Study of Manju Kapur's A Married Women". Amar Nath Prasad & S. John Peter Joseph. Indian writing in English: Critical Ruminations. New Delhi: Sarup and sons, 2006. Print.

Jaidev. "Problematizing Feminism. "Gender and Literature. Ed. Iqbal Kaur. New Delhi: B.R. Publishing Corporation, 1992. Print.

Millett, Kate. Sexual politics. 1969. Urbana and Chicage: University of Illinois Press. 2000. Print.

Narayan, R.K. My Days. Mysore: Indian Thought publications. 1975. Print.

Naha, Chaman. "Feminism in Indian English Fiction" Indian Women Novelist. Ed. R.K. Dhawan. New Delhi: Prestige, 1991. 27-34. Print.

Spivak, Gayatri Chakravarty. "Can the Subaltern Speak?" Marxism and the interpretation of Culture. Ed. Cary Nelsen and Lawrence Grossberg. Urbana: Uni. Of Illinois Press. 1988. 217-313. Print.

Tolani, Pooja. "Written From the Heart". http:/ www. mouthshut. Com/review/Difficult-Daughters-Maju-Kapoor-review-uuqorltuq. Web source.

Wollstonecraft, Mary. A Vindicationof the Rights of Woman. 1792. London: penguin Books. 2004. Print.

Goel Mena. "At Home with Manju Kapur". (An Interview) Unheard Melodies: A Journal of English Literature. Ed. Amarnath Prasad. New Delhi: Sarup, May 2008.

❑❑❑

1. Assistant Professor, Department of English, Government Arts and Science Mettur, Salem. Tamil Nadu.
2. Research Supervisor, Department of English,Government Arts and Science Mettur, Salem. Tamil Nadu.

Impact of remedial programme on basic mathematics skills of children with learning disabilities

–Vidyasagar Maurya
–Dr. Bharti Sharma

From different studies, it is clear that the problem of mathematics skills among learning disabled students started at primary level, but most schools and teachers do not know about learning disability and mathematics disability among children. Therefore, they do not take any initiatives for the education of children with learning disabilities facing difficulty in basic mathematics skills. Due to the careless behaviour of some teachers, some of the students drop out of the school and some of them develop a fear of mathematics.

The purpose of this experimental research was to explore the difficulties of basic mathematics skills and the impact of a remedial programme on basic mathematics skills among children with learning disabilities. A learning disability is an umbrella term and is defined as the difficulty in one or more basic areas of reading, writing, arithmetic, and oral communication. Approximately 6 to 14% of school going children face difficulty with mathematics (Barbaresi, Katysic, Weaver and Jacobsen, 2005). Mathematics is such a subject at the school level that plays a very important role in the development of the child's mind. When a child lacks basic math skills, he finds math difficult and considers dropping out. For this, we have to identify their problem and make the right diagnosis for it.

Ten children with learning disabilities who were facing problems in basic mathematics skills were selected for the study. A pre-test of ten learning-disabled students with basic mathematics skills problems, followed by a post-test after five weeks of remedial teaching. The correlated t-test results showed that the children who were taking remedial teaching programmes showed significant improvement in basic mathematics skills.

Key words : Basic Mathematics Skills, Learning Disabilities, Remedial Programme.

Introduction :

Children with learning disabilities face difficulties in basic mathematics skills, also known as mathematics disability. A mathematics disability affects the student's basic math skills, like simple operations, number recognition, time and direction, etc. Learning disabled children face problems understanding number

concepts, number recognition, basic operations, time, direction, mathematics symbols and word problems. A mathematics disability is a type of specific learning disability. As a teacher, we have tried to understand the problems of the students in the class in the mathematics subject. Children with math problems have no number sense, no estimation ability, no concept of word problems, no memory problems, and no difficulty remembering facts, according to research. That 6 to 14% of school age children have difficulty with mathematics (Barbariesi, Katusic, Collagin, Weaver, & Jacobsen, 2005). Dyscalculia (mathematics disability) affects the mathematics ability of individuals over the life span. Mathematics problems begin at primary level and develop an anxiety or dislike of mathematics among children. According to a United State agency, 5 to 8% of school age children have dyscalculia (Bodian, 1983).

From different studies, it is clear that the problem of mathematics skills among learning disabled students started at primary level, but most schools and teachers do not know about learning disability and mathematics disability among children. Therefore, they do not take any initiatives for the education of children with learning disabilities facing difficulty in basic mathematics skills. Due to the careless behaviour of some teachers, some of the students drop out of the school and some of them develop a fear of mathematics. As a teacher, we have to take an initiative to teach children with learning disabilities facing difficulty in basic mathematics skills and for their better future. A teacher identifies and assesses the problems of learning disabled children and, on the basis of assessment, develops remedial programmes for them so that their educational needs can be fulfilled. Children with learning disabilities facing difficulty in basic mathematics skills are unable to learn in a general class in a general way, so the teacher used some new techniques and methods for teaching them. Learning disabled children cannot learn like general students, so the general teaching method is not appropriate for them. A remedial programme is helpful for learning disabled children because a remedial programme is a set of methods, techniques, and activities. With the help of this, a teacher can introduce different concepts gradually and step by step among learning disabled children.

Objectives of the study:

The purpose of the given study is to assess the effectiveness of the remedial programme among learning disabled students who are facing difficulty in basic mathematics skills. The main objectives of the study are: 1. To diagnose the difficulty of basic mathematics skills among learning disabled students, and 2. To study the effectiveness of a remedial programme on the difficulty of mathematics skills.

Research methodology:

The aim of the study was to develop and assess the effectiveness of a remedial programme for children with learning disabilities who were facing difficulty in

understanding basic mathematics skills, e.g., number concepts, place value, and basic operations. The study was experimental in nature and a one-shot single group pre-test and post-test design was used. The study's subjects were ten elementary-level learning disabled students from grades 5 to 7 who were struggling with basic mathematics skills and were purposefully chosen for remediation.

The study was conducted at one inclusive school. The school is run by Delhi government authorities and is located in south-east Delhi. The school has already identified, and tries to provide service to them as per their needs.

First of all, the investigator diagnosed the children with learning disabilities who were facing difficulty in basic mathematics skills with the help of a diagnostic test. After identifying the student's difficulty, the investigator develops a remedial teaching programme to remove their difficulties. The remedial teaching programme was given to the students for five weeks, and after that, their achievement in mathematics skills was checked again by the achievement test.

Hypotheses: There is no significant difference between mean score of pre-remediation and mean score of post-remediation.

Tools used for the study:

1. Self-made diagnostic test to measure the difficulty in basic mathematics skills among learning disabled students.
2. Self-made achievement test to measure the impact of remedial programme on basic mathematics skills among learning disabled students**.**

Description of tools:

A self-made diagnostic test was used in this research to measure the difficulty of mathematics skills among those with learning disabilities. This diagnostic test was based on the characteristics of learning disabled students who were facing problems in understanding basic mathematics skills. This diagnostic test contains a total of twenty questions, which are based on number concept, place value, simple addition, addition with carry forward, simple subtraction, and subtraction with borrow concept. The diagnostic test was validated by an expert in the field, after the validation test was applied to fifteen learning disabled students. After diagnosis, ten students with learning disabilities who were regularly going for remediation had difficulties in basic mathematics skills.

The achievement test was designed to measure the effectiveness of a five week remedial programme. There are a total of twenty questions in this test, each carrying 1 mark. Questions which are based on number concepts, place value, simple addition, addition with carry forward, simple subtraction, and subtraction with borrow concept are asked. The test was validated by an expert in the field, and after validation of the test, it was applied to ten learning-disabled students.

Process and remediation:

Children with learning disabilities face difficulty in basic mathematics skills. One of the many strategies to overcome this type of difficulty is the remedial programme. A structured remedial programme session is developed by the investigator with the help of an expert in the field. The remedial programme is a collection of different teaching methods, strategies, activities, materials, and ICT based instructions by which the learning gaps of the students can be filled. The 50 minute programme schedule was structured as per day: 5-minute for number concept, 10-minute for place value, 5-minute for gap, 20-minute for addition, and 20-minute for subtraction. Addition and subtraction involve basic addition and carry forward addition and basic subtraction and borrow subtraction. The researcher used a separate class for delivering a remedial programme in which all the 10 participants were learning. The experiment group was monitored by the researcher in their separate classroom. The experimental group received a remedial teaching programme for five weeks. After successful remediation of five weeks, the researcher took an achievement test of each of the 10 participants for comparison of pre-test and post-test.

Data analysis and interpretation:

The remedial intervention was given to ten students with learning disability facing difficulty in basic mathematics skills, the mean score of students before and after remediation given below

Table 1: t-test analysis

	Pre-test	**Post-test**
Mean	6.9	10.9
Standard deviation (SD)	2.02	2.13
Sample size	10	10
Degree of freedom(d.f)	9	
t-value for calculated	6.5079	
t-value at 5% level of significance with 9 d.f	2.262	

From the above table, we have seen the mean score of the post test increased as compared to the pre test. This showed the improvement among learning disabled students.

From the table, the means of pre-test and post-test are 6.9 and 10.9, respectively. It is obvious from the table that the mean of the post test is greater than the mean of the pre test. This shows that there is a difference between the pre test score and the post test score. calculated “t” value is 6.5079 and the table value of “t” at a 5% level of significance with 9 degrees of freedom is 2.262. This shows that the calculated value of ‘t’ is greater than the tabulated value of ‘t’ at a 5% level of significance with 9 degrees of freedom. So, null hypotheses are regected at a 5% level of significance.

This means there is a significant difference between pre remediation and post remediation. Thus, we can say that remedial programmes are effective for children with learning disabilities facing difficulty in basic mathematics skills.

Findings:

After analysing the diagnostic data, the researcher found that

- Most of the students with learning disabilities studying in inclusive schools don't have knowledge about place value.
- A high percentage of students with learning disabilities don't have knowledge about the symbols of basic operations.
- 50% of students with learning disabilities don't have the concept of addition with zero and addition with carry forward.
- A high percentage of students with learning disabilities don't have the knowledge of simple subtraction.
- 95% of students with learning disabilities don't have the knowledge of subtraction with zero and subtraction with borrowing.

After providing the remedial intervention to children with learning disabilities facing difficulties in basic mathematics skills, their scores have been increased and the analysis of the data given below shows

- 90% of students with learning disabilities understood the concept of pace value.
- All the students with learning disabilities understood the symbol of basic operations.
- 80% of students with learning disabilities understood the concept of addition with zero and addition with carry forward.
- All the students with learning disabilities understood the concept of simple subtraction.
- 70% of students with learning disabilities understood the concept of subtraction with zero and subtraction with borrowing.

The remedial programme is a combination of different teaching methods, support materials, and different types of strategies for teaching children with learning disabilities. Appropriate teaching, support materials, and different strategies improve the achievement of learning-disabled students (Chakrabarty, 2019). From the analysis of the data, it is clear that most of the children facing problems in basic mathematics skills have increased their scores. Begi, Padakannaya&Gowramma (2010) conducted a study on remedial intervention for addition and subtraction in children with dyscalculia. Researchers found that the remedial intervention improved the students' addition and subtraction performance. After the remediation, 80-90% of students with learning disabilities understand addition and subtraction.

Conclusion:

The purpose of this study was to develop, administer, and evaluate the effectiveness of a remedial programme for children with learning disabilities who have difficulty with basic math skills. The study's goal was to determine the level

of math difficulty among children with learning difficulties and create a remedial programme for them. The researcher used pre-test analysis to figure out what issues and errors the kids had with basic math skills. Researchers created remedial programmes to help them learn maths better. The remedial programme is designed around the challenges that students are having and their current level of comprehension. The researcher conducts an achievement test after a five-week remediation period to determine the success of the remedial programme. The outcome demonstrates that.

References:

Barbaresi, W., Katusic, S. K., Collagin, R. C., Weaver, A. L., & Jacobsen, S. J. (2005). Math learning disorder: Incidence in a population-based birth cohort, 1976-82, Rochester, Minn. Ambulatory Pediatrics, 5, 281-289. doi: 10. 1007/ si 0803-008-0645.

Beygi, A., Padakannaya, P., &Gowramma, I. P. (2010).A remedial intervention for addition and subtraction in children with dyscalculia. *Journal of the Indian Academy of Applied Psychology, 36*(1), 9–17.

Bodian, A. N. (1983).Dyscalculia and nonverbal disorders of learning.In H.R. Myklebusted.) progress in learning disabilities. (5, 235-264).

Chakrabarty, N. (2019). A CASE STUDY ON EFFICACY OF REMEDIAL TEACHING FOR CHILDREN WITH LEARNING DISABILITIES STUDYING IN PRIMARY SCHOOL.*Journal of Disability Management and Special Education*, *2*(1).

David, G. C. (2004). Mathematics and Learning Disabilities.*journal of learning disabilities.* 37, 1, 4-15.

Fuchs, L.S., & Fuchs, D. (2002). Mathematical problem-solving profiles of students with mathematical disabilities with or without comorbid reading disabilities.

Karibasappa, C. &Nishanimut, Surendranath&Padakannaya, Prakash.(2008). A remedial teaching programme to help children with mathematical disability.Asia Pacific Disability Rehabilitation Journal. 19.

Rao, A.A. 2010. Leaning disabilities.Neelkamal Publication Pvt. LTD. Hyderabad. Jha, P.K. 2008.Learning disabilities. Vista International Publishing House, C-11, Yamuna Vihar, Delhi-53

https://allaboutdyscalculia.weebly.com/history-of-dyscalculia.html. retrieved on 26/03/2019

https://us.corwin.com/sites/default/files/upmbinaries/80190_Bird___The_Dyscalculia_Toolkt___Introduction.pdf. Retrieved on 26/03/2019

https://www.pdfdrive.com/dyscalculia-why-do-numbers-make-no-sense-to-about-dyscalculia-d16487813.html. Retrieved on 26/03/2019

https://www.pdfdrive.com/mathematics-for-dyslexics-including-dyscalculia-d20178522.html. Retrieved on 26/03/2019

https://mhrd.gov.in/rte. Retrieved on 25/03/2019

❑❑❑

1. Research Scholar, Department of Teacher Training and Non Formal Education Faculty of Education, JamiaMilliaIslamia, New Delhi Email: vidyamauryabhu@gmail.com, Contact: 9015967264
2. Associate Professor, Department of Teacher Training and Non Formal Education Faculty of Education, JamiaMilliaIslamia, New Delhi, Email: bsharma1@jmi.ac.in

Flat and round characters in Shashi Deshpande's *The Dark Holds No Terrors*

–S. Nandhini
–Dr. A. Kayalvizhi

The novel tells us about her life from her very childhood to her self-realization. Shashi Deshpande has put effort to bring her protagonist to center where she puts her to be self-reliant. The character of Saru is a representation of Indian Middle-class women, whose plight and predicament could be drawn from the Indian houses. Saru's entire life story is about how her parents fail to show her the affection she deserves. Foreign cultures view girls as delicate, sensitive, and lovable, but in Indian culture, people express regret when a girl is born.

Indian English fiction portrays a lucid image of our culture and society. The consistent bondage to tradition has ignited oppression and injustice against women. Indian English fiction portrays women novelists who have acknowledged the value of themselves by providing a valuable contribution to Indian English literature. ShashiDeshpande is one of the prominent English woman writers in India. She started her career in the 1970's and created her characters that are a replication of Indian middle-class women. The protagonists of her novels are typical Indian middle-class women. We can witness a real picture of many women in Indian tradition. There are characters rather than the protagonists who bring about changes in their characterization in the mid way of the novels. But on the other side, Several other characters that remain the same stern and stale characters that never bring change in their roles. The middle-class Indian family members always follow them even they are outdated. This paper is about those flat and round characters that let the story run effectively.

Keywords: development, uncomplicated, change, complex relationship, suffocation, stern and confront.

Flat and round characters Introduction:

Round and flat characters According to the Britannica definition, the way a character develops during a piece of literature distinguishes between flat and round characters. Flat characters are two-dimensional because they are typically straightforward and remain the same throughout a piece of writing. Round characters, on the other hand, are complicated and go through development, sometimes to the reader's surprise. E.M. Forster describes the two

forms in his book Aspects of the Novel (1927). He provides an illustration of a flat personathat is Mrs.Micawber in Charles Dicken's*David Copperfield* (1849-50) or a round character Becky Sharp in William Thackeray's *Vanity Fair* (1847-48).

Introduction:

The novel is an art that draws the history of human feelings; it's the story not of the kings or the battle won or lost by them; it's the story of the struggle of the common men, sometimes of a girl like Sarita, against the odds of life and fate.After 1970's numerous novelists emerged. ShashiDeshpande holds a unique position among the contemporary women writers of India because of her vision of humankind.She gives the importance of marriage and relationships, which are essential to humankind. She has published nine novels. She published her first novel In 1980, *The Dark Holds No Terrors* . She received the Padmasri award. *The Dark Holds No Terrors* by ShashiDeshpande is about the characters and how they interact with their families and the wider community.

The novel tells us about her life from her very childhood to her self-realization. ShashiDeshpande has put effort to bring her protagonist to center where she puts her to be self-reliant. The character of Saru is a representation of Indian Middle-class women, whose plight and predicament could be drawn from the Indian houses. Saru's entire life story is about how her parents fail to show her the affection she deserves. Foreign cultures view girls as delicate, sensitive, and lovable, but in Indian culture, people express regret when a girl is born. This may be because of the dowry system, the custom of having man burn family members on a pyre, or the ascending generation of a family.

We can find the flat and round characters in ShashiDeshpande's*The Dark Holds No Terrors* with that of Saru who keeps progressing and peregrinating despite her struggles and traumas and her never-changing mother who kept her worthless orthodoxy till her death. The lack of amicable relationships between a mother and a daughter is a significant component of Deshpande's novel *The Dark Holds No Terrors*. In this novel, the mother-daughter relationship takes centre stage. Despite making a vow never to go back, Saru returns to her ancestral home at the beginning of the book. However, there is womanliness to be found, particularly in an Indian woman who will stop at nothing to preserve her marriage. The same thing is done by Saru, who keeps thinking about how to mend her strained marriage to Manu. The only way to understand Saru's character is to follow her episodic life. Compared to her brother Dhruva, Saru was shunned and given less consideration.

She is subjected to a plethora of gender discrimination. The novel could be interpreted as favouring men over women. The novel exhibits an inherited colour sensitivity. Because of Saru's dark skin, her mother constantly tells her to stay out of the sun. This isn't because of love, but rather because of the duty of getting

her married. The death of her sibling was attributed by Saru's mother: "You did it, you did this, and you killed him."(173). She holds herself accountable for being a powerless, oblivious bystander to her brother's drowning death. Saru has big aspirations and wants to be a doctor. She defies convention with audacity. Her secondary personality is defiance.

She rejects her mother, her caste, and tradition. In her childhood, she witnessed the predicament of separation of her grandmother at the hands of a harsh and savage husband, from there onwards she firmly decided to be an economically independent woman. This would provide her a protective shield against subordination and suppression. We get the partial attitude of her parents which harms Saru's life. She turns out to be rebellious. Her life has become worst after her brother's death; she grew more defiant and wild and had an intense hatred for her mother: "For Saru the very word" mother" stands for old traditions and rituals, for her mother sets up a bad model, which distorts her growth as a woman, as being."(29)

Saru's mother makes repeated attempts to convince Saru that because she is a girl, she is inherently inferior to her brother. Being a conventional mother, she places a lot of importance on her daughter's appearance in hopes that it may one day entice a man to marry her. Saru is treated as a pawned object, which must be taken good care of, as someday it would be asked to return. She is an obligation to her family and they would be relieved only when she gets married. When Saru was playing with her brother and friends in the sun, her mother scolded her. She warned : Don't go out in the sun. You'll get even darker. Who cares? We have to care if you don't. We have to get you married. I don't want to get married. Will you live with us all your life? Why not? You can't. And Dhruv? He's different. He's a boy. (Deshpande 45)

After all, she is a mother, who holds responsibility toward a daughter. She looks after her everything. However, little Saru punishes herself in a way, believing that her parents are no longer concerned because she is responsible for her brother's death. Saru is trained by her mother to be good when she attends age. However, Saru is not welcomed by it and is actually misunderstood. They are all hostile toward one another and have no friendship. Being illiterate, Saru's mother struggles to keep up with the younger generation.

Saru experienced constant self-doubt due to Kamala Tai's constant attempts to find fault with her. She was always a negative reflection of Saru. Saru recalls this painfully: I was an ugly girl. At least, my mother told me so. I can remember her eyeing me dispassionately, saying . . . You will never be good looking. You are too dark for that. (Deshpande 61) Another instance, that affected Saru deeply and caused a tiff in the mother-daughter relationship was Dhruv's accidental death. As Saru was present with Dhruv at that time and as she was elder than him,

she was considered the main culprit by her mother. Saru was made to feel guilty about what she hadn't done consciously or unconsciously. Her mother enraged with anger blurted: You killed him. Why didn't you die? Why are you alive, when he's dead? (Deshpande 191) These words of her mother kept haunting Saru throughout her life. Time and again, these words kept buzzing in her ears. She had the same repetitive dreams related to Dhruv and his death.

Charu Chandra Mishra points out: That throughout the novel this guilt consciousness seems to act like a fatal flaw at times driving her to a mental state bordering on schizophrenia. This is the turning point in the novel that brings the mother-daughter conflict to the forefront. (97) Saru's decision to wed Manohar dealt the final deadly blow to the deteriorating relationship between the mother and daughter (Manu). Manu, a friend from college, showed Saru, a neglected youngster in the family, his undivided love and care. Saru grew up in poverty at home. Saru was so negatively impacted by the lack of attention she received outside that she was readily seduced. She gave in to Manu so easily because of this. Her mother responds violently when she informs her family that she wants to wed Manu, a man from a lower caste. Saru responds rather unbotheredly to the woman's inquiry regarding Manu's caste by stating that she is unsure but that Manu's father has a bicycle business. Her mom responds, "Oh, so they are low caste people, are they? (98).

Such sarcastic and orthodox words of her mother enraged Saru so much that she becomes adamant to marry this man only. Unfortunately, this impulsive decision of Saru, later, becomes a reason for her unhappy married life. However, this decision brought a final breach between the mother and daughter. Saru's mother also became disenchanted with this decision of Saru's. She was so much full of resentment and enmity that when she was dying of cancer, some relatives suggested her to meet her daughter at least once before dying. They thought this would bring relief to both. But Kamala tai replied: . . . Daughter? I don't have any daughter. I had a son and he died. Now I am childless. (196)

When Saru comes back after fifteen years to live in her father's house, she goes into a period of self-introspection; she realized that throughout her life every action and decision of her's, was directly or indirectly, motivated by her mother's approval and disapproval. Saru realizes that she had done everything just to "show her" and "make her realise" (60) how wrong her mother had been in judging her. But when her mother died, without forgiving her she felt defeatedAll her postures now crumbled into dust, into nothingness. She had been posing, making gestures of defiance at a person who wasn't there at all. She felt foolish and ridiculous. (60) Her obstinacy in marrying Manu was, ironically, more influenced by her mother's disapproval of the marriage, than her love for Manu. She remembers: If you hadn't fought me so bitterly, if you hadn't been so against him, perhaps

I would never have married him. (96) Constant neglect and rejection of Saru by her mother had affected Saru's psyche very badly. She developed an inferiority complex within her. She could never imagine that "any male would take that kind of an interest in me" (91). She always suffered from insecurity and uncertainties which made her self-conscious. What was more pitiable about Saru was that she starts judging herself from her mother's parameters. The daughter who "wanted to hurt her, wound her, make her suffer" is herself hurt, wounded, and suffering from her mother's curse (142). Saru tells her father, "she cursed me, Baba . . . . Can't you understand, Baba, that it's because she cursed me that I am like this? (197).

Despite a swore that she would never turn to her mother's home, Saru turns up in the name of consoling her father. This is proven that Saru is growing as an unwanted, develops an aversion toward her mother. But, still keeps a relationship with her parents believing in her good life. Later, she is neglected completely by her parents and she moves at ease with Manu hoping for the best life with him. Manu, in fact is an another example of a round character who behaves smooth and is loveable in the beginning and turns his colour later on. As she believed that life takes her to the fantasy world. Love, lust, and bliss are the components of her married life. But, that distances her farthest more when she attains her good position and social fame among the neighbours. Her sudden fame as a reputed doctor makes her egoistic and so far loveable husband turn into a brutal rapist. She wants to escape from his harsh clutch and horrible scribbles of his nails all over her body. Saru feels that her married life is destroyed and unhappy because of her mother's curse: "Let her know more sorrow than she has given me."(197)

As long as Saru was a student and Manu supported the family financially, their life together was joyful. But as she gained notoriety as a doctor, a problem started to develop gradually. Manu was uneasy, and their marriage's vibrant colours started to fade. "The esteem with which I was surrounded, made me inches taller, but made him inches shorter."(42). Her role as a career-oriented woman appeals to the standard of life. She prefers to shift into a beautiful and decent apartment rather than living in a shabby and congested room. Manu feels a sense of jealousy with the success of her wife. He becomes a brutal rapist and proved his masculinity through sexual assault on her. Saru puts all her efforts to save her marital life, like an Indian woman she is ready to sacrifice her profession. She courageously tells Manu (Manohar): "I want to stop working. I want to give it all up. My practice, the hospital, everything." (79). Manu doesn't agree with her plan to quit her job. But Saru's decision to marry him turns out to be a mistake due of his hidden ego. She then approaches to her father to express her suffering, but he is unable to comprehend concepts like sadism, love, or cruelty; unfortunately, he leaves her on her own. Because he

shares the same flat character as his wife and always responds to Saru's problems in the same way that he does when his wife tells him to.

When Saru complains to her father about something, he thinks that girls should be the mother's concern and ignores her when she wants him to be there for her. His support for her came solely from her schooling. She insisted him: "Baba, I'm unhappy. Help me Baba, I' m in trouble. Tell me what to do." (44). She now regrets leaving her husband behind to go back to her mother's house, which she saw as an escape. Her genuine self has been defined by the deception of her life. In terms of psychological factors, her character may be more fully comprehended. She has to deal with the consequences of gender inequality, the imprint of an unwanted child, and terrible sex abuse. She achieves all of her self-actualization aspirations despite her frustrations. Despite choosing to strongly defend her existence, she abandoned the thought of running away. She also realised that a woman didn't need a parent, a sibling, or a husband to be happy.

Conclusion:

The old patriarchal and conventional parents who stubbornly adhere to their stoic philosophy and refuse to adapt, even when necessary, are represented by the flat characters in this study paper. The roles of Saru's mother and father are unaltered by their flat personas. Especially Saru's mother, who remained unchanged right up until her passing.Saru is a multifaceted character that continues to develop and go through numerous changes and setbacks in her life, but she is always prepared to face reality when it comes knocking at her door. Manu, on the other hand, is a round character once more; initially endearing and loveable, he transforms into a new colour as life goes on. "My life is my own…… somehow she felt as if she had found it now, the connecting link. I have been a puppet it is because I made myself one"(220).

Reference :

Deshpande,Shashi.(1990), *The Dark Holds No Terrors*. New Delhi: Penguin Books

Hammer, Signe. Daughters and Mothers: Mothers and Daughters. New York:New American Library,1975.

Sree, S. (1991).*The Dark Holds No Terrors*: A Women's Search for Refuge. In R. Dhawan (Ed.), Indian Women Novelists (Vol.V, p. 64). New Delhi: Prestige Books.

Swain, S. (1995). ShashiDeshpande's*The Dark Holds No Terrors*: Saru's feminine Sensibility.In R.K. Dhawan (Ed.), Indian Women Novelists (Vol. Volume IV). New Delhi: Prestige Books.

Seema, S.(1995). Marriage as a Compromise - A study of ShashiDeshpande's*The Dark Holds No Terrors*.In Man Woman Relationship in Indian Fiction (p. 113).

Deshpande's, S.(1987,December). A Woman's World…All the Way. 12. (V. Vishwanatha, Interview) Literature Alive.

❒❒❒

1. Ph.D Research Scholar, Sowdeswari College Salem.
2. Assistant Professor of English, Sowdeswari College Salem.

Research Article

Women Empowerment through Elected Women Representatives in Panchayati Raj Institutions

–Deepak Kumar Kashyap
–Dr. Anupama Saxena

For the first time women's names appeared in the electoral rolls in 1923 and in 1926 the first woman member was nominated to the Indian Legislature. Women raised their voices for universal adult suffrage in 1931. In independent India, the constitution guaranteed equality of women in all spheres and left the issue of representation of women in Panchayati Raj Institutions to the State Legislatures.

"If you want to create awareness among the people, then first create awareness among women. When they move forward, the family moves forward, the village and the city move forward, the whole country itself moves forward."

-Pandit Jawaharlal Nehru

Empowerment of women in all spheres and in particular the political sphere is necessary for their advancement and for the foundation of gender equal society. It is central to the goals of equality, development and peace. The 73rd constitutional amendments act 1992, provided for elective posts for women & 1/3 rd reservation to women in panchayati raj institutions. Its creates opportunities for women to exercise more control over design and provisions of services and the management of resources it may benefits .This is a unique experience in the world of democracy, in which women at the lower level have been found suitable to hold political positions and participate in law making, decision making and governance.

Introduction

Political Empowerment of women starts with the active participation of women in political institutions. The grass-root level democracy entails due importance to initial participation of women in Panchayati Raj Institutions. Political system and decision making process is seen clearly in the changes incorporated in the Panchayati Raj Institution. The objective of bringing improvement in the socio-economic condition of women could be successful only by taking suitable initiatives and measures for empowering them. Empowerment of women will not be possible unless they are provided proper representation in the political

system. This objective should be achieved at desired level through making the provision of linking and associating maximum number of women in political affairs even at the lowest level of political activity. After,the 73rd constitutional amendments to the Constitution of India for the reorganization of Panchayat Raj and women's empowerment and provide 33% reservation in panchayati raj for the first time in India about 13 lakh 75 thousands women became members / presidents at three levels of Panchayat Raj & out of 26 states 25 states have more than 33% elected women representatives and 14 states have 50% & more elected women representatives which shows women's actual empowerment .

Women In Panchayati Raj

For the first time women's names appeared in the electoral rolls in 1923 and in 1926 the first woman member was nominated to the Indian Legislature. Women raised their voices for universal adult suffrage in 1931. In independent India, the constitution guaranteed equality of women in all spheres and left the issue of representation of women in Panchayati Raj Institutions to the State Legislatures. The Central Council of Local Self-Government, in its third meeting in 1957, decided that the elected representatives of the Panchayat in each block would co-opt two women interested in work between the women and the forces. This was similar to the recommendation made by the Balwantrai Mehta Study Group (1957), which recommended co-option of two women in panchayat bodies for the purpose of participation. The fourth meeting of the Central Council of Local Self-Government, 1958, recommended that about half of the total members in panchayats should be women. The council further suggested that until that stage was reached, at least two seats should be reserved for women. It was felt by the council that it was better to have two women than solitary women.

The committee constituted on the subject "Place Of Women In India"had recommended in the year 1974 that such panchayats should be created, in which there should be women. This committee realized the ineffectiveness of Panchayat Raj then suggested that Women's representation in the Panchayats and it empowered all women Panchayats at the village level to ensure greater participation of women in the political process and with adequate resources to manage their welfare and development programmes. In particular, it was also said to give priority to rural women. Participation of women in Panchayati Raj is a major part of the efforts being made for women empowerment, and efforts are being made for it since the year 1957. BalwantRai Mehta Committee had recommended to bring two women to the Zilla Parishad to oversee the programs related to women and children. The committee constituted on the subject "Place of women in India" in 1974 recommended that such Panchayats should be formed which have only women. In the year 1978, Ashok Mehta Committee recommended that the two women who get the maximum number of votes should be appointed in the district be

made a member of the council. The "National Perspective Plan for the Women 1988" had recommended reservation of 30 per cent seats from the Gram Panchayat to the Zilla Parishad. The 73rd Amendment to the Constitution of India has arranged to reserve at least one-third of the seats, so that the required balance comes in the social and political life of the country. By this amendment, a new clause (9) and 16 articles were added to the constitution.

There is a provision for the membership of women under Article 243 (d) (3) and reservation in posts for them in Article 243 (d) (4). According to Article 243 (d), reservation of the above type is to be made for the Scheduled Castes / Scheduled Tribes in proportion to their population and among them at least one-third of the seats are to be reserved for women. In other words, if 5 seats are reserved for Scheduled Castes in a Panchayat. then at least one-third of them, that is, 3 seats, shall be reserved for women of that caste. Reservation is not mandatory for Other Backward Classes and the matter has been left to the State Legislatures. Under Article 243(d)(6), they can make reservation if they want and how much and at what levels the reservation will be, it is also up to the state legislatures to decide. According to Article 243(t), the State Governments were to amend the Acts of their States in accordance with the provisions of the Constitution within one year of the coming into force of the Constitutional Amendment (April 24, 1993). Since Panchayat is a State subject (Seventh Schedule of the Constitution, List-2, No.-5), all the State Governments have made provision in the State Acts to provide for reservation for women, including women belonging to Scheduled Castes and Scheduled Tribes.

In the constitutional amendment, the leaders of our country assigned important roles to the Panchayats, one of which was to promote the political participation of women. A new direction was given to Panchayati Raj through the 73rd and 74th Constitutional Amendments of the Constitution. The biggest benefit from this was that the benefit of public participation went to the representation of the weaker and backward classes. The fixed participation of 33 percent women has given the opportunity to about 15 lakh women to participate in the elections of village panchayats and urban bodies through reservation. As a result of this, 43 percent women representatives were elected in different states of the country and marched towards the path of empowerment. The process adopted by the 73rd and 74th Constitutional Amendments for women's participation in local self-government bodies in India in the year 1992 is the result of the same, that today even the women of the village are not lagging behind in raising their voices. Women engaged in welfare work did not limit their objectives to family planning, healthcare etc., but also played an administrative role well. The biggest reason behind this is the awareness of women, it is not that women were not subjected to atrocities earlier. The only difference was that earlier the victim women could not tell their point

of view to anyone. Today, when she opposes tyranny, this thing becomes known to all. The place of women in Indian society is paramount. They play an important role in the process of nation-building. Unless women are aware and do not play their active role and participation in the stream of national development, then all round development of the nation is not possible. Despite being conscious of their role, women are still deprived and neglected of economic and social rights.

State Wise Elected Women Representatives *in* Panchayati Raj Institutions (1993-2018) (%)

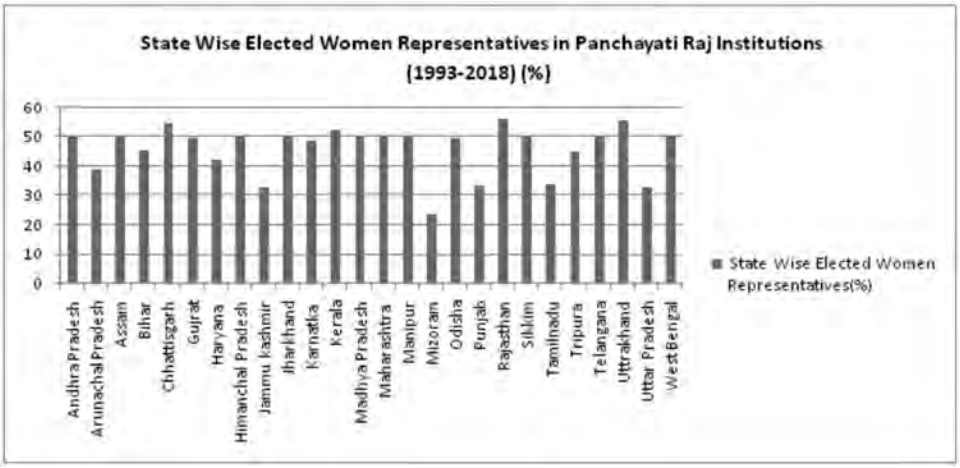

Source: MoPR Compilation as on 27.03.2018

Figure 1.1

Women Empowerment is essentially the process of upliftment of economic,social and political status of women. In table No. 1.1 we see, the elected women representatives from 1993 to 2018 inof 26 states 25 states have more than 33% elected women representatives and 14 states have 50% & more elected women representatives which symbolize that this direct participation of women in Panchayati Raj is the result of women's reservation in the 73rd Constitutional Amendment. Many important reforms have been made in their field of work along with improving their lives by getting reservation for women. Which shows that the representation of women in Panchayati Raj strengthens their position in the society and many women sarpanchs have set an example in their work at the national level, which strengthens their position in the society. Elected across the country large number of women competing with men in local politics forwading gender related agndas is looked as a way towards gender equity.

Conclusion:

Political empowerment of women is essential for sustainable development, transparent and responsible government and administration in all spheres of life. With the establishment of PRIs in our country a woman gets an opportunity to

prove her worth as a good administrator, decision-maker or a good leader. The 73rd Constitutional Amendment Act, 1992 is a milestone in this regard. It provides women a chance to come forward. This experiment is proving to be a big success particularly by providing opportunity to women to come out of their houses and participate in administrative and political field. It has to be considered that the inclusion of well qualified women in village Panchayati at the initial state of the interlocation of Panchayati Raj Institution in rural areas would be an important instrumental measure in planning for improving social status and empowering women.

References :

Sharma, Sunita (2018) “Women In Panchayati Raj”,New Delhi, Crescent Publishing Corporation

Meenakshi, J.(2012) “Women And Panchayati Raj” ,New Delhi, Omega Publication

Thakur, Minni (2010) “Women Empowerment Through Panchayati Raj Institutions” ,New Delhi ,Concept Publishing Company

Palanithurai,G(2004) “Dynamics Of New Panchayati Raj System In India” ,New Delhi, Concept Publishing Company

Menon,P.S.K.&Sinha ,Bakshi D. (2003) “Panchayati Raj In Scheduled Areas” ,New Delhi, Concept Publishing Company

Bharti, Jaya,(2011) “50 % Reservation Of Womens In Panchayats ,A Step Towards Zender Equity”, Orissa Review

Das,Suchitra, (2014) “Women Participation In Panchayati Raj : A Case Study Of Karimganj District Of Assam “International Journal Of Huminities And Social Sciences Studies

Sathe, Dhanmanjri & Klasen ,Stephan , (April 2013) “Does Having A Female Sarpanch Promotes Service Deliveries For Women Democratic Participation Of Womens’ Courant Research Centre

Choudhary ,Uttara & Sud , Mithali, (2015) “ Women As Proxies In Politics:Decision Making And Service Delivery In Panchayati Raj ,Hindu Centre For Politics In Public Policy

Hajra, Suchita, (2017) “Women Participation In Panchayati Raj In West Bengal, Economic Affairs , Volume - 62 Page (347-351)

Sruthi,V. &Sudharam,Asha (2018) “Women Empowermen In Panchayati Raj In Tamilnadu”, International Journal Of Pure And Applied Mathematics , Volume -120, Page (4765-4778)

Bag, Minaketan & Jagadala, Manjulata (2016) “Women Empowerment: Issues And Challenges Through The Lens Of Reservation In Panchayati Raj System”, Acme Intellects International Journal Of Research In Management, Social Sciences And Technology , Volume-13, Page(1-11)

Srivalli,Dr.K.(2018), “Empowerment To Women Through Political Participation : A Study Of Panchayati Raj Institutions In India” , International Journal Of Research In Social Sciences, Volume-8 Page No.-(536-552)

❒❒❒

1. Research Scholar, Department of Political Science, Guru Ghasidas Central University, Bilaspur (Chhattisgarh)
2. Professor & Head, Department of Political Science, Guru Ghasidas Central University, Bilaspur (Chhattisgarh)

Research Article

A shift from Divinity to Mortality in the works of Amish Tripathi

–Dr. Narendra Kumar
–Dr. Sumita Ashri
–Ms. Kiran

A contention could be made that pioneer artistic writings react to certain chronicled needs to beat what is seen as disciplinary strait jacketing, determination, or double exclusivism. Amish once said that he reads innovation as a moderately adaptable transient and applied system that includes the chronicled elements of present day designs of society, sorts of innovation, and assortments of cognizance.

Abstract:

The customary mentality towards magic focuses around its relationship with strict slants, henceforth it frequently appears to be hazardous to connect mystery with mainstream writing. In any case, even in strict writing, we see a humanistic combination of spiritualist motivations and the artistic will to impart. Consequently, abstract explanations of magic render it nearer to human creative mind and the legends which create out of this enunciation deliver the human components in the heavenly. Such an occurrence of humanistic mystery created through inventive folklores is Amish Tripathi's The Shiva Trilogy, in light of the remaking of a few Indian legendary characters and stories drawn from the Ramayana, the Mahabharata and the Shiva Purana. Amish describes Shiva in *Shiva Trilogy* by reclassifying Lord Shiva as a man of flesh and blood who later became the Neelkanth due to his karma. Human centered approach revolves throughout the novel which empower the author to present *Shiva Trilogy* as a spiritual guide to upcoming generation as it equip them to discover their inner Mahadev which resides in each one of us and we all achieve our purpose.

Keywords: Myth, Humanism, Divine, Somras, Mahadev

The word 'Myth' created from Greek word 'Mythos' implies story or word. Fantasies are ethically intriguing stories typically set in inaccessible past which are accepted as obvious and include ridiculous, heavenly animals or incredible

characters. They are good stories which accentuate a superior perspective or praiseworthy activity inside society. Puranas are classified under Hindu Mythology. They envelope stories which stand separated from Epics. It incorporates gallant and daring accounts of divine beings, goddesses and other legendary characters.

A contention could be made that pioneer artistic writings react to certain chronicled needs to beat what is seen as disciplinary strait jacketing, determination, or double exclusivism. Amish once said that he reads innovation as a moderately adaptable transient and applied system that includes the chronicled elements of present day designs of society, sorts of innovation, and assortments of cognizance. Humanism is a pragmatist standpoint or arrangement of thought connecting prime significance to the human as opposed to heavenly or otherworldly matters. The term has its own uncommon definition in each culture and society. There is an extraordinary risk of a last, even lethal, distinguishing proof of the word religion with tenets and strategies which have lost their importance and which are frail to tackle the issue of the human living in the 20th century. Religions have consistently been implied for understanding the most noteworthy estimations of life. This reality clarifies the always changing nature of religions as the centuries progressed. However, through all progressions religion itself stays consistent as its continued looking for withstanding values, an indistinguishable element of human life.

Perhaps the best misfortune within recent memory is the feeling that has been made that science and religion must be at war. Conflicts emerge about where the limits between these domains lie, while managing the issues arising at their interface. The pith of Hinduism is contained in the Vedanta, the logical and religious regulation of Hinduism, and in the ageless shrewdness of the Vedas. There are five center highlights in Hinduism: (1) God-lsvara, (2) Soul-Jiva, (3) Time-Kala, (4) Matter-Prakriti, and (5) Action-Karma. Of these the initial four standards are interminable though the last element is impermanent. In view of these standards, Hinduism gives a profound information and comprehension of life and the universe. In its unadulterated structure, Hinduism is otherwise called Sanatana Dharma or the endless capacity of the living substance. One of the novel highlights of Hinduism is that it gives a clear and expansive portrayal of God and his energies.

Analysis

The Indian abstract market is ruled today by books managing the legendary past. These books frequently revamp the Indian legends innovatively to address contemporary worries just as endless human issues. Indian folklore is a rich source of stories, wealthy in majority and character. The standard idea of

seeing things in only two shades of high contrast breaks down as we are brought into sagas like the Mahabharata and Ramayana. Each character is portrayed as compassionate, inclined to mistakes. Be it Prince Ram who deserted his wife at the thoughts of a resident or Kunti (Mahabharata) who can't reinforce up sufficient mental fortitude to acknowledge her child who was born before her marriage, these symbols are inclined to imprudence. It is this exact same characteristic, when joined into the fantasy books of present day that has launch them to distinction. Shiva smokes pot, swears and still keeps up his quality in Shiva Trilogy.

This set of three books with the account of Shiva from a humanist perspective. It takes you through the ride of a Tibetan Immigrant who is driven by his natural feeling of equity, his interior clash among good and evil and his calling and fate. These three significant strands became the premise of Shiva trilogy - legend, history, fiction - join in the most abnormal way, blending fiction with history.

Amish has given a total structure to his manufactured folklore by utilizing legendary topics - the fight among great and insidious, legendary story epic structure lastly legendary characters in Shiva Trilogy . Such a composing is said to fall into the classification of epic dream which is the sub-sort of famous dream fiction, whose set of experiences is detectable back to epic sonnets like the *Iliad*, the *Odyssey* and the *Beowulf* J.R.R Tolkien's *The Lord of the Rings* is the primary significant work to be classified under epic dream in current occasions. Such a dream class is epic in scope, as it requests a long story while it's managing the destiny of the whole world or a country. In such a case the single story stretches out over different volumes including sequential accounts.

Amish Tripathi's Shiva Trilogy falls into such a practice. His work has revived the rich custom of the Indian gallant age. The set of three books is about an epic legend, Shiva, and his journey. Each book in the trilogy shows the various stages in the excursion of Shiva. The book one presents Shiva in human form born from mother's womb made up of flesh and blood rather than as our mythical God Shiva who was ajanma (not born from mother's womb). The closing novel contends and by and large persuades that the way of life of a country that disregards the Laws of Nature abuses it, while the one that observes the Laws of Nature drives its country towards illumination. The set of three books of this trilogy consolidates the story abundance with philosophical discussion.

Brahma, the maker, Vishnu, the preserver and Shiva, the destroyer shapes the trinity of divine beings. God Shiva is depicted as the destroyer who destroys

the world in end for a fresh start of creation. The common manifestations encourage because of the serenity between two restricting powers of good and evil. At the point when the equilibrium falls, through destruction Lord Shiva affects another birth cycle to keep up presence of life. Shiva and Nandi discussing about vikarma people who have been rebuffed in this birth for the transgressions of their past births. Subsequently they need to carry on with this life out with dignity and endure their current enduring with grace. There are numerous guidelines that the vikarma ladies need to follow. They need to pray to God for pardoning each month to Lord Agni, the cleaning Fire God, through an explicitly commanded puja. They are not permitted to wed since they may defile others with their terrible destiny. They are not permitted to contact any individual who isn't identified with them or isn't essential for their everyday life. Shiva always speaks his mind and stands up for it if he finds wrong in any way for the society like he did it for vikarma people, he completely eradicated the law of vikarma individuals as he believes no individual is impure or pure. Everyone has its own vices and virtues.

One of the primary thoughts behind this book is the conviction that 'Everyone is God'. This exclusive conviction is found at the core of all the World's incredible Religions and Faith Traditions. Various schools of Shaivism, broadly centers on the way to be utilized by man to understand his genuine self. We all can find the divinity within us by focusing on our deeds as it signifies from this quote, "A man becomes a Mahadev when he fights for good. A Mahadev is not born as one from his mother's womb. He is forged in the heat of battle, when he wages a war to destroy evil"! (I.o.M 346)

Robert Gaudin depicts humanism as a "term freely applied to a variety of beliefs, methods and philosophies that place central emphasis on human realm" (Chatterjee 2). It is a rationalistic methodology that assigns a lot of significance to human as opposed to otherworldly undertakings. Amish used a humanistic perspective to manage the narrative of Shiva. It features humanistic angle through reconciliation of both great and awful attributes of man in this contemporary current world. The author legitimizes his humanistic methodology by asking, "What if Shiva was not a figment of rich imagination but a man of flesh and blood? Like you and me "(I.o.M 1).

Amish present his first arrangement of Shiva Trilogy as the account of a man, whom legend transformed into a divine being. He refines Lord Shiva to validate his thought regarding evil, its outcomes and approaches to dispense with it. He addresses the thought of god, inside and outside the skeleton of acknowledged strict traditions and allowance of faith based expectations. The tale presents Shiva as an uncivilized barbarian who migrated to Meluha looking

for a superior tranquil life. Seeing Nandi, the captain of Meluha's army creates questions in Shiva's mind, "Is this the one who will lead me to my destiny? Do I truly have the destiny my uncle spoke of"? (I.o.M 4). Despite the fact that Purana states Lord Shiva as the person who determines the destiny and fate of humankind, Amish reproduces Shiva as a man who is neglectful of his own fate or motivation behind life.

A genuine unwavering picture of an ancestral pioneer is given to the hero Shiva. His uncle once said, "Your destiny is much larger than these massive mountains. But to make it come true, you will have to cross these very same massive mountains"(I.o.M 4). Shiva dismisses the unexpected dedication and regards of Meluhans which excite because of his blue throat. Shiva is depicted as an accustomed man with no otherworldly sense to anticipate the forthcoming occasions. In Puranas, Lord Mahadev is portrayed as who could foresee the fate of the Universe. Shiva in beginning hesitated to accept his true purpose but as he progresses towards knowing Meluhan society and the threats they are facing, he accepts his destiny.

Shiva's childhood guilt mirrors his strong belief that he is bound to perform his duties towards Meluha. Daksha assists Shiva in accepting his destiny by destroying the evil which is lurking over Meluha and completes the unfinished task of Lord Ram by bringing the harmony and congruity through destruction of Chandravanshis. In this way Amish presents his main character that possesses some baser senses of a common man which puts him separated from the brave deeds, ways and life of Lord Shiva. Shiva gained the respect which bestows upon him by his strong character and his principles which he follows as he states, "My position is with the soldiers. On the battlefield" (I.o.M 340).

In this trilogy Amish modifies Shiva as a man whose task is to find what evil is? "What kind of a Mahadev am I? Why am I required? How am I to destroy evil if I don't know what evil is? (I.o.M 397).Daksha hides his real intentions from Shiva and used him in winning against Swadeepans. People mislead him and keeping reality away from him that became a hindrance which makes him guilty for the deaths of millions of people in the war which seems a holy war earlier. These disclosures empower him to gain baser information to start his journey to reveal what evil is and convince people to detach themselves from it. By following a human focused methodology the author finishes up the trilogy by advocating his answer for the Universal inquiry 'Who is Mahadev'? through his hero Shiva, as he proclaims: "I'm not the only one! For I see a hundred thousand Mahadevs in front of me! I see a hundred thousand men willing to fight on the side of good! I see a hundred thousand men willing to battle evil! I see a hundred thousand men capable of destroying evil"(I.o.M

346). The person who questions evil and stands alongside goodness will be celebrated as Mahadev by the coming ages. Accordingly Shiva addresses the voice of humanity and makes this trilogy, life of Shiva a lesson for all which make us to be better people.

Conclusion

Shiva, the hero of the novel, goes on a journey through India to find what Evil is. The legend in the novel goes through all sorts of situations, ups and downs and in end find out the real evil which needed to be uprooted for the sake of humanity and convince people to leave their attachment to this evil which turned out the somras the drink of the Gods. In beginning it was in favor of humanity and it benefitted society for centuries but excess of everything is bad and due to the greed of humans to live a longer life it made the biggest evil of the century. Consequently Amish makes an endeavor to refine legendary secrets related with Lord Mahadev by joining logical realities with strict legendary abnormalities. The pursuit is embraced by Shiva and his methodologies and musings mirror the expectation of a customary man who is bestowed by different duties. Various shades of human shortcomings are portrayed through different situations, thinking, considerations and activities of Shiva.

References :

Chatterjee, Abhinaba."Humanizing Theography through Mystical Mythology: AmishTripathi's *Shiva Trilogy".* Research and Criticism Web.3 Feb.2017.

Chatterjee, Gautam. *Sacred Hindu Symbols* New Delhi, 2001.

Mukherjee, D. "*Amish Tripathi's The Immortals of Meluha (Shiva Trilogy): A Critical Appreciation*". Asian Journal of Multidisciplinary Studies.

Nair, Shantha N. *The lord Shiva*. New Delhi: Hindoology Books, 2009. Print.

Singh, Chitraleksha, Prem Nath, and Lipika Singh. *Siva the Greatest God.* New Delhi: Indiana Books, 2010.

Tripathi, Amish. *Shiva in New Light: An Interview with Amish Tripathi*. Spark Edition, 5Aug 2011.

Tripathi, Amish. *The Immortals of Meluha.* (IoM) New Delhi: Westland Ltd, 2010. Print.

Tripathi, Amish. *The Secret of the Nagas.* (SoN) New Delhi: Westland Ltd, 2012. Print.

Tripathi, Amish. *The Oath of the Vayuputras.* (OoV) New Delhi: Westland Ltd, 2013. Print.

❒❒❒

1. Professor, Dept. of English, B.M.U. Rohtak

2. Assistant Professor, Dept. of English, P.I.G. G.C.W. Jind

3. Dept. of English, B.M.U. Rohtak

केंद्रीय हिंदी संस्थान

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

संपर्क : हिंदी संस्थान मार्ग, आगरा-282005, वेबसाइट : www.khsindia.org

संक्षिप्त परिचय

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा 1961 ई. में स्थापित एक स्वायत्त शैक्षिक संस्था है। इसका संचालन स्वायत्त संगठन केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल द्वारा किया जाता है। संस्थान का मुख्यालय आगरा में स्थित है और इसके आठ क्षेत्रीय केंद्र : दिल्ली, हैदराबाद, गुवाहटी, शिलांग, मैसूर, दीमापुर, भुवनेश्वर तथा अहमदाबाद में हैं।

संस्था के प्रमुख उद्देश्य—

(i) भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुपालन में अखिल भारतीय भाषा के रूप में हिंदी का विकास करते हुए इसके विकास और प्रसार की दृष्टि से उपयोगी शैक्षणिक पाठ्यक्रमों की प्रस्तुति एवं संचालन (ii) विभिन्न स्तरों पर गुणवत्तापूर्ण हिंदी शिक्षण का प्रसार, हिंदी शिक्षकों का प्रशिक्षण, हिंदी भाषा और साहित्य के उच्चतर अध्ययन का प्रबंधन, हिंदी के साथ विभिन्न भारतीय भाषाओं के तुलनात्मक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन को प्रोत्साहन और हिंदी भाषा एवं शिक्षण से जुड़े विविध अनुसंधान कार्यों का आयोजन (iii) अपने विभिन्न पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए परीक्षा आयोजन तथा उपाधि वितरण (iv) संस्थान की प्रकृति एवं उद्देश्यों के अनुरूप उन अन्य संस्थाओं के साथ जुड़ना या सदस्यता ग्रहण करना या सहयोग करना या सम्मिलित होना, जिनके उद्देश्य संस्थान के उद्देश्यों से मिलते-जुलते हों और इन समान उद्देश्यों वाले संस्थानों को संबद्धता प्रदान करना (v) समय-समय पर नियमानुसार अध्येतावृत्ति (फैलोशिप), छात्रवृत्ति और पुरस्कार, सम्मान पदक की स्थापना कर हिंदी से संबंधित कार्यों को प्रोत्साहन आदि।

संस्थान के कार्य—

● **शिक्षणपरक कार्यक्रम :** (i) विदेशी विद्यार्थियों के लिए हिंदी शिक्षण (ii) हिंदीतर राज्यों के विद्यार्थियों के लिए अध्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम (iii) नवीकरण एवं संवर्द्धनात्मक कार्यक्रम, (iv) दूरस्थ शिक्षण कार्यक्रम (स्ववित्तपोषित) (v) जनसंचार एवं पत्रकारिता, अनुवाद अध्ययन और अनुप्रयुक्त हिंदी भाषा विज्ञान के सांध्यकालीन पाठ्यक्रम (स्ववित्तपोषित)

● **अनुसंधानपरक कार्यक्रम :** (i) हिंदी शिक्षण की अधुनातन प्रविधियों के विकास के लिए शोध (ii) हिंदी भाषा और अन्य भारतीय भाषाओं का तुलनात्मक व्यतिरेकी अध्ययन (iii) हिंदी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में आधारभूत एवं अनुप्रयुक्त अनुसंधान (iv) हिंदी भाषा के आधुनिकीकरण और भाषा प्रौद्योगिकी के विकास के उद्देश्य से अनुसंधान (v) हिंदी का समाज भाषा वैज्ञानिक सर्वेक्षण और अध्ययन (vi) प्रयोजनमूलक हिंदी से संबंधित शोधकार्य। अनुसंधानपरक कार्यों के दौरान द्वितीय भाषा एवं विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण के लिए उपयोगी शिक्षण सामग्री का निर्माण।

● **शिक्षण सामग्री निर्माण और भाषा विकास :** (i) हिंदीतर राज्यों और जनजाति क्षेत्र के विद्यालयों के लिए हिंदी शिक्षण सामग्री निर्माण (ii) हिंदीतर राज्यों के लिए हिंदी का व्यतिरेकी व्याकरण एवं द्विभाषी अध्येता कोशों का निर्माण (iii) विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण पाठ्यपुस्तकों का निर्माण (iv) कंप्यूटर साधित हिंदी भाषा शिक्षण सामग्री का निर्माण (v) दृश्य-श्रव्य माध्यमों से हिंदी शिक्षण संबंधी पाठ्यसामग्री का निर्माण (vi) हिंदी तथा हिंदीतर भारतीय भाषाओं के द्विभाषी/त्रिभाषी शब्दकोशों का निर्माण।

संस्थान के प्रकाशन : हिंदी भाषा एवं साहित्य, भाषाविज्ञान, अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, तुलनात्मक एवं व्यतिरेकी अध्ययन, भाषा एवं साहित्य शिक्षण, कोश विज्ञान आदि से संबद्ध विभिन्न विषयों पर उपयोगी पुस्तकों का प्रकाशन। अब तक 200 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित। विभिन्न स्तरों एवं अनेक प्रयोजनों की पाठ्यपुस्तकों, सहायक सामग्री तथा अध्यापक निर्देशिकाओं का प्रकाशन। त्रैमासिक पत्रिका-गवेषणा, संवाद पथ, समन्वय दक्षिण, समन्वय पश्चिम, प्रवासी जगत, समन्वय पूर्वोत्तर, शैक्षिक उन्मेष, भावक, संस्थान समाचार एवे दो छात्र पत्रिका 'हिंदी विश्व भारती' तथा 'समन्वय' का प्रकाशन किया जाता है।

पुस्तकालय : भाषाविज्ञान, अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, भाषा शिक्षण और हिंदी साहित्य के विभिन्न विषयों की पुस्तकों के विशेषीकृत संग्रह की दृष्टि से हिंदी के सर्वश्रेष्ठ पुस्तकालयों में से एक। एक लाख पुस्तकों का विशाल संग्रह उपलब्ध है। 75 से अधिक जर्नल, शोधपरक पत्र-पत्रिकाएँ उपलब्ध।

संस्थान से संबद्ध प्रशिक्षण महाविद्यालय : हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण के स्तर को समुन्नत करने तथा पाठ्यक्रम में एकरूपता लाने के उद्देश्य से उत्तर गुवाहटी (असम), आइजोल (मिजोरम), दीमापुर (नागालैंड) के राजकीय हिंदी शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालयों को संस्थान से संबद्धता।

योजनाएँ : (i) भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, कोलंबो एवं कैंडी में सिंहली विद्यार्थियों के लिए केंद्रीय हिंदी संस्थान के पाठ्यक्रम की 2007-08 से शुरुआत (ii) अफगानिस्तान के नान्गरहर विश्वविद्यालय (जलालाबाद) में संस्थान द्वारा निर्मित बी.ए. का पाठ्यक्रम 2007-08 से प्रारंभ (iii) विश्व के कई अन्य देशों (चेक, स्लोवानिया, संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, मॉरीशस, बेल्जियम, रूस, जापान, उज्बेकिस्तान एवं कज़ाकस्तान आदि) के साथ शैक्षणिक सहयोग और हिंदी पाठ्यक्रम संचालन के संबंध में संवाद जारी (iv) हिंदी के बहुआयामी संवर्धन के लिए हिंदी कॉर्पोरा परियोजना, हिंदी लोक शब्दकोश परियोजना, भाषा-साहित्य सीडी निर्माण परियोजना, पूर्वोत्तर लोक साहित्य परियोजना, हिंदी विश्वकोश परियोजना पर कार्य।

-श्री अनिल कुमार शर्मा
उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल
ई-मेल : vicechairmankhs@gmail.com

-प्रो. बीना शर्मा
निदेशक
ई-मेल : directorkhs1960@gmail.com

विश्व हिंदी साहित्य परिषद

हिंदी साहित्य, संस्कृति एवं भाषा

से संबंधित पुस्तकों के प्रकाशन के लिए संपर्क करें

अध्यक्ष : डॉ. आशीष कंधवे

ईमेल : vhspindia@gmail.com
www.vhspindia.in

संपर्क : 011-47481521, 9811184393

1. हिंदी एवं भारतीय भाषा का प्रचार-प्रसार एवं समग्र विकास
2. अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी भाषा के विकास और विस्तार के लिए सेमिनार, सम्मेलनों का आयोजन
3. उत्तम साहित्य का प्रकाशन
4. साहित्यकार सहायता योजना
5. हिंदी को तकनीक से जोड़ना
6. पुरस्कार / प्रतियोगिता का आयोजन
7. रोजगारोन्मुख हिंदी के लिए प्रयास एवं योजनायें
8. संग्रहालय / पुस्तकालय / संगोष्ठी कक्ष की स्थापना
9. साहित्य एवं संस्कृति के चहुँमुखी विकास के लिए प्रयासरत
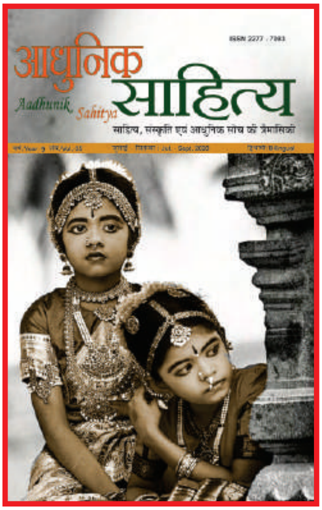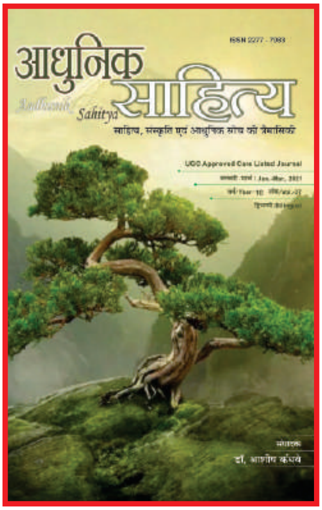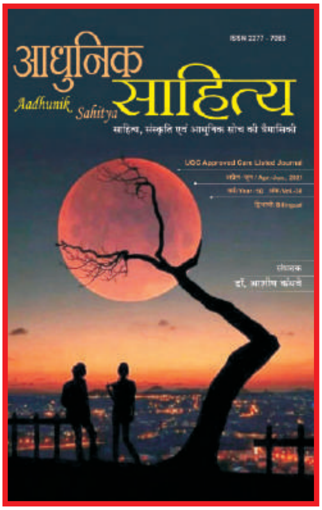
RNI No. DELBIL/2012/42547